॥दोहा॥ श्रीमत्वीरजिनेशरवि मिथ्यातमहरतार विघनहरनमंगलकरन
वंदौवृषकरतार १ वानीवंदौंहितकरी जिनमुखनभतैंगाजि गणधरगण
अलेभूकरी बूंदवर्णपदसाजि २ गुरुगौतमवंदौसुविधि संयमतपधर
और जिनतैंपंचमकालमैं वरत्यौजिनमतऔर ३ कुंदकुंदमुनिकूं
नमूं कुमतध्वांतहरभान पाहुडग्रंथरचेजिनूं प्राकृतवचनमहान ४
जिनिमैंकेईप्रसिद्धलखि करूंसुगमसुविचारि देशवचनिकामयलिखौं
भव्यजीवहितधारि ५ ऐसैंमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकरि श्रीकुंदकुंदआचा 1
र्यकृतप्राकृतगाथाबंधपाहुडग्रंथहैतिनमैंसूंकेईकनिकीदेशभाषाम १
यवचनिकालिखियेहैतहांप्रयोजनऐसाहैजोइसहुंडावसर्पिणीका

लविषैमोक्षमार्गकूंअन्यथाप्ररूपणाकरनहारेकुमतप्रवर्त्ततहांभीइसपंच
मकालमैंकेवलीश्रुतकेवलीकाव्युछेदहोनेतैंजिनमतमैंभीजडवक्रजीव
निकेनिमित्तकरिपरंपरामार्गकूंउल्लंघिबुद्धिकल्पितश्वेतांवरआदिकभ
येहैतिनिकानिराकरणयथार्थस्वरूपस्थापनकेअर्थिदिगंबरआम्नायमूल
संघमैंआचार्यभयेतिनिनैंसर्वज्ञकीपरंपराकाअव्युछेदरूपप्ररूपणांकेअ
नेकग्रंथरचेहैतिनिमैंदिगंबरसंप्रदायमूलसंघनंदिआम्नायसरस्वतीगछ
मैंश्रीकुंदकुंदमुनिभयेतिनिनैंपाहुडग्रंथरचेतिनिकूंसंस्कृतभाषामैंप्राकृ
तनामकहियातेप्राकृतगाथाबंधहैसोकालदोषतैंजीवनिकीबुद्धिमंदहोय
हैसोअर्थसमझ्याजातानांहीतातैंदेशभाषामयवचनिकाहोयतौसर्वहीवांचे
अर्थसमझैश्रद्धानदृढहोययहप्रयोजनविचारिवचनिकालिखियेहैं अन्य

२ समझि चित्तमैं धारणा करि यथार्थ मतका वाह्य लिंग तथा तत्वार्थका श्रद्धान दृढ
करियो अरयामैं किछु बुद्धिकी मंदतातैं तथा प्रमादके वशतैं अर्थ अन्यथा लि
खूं तौ वडे बुद्धिवान मूलग्रंथ देखि शुद्ध करि वांचियो मोकूं अल्पबुद्धी जांनि क्षमा
कीजियो ॥ छ ॥ अब इहां प्रथम ही दर्शनपाहुडकी वचनिका लिखिये है ॥ दोहा ॥ वं
दौं श्रीअरिहंतकूं। मनवचतन इकतान। मिथ्याभाव निवारिकैं। करै सुदर्शन ज्ञान
१ अब ग्रंथकर्त्ता श्रीकुंदकुंद आचार्य ग्रंथकी आदि विषैं ग्रंथकी उत्पत्ति अर ता
का ज्ञानकूं कारण जो परापर गुरुका प्रवाह ताकूं मंगलकै अर्थि नमस्कार करै है
॥ गाथा ॥ काऊण णमुक्कारं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स। दंसणमग्गं वोछा। २
मि जहाकम्मं समासेण ॥ १ ॥ याका देसभाषामय अर्थ। आचार्य कहै है जो मैं जिन

वरवृषभ ऐसा जो आदितीर्थंकर श्रीरिषभदेव वहुरि वर्द्धमान ऐसा जो वर्द्धमान
नाम अंतम तीर्थंकर ताहि नमस्कार करि अर दर्शन कहिये मत ताका मार्ग है ता
हि यथानुक्रम संक्षेप करि कहूंगा। भावार्थ। इहां जिनवर वृषभ ऐसा विसेषा
ण है ताका ऐसा अर्थ है। जो जिन ऐसा शब्दका तौ यहु अर्थ जो कर्मशत्रुकूं जीतै से
जिन तौ सम्यग्दृष्टी अव्रती सूं लगाय कर्मकी गुणश्रेणीरूप निर्जरा करणेंवाले स
र्वही जिन हैं तिनमैं वर कहिये श्रेष्ठ ऐसे जिनवर गणधर आदिक मुनिनिकूं क
हिये तिनिमैं वृषभ कहिये प्रधान ऐसे तीर्थंकर परमदेव है तिनिमैं आदि तौ श्री
रिषभदेव भये अर इस पंचमकालकी आदि चतुर्थकालके अंतमैं अंतम तीर्थं
कर श्रीवर्द्धमान स्वामी भये तिनिका विशेषण भया। वहुरि जिनवरवृषभ ऐसे स
र्वही तीर्थंकर भये तिनकूं नमस्कार भया तहां वर्द्धमान ऐसा विशेषणा सर्वही का।

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

३ रितौ आदितीर्थंकर श्रीवृषभदेव लेणौं अर वर्द्धमान शब्दकरि अंतम तीर्थंकर
लेणौं ऐसैं आदिअंत तीर्थंकरकूं नमस्कार करनेंतैं मध्यकेनकूं नमस्कार साम
र्थ्य तैं जाननां। वहुरि तीर्थंकर सर्वज्ञ वीतरागकूं तौ परमगुरु कहिये अर इनिकी
परिपाटीतें अन्य गौतमादिक मुनि भये तिनिका नाम जिनवर वृषभ इस विशेष
णमैं जनाया तिनिकूं अपरगुरु कहिये ऐसैं परापरगुरुका प्रवाह जाननां ते श
स्त्रकी उत्पत्ति तथा ज्ञानकूं कारण हैं तिनिकूं ग्रंथकी आदिकै विषैं नमस्कार क
रना युक्त हैं ॥ छ ॥ आगैं धर्मका मूल दर्शन है तातैं जो दर्शनतैं रहित है ताकौं नवं
दना ऐसैं कहै है ॥ गाथा ॥ दंसणमूलो धम्मो ॥ उवइट्ठो जिणवरेहि सिस्साणं ॥ तं सो ३
ऊण सकण्णे ॥ दंसणहीणो ण वंदिव्वो ॥ २ ॥ अर्थ ॥ जिनवर जे सर्वज्ञदेव तिनिनें सिष्य

जे गणधर आदिक तिनिकूं धर्म उपदेश्या है सो कैसा उपदेश्या है दर्शन है मूल जाका ताहीकं।
कहिये जैसैं मंदिरकै नीव अथवा जैसैं वृक्षकै जड तैसैं धर्मका मूल दर्शन है तातैं आचा
र्य उपदेश करै है सो हे सकरणा कहिये पंडित सत्पुरुष हो तिसौं सर्वज्ञके कहे दर्शन न
मूलरूप धर्मकूं अपने काननि विषैं सुणि करि अर जो दर्शनकरि रहित है सो तुम्हारे
वंदिवे योग्य नांही है दर्शनहीनकूं मति वंदौ जाकै दर्शन नांही ताकै धर्म भी नांही मू
ल विना वृक्षकै स्कंध साखा पुष्प फलादिक कहांतैं होय तातैं यह उपदेश है जाकै ध
र्म नांही तातैं धर्मकी प्राप्ति नांही ताकूं धर्म निमित्त काहेकूं वंदिये ऐसा जाननां ॥
छ ॥ अब इहां धर्मका तथा दर्शनका स्वरूप जान्यां चाहिये सो स्वरूप तौ संक्षेपक
रि ग्रंथकार आगैं कहसी । तथापि किछू अन्य ग्रंथनिकै अनुसार इहां भी लिखि
ये है । तहां धर्म ऐसा शब्दका अर्थ यह जो आत्माकूं संसारतैं उधारि सुखस्थान विषैं

४

दर्शन है सो प्रसिद्धता मैं जामैं धर्म का ग्रहण होय ऐसा मत कूं दर्शन ऐसा नाम कहि
ए है। सो लोक मैं धर्म की तथा दर्शन की सामान्यपणैं मान्यता सर्व कै है। परंतु सर्वज्ञ वि
ना यथार्थ स्वरूप का तौ जानना होय नाहीं अर छद्मस्थ प्राणी अपनी बुद्धि तैं अनेक
स्वरूप कल्पना करि अन्यथा स्वरूप स्थापि तिसकी प्रवृत्ति करै है। सो जिनमत सर्वज्ञ
की परंपरा तैं प्रवर्तै है सो यामैं यथार्थ स्वरूप का प्ररूपण है तहां धर्म निश्चय व्यवहा
र करि दोय प्रकार करि साध्या है ताकी च्यारि प्रकार प्ररूपण है वस्तुस्वभाव। उत्तम क्ष
मादिक दशप्रकार। सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र रूप जीवनि की रक्षा ऐसा च्यारि प्रका
र है तहां निश्चयनय करि साधिये तब तौ सर्व मैं एक ही प्रकार है। जातैं वस्तुस्वभाव क ४
हनै तैं तौ जीवनामा वस्तु का परमार्थरूप दर्शन ज्ञान परिणाममयी चेतना है सो य

ह चेतना सर्व विकारनि तैं रहित शुद्धस्वभावरूप परिणमै सो ही या का धर्म है। बहुरि
उत्तम क्षमादिक दशप्रकार कहनै तैं क्रोधादिक कषायरूप आत्मा न होय अपने स्व
भाव मैं थिर होय सो ही धर्म है यह भी शुद्धचेतनारूप ही भया बहुरि दर्शन ज्ञान चारि
त्र कहनै तैं तीनूं एक ज्ञानचेतना ही के परिणाम है सो ही ज्ञानस्वभावरूप धर्म है। बहु
रि जीवनि की रक्षा कहनै तैं जीव कै आपकै तथा पर कै क्रोधादिक कषायनि के व
श तैं पर्याय का विनाशरूप मरण तथा दुःख संक्लेश परिणाम न करणां ऐसा अपना
भाव सो ही धर्म है ऐसैं शुद्ध द्रव्यार्थिकरूप निश्चयनय करि साध्या हूवा धर्म एक ही प्रका
र है। बहुरि व्यवहारनय है सो पर्यायाश्रित है सो यह भेदरूप है सो या करि विचारिये
त जीव पर्यायरूप परिणाम अनेक प्रकार है तातैं धर्म भी अनेक प्रकार करि वर्णन कि
या है तहां एक देश कूं प्रयोजन के वशतैं सर्व देश कहिए सो व्यवहार है बहुरि अन्यव

५

हावस्तुस्वभावकहनेमैंतोजेनिर्विकारचेतनाकेशुद्धपरिणामकेसाधकरूपमंदक
षायरूपशुभपरिणामतथावाह्यक्रियाहैंतेसर्वहीव्यवहारधर्मकरिकहियेहैंऐसें
हीउत्तमक्षमादिकरूपमंदकषायहैंतथातिनिकेसाधकवाह्यक्रियादिकहेतेसर्व
हीव्यवहारधर्मकरिकहियेहैंवहुरितैसेंहीरत्नत्रयकहनेमैंस्वरूपकेभेददर्शनज्ञा
नचारित्रतथातिनिकेकारणवाह्यक्रियादिकतेसर्वहीव्यवहारधर्महैंतथातैसैंही
जीवनिकीदयाकहनेतैंक्रोधादिककषायमंदहोनेतैंअपनेवापरकेमरनदुःखक्ले
शआदिनकरनातिसकेसाधकवाह्यक्रियादिकतेसर्वहीधर्महैंऐसैंनिश्चयव्यवहा
रनयकरिसाध्यासाधनरूपजिनमतमैंधर्मकहिएहैंतहांएकस्वरूपअनेकस्वरूपकहने
तैंस्याद्वादकरिविरोधनांहीआवैहैंकथंचितविवक्षातेंसर्वप्रमांणसिद्धहैं वहुरि। ५

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

ऐसेधर्मकामूलदर्शनकह्यासोऐसेधर्मकीश्रद्धाप्रतीतिरुचिसहित आचरणक
रनांसोहीदर्शनहैयहधर्मकीमूर्त्तिहैंयाहीकूंमतकहियेसोयहहीधर्मकामूलहैं वहु
रिऐसाधर्मकीपहलैंश्रद्धाप्रतीतिरुचिनहोयतोधर्मकाआचरणनहोयजैसेवृक्ष
केमूलविनास्कंधादिकनहोयतैसेंसोदर्शनकूंधर्मकामूलकहनायुक्तहै सोऐसा
दर्शनकाजैसेंसिद्धांतनिमेंवर्ननहैतैसेंकिछूलिखियेहैं तहांअंतरंगसम्यग्दर्शन
हैसोतोजीवकाभावहैसोनिश्चयकरिउपाधितैंरहितशुद्धजीवकासाक्षात्अनुभवहो
नाऐसाएकप्रकारहैसोऐसाअनुभवअनादिकालमैंमिथ्यादर्शननामांकर्मकेउद
यतैंअन्यथाहोयरह्याहैंयामिथ्यात्वकीसादिमिथ्यादृष्टीजीवकेतीनप्रकृतिसत्तामैं
होयहैमिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्वऐसैंअरयाहीकीसहकारि
णीअनंतानुवंधीक्रोधमानमायालोभकेरिभेदच्यारिकषायनामाप्रकृतिहैऐसेंएसा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

६ इसजीवकेउपसमसम्यक्त्वहोयहै। इनिप्रकृतिनिकेउपशमहोनेकेंकावाह्यकारन।
सामान्यकरिद्रव्यक्षेत्रकालभावहैतिनिमैंद्रव्यतौसाक्षात्तीर्थंकरकादे
षनाआदिकहैक्षेत्रमैंसमवशरणादिकहैकालमैंअर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनसंसार।
कानमणबाकीरहैसोहैभावमैंअधःप्रवृत्तकरणआदिकहै। बहुरिविशेषकरिअ
नेकहैतिनिमैंकेईकनिकौंतौअरहंतकाबिंबदेषनाहैकेईकनिकैजिनकेकल्याण
कआदिकीमहिमाश्रवणहैकेईकनिकेदेवनिकीऋद्धिकादेषणांहैइत्यादिवाह्य
कारणनितैंमिथ्यात्वकर्मकाउपशमभयेंउपशमसम्यक्त्वहोयहै। बहुरिइनिसात
प्रकृतिनिमैंछहकातौउपशमअथवाक्षयहोयअरएकसम्यक्त्वप्रकृतिकाउदय। ६
होयतबक्षयोपशमसम्यक्त्वकहावैइसप्रकृतिकेउदयतैंकिछूअतीचारमललगै।

बहुरिइनसातप्रकृतिनिकासत्तामैंसत्तानाशहोयतबक्षायिकसम्यक्त्वहोयहै। सोऐसैंउ
पशमादिकभयेंजीवकापरिणामभेदकरितीनप्रकारहोयहैतेपरिणामहोयसोअ
तिसूक्ष्महैकेवलज्ञानगम्यहैजातैंइनिप्रकृतिनिकाद्रव्यपुद्गलपरमाणूनिकेस्कंधहै
तेअतिसूक्ष्महैअरतिनिमैंफलदेनेंकीशक्तिरूपअनुभागहैसोअतिसूक्ष्महैसोछ
द्मस्थकेज्ञानगम्यनांहीइनिकाउपशमादिकेवलज्ञानगम्यहीहैअरइनकाउपश
मादिकहोतैंजीवकेपरिणामभीसम्यक्त्वरूपहोयतेसूक्ष्महैतेभीकेवलज्ञानगम्य
हैतथापिकिछूछद्मस्थकेज्ञानमैंआवनेंयोग्यजीवकापरिणामहोयहैतेताकेजन
वनेंकेवाह्यचिह्नहैतिनिकीपरीक्षाकरिनिश्चयकरनेंकाव्यवहारहैऐसेनहोय
तौछद्मस्थव्यवहारीजीवकेसम्यक्त्वकानिश्चयनेंयहोयतबआस्तिक्यअभावठह
रैव्यवहारकालोपहोययहबडादोषआवैंतातैंवाह्यचिह्ननिकाआगमअनुमा

७ चिह्नतोयहहैजीवउपाधिरहितशुद्धज्ञानचेतनास्वरूपआत्माकीअनुभूति।
हैसोयद्यपियहअनुभूतज्ञानकाविशेषहैतथापिसम्यक्त्वभयेयहहोयहैता
तैंयाकूंबाह्यचिह्नकहिए।ज्ञानहैसोआपकाआपकैस्वसंवेदनरूपहैताकारा
गादिकविकाररहितशुद्धज्ञानमात्रकाआपकैआस्वादहोयसोयहशुद्धज्ञान
हैसोमैंहूंअरज्ञानमेंरागादिकविकारहैतेकर्मकेनिमित्ततैंउपजेहैतेमेरारूप।
नाहीहैऐसेंभेदज्ञानकरिज्ञानमात्रकाआस्वादकूंज्ञानकीअनुभूतितैंशुद्ध
नयकैद्वारैऐसाभीश्रद्धानहोयहैजोसर्वकर्मजनितरागादिकभावतैंरहितअ।
नंतचतुष्टयमेरारूपहैअन्यभावसर्वसंयोगजनितहैऐसीआत्माकीअनुभूति ७
पुरव सोसम्यक्त्वहोयताकाचिह्नहैयहमिथ्यात्वकाअनंतानुबंधीकाअभावकरिस।

स म्यक्त्वहोयताकाचिह्नहैसोचिह्नकूंहीसम्यक्त्वकहनांयहव्यवहारहैवकु
रियाकीपरिक्षासर्वज्ञकेआगमकरितथाअनुमानकरितथास्वानुभवप्रत्यक्ष
करिइनिप्रमाणनिकरिकीजिएहै।वकुरियाहीकूंनिश्चयतत्त्वार्थश्रद्धांनभीक
हिएहैतहांआपकैतौआपकास्वसंवेदनकूंप्रधानकरिहोयहै।अरपरकैप
रकीपरिक्षापरकेवचनकायकीक्रियाकीपरीक्षातैंअंतरंगभयेकीपरीक्षाहोय।
हैयहव्यवहारहैपरमार्थसर्वज्ञजानैहैव्यवहारीजीवकैसर्वज्ञनैंभीव्यवहारही
कासरनांउपदेश्याहै।केईकहैहैजोसम्यक्त्वतौकेवलीगम्यहीहै।यातैंआपकैस।
म्यक्त्वभयेकानिश्चयनहोयतातैंआपकूंसम्यग्दृष्टीनमांननांसोऐसासर्वथा
एकांतकरिकहनांतौमिथ्यादृष्टिहैसर्वथाऐसैंकहेव्यवहारकालोपहोयसर्व
मुनिश्रावककीप्रवृत्तिमिथ्यात्वसहितठहरैतबसबहीमिथ्यादृष्टीआपकूंमानैं

५

थ्यादृष्टी ही हों मिथ्यादृष्टी तौ अन्यमती कूं कहिये है तब तिससामान्य आपभी व
हरै है। तातैं सर्वथा एकांतपक्ष ग्रहण न करणा वहुरि तत्वार्थका श्रद्धान है सो वा
ह्यचिह्न है तहां तत्वार्थ तौ जीव अजीव आश्रव वंध संवर निर्जरा मोक्ष ऐसैं सात
है वहुरि इनिमैं पुण्यपापका विशेष करिये तब नव पदार्थ होय है सो इनिकी श्रद्धा क
हिये इनिकै सनमुख बुद्धि अर रूचि कहिये इनिरूप आपना भाव करनां वहुरि प्र
तीति कहिये जैसैं सर्वज्ञ भाषे तैसैं ही है ऐसैं अंगीकार करनां वहुरि इनिका आ ।
चरणरूप क्रिया ऐसैं श्रद्धानादिक होना सो सम्यक्त्वका वाह्यरूप चिह्न है वहुरि
प्रशम संवेग अनुकंपा आस्तिक्य ए सम्यक्त्वके वाह्य चिह्न है तहां अनंतानुवंधी ६
क्रोधादिक कषायका उदयका अभाव सो प्रशम है ताका वाह्य चिह्न ऐसा जो स

र्वथा एकांत तत्वार्थके कहनेवाले जे अन्यमत तिनिका श्रद्धान तथा वा
ह्यभेष तातैं विशेष स्वार्थपणांका अभिमान करना तथा पर्यायनिविषैं एकां
ततैं आत्मबुद्धि करि अभिमान तथा प्रतीति करणी ए अनंतानुवंधीका
कार्य है सो यह जाकै न होय तथा आपका काहूनें बुरा कीया ताका घात क
रनां आदि विकाररूप बुद्धि मिथ्यादृष्टीकी जैसैं आपकै नै उपजै ऐसैं विचारि मे
रा बुरा करनवाला मेरा परिणामकरि मैं वांध्या था जो कर्म सो है अन्य तौ निमित्त
मात्र है ऐसी बुद्धि आपकै उपजै ऐसै मंदकषाय होय अर अनंतानुवंधी विना
अन्य चारित्रमोहकी प्रकृति तिनिके उदयतैं आरंभादिक क्रियामै हिंसादिक हो
य है तिसकूं भी भली न जाणै है यातैं तिसतैं प्रशमका अभाव न कहिए वहुरि
धर्मविषै अर धर्मका फलविषै परम उत्साह होय सो संवेग है तहां साधर्मी नि

१०

षै अनुराग कूं अभिलाषन कहनां जातें अभिलाषतौ इंद्रिय के विषयनि
विषै होय ताकूं कहिये है अर पुनां स्वरूप की प्राप्ति विषै अनुराग कूं अभिला
षन कहिये। बहुरि इस संवेग मैं ही निर्वेद भी भया जाननां जातें अपने स्वरू
परूप धर्म की प्राप्ति विषै अनुराग भया तब अन्य सर्व ही अभिलाष का त्याग
भया सर्व परद्रव्यनि सूं वैराग्य भया सो ही निर्वेद है। बहुरि सर्व प्राणीनि विषै
उपकार की बुद्धि तथा मैत्री भाव सो ही अनुकंपा है। तथा मध्यस्थ भाव होय जा
तैं सम्यग्दृष्टी कै शल्य नाही है काहू सूं वैर भाव न होय है सुख दुःख मरण जी
वन आपकै परकरि परकै आपकरि नाही श्रद्धै है। बहुरि जो पर विषै अनु
कंपा है सो आपही विषै अनुकंपा है जातें परका बुरा करनां विचारै तब

१९

अपने कषाय भाव तें अपना बुरा भया परका बुरां विचारै तब अपने कषाय भ
व न भये तब अपनी अनुकंपा भई। बहुरि जीव आदि पदार्थनि विषै अस्ति
त्व भाव सो आस्तिक्य है सो जीव आदिका स्वरूप सर्वज्ञ के आगम तें जानि तिन
विषै ऐसी बुद्धि होय जो ए जैसे सर्वज्ञ भाषै तैसै ही है। अन्यथा नाही है ऐसा आ
स्तिक्य भाव होय है। ऐसें ए सम्यक्त्व के बाह्य चिह्न है। बहुरि सम्यक्त्व के आठ गु
ण कहे है। संवेग निर्वेद निंदा गर्हा उपशम भक्ति वात्सल्य अनुकंपा
सो ए प्रशमादिक च्यारि ही मैं आय गये। संवेग मैं तो निर्वेद वात्सल्य अर भ
क्ति ए आय गये। बहुरि प्रशम मैं निंदा गर्हा आय गई। बहुरि सम्यग्दर्शन के आ
ठ अंग कहे है तिनि कूं लक्षण भी कहिये गुण भी कहिये। तिनि के नाम निःशं
कित निःकांक्षित निर्विचिकित्सा अमूढदृष्टी उपबृंहण स्थितीकरण वात्स

१० धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य कालाणु द्रव्य पुद्गल परमाणु इत्यादि तौ सूक्ष्म वस्तु है बहुरि
द्वीप समुद्र मेरु पर्वत आदि दूरवर्ती पदार्थ है बहुरि तीर्थंकर चक्रवर्ति आदि
अंतरित पदार्थ है ते सर्वज्ञ के आगम विषै जैसे कहे हैं तैसे है अथवा सर्वज्ञदेव
ने वस्तु का स्वरूप अनेकांतात्मक कह्या है सो सत्य है कि असत्य है ऐसे संदेह
करना सो संका कहिए यन होय ता कूं निशंकित अंग कहिए बहुरि यह संका
होय है सो मिथ्यात्व कर्म के उदय है ता का पर विषैं आत्मबुद्धि होना कार्य है सो
यह पर विषै आत्मबुद्धी है सो पर्याय बुद्धि है यह पर्याय बुद्धि भय भी उपजावे
हैं संका नाम भय का भी है ता के सात भेद है इसलोक का भय परलोक का भय १०
मरण का भय वेदना का भय अनरक्षा का भय अगुप्ति भय अकस्मात भय

ऐसे ए भय होय तब जानिये या के मिथ्यात्व कर्म का उदय है सम्यग्दृष्टी ने ये ए भय होहे
य नाही इहां प्रश्न जो भय प्रकृति का उदय तो आठमा गुणस्थान तांई है ता के निमित्त
ते सम्यग्दृष्टी के भय होय ही है भय का अभाव कैसें ता का समाधान जो यद्यपि स
म्यक्त्दृष्टी के चारित्र मोह के भेद रूप भय प्रकृति के उदय तैं भय होय है तथापि ता
कूं निर्भय ही कहिये जातें या के कर्म के उदय का स्वभाव विनासीक माने है ता तैं भ
य होतें भी निर्भय ही कहिये भय होतें ताकूं ई लाज भाजना इत्यादि करे है तहां वर्तमा
न की पीडा न सही जाय तातैं इलाज करे है यह निवलाई का दोष है ऐसे संदेह अ
र भय रहित सम्यग्दृष्टी होय ता के निःशंकित अंग होय है १ बहुरि कांक्षा नाम भो
गनि की अभिलाष का है तहां पूर्वे कीये भोगनि की वांछा तथा तिनि भोगनि की मु
ख्यक्रिया विषे वांछा तथा कर्म अर कर्म के फल विषे वांछा तथा मिथ्यादृष्टीनि के

१० चेंऐसेविषयनिविषैतृष्णाहोनांऐसोभोगाभिलाषायाकेचिह्नहैसोयहभोगाभिल
षमिथ्यात्वकर्मकेउदयतैंहोयहैसोएतृजाकैनहोयसोनिःकांक्षितअंगयुक्त
सम्यग्दृष्टीहोयहै॥सम्यक्दृष्टीयद्यपिशुभक्रियाव्रतादिकआचरणकरैहैताक
काफलशुभकर्मबंधहैताकूंभीनाहीवांछैहैव्रतादिककूंस्वरूपकेसाधककजा
णिआचरैहैकर्मकेफलकीवांछानांहीऐसेनिःकांक्षितअंगहै॥२॥बहुरिआप
विषैअपनेगुणकीमहंततातैंबुद्धिकरिआपकूंश्रेष्ठमांनिपरविषैहीनताकी
बुद्धिहोयताकूंविचिकित्साकहियएहैजाकैनहोयसोनिर्विचिकित्साअंगयु
क्तसम्यग्दृष्टीहोयहैयाकेचिह्नऐसेजोकोईपुरुषपापकेउदयतैंदुःखीहोय ११
असाताकेउदयतैंग्लानियुक्तसरीरहोयताविषैग्लानिबुद्धिनकरैऐसीबुद्धि

नकरैमैसंपदावांनहौंसुंदरसरीरवानहूंयहदीनरांकमेरीबराबरिनांहीउल
टाऐसाविचारैजोप्राणीनिकेकर्मकेउदयतैंविचित्रअनेकअवस्थाहोयहै
मेरेकर्मकाउदयऐसाआवैतबमैंभीऐसाहोयजांऊंऐसेविचारतेनिर्विचि
कित्साअंगहोयहै॥३॥बहुरिअतत्वविषैतत्वकाश्रद्धानसोमूढदृष्टिहैऐसीमू
ढदृष्टिजाकैनहोयसोअमूढदृष्टयुक्तसम्यग्दृष्टीहैतहांमिथ्यादृष्टीनिकरिथ
टाहेतुकरिदृष्टांतकरिसाधेपापदार्थहैसोसम्यग्दृष्टीकूंप्रतीतनांहीउपजावै
हैबहुरिलौकिकरूढिअनेकप्रकारहैसोयहनिःसारहै॥निःसारपुरुषनिकरि
आचरियेहै॥अनिष्टफलकीदेनहारीहैतथानिःफलहैतथाजाकाषोटाफ
लहैतथाताकाकिछूहेतनांहीताकाकिछुअर्थनांहीजोकिछुलोकरूढिच
लियेसोलोकआदरलेताकाफेरतजनाकठिनहोजायइत्यादिलोकरूढिहैंव

MEMORIAL

[illegible]

१२ वादिकमूढहैसोयहसोकल्याणकारीनांहीसदोषदेवकूंतौदेवमाननांवऊ
रितिनिकैनिमोतहिंसादिककरिअधर्मकूंधर्ममाननांवऊरिखोटाआचार
वांनसस्यवानपरिग्रहवांनसम्यक्त्वव्रतरहितकूंगुरुमाननाइत्यादिमूढदृ
ष्टीकेचिह्नहै। अवईहांदेवधर्मगुरुकैसेहोयतिनिकास्वरूपजान्याचाहियेसो
हीकहियेहैतहांरागादिकदोषअरुज्ञानावरणादिककर्मसोहीआवरणतासे
ऊजाकैमांहीसोदेवताकैकेवलज्ञानकेवलदर्शअनंतसुखअनंतवीर्ययहअ
नंतचतुष्टयहोयहैसोसामान्यतैंतोदेवऐसाएकहैअरविशेषकरिअरहं
तसिद्धऐसेदोयभेदहैं। वऊरिइनकेनामभेदकैंभेदकरियेतवहजारांनामहै १२
वऊरिगुणभेदकल्पिभेदकरियेतवअनंतगुणहैतहांपरमऔदारिकदेहा

विषेतिष्टनाघातकर्मरहितअनंतचतुष्टयसहितधर्मकाउपदेसकरनहाराऐ
साताअरहंतदेव वऊरिपुद्गलमईदेहसूंरहितलोककेसिखरतिष्ठ्यासम्यक्त्वा
दिअष्टगुणमंडितअष्टकर्मरहितऐसासिद्धदेवहै। इनकेअनेकनामहै। अहै
त। जिनसिद्धपरमात्मादेवमहादेवशंकरविष्णु। ब्रह्माहरिबुद्धसर्वज्ञवीतराग
परमात्माइत्यादिअर्थसहितअनेकनामहै। ऐसातोदेवजाननां। वऊरिगुरु
भीअर्थथकीविचारियेतोअर्हंतदेवहीहैजातेमोक्षमार्गकाउपदेशाकरन
हाराअरहंतहीहैसाक्षातमोक्षमार्गयहहीवतावैहै। वऊरिअरहंतकेपीछेछ
द्मस्थज्ञानकेधारकतिनहीकानिर्ग्रंथदिगंवरस्वरूपधारनेंवालेमुनिहैतेगुरु
हैजातेअरहतकाएकदेशशुद्धपणासम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकातिनिकेपाईये
हैसोईसंकानिर्जरामोक्षकाकारणहैतातेअर्हंतकीज्यौंएकदेशनिर्दोषहै। तेमु

हैस

करि एक प्रकार है अर विशेष करि सो ही तीन प्रकार है आचार्य उपाध्याय सा
धु ऐसें। यह पदई का विशेष है॥ तिनिकै मुनिपणां की क्रिया एक ही है। बाह्य
लिंग भी समान है॥ पंचमहाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति ऐसा चारित्र भी समान
ही है। तप भी शक्ति सारू समान ही है। साम्यभाव भी समान है॥ मूलगुण उत्त
रगुण भी समान है परीसह उपसर्गनि का सहना भी समान है आहार आदि
की विधि भी समान है चर्या स्थान आसन आदि भी समान है॥ मोक्षमार्ग का सा
धना सम्यक्ज्ञान चारित्र भी समान है॥ ध्याता ध्यान ध्येय पणा ज्ञाता ज्ञान ज्ञे
य पणा चारित्र आराधना का आराधना क्रोधादि कषायनि का जीतना इत्या
दि मुनिनि की प्रवृत्ति है सो सर्व समान है। इहां विशेष यह है जो आचार्य है से

तो पंच आचार आचरै है अन्य कूं अंगीकार करावै है वहुरि अन्य कूं दोष लागै ता
का प्रायश्चित की विधि बतावै है धर्मोपदेश दीक्षा सिक्षा दे सो तो आचार्य होय है॥
सो ऐसा गुरु वंदने योग्य है॥ वहुरि उपाध्याय है सो वादित्व। वाग्मित्व कवित्व ग
मकत्व ए च्यारि विद्या है तिनि मे प्रवीण होय है इस विषै शास्त्र का अभ्यास प्रधान
कारण है आप शास्त्र पढै अन्य कूं पढावै ऐसा उपाध्याय गुरु वंदने योग्य है या
के अन्य मुनिव्रत मूलगुण उत्तरगुण की क्रिया आचार्य समान ही होय है वहु
रि साधु है सो रत्नत्रयात्मक मोक्ष का मार्ग है ताकूं साधै सो साधु है याकै दीक्षा सिक्ष
उपदेशादिक देने की प्रधानता नांही अपनें स्वरूप के साधने विषै ही तत्पर ता
होय है निर्ग्रंथ दिगंबर मुनि की प्रवृत्ति जैसी जिनागम मैं वर्णन है तैसी सर्व ही हो
य है ऐसा साधु गुरु वंदने योग्य है अन्यलिंगी भेषी व्रतादि रहित परिग्रहवान वि

१५ ऐसाजिनमतमैंनांनयहैतस्वेतांबरहुपापनीयसंघनयाहैगोपुच्छापिछसंघनय ।
हैनिःपिछसंघनयाहै। द्राविडसंघहैसोराससर्वहीवंदनेयोग्यहैनांही। मूलसंघन ।
ग्नदिगंबरअठाईसमूलगुणधारकमयूरपिछकमंडलदयाकाअरशौचका
उपकरणधारैंयथोक्तविधिआहारकरनैंवालेगुरुवंदनेयोग्यहैजातैंःतीर्थंकर
देवदिक्षाधारैहैसोऐसाहीरूपधारैहैअन्यभेषनांहीधारैहैयाहीकूंजिनदर्शनक
हिएहैं। वहुरिधर्मजाकूंकहिएजोजीवकूंसंसारकेदुखरूपनीचापदयातैं। मोक्ष ।
कासुखस्वरूपऊंचापदमैंधारैऐसाधर्ममुनिश्रावककेभेदकरिदर्शनज्ञानचारित्रा
त्मकएकदेशसर्वदेशरूपनिश्चयव्यवहारकरिदोयप्रकारकह्याहैताकामूल १५
सम्यग्दर्शनहै। याविनाधर्मकीउत्पतिनांहीहैऐसैंदेवगुरुधर्मअरलोकविषेय

यथार्थदृष्टीहोयमूढतानहोयसोअमूढदृष्टिअंगहै। ४ वहुरिअपनेआत्माकीश ।
क्तिकावधावनासोउपवृंहणअंगहैसोसम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रकाअपनापौरुष
करिवधावनांसोहीउपवृंहणहैयाकूंउपगूहननीकहियेहै। ५ वहुरिधर्मतैंजोचु
तहोताहोयताकूंदृढकरनासोस्थितीकरणअंगहैसोजोआपकर्मकेउदयकेवश
तैंकदाचिश्रद्धानतैंतथाक्रियाचरणतैंछूटैतौआपकूंफेरिपौरुषकरिश्रद्धानचारि
त्रमैंदृढकरणांवहुरितैसैंहीअन्यधर्मात्माधर्मतैंच्युतहोयतौताकूंउपदेशादिककर ।
रिधर्मविषैंस्थापनांऐसैंस्थितिकरणअंगहोयहै। ६ वहुरिअरहंतसिद्धतथातिनि
केविंवतथाचैत्यालयतथाचतुर्विधसंघतथाशास्त्रदानविषैदासपणांहोयजैसैंस्वा
मीकाभृत्यदासहोयतैसैंवात्सल्यअंगहैतहांधर्मकेस्थानकनिकौंउपसर्गादिकआ
वेतिनिकूंअपनीशक्तिसामर्थ्यमेटैअपनीशक्तिकूंछिपावैनांहीयहधर्मतैंअतिप्र ।

१५ वे अैसैं तहां अपने आत्माकारत्नत्रयकरि उद्योत करणं अरदांन पूजा विद्या अतिश- तपजिन
य चमत्कारादिक करि जिनधर्मका उद्योतकरणं ऐसैं प्रभावना अंग होय है ८ ऐ-
से ए आठ अंग सम्यक्त्वके हैं जाकै प्रगट होय ताकै जानिये सम्यक्त्व है इहां प्रश्न जो
ये सम्यक्त्वके चिह्न कहे तैसे ही मिथ्यादृष्टीकै भी दीखै तब सम्यक्त्व मिथ्याका विभाग कै-
से होय ताका समाधान जो जैसे सम्यक्त्व दृष्टीकै होय तैसे न होय है तोऊ अपरीक्षक
कूं समान दीखै तहां परीक्षा किये भेद जान्यां जाय है बहुरि परीक्षाविषै अपना स्वानु-
भव प्रधान है सर्वज्ञके आगममैं आत्माका अनुभव होनां कह्या है तैसा आपकै
होय तब ताकै होनैं अपनी वचनकायकी प्रवृत्ति भी तिस अनुसार होय है तिस प्रवृ- १५
त्तिकै अनुसार अन्यकी भी वचनकायकी प्रवृत्ति पहचांनिये है ऐसी परीक्षा कीं

ये विभाग होय है बहुरि यह व्यवहार मार्ग है सो व्यवहारी छद्मस्थ जीवनिकै अप-
नें ज्ञानकै अनुसार प्रवृत्ति है यथार्थ सर्वज्ञदेव जानै है व्यवहारीकूं सर्वज्ञदेवा-
व्यवहार ही का आश्रय बताया है यह तौ अंतरंग सम्यक्त्व भावरूप सम्यक्त्व सो ही स-
म्यग्दर्शन हैं ॥छ॥ बहुरि बाह्य दर्शन व्रत समिति गुप्तिरूप चारित्र अर तप सहित अठ-
ाईस मूलगुण सहित नग्न दिगंबर मुद्रा याकी मूर्त्ति है ताकूं दर्शन कहिए यह सम्यक्त्व
सहित दर्शन जिनमत है ऐसैं धर्मका मूल सम्यग्दर्शन जानिये सम्यक्त्व दर्शन र-
हित है तिनिका वंदना पूजनां निषेध्या है सो भव्यजीवनिकूं यह अंगीकार करनें
योग्य है ॥छ॥ आगै अंतरंग सम्यग्दर्शन विनां बाह्य चारित्रतैं निर्वाण नांही ऐसैं क-
हे ॥ गाथा ॥ दंसणभट्ठा भट्ठा दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं ॥ सिज्झंति चरियभट्ठा
दंसणभट्ठा ण सिज्झंति ॥छ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष दर्शनतैं भ्रष्ट हैं ते भ्रष्ट है ॥ जे दर्शनतैं

कूं प्राप्त होय है अर दर्शन भ्रष्ट है ते सिद्धि कूं प्राप्त नांही होय है ॥ भावार्थ ॥ जो जिनमत की श्रद्धा तें भ्रष्ट है तिनि कूं भ्रष्ट कहिये अर श्रद्धा तें भ्रष्ट नांही है अर कदाचित् चारित्र तें भ्रष्ट कर्म के उदय तें भये हैं तिनि कूं भ्रष्ट न कहिये जातें जो दर्शन तें भ्रष्ट है ताकै निर्वाण की प्राप्ति नांही होय है जो चारित्र तें भ्रष्ट होय है अर श्रद्धा दृढ रहै है तिनि कै तो सीघ्र ही फेरि चारित्र का ग्रहण होय मोक्ष होय है बहुरि जे दर्शन श्रद्धा तें भ्रष्ट होय है तिनि कै फेरि चारित्र का ग्रहण कठिन होय है तातें निर्वाण की प्राप्ति दुर्लभ होय है जैसें वृक्ष का स्कंधादिक कटि जाय अर मूल बण्या रहै तो स्कंधादिक शीघ्र ही फेरि होय फल लागै अर मूल उपडै तब स्कंधादिक कैसें होय तैसें धर्म का मूल दर्शन जानना ॥ छ ॥ आगे सम्यग्दर्शन तें भ्रष्ट है अर शास्त्रनि कूं बहुत प्रकार जाणै है

तो ऊ संसार मैं भ्रष्ट हैं ऐसैं ज्ञान तैं भी याकूं आराधक न कहिये ऐसा कहै हैं ॥

गाथा ॥ संमत्तरयणभट्ठा जाणंता बहुविहाइ सत्थाइं आराहणाविरहिया भमंति तत्थेव तत्थेव ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष सम्यक्त्वरूप रत्नत्रय करि भ्रष्ट हैं अर बहुत प्रकार के शास्त्रनि कूं जाणैं है तो ऊ ते आराधना करि रहित भये संते तिस संसार विषै ही भ्रष्ट है दोय बार कहने तैं बहुत भ्रमणा जनाया है ॥ भावार्थ ॥ जे जिनमत की श्रद्धा तैं भ्रष्ट है अर शब्द न्याय छंद अलंकार आदि अनेक प्रकार के शास्त्रनि कूं जाणै है तो ऊ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपरूप आराधना तिनि कै नांही होय है यातैं कुमरण करि चतुर्गतिरूप संसार विषै ही भ्रमण करै है मोक्ष नांही पावै है जातें सम्यक्त्व विना ज्ञान कूं आराधना नाम न कहिये ॥ छ ॥ आगे कहै है तप कूं करै अर सम्यक्त्व करि रहित होय तो तिनि कै स्वरूप का लाभ न होय ॥ गाथा ॥

न

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

सहस्सकोडीहिं ॥५॥ अर्थ ॥ जे पुरुष सम्यक्त्व करि विरहित हैं ते सुष्टु कहिये भ
लै प्रकार उग्र तप कूं आचरते हैं तोऊ ते बोधि कहिए सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
रित्रमयी आपना स्वरूप ताका लाभ कूं नाहीं पावै है जो हजार कोडि वर्ष तां
ई तप करै तोऊ स्वरूप की प्राप्ति न होय ॥ इहां गाथा मैं णं ऐसा दोय जायगा है।
सो प्राकृत मैं अव्यय है याका अर्थ वाक्य का अलंकार है ॥ भावार्थ ॥ सम्यक्त्व वि
ना हजार कोडि वर्ष पर्यंत तप करै तोऊ मोक्षमार्ग की प्राप्ति नाहीं ॥ इहां हजार
कोडि कहने तैं एते ही वर्ष न जानने काल का बहुतपना जनाया है तप मनुष्य
पर्याय ही मैं होय है तातैं मनुष्य का काल भी थोडा है तातैं तप कहने तैं वर्ष बहु
त ही कहिए ॥ [illegible] ॥ आगैं ऐसैं पूर्वोक्त प्रकार सम्यक्त्व विना चारित्र तप निःफल क

हे अब सम्यक्त्व सहित सर्व ही प्रवृत्ति सफल है ऐसैं कहै हैं ॥ गाथा ॥ सम्मत्तणाणदंसण
बलवीरियवड्ढमाण जे सव्वे। कलिकलुसपावरहिया वरणाणी होंति अइरेण
॥६॥ अर्थ ॥ जो पुरुष सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन बल वीर्य इनि करि वर्द्धमान है अर कलु
षपाय कहिये इस पंचम काल के मलिन पाप करि रहित हैं ते सर्व ही थोरे ही का
ल मैं वरज्ञानी कहिये केवलज्ञानी होय है ॥ भावार्थ ॥ इस पंचम काल मैं जड वक्र जी
वनि कै निमित्त करि यथार्थ मार्ग अपभ्रंस भया है तिसकी वासना तैं रहित भये जे
जीव यथार्थ जिनमार्ग के श्रद्धानरूप सम्यक्त्व सहित ज्ञान दर्शन अपना पराक्रम
बल नाहीं छिपाय अर अपनी वीर्य शक्ति करि वर्द्धमान भये संते प्रवर्त्तै हैं ते थोडे
ही काल मैं केवलज्ञानी होय मोक्ष कूं पावै है ॥ आ ॥ आगैं कहै है जो सम्यक्त्व रूप जल
का प्रवाह आत्मा कैं कर्म रज न लागने दे है ॥ गाथा ॥ सम्मत्तसलिलपवहो णिच्च

१५ पुरुषका हृदय विषै सम्यक्त्वरूप जलका प्रवाह निरंतर वर्त्तै है ता पुरुषकै कर्मसो
ही भया वालुरजका आवरण सो नांही लागै है। बहुरि ताकै पूर्वैं लग्या कर्मका बं
ध सो भी नासकूं प्राप्त होय है॥ भावार्थ॥ सम्यक्त्व सहित पुरुषकै कर्मके उदयतैं भये जे
रागादिक भाव तिनिका स्वामीपणा नांही है तातैं जलकी उपमा है जैसैं जलका प्रव ।
ह निरंतर वहै तहां वालू रेत रज लागै नांही तातैं सम्यक्त्ववान जीव कर्मके उद
यकूं भोगता भी कर्मतैं नांही लिपै है॥ अर बाह्य व्यवहार अपेक्षा ऐसा भावार्थ
जाननां जाकै निरंतर हृदयमैं सम्यक्त्वरूप जलका प्रवाह वहै है सो सम्यक्त्वव ।
न पुरुष इस कलिकाल संबंधी वासनां जो कुदेव कुशास्त्र कुगुरु निकै नम १५
स्कारादिरूप अतीचाररूप रज भी नांही लगावै है अर ताकै मिथ्यात्वसंबंधी

प्रकृतिनिका आगामी बंध भी नांही होय है॥ ७॥ आगै कहै है जे दर्शनभ्रष्ट है।
अर ज्ञान चारित्रतैं भी भ्रष्ट हैं ते विशेषकरि भ्रष्ट है ते आप तौ भ्रष्ट है ही परंतु।
अन्यकूं भ्रष्ट करै है यह अनर्थ करै है॥ गाथा॥ जे दंसणेसु भट्ठा णाणे भट्ठा च
रित्तभट्ठा य। एदे भट्ठविभट्ठा सेसं पि जणं विणासंति॥ ८॥ अर्थ॥ जे पुरुष दर्शन
विषै भ्रष्ट है। बहुरि ज्ञान चारित्रतैं भ्रष्ट है। ते पुरुष भ्रष्टनि विषै भी विशेष भ्रष्ट है
ते केई तौ दर्शन सहित है अर ज्ञान चारित्र जिनिकै नांही है बहुरि केई अंतरं
ग दर्शन भ्रष्ट है तौ ऊ ज्ञान चारित्र नीकैं पालै है॥ अर जे दर्शन ज्ञान चारित्र इ।
नि तीननि ही तैं भ्रष्ट है ते तौ अत्यंत भ्रष्ट है ते आप तौ भ्रष्ट है ही परंतु विशेष क
हिये आप शिवाय अन्य जान है। तिनिकूं भी नष्ट करै है भ्रष्ट करै है॥ भावार्थ॥ इहां
सामान्य वचन है तातैं ऐसा भी आशय सूचै है जो सत्यार्थ श्रद्धान ज्ञान चारि

१८ लस्वछाचारीहतत्र्यापभ्रष्टहजसहोत्र्यन्यलोककूं उपदेसादिककरिभ्रष्टकरहै
तथातितिनिकीप्रवृत्तितेंस्वयमेवलोकभ्रष्टहोयहैतातेंऐसेतीव्रकषाईनिषिद्धहै
तिनिकीसंगतिकरनांभीउचितनांही॥७॥आगैंकहेहैजोऐसेभ्रष्टपुरुषत्र्यापभ्र
ष्टहैतेधर्मात्मापुरुषनिकूंदोषलगायभ्रष्टवतावैहै॥गाथा॥जोकोविधम्मसीलो
संजमतवणियमजोयगुणधारी॥तस्सयदोसकहंता॥भग्गाभग्गत्तणंदिंति॥८॥त्र्य
र्थ॥॥जोकोईपुरुषधर्मशीलहैत्र्यपनास्वरूपरूपधर्मसाधनेंकाजाकास्वभा
वहैतथासंयमकहियइंद्रियमनकानिग्रहषटकायजीवनिकीरक्षात्र्यरतपक
हियेवाह्यत्र्यभ्यंतरभेदकरिवारहप्रकारतपनियमकहियेत्र्यावश्यककत्र्यादिनि १८
त्यकर्मयोगकहियेसमाधिध्यानतथावर्षाकालत्र्यादित्रिकालयोगगुणकहिये

मूलगुणउत्तरगुणइनिकाधारनेंवालाहैंताकेकेईमतभ्रष्टजीवदोषनिक १
त्र्यारोपणकरिकहेहैजोएभ्रष्टहैदोषनिसहितहैतेपापात्माजीवत्र्यापभ्रष्टहै
तातेंत्र्यपनांत्र्यभिमांनपोषनेकूंत्र्यन्यधर्मात्मापुरुषनिकूंभीभ्रष्टपणादेहै
॥भावार्थ॥पापीनिकाऐसाहीस्वभावहोयहैजोत्र्यापपापीहै॥तैसेंहीधर्मात्मामैं
दोषवताकैत्र्यापसमानकीयाचाहैऐसेपापीनकीसंगतिनकरनी॥८॥त्र्यागैं
कहैहैंजोदर्शनभ्रष्टहैसोमूलभ्रष्टहैताकेफलकीप्राप्तिनाही॥गाथा॥जहामू
लम्मिविणट्ठे॥दुमस्सपरिवारणत्थिपरिवट्ठी॥तहजिणदंसणभट्ठा॥मूलवि
णट्ठाणसिज्झंति॥१०॥त्र्यर्थ॥जैसेंवृक्षकामूलविनष्टहोतेसंतेताकेपरिवारक
हियेस्कंधसाखापत्रपुष्पफलताकीवृद्धिनहोयतैसेंजेजिनदर्शनतेंभ्रष्टहैवा
ह्यतौनिग्रंथलिंगनग्नदिगंवरयथाजातरूपमूलगुणकाधारणमोरपांषकी

२० शुद्ध भेषका धारण तथा भेषधारण न होय तो ताका श्रद्धा नहीं करणा। अर अंत
रंग जीवादिक षट् द्रव्य नव पदार्थ सप्त तत्वका यथार्थ श्रद्धान तथा भेदविज्ञान क
रि आत्मस्वरूपका अनुभवन ऐसा दर्शण मत तैं बाह्य है ते मूल विनष्ट है। तिनिकै
सिद्धि नाही होय है मोक्षफलकूं नांही पावै है ॥ ७ ॥ आगैं कहै है जो जिनदर्शन है सो
ही मोक्षमार्ग है ॥ गाथा ॥ जह मूलाउ खंधो। साहापरिवार बहुगुणो होई। तह जिणदं
सणमूलो। णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जैसें वृक्षकै मूलतैं स्कंध होय है
कैसा स्कंध होय है साखा आदि परिवार बहुल है साखा आदि परिवार बहुत है गुण जा
कै इहां गुण शब्द बहुलका वाचक है। तैसे ही मोक्षमार्गका मूल जिनदर्शन गण २०
धर देवादिकनैं कह्या है ॥ भावार्थ ॥ इहां जिनदर्शन कहिये जो भगवान तीर्थंकर दे

न

व दर्शन ग्रहण कीया सो ही उपदेश्या सो ऐसा मूलसंघ है। अठाईस मूलगुण सहि
त कह्या है पंच महाव्रत पांच समिति। छह आवश्यक पांच इंद्रियनिका वसि करनें
भूमि मैं सोवनां स्नान न करनां वस्त्रका त्याग दिगंबर मुद्रा। केशलोंच नैं करना। एक
वार भोजन करनां। खड़ा भोजन करनां। दंतधावन न करनां। ए अठाईस मूलगु
ण है। बहुरि छियालीस दोष टालि आहार करनां सो एषणा समिति मैं आय ग
या ईर्यापथ सोधि चालणा सो ईर्या समिति मैं आय गया अर दयाका उपकरण तै
मोरकी पांषकी पीछी अर शौचका उपकरण कमंडलका धारण ऐसा तौ बाह्य भे
ष है बहुरि अंतरंग जीवादिक षट् द्रव्य पंचास्तिकाय सप्त तत्व नव पदार्थ नि
कूं यथोक्त जानि श्रद्धान करनां अर भेद विज्ञान करि अपना आत्मस्वरूप
का अनुभव करनां ऐसा दर्शन जो मत सो मूलसंघका है। ऐसा जिनदर्शन

भ्रष्ट भये हैं सो इस पंचमा कालके दोषतैं जैनाभास भये हैं॥ श्वेतांबर द्राविड
यापनीय गोपुच्छिक निःपिच्छ ऐसें पांच संघ भये हैं॥ तिनिनैं सूत्र सिद्धांत अपभ्रं
स कीये हैं॥ बाह्य भेष पलटि बिगाड्या हैं॥ ते जिनमतके मूलसंघतें भ्रष्ट हैं॥ ति
निकै मोक्षमार्गकी प्राप्ति नाहीं है मोक्षकी प्राप्ति मूलसंघके श्रद्धान ज्ञान आ
चरन हीतैं है ऐसा नियम जानना॥ ३॥ आगें कहै है जो यथार्थ दर्शनतें
भ्रष्ट हैं अर दर्शनके धारकनितैं आपा विनय कराया चाहै हैं ते दुर्गति पा
वै हैं॥ गाथा॥ जे दंसणेसु भट्ठा॥ पाए पाडंति दंसणधराणं॥ ते होंति लुल्लमू
या॥ बोही पुण दुल्लहा तेसिं॥ १२॥ अर्थ॥ जे पुरुष दर्शनविषें भ्रष्ट हैं अर अ
न्य जे दर्शनके धारक हैं तिनिकूं अपनें पगांनि पडावै है नमस्कार करावै है ते २१

पर भवविषें लूला मूका होय है अर तिनिकै बोध कहिये सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
रित्रकी प्राप्ति सो दुर्लभ होय है॥ भावार्थ॥ जे दर्शन भ्रष्ट हैं ते मिथ्यादृष्टी हैं अर द
र्शनके धारक हैं ते सम्यग्दृष्टी हैं सो मिथ्यादृष्टी होय करि अर सम्यग्दृष्टीनिकौं
नमस्कार कराया चाहै हैं ते तीव्र मिथ्यात्वके उदयसहित हैं ते परभवविषें लूला मूका
होय है भावार्थ एकेंद्रिय होय है तिनिकै पगां नाहीं वचन नाहीं ते परमार्थतैं
लूला मूका है ऐसें एकेंद्रिय थावर होय निगोदमें वास करै हैं तहां अनंत
काल रहै हैं॥ तिनिकै दर्शन चारित्रकी प्राप्ति दुर्लभ होय है मिथ्यात्वका फल
निगोद ही कह्या है॥ इस पंचमकालमें मिथ्यामतके आचार्य बणिकलोक
तें विनयादिक पूजा चाहै हैं तिनिकै जानिये है त्रसरासिका काल पूरा हूवा
एकेंद्रिय होय निगोदमें वास करेंगे ऐसें जान्या जाय है॥ ३॥ आगें क

MEMORIAL

२२ हीहैं ॥ गाथा ॥ जे पिय पई ते चेतसिं । जाणंता लज्जागारव भयेण । तेसिं पि णत्थि
बोही पावं अणुमोयमाणाणं ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष दर्शनसहित है ते आप दर्श
नभ्रष्ट है तिनिकूं मिथ्यादृष्टी जाणते संते भी तिनिके पगा पडै है तिनिका लज्जा १
भयगारव करि विनयादिक करै है । तिनिकै भी बोधि कहिए दर्शन ज्ञान चा १
रित्रता की प्राप्ति नाही है जातैं ते भी पाप जो मिथ्यात्व ताका अनुमोदना क
रते हैं । करना कराबना अनुमोदना करना समान कह्या है । इहां लज्जा
तौ ऐसैं जो हम काहूका विनय न करैंगे तौ लोक कहैगे ए उद्धत है मानी है
तातैं हमकूं तौ सर्वही का साधन करना । ऐसैं लज्जा करि दर्शनभ्रष्टका भी २२
विनयादिक करै वहुरि भय ऐसैं जो यह राजमान्य है तथा मंत्र विद्यादिक

की सामर्थ्ययुक्त है या का विनय न करैंगे तौ किछु हमारै परि उपद्रव करैगा ऐसैं भय
ऐसैं भय करि विनय करै वहुरि गारव ऐसा जो गारव तीन प्रकार कह्या है रस
गारव ऋद्धिगारव सातगारव तहां रसगारव तौ ऐसा जो मिष्ट इष्ट पुष्ट भोजना १
दिक मिलवौ करै तव ता करि प्रमादी रहै वहुरि रिद्धिगारव ऐसा जो किछु
आदि तपके प्रभाव करि रिद्धी की प्राप्ति होय ताका गौरव आय जाय ता करि उद्धत प्र
मादी रहै । वहुरि सातागारव ऐसा जो सरीर नीरोग होय कछु कै लेश का कार
न न आवै तव सुखिया पणा आय जाय ता करि मग्न रहै इत्यादि गारवभाव म
स्ताई तैं किछु भले वुरे का विचार न करै तव दर्शनभ्रष्टका भी विनय करने ला
गि जाय इत्यादि निमित्त तैं दर्शनभ्रष्ट का विनय करै तौ यामैं मिथ्यात्व की अ
नुमोदना आवै ताकूं भला जाणै तव आप भी ता समान भया तव ताकै बोधि

है ॥गाथा॥ दुविहं पि गंथचायं तीसु वि जोएसु संयमो ठादि । णाणम्मि करणसु
द्धे उब्भसणे दंसणं होई ॥१४॥ अर्थ ॥ जहां बाह्य अभ्यंतर भेदकरि दोय प्रकारका प
रिग्रहका त्याग होय ॥ अर मन वचन काय ऐसे तीनूं योगनिविषैं संयम ति
ष्ठै । बहुरि कृत कारित अनुमोदना ऐसी तीन करण जामें शुद्ध ऐसा ज्ञान
होय बहुरि कृत कारित अनुमोदना आपकान लागै ऐसा निर्दोष पाणिपा
त्र आहार करै ऐसैं मूर्तिवंत दर्शन होय है ॥ भावार्थ ॥ इहां दर्शन नाम मतका है
तहां बाह्य भेष शुद्ध दीखै सो दर्शन सो ही ताके अंतरंग भावकूं जनावै तहां बा
ह्य परिग्रह तौ धनधान्यादिक अर अंतरंग परिग्रह मिथ्यात्व कषाय तहां न
होय यथाजात दिगंबर मूर्ति होय । बहुरि इंद्रीय मनका वसि करनां त्रस था

वर जीवनिकी दया करनी ऐसा संयम मन वच काय करि शुद्ध पालनां जहां है
य अर ज्ञान विषै विकार का करनां करावनां अनुमोदनां ऐसी तीन करणनि
करि विकार न होय अर निर्दोष पाणिपात्र षडा रहि भोजन का करनां ऐसैं दर्शनकी
मूर्ति है सो जिनदेवका मत है सो ही वंदनें पूजनें योग्य है अन्य पाखंड भेष वंद
नें पूजनें योग्य नाहीं हीं ॥१४॥ आगैं कहै है जो इस सम्यग्दर्शनतें ही कल्याण अक
ल्याणका निश्चय होय है ॥ गाथा ॥ सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभाव उवलद्धी
उवलद्धपयत्थे पुण सेयासेयं वियाणेहि ॥१५॥ अर्थ ॥ सम्यक्त तैं तो ज्ञान सम्य
क् होय है ॥ बहुरि सम्यक्ज्ञानतैं सर्व पदार्थनिकी उपलब्धि कहिये प्राप्ति
था जानना होय है । बहुरि पदार्थनिकी उपलब्धि होतैं श्रेय कहिये क
ल्याण अर अश्रेय कहिये अकल्याण इनि दोऊनिकूं जानिये ॥ भावार्थ ॥ स

म्यग्दर्शनज्ञानविना कूं मिथ्याज्ञान कह्या है तातें सम्यग्दर्शन नयहां सम्यग्ज्ञा
न होय है। अरु सम्यग्ज्ञानतें जीव आदि पदार्थनिका स्वरूप यथार्थ जानिये है। व
हुरि जब पदार्थनिका यथार्थ स्वरूप जानिये तब मला बुरा मार्ग जानिये है ऐसें
मार्ग के जानने में भी सम्यग्दर्शन ही प्रधान है ॥ ७ ॥ आगें कल्याण अकल्याण
कूं जाने कहा होय है सो कहै है ॥ गाथा ॥ सेयासेयविदराहू। उदु वदुस्सीलसील
वंतोवि। सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहइ णिव्वाणं ॥ २६ ॥ अर्थ। कल्याण मार्ग अ
कल्याण मार्ग का जाणनेवाला पुरुष है सो उद्धुदु दुसील कहिये उडाया है मिथ्या
स्वभाव ताका फल करि अभ्युदय पावै है तीर्थंकर आदि पद पावै है बहुरि अभ्यु
दय पाय पीछें निर्वाण कूं प्राप्ति होय है ॥ भावार्थ ॥ भला बुरा मार्ग जाणें तब अनादि
संसार तें लगाय मिथ्याभाव रूप प्रकृति है सो पलटि सम्यक् स्वभाव रूप प्रकृ २४

ति होय सिति सप्रकृति तें विशिष्ट गुण वांधे तब अभ्युदय रूप पदई तीर्थंकर आ
दि की पाय करि निर्वाण पावै ॥ ७ ॥ आगें कहै है जो ऐसा सम्यक्त्व जिनवचन
तें पाईए है तातें ते ही सर्व दुःख के नाश करणहारे है ॥ गाथा ॥ जिणवयणउसहमि
णं विसयसुहविरेयणं अमिदभूयं ॥ जरमरणवाहिहरणं खयकरणं
सव्वदुक्खाणं ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ यह जिनवचन है सो औषध है कैसा औषध है विषय
सुख सो इंद्रियनि कै विषयनि तें मान्या सुख ताका विरेचन कहिये दूरि करन
हारा है बहुरि कैसा है अमृतभूत कहिये अमृत सारिषा है ॥ या ही तें जरा मरण
रूप रोग ताका हरणहारा है ॥ बहुरि सर्व दुःखनिका क्षय करनहारा है ॥ भाव
र्थ ॥ यह संसारी विषय सुख सेवै है तिस तें कर्म बंधे है तिस तें जन्म जरा मरण
रूप रोग करि पीडित है तहां जिनवचन रूप औषध ऐसा है जो विषय सुख

[illegible]
ज्यस्आदिरोगउपजैततवताकेविरेचनकूंहरडैआदिऔषधहोयतैसेंहैसो
विषयनितेंवैरागहोयतवकर्मबंधनहोयतवजन्मजरामरणरोगनहोयत
वसंसारकादुःखकाअभावहोयऐसैजिनवचनकूंअमृतसारिषेजाणिअं
गीकारकरनें ॥ आगैजिनवचनविषेदर्शनकालिंगभेदेषकेप्रकारकु
ह्याहैसोकहैहै ॥ गाथा ॥ एगंजिणस्सरूवं वीयंउक्किट्ठसावयाणं तु ॥ अवरि
ट्ठियाण तइयं चउछंपुण लिंगदंसणे णत्थि ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ दर्शनविषेएकतौजि
नकास्वरूपहैजैसाजिनदेवलिंगधार्याहैसो ॥ वहुरिदूजाउत्कृष्टश्रावक
निकाहै ॥ वहुरितीजाअवरस्थितकहियेजघन्यपदविषेस्थितऐसीअर्यि २५
कानिकाहैवहुरिचौथालिंगदर्शनविषेनाहीहै ॥ भावार्थ ॥ जिनमतविषेतीं

नहीलिंगकहिएहैएककह्याएकतोयथाजातरूपजिनदेवधार्यासोहै ॥ वहुरिदूजाउत्कृ
ष्टश्रावकग्यारमीप्रतिमाकाधारककाहै ॥ वहुरितीजास्त्रीअर्यिकाहोयताकाहै ॥ वहु
रिचौथाअन्यप्रकारकाभेषजिनमतविषेनांहीहै ॥ जेमानैहैतेमूलसंघतैवाह्य
है ॥ आगैऐसावाह्यलिंगहोयताकेअंतरंगश्रद्धानऐसाहोयसोसम्यग्दृष्टी
है ॥ गाथा ॥ छहदव्वणवपयत्था ॥ पंचत्थीसत्ततच्चणिद्दिट्ठा ॥ सद्दहइताणरूवं ॥ सो
सद्दिट्ठीमुणेयव्वो ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ छहद्रव्यनवपदार्थपंचास्तिकायसप्ततत्वएजिनव
चनविषेकह्याहैतिनिकास्वरूपकूंजोश्रद्धानकरैसोसम्यग्दृष्टीजाननां ॥ भावार्थ ॥
जीवपुद्गलधर्मअधर्मआकाशकालएतोछहद्रव्यहैवहुरिजीवअजीवआश्र
ववंधसंवरनिर्जरामोक्षपुण्यपापएनवपदार्थहै ॥ छहद्रव्यकालविनांपंचास्ति
कायहै पुण्यपापविनांनवपदार्थसाततत्वहै ॥ इनिकासंक्षेपस्वरूपऐसाजे १

मूर्त्तीकहैयाकेपरमाणुअरस्कंधऐसैदोयभेदहे। बहुरिस्कंधकेभेददशहैसब्द
वंधसूक्ष्मस्थूल॥ संस्थानभेदतमछायाआतापउद्योतइत्यादिअनेकप्रकार
हे। धर्मद्रव्यजीवपुद्गलकूंगमनसहकारीहे। अधर्मद्रव्यजीवपुद्गलकूंस्थानस
हकारीहे॥ आकाशद्रव्यअवगाहनागुणस्वरूपहेकालद्रव्यवर्त्तनानिमि
त्तहे। जीवअनंताहेपुद्गलतिनितेंअनंतगुणहेधर्मद्रव्यअधर्मद्रव्यआका
शद्रव्यएकएकहै। कालाणुअसंख्यातद्रव्यहैं। पांचद्रव्यकेबहुप्रदेशीपणातें
पांचअस्तिकायहेकालद्रव्यबहुप्रदेशीनाहीतातेंअस्तिकायनहीइत्यादिइ
नकास्वरूपतत्त्वार्थसूत्रतेंजांननां॥ बहुरिएकतोजीवपदार्थअजीवपदार्थ २६
पांच। एहतोछद्रव्यबहुरिजीवकेपुद्गलकर्मबंधयोग्यहोयसोआस्रवकर्मवं

धयोग्यहोयसोआस्रवकर्मवंधैसोवंधआस्रवरुकैसोसंवरकर्मवंधझडैसो
निर्जरासंपूर्णनासहोयसोमोक्षजीवकूंसोसुखकानिमित्तसोपुण्यदुःखकानि
मित्तसोपापऐसैंसप्ततत्त्वनवपदार्थइनिकाआगमकेअनुसारस्वरूपजा
णिश्रद्धानकरैसोसम्यग्दृष्टीहोयहे॥ ॥ आगैंव्यवहारनिश्चयसम्यक्त्वकूंक
हैहै॥ गाथा॥ जीवादीसद्दहणं। सम्मत्तंजिणवरेहिपण्णत्तं। ववहाराणिच्छयदो।
अप्पाणंहवइसम्मत्तं॥२०॥ अर्थ। जीवआदिकहेजेपदार्थतिनिकाश्रद्धानसो
तोव्यवहारतेंसम्यक्त्वजिनभगवांननेंकह्याहै॥ बहुरिनिश्चयतेंअपनाआ
त्माहीकाश्रद्धानसोसम्यक्त्वहैहै॥ भावार्थ॥ तत्त्वार्थकाश्रद्धानसोतोव्यवहारतें
सम्यक्त्वहैं। बहुरिअपनांआत्मस्वरूपकाअनुभवकरितिसकीश्रद्धाप्रती
तिरुचिआचरणसोनिश्चयतेंसम्यक्त्वहेसोयहसम्यक्त्वआत्मातेंजुदाहीव

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टरभाऊदाजीइत्याख्यस्मारकम्

सम्यक्त्वअरआत्माएकहीवस्तुहैयहनिश्चनयकाआम्नायजाननां ॥ ७ ॥
आगेंकहेहैजोयहसम्यग्दर्शनहैसोसर्वगुणनिमेसारहैताहिधारणकरौ
॥ गाथा ॥ एवंजिणपण्णत्तं ॥ दंसणरयणंधरेहभावेण ॥ सारंगुणरयणत्तय
सोवाणंपढमंमोक्खस्स ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ जैसेपूर्वोक्तप्रकारजिनेश्वरदेवनेंकह्या
हैदर्शनहैसोगुणनिविषैंअरदर्शनज्ञानचारित्रइनितीनरत्ननिविषै
सारहैउत्तमहैवहुरि ॰ मोक्षमंदिरकेचढनेकूंप्रथमपैडीहैसोआचा
र्यकहेहैहेभव्यजीवहोतुमयाकूंअंतरंगभावकरिधारणकरौ ॥ वाह्य
क्रियादिककरिधारणातोपदार्थनांहीअंतरंगकीरुचिकरिधारणांमो २७
क्षकाकारणहोहै ॥ ७ ॥ आगेंकहेहैजोश्रद्धानकरैताहीकेसम्यक्त्वहो

यहै ॥ ७ ॥ जंसक्कइतंकीरइजंचणसक्केइतंचसद्दहणं ॥ केवलिजिणेहिंभ
णियंसद्दहमाणस्ससम्मत्तं ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ जोकरनेंकूंसमर्थहूजियेतौतौकी
जियेवहुरिजोकरनेंकूंसमर्थनहूजियेसोश्रद्धियेजातेंकेवलीभगवानश्र
द्धानकरनेंवालेकैसम्यक्त्वकह्याहै ॥ भावार्थ ॥ इहांआम्नायऐसाहैजोकोऊक
हैसम्यक्त्वभयेंपीछेंतौसर्वपरद्रव्यसंसारकूंहेयजाणियेहैसोजाकूंहेयजाणें
ताकूंछोडैमुनिहोयचारित्रआचरैतवसम्यक्त्वभईजांणियेताकासमाधा
नरूपयहगाथाहै ॥ जोसर्वपरद्रव्यकूंहेयजाणिनिजस्वरूपकूंउपादेयजाणि
यांश्रद्धानकीयातवमिथ्याभावतौमिट्यापरंतुचारित्रमोहकर्मकाउदयप्रवा
लहोयजेतैंचारित्रअंगीकारकरनेंकीसामर्थ्यनेंहोयतेतैंजीतीसामर्थ्यहोयते
तातौकरेतिससिवायकाश्रद्धानकरैऐसैंश्रद्धानकरनेंवालाहीकेभगवानस

योग्य है ॥गाथा॥ दंसणणाणचरित्ते तवविणये णिच्चकालसुपसत्था। ए दे दु वंदणी
या जे गुणवादी गुणधराणं ॥२३॥ अर्थ ॥ दंसणज्ञानचारित्र तथा तपई विनयइ
निविषैजे भले प्रकार तिष्टै है प्रसस्त है सराहनै योग्य है अथवा भले प्रकार स्व
स्थ है लीन है बहुरि गणधर आचार्य है तिनिके गुणानुवाद करनेवाले है ते वं
दने योग्य है अन्य जे दर्शनादिकतैं भ्रष्ट है अर गुणवाननितैं मत्सरभाव राषि
विनयरूप न प्रवर्त्तै है ते वंदवे योग्य नांही है ॥छ॥ आगें कहै है जो यथाजात
रूपकूं देषि मत्सरभाव करि वंदना न करै है सो मिथ्यादृष्टी है ॥गाथा॥ सहजुप्प
ण्णं रूवं दट्ठुं जो मण्णए ण मच्छरिओ। सो संजमपडिवण्णो मिच्छाइट्ठी हवइ एसो ॥ ऊ २८
॥२४॥ अर्थ ॥ जो सहजोत्पन्न यथाजात रूपकूं देषि करि न मानै है तिसका विनय

सत्कार प्रीति नांही करै है अर मत्सरभाव करै है सो संयमप्रतीपन्न है दीक्षा
ग्रहण करी है तौऊ प्रत्यक्ष मिथ्यादृष्टी है ॥भावार्थ॥ जो यथाजातरूपकूं देषि मत्स
रभाव करि ताका विनय न करै है तौ जानिये याकै इसरूपकी श्रद्धा रुचि नांही अै
सैं ॥ श्रद्धारुचि विना तौ मिथ्यादृष्टी ही होय ॥ इहां आशय ऐसो जो श्वेतांबरा
दिक भये ते दिगंबररूपतैं मत्सरभाव राषैं अर तिसका विनय न करै तिनिका
निषेद है ॥छ॥ आगैं याही कूं दृढ करै है ॥गाथा॥ अमराण वंदियाणं रूवं दट्ठू
ण सीलसहियाणं। जे गारवं करैंति सम्मत्तविवज्जिया होंति ॥२५॥ अर्थ ॥ देवनिकै ऊ
रि वंदनैं योग्य जे जिनेश्वर देव का यथाजातरूप ताकूं सील सहित धारण क
रनैंवाले तिनिका रूप देषि करि गर्व करै है विनयादिक न करै है ते सम्यक्त करिव
र्जित है ॥भावार्थ॥ जा तरूपकूं देषि अणिमादिक ऋद्धिके धारी देव भी पगां पडै ते

२८

हीहै ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो असंयमी वंदिवेयोग्य नांही है ॥ गाथा ॥ असंजदं ण वंदे
वच्छविहीणो वि सो ण वंदिज्जो । दोण्ण वि होंति समाणा एगो वि ण संजदो होदि
॥ २६ ॥ अर्थ आचार्य कहै है जो जे तपकरि सहित श्रमणपणा धारै है तिनिकूं व
हुरि तिनिके शीलकूं वहुरि तिनिके गुणकूं वहुरि तिनिके ब्रह्मचर्यकूं मैं सम्य
क्सहित शुद्धस्वभावकरि वंदौ हौ । असंयमीकूं नाहि वंदिये वहुरि भावसंय
मन होय अर बाह्य वस्त्ररहित होय सो भी वंदिवेयोग्य नाही जातैं ए दोऊ ही संय
मरहित समान है इनिमैं एक भी संयमी नांही ॥ भावार्थ जो गृहस्थ भेष धार्या है तो
तो असंयमी है ही वहुरि जो बाह्य नग्नरूप धारण कीया अंतरंग भावसंयम नं १ २९
ही है तो वह भी असंयमी है । तातै ए दोऊ असंयमी है तातैं दोऊ ही वंदिवेयोग्य।

नांही । इहां आशय ऐसा है जो ऐसै मति जानियो जो आचार्य यथाजातरूप
कूं दर्शन कहते आवै है सो केवल नग्नरूप ही यथाजातरूप होगा जातैं आचा
र्य तौ बाह्य अभ्यंतर भावसंयम विना बाह्य नग्न भये तौ किछू संयमी होय है नांही
ऐसैं जाननां ॥ छ ॥ इहां कोई पूछै जो बाह्य भेष शुद्ध होय आचार निर्दोष पालता
होय ताकै अभ्यंतर भाव मैं कपट होय ताकी निश्चय कैसै होय तथा सूक्ष्मभाव
केवलीगम्य मिथ्यात्व होय ताका निश्चय कैसै होय । निश्चय विनां वंदनां की क
क हारीति । ताका समाधान ऐसा जो कपट का जेतैं निश्चय न होय तेतैं आचार शुद्धि
देखि वंदै तामैं दोष नाही कपट का कोई कारण तैं निश्चय होय तब न वंदै । वहु
रि केवलीगम्य मिथ्यात्व का व्यवहार मैं चरचा नांही छद्मस्थ के ज्ञानगम्य की चर
चा है जो अपनें ज्ञान का विषय ही नांही ताका बाधनिर्बाध करनेंका व्यवहार नां

ग्यानगोचर अंतरंग वाह्यकी शुद्धता निश्चय करि वंदना पूजना ऐसे जाननां
॥२६॥ आगैं इसही अर्थकूं दृढ करते संते कहै है ॥ गाथा ॥ णवि देहो वंदिज्जइ णवि ण
वियकुलो णवियजाइसंजुत्तो । को वंदमि गुणहीणो ण हु सवणो णेयसावओ
होइ ॥२७॥ अर्थ देहकूं नाही वंदियै है । वहुरि कुलकूं नांही वंदियै है । वहुरि जाति संयु
क्तकूं नांही वंदियै है । जातैं गुणरहित होय ताकूं कोण वंदै गुण विना न तो मुनि न श्रा
वक ॥ भावार्थ लोकमैं भी ऐसा न्याय है जो गुणहीण होय ताकूं कोऊ श्रेष्ठ मानै नाही
देह रूपवान होय तो कहा कुल वडा भया तो कहा जाति वडी भई तो कहा तातैं मोक्ष
मार्ग मै तो दर्शन ज्ञान चारित्र गुण है इन विना जाति कुल रूप आदिक वंदनीक
नांही इनितैं मुनि श्रावकपणा आवै नांही मुनि श्रावकपणा तो सम्यग्दर्शन ज्ञान

चारित्रतैं होय है तातैं तेही वंदिवे योग्य है जाति कुल रूप आदि वंदवे योग्य नांही
॥२७॥ आगैं कहै है जो तप आदि करि संयुक्त है तिनिकूं वंदौ हौ ॥ गाथा ॥ वंदमि तव
सामण्णा सीलं च गुणं च बंभचेरं च । सिद्धिगमणं च तेसिं सम्मत्तेण सुद्धभावेण
॥२८॥ अर्थ आचार्य कहै है जो जे तप करि सहित श्रमणपणा धारै है तिनिकूं वहु
रि तिनिके शीलकूं । वहुरि तिनिके गुणकूं वहुरि तिनिके ब्रह्मचर्यकूं मैं सम्यक्त्व
सहित शुद्धभाव करि वंदौ हौं जातैं तिनिकैं तिन गुणनिकरि सम्यक्त्व सम्यक्त्व
सहित शुद्धभाव करि सिद्धि कहिए मोक्ष ता प्रति गमन होय है ॥ भावार्थ पहलैं क
ह्या था जो देहादिक वंदिवे योग्य नांही गुण वंदिवे योग्य है ॥ अर इहां गुणसहि
तकूं वंदना करी है । तहां जे तप धारि ग्रहस्थपणा छोडि मुनि भये है तिनिकूं त
था तिनिके शील गुण ब्रह्मचर्य सम्यक्त्व सहित शुद्धभाव करि होय तिनिकूं

त्मस्वरूपविषै लीनपणा लेणा॥ ॥ आगें कोई आशंका करै जो संयमी वंदनें
योग्य कह्या तौ समोसरणादि विभूति सहित तीर्थंकर हैं ते वंदिवे योग्य
हैं कि नांही ताका समाधानकूं गाथा कहै है जो तीर्थंकर परमदेव हैं ते सम्य
क्त्व सहित तपके महात्म्य करि तीर्थंकर पदवी पावै है सो भी वंदिवे योग्य है॥
गाथा॥ चउसट्ठिचमरसहिओ। चउतीसहि अइसएहिं संजुत्तो। अणवरबहु
सत्तहिओ कम्मक्खयकारणणिमित्तो॥२९॥ अर्थ॥ जो चउसठि चमरनि करि स
हित है। बहुरि चउतीस अतिशयनि करि सहित है। बहुरि निरंतर बहुत प्राणी
निका हित जाकरि होय है। बहुरि कर्मका क्षयका कारण है ऐसे तीर्थंकर प
रमदेव है ते वंदिवे योग्य है॥ भावार्थ॥ इहां चउसठि चमर चउतीस अतिशय

सहित विशेषण करि तौ तीर्थंकरका प्रभुत्व जणाया है अर प्राणीनिका हित
करना अर कर्मक्षयका कारण विशेषणनि तैं परका उपकार करनहारापणा
णा जनाया है॥ ए दोऊ ही कारणनि तैं जगतमें वंदनें पूजनें योग्य हैं। यातें ऐसें भ्र
म न करनां यो तीर्थंकर कैसें पूज्य है ए तीर्थंकर सर्वज्ञ वीतराग है तिनिकै
समवसरण आदिक विभूति रचि इंद्रादिक भक्तजन महिमा करै है इनिकै
किछु प्रयोजन नांही है आप जैसा दिगंबर रूप है ताकूं धारै अंतरीक्ष तिष्ठै है ऐ
सा जाननां॥ ॥ आगें मोक्षका हेतै होय है सो कहै है॥ गाथा॥ णाणेण दंसणेण
य तवेण चरियेण संजमगुणेण। चउहिं पि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे दि
ट्ठो॥३०॥ अर्थ॥ ज्ञान करि दर्शन करि तप करि अर चारित्र करि इनि च्यारिनिका
समाजोग होतें जो संयमगुण होय ताकरि जिनसासन विषै मोक्ष होनां कह्या है

MEMORIAL ३१

सारं सारो विणारस्स होइ सं मत्तं सम्मत्ताउ चरणं । चरणाउ होइ णिव्वाणं ॥३१॥ अ
र्थ ॥ प्रथम तौ या पुरुषकै ज्ञान सार है जातै ज्ञानतैं सर्व हेय उपादेय जांन्यां जाय
है । बहुरि या पुरुषकै सम्यक्त निश्चय करि सार है सम्यक्त विना ज्ञान मिथ्या
नाम पावै है । बहुरि सम्यक्तैं चारित्र होय है जातैं सम्यक्त विनां चारित्र भी
मिथ्या ही है । बहुरि चारित्रतै निर्वाण होय है ॥ भावार्थ ॥ चारित्रतैं निर्वाण होय है
अर चारित्र ज्ञानपूर्वक सत्यार्थ होय है अर ज्ञान सम्यक्तपूर्वक सत्यार्थ होय
है ऐसैं विचार कीयें सम्यक्तकै सारपणां आया यातैं पहलैं तौ सम्यक्त सार है
पीछैं ज्ञान चारित्र सार है पहलै ज्ञानतैं पदार्थनिकूं जानिये है यातैं पहलैं है ज्ञा
न सार है तौऊ सम्यक्त विना ताका भी सारपणां नांही ऐसा जाननां ॥ छ ॥ आ

गैं इस ही अर्थकूं दृढ करै है ॥ गाथा ॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवेण चरिएण सम्मस
हिएण । चोह्वंपि समाजोगं सिद्धा जीवा ण संदेहो ॥३२॥ अर्थ ॥ ज्ञान होतें दर्शन होतें
सम्यक्त सहित तप करि चारित्र करि करि इनि च्यारिनिका समायोग होतें जीव
सिद्धि भये हैं यामैं संदेह नाही है ॥ भावार्थ ॥ पूर्वैं जे जीव सिद्ध भये हैं ते सम्यक्त दर्श
न ज्ञान चारित्र तप इनि च्यारिनिके संयोग हीतैं भये है यह जिनवचन है यामैं सं
देह नांही ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो कल्याण विषै यह सम्यग्दर्शन रत्न पर अमो
लिक है जो देव दानवनि करि पूज्य है ॥ गाथा ॥ कल्लाणपरंपरया लहंति जीवा
विसुद्धसम्मत्तं । सम्मद्दंसणरयणं अग्घेदि सुरासुरे लोए ॥३३॥ अर्थ ॥ जीव है ते विशु
द्ध सम्यक्त है ताहि कल्याणकी परंपरा सहित पावै है तातैं सम्यग्दर्शन रत्न है सो इ
स सुर असुरनिकरि भर्या लोक विषै पूज्य है ॥ भावार्थ ॥ विशुद्ध कहिये पचीसम

र्थंकरपदईपावैहैसोयातैंयहसम्यक्त्वरत्नसर्वलोकदेवदानवमनुष्यनि
करिपूज्यहोयहै॥ तीर्थंकरप्रकृतिकेबंधकेकारणसोलहभावनाकहीहैति
निमेंपहलेंदर्शनकहीप्रधानपणाहै॥ छ॥ आगेंकहैहैउत्तमगोत्रसहितमनुष्य
पणांकूंपायसम्यक्त्वपायमोक्षपावैयहसम्यक्त्वकामहात्म्यहै॥ गाथा॥ लद्धू
णयमणुयत्तं॥ सहियंतहउत्तमेणगोत्तेण॥ लद्धूणयसंमत्तं॥ अक्खयसुक्खं
चमोक्खंच॥ ३४॥ अर्थ॥ उत्तमगोत्रसहितमनुष्यपणांप्रत्यक्षपायकरिअरतहा
सम्यक्त्वपायकरिअविनाशीसुखस्वरूपकेवलज्ञानपावैहै॥ बहुरितिस
सुखसहितमोक्षपावैहै॥ भावार्थ॥ यहसम्यक्त्वकामहात्म्यहै॥ छ॥ आगेंप्रश्नउप
जेहैजोसम्यक्त्वकेप्रभावतैंमोक्षपावैहैतत्कालही॥ मोक्षहोयहैकिकिछूका ३३

लअवस्थानभीरहैहै॥ ताकासमाधानरूपगाथाकहैहै॥ गाथा॥ विहरदिजा
वजिणिंदो॥ सहसुट्ठसुलक्खणेहिंसंजुत्तो॥ चउतीसअइसयजुत्तो॥ सापडि
माथावराभणिया॥ ३५॥ अर्थ॥ केवलज्ञानभयेंपीछेंजिनेंद्रभगवांनजेतैंइ
सलोकमैंआर्यखंडमेंविहारकरैतितिनिकीतौप्रतिमाकहिएसरीरसहित
प्रतिबिंबतिसकूंथावरप्रतिमाऐसानामकहियेकैसेहैजिनेंद्रएकहजार
आठलक्षणनिकरिसंयुक्तहै॥ बहुरिकैसेहैचौतीसअतिशयनिकरिसं
युक्तहैतहांश्रीवृक्षकूंआदिलेएकसोआठतौलक्षणहोयहै॥ बहुरिति
लमसकूंआदिलेनवसैंव्यंजनहोयहै॥ बहुरिचौतीसअतिशयमेंदशतौजन्मतें
हीलीयेउपजेहैंनिस्वेदतानिर्मलतास्वेतरुधिरतासमचतुरस्रसंस्थानवज्र
वृषभनाराचसंहननसुरूपतासुगंधतासुलक्षणताअतुलवीर्यहितमितव

शगामनप्राणिवधाभावकवलाहारअभावउपसर्गाभावचतुर्मुखत्वंसर्व
विद्याप्रभुत्वंछायारहितत्वंलोचननिस्पंदकेशनखवृद्धिरहितत्वऐसैंदश
वहुरिदेवनिकरिभयेचोदहसकलार्द्धमागधीभाषासर्वजीवमैत्रीभाव।स
र्वऋतुफलपुष्पप्रादुर्भावआदर्शसदृशपृथ्वीहोय।मंदसुगंधपवनचलै
सर्वलोककैंआनंदवर्तै।भूमिकंटकादिरहितहोयदेवगंधोदकवृष्टिक
रैंविहारहोयतवपरकमलतलेंदेवसुवर्णमयीकमलरचै।भूमिधान्यनिष्प
त्तिसहितहोयदिशाआकाशनिर्मलहोयदेवनिकाआह्वाननशब्दहोय।धर्म
चक्रआगेंचालैंअष्टमंगलद्रव्यहोयऐसैंचोदहसवमिलिचोतीसभयेव
हुरिआठप्रातिहार्यहोयहैतिनिकेनाम।अशोकवृक्ष।पुष्पवृष्टि।दिव्यध्व

नि।चामर।सिंहासन।छत्र।भामंडल।दुंदुभिवाजित्रऐसैंआठ।ऐसेंअतिश
यनिसहितअनंतज्ञानअनंतदर्शनअनंतसुखअनंतवीर्यसहिततीर्थंकरप
रमदेवजेतैंजीवनिकेसंबोधननिमित्तविहारकरतेविराजैतेतैंस्थावरप्रति
माकहियेऐसैंस्थावरप्रतिमाकहनेतैंतीर्थंकरकेकेवलज्ञानभयेंपीछेंअ
वस्थानजनायाहैंऔरधातुपाषाणकीरचिस्थापियेहैसोयाकाव्यवहारहै॥
छ आगैंकर्मनाशकरिमोक्षप्राप्तहोयहैऐसैंकहैहै।गाथा।वारसविहतवजु
त्ता।कम्मंखविऊणविहिवलेणस्स।वोसट्टचत्तदेहाणिव्वाणमणुत्तरंपत्ता
३८।अर्थ।जोवारहप्रकारतपकरिसंयुक्तभयेसंतेविधिकेवलकरिअपनें
कर्मकूंक्षपायकरिव्युत्सर्गचितकहियेन्याराकरिछोड्याहैदेह।ज्यांऐसैंभये
तेअनुत्तरकहियेजातैंपरैंअन्यअवस्थानाहीऐसीनिर्वाणअवस्थाकूंप्रा

३५ नरहैपीछैंद्रव्यक्षेत्रकालभावकीसामग्रीरूपविधिकेवलकरिकर्मखपायकु
त्सर्गकरिदेहकूंछोडिनिर्वाणकूंप्राप्तहोयहै। इहांआशयऐसाजोनिर्वाण
कूंप्राप्तहोयतवलोककेशिखरजायतिष्ठैतहांगमनविषैएकसमयलागै
तिसकालजंगमप्रतिमाकहिये। ऐसैंसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकरिमोक्ष
कीप्राप्तिहोयहैतहांसम्यग्दर्शनप्रधानहैसोइसपाहुडमैंसम्यग्दर्शनकाप्र
धानपणाकाव्याख्यानकीयाहै।सवैया२३। मोक्षउपायकह्योजिनराजजुसम्य
कदर्शनज्ञानचरित्रा। तामधिसम्यकदर्शनमुख्यभयेंनिजबोधफलैसुचरि
त्रा। जेनरआगमजानिसुमानिकरैपहिचानयथावतमित्रा। घातिखपाय ३५
सकेवलपायअघातिहनैंलहिमोक्षपवित्रा।२। दोहा। नमूंदेवगुरुधर्मकूं

जिनआगमकूंमानि। जापरसादलह्योअमल। सम्यक्दर्शनजानि॥ इति
श्रीदर्शनपाहुडकीवचनिकासमाप्त॥१॥ ॥अथसूत्रपाहुड
कीवचनिकालिखियेहै॥दोहा॥ वीरजिनेश्वरकूंनमूं। गौतमगणधरला
रकालपंचमाआदिमैं। भयेसूत्रकरतार॥१॥ ऐसैंमंगलकरिअरश्रीकुं
दकुंदआचार्यकृतप्राकृतगाथाबंधसूत्रपाहुडहैताकीदेशभाषामयवच
निकालिखियेहैंतहांप्रथमहीकुंदकुंदआचार्यसूत्रकीमहिमागर्भितसू
त्रकास्वरूपजणावैहै॥गाथा॥ अरहंतभासियत्थंगणहरदेवेहिगंथि
यंसम्मं सुत्तत्थमग्गणत्थं सवणासाहंतिपरमत्थं।१। अर्थ। जोगणधरदेव
नितैंसम्यक्प्रकारपूर्वापरविरोधरहितगूंथ्याहैअसोसूत्रहैकैसाहै।
सूत्रअरहंतदेवघातिकर्मकानाशकरिसर्वज्ञभयेतिनिकरिभाष्याहैअ

३६ जाननां सो है प्रयोजन जामें ॥ ऐसे सूत्र करि श्रमण कहिए मुनि हैं ते परमा
र्थ कहिए उत्कृष्ट अर्थ प्रयोजन जो अविनाशी आनंदमय मोक्ष ताहि सा
धे है ६ हां गाथा में सूत्र ऐसा विशेष तौ पद न कह्या तोऊ विशेषणनि की
सामर्थ्य ते लीया है ॥ भावार्थ ॥ जो अरहंत सर्वज्ञ करि तौ भाषित है अर गणधर
देवनि करि अक्षर पद वाक्यमयी गूंथ्या है अर सूत्र के अर्थ जानने का ही है
अर्थ प्रयोजन जामें ऐसा सूत्र करि मुनि परमार्थ जो मोक्ष ताहि साधै है अ
न्य अक्षपाद कणाद जैमिनि कपिल सुगत आदि छद्मस्थनि करि रचे क
ल्पित सूत्र है तिनि करि परमार्थ की सिद्धि नांही है ॥ ऐसा आशय जाननं ३६
॥ ६ ॥ आगें कहै है जो ऐसा सूत्र का अर्थ आचार्यनि की परंपरा करि वर्ते

तिसकूं जाणि मोक्षमार्ग कूं साधै है सो भव्य है ॥ गाथा ॥ सुत्तम्मि जं सुदिट्ठं
आयरियपरंपरेण मग्गेण णाऊण दुविह सुत्तं ॥ वट्टइ सिवमग्गे जो भव्वो
॥ शब्दार्थ ॥ जो सर्वज्ञ भाषित सूत्र कूं शब्द थकी अर अर्थ थकी जाणि अ
र जो मोक्षमार्ग करि दोय प्रकार सूत्र कूं शब्द थकी अर अर्थ थकी जाणि अ
र जो मोक्षमार्ग विषै प्रवर्त्तै है सो भव्यजीव है मोक्ष पावने योग्य है ॥ भावार्थ ॥ य
हां कोई कहै है अरहंत का भाष्या अर गणधर का गूंथ्या सूत्र तौ द्वादशांग
रूप है ते तौ अबार काल दीखै नांही परमार्थरूप मोक्षमार्ग कैसें सधै ता
का समाधान कूं यह गाथा है जो अरहंत भाषित गणधर गूंथित सूत्र में
जो उपदेश है तिसि कूं आचार्यनि की परंपरा करि जानिये है तिसकूं शब्द अ
र अर्थ करि जाणि जो मोक्षमार्ग साधै है सो मोक्ष प्राप्त होने योग्य भव्य है ॥ ६

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

[redacted]

२७ कीपरंपराकहीहेसोऐसैहे ॥ श्रीवर्द्धमानतीर्थंकरसर्वज्ञदेवपीछैंतीन
तौकेवलज्ञानीभयेगोतमसुधर्मजंबूवहुरि तापीछैपांचश्रुतकेवलीभये
तिनिकूंद्वादशांगसूत्रकाज्ञानभया ॥ विष्णुनंदिमित्रअपराजितगोवर्द्ध
नभद्रवाहु ॥ तिनिपीछैंग्यारहअंगदशपूर्वनीकेपाठीग्यारहभये ॥ विशाख
प्रोष्ठिलक्षत्रियजयसेननागसेनसिद्धार्थ ॥ धृतिषेणविजयबुधिलगंगादे
वसेनऐसैं ॥ तिनपीछैपांचग्यारहअंगकेधारकभयेनक्षत्रजयपालपां
डुध्रुवसेनकंसऐसैं ॥ वहुरितिनपीछैएकअंगकेधारकच्यारि सुभ
द्रयशोभद्रभद्रवाहुलोहाचार्य ॥ ऐसैं ॥ तिनिपीछैंअंगकेपूर्णज्ञानकीतो ३७
व्युछित्तिभई ॥ अरअंगकाएकदेशअर्थकेज्ञानीआचार्यभयेतिनिकेकेतेक

निकेनाम ॥ अर्हद्वलि ॥ माघनंदि ॥ धरमसेन ॥ पुष्पदंतभूतिवलि ॥ जिनचंद्र
कुंदकुंद ॥ उमास्वामि ॥ समंतभद्रशिव ॥ कोटिशिवायन ॥ पूज्य ॥ पादवीरसेन
जिनसेनइत्यादि ॥ वहुरितिनिपीछैंतिनिकीपरिपाटीमैंआचार्यभयेतिनि
तैंअर्थकाव्युछेदनभया ॥ ऐसैदिगंवरनिकेसंप्रदायमैप्ररूपणयथार्थहै
वहुरिअन्यस्वेतांवरादिकवर्द्धमानस्वामीतैंपरंपरामिलावैहैसोकल्पितहै
जातैंभद्रवाहुस्वामीपीछैंकेईकेमुनिकालमैंभ्रष्टभयेतेअर्द्धफालककहा
येतिनिकीसंप्रदायमैंस्वेतांवरभयेतिनिमैंदेवगुणनामसाधुतिनिकीसंप्र
दायमैंभयाहैतानैंसूत्ररचेहैसोतिनिमैंसिथलाचारपोषनेकूंकल्पितकथा
तथाकल्पितआचरणकीकथनीकरीहैसोप्रमाणभूतनांहीहैपंचमकालमैं
जैनाभासनिकैसिथलाचारकीवाहुल्यताहैसोयुक्तहै ॥ इसकालमैंसाचामे

३८ ऐसैं जाननां। अब इहां किछू द्वादशांगसूत्र तथा अंगबाह्य सूत्र श्रुतको व
र्णन लिखियेहैं। तहां तीर्थंकरांके मुखतैं उपजी जो सर्वभाषामय दिव्यधुनि
ताकूं सुनिकरि च्यारि ज्ञान सप्त ऋद्धिके धारक गणधर देवनि तैं अक्षरप
दमय सूत्ररचना करी तहां सूत्र दोय प्रकार है अंग अंगबाह्य तिनिके अपु
नरुक्त अक्षरनिकी संख्या बीस अंकनि प्रमाण है ते अंक एकयाटि इका।
द्वी प्रमाण है ते ऐसै ॥१८४४६७४४०७३७०९५५१६१५॥ ए ते अक्ष
र हैं तिनिके पद करि एतवा मध्यम पदके अक्षर सोलासै चौतीस को
डि तियासी लाख सात हजार आठसै अठ्यासी कहै हैं तिनिका नागरीये ए ३८
कसौ बारह कोडि तियासी लाख अठावन हजार पांचसै इतने पावै ये ते पद हैं

ते तौ बारह अंगसूत्र रूप कौ पद है अर अवशेष बीस अंकनिमैं अक्षर रहे ते
अंगबाह्य श्रुत कहिये ते आठ कोडि एक लाख आठ हजार एकसौ पिचहत्त
र अक्षर हैं तिनि अक्षरनि मैं चौदह प्रकीर्णक रूप सूत्ररचना है अर द्वा
दशांग रूप सूत्ररचनाके नाम अर पद संख्या लिखियेहै तहां प्रथम अंग
आचारांग है तामैं मुनीश्वरनिके आचारका निरूपण है ताके पद अठारह
हजार है। बहुरि दूसरा सूत्रकृतअंग है ता विषै ज्ञानका विनय आदिक अ
थवा धर्मक्रियामैं स्वमत परमतकी क्रियाका विशेषका निरूपण है याके
पद छतीस हजार हैं। बहुरि तीसरा स्थानअंग है ता विषै पदार्थनिका एक
आदि स्थाननिका निरूपण है। जैसैं जीव सामान्यकरि एक प्रकार विशेष रि
करि दोय प्रकार तीन प्रकार इत्यादि ऐसैं स्थान कहे हैं। याके पद बैतालीस

३९ वस्त्रादिपदार्थनिकै समानताका वर्णन है याकै पद एक लाख चौसठि हजा
न र है बहुरि पांचवा व्याख्याप्रज्ञप्तिअंग है या विषै द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपे
क्षा जीवकै अस्ति नास्ति आदिक साठि हजार प्रश्न गणधरदेव तीर्थंकरनि कै
कटि कीये तिनका वर्णन है याकै पद दोय लाख अठाईस हजार है बहु
रि छठा ज्ञातृधर्मकथा नामा अंग है या विषै तीर्थंकरनिकै धर्मकी कथा जी
वादिक पदार्थनिका स्वभावका वर्णन तथा गणधरके प्रश्ननिका उत्तरनिका
वर्णन है याकै पद पांच लाख छप्पन हजार है बहुरि सातवां उपासकाध्य
यन नामा अंग है या विषै ग्यारै है प्रतिमा आदि श्रावकका आचारका वर्णन है ३९
याकै पद ग्यारह लाख सत्तरि हजार है बहुरि आठमां अंतकृतदशा नामा अं

ग है या विषै एक एक तीर्थंकरकै वारै दश दश अंतकृत केवली भए तिनिका
वर्णन है याकै पद तेईस लाख अठाईस हजार है बहुरि नौमा अनुत्तरोपपा
दिकदश नामा अंग है या विषै एक एक तीर्थंकरकै वारै दश दश महामु
नि घोर उपसर्ग सहि अनुत्तर विमाननिमैं उपजे तिनिका वर्णन है याकै
पद बाणवै लाख चवालीस हजार है बहुरि दशवां प्रश्नव्याकरण नामा अं
ग है या विषै अतीत अनागत काल संबंधी शुभ अशुभका प्रश्न कोई करै
ताका उत्तर यथार्थ कहनेका उपायका वर्णन है तथा आक्षेपिणी विक्षेपणी
संवेजनी निर्वेजनी ए च्यारि कथाका भी अंगमैं वर्णन है याकै पद तेराणवै
लाख सोलह हजार है बहुरि ग्यारमां विपाकसूत्र नामा अंग है या विषै
या विषै कर्मका उदयका तीव्र मंद अनुभाग द्रव्य क्षेत्र काल भावकी अपेक्षा

[illegible]

४० निक्षेपदनिकीसंख्याकाजोडदीयेच्यारिकोडिपंद्रैलाषदोयहजारपद
होयहै। बहुरिबारमांदृष्टिवादनामाअंगहैताविषैमिथ्यादर्शनसंबंधीती
नसैतरेसठकुवादहैतिनिकावर्णनहैयाकेपदएकसोआठकोडिअ
डसठिलाषछप्पनहजारपांचएतेपदहै। याबारमांअंगकेपांचअधिका
रहै। परिकर्मसूत्रप्रथमानुयोगपूर्वगतचूलिकाऐसैंतहांपरिकर्म
विषैंगणितीकेकरणसूत्रहैताकेपांचभेदहैतहांचंद्रप्रज्ञप्तिपहलातामै
चंद्रमांकागमनादिकतथापरिवारऋद्धिवृद्धिहानिग्रहणआदिकावा
र्णनहैयाकेपदछत्तीसलाषपांचहजारहैदूजासूर्यप्रज्ञप्तिहैयामैसूर्य ४०
काऋद्धिपरिवारगमनआदिकावर्णनहैयाकेपदपांचलाषछत्तीसह

जारहै। बहुरितीजाजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिहैयामैंजंबूद्वीपसंबंधीमेरुगिरिक्षेत्र
कुलाचलआदिकावर्णनहैयाकेपदतीनलाषपच्चीसहजारहै। बहुरिचौ
थाद्वीपसमुद्रप्रज्ञप्तितामैंद्वीपसागरकास्वरूपतथातहांतिष्टतेज्योति
षीव्यंतरभवनवासीदेवनिकेआवासतथातहांतिष्टतेजिनमंदिरनिका
वर्णनहै। याकेपदबावनलाषछत्तीसहजारहै। बहुरिपांचवांव्याख्याप्र ती
ज्ञप्तिहैयाविषैजीवअजीवपदार्थनिकाप्रमाणकावर्णनहैयाकेपदचौ
रासीलाषछत्तीसहजारहै। ऐसैंपरिकर्मकेपांचभेदनिकेपदजोडेंएक
कोडिइक्यासीलाषपांचहजारहै। बहुरिबारमांअंगकादूजाभेदसूत्रना
महैताविषैमिथ्यादर्शनसंबंधीतीनसैतरेसठिकुवादहैतिनिकीपूर्वपक्ष
लेकरितिनिकाजीवपदार्थपरिलगावनौआदिकवर्णनहैयाकेपदअ

५१ थमजीवकूंउपदेशायोग्यतीर्थंकरआदितरेसठिसलाकापुरुषनिकावर्ण
नहैयाकेपदपांचहजारहै वहुरिबारमांअंगकाचौथाभेदपूर्वगतहै ॥
ताकौचौदहभेदहै तहां प्रथमपूर्वउत्पादनामताविषेजीवआदिवस्तु
निकेउत्पादव्ययध्रौव्यआदिअनेकधर्मनिकीअपेक्षाभेदवर्णनहैयाके
पदएककोडिहै वहुरिदूजाअग्रायणीनामपूर्वहैयाविषैसातसैसुनय
अरदुर्नयकाषट्द्रव्यसप्ततत्वनवपदार्थकावर्णनहैयाकेछिनवैलाष
पदहै वहुरितीजावीर्यानुवादनामापूर्वहैयाविषेद्रव्यनिकीशक्तिरूपवी
र्यकावर्णनहैयाकेपदसत्तरिलाषहै वहुरिचौथाअस्तिनास्तिप्रवाद
नामापूर्वहै याविषैजीवादिवस्तुकूंस्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावकीअ

क

पेक्षालेअस्तिनास्तिआदिअनेधर्मनिविषैविधिनिषेधकरिसप्तभंगकरिकथं
चितविरोधमेंटनेरूपमुख्यगौणकरिवर्णनहैयाकेपदसाठिलाषहै वहुरिज्ञा
नप्रवादनामापांचवांपूर्वहैयामैज्ञानभेदनिकास्वरूपसंख्याविषयफलआ
दिकावर्णनहैयाकेपदएकघाटिकोडिहै वहुरिछठासत्यप्रवादनामापूर्वहै
याविषैसत्यअसत्यआदिकवचननिकीअनेकप्रकारप्रवृत्तिहैताकावर्णनहै
याकेपदएककोडिछहहै वहुरिसातमाआत्मप्रवादनामापूर्वहैयाविषैआ
त्माजोजीवपदार्थताकाकर्ताभोक्ताआदिअनेकधर्मनिकानिश्चयव्यवहा
रनयअपेक्षावर्णनहैयाकेपदछवीसकोडिहै वहुरिकर्मप्रवादनामाआ
ठवांपूर्वहैयाविषैज्ञानावर्णआदिआठकर्मबंधसत्वउदयउदीरणआदिका
तथाक्रियारूपकर्मनिकावर्णनहैयाकेएककोडिअसीलाषपदहै वहुरि

BHAU DAJI MEMORIAL

४२ याकेपदचौरासीलाषहै वकुरि दशमा विद्यानुवादनामापूर्वहैयामैसातसैक्षुद्र
विद्याअरपांचसैमहाविद्याइनिकास्वरूपसाधनामंत्रादिकअरसिद्धभयेंइनिक
फलकावर्णनहै तथाअष्टांगनिमित्तज्ञानकावर्णनहैयाकेपदएककोडिद
शलाषहै वकुरिकल्याणवादनामाग्यारमापूर्वहै यामैंतीर्थंकरचक्रवर्त्तिआ
दिकागर्भकाआदिकल्याणककाउत्सवतथातिसकेकारणषोडशभावनादितप
श्चरणादिकतथाचंद्रमासूर्यआदिककेगमनविशेषआदिककावर्णनहै या
केपदछवीसकोडिहै वकुरिप्राणावादनामाबारमांपूर्वहै यामैंआवप्रकार
वैद्यकभूतादिकव्याधिदूरिकरनेंकेमंत्रादिकतथाविषदूरिकरनेंकेउपायतथ ४२
स्वरोदयआदिकावर्णनहै याकेतेरहकोडिपदहै वकुरिक्रियाविसालनामातेर

२

मापूर्वहैयामैंसंगीतशास्त्रछंदअलंकारादिकतथाचोसठिकलागर्भाधानादि
कचौरासीक्रियासम्यग्दर्शनआदिएकसोआठक्रियादेववंदनादिकपचीसक्रि
यानित्यनैमित्तिकक्रियाइत्यादिवर्णनहै याकेपदनवकोडिहै चौदमांत्रिलो
कविंदुसारनामापूर्वहै याविषैतीनलोककास्वरूपअरबीजगणितकास्वरूप
तथामोक्षकावामोक्षकाकारणभूतक्रियाइत्यादिकावर्णनहैयाकेपदवार
हकोडिपचासलाषहैऐसेंचोदहपूर्वहैइनिकेसर्वपदनिकाजोडपिच्याणवैको
डिपचासलाषपांचहै वकुरिबारमांअंगकापांचमांभेदचूलिकाहैताकेपां
चभेदहैतिनिकेपददोयकोडिगुणचासलाषछियासीहजारहै तहांजलगता
चूलिकामैंजलकाथंभनकरनांजलमैंगमनकरनांअग्निकाथंभनअग्निमैं
प्रवेशअग्निकाभक्षणकरणाइत्यादिकेकारणभूतमंत्रतंत्रादिककास्वरूपहैया

कपददोयकोडिनवलाखनवासीहजारदोयहै । एतेतेहीपदअन्मस्थारिचू
लिकाकेजाननें । वहुरिदूजीथलगताचूलिकाहैयाविषेमेरुपर्वतभूमिइ
त्यादिविषेप्रवेशकरनांशीघ्रगमनकरनांइत्यादिक्रियाकेकारणमंत्रतंत्रत
पश्चरणादिकाप्ररूपणहे । वहुरितीजीमायागताचूलिकाहेतामेंमायामईइंद्र
जालविक्रियाकेकारणभूतमंत्रतंत्रतपश्चरणादिकाप्ररूपणहे । वहुरिचौथी
रूपगतानामाचूलिकाहे । यामैंसिंघहाथीघोडावैलहरिणइत्यादिअनेकप्रकार
रूपपलटिलेनांताकेकारणभूतमंत्रतंत्रतपश्चरणआदिकप्ररूपणहे । तथा
चित्रामकाष्टलेपादिककालक्षणवर्णनतथाधातुरसरसायणकानिरूपणहे । व
हुरिपांचमीआकाशगताचूलिकाहे । यामैंआकाशविषेगमनादिककेकारण
भूतमंत्रतंत्रयंत्रादिककाप्ररूपणहैं । ऐसेंवारमांअंगहैयाप्रकारतौवारहअं

गरूपसूत्रहै । वहुरिअंगवाह्यश्रुतकेचौदहप्रकीर्णकहैतिनिमेंप्रथमप्रा
कीर्णकसामायिकहैताविषेनामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालभावभेदकरिछप्र
कारइत्यादिकसामायककाविशेषकरिवर्णनहैवहुरिदूजाचतुर्विंशतिस्त
वननामप्रकीर्णकहैताविषेचोईसतीर्थंकरनिकामहिमाकावर्णनहैव
हुरितीजावंदनांनामप्रकीर्णकहैताविषैचोईसतीर्थंकरनिकामहिमाका
वर्णनहैवहुरिचौथाप्रतिक्रमणनामप्रकीर्णकहे । तामेंसप्तप्रकारकेप्रति
क्रमणकावर्णनहैं । वहुरिपांचमांवैनयिकनामप्रकीर्णकहै । तामेंपंचप्रका
रकेविनयकाप्ररूपणहे । वहुरिछठाकृतिकर्मनामाप्रकीर्णकहैताविषै
अरहंतआदिककीवंदनाकीक्रियाकावर्णनहैं । वहुरिसातमांदशवैका
लिकनामाप्रकीर्णकहैताविषैमुनिकाआचारआहारकीशुद्धताआदिक

ज्ञा० पा० वर्णन है बहुरि अष्टमा [illegible]

४४ सर्ग का स हते का विधान वर्णन है बहुरि नवमा कल्पव्यवहार नामा प्रकीर्ण

क है तामैं मुनिनि के योग्य आचरण अर अयोग्य सेवने के प्रायश्चित्तति

निका वर्णन है बहुरि दशमा कल्पाकल्प नामा प्रकीर्णक है ता विषै मुनिकूं य

ह योग्य है वह अयोग्य है ऐसा द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा वर्णन है बहुरि ग्य १

रमां महाकल्प नामा प्रकीर्णक है ता मैं जिनकल्पी मुनिन के प्रतिमायोग त्रि

काल योग का निरूपण है तथा स्थविरकल्पी मुनिनि की प्रवृत्ति का वर्णन है

बहुरि बारमां पुंडरीक नामा प्रकीर्ण है ता विषै च्यारि प्रकार के देवनि विषै उ

पजनें के कारणनि का प्ररूपण है बहुरि तेरमां महापुंडरीक नामा प्रकीर्ण ४४

क है ता विषै इंद्रादिक बडी ऋद्धि के धारक देवनि के उपजनें के कारननि का प्र

रूपण है बहुरि चौदमा निषिद्धिका नाम प्रकीर्णक है ता विषै अनेक प्रकार के

दोष की शुद्धि जा निमित्त प्रायश्चित्तनि का प्ररूपण है यह प्रायश्चित्त शास्त्र है

या का निसीतिका ऐसा भी नाम है ऐसे अंगबाह्य श्रुत चौदह प्रकार कह्या व

हुरि पूर्वनि की उत्पत्ति पर्याय समास ज्ञान मैं तैं लगाय पूर्वज्ञान पर्यंत बीस भे

द का विशेष करि वर्णन है सो श्रुतज्ञान का वर्णन गोमट्टसार ग्रंथ मैं विस्तार

करि है तहां तैं जाननां ॥ छ ॥ आगैं कहै हैं जो सूत्र विषै प्रवीन है सो संसार का ना १

श करै है ॥ गाथा ॥ सुत्तम्मि जाणमाणो भवस्स भवणासणं च सो कुणदि । सूई ज

हा असुत्ता णासदि सुत्ते सहा णो वि ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जो पुरुष सूत्र विषै जाणमान

है प्रवीण है सो संसार का उपजनें का नाश करै है बहुरि जैसें लोह की सूई है

सो सूत्र कहियें डोरा ति स विना होय तौ नष्ट हो जोय यत्र अर डोरा सहित होय तौ नष्ट

डोरासहित होय तो दृष्टिगोचर होय है सो पावै नष्ट होय अर डोरा विना होय तो
दीखै नांही नष्ट होय जाय जैसें जानना ॥३॥ आगें सूई का दृष्टांत का दार्ष्टांत
क है है ॥ गाथा ॥ पुरिसो वि जो ससुत्तो ण विणासइ सो गओ वि संसारे । सच्चेयण
पच्चक्खं णासदि तं सो अदिस्समाणो वि ॥४॥ अर्थ ॥ जैसें सूई सूत्र सहित नष्ट
न होय तैसें सो पुरुष भी संसार मैं गत होय रह्या है अपना रूप आपकै दृष्टि
गोचर नांही है तौऊ सूत्र सहित सूत्र का ज्ञाता होय तो ताकै आत्मा सहित रू
पचैतन्य चमत्कारमयी स्वसंवेदन करि प्रत्यक्ष अनुभव मैं आवै है यातें गत
नांही है नष्ट न भया है सो जिस संसार मैं गत है ता संसार का नाश करै है ॥ भावा ४५
र्थ ॥ यद्यपि आत्मा इंद्रियगोचर नांही है तौऊ सूत्र के ज्ञाता कै स्वसंवेदन प्र

त्यक्ष करि अनुभव गोचर है सो सूत्र का ज्ञाता संसार का नाश करै है आप प्रग
ट होय है यातें सूई का दृष्टांत युक्त है ॥४॥ आगे सूत्र मैं अर्थ कहा है सो कहै है
॥ गाथा ॥ सुत्तत्थं जिणभणियं जीवाजीवादिबहुविहं अत्थं हेयं च तहा जो जाणि हेया
इ सो हु सद्दिट्ठी ॥५॥ अर्थ ॥ सूत्र का अर्थ है सो जिन सर्वज्ञ देव करि कह्या है बहु
रि सूत्र विषै अर्थ है सो जीव अजीव आदि बहुत प्रकार है ॥ तथा हेय कहिए त्या
ग नै योग्य पुद्गलादिक अहेय कहिये सो ग्रहनै योग्य नांही ऐसा आत्मा ऐसा है
सो याकूं जानै सो प्रगट सम्यग्दृष्टी है ॥ भावार्थ ॥ सर्वज्ञ के भाषे सूत्र विषै जीवादिक न
व पदार्थ अर इन मैं हेय उपादेय ऐसें बहुत प्रकार करि व्याख्यान है ताकूं जा
नैं सो श्रद्धानवान होय सम्यग्दृष्टी होय है ॥५॥ आगे कहै है जो जिनभाषित सूत्र
है सो व्यवहार परमार्थरूप दोय प्रकार है ताकूं जाणि योगीश्वर सै शुद्धभाव का

रिसुखकूं पावेह ॥ गाथा ॥ जसुत्तजाणिऊणं ववहारं तह य जाण परमट्ठं ॥ तं जा
णिऊण जोई लहई सुहं खवइ मलपुंजं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जो जिनभाषित सूत्र है सो व्यव
हाररूप है तथा परमार्थरूप है ताकूं योगीश्वर व्यवहार परमार्थकूं जाणि सुखकूं
पावै है ॥ वहुरि मलपुंज कहिये द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म ताहि क्षेपै है ॥ भावार्थ ॥
जिनसूत्रकूं व्यवहार परमार्थरूप यथार्थ जाणि योगीश्वर मुनि है सो कर्म का ना
श करि अविनाशी सुखरूप मोक्षकूं पावै है ॥ तहां परमार्थ कहिये निश्चय अर व्य
वहार इनिका संक्षेप स्वरूप ऐसा जो जिनआगम की व्याख्यान च्यारि अनुयोग
रूप शास्त्रनि मैं दोय प्रकार सिद्ध है ॥ एक आगमरूप दूजी अध्यातमरूप तहां सामा
न्य विशेष करि सर्व पदार्थनि का प्ररूपण करिये सो अध्यात्म है ॥ तहां अहेतुमत अ
र हेतुमत ऐसे भी दोय प्रकार है तहां जो सर्वज्ञ की आज्ञा ही करि केवल प्रमा

ण मानिये सो तौ अहेतुमत है ॥ अर जहां प्रमाण नय निक्षेप करि वस्तु की निर्बा
ध सिद्धि जामैं करि मानिए सो हेतुमत है ॥ ऐसे दोय प्रकार आगम मैं निश्चय व्यव
हार करि व्याख्यान है सो किछू लिखिये है ॥ तहां जब आगमरूप निरूपण सर्व
पदार्थनि का व्याख्यान परि लगाईए तब तो वस्तु का स्वरूप सामान्यविशेषरूप अ
नंत धर्मस्वरूप है सो ज्ञानगम्य है तिनि मैं सामान्यरूप तौ निश्चय नय का विष
य है ॥ अर विशेषरूप जे ते है तिनि कूं भेदरूप करि न्यारे न्यारे कहै सो विवहा
र नय का विषय है अर विशेषरूप जे ते है तिनि कूं भेदरूप करि न्यारे न्यारे क
है सो विवहार नय का विषय है ताकूं द्रव्यपर्यायस्वरूप भी कहिये ॥ तहां जिनव
स्तु कूं विवक्षित करि साधिए ताकौं द्रव्य क्षेत्र काल भाव करि जो किछू सामान्य
विशेषरूप वस्तु का सर्वस होय सो तौ निश्चय व्यवहार करि कह्या तैसे सधै है ॥ व

MEMORIAL

[illegible]
४७ स्तुरूप कहनां सो भी व्यवहार है तिस वस्तुकै किछू अन्य वस्तुके संयोगरूप अ
वस्था होय तिसकूं उपचार ऐसा भी नाम कहिये याका उदाहरण ऐसा जैसैं एक
विवक्षित घट नामा वस्तु परि लगाईए तब जिस घटका द्रव्य क्षेत्र काल भावरू
प सामान्य विशेषरूप जेता सर्वस्व है तेता कह्या तैसैं निश्चय व्यवहार करि क
हनां सो तौ निश्चय व्यवहार है अर घटकै किछु अन्य वस्तुका लेप करि तिस
घटकूं तिस नाम करि कहना तथा अन्य पटादिक विषै घटका आरोपण क
रि घट कहनां सो भी व्यवहार है तहां व्यवहारका दोय आश्रय है एक प्रयो
जन दूजा निमित्त तहां किछू प्रयोजन साधनेकूं काहू वस्तुकूं घट कहनां सो तौ ४७
प्रयोजनाश्रित बहुरि काहू अन्य वस्तुकै निमित्ततैं घटमैं अवस्था भई ताकूं

घटरूप कहनां सो निमित्ताश्रित है ऐसैं विवक्षित सर्व जीव अजीवादिक वस्तु
नि परि लगावणां सो अध्यात्म है तहां जीवसामान्यकूं भी आत्मा कहिए है अ
र जो जीव आपनां सर्व जीवनितैं भिन्न अनुभव करै ताकूं भी आत्मा कहिए है
तहां अब आपकूं सर्वतैं न्यारा अनुभव करि आपा पर निश्चय व्यवहार ल
गाईए तब ऐसैं जो आप अनादि अनंत अविनाशी सर्व अन्य द्रव्यनितैं भिन्न
एक सामान्य विशेषरूप अनंतधर्मा द्रव्यपर्यायात्मक जीव नामा शुद्ध वस्तु है सो
कैसा है शुद्ध दर्शन ज्ञानमयी चेतनास्वरूप असाधारण धर्मकूं लीये अनंत श
क्तिका धारक है तामैं सामान्य चेतना अनंत शक्तिका समूह सो तौ द्रव्य है बहु
रि अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्य ए तौ चेतनाके विशेष हैं ते तौ गुण हैं अर अ
गुरुलघु गुणके द्वारे षट्स्थानपतित हानि वृद्धिरूप परिणमन ताके त्रिकालात्मक

है सो तो एक अभेदरूप शुद्धनिश्चयनैका विषयभूत जीव है इस दृष्टिकरि अ
नुभव कीजे तब ऐसा है अर अनंतधर्मविषै भेदरूप कोई एक धर्मकूं लेकरि क
हनां सो व्यवहार है ॥ बहुरि आत्मवस्तुकै अनादिहीतैं पुद्गलकर्मका संयोग है
ताके निमित्ततैं रागद्वेषमोहरूप विकार होय है ताकूं विभावपरिणति कहिए ।
तिसकरि फेरि आगामी कर्मका बंधन होय है ताकूं विभावपरिणति कहि ऐसैं
अनादि निमित्तनैमित्तिक भावकरि चतुर्गतिरूप संसारका भ्रमणरूप प्रवृत्ति
होय है तहां जिस गतिकूं प्राप्ति होय तिसा ही जीव नाम कहावै तथा जैसा रागा
दिक भाव होय तैसा नाम कहावै ॥ बहुरि जब द्रव्य क्षेत्र कालकी बाह्य अंतरंग सा ४८
मग्रीका निमित्तकरि अपना शुद्धस्वरूप शुद्धनिश्चयनयका विषयस्वरूप आ

पकूं जानि श्रद्धा करै अर कर्मसंयोगकूं अर तिसके निमित्ततैं अनेक भाव हो
य है तिनिका यथार्थ स्वरूप जानैं तब भेदज्ञान होय तब परभावनितैं विरक्त
होय तब तिनिका मेटनेंका उपाय सर्वज्ञके आगमतैं यथार्थ समझि ताकूं अंगी
कार करै तब अपने स्वभावमैं थिर होय अनंतचतुष्टय प्रगट होय सर्व कर्मका
क्षय करि लोकके शिखर विराजै तब मुक्त भया कहावै ताकूं सिद्ध भी कहिये ऐ
सैं जेती संसारकी अवस्था अर यह मुक्त अवस्था ऐसैं भेदरूप आत्माकूं निरूपै
है सो भी सर्व व्यवहारनयका विषय है याकूं अध्यात्मशास्त्रमें अभूतार्थ अस
त्यार्थ नाम कहकरि वर्णन कीया है जातैं शुद्ध आत्मामैं संयोगजनित अवस्था
होय सो तो असत्यार्थ ही है किछु शुद्धवस्तुका तो यह स्वभाव नांही तातै अस
त्य ही है ॥ बहुरि जो निमित्ततैं अवस्था भई तो आत्मा हीका परिणाम है सो जो आ

४९ तैं भेदज्ञान न होय तेतै ही यह दृष्टि है भेदज्ञान भये जैसैं है तैसैं जानै है वहुरि
जे द्रव्यरूप पुद्गलकर्म है ते आत्मातैं न्यारे है ही तिनितैं शरीरादिका संयोग है
सो आत्मातैं प्रगट ही भिन्न है तिनिकूं आत्माके कहिये सो यह व्यवहार प्रसिद्ध
है ही याकूं असत्यार्थ कहिये उपचार कहिये इहां कर्मके संयोगजनित भाव है ते
सर्व निमित्ताश्रित व्यवहारका विषय है । अर उपदेश अपेक्षा याकूं प्रयोजना
श्रित भी कहिये । ऐसैं निश्चय व्यवहारका संक्षेप है । तहां सम्यग्दर्शनज्ञानचा
रित्रकूं मोक्षमार्ग कह्या तहां ऐसै समझनां जो एती नूं एक आत्मा ही के भाव है ऐ
से ति निजस्वरूप आत्मा ही का अनुभव होय सो तौ निश्चय मोक्षमार्ग है तामैं भी जेतै ४९
अनुभवकी साक्षात् पूर्णता न होय तेतै एकदेशरूप होय ताकूं कथंचित् । सर्वदे

शरूप नाम करि कहिए सो तौ व्यवहार है अर एकदेश नाम करि कहिए सो निश्च
य है । वहुरि दर्शनज्ञानचारित्रकूं भेदरूप कहि मोक्षमार्ग कहिए तथा इनिके
बाह्य परद्रव्यस्वरूप द्रव्य क्षेत्र काल भाव निमित्त है तिनिकूं दर्शनज्ञानचारित्र
नाम करि कहिए सो व्यवहार है । देवशास्त्रगुरुकी श्रद्धाकूं सम्यग्दर्शन कहिए
जीवादि तत्वनिकी श्रद्धाकूं सम्यग्दर्शन कहिए शास्त्रके ज्ञानकूं ज्ञान कहिए जी
वादिक पदार्थनिके ज्ञानकूं ज्ञान कहिए इत्यादि तथा पंच महाव्रत पंच समिति
ती न गुप्तिरूप प्रवृत्तिकूं चारित्र कहिए तथा वारह प्रकार तपकूं तप कहिए ऐ
सैं भेदरूप तथा परद्रव्यके आलंबनरूप प्रवृत्ति है ते अध्यात्मशास्त्र अपेक्षा
व्यवहार नाम करि कहिए जातैं वस्तुका एकदेसकूं वस्तु कहनां सो भी व्यवहा
र अर परद्रव्यका आलंबनरूप प्रवृत्तिकूं तिस वस्तु नाम करि कहनां सो भी

सो सामान्य विशेष करि तथा द्रव्य पर्याय करि वर्णन कीजिए है तथा द्रव्यमात्र क
हना तथा पर्यायमात्र कहनां सो तो व्यवहार का विषय है बहुरि द्रव्य का भी तथा
पर्याय का भी निषेध करि वचन अगोचर कहनां सो निश्चय नय का विषय है बहु
रि द्रव्यरूप है सो ही पर्यायरूप है ऐसें दोयही कूं प्रधान करि कहना सो प्रमाण का वि
षय है या का उदाहरण ऐसा जैसें जीव कूं चेतनस्वरूप नित्य एक अस्ति इत्यादि अ
भेदमात्र कहनां सो तो द्रव्यार्थिक का विषय ऐसें एक दोऊ प्रकार कूं प्रधान क
रि कहनां प्रमाण का विषय इत्यादि ऐसें निश्चय व्यवहार का सामान्य संक्षेप स्वरू
प है ताकूं जाणि जैसें आगम अध्यात्म शास्त्रनि में विशेष करि वर्णन होय ता कूं ५०
सूक्ष्म दृष्टि करि जाननां जिनमत अनेकांत स्वरूप स्याद्वाद है अर अनेक नय

निकैं आश्रय कथनी है तहां नयनि कैं आश्रय कथनी है तहां नयनि कै पर
स्पर विरोध है ताकूं स्याद्वाद मेटै है ताका विरोध अविरोध का स्वरूप नीकैं
जांननां सो यथार्थ तौ गुरु आम्नाय ही तैं होय है परंतु गुरु का निमित्त काल मैं
विरला होय गया तातैं अपना ज्ञान का बल चालै जेतैं विशेष समझ बो ही करि
णां किछू लेस पाय उद्धत न होनां अबार काल मैं अल्पज्ञानी बहुत है यातैं तिनितैं
किछू अधिक अभ्यास करि तिनि मैं महंत बणि उद्धत भये मद आवै तब ज्ञान
थकै त होय जाय विशेष समझनें की अभिलाषा न रहै तब विपर्यय होय यद्वात
द्वा कहै तब अन्य कै विपर्यय ऐसें आप कै अपथ्य का प्रसंग आवै तातैं शास्त्र
कूं समुद्र जाणि अल्पज्ञ रूप ही अपनां भाव राखणां तातैं विशेष समझने की अ
भिलाषा रहैं ज्ञान की वृद्धि होय है अल्पज्ञानीनि मैं बैठि महंत बुद्धि राखै पाया ज्ञान

५२ करि ताका श्रद्धान करि यथाशक्ति आचरण करनां इस कालमैं गुरुसंप्रदाय
विनां महंतनवणा नां जिन आज्ञा न लोपणी आचार तौ शक्ति सारू करणा क
ह्या है अर श्रद्धान आज्ञा होय सो करणां कह्या है केई कहै है जो हम तौ परीक्षा
करि जिनमत कूं मानेंगे ते वृथा बकै हैं अल्प बुद्धीका ज्ञान परीक्षा करनें लाय
क नांही आज्ञाकूं प्रधान राखि वणै जेती परीक्षा करनि मैं दोष नांही केवल प
रीक्षा हीकूं प्रधान राखनें मैं जिनमततैं च्युत होय जाय तौ बडा दोष आवै जिनि
कै आपनें हित अहित परि दृष्टि है ते तौ ऐसैं जानूं अर जिनकूं अल्पज्ञानीनि
मैं महंतपणा अपनें मांन लोभ बडाई विषय कषाय पोषनें होय तिनिकी कथा ५२
नांही ते तौ अपने जैसे विषय कषाय सधैंगे जैसैं करैंगे तिनिकूं मोक्षमार्गका उ

पदेश लागै नांही विपर्यस्त कूं काहे का उपदेश ऐसैं जाननां ॥ ६ ॥ आगैं कहै है
जो सूत्रके अर्थपदतैं भ्रष्ट है ताकूं मिथ्यादृष्टी जाननां ॥ गाथा ॥ सुत्तठ्ठपयविणठ्ठो
मिच्छादिट्ठी हु सो मुणेयव्वो खेडेवि ण कायव्वं पाणिप्पत्तं सचेलस्स ॥ अर्थ ॥
जो सूत्रका अर्थ अरु पद है विनष्ट जाकै ऐसा है जो प्रगट मिथ्यादृष्टी है याहीतैं जो
सचेल है वस्त्रसहित है ताकूं खेडेवि कहिए हास्य कुतूहलमात्र भी पाणिपात्र क
हिए आहारदान सो न करनां ॥ भावार्थ ॥ सूत्र विषै मुनिका रूप नग्न दिगंबरका
ह्या है अर जो ऐसे सूत्रके अर्थ करि तथा अक्षररूप पद जाकै विनष्ट है तथा आ
पजा करि विनष्ट है इस अर्थ पद कूं छोडि दीया है सो मुनिका रूप वस्त्रसहित क
हे है तथा आप वस्त्र धारि मुनि कवै है सो जिनआज्ञा तैं भ्रष्ट भया प्रगट मिथ्यादृष्टी
है यातैं ऐसैं वस्त्रसहित कूं हास्य कुतूहल करि भी पाणिपात्र कहिए आहार

MEMORIAL

अ० पा० दान न करणा। तथा असामर्थ्य होय है जो असामर्थ्य आहै तौ कूं पाणिपात्र आहा
५२ र लेणा योग्य नांही ऐसा भेष हास्य कौतूहल करि भी धारणा योग्य नाही। जो वस्त्र
सहित रहणा अर पात्र भोजन करणा ऐसैं क्रीडामात्र करि भी न करणा ॥ ७ ॥ आ
गैं कहै है जो जिन सूत्र तैं भ्रष्ट है सो हरि हरादिक तुल्य है तौऊ मोक्ष न पावै है। गाथा।
हरिहरतुल्लो वि णरो सग्गं गच्छेइ एइ भवकोडी तह वि ण पावइ सिद्धिं संसारत्थो
पुणो भणिदो ॥ ८ ॥ अर्थ। जो नर सूत्रके अर्थपद तैं भ्रष्ट है सो हरि कहिए नारायण
अर हर कहिए रुद्र इनि तुल्य भी होय अनेक ऋद्धि करि युक्त होय तौऊ सिद्धि क
हिए मोक्ष कूं प्राप्त न होय जो कदाचित दान पूजादिक करि पुण्य उपजाय स्वर्ग
जाय तौऊ तहां तैं चय करि कोड्यां भव लेइ संसार मैं रहै है ऐसैं जिनागम मैं कह्या । ५२
है भी। भावार्थ। स्वेतांवरादिक ऐसैं कहै है जो गृहस्थ आदि वस्त्र सहित है तिनि

कै भी मोक्ष होय है ऐसैं सूत्र मैं कह्या है ताका इस गाथा मैं निषेध का आशा
य है जो हरिहरादि वडी सामर्थ्य के धारक भी है तौऊ वस्त्र सहित तौ मोक्ष नांही पा
वै है स्वेतांवरां नैं सूत्र कल्पित वणाये है तिनि मैं यह लिखी है सो प्रमाणभूत नां
ही ते जिन सूत्र के अर्थ पद तैं च्युत भये है ऐसैं जानना ॥ ८ ॥ आगे कहै है जो जे
जिन सूत्र तैं च्युत भये है ते स्वच्छंद भये प्रवर्त्तै है ते मिथ्यादृष्टी है। गाथा। उक्कि
ट्ठसीहचरियं बहुपरियम्मो य गुरुयभारो य जो विहरइ सच्छंदं पावं गच्छेदि
होदि मिच्छत्तं ॥ ९ ॥ अर्थ। जो मुनि होय करि उत्कृष्ट सिंहवत निर्भय भया आ
चरण करै है बहुरि बहुत परिकर्म कहिए तपश्चरणादि क्रिया विशेषनि करि
युक्त है बहुरि गुरु का भार कहिए वडा पदस्थ रूप है संघनायक कहावै है अ
र जिन सूत्र तैं च्युत भया स्वच्छंद प्रवर्त्तै है तौ वह पाप ही कूं प्राप्त होय है। बहुरि

५३ [illegible] कालकारिनिमयहोयतप
श्चरणादिककरिवडाकहायअपनांसंप्रदायचलावैहैजिनसूत्रतैंच्युतहो
यस्वेछाचारीप्रवर्त्तैहैतोसोपापीमिथ्यादृष्टीहैहीताकाप्रसंगश्रेष्टनांही॥ ॥
आगैंकहैहैजोजिनसूत्रमैंऐसामोक्षमार्गकह्याहै॥गाथा॥णिचेलपाणिपत्त लि
उवइट्ठंपरमजिणवरिंदेहि एक्कोविमोक्खमग्गोसेसायअमग्गयासव्वे
॥१०॥अर्थ॥जोनिश्चेलकहिएवस्त्ररहितदिगंबरमुद्रास्वरूपअरपाणिपा
त्रकहिएहाथहीजामैपात्रऐसेंषडारहिआहारकरनांऐसाएकअद्वित्ती
यमोक्षमार्गतीर्थंकरपरमदेवनितैउपदेश्याहैइससिवायअन्यरीतिहैते
सर्वेअमार्गकहेहैं॥भावार्थ॥जेम्रगचर्मवृक्षकेवक्कलकपासपट्टकूलरोम ५३
सुवावनकेतृणकेवस्त्रइत्यादिराषिआपकूंमोक्षमार्गमानैहैतथाइसक १

लमैजेजिनसूत्रतैंच्युतभयेहैतिनिमैंअपनीइछातैंअनेकभेषचलायेहैंकेई
स्वेतवस्त्रकेईरक्तवस्त्रकेईपीलवस्त्रकेईटाटकेवस्त्रकेईघासकेवस्त्रइत्या
दिकराषेहैतिनिकूंमोक्षमार्गनांहीजातैंजिनसूत्रमैंतोएकनग्नदिगंबरस्वरूप
पाणिपात्रभोजनकरनांऐसामोक्षमार्गकह्याहैअन्यसर्वभेषमोक्षमार्गनांही
जेमांनैहैतेमिथ्यादृष्टीहैं॥ ॥आगैंदिगंबरमोक्षमार्गकीप्रवृत्तिकहैहै॥
॥गाथा॥जोसंजमेसुसहिओआरंभपरिग्गहेसुविरओविसोहोईवंदणीओ
ससुरासुरमाणुसेलोए॥११॥अर्थ॥जोदिगंबरमुद्राकाधारकमुनिइंद्रियम
नकावसिकरनाछहकायकेजीवकीदयाकरनांऐसेंसंयमकरितौसहि
तहोयवहुरिआरंभकहिएगृहस्थकेजेतेआरंभहैतिनितैविरक्तहोयति
निमैंनप्रवर्त्तैतथाअपरिग्रहकरिब्रह्मचर्यआदिकरियुक्तहोयसोइसदे

रंआदिकरियुक्तपाषंडीवंदिवेयोग्यनांहीहै॥ ॥आगेफेरितिनिकीप्रवृत्ति
काविशेषकहैहै॥गाथा॥जेवावीसपरीसहसहंतिसत्तीसएहिंसंजुत्ताते होंति
तिवंदणीया॥कम्मक्खयणिज्जरासाहू॥१२॥अर्थ॥जेसाधुमुनिअपनीशा
क्तिकेसैकडांनिकरियुक्तभयेसंतेक्षुधातृषादिकबाईसपरीसहनिकूंस
हेहै तेसाधुवंदनेंयोग्यहैकैसेहैं तेकर्मनिकाक्षयरूपतिनिकीनिर्जरानां
विषेप्रवीणहै॥भावार्थ॥जेवडीशक्तिकेधारकसाधुहैतेपरीसहनिकूंसहे
हैपरीसहआयेंअपनेंपदतेंच्युतनेंहोयहैतिनिकेकर्मनिकीनिर्जराहो
यहैतेवंदनेंयोग्यहै॥ ॥आगेकहैहैंजोदिगंबरमुद्रासिवायकोईवस्त्रधा ५४
रेंसम्यग्दर्शनज्ञानकरियुक्तहोयतेइछाकारकरनेंयोग्यहै॥गाथा॥अव

सेसाजेलिंगीदंसणणाणेणसम्मसंयुत्ता॥चेलेणयपरिगहिया॥तेभणिया
इछणिज्जाय॥१३॥अर्थ॥दिगंबरमुद्राशिवायअवशेषलिंगीहैभेषकरिसं
युक्तहैअरसम्यक्त्वसहितदर्शनज्ञानकरिसंयुक्तहैअरवस्त्रकरिपरिग्र
हीतहैवस्त्रधारेहैतेइछाकारकरनेंयोग्यकहेहै॥भावार्थ॥जेसम्यग्दर्शन
करिसंयुक्तहैअरउत्कृष्टश्रावककाभेषधारैहैएकवस्त्रमात्रपरिग्रहरा
षैहैसोइछाकारकरनेंयोग्यहैमैंतुमकूंइछोंहौंऐसाइछामिशब्दकाअर्थ
हैऐसेइछाकारकरनाजिनसूत्रमैंकह्याहै॥ ॥आगेइछाकारयोग्यश्राव
ककास्वरूपकहैहै॥गाथा॥इछायारमहत्थं॥सुत्तठिउजोहुछंडएकम्मं॥ठा
णेट्ठियसम्मत्तं॥परलोयसुहंकरोहोई॥१४॥अर्थ॥जोपुरुषजिनसूत्रविषेतिष्ठ्या
संताइछाकारशब्दकामहानप्रधानअर्थहैताहिजानैहैवहुरिस्थानजोश्रा

५५ निकूं छोडैहै सोपरलोकविषैंसुखकरनेवालाहोयहै ॥ भावार्थ ॥ उत्कृष्टश्राव
ककूं इछाकारकरियेहै सोइछाकारकाजोप्रधान अर्थहै ताकूंजानैहैश्र
स्त्रअनुसारसम्यक्तसहितआरंभादिक छोडिउत्कृष्टश्रावकहोयहैसो
लोकविषैस्वर्गकासुखपावैहै ॥ छ ॥ आगैकहैहैजोइछाकारकाप्रधानअ
र्थकूं नांहीजांणैहैंअरअन्यधर्मका आचरणकरैहैसोसिद्धिकूंनाहींपावैहै
॥ गाथा ॥ अहपुणअप्पाणिछदि धम्माइकरेइनिरवसेसाइं तहविणपावदि
सिद्धि संसारत्थोपुणोभणिदो ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ अथ पुनः ऐसाशब्दकाअर्थजो
पहलीगाथामेंकह्याथाजोइछाकारकाप्रधानअर्थजानैंसोआचरणक ५५
रिस्वर्गसुखपावैहैसोअवफेरिकहैहैजोइछाकारकाप्रधानअर्थआत्म

काचाहनांहैअपनेंस्वरूपविषैरुचिकरनांहैसोयाकूंजोनांहीइष्टकरैहैअर
अन्यधर्मकेसमस्तआचरणकरैहैतोऊसिद्धिकहिएमोक्षकूंनांहींपावैहै।
वऊरिताकूंसंसारविषैहीतिष्टनेंवालाकह्याहैं ॥ भावार्थ ॥ इछाकारकाप्रध
नअर्थआत्माकाचाहनाहैसोजाकेंअपनेंस्वरूपकीरुचिरूपसम्यक्तनां
हींताकैसर्वमुनिश्रावककेआचरणरूपप्रवृत्तिमोक्षकाकारणनांही ॥ छ ॥
आगैंइसहीअर्थकूंदृढकरिउपदेशकरैहै ॥ गाथा ॥ एएण कारणेण य
तंअप्पासद्दहेहतिविहेणजेणयलहेहमोक्खं तं जाणिज्जहपयत्तेण ॥ १६
॥ अर्थ ॥ पूर्वैं कह्याजोआत्माकूंइष्टनकरैहैताकैसिद्धिनांहीहैतिसहीका
रणकरिहेभव्यजीवहौतुमतिसआत्माकूंश्रद्धौताकाश्रद्धानकरौमन
वचकायकरिस्वरूपविषैरुचिकरौतिसकारणकरिमोक्षकूंपावौ वहुरि

जी४ सुमतिजी५ पद्मप्रभ
जी६ सुपारसजी७ चंद्र
प्रभजी८ पहोपदंतजी९
सीतलजी१० श्रीयांसजी
११ बासपुज्यजी१२ विमल
जी१३ अनंतजी१४ धरम
नाथजी१५ सांतिनाथजी
१६ कुंथनाथजी१७ अर
हेनाथजी१८ मलिनाथ
जी१९ मनसुब्रतजी२०
नमनाथजी२१ श्रीनेमना

थजी २२ श्रीपारसनाथज
२३ श्रीमहावीरवरधमान
जी २४ अथ केणहारचो
इसी लिष्यते॥ महापमजी
१ सुरदेवजी २ सुपारसजी
३ सुयंप्रभजी ४ सरवातम
भूतजी ५ देवपुत्रजी ६ कु
लपुत्रजी ७ उदंकीजी ८
प्रोसटलजी ९ जैकीरति
जी १० मनसुव्रतजी ११ अ
रनाथजी १२ अपाकजी

॥ भावार्थ ॥ जिसकरि मोक्ष पाइए तिसका जाननां श्रद्धान करनां यह प्रधान उपदेश है अन्य आडंवर करि कहा प्रयोजन ऐसें जाननां ॥ १७ ॥ आगे जे जिनसूत्रके जाननेंवाले मुनि हे तिनिका स्वरूप फेरि दृढ करनेंकूं कहैहैं ॥ गाथा ॥ वालग्गकोडिमित्तं परिगहगहणं ण होइ साहूणं भुंजेइ पाणिपत्ते दिण्णण्णं एकठाणम्मि ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ वालके अग्रभागकी कोटि कहिए अणी तिसमात्र भी परीग्रहका ग्रहण साधुनिके नहीं होय है ॥ इहां आशंका है जो परिग्रह किछू भी नांही तौ आहार कैसे करै है ताका कहै है जो आहार ऐसें करै है ॥ पाणिपात्र कहिए कर पात्र अपनें हाथही में भोजन करै है सो भी अन्यका दीया प्रासुक अन्नमात्र ले है सो भी एकस्थान लेहै ॥ वारवार न लेहै अर अन्य स्थानमें न

लेहै ॥ भावार्थ ॥ जो मुनि आहारही परका दीया प्रासुक योग्य अन्नमात्र निर्दोष एकवार दिनमें अपनें हाथकरि लेहै तौ अन्य परिग्रहका हे कूं दोष दिषावै है ॥ आगे कोई कहै है अल्प परिग्रह ग्रहण करै ता मे दोष कहा ता कूं दोष दिषावै है ॥ गाथा ॥ जहजायरूवसरिसो तिलतुसमित्तं ण गहदि हत्थेसु जइ लेइ अप्पवहुअं तत्तो पुण जाइ णिग्गोदं ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ मुनि है सो यथाजातरूप सारिषा है जैसा जन्मा वालक नग्न होय तैसा नग्न दिगंवर मुद्राका धारक है सो अपनें हाथनि विषै तिलके तुसमात्र भी किछू ग्रहण नांही करै है ॥ वहुरि जो किछू अल्प वहुत लेग्रहण करै तौ तिसतै निगोद जाय ॥ भावार्थ ॥ मुनि यथाजातरूप दिगंवर निर्ग्रंथ कहे है सो ऐसे होय करि भी किछू परिग्रह राषै तो जानिये इनिकै जिनसूत्रकी श्रद्धा नांही मिथ्यादृष्टी है यातै मिथ्यात्वका फ

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

५९ स्वर्गादिकपावैतौभीफेरिएकेंद्रियहोयसंसारहीमैंभ्रमैहै । इहांप्रश्नजोमु
निकैसरीरहै । आहारकरैहैकमंडलपीछीपुस्तकराषैहैइहांतिलकेतुसमा
त्रभीराषनानकह्यासोकैसा । ताकासमाधान । जोमिथ्यात्वसहितराग
भावसूंअपणांपणाविषयकषायपोषनेकूंराषनाकूंपरिग्रहकहि
येहैतिसनिमित्तकिछूअल्पवस्तुराषनानिषेध्याहैवहुरिकेवलसंजम
केनिमित्तकातौसर्वथानिषेधनाहीशरीरहैसोतौआयुपर्यंतछोड्याछूटै
नांहीयाकातौममत्वहीछूटै । वहुरिजेतैशरीरहैतैतैआहारनकरैतौसा
मर्थहीनहोयतबसंयमनसधैतातैंकिछूयोग्यआहारविधिपूर्वकशरीर ५९
कूंरागरहितभयेसंतेलेकरिशरीरकूंखडाराषिसंयमसाधैहै । वहुरि

कमंडलुशौचकाउपकरणहैनराषैतौमलमूत्रकीअशुचिताकरिपंचप
रमेष्ठीभक्तिवंदनांकैसेंकरैअरलोकनिंद्यहोयपीछीदयाकाउपकरणहै
नराषैतौजीवनिसहितभूमिआदिकीप्रतिलेषणाकाहेतैकरै । वहुरिपुस्त
कहैसोज्ञानकाउपकरणहैजोनराषैतौपठनपाठनकैसैहोयवहुरिइनि
उपकरणनिकाराषणाभीममत्वपूर्वकनांहीहैतिनितैंरागभावनाहीहै
वहुरिआहारविहारपठनपाठनकीक्रियायुक्तजेतैरहैहैतेतैकेवलग्यान
भीनांहीउपजैहै । तिनिकूंछोडिशरीरकाभीसर्वथाममत्वछोडिध्यानअ
वस्थालेकरितिष्ठिअपनास्वरूपमैंलीनहोयतबपरमनिर्ग्रंथअवस्था
होयहैतबश्रेणीकूंप्राप्तभयेकेवलज्ञानउपजैहैअन्यक्रियासहितहो
यतेतैकेवलग्याननांहीउपजैहै । ऐसानिर्ग्रंथपणामोक्षमार्गजिनसूत्रा

५८ पजे है सो यह कहना मिथ्या है जिनसूत्र का यह वचन नांही तिनि में कल्पित
सूत्र वणाये हैं तिनि में लिषी होयगी वहुरि इहां स्वेतांवर कहै है जो तुमनें
कह्या सो तो उत्सर्गमार्ग है वहुरि अपवादमार्ग मैं वस्त्रादिक उपकरण रा
षणां कह्या है जैसैं तुम धर्मोपकरण कहै तैसैं वस्त्रादिक भी धर्मोपकरण
है जैसे क्षुधा की वाधा आहार तैं मेटि संयम साधिये तैसैं सीतआदिक की वा ।
धा वस्त्र आदि तै मेटि संयम साधिये यामै विशेष कहा ताकूं कहिये जो यामैं तौ
वडा दोष आवै है कोई कहै कामचिरकार उपजै त वस्त्रसैं वन करै तौ यामैं
कहा विशेष सो ऐसैं तौ कहना युक्त नांही क्षुधा की वाधा आहार तैं मेटना तै । ५८
युक्त है आहार विना देह अशक्त होय है तथा छूटि जाय तौ अपघात का दोष

आवै अर शीतआदिक की वाधा तो असी है सो यह तौ ज्ञानाभ्यास आदिक के
साधनतैं ही मिटि जाय है अर अपवादमार्ग कह्या सो जामैं मुनिपद रहै ऐसी
क्रिया करना तौ अपवादमार्ग है अर जिस परिग्रह तैं तथा क्रिया तैं मुनिप
द भ्रष्ट होय गृहस्थ व्रत हीय जाय सो तौ अपवादमार्ग हैं नांही दिगंवर मु
द्राधारिक मंडलु पीछी सहित आहार विहार उपदेशादिक मैं प्रवर्तैं सो अ
पवादमार्ग है अर सर्वप्रवर्त्ति कूं छोडि ध्यानास्थ होय शुद्धोपयोग मैं लीन है ।
य उत्सर्गमार्ग कह्या है ऐसा मुनिपद आपतैं सधता न जानि कहा सिथलाचा
र पोषणां मुनिपद की सामर्थ्य न होय तौ श्रावकधर्म ही पालना परंपरा करि
या ही तैं सिद्ध होयगी जिनसूत्र की यथार्थ श्रद्धा राषे सिद्ध है या विषै अन्य क्रि
या सर्व ही संसारमार्ग है मोक्षमार्ग नांही ऐसें जांनना आगें इस ही अर्थ

वा॥ अथ गा ... रहे॥ गाथा॥ जस्स परिग्गहगहणं अप्पं बहुयं च हवइ लिंगस्स॥

सो गरहिउ जिणवयणे परिग्गहरहिओ निरायारो॥१९॥ अर्थ॥ जाके मत मैं लिंग
जे भेष ताकै परिग्रह का अल्प तथा बहुत का ग्रहण कह्या है सो मत तथा तिस
का श्रद्धान गर्हित है निंदा योग्य है जातैं जिनवचन विषै परिग्रह रहित है सो
निराकार है निर्दोष मुनि है ऐसैं कह्या है॥ भावार्थ॥ श्वेतांबरादिक के कल्पित
सूत्रनि मैं भेष मैं अल्प बहुत परिग्रह का ग्रहण कह्या है सो सिद्धांत तथा ताके श्र
द्धानीनिं क्रूं है जिनवचननि विषै परिग्रहरहितकूं निर्दोष मुनि कह्या है॥ छ॥
आगैं कहै है जिनवचन विषै ऐसा मुनि वंदने योग्य कह्या है॥ गाथा॥ पंचमा
हव्वयजुत्तो॥ तिहि गुत्तीहि जो स संजदो होइ॥ णिग्गंथमोक्खमग्गो॥ सो होदि ५९
हु वंदिणिज्जो य॥२०॥ अर्थ॥ जो मुनि पंच महाव्रत करि युक्त होय अर तीन गु

प्ति करि संयुक्त होय सो ही संयत है संयमवान है॥ बहुरि निर्ग्रंथ मोक्षमार्ग
है सो ही प्रगटपणै निश्चय करि वंदने योग्य है॥ भावार्थ॥ अहिंसा सत्य अस्ते
य ब्रह्मचर्य अर अपरिग्रह इनि पांच महाव्रतनि करि सहित होय बहुरि म
न वचन काय रूप तीन गुप्तनि करि सहित होय सो संयमी है सो ही निर्ग्रंथ स्व
रूप है सो ही वंदवे योग्य है जो किछू अल्प बहुत परिग्रह राखै सो महाव्रती सं
यमी नाही यह मोक्षमार्ग नाही यह ग्रहस्थ वत् है॥ छ॥ आगैं कहै है जो पूर्वोक्त
तौ एक भेष मुनि का कह्या अब दूसरा भेष उत्कृष्ट श्रावक का ऐसा कह्या है॥
गाथा॥ दुइयं च उत्त लिंगं उक्किट्ठं अवरसावयाणं च॥ भिक्खं भमेइ पत्तो स
मिदी भासेण मोणेण॥२१॥ अर्थ॥ द्वितीय कहिए दूसरा लिंग भेष उत्कृष्ट अ
पर श्रावक कहिए जो ग्रहस्थ नाही ऐसा उत्कृष्ट श्रावक ताका कह्या है सो

६० क्रियलक हिएपात्रमे करै तथा हाथमें करै वहुरि समितिरूप प्रवर्त्तन
भाषासमितिरूप वोलै अथवा मौनि करि प्रवर्त्तै ॥भावार्थ॥ एक तौ मुनिका
यथाजातलिंगरूप लिंग कह्या वहुरि दूसरा यह उत्कृष्ट श्रावकका कह्या
सो ग्यारमी प्रतिमाका धारक उत्कृष्ट श्रावक है ॥ सो एक वस्त्र तथा कोपी
नमात्र धारै है वहुरि भिक्षा करि भोजन करै है वहुरि पात्रमैंभी भोजन करै
करपात्र भी करै ॥ वहुरि समितिरूप वचन भी कहै ॥ अथवा मौन भी राषै
ऐसा दूसरा भेष है ॥७॥ आगें तीसरा लिंग स्त्रीका कहै है ॥गाथा॥ लिंगं इत्थी
णा हवदि भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि अज्जियवि एकवच्छा वच्छावरणे ॥ ६०
ण भुंजेइ ॥२२॥ अर्थ॥ लिंग है सो स्त्रीनिका ऐसा है एक काल विषै तो भोजन

करै वारवार न षाय ॥ वहुरि अर्जिका भी होय तौ एक वस्त्र धारै ॥ वहुरि भोजन कर
ते भी वस्त्रके आवरणसहित करै नग्न न होय ॥भावार्थ॥ स्त्री अर्जिका भी होय
है अर क्षुल्लिका भी होय है सो दोऊ ही भोजन तौ दिनमै एकवार ही करै अर्जिका
होय सो एक वस्त्र धारै वस्त्र धारे ही भोजन करै नग्न न होय ॥ ऐसा स्त्रीका तीसरा
लिंग है ॥७॥ आगें कहै है वस्त्रधारक कै मोक्ष नाही मोक्षमार्ग नग्नपणा ही है
॥गाथा॥ णवि सिज्झइ वच्छधरो जिणसासण जइवि होय तित्थयरो णग्गो विमोक्खम
ग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे ॥२३॥ अर्थ॥ जिनसासनविषै यह कह्या है जो वस्त्रधार
नेवाला सीझै नाही है मोक्ष नाही पावै ॥ जो तीर्थंकर भी होय तौ जेतैं ग्रहस्थ रहै ते
तै मोक्ष न पावै ॥ दिक्षा ले दिगंवररूप धारै तब मोक्ष पावै जातैं नग्नपणा है सो ही
मोक्षमार्ग है अवशेष वाकी सर्व ही उन्मार्ग है ॥भावार्थ॥ स्वेतांवर आदिक वस्त्र

६१ ह्मा नांही ताका कारण कहै है ॥ गाथा ॥ लिंगम्मिय इत्थीणं ॥ थणंतरे णाहि करक-
देसेसु भणिओ सुहुमो काओ तासिं कह होइ पव्वज्जा ॥२४॥ अर्थ ॥ स्त्रीनि के लिंग
कहिए योनि ता विषै तथा स्तनांतर कहिए दोऊ कुचनि के मध्य प्रदेश विषै त-
था कक्षदेश कहिए कांख विषै सूक्ष्मकाय कहिए दृष्टि के अगोचर जीव कहे
है सो ऐसी स्त्रीनि के प्रव्रज्या कहिए दीक्षा कैसे होय ॥ भावार्थ ॥ स्त्रीनि के हा योनि
स्तन कांख विषै पंचेंद्रिय जीवनि की उत्पत्ति निरंतर कही है तिनि कै महाव्र-
तरूप दीक्षा कैसे होय । बहुरि महाव्रत कहे है सो उपचार करि कहे है तिनि
कैं महाव्रतरूप दीक्षा कैसें होय । बहुरि महाव्रत कहे है परमार्थ नाही स्त्री अ- ६१
पना सामर्थ्य की हद कूं पहुंचि व्रत धारै तिस अपेक्षा उपचार महाव्रत कहे है ॥

आगै कहै है जो स्त्री भी दर्शन करि शुद्ध होय तो पाप रहित है भली है ॥ गाथा ॥ ज-
इ दंसणेण सुद्धा उत्ता मग्गेण सा वि संजुत्ता ॥ घोरचरियचरित्तं इत्थीसु ण पाव-
या भणिया ॥२५॥ अर्थ ॥ जो स्त्रीनि विषै जो स्त्री दर्शन कहिये यथार्थ जिनमत की
श्रद्धा करि शुद्ध है सो भी मार्ग करि संयुक्त कही है ॥ जो घोर चारित्र तीव्र त-
पश्चरणादिक आचरण करि अर पाप तैं रहित होय है ता तैं पापयुक्त न
कहिए ॥ भावार्थ ॥ स्त्रीनि विषै जो स्त्री सम्यक्त्व करि सहित होय अर तपश्चरण क-
रै तो पाप रहित होय स्वर्ग कूं प्राप्त होय है ॥ ता तैं प्रसंसा योग्य है अर स्त्री पर्याय तैं
मोक्ष नांही ॥ ॥ आगै कहै है जो स्त्रीनि कै ध्यान की सिद्धि भी नांही ॥ गाथा ॥
चित्तासोहि ण तेसिं ढिल्लं भावं तहा सहावेण ॥ विज्जदि मासा तेसिं इत्थीसु ण संक-
या झाणं ॥२६॥ अर्थ ॥ तिनि स्त्रीनि कै चित्त की शुद्धता नाही है तैसैं ही स्वभाव

येमासमासमेरुधिरकाश्रवणविद्यमानहैताकीसंकारहैहैताकरिस्त्रीनि
विषैध्याननाहीहै॥भावार्थ॥ध्यानहोयहैसोचित्तकीशुद्धहोयदृढपरिणामहोय
कारूतरैकीसंकानहोयहैसोस्त्रीनिकैतीनूहीकारणनांहीतवध्यानकै
सैहोयअरध्यानविनाकेवलकैसैंउपजेंकेवलज्ञानविनामोक्षनांहीऐसे
स्त्रीनिकैमोक्षनांहीस्वेतांवरादिककहैहैसोमिथ्याहै॥आगैंसूत्रपाहुड
कूंसमापतकरैहैसोसामान्यकरिसुखकाकारणकहैहै॥गाथा॥गाहेणअ
प्पगाहा॥समुद्दसलिलेसचेलअच्छेण॥इछाजास्सणियत्ता॥ताहणियताईसव्व
दुखकाइं॥२७॥अर्थ॥जेमुनिग्राह्यकहिएग्रहणकरनेंयोग्यवस्तुआहारआदि
कतिनिकरितौअल्पग्राह्यहैंथोराग्रहणकरैहै॥जैसेकोईपुरुषवहुतज ६२

लतैंभस्याजोसमुद्रताविषैंअपनेंवस्त्रकेप्रक्षालनेंकूंवस्त्रधोवनेंमात्रजलग्र
हणकरैतैसैंवहुरिजिनमुनिनिकैंइछानिवृत्तिभईतिनिसर्वदुःखनिवृत्ति
भये॥भावार्थ॥जागतलैयहप्रसिद्धहैजोजिनकैसंतोषहैतेसुखीहैइसन्यायक
यहसिद्धभयाजोमुनिनिकैइछाकीनिवृत्तिहैसंसारकेविषयकषायसंबंध
इछाकिंचितमात्रभीनाहीदेहतैंभीविरक्तहैतातैंपरमसंतोषीहैआहारा
आदिककछूग्रहणयोग्यहैतिनिकूंभीअल्पकूंग्रहणकरैहै॥तातैतेपरमसंतो
षीहैतेपरमसुखीहै॥यहजिनसूत्रकेश्रद्धानकाफलहै॥अन्यसूत्रमेंयथार्थ
निवृत्तिकाप्ररूपणनांहीतातैकल्याणकेसुखकेअर्थीनिकूंजिनसूत्रका
सेवननिरंतरकरनायोग्यहै॥ऐसैसूत्रपाहुडकूंपूर्णकीया॥छप्पय॥जि
नवरकीधुनिमेघध्वानसमसुखतेगरजै॥गणधरकेश्रुतभूमि॰वरषि

MEMORIAL

अ०पा० ... [illegible]

६३ विधानलोकनिकैंमनधारैं विधिवुरापपापअरलोककीमुनिश्रावकआचा
रकुनिकरिस्वपरभेदनियलौंसकलकर्मनाशिवलहैमुनि ॥दोहा॥ वर्द्धमा
नजिनकेवचन पवरतेपंचमकाल भव्यपायसिवमगलहै नमूंतास
गुणमाल ॥१॥ इतिश्रीसूत्रपाहुडकीवचनिकासमाप्त ॥ ॥अथचारि
त्रपाहुडकीवचनिकालिष्यते ॥दोहा॥ विगतरागसर्वज्ञजिन वंदोमन
वचकाय चारित्रधर्मवषानिये साचोमोक्षउपाय १ कुंदकुंदमुनिराज
कृत चारित्रपाहुडग्रंथ प्राकृतगाथाबंधकी करूंवचनिकापंथ २ ऐ
सेंमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकरिअरचारित्रपाहुडप्राकृतगाथाबंधकीदेश ६३
भाषामयवचनिकालिखियेहै तहांश्रीकुंदकुंदाचार्यप्रथमहीमंगलकै

र्थिइष्टदेवकूंनमस्कारकरिचारित्रपाहुडकहनेकीप्रतिज्ञाकरै है ॥गा॥
सव्वण्हुसव्वदंसीणिम्मोहावीयरायपरमेट्ठी वंदित्तुतिजगवंदाअर
हंताभव्वजीवेहिं ॥१॥ णाणंदंसणसम्मंचारित्तंसोहिकारणंतेसिंमुक्खाराह
णाहेउंचारित्तंपाहुडंवोच्छे ॥२॥ ॥अर्थ॥ आचार्यकहैहैजोमैंअरहंतपर
मेष्ठीकूंवंदिकरिचारित्रपाहुडहैताहिकहोंगा कैसेहैंअरहंतपरमेष्ठी॥
अरहंतऐसाप्राकृतअक्षरअपेक्षातौऐसाअर्थअकारआदिअक्षर
करितौअरसातौमोहकर्मवकारिरकारआदिअक्षरअपेक्षारजाऐसा
ज्ञानावरणदर्शनावर्णकर्मवकारितिसहीरकारकरिरहस्यऐसाअरहंत
है वकारिसंस्कृतअपेक्षाअर्हऐसापूजाअर्थविषेधातुहैताकाअर्हत्ऐ
सोनिपजेतवपूजायोग्यहोयताकूंअर्हतकहिएसोभव्यजीवनिकरिपूज्य

[redacted]

६४ ष्टी कहिये अथवा परम जो उत्कृष्ट पद ताविषै तिष्टै ऐसा होय सो परमेष्टी ऐ
सा इंद्रादिक करि पूज्य अरहंत परमेष्टी है वहुरि कैसे है सर्वज्ञ सर्व लोका
लोक स्वरूप चराचर पदार्थनि कूं प्रत्यक्ष जानैं सो सर्वज्ञ वहुरि कैसे है सर्व
दर्शी कहिए सर्व पदार्थनि के देखने वाले है । वहुरि कैसे है निर्मोह है मोहनी
यनामा कर्म का प्रधान प्रकृति मिथ्यात्व है ता करि रहित है । वहुरि कैसे है वी
तराग है विशेष करि जाकै राग दूरि भया होय सो वीतराग जिनकै चारित्रमोह
कर्म के उदय होय ऐसे राग द्वेष भी नाही है । वहुरि कैसे है त्रिजगद्वंद्य है ती
न जगत के प्राणी तथा तिनिके स्वामी इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्ति तिन करि वंद ६४
वे योग्य है ऐसैं अरहंत पद कूं विशेष करि अन्य पद विशेषण करि अर्थ की

या है वहुरि सर्वज्ञ पद कूं विशेष्य करि अन्य पद विशेषण करिए ऐसे भी अ
र्थ होय है तहां अरहंत भव्य जीवनि करि पूज्य है ऐसा विशेषण होय है । व
हुरि चारित्र ऐसा है । सम्यग्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्र ए तीन आत्मा
के परिणाम है तिनि की शुद्धता का कारण है ॥ चारित्र अंगीकार भयें सम्यग्दर्श
नादि परिणाम निर्दोष होय है वहुरि कैसा है चारित्र मोक्ष का आराधना का का
रण है ऐसा चारित्र है ताका पाहुड कहिये प्राभृत ग्रंथ कहौंगा ऐसा आचा
र्य मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा करी है ॥ छ ॥ आगै सम्यग्दर्शनादि तीन भावनि का स्वरू
प कहै है ॥ गाथा ॥ जं जाणइ तं णाणं जं पिच्छइ तं च दंसणं भणियं । णाणस्स पिच्छ म
यस्स य समवण्णा होइ चारित्तं ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जो जाणै सो ज्ञान है वहुरि जो देखै सो द
र्शन है । ऐसैं कह्या है । वहुरि ज्ञान का अर दर्शन का समायोग तैं चारित्र होय है

अष्टपा भावार्थ॥ जाणै सो ज्ञान अर श्रद्धान होय सो दर्शन अर दोऊ एकरूप होय
६५ थिर होना चारित्र है॥ ३॥ आगैं कहै है जो ए तीन भाव जीव के है तिन की शुद्धता
के अर्थि चारित्र दोय प्रकार कह्या है॥ गाथा॥ एए तिण्णि वि भावा हवंति॥ जीव
स्स अक्खयामेया। तिण्हं पि सोहणत्थे जिणभणियं दुविह चारित्तं॥ ४॥ अ
र्थ॥ ए ज्ञान आदिक तीन भाव कहे ते अक्षय अर अनंत जीव के भाव है इनके
साधने के अर्थि जिनदेव दोय प्रकार चारित्र कह्या है॥ भावार्थ॥ जाननां देखनां
आचरण करना ए तीन भाव जीव के अक्षयानंत हैं। अक्षय कहिए जाका
नाश नाही अमेय कहिए अनंत जाका पार नांही सर्व लोकालोक कूं जान
नेंवाला ज्ञान है ऐसा ही दर्शन है ऐसा ही चारित्र है। तथापि यह कर्म के नि ६५
मित्त तें अशुद्ध है मिथ्यादर्शन ज्ञान चारित्र रूप है तातैं श्री जिनदेव तिनि के शु

द्ध करनें कूं इनि का चारित्र आचरन करनां दोय प्रकार कह्या है॥ ४॥ आगैं ते दो
य प्रकार कह्या सो कहै है॥ गाथा॥ जिणणाणदिट्ठिसुद्धं पढमं सम्मत्तचरणचा
रित्तं। विदियं संजमचरणं जिणणाणसदेसियं तंपि॥ ५॥ अर्थ॥ प्रथम तौ स
म्यक्त्व का आचरण स्वरूप चारित्र है सो कैसा है जिनदेव का ज्ञान अर दर्शन
श्रद्धान ता करि कीया हूवा शुद्ध है। बहुरि दूसरा संयम का आचरण स्वरूप
चारित्र है सो भी जिनदेव का ज्ञान करि दिखाया हूवा शुद्ध है॥ भावार्थ॥ चारि
त्र दोय प्रकार कह्या तहां प्रथम तौ सम्यक्त्व का आचरण कह्या सो जो सर्व
ज्ञ का आगम मैं तत्वार्थ का स्वरूप कह्या ताकूं यथार्थ जाणि श्रद्धान करणां
अर ताके संकादि अतीचार मल दोष कहे तिनि का परिहार करि शुद्ध कर
नां अर ताके निःशंकितादि गुणनि का प्रगट होना सो सम्यक्त्वाचरण चारित्र

संयमका आचरण करनां अरु ताके अतीचार आदि दोषनिका दूरि कर
नां सो संयमाचरणचारित्र है। ऐसैं संक्षेपकरि स्वरूप कह्या ॥ ॥ आगैं सम्य
क्त्वचरणचारित्रके मलदोषनिका परिहार करि आचरण करणां ऐसैं
कहै है ॥ गाथा ॥ एवं चिय णाऊण य सव्वे मिच्छत्तदोस संकाइ परिहर सम्मत्त
मला जिण भणिया तिविहजोएण ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ऐसें पूर्वोक्त प्रकार सम्यक्त्व
चरणचारित्रकूं जाणि अर मिथ्यात्वकर्मके उदयतें भये जे संकादिक दोष
ते सम्यक्त्वके अशुद्ध करणेवाले मल है ते जिनदेव कहे है तिनि सर्वनिकूं
मनवचकायकरि भये जे तीन प्रकारके योग तिनिकरि छोडणे ॥ भावार्थ ॥ स ६६
म्यक्त्वाचरणचारित्रकूं संकादि दोष सम्यक्त्वके मल है तिनिकूं त्यागें शुद्ध

होय है यातैं तिनिका त्याग करनें का उपदेश जिनदेव कीया है। ते दोष कहा सो
कहिये है। जो जिनवचन विषै वस्तुका स्वरूप कह्या है ता विषै संशय करनां सो १
तौ संका है याके होतें सप्तभयके निमित्ततें स्वरूपतैं चिगि जाय सो नीसंका है
वहुरि भोगनिका अभिलाष सो कांक्षा है याके होतें भोगनिके अर्थि स्वरूपतैं
भ्रष्ट होय है। वहुरि वस्तुका धर्म विषै गलानि करनां सो जुगुप्सा है याके होतें ध
र्मात्मा पुरुषनिके पूर्वकर्मके उदयतें वाह्य मलिनता देखि धर्मतैं चिगनां होय
है। वहुरि देव धर्म गुरु तथा लौकिक कार्यनि विषै मूढता यथार्थ स्वरूप
न जाननां सो मूढदृष्टि है याके होतें अन्य लौकिककरि मानें जे सरागी देव हिं
सा धर्म सग्रंथ गुरु तथा लोकनि मैं विना विचार्यां मानें जे अनेक क्रिया
विशेष तिनितैं विनयादिककी प्रवृत्ति करनें तैं यथार्थ मततैं भ्रष्ट होय है व

६७ वस्ताकरनांसोअनूपगूहननहैंयाकेहोतेंधर्मतेंछूटिजानाहोहै।वहुरि
धर्मात्मापुरुषनिकूंकर्मकेउदयकेवसतेंचिगतादेषितिनिकीथिरतान
करनीसोअस्थितीकरनहैयाकेहोतेंजानियेयाकैधर्मतेंअनुरागनां
हीअरअनुरागनहोनांसोसम्यक्तमेंदोष॥वहुरिधर्मात्मापुरुषनितेंवि
शेषप्रीतिनकरनांसोअवात्सल्यहैयाकेहोतेंसम्यक्तकाअभावप्रगट
सूचैहै।वहुरिधर्मकामाहात्म्यसक्तिसारूप्रगटकरनासोअप्रभावना
हैयाकेहोतेंजानियेयाकैधर्मकामाहात्म्यकीश्रद्धादृढनभईऐसेएअ
ठदोषसम्यक्तकेमिथ्यात्वकेउदयतैंहोयहैंजहांएतीव्रहोयतहांतो। ६७
मिथ्यात्वप्रकृतिकाउदयजनावैहैसम्यक्तकाअभावजनावैहैअर

जहांकिछूमंदअतीचाररूपहोयतोसम्यक्तप्रकृतिनाममिथ्यात्वकीप्र
कृतिकेउदयतैंहोयतेअतीचारकहियेतहांक्षायोपसमिकसम्यक्तका
सद्भावहोयहैपरमार्थविचारियेतवअतीचारत्यागनेंहीयोग्यहैं।वहुरि
मूढनिकेहोतेंअन्यनीमलप्रगटहोयहै।तहांतीनतोमूढतादेवपाखंडमू
ढलोकमूढतहांदेवमूढताताकौऐसाजहांकिछूवरकीवांछाकरिसरा
गीदेवनिकीउपासनाकरनांतिनिकीपाषाणादिविषेस्थापनाकरिपूज
नां।वहुरिपाषंडिमूढताऐसाजहांग्रंथआरंभहिंसादिकसहितपाषं
डीनिषीतिनिकासत्कारपुरस्कारादिककरनां।वहुरिलोकमूढताऐ
साजहांअन्यमतीनिकेउपदेशतेंतथास्वयमेवविनाविचारेकिछूप्र
वृतिकरनेंलागिजायजैसेंसूर्यकूंअर्घदेनांग्रहणविषेंस्नानकरनांसंक्रां

BHAU DAJI MEMORIAL

[illegible]
ग्रहकूं नमस्कार करनां । गऊ का मूत्र कूं पीवनां । रत्न घोडा आदि वाहन पृ-
थ्वी वृक्ष शस्त्र पर्वत आदिका सेवन पूजन करनां । नदी समुद्र आदि कूं ती-
र्थ मांनि तिनि मैं स्नान करनां । पर्वत तैं पडनां । अग्नि मैं प्रवेश करनां इत्यादि
जाननां ॥ बहुरि छह अनायतन है कुगुरु कुदेव कुशास्त्र अर इनि के भक्त
ऐसैं छह इनि कूं धर्म के ठिकाणे जाणि इन की मन करि प्रशंसा वचन करि
सराहनां करनां ए धर्म के ठिकाणे नांही तातैं इनि कूं अनायतन कहे ॥ बहु-
रि जाति लाभ कुल रूप तप बल विद्या ऐश्वर्य इनि का गर्व करनां ऐसैं आठ
मद है । तहां जाति तौ माता पक्ष है अर लाभ धनादिका कर्म के उदय के आ- ६८
श्रय है कुल पिता पक्ष है रूप कर्म उदयाश्रित है तप अपना स्वरूप साध-

नें कूं है बल कर्म उदयाश्रित है विद्या कर्म के क्षयोपशमाश्रित है ऐश्वर्य क-
र्मोदयाश्रित है इनि का गर्व कहा पर द्रव्य के निमित्त तैं होय ता का गर्व करनां
सम्यक्त्व का अभाव जनावै है ॥ अथवा मलिनता करै है ऐसैं ए पचीस सम्य-
क्त्व के मल दोष है तिनि कूं मेटि सम्यक्त्व शुद्ध होय है सो ही सम्यक्त्व चरण चारि-
त्र का अंग है ॥ ६ ॥ आगैं संकादि दोष दूरि भयें आठ अंग सम्यक्त्व के प्रगट हो-
य है तिनि कूं कहै हैं ॥ गाथा ॥ निस्संकिय निक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढदि-
ट्ठी ये उवगूहण ठिदि करणं वच्छल्ल पहावणा य ते अट्ठ ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ निःशं-
कित निःकांक्षित निर्विचिकित्सा अमूढदृष्टि उपगूहन स्थितिकरण वात्स-
ल्य प्रभावना ऐसैं आठ अंग है ॥ भावार्थ ॥ आठ अंग पहले कहे जे संकादि
आठ दोष तिनि के अभाव तैं प्रगट होय है तिनि के उदाहरण पुराणनि मैं है ति-

६५ नवचनविषैसंकानकरीनिर्नयहोयछैकैकीलडकाटिमंत्रसिद्धकीया
वकूरिनिःकांक्षितकासीतांअनंतमतीसुताराआदिकाउदाहरणहै।
जिनिनैंभोगनिकैअर्थिधर्मनछोड्या वकूरिनिर्विचिकित्साकाउदायनरा
जाकाउदाहरणहैयानैमुनिकाशरीरअपवित्रदेषिग्लानिनकरी व
कूरिअमूढदृष्टीकारेवतीराणीकाउदाहरणहै जानैविद्याधरअनेकम
हिमादिषाईतौऊश्रद्धातैंसिथिननभई वकूरिउपगूहनकाजिनेंद्रभक्तसे
ठकाउदाहरणहैजानैंचोरब्रह्मचारभेषकरिछत्रचोर्‍यातांकूंब्रह्मचार
पदकीनिंदाहोतीजाणितांकादोषछिपाया वकूरिस्थितीकरणकावारि ६८
षेणकाउदाहरणहैजानैपुष्पदंतब्राह्मणकूंमुनिपदतैंसिथिलभयाजा

णिदृढकीया। वकूरिवात्सल्यकाविष्णुकुमारमुनिकाउदाहरणहैजानै
अकंपनआदिमुनिनिकाउपसर्गनिवारणकीया। वकूरिप्रभावनाविषैं
वज्रकुमारमुनिकाउदाहरणहैजानैंविद्याधरनिकासहायपायधर्मकाप्र
भावनाविषैंवज्रकुमारमुनिकीया ऐसैंआठअंगप्रगटभयेसम्यक्तच
रणचारित्रसंभवैहै जैसैंशरीरमैंहाथपगहोयतैसैंसम्यक्तकेअंगहैंतिन
होयतौविकलांगहोय॥ ७॥ आगैकहैहै जोऐसैंपहलासम्यक्तचरण
चारित्रहोयहै॥ गाथा॥ तंचेवगुणविसुद्धं जिणसम्मत्तंसुमुक्खठाणाय। जं
चरइणाणजुत्तं पढमंसम्मत्तचरणचारित्तं ॥ ८ ॥ अर्थ ततूकहियेसोजिन
सम्यक्तकहियेअरहंतभगवंतजिनदेवकीश्रद्धानिःशंकितआदिगुण
निकरिविशुद्धहोयतहांयथार्थज्ञानकरिसहितआचरणकरैसोप्रथ

चा०पा० मसम्यक्त्वचरणचारित्र है सो मोक्षस्थान के अर्थि होय ॥ भावार्थ ॥ सर्वज्ञ
७० भाषित तत्वार्थ की श्रद्धा निःसंकितत्व आदि गुणनि करि सहित पचीस मलदो
षनि करि रहित ज्ञानवान आचरण करै ताकूं सम्यक्त्वचरणचारित्र क
हिये सो यह मोक्ष की प्राप्ति के अर्थि होय है जातै मोक्षमार्ग मे पहलै सम्यग्द
र्शन कह्या है तातै मोक्षमार्ग मे प्रधान यह ही है ॥ ८ ॥ आगै कहै है जो ऐसा स
म्यक्त्वचरणचारित्र कूं अंगीकार करि जो संयमचरणचारित्र कूं अंगीका
र करै तौ सीघ्र ही निर्वाण कूं पावै ॥ गाथा ॥ सम्मत्तचरणसुद्धा संजमचरण
स्स जइ व सुपसिद्धा । णाणी अमूढदिट्ठी अचिरे पावंति णिव्वाणं ॥ ९ ॥ अर्थ
जे ज्ञानी भये संते अमूढदृष्टी होय करि अर सम्यक्त्वचरणचारित्र क
रि शुद्ध होय है अर जो संयमचरणचारित्र करि सम्यक् प्रकार शुद्ध होय ७०

तौ सीघ्र ही निर्वान कूं प्राप्त होय है ॥ भावार्थ ॥ जो पदार्थ का यथार्थ ज्ञान करि
मूढदृष्टि रहित विशुद्ध सम्यग्दृष्टी होय करि सम्यक्चारित्रस्वरूप संयम का
आचरै तौ सीघ्र ही मोक्ष कूं पावै संयम अंगीकार भये स्वरूप संयम का आ
चरै तौ सीघ्र ही मोक्ष कूं पावै संयम अंगीकार भयें स्वरूप का साधन रूप ए
काग्र धर्मध्यान के बलतैं सातिशय अप्रमत्त गुणस्थान रूप होय श्रेणि चढि
अंतर्मुहूर्त मे केवलज्ञान उपजाय अघाति कर्म का नास करि मोक्ष पावै
है सो यह सम्यक्त्वचरणचारित्र का ही महात्म है ॥ ९ ॥ आगै कहै है जो सम्य
क्त्व के आचरण करि भ्रष्ट है ते संयम का आचरण करै है तौ मोक्ष नाही पा ।
वै है ॥ गाथा ॥ सम्मत्तचरणभट्ठा संयमचरणं चरंति जे वि णरा ॥ अण्णाणणाण ।
मूढा तह वि ण पावंति णिव्वाणं ॥ १० ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष सम्यक्त्वचरणचारि

७२ तिनि वाणाकूं नाही पावै है ॥ भावार्थ ॥ सम्यक्त्वचरण चारित्र विना संयमाचरण
चारित्र निर्वाण का कारण नाही है । जातैं सम्यग्ज्ञान विना तौ चारित्र मि
थ्या कहावै है । अर सम्यक्त्वाचरण विना ज्ञान मिथ्या कहावै है सो सम्यक्त्व
विना चारित्रकै मिथ्यापणा पावै है ॥ आगैं प्रश्न उपजै है जो ऐसा सम्य
क्त्वाचरण चारित्रकै चिह्न कहा है तिनिकरि तिसकूं जाणिये ताका उत्तर
रूप गाथा मैं सम्यक्त्वके चिह्न कहै है ॥ गाथा ॥ वच्छल्लं विणयेण य अणुकं
पाए सुदाणदच्छाए । मग्गगुणसंसणाए अवगूहण रक्खणाए य ॥ ११ ॥
एएहि लक्खणेहि य लक्खिज्जइ अज्जवेहिं भावेहिं जीवो आराहंतो ७२
जिणसम्मत्तं अमोहेण ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ जिनदेवकी श्रद्धा जो सम्यक्त्व ताकूं

मोह कहिए मिथ्यात्व ताकरि रहित आराधता जीव है सो एते लक्षण कहि
ये चिह्न तिनिकरि लखिये है जानिये है प्रथम तौ धर्मात्मा पुरुषनितैं जाकै वत्स
लभाव होय जैसैं तत्कालकी प्रसूतिवान गऊकै वत्सासूं प्रीति होय तैसैं धर्मा
त्मासूं प्रीति होय एक तौ यह चिह्न है । बहुरि सम्यक्त्वादि गुणनिकरि अधि
क होय ताका विनय सत्कारादिक जाकै होय ऐसा विनय एक यह चिह्न
है । बहुरि दुखी प्राणी देखि करुणाभावस्वरूप अनुकंपा जाकै होय यह ।
चिह्न है । बहुरि अनुकंपा कैसी होय भलै प्रकार दानकरि योग्य होय । बहुरि
निर्ग्रंथस्वरूप मोक्षमार्गकी श्रद्धा हनै नाही । बहुरि धर्मात्मा पुरुषनिकै क
र्मकै उदयतैं दोष उपजै ताकूं विख्यात न करै ऐसा उपगूहन भाव होय एक
यह चिह्न है । बहुरि धर्मात्माकूं कुमार्गतैं चिगता जाणि तिसकी थिरता ।

[illegible]
सर्वचिह्ननिका सत्यार्थ करनेवाला एक आर्जव भाव है जातें निष्कपट प
रिणामतें सर्व चिह्न सत्यार्थ होय है ऐतें लक्षणनिकरि सम्यग्दृष्टीकूं
जानिये है। भावार्थ। सम्यक्त्व भाव मिथ्यात्व कर्मके अभावतें जीवका भाव
प्रगट होय है सो यह भाव तौ सूक्ष्म है छद्मस्थके ज्ञानगोचर नाही अर ता
के बाह्य चिह्न सम्यग्दृष्टीकै प्रगट होय है तिनकरि सम्यक्त्व भया जानिये
है ते एवात्सल्य आदि भाव कहे ते आपके तौ आपके अनुभवगोचर हो
य है। अर अन्यके ताकी वचन कायकी क्रियातें जानिये है। तिनकी परीक्षा
जैसे आपके क्रियाविशेष होय तैसे अन्यके परीक्षातें जानें जाय ऐसा व्य ७२
वहार है जो ऐसा न होय तौ सम्यक्त्वका व्यवहार मार्गका लोप होय जातें

व्यवहारी प्राणीकूं व्यवहार हीका आश्रय कह्या है परमार्थ सर्वज्ञ जानै है
॥ ॥ आगें कहे है जो ऐसे कारणनिकरि सहित होय तौ सम्यक्त्व छोडे है॥
गाथा। उच्छाहभावणासं पसंससेवा कुदंसणे सद्धा। अण्णाणमोहमग्गो
कुव्वंतो जहदि जिणसम्मं॥ १३॥ अर्थ। कुदर्शन कहिये नैयायिक वैशेषिक
मत सांख्यमत अर मीमांसक वेदांतमत अर बौद्ध चार्वाक अन्यवादके
मत इनिके भेष तथा भाषे पदार्थ तिनिकी उपासना। वकुरि स्वेतांबरादि
क जैनाभास इनकै विषै श्रद्धा तथा उत्साह भावना तथा प्रसंसा तथा इ
निकी उपासना सेवा करता पुरुष है सो जिनमतकी श्रद्धारूप सम्यक्कूं छो श्र
डे है। कैसा है कुदर्शनि अज्ञान अर मिथ्यात्वका मार्ग है। भावार्थ। अ
नादिकालतें मिथ्यात्व कर्मके उदयतें यह जीव संसारमें भ्रमै है सो कोई

[illegible]हायअरफारिमिथ्यामतकप्रसं
७४ करिमिथ्यामतकेविषेकिछूकारणतेंउत्साहभावनाप्रशंसासेवाश्रद्धाउपजे
तोसम्यक्त्वकाअभावहोयजायजातेंजिनवचनमतसिवायअन्यमतहैति
निमेंछद्मस्थअज्ञानीनिकरिप्ररूप्यामिथ्यापदार्थतथामिथ्याप्रवृत्तिरू
पमार्गहैताकीश्रद्धाआवैतबजिनमतकीश्रद्धाजातीरहैतातेंमिथ्यादृ
ष्टीनिकासंसर्गहीनकरनाऐसाभावार्थजाननां॥छ॥आगैकहैहै
जोयेहीउछाहभावनादिककहेतेसुदर्शनविषेहोयतोजिनमतकी
श्रद्धारूपसम्यक्त्वकूंनछोडैहै॥गाथा॥उच्छाहभावणासंपसंससेवासु
दंसणेसद्धाणजहदिजिनसम्मतं कुवंतोणाणमग्गेण॥१४॥अर्थ॥सु ७३
दर्शनकहियेसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूपसम्यक्मार्गताविषेउ

छाहभंयोभावनाकहियाग्रहणकरनेंकाउत्साहअरवारवारचितवन(
रूपभावबहुरिसंपसंसाकहियेमनवचनकायकरिभलाजाणिस्तुति(
करनांसेवाकहियेउपासनापूजादिककरनाबहुश्रद्धाकरनीऐसैज्ञा
नमार्गकरियथार्थजाणिकरताप्रवर्तेहैसोजिनमतकीश्रद्धारूपसम्यक्त्व
कूंहेताहिनछोडैहै॥भावा॥जिनमतविषेउत्साहभावनाप्रसंसासेवाश्र
द्धाजाकैहोयसोसम्यक्त्वतेंच्युतनहोय॥छ॥आगेंअज्ञानमिथ्यात्वकु
चारित्रकात्यागकाउपदेशकरैहै॥गाथा॥अण्णाणंमिछत्तंवज्जहणा
णेविसुद्धसम्मत्तेअहमोहंसारंभंपरिहरधम्मेअहिंसाए॥१५॥अर्थ॥
आचार्यकहैहैजोहेभव्यतूंज्ञानकेहोतेंतोअज्ञानकूंवर्जित्यागक
रिबहुरिविशुद्धसम्यक्त्वकेहोतेंमिथ्यात्वकूंत्यागिकरिबहुरिअहिं

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

...दोणयमर्चाहोतेंश्रीरसैसाहितमोहकूंपरिहारि ॥ भावार्थ ॥ सम्यग्दर्श
नज्ञानचारित्रकीप्राप्तिभयेंफेरिमिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रविषैमतिप्रव
र्त्तेंऐसाउपदेशहैं ॥ ७ ॥ आगेफेरिउपदेशकरैहै ॥ गाथा ॥ पव्वज्जसंगचा
एपयट्टसुतवेसुसंजमेभावे ॥ होइसुविसुद्धझाणंणिम्मोहेवीयरायत्ते
॥ ८ ॥ अर्थ ॥ हेभव्यतूंसंगकहियेपरिग्रहकात्यागजामेहोयऐसेंदीक्षाग्र
हणकरि वहुरिभलेप्रकारसंयमस्वरूपभावहोतेंसम्यक्प्रकारतप
विषैप्रवर्त्तनकरिजातेंतेरैमोहरहितवीतरागपणांहोतेंनिर्मलधर्म
शुक्लध्यानहोय ॥ भावार्थ ॥ निर्ग्रंथहोयदीक्षालेसंयमभावकरिभले
प्रकारतपकैंरिविषैप्रवर्त्तेंतवसंसारकामोहदूरिहोयवीतरागपणा
होयतवनिर्मलधर्मध्यानशुक्लध्यानहोयहैऐसेंध्यानतेंकेवलज्ञानउ ७४

अरवुद्धिकहियेअज्ञानतिनिकेउदयकरिप्रवर्त्तैहै भावार्थ रागद्वमि थ्यात्व

पजायमोक्षप्राप्तहोयहैतातेंऐसाउपदेशहैं ॥ ८ ॥ आगैंकहैहैजोयह
जीवअज्ञानअरमिथ्यात्वकेदोषकरिमिथ्यामार्गविषैप्रवर्त्तैहै ॥ गाथा ॥
मिछादंसणमग्गेमलिणेअण्णाणमोहदोसेहिं वज्झंतिमूढजीवामिछ
त्ताबुद्धिदोसेण ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ मूढजीवहैतेअज्ञानअरमोहकहियेमिथ्यात्व
इनिकेदोषनिकरिमलिनजोमिथ्यादर्शनकहियेकुमतकामार्गताविषै
मिथ्यादर्शनत्वऐरअज्ञानकेउदयकरिमिथ्यामार्गविषैप्रवर्त्तैहैजातें
मिथ्यात्वअज्ञानकानाशकरनायहउपदेशहै ॥ ९ ॥ आगैंकहैहैजोस
म्यग्दर्शनज्ञानचारित्रश्रद्धानकरिचारित्रकेदोषदूरिहोयहै ॥ गाथा ॥ स
म्मदंसणपस्सदिजाणदिणाणेणदव्वपरिजाया ॥ सम्मेणयसद्दहदि परि
हरदिचरित्तजेदोसे ॥ १० ॥ अर्थ ॥ यहआत्मागदर्शनकरिलोसत्तामात्रवस्तु

७५ क्तकरिद्रव्यपर्यायस्वरूपसत्तामईवस्तुकाश्रद्धानकरैहैवहुरिऐसेदे
खनाजाननाश्रद्धानहोयतैचारित्रकहिएआचरणविषैउपजेजेदोषति या
निकूंछोडैहै।भावार्थ।वस्तुकास्वरूपद्रव्यपर्यायात्मकसमतास्वरूपहैसोजैसे 1
हैतैसादेखैजाणैश्रद्धानकरैतबआचरणशुद्धकरैतोसर्वज्ञकेआगम
तैंवस्तुकानिश्चयकरिआचरणकरणा।तहांवस्तुहैसोद्रव्यपर्यायस्व
रूपहै।तहांद्रव्यकासत्तालक्षणहैतथागुणपर्यायवानकूंद्रव्यकहिए
वहुरिपर्यायहैसोदोयप्रकारहैसहवर्तीअरक्रमवर्तीतहांसहवर्ती ७५
कूंगुणकहियेहैक्रमवर्तीपर्यायकहियेहैतहांद्रव्यसामान्यकरिएक
हैतोऊविशेषकरिछहहैजीवपुद्गल।धर्मअधर्मआकाशकालऐसैं

तहांजीवकैदर्शनज्ञानमयीचेतनातौगुणहै।अरमतिआदिकज्ञानअ
रक्रोधमानमायालोभआदितथानरनारकआदिविभावपर्यायहैस
भावपर्यायअगुरुलघुगुणकेद्वारैहानिवृद्धिकापरिणमनहै।वहुरि
पुद्गलद्रव्यकैस्पर्शरसगंधवर्णरूपमूर्तीकपणातौगुणहैअरस्पर्शर
सगंधवर्णकाभेदरूपपरिणमनतथाअणुस्कंधरूपहोनातथाश
ब्दबंधआदिरूपहोना।इत्यादिपर्यायहै।वहुरिधर्मअधर्मद्रव्यकैगति
हेतुत्वपणातौगुणहैअरइसगुणकैजीवपुद्गलकैगतिस्थितिकेभे
दहोयतैपर्यायहैतथाअगुरुलघुगुणकेद्वारैहानिवृद्धिकापरिणाम
नहैसोस्वभावपर्यायहै।वहुरिआकाशकैअवगाहनागुणहैअर
जीवपुद्गलआदिकेनिमित्ततैप्रदेशभेदकरिकल्पियेतेपर्यायहैत

७६

नातै गुण है अर जीव पुद्गल के निमित्त तैं समय आदि कल्पना सो पर्या
य है याकूं व्यवहार काल भी कहिए है बहुरि हानि वृद्धि का परिणाम सो
स्वभाव पर्याय है इत्यादि इनिका स्वरूप जिन आगम तैं जानि देखनां जानं
नां श्रद्धनां या तैं आचरण शुद्ध होय है विना ज्ञान श्रद्धान आचरण शु
द्ध नांही होय है ऐसैं जाननां ॥ ॥ आगै कहै है जो यह सम्यग्दर्शन ज्ञा
न चारित्र तीन भाव है मोह रहित जीव कै होय है इनि कूं आचरतैं सीघ्र मो
क्ष पावै है ॥ गाथा ॥ एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स मोहरहियस्स । णि
यगुणमाराहंतो अचिरेण वि कम्म परिहरइ ॥ १९ ॥ अर्थ ए पूर्वोक्त सम्य
ग्दर्शन ज्ञान चारित्र तीन भाव है ते निश्चय करि मोह मोह कहिये मि ७६

थ्यात्व ताकरि रहित होय तिस जीव कै होय है । तब यह जीव अपना निज
गुण जो शुद्ध दर्शन ज्ञानमयी चेतना ताकूं आराधता संता थोरे ही काल मैं
कर्म नाश करै है ॥ भावार्थ ॥ निज गुण का ध्यान तैं सीघ्र केवल ज्ञान उपजाय मो
क्ष पावै है ॥ ॥ आगै इस सम्यक्त्वचरण चारित्र के कथन कूं संकोचै है ॥ गाथा ॥
संखिज्जमसंखिज्जंगुणं च संसारिमेरुमित्ता णं सम्मत्तमणुचरंता करिं
ते दुक्खक्खयं धीरा ॥ २० ॥ अर्थ सम्यक्त्व कूं आचरण करते धीर पुरुष है ते सं
ख्यात गुणी तथा असंख्यात गुणी कर्मनि की निर्जरा नैं होय ते हो संख्यातगु
णी करै है बहुरि कर्मनि के उदय तैं भया संसार का दुख ता का नाश करै है
कैसे है कर्म संसारी जीवनि की मेरु कहिये मर्याद मात्र है सिद्ध भये पीछै
कर्म नाही है ॥ भावार्थ ॥ इस सम्यक्त्व के आचरण भये प्रथम काल मैं तो गुण

७७ संयमकाआचरणनहोयतेतैगुणश्रेणीनिर्जरानहोयतहांसंख्यातगु
णकाररूपहोयहैतातेंसंख्यातगुणअसंख्यातगुणऐसेंदोऊवच
नकहै।बहुरिकर्मनिसंसारअवस्थाहैजेतेहैतिनिमेंदुःखकाकारणमो
हकर्महैतिसमेंमिथ्यात्वकर्मप्रधानहैसोसम्यक्त्वभयेंमिथ्यात्वकातो
अभावहीभयाअरचारित्रमोहदुःखकाकारणहैसोयहुजेतेहैतेतेनि
र्जराकरैहै।ऐसेंअनुक्रमतेंदुःखक्षयहोयहैसंयमाचरणभयेंसर्वदुः
खकाक्षयहोयहीगा।इहांसम्यक्त्वकामहात्म्यऐसाहैसोसम्यक्त्वाचरण
भयेंसंयमाचरणभयेंसंयमाचरणभीसीघ्रहीहोयहैयातेंसम्यक्त्वकूंमो ७७
क्षमार्गमेंप्रधानजाणियाहीकावर्णनपहलेंकीयाहै॥छ॥आगेंसंयमचर

णचारित्रकूंकहैहै।गाथा।दुविहंसंयमचरणं।सायारंतहहवेणिराया
रं।सायारंसग्गंथेपरिग्गहारहियखलुणिरायारं॥२१॥अर्थ॥संयमच
रणचारित्रहैसोदोयप्रकारहैसागारतथानिरागारऐसेंतहांसाग
रतोपरिग्रहसहितश्रावककैहोयहै॥बहुरिनिरागारपरिग्रहरहित
मुनिकैहोयहैयहनिश्चयहै॥छ॥आगेंसागारसंयमाचरणकूंकहैहै॥
फ़े गाथा॥दंसणवयसामाइयपोसहसचित्तरायभत्तेय॥बंभारंभपरिग्ग
हअणुमणउद्दिट्ठदेशविरदोयं॥२२॥अर्थ॥दर्शनव्रतसामाइकअरप्रो
का षधआदिकानाममेंएकदेशहैनामऐसेंकह्यांप्रोषधउपवाससचित
त्यागि॥रात्रिभुक्तत्यागब्रह्मचर्यआरंभत्यागपरिग्रहत्यागि।अनुमतित्या
ग उदिष्टत्यागऐसेंग्याराप्रकारदेशविरतहै॥भावार्थ॥सागार

अ०पा० संयमचरणके ग्यारह भेद है सो प्रतिमानिकाहै ॥छ॥ आगै
७६ निश्चानविषै संयमका आचरण कौन प्रकार है सो कहै है ॥ गाथा ॥ पंचेव
णुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि ॥ सिक्खावय चत्तारि ॥ संयमचर
णं च सायारं ॥२३॥ अर्थ ॥ अणुव्रत पांच गुणव्रत तीन सिक्षाव्रत च्यारि
ऐसे बारह प्रकार संयमचरण चारित्र है सो यह सागार ग्रंथसहित सहि
त श्रावककै होय है तातै सागार कह्या है ॥ भावार्थ ॥ जो ए बारह प्रकार रहासश्र
सो व्रत कहे अर पहलैं गाथामै ग्यारह नाम कहे तिनिका प्र
थम दर्शनि नाम कह्या है तामै ए व्रत कैसे होय है ताका समाधान ऐ
सा जो अणुव्रत ऐसा नाम किंचित व्रतका है सो पांच अणुव्रतमै किं ७६
चित व्रतका है सो पांच अणुव्रतमैं किंचित इहां भी होय है तातै दर्शनि

प्रतिमाका धारक भी अणुव्रती ही है याका नाम दर्शन ही कह्या तहां ऐसा न जा
नना जो याकै केवल सम्यक्त ही होय है अव्रती है अणुव्रत नाहीं है याकै
अणुव्रत अतीचार सहित होय है तातै व्रती नाम कह्या इ जो प्रतिमामैं अणुव्र
त अतीचाररहित पालै तातै व्रत नाम कह्या है इहां सम्यक्तकै अतीचार टालै
है तातै सम्यक्त ही प्रधान है तातै दर्शनप्रतिमा नाम है ॥ अन्य ग्रंथनिमैं याका
स्वरूप ऐसैं कह्या जो आठ मूलगुण पालै सात व्यसन त्यागै सम्यक्त अतीचा
र रहित शुद्ध जाकै होय सो दर्शनप्रतिमाका धारक है तहां पांच उदंबर फल अ
र मद्य मांस सहत इनि आठनिका त्याग करै सो आठ मूलगुण है ॥ अथवा कोइ
ग्रंथमै ऐसे कह्या है जो पांच अणुव्रत पालै अर मद्य मांस मधु इनिका त्याग
करै ऐसैं आठ मूलगुण है सो यामै विरोध नाही है विवक्षाका भेद है पांच उदंबर

MEMORIAL

अ०पा०
७९ फलअरतानमकारकात्यागकहततेजिनवस्तानिमैंसाक्षात्त्रसदोषतिस
वैही वस्तुभक्षणनकरै देवादिकनिमित्ततथा औषधादिकनिमित्तइत्यादि
ककारणनिमैं हू त्रसजीवघातनकरै असा आशय है सो यांमैं तो अहिंसा
अणुव्रत आया अरसात व्यसनके त्यागमैं झूठका अरचोरीका अरपर
स्त्रीका त्याग आया अरव्यसनही के त्यागमैं अन्यायपरधनपरस्त्रीका ग्रह
णनाहीयामैं अतिलोभका त्यागतैं परिग्रहका घटावना आया असैं पांच
अणुव्रत आवे है इनिके अतीचार टलै नांही तातैं अणुव्रतीनाम न पावै अै
सैं दर्शनप्रतिमाका धारक भी अणुव्रती है तातैं देशविरत साकार संयमच
रणचारित्रमैं याकूं गिण्या है ॥ ७ ॥ आगै पांच अणुव्रतका स्वरूप कहै है ॥ ७९
॥ गाथा ॥ थूलेतसकायवहे थूलेमोसेअदत्तथूलेय परिहारोपरमहिलापरि

ग्गहारंभपरिमाणं ॥ अर्थ ॥ थूलजो त्रसकायका घात थूलमृषा कहिये अ
सत्य थूलअदत्त कहिये परका विनादीया धन परमहिला कहिये परकी स्त्री का नि
तो परिहार कहिये त्याग वहुरि परिग्रह अर आरंभका परमाण असैं पांच अणुव्र अर
त है ॥ भावार्थ ॥ इहां थूल कहनेमैं असा अर्थ जाननां जामैं अपनां मरण होय
परका मरण होय अपनां घर विगडै परका घर विगडै राजका दंडयोग्य होय
पंचनिकै दंडयोग्य होय असे मोटे अन्यायरूप पापकार्य जाननें असे स्थूल
पाप राजादिकका भय करि न करै सो व्रत नाही इनिकूं तीव्रकषायके निमित
तै तीव्रकर्मबंधके निमित्त जाणि स्वयमेव न करनेंके भावरूप त्याग होय सो
व्रत है तथा याके ग्यारह स्थानक कहे तिनिमैं उपरि उपरि त्याग वधता जाय है
सो याकी उत्कृष्टता ताई असा है जो जिनकार्यनिमैं त्रसजीवनिकूं बाधा होय

सव्रती होयहै ॥ याका विशेष कथन अन्य ग्रंथनिमें जानना ॥ ॐ ॥ आगें तीन अनुव्रतनीकूं कहै है ॥ गाथा ॥ दिसिविदिसिमाणपढमं अणत्थदंडस्स वज्जणं बिदियं भोगोपभोगपरिमाणं इयमेव गुणव्वया तिण्णि ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ दिसाविदिसा विषै गमनका परिमाण सो प्रथम गुणव्रत है बहुरि अनर्थदंडका वर्जना द्वितीय अणुव्रत है बहुरि भोगउपभोगका परिमाण सो तीसरा गुणव्रत है ऐसे ए तीन अणुव्रत है ॥ भावार्थ ॥ इहां गुणशब्द है सो उपकारवाचक है ए अणुव्रत तिनकूं उपकार करै है बहुरि दिशाविदिसा पूर्वदिशा आदिक है तिनि विषै गमनकरनेकी मर्याद करै बहुरि अनर्थदंड कहिये जिन कार्यमें अपना प्रयोजन न सधै ऐसा पापकार्य तिनिकूं न करै इहां कोई पूछै प्रयोजनविना

तौ कोई भी पुरुष कार्य नै करै है जो कहै है जो कि छू प्रयोजन विचारी ही करै अनर्थदंड कहा ताका समाधान सम्यग्दृष्टी श्रावक होय सो प्रयोजन अपनें पद योग्य विचारै है पद सिवाय सो अनर्थ अर पापी पुरुषनिकै तौ सर्व ही पाप प्रयोजन है तिनिकी कहा कथा बहुरि भोग कहनेमें भोजनादिक उपभोग कहनेमें स्त्री वस्त्र आभूषण आदि तिनिका परिमाण करै ऐसें जानना ।
॥ ॐ ॥ आगैं च्यारि सिक्षाव्रतनिकू कहै है ॥ गाथा ॥ सामाइयं च पढमं बिदियं च तहेव पोसहं भणियं ॥ तइयं च अतिहिपुज्जं चउत्थ सल्लेहणा अंते ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ सामायक तौ पहला सिक्षाव्रत है तैसे ही दूजा प्रोषधव्रत है तीजा अतिथिका पूजन है चौथा अंतसमय सल्लेखना व्रत है ॥ भावार्थ ॥ इहां सिक्षा शब्दकरि तौ ऐसा अर्थ सूचै है जो आगामी मुनिव्रत है ताकी सिक्षा

देशकास्पाशिकरिसर्वग्रहारंभसंबंधीपापक्रियातैंनिवृत्तिकरिएकांतस्थानक
वैठिप्रभातिमध्याह्नअपराह्नकिछूकालकीमर्यादकरिअपनास्वरूपकाचित
वनतथापंचपरमेष्टीकीभक्तिकापाठपढनातिनिकीवंदनाकरनीइत्यादिवि
धानकरनाजाननां ।। बहुरितैसैहीप्रोषधकहियेआगैचौदसिपर्वनिविषैप्रत
ज्ञालेकरिधर्मकार्यमैंप्रवृत्तनासोप्रोषधहै ।। बहुरिअतिथिकहियेमुनितिनि
कापूजनकरनाआहारदानकरनांसोअतिथिपूजनहै ।। बहुरिअंतसमयविषै
कायकाअरकषायकाकृस करनासमाधिमरनकरनासोअंतसलेखनाहै
ऐसैच्यारिसिक्षाव्रतहैइहांप्रश्नजोतत्वार्थसूत्रमैंतोतीनगुणव्रतमेदेशव्रत
कह्याअरभोगोपभोगपरिमाणसिक्षाव्रतमैंकह्याअरसंलेखनामारांकह्याअर

इहांऐसैंकह्यासोयहकैसैंताकासमाधानजोयहविवक्षाकाभेदहैइहांदे
शव्रतदिग्व्रतमैंगर्भितहैअरसंलेखनासिक्षाव्रतमैंकह्याहैकिछुविरोधहै
नाही ।। छ ।। आगैकहैहैजोसंयमचरणचारित्रविषैंऐसैंतोश्रावकधर्मकह्या ।
अवयतीधर्मकूंकहूंगा ।। गाथा ।। एवंसावयधम्मंसंयमचरणंउदेसियंसय
लं ।। सुद्धंसंयमचरणंजइधम्मंनिक्कलंवोच्छे ।। २७ ।। अर्थ ।। एवंकहिएप्रकार
श्रावकधर्मस्वरूपसंयमचरणतौकह्याकैसाहैयहसकलकहियेकलासं
हितहैएकदेशकूंकलाकहिएबहुरिअवयतीकाधर्मस्वरूपसंयमचरणहै
ताहिकहूंगाऐसीआचार्यप्रतिज्ञाकरीहै ।। कैसाहैयतीधर्मशुद्धहैनिर्दो
षहैयामैपापाचरणकालेसनाहीहै ।। बहुरिकैसाहैनिकलकहियेकलातैं
निःक्रांतहैसंपूर्णहैश्रावकधर्मकीज्योंएकदेशनाहीहै ।। छ ।। आगैयतीधर्मकी

सामग्रीकहेहै ॥गाथा॥ पांचादयसंवरणं पंचवयापंचवीसकिरियातुपंचस
मितितियगुत्ती संयमचरणं निरायारं ॥४०॥ अर्थ ॥ पंचइंद्रियकासंवरण ॥ पा
चव्रततेपचीसक्रियाकेसद्भावहोतेंहोय ॥ वहुरिपांचसमितितीनगुप्तिऐसे
निराकारसंयमचरणचारित्रहोयहै ॥ ७ ॥ आगेंपांचइंद्रियसंवरणकास्वरूप
कहैहै ॥गाथा॥ अमणुणे यमणुण्णे सजीवदव्वे अजीवदव्वे य ॥ नकरेय रायदो
से पंचिंदियसंवरोभणिओ ॥४१॥ अर्थ ॥ अमनोज्ञतथामनोज्ञऐसेजे जिनकूं
लोकअपनेंमानैं ऐसें सजीवद्रव्यस्त्रीपुत्रादिक अर अजीवद्रव्यधनधान्य
आदिसर्वपुद्गलद्रव्यआदिअजीवद्रव्यतिनिविषैरागद्वेषनकरैसोयोपांच
इंद्रियनिकासंवरकह्याहै ॥ भावार्थ ॥ इंद्रियगोचरजेजीवअजीवद्रव्यहैंतेइं
द्रियनिकेग्रहणमेंआवेहैंतिनिमेंयहप्राणीकारूकूं इष्टमानिरागकरै

हैकारूकूंअनिष्टमानिद्वेषकरैहैसोऐसेंरागद्वेषमुनिनांहीकरैताकैसं
यमचरणचारित्रहोय ॥ ७ ॥ आगेपांचव्रतनिकास्वरूपकहैहै ॥गाथा॥
हिंसाविरइअहिंसाअसच्चविरइयअदत्तविरईय ॥ तुरियंअबंभविरई
पंचमसंगम्मिविरईयं ॥४२॥ अर्थ ॥ प्रथमतोहिंसातैंविरतिसोअहिंसाहै ॥ वहु
रिदूजाअसत्यविरतिहै ॥ वहुरितीजाअदत्तविरतिहै ॥ वहुरिचौथाअब्रह्म
विरतिहै वहुरिपांचमांपरिग्रहविषैविरतिहै ॥ भावार्थ ॥ इनिपांचपापनिका
सर्वथात्यागजिनमेंहोयतेपांचमहाव्रतहैं ॥ ७ ॥ आगेंइनिकूंमहाव्रतऐसा
नामकाहेतेंहैसोकहैहै ॥गाथा॥ साहंतितंमहल्ला आयरियंजंमहल्लपुव्वे
हिंजंचमहल्लाणितदोमहव्वयाइंतमैंहेयाई ॥४३॥ अर्थ ॥ वचनगुप्तिवहु
रिमनोगुप्तिऐसेदोयतौगुप्तिअरईर्यासमितिवहुरिभलेप्रकारकमंडला

पूर्वक भोजन करणां यह एषणा समिति ऐसैं ए पांच अहिंसा महाव्रतकी
भावना है ॥ भावार्थ ॥ भावना नाम वारंवार तिसही का अभ्यास करनां ताका
है सो इहां प्रवृत्ति निवृत्ति में हिंसा लागै ताका निरंतर यत्न राखै तब अहिंसा
व्रत पलै यातैं इहां योगनि की निवृत्ति करणी तौ भले प्रकार गुप्तिरूप करणी
अर प्रवृत्ति करणी तौ समितीरूप करणी ऐसे निरंतर अभ्यासैं अहिंसा महा
व्रत दृढ रहै है ऐसा आम्नाय है इनि कूं भावना कही है ॥ छ ॥ आगैं सत्य महा
व्रतकी भावनाकूं कहै है ॥ गाथा ॥ कोह भय हास लोहा मोहा विवरीय भा
वणा चेव विदियस्स भावणाए एए चेव पंच होंति ॥ २ ॥ अर्थ ॥ क्रोध भय
हास्य लोभ मोह इनितै विपरीक हियै उलटा इनिका अभाव ए द्वितीय व्र

त जो सत्य महाव्रत ताकी भावना है ॥ भावार्थ ॥ असत्य वचनकी प्रवृत्ति हो
य है सो क्रोधतै तथा भयतैं तथा हास्यतैं तथा लोभतैं तथा परद्रव्यतैं मोह
रूप मिथ्यात्वतै होय है सो इनिका त्याग भये सत्य महाव्रत दृढ रहै है ॥ ब
हुरि तत्वार्थसूत्र में पांचमी भावना अनुवीचीभाषणा कहियै है सो याका
अर्थ यहु जो जिनसूत्र अनुसार वचन बोलै अर इहां मोहका अभाव
कह्या सो मिथ्यात्वके निमित्ततैं सूत्रविरुद्ध कहै है मिथ्यात्वका अभाव भये
सूत्रविरुद्ध कहै सो अनुवीचीभाषणा भी यह ही अर्थ भया यामैं अर्थभेद
नाही है ॥ छ ॥ आगैं अचौर्य महाव्रतकी भावनाकूं कहै है ॥ गाथा ॥ सुण्णाया
रणिवासो विमोचितावास जं परोधं च । एसण सुद्धिसउत्तं साहम्मीसंविसं
वादो ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ सुन्नागार कहियै गिरि गुफा तरु कोटरादि विषै निवासक

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

८४ ऐसा ग्रह ग्रामादिक तामें निवास करना । बहुरि परोधकहिए परका जहां
परोध न करिये वस्तिकादिककूं आपणाय परकूं वर्जना ऐसें न करना । ब
हुरि एषणा शुद्ध कहिए आहार शुद्ध लेणां बहुरि साधर्मीनिकरि विसंवाद
न करना । ए पांच भावना अचौर्य महाव्रत की है । भावार्थ मुनिनि कै वस्तिका
में वसतां अर आहार लेनां ए दोय प्रवृत्ति हैं अर कंप होय तहां लोकमैं इनि ही
के निमित्त अदत्त का आदान होय है मुनि वसै सो असी जायगा वसै जहां
अदत्त का दोष न लागै बहुरि आदिक तैं विसंवाद न उपजे ऐसें ए पांच भा
वना कही है इनि के होतें अचौर्य महाव्रत दृढ रहै है ॥ ॥ आगे ब्रह्मचर्य म ८४
हाव्रत की भावना कूं कहै है ॥ गाथा ॥ महिलालोयण पुव्वरयसरण संस

त वसहि विकहाहिं पुट्ठियरसेहिं विरउ भावणा पंच वि तुरियम्मि ॥ ३५ ॥
अर्थ ॥ स्त्रीनि की आलोकन कहिए रागसहित देखना पूर्व भोग कीये का
स्मरण करनां स्त्रीनिकरि संसक्त वस्तिका में वसना स्त्रीनि की कथा करना
पुष्टकारी रस का सेवन करना इनि पांचनि तैं विकार उपजे ता तैं इनि तैं वि
रत रहनां ए पांच ब्रह्मचर्य महाव्रत की भावनां है । भावार्थ कामविकार के
निमित्तनि तैं ब्रह्मचर्य व्रत भंग होय है सो स्त्रीनि का रागभाव तैं देखना इत्या
दिक निमित्त कहे तिनि मैं विरक्त होनां प्रसंग करनां या तैं ब्रह्मचर्य महाव्र
त दृढ रहै है ॥ ॥ आगे पांचमहाव्रत की भावनां कहै है ॥ गाथा ॥ अपरिग
ह समणुण्णेसु सद्दपरिसरसरूवगंधेसु रायद्दोसाईणं परिहारो भावणा
होंति ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ शब्द स्पर्श रस रूप गंध ए पांच इंद्रियनि के विषय तिनके से

दिकारनकरनातपरिग्रहत्यागव्रतकीपांचभावनाहै॥भावार्थ॥पांचइंद्रि
यनिकेविषयस्पर्शरसगंधवर्णशब्दहैतिनिविषैइष्टअनिष्टबुद्धिरूपरा
गद्वेषनकरैअपरिग्रहव्रतदृढरहैहैतातैंएपांचभावनांअपरिग्रहम-
हाव्रतकीकहीहै॥छ॥आगैंपांचसमितिकूंकहैहै॥गाथा॥इरियाभासा
एसणा॥जासाआदाणाचेवनिरक्खेवो॥संजमसोहिणिमित्तं॥खंतिजि-
णापंचसमिदीउ॥३७॥अर्थ॥ईर्याभाषाएषणाबहुरिजोआदानअरनि
क्षेपऐसैएपंचसमितिसंयमकीशुद्धताकेकारणहै॥तेजिनदेवकहैहै
॥भावार्थ॥मुनिपंचमहाव्रतरूपसंयमकासाधनकरैहैतिससंयमकीशु- ८५
द्धताकैअर्थिपांचसमितिरूपप्रवर्त्तैहैयाहीतैंयाकानामसार्थिकहैसं

कहियेसम्यक्प्रकारइनिकहियेप्रवृत्तिजामैंहोयसोप्रवृत्तिहै॥गमनक
रैतबजूडाप्रमाणधरतीदेषिचालैहैबोलैतबहितमितरूपवचनबो
लैहैआहारलेसोछीयालीसदोषबत्तीसअंतरायटालिचौदामलर
हितशुद्धआहारलैहैधरमोपकरणनिकूंउठायलेतबयत्नपूर्वकग्र-
हणकरैहैतैसैहीकिछूक्षेपैतबयत्नपूर्वकक्षेपैहैं॥ऐसैनिःप्रमादप्र-
वर्त्तैतबसंयमशुद्धपलैहैतातैंपंचसमितिरूपप्रवर्त्तिकहीहै॥छ॥
आगैंसंयमचरणचारित्रकीप्रवृत्तिकहीअबआचार्यनिश्चयचारित्र
कूंमनमैधारिज्ञानकास्वरूपकहैहै॥अरज्ञानस्वरूपआत्माहैताका
अनुभवकाउपदेशकरैहै॥गाथा॥भव्वजणबोहणत्थंजिणमग्गेजि
णवरेहिंजहभणियं॥णाणंणाणसरूवंअप्पाणंतंवियाणेहि॥३८॥

८६ नअरज्ञानकास्वरूप क ह्याहैतिसज्ञानस्वरूपआत्माहैताहिहे
नव्यजीवतूजाणि ॥भावार्थ॥ ज्ञानकूं ज्ञानकास्वरूपकूं अन्यमतीअ
नेकप्रकारकहैहै तैसाज्ञानअरतैसास्वरूपज्ञानकानांहीहैजोसर्वज्ञ
वीतरागदेवभाषितज्ञानअरज्ञानकास्वरूपहैसोनिर्बाधसत्यार्थहै
अरज्ञानहैसोहीआत्माहैतथाआत्माकास्वरूपहैतिसकूंजाणिअे
रतिसमैथिरताभावकरैपरद्रव्यनितैरागद्वेषनकरैसोहीनिश्चय
चारित्रहैसोपूर्वोक्तमहाव्रतादिकीप्रवृत्तिकरितिसज्ञानस्वरूपआ
त्माविषैलीनहोनांअैसाउपदेशहै ॥८॥ आगैकहैहैजोअैसैज्ञान ८६
करिअैसैंजानैसोसम्यग्ज्ञानीहै ॥गाथा॥ जीवाजीवविभत्ती जोजाण

इसोहवेइसण्णाणी ॥ रायादिदोसरहिउजिणसासणमोक्खमग्गुत्ति ॥३
॥भावार्थ॥ जोपुरुषजीवअरअजीवइनिकाभेदजाणैसोसम्यग्ज्ञानी
होय वहुरिरागादिदोषनिकरिरहितहोयअैसाजिनसासनविषैमो
क्षमार्गहै ॥भावार्थ॥ जोजीवअजीवपदार्थकास्वरूपभेदरूपजाणिआ
पापरकाभेदजाणैसोसम्यग्ज्ञानीहोयअरपरद्रव्यनितैंरागद्वेषछोड
नैंतैज्ञानमैथिरताभयेंनिश्चयसम्यक्चारित्रहोयसोहीजिनमतमै
मोक्षमार्गकास्वरूपकह्याहै अन्यमतीनितैंअनेकप्रकारकल्पनांक
रिकह्याहैसोमोक्षमार्गनाही ॥८॥ आगैअैसामोक्षमार्गकूंजाणिश्र
द्धासहितयामैंप्रवर्त्तैहैसोसीघ्रहीमोक्षपावैहैअैसाकहैहै ॥गाथा॥ दंसण
णाणचरित्तंतिण्णिविजाणेहपरमसद्धा ॥ एजंजाणिऊणजोइ अैरिसा
तीति

अ०पा० लहातोणाविराा ॥४०॥ अर्थ ॥ हनेप्रकारदर्शनज्ञानचारित्र...
८७ कूं परमश्रद्धाकरिजाणि ॥ जिसकूं जाणिकरिजोगीमुनिहेसोथोरे
हीकालमेंनिर्वाणकूंपावेहे ॥ भावार्थ ॥ सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रत्र
यात्मकमोक्षमार्गहैताकेश्रद्धापूर्वकज्ञाननेंकाउपदेशहैजातेंय १
कूंजानेंमुनिनिकैमोक्षकीप्राप्तिहोयहे ॥ आगेकहैहेंऐसैंनिश्च
यचारित्ररूपज्ञानकास्वरूपकह्याइसकूंजोपावेहेसोसिवरूपमंदिरके
वसनेंवालेहोयहे ॥ गाथा ॥ पीऊणणाणसलिलं ॥ णिम्मलसुविसुद्धभावसंजु
त्ता ॥ हुंतिसिवालेववासीतिहुवणचूडामणिसिद्धा ॥४१॥ अर्थ ॥ जेपुरुष
इसजिनभाषितज्ञानरूपजलकूंपायकरिअपनानिर्मलभलैप्रका ८७
रविशुद्धभावकरिसंयुक्तहोयहेतेपुरुषतीनभवनकेचूडामणि

आरशिवकहियेमुक्तिसोहीभयाआलयकहियेमंदिरतामेंवसनें
वालेऐसेसिद्धपरमेष्ठीहोयहे ॥ भावार्थ ॥ जैसेंजलतेंसनानकरिशु
द्धहोयउत्तमपुरुषमहलमेंनिवासकरेहे ॥ तैसेंयहज्ञानहेसोजलव
तहेअरआत्माकेरागादिकमललगनेंतेमलिनताहोयहेसोइ
सज्ञानरूपजलतेंरागादिकमलधोयजेअपनेंआत्माकूंशुद्धकरेहे
तेमुक्तिरूपमहलमेंवसिआनंदभोगवेहेतिनिकूंतीनभवनके
सिरोमणिसिद्धकहियेहे ॥ आगेकहेहेज्ञानगुणकरिजेरहि
तहेतेइष्टवस्तुनपावेंगुणदोषकेजाननेंकूंज्ञानकूंभलैप्रकारजा
नना ॥ गाथा ॥ णाणगुणेहिंविहीणाणलहंतेतेसुइछियंलाहं ॥ इयणा
उंगुणदोसंतंसण्णाणंवियाणेहि ॥४२॥ अर्थ ॥ ज्ञानगुणकरिहीनजे

[illegible]

जाणि करि हे भव्य तूं पूर्वोक्त सम्यग्ज्ञान है। ताहि गुण दोष के जानने कूं
जाणि ॥ भावार्थ ॥ ज्ञान विना गुण दोष का ज्ञान नांही होय तब अपा-
नें इष्ट वस्तु तथा अनिष्ट कूं नांही जानैं तब इष्ट वस्तु का लाभ न हो-
य तातैं सम्यग्ज्ञान ही करि गुण दोष जान्या जाय है यातैं गुण दोष जा-
ननें कूं सम्यग्ज्ञान कूं जाननां सम्यग्ज्ञान विना हेय उपादेय वस्तु
का जाननां न होय अर हेय उपादेय जानें विनां सम्यक्चारित्र नांही
होय है तातैं ज्ञान ही कूं चारित्र तैं प्रधान करि कह्या है ॥ छ ॥ आगें कहै है
जो सम्यग्ज्ञान सहित चारित्र धारै तै थोरे ही काल में अनुपम सुख कूं
पावै है ॥ गाथा ॥ चारित्तसमारूढो अप्पासु परं ण ईहए णाणी ॥ पाव

इ अइरेण सुहं अणोवम जाणि णिच्छयदो ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ जो पुरुष ज्ञानी
है अर चारित्र करि सहित है सो अपनें आत्मा विषै कूं ही नांही इछै है
पर द्रव्य विषै राग द्वेष मोह नांही करै है सो ज्ञानी जाकी उपमा नांही ऐ-
सा अविनाशी मुक्ति का सुख पावै है ऐसें हे भव्य तूं निश्चय तैं जांनि इहां
ज्ञानी होय है उपादेय कूं जानि संयमी होय है परद्रव्य कूं आपमें न मि-
लावै सो परम सुख पावै है ऐसा जनाया है ॥ छ ॥ आगें इस चारित्र के क-
थन कूं संकोचै है ॥ गाथा ॥ एवं संखेवेण य भणियं णाणेण वीयराएण सं-
म्मत्तसंजमासय दुण्हं पि उद्देसियं चरणं ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ एवं कहिए ऐसें
पूर्वोक्त प्रकार संक्षेप करि श्री वीतराग देव नैं कह्या ऐसा सम्यक्त्व अर
संयम इनि दोऊनि के आश्रय दोऊनि के चारित्र दोय प्रकार कह्या है

BHAU DAJI MEMORIAL

कैसा है वीतराग ज्ञान स्वरूप सर्व मोह ॥ भावार्थ ॥ आचार्य वीतराग सर्वज्ञ देव
नैं भाष्या जो चारित्र ताका पूर्वोक्त प्रकार संक्षेप करि सम्यक्त्व अर संय
म इनि दोऊनि कैं आश्रय सम्यक्त्व चरण स्वरूप अर संयम चरण स्व
रूप दोय प्रकार करि उपदेश कीया है ॥ आचार्य चारित्र का कथन संक्षेप
रूप कहि संकोच्या है ॥ ४३ ॥ आगैं इस चारित्र पाहुड कूं भावनें का उपदे
श अर याका फल कहै है ॥ गाथा ॥ भावेह भावसुद्धं फुडरइयं चरणपाह
ऊडं चेव लहु चउगइ चइऊणं ॥ अचिरेण उपुणभवा होह ॥ ४४ ॥ अर्थ
आचार्य कहै है जो हे भव्य जीव हौ यह चरण कहिए चारित्र का पाहु
ड हम नें स्फुट प्रगट करि रच्या है ताकूं तुम अपना भाव कूं शुद्ध करि
भावौ अपने भावनि मैं वारंवार अभ्यास करौ या तैं शीघ्र ही च्यारि गति

निकूं छोडि करि अपुनर्भव जो मोक्ष सो तुमारे होयगा फेरि सं
सार मैं जनम नपावोगे ॥ भावार्थ ॥ इस चारित्र पाहुड का वाचना पढना
धारना वारवार भावना अभ्यास करना यह उपदेश है यातैं चारित्र का 1
स्वरूप जाणि धारनें की रुचि होय अंगीकार करै तब च्यारि गति रूप
संसार के दुःख तैं रहित होय निर्वाण कूं प्राप्ति होय फेरि संसार मैं ज
न्म मरण धारै ता तैं जे कल्याण के अर्थी है ते ऐसे करौ ॥ छप्पय ॥ चा
रित दोय प्रकार देव जिनवर नैं भाष्या । समकित संयम चरण ज्ञान
पूरव तिस राष्या ॥ जे नर सरधावान याहि धारै विधि सेती । निश्चय
अर व्यवहार रीति आगम मैं जेती । जब जगधंधा सब मेटिकैं निज
स्वरूप मैं थिर रहैं । तब अष्टकर्म कूं नासि कैं अविनाशी सुख शिव लहैं

है ॥ १ ॥ ऐसैं सम्यक्त्वचरणचारित्र अर संयमचरणचारित्र ऐसैं
१५० दोयप्रकारचारित्रका स्वरूप इस प्राभृतविषै कह्या ॥ दोहा ॥ जिन
भाषित चारित्रकूं पालै जे मुनिराज ॥ तिनिके चरणन मूं सदा
पाऊं तिन गुणसाज ॥ १ ॥ इति श्रीचारित्रपाहुडकी वचनिका
समाप्ता ॥ ॥ अथ बोधपाहुडकी देशभाषामय वचनि
का लिखिये है ॥ दोहा ॥ देव जिनेश्वर सर्वगुरु ॥ वंदौं मनवचकाय
जाप्रसाद भवि बोध ले पावै जीवनिकाय ॥ १ ॥ ऐसैं मंगल करि श्रीकुं
दकुंद आचार्यकृत गाथाबंध बोधपाहुड ग्रंथ है ताकी देशभाषा
मय वचनिका लिषिये है तहां प्रथम ही आचार्य ग्रंथ करनेकी मं
गलपूर्वक प्रतिज्ञा करै है ॥ गाथा ॥ बहुसत्थअत्थजाणे संयमसम्मत्त १५०

सुद्धतवयरणे ॥ वंदित्ता आयरिए कसायमलवज्जिदे सुद्धे ॥ १ ॥ सय
लजणबोहणत्थं ॥ जिणमग्गे जिणवरेहि जह भणियं ॥ वुच्छामि सम
सेण य छक्कायसुहंकरं सुणसु ॥ २ ॥ युग्मं अर्थ आचार्य कहै है जो मैं
आचार्यनिकूं वंदि करि अर छकायके जीवनिकौं सुखका करने
वाला जिनमार्गविषै जिनवरदेवनि जैसैं कह्या तैसा समस्त लोक
निका हितका है प्रयोजन जामैं ऐसा ग्रंथ संक्षेप करि कहूंगा ताकूं
हे भव्य जीव तू सुणि जिनि आचार्यनिकूं वंदै ते आचार्य कैसे है व
हुत शास्त्रनिका अर्थके जाननेवाले है ॥ बहुरि कैसे है संयम अर
सम्यक्त्व इनि करि शुद्ध है तपश्चरण जिनिके ॥ बहुरि कैसे है कषा
यरूप मल करि वर्जित है याही तैं शुद्ध है ॥ भावार्थ ॥ इहां आचार्यनिकूं

९१ यत्र्प्रपनेंगुरूपर्यंततिनिकूंवंदनाहै॥ वहुरिग्रंथकरनेंकी प्रतिज्ञाक
रीताकेविशेषणनितैंजानियेहैजोवोधपाहुडग्रंथकरियेगासो
लोककूंधर्ममार्गमैसावधानकरिकुमार्गछुडायत्र्प्रहिंसाधर्म
काउपदेसकरियेगा॥ ॐ॥ त्र्प्रागैंइसवोधपाहुडमैग्यारहस्थान
वांधेहैतिनिकेनामकहेहै॥ गाथा॥ त्र्प्रायदणंचेदिहरं॥ जिणप
डिमादंसणंचजिणविंवंभणियंसुवीयरायं॥ जिणमुद्दाणाण
मादठं॥ ३॥ त्र्प्ररहंतेणसुदिट्ठं जंदेवंतिछमिहय॥ त्र्प्ररहंतंपाव
ज्जागुणविसुद्दा॥ इयणायव्वाजहाकमसो॥ ४॥ त्र्प्रर्थ॥ त्र्प्रायतनचै ९२
त्यगृहजिनप्रतिमा दर्शन जिनविंवकैसाहै जिन विंवसुष्टमजैग्र

कारवीतरागहैरागसहितनांही जिनमुद्रा॥ ज्ञानसोकैसात्र्प्रात्माही
हैत्र्प्रर्थकहियेप्रयोजनजामै॥ त्र्प्रैसैंसाततोएजैसैवीतरागदेवनैंकहे
तैसेंयथाक्रमतेजाननें॥ ॐ॥ वहुरिदेवतीर्थत्र्प्ररहंतत्र्प्ररगुणकरि
विशुद्धप्रव्रज्याएच्यारिजोत्र्प्ररहंतभगवांनकहेतैसेइसग्रंथविषे
जाननें त्र्प्रैसेयेग्यारहस्थानभये॥ भावार्थ॥ इहात्र्प्रैसाजाननाजोधर्मम १
र्गमैकालदोषतैंत्र्प्रनेकमतभयेहैतथाजैनमतमैंभीभेदहैतिनिमैंत्र्प्रा
यतनत्र्प्रादिविषैविपर्ययभयाहैतिनिकापरमार्थभूतसांचास्वरूप
तौलोकजानैनांहीत्र्प्ररधर्मकेलोभीभयेजैसीवाह्यप्रवृत्तिदेषैतिस
हीमैंलागिप्रवर्त्तनलगिजायतिनकूंसंवोधनेकेत्र्प्रर्थयहुवोधपाहु
डरच्याहैतामैंत्र्प्रायतनत्र्प्रादिग्यारहस्थानकनिकापरमार्थभूतस्वरू

[illegible]
अनुक्रमकरि इनिका व्याख्यान करियेगा सो जाननें योग्य है ॥ छ ॥ आगें प्रथम
ही आयतनक ह्या ताका निरूपण करै है ॥ गाथा ॥ मणवयणकायदव्वा आयत्ता
जस्स इंदिया विसया आयदणं जिणमग्गे णिद्दिट्ठं संजयं रूवं ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ जि
नमार्ग विषै संयमसहित मुनिरूप है सो आयतन कह्या है । कैसा है मुनिरूप
जाकै मन वचन काय द्रव्यरूप है ते तथा पांच इंद्रियनिके स्पर्श रस गंध वर्ण
शब्द ये विषय है ते आयत्त कहिये आधीन है वसीभूत है इनिकै संयमी मुनि
आधीन नांही है मुनिकै वसीभूत है ऐसा संयमी है सो आयतन है ॥ छ ॥ आगैं
फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ मयराय दोस मोहो कोहो लोहो य जस्स आयत्ता । पंचम
हव्वयधारी आयदणं महरिसी भणियं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जा मुनिकै मद राग द्वेष मो

ह क्रोध लोभ अर चकार तैं माया आदिक ए सर्व आयतन कहिए निग्रह
कूं प्राप्त भये बहुरि जो पांच महाव्रत जे अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य प
रिग्रहका त्याग इनिका धारी होय ऐसा महामुनि ऋषिश्वर आयतन कह्या है
॥ भावार्थ ॥ पहली गाथा मैं तो बाह्यका रूप कह्या था । इहां बाह्य अभ्यंतर दो
उ प्रकार संयमी होय सो आयतन है ऐसा जाननां ॥ छ ॥ आगैं फेरि कहै है
॥ गाथा ॥ सिद्धं जस्स सदत्थं विसुद्धझाणस्स णाणजुत्तस्स सिद्धायतणं सि
द्धं मुणिवरवसहस्स मुणिदत्थं ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ जा मुनिकै सदर्थ कहिये समी
चीन अर्थ जो शुद्ध आत्मा सो सिद्ध भया होय सो सिद्धायतन है कैसा है मु
नि विशुद्ध है ध्यान जाकै धर्मध्यान कूं साधि शुक्ल ध्यान कूं प्राप्त भया है ब
हुरि कैसा है ज्ञान करि सहित है केवलज्ञान कूं प्राप्त भया है ॥ बहुरि

८३ यप्रधान है। वहुरि कैसा है जानें है समस्त पदार्थ जानें ऐसे मुनि प्रधान कूं।
सिद्धायतन कहिये। भावार्थ। ऐसें तीन गाथामैं आयतनका स्वरूप कह्या
है तौ पहली गाथामैं तौ संयमी सामान्यका वाह्यरूप प्रधान करि कह्या
दूजी मैं अंतरंग वाह्य दोऊ की शुद्धिता रूप ऋद्धिधारी मुनि ऋषीस्वर क
ह्या वहुरि तीसरी गाथामैं केवलज्ञानी है मुसो मुनिनिमें प्रधान है ताकूं
सिद्धायतन कह्या है। इहां ऐसा जानजो आयतन नाम जामें वसिये निवा
स करिये ताका है सो धर्म पद्धतिमै जो धर्मात्मा पुरुष कै आश्रय करनें यो
ग्य होय सो धर्मायतन है सो ऐसे मुनि ही धर्म के आयतन है अन्य केई भे ८३
षधारी पाषंडी विषय कषायनिमें आयतपरिग्रहधारी धर्मके आयतन

नाही है तथा जैनमतमै भी जे सूत्रविरुद्ध वर्त्तै है ते भी आयतन नाही है ते
सर्व अनायतन है तथा वौधमतमैं पांच इंद्रिय तिनिके विषय एक मन एक ध
र्मायतन शरीर ऐसैं वारह आयतन कहे है ते भी कल्पित है यातै जैसा आय
तन कह्या जैसा ही जाननां धर्मात्मा कूं तिस ही का आश्रय करनां आपकी स्त
ति वंदनां प्रशंसा विनयादिक न करनां यह वोधपाहुड ग्रंथ करनें का आ
श्य है। वहुरि जामें ऐसे मुनि वसै ऐसा क्षेत्र कूं भी आयतन कहिये है सो यह
व्यवहार है ॥ ७ ॥ आगै चैत्यगृहका निरूपण करै है। गाथा। वुद्धं जं वोहंतो अ
प्पाणं चेइयाइं अण्णं च। पंचमहव्वयसुद्धं णाणमयं जाण चेदिहरं ॥ ८ ॥ अर्थ।
जो मुनि वुद्धि कहिये ज्ञानमयी ऐसा आत्मा ताहि जानता होय वहुरि अन्य
जीवनिकूं चैत्य कहिये चेतनास्वरूप जानता होय वहुरि आप ज्ञानमयी हो

MEMORIAL

९४ ग्रहजाणि ॥ भावार्थ ॥ जामें आपापरकों जाननें वालाज्ञानीनिःपापनिर्मलऐसाचैत्य कहिये चेतनास्वरूप आत्मा वसै सो चैत्यग्रह है सो ऐसा चैत्यग्रह संयमी मुनि है अन्य पाषाण आदिका मंदिर कूं चैत्यग्रह कहना व्यवहार है ॥

॥ ७ ॥ आगें फेरि कहे है ॥ गाथा ॥ चेइयबंधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पयं तस्स चेइहरं जिणमग्गे छक्काय हियंकरं भणियं ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ जीव बंध अर मोक्ष बहुरि सुख अर दुःखरूप आत्मक होय जाके स्वरूपमें होय ताही कै बंध मोक्ष सुख दुःख संभवै ऐसा जो चैत्य ताका ग्रह होय सो चैत्यग्रह है सो जिनमार्ग विषै ऐसा चैत्यग्रह छहकायका हित करनेवाला होय सो ऐसा मुनि है सो ९४
पांच थावर अर त्रसमें विकलत्रय अर असैनी पंचेंद्रिय तांई तो केवल र

क्षा ही करनें योग्य है तातें तिनकी रक्षा करनेंका उपदेश करै है तथा आप तिनिकी घात न करै तिनिका यही हित है बहुरि सैनी पांचेंद्रिय जीव है तिनकी रक्षी रक्षा भी करै है तथा तिनिकूं संसारतें निवृत्तिरूप मोक्ष होनेंका उपदेश करै है ऐसे मुनिराज कूं चैत्यग्रह कहिये ॥ भावार्थ ॥ लौकिक जन चैत्यग्रहका स्वरूप अन्यथा अनेक प्रकार मानै है तिनिकूं सावधान कीये है ॥ जो जिनसूत्रमें छकायका हित करनेवाला ज्ञानमयी संयमी मुनि है सो चैत्यग्रह है अन्यकूं चैत्यग्रह कहनां माननां सो व्यवहार है ॥ ऐसे चैत्यग्रहका स्वरूप कह्या है ॥ ८ ॥ आगें जिनप्रतिमाका निरूपण करै है ॥ गाथा ॥ सपरा जंगमदेहा दंसणणाणेण सुद्धचरणाणं ॥ णिग्गंथवीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिमा ॥ १० ॥ अर्थ ॥ दर्शन ज्ञान करि शुद्ध निर्मल है चारित्र जिनिके ति

[illegible]
८५ तिमा है अथवा स्वपराकहिए आत्मातें पर कहिए भिन्न ऐसी देह है सो कै
सी है निर्ग्रंथस्वरूप है जाकै किछू परिग्रह का लेश नाहीं ऐसी दिगंबरमुद्रा
वहुरि कैसी है वीतरागस्वरूप है जाकै काहू वस्तुसूं रागद्वेषमोह नांही जिनमा मोह
र्गविषै ऐसी प्रतिमा कही है ॥ भावार्थ ॥ दर्शनज्ञानकरि निर्मलचारित्र जि
निकै पाइए ऐसे मुनिनि की गुरुशिष्य अपेक्षा अपनी तथा परकी चालती
देह ॥ निर्ग्रंथवीतरागमुद्रास्वरूप है सो जिनमार्गविषै प्रतिमा है अन्यकल्पि
त है ॥ अर धातुपाषाण आदिकरि दिगंबरमुद्रास्वरूप प्रतिमा कहिये है से ।
व्यवहार है सो भी बाह्य आकृति ऐसी ही होय सो व्यवहारमैं मानहै ॥ ० ॥ आ ८५
गैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ जं चरदि सुद्धचरणं जाणइ पिच्छेइ सुद्धसंमत्तं ॥ सा हो

इ वंदणीया ॥ णिग्गंथा संयदा पडिमा ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जो शुद्धचारित्रकूं आचरै है
वहुरि सम्यग्ज्ञानकरि यथार्थ वस्तुकूं जानै है वहुरि सम्यग्दर्शनकरि अपने
स्वरूपकूं देखै है ऐसे शुद्धसम्यक्त्व जाकै पाइए है ऐसी निर्ग्रंथसंयमस्वरूप
प्रतिमा है सो वंदने योग्य है ॥ भावार्थ ॥ जाननें वाला देखनें वाला शुद्धसम्यक्त्व
शुद्धचारित्रस्वरूप निर्ग्रंथसंयमसहित ऐसा मुनिका स्वरूप है सो ही प्र
तिमा है सो वंदिवे योग्य है ॥ अन्यकल्पित वंदिवे योग्य नाही है वहुरि तैसे ही
रूप सदृश धातुपाषाण की प्रतिमा होय सो व्यवहारकरि वंदिनें योग्य है ॥ ० ॥
आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ दंसण अणंतणाणं अणंतवीरिय अणंतसुरका
यसासयसुक्ख अदेहा ॥ मुक्का कम्मट्ठबंधेय ॥ १२ ॥ निरुवममचलमखोहा णिम्मा
विया जंगमेण रूवेण ॥ सिद्धठाणम्मि ठिया वोसरपडिमा धुवा सिद्धा ॥ १३ ॥ सु

८६ तहै। वहुरि शास्वता अविनाशी सुखस्वरूप है वहुरि अदेह है कर्म नोकर्मरू
प पुद्गलमयी देहि जिनिकै नांही है वहुरि अष्टकर्मके वंधकरि रहित है। वहु
रि उपमारहित है जाकी उपमा दीजिये असा लोकमै वस्तु नांही है। वहुरि अ
चल है प्रदेशनिका चलनां जाकै नांही है। वहुरि अक्षोभ है। जाकै उपयोग
मैं किछू क्षोभ नांही है निश्चल है। वहुरि जंगमरूप करि निर्मापित है वहुरि सि
द्धस्थान जो लोकका अग्रभाग ता विषै स्थित है याही तैं व्युत्सर्ग कहिये काय
रहित जैसा पूर्वे देहमैं आकार था तैसा प्रदेशनिका आकार किछू घा
टि ध्रुव है संसारतै मुक्त होय एक समय गमन करि लोकके अग्रभाग विषै ८६
जाय तिष्टै पीछैं चलाचल नांही है ऐसी प्रतिमा सिद्ध है॥ भावार्थ पहलें

दोय गाथामैं जंगम प्रतिमा संयमी मुनिकी देह सहित कही। वहुरि इनि दोय
गाथामै थिर प्रतिमा सिद्धनिकी कही। ऐसै जंगम थावर प्रतिमाका स्वरू
प कह्या अन्य केई अन्यथा वहुत प्रकार कल्पै है सो प्रतिमा वंदवे योग्य
नांही है। इहां प्रश्न जो यह तो परमार्थस्वरूप कह्या अर वाह्य व्यवहार
मै प्रतिमा पाषाणादिककी वंदिये है सो कैसैं। ताका समाधान जो वाह्य व्य
वहारमैं मतांतरके भेदतैं अनेक रीति प्रतिमाकी प्रवृत्ति है सो इहां परमार्थ
कूं प्रधान करि कह्या है व्यवहार है सो जैसा परमार्थ होय ताहीकूं सूचता हो
य सो निर्वाध होय है सो ऐसा प्रतिमाका परमार्थरूप आकार कह्या तैसा ही
आकार कूं लियें व्यवहार होय सो व्यवहार भी प्रसस्त है व्यवहारी जीवनि
कैं यह भी वंदिवे योग्य है स्याद्वाद न्याय करि साधे परमार्थ व्यवहारमैं विरोध

९७ ॥गाथा॥ दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च। णिग्गंथं णाणमयं जिणम
ग्गे दंसणं भणियं॥१४॥ अर्थ॥ जो मोक्षमार्गकूं दिखावै सो दर्शन है॥ कैसा है मो
क्षमार्ग सम्यक्त्व कहिये तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यक्त्व रूप है बहुरि कैसा है॥
संयम कहिये चारित्र पंच महाव्रत पांच समिति तीन गुप्ति ऐसैं तेरह प्रका
र चारित्र रूप है बहुरि कैसा है सुधर्म कहिये उत्तम क्षमादिक दशलक्ष
ण धर्म रूप है॥ बहुरि कैसा है ज्ञानमयी है जीव अजीव आदि पदार्थ कूं जा
नने वाला है॥ इहां निर्ग्रंथ अर ज्ञानमयी ए दोय विशेषण दर्शन का भी होय है
जातैं दर्शन है सो बाह्य तौ याकी मूर्त्ति निर्ग्रंथ रूप है बहुरि अंतरंग ज्ञानम ९७
यी है सो मुनि के रूप कूं जिनमार्ग मैं दर्शन कह्या है तथा ऐसे रूप का श्रद्धा

न रूप सम्यक्त्व कूं भी दर्शन कहिये है॥ भावार्थ॥ परमार्थ रूप अंतरंग दर्शन तौ
सम्यक्त्व है अर बाह्य याकी मूर्त्ति ज्ञान सहित ग्रहण कीया निर्ग्रंथ रूप ऐसा मु
निका रूप है सो दर्शन है या तैं मत की मूर्त्ति कूं दर्शन कहना लोक मैं प्रसिद्ध है॥ आ
आगैं फेरि कहै है॥ गाथा॥ जह फुल्लं गंधमयं भवदि हु खीरं च घियमयं चा
वि तह दंसणम्मि सम्मं णाणमयं होइ रूवत्थं॥१५॥ अर्थ॥ जैसैं फूल है सो गंध
मयी है बहुरि दूध है सो घृतमयी है॥ जैसैं दर्शन कहिये मत विषै सम्यक्त्व है
कैसा है दर्शन अंतरंग तौ ज्ञानमयी है॥ बहुरि बाह्य रूपस्थ है मुनि का रूप
है तथा उत्कृष्ट श्रावक अर्जिका का रूप है॥ भावार्थ॥ दर्शन नाम मत का प्र
सिद्ध है सो इहां जिनदर्शन विषै मुनि श्रावक अर्जिका का जैसा बाह्य वेष क
ह्या सो दर्शन जाननां अर याकी श्रद्धा सो अंतरंग दर्शन जाननां सो ए दोऊ ही॥

१०८ ल मैं गंध का अर इय मैं षीव का दृष्टांत युक्त है ऐसें दर्शन का स्वरूप कह्या अन्य
मत मैं तथा कालदोष करि जिनमत मैं जैनाभास भेषी अनेक प्रकार अन्यथ
कहै है सो कल्याणरूप नांही संसार का कारण है ॥ १५ ॥ आगैं जिनबिंब का निरू
पण करै है ॥ गाथा ॥ जिणबिंबं णाणमयं संयमसुद्धं सुवीयरायं च जो देइ दिरक
सिरका कम्मरकयकारणे सुद्धा ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ जिनबिंब कैसा है ज्ञानमयी है अर
संयम करि शुद्ध है बहुरि अतिशय करि वीतराग है बहुरि जो कर्म का क्षय
कूं कारण अर शुद्ध ऐसी दिक्षा अर सिष्या दे है ॥ भावार्थ ॥ जो जिन कहिये अर
हंत सर्वज्ञ ताका प्रतिबिंब कहिये ताकी जायगां तिस की ज्यों माननेयोग्य १०९
होय ऐसे आचार्य है सो दिक्षा कहिए व्रत का ग्रहण अर सिष्या कहिये व्रत का

विधान बताबना ए दोऊ कार्य भव्य जीवनि कूं दे है यातें प्रथम तौ सो आचा
र्य ज्ञानमयी होय जिनसूत्र का जिनकू ज्ञान बिना यथार्थ दिक्षा सिष्या कैसैं
होय बहुरि आप संयम करि शुद्ध होय ऐसा न होय तौ अन्य कूं भी संयम
शुद्ध करावै बहुरि अतिशय करि वीतराग न होय तौ कषायसहित होय
तब दिक्षा सिक्षा यथार्थ न दे यातें ऐसे आचार्य कूं जिन के प्रतिबिंब जा
नने ॥ १६ ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ तस्स य करह पणामं सव्वं पुज्जं च विणय
वच्छल्लं ॥ जस्स य दंसण णाणं अत्थि धुवं चेयणाभावो ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ ऐसें पूर्वो
क्त जिनबिंब कूं प्रणाम करौ बहुरि सर्व प्रकार करि पूजा करौ बहुरि विनय
करौ बहुरि वात्सल्य करौ काहे तें जातें जाकैं ध्रुव कहिये निश्चय तैं दर्शन
ज्ञान पाइये है बहुरि चेतनाभाव है ॥ भावार्थ ॥ दर्शन ज्ञानमयी चेतनाभा

MEMORIAL

[illegible]
णां जो आपका निजस्वरूप सो ज्ञान करि पाइए है । तातैं ऐसे लक्ष्य के जान
नैं कूं ज्ञान कूं जाननां ॥ भावार्थ ॥ संजम अंगीकार करि ध्यान करै अर आत्मा
का स्वरूप न जानै तौ मोक्षमार्ग की सिद्धि नाहीं तातैं ज्ञान का स्वरूप जान
नां याके जाननें सर्व सिद्ध हैं ॥ छ ॥ आगैं याकूं दृष्टांत करि दृढ करै हैं ॥ गा
था ॥ जह णवि लहदि हु लक्खं रहिओ कंडस्स वेज्झय विहीणो । तह णवि लह
दि हु लक्खं अण्णाणी मोक्खमग्गस्स ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ जैसे वेध्य के वेधनें वा
ला वेधक वाण ताकरि विहीन कहिये रहित ऐसा पुरुष है सो कांडक
हिये धनुष ताका अभ्यास करि रहित होय सो लक्ष्य कहिये निसाण ताकूं १०७
न पावै तैसे ज्ञान करि रहित अज्ञानी है सो दर्शनज्ञानचारित्ररूप जो
मोक्षमार्ग ताका लक्ष्य कहिये लखने योग्य परमात्मा का स्वरूप ताकूं न पा
वै है ॥ भावार्थ ॥ धनुषधारी धनुष का अभ्यास रहित अर वेधनें वाला वेधक वा
ण करि रहित होय तौ निसाण कूं न पावै तैसे ज्ञान करि रहित अज्ञानी मो
क्षमार्ग का निसाण परमात्मा स्वरूप है ताकूं न पहचानै तब मोक्षमार्ग की
सिद्ध न होय तातैं ज्ञान कूं जाननां परमात्मा रूप निशाण ज्ञानरूप वाण
ही करि वेधनें योग्य हैं ॥ छ ॥ आगै कहै है ऐसा ज्ञान विनयसंयुक्त पुरुष हो
य सो पावै है ॥ गाथा ॥ णाणं पुरिसस्स हवदि लहदि सुपुरिसो वि विणयसं
जुत्तो । णाणेण लहदि लक्खं लक्खंतो मोक्खमग्गस्स ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ ज्ञान होय है
सो पुरुष कै होय है बहुरि पुरुष ही विनयसंयुक्त होय सो ज्ञान कूं पावै है ब
हुरि ज्ञान पावै तब तिस ज्ञान ही करि मोक्षमार्ग का लक्ष्य जो परमात्मा का

२०१ होयहै बहुरि पुरुषही विनयवान होय तौ ज्ञानकूं पावैहै तिस ज्ञानहीक
रि शुद्धात्माका स्वरूप जानियेहै यातैं विसेषज्ञानीनिका विनय करि ज्ञा
नकी प्राप्ति करणी जातैं निज शुद्धस्वरूपकूं जाणि मोक्ष पाईयेहै इहां जे
विनयकरि रहित होय यथार्थ सूत्रपदतैं चिगैहै भ्रष्ट भया तिनिका निषेध
जाननां ॥ २२ ॥ आगैं याहीकूं दृढ करैहै ॥ गाथा ॥ मइधणुहं जस्स थिरं सुद
गुणबाणं सुअत्थि रयणत्तं । परमत्थबद्धलक्खो णवि चुक्कदि मोक्खमग्ग
स्स ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ जा मुनिकै मतिज्ञानरूप धनुष थिर होय बहुरि श्रुतज्ञान
रूप जाकै गुण कहिये प्रत्यंचा होय बहुरि रत्नत्रयस्वरूप जाकै बाण भला हो २०१
य बहुरि परमार्थस्वरूप निज शुद्धात्मारूपका संबंधरूप कीया है लक्ष्य

जानैं ऐसा मुनि है मोक्षमार्गकूं नांही चूकैहै ॥ भावार्थ ॥ धनुषकी सर्व सामग्री
यथावत मिलै तब निसाणा नाही चूकैहै तैसै मुनिकै मोक्षमार्गकी यथाव
त सामग्री मिलै तब मोक्षमार्गतैं भ्रष्ट नांही होयहै ताका साधन करि मोक्ष पा
वैहै यह ज्ञानका माहात्म्य है तातैं जिनागम अनुसार सत्यार्थज्ञानीनिका
विनय करि ज्ञानका साधन करनां ॥ ऐसैं ज्ञानका निरूपण कीया ॥ २३ ॥ आ
गैं याहीकूं दृढ करैहै ॥ गाथा ॥ सो देवो जो अत्थं धम्मं कामं सुदेइ णाणं च
सो देइ जस्स अत्थि दु अत्थो धम्मो य पव्वज्जा ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ देव ताकूं कहिये
जो अर्थ कहिये धन अर धर्म अर काम कहिए इच्छाका विषय ऐसा भोग ब
हुरि मोक्षका कारण ज्ञान इनि च्यारिनिकूं देवै ॥ तहां यह न्याय है जो जाकै जो
वस्तु होय जो दे अर जाकै जो वस्तु न होय सो कैसे देइ इस न्याय करि अर्थ

अ० पा० [illegible]

१०२ केहोयसोदेवजाननां ॥ छ ॥ आगेधर्मादिककास्वरूपकहैहेजिनिकेजानें देवकास्वरूपजान्याजाय ॥ गाथा ॥ धम्मो दयाविसुद्धो पव्वज्जासव्वसंगपरि-
च्चत्ता देवो ववगयमोहो उदयकरो भव्वजीवाणं २५ ॥ अर्थ ॥ धर्महैसोतो दयाकरिविशुद्ध हैं वहुरिप्रव्रज्याकहिए दिक्षा हैसोसर्वहीपरिग्रहतेंर- हितहैवहुरिदेवहैसोनष्टभयाहैमोहजाकाऐसाहैसोऐसादेवभव्यजी- वनिकेउदयकाकरनेंवालाहै ॥ भावार्थ ॥ लोकमैयहप्रसिद्धहैजोधर्मअर्थ काममोक्षएच्यारिपुरुषकेप्रयोजनहैइनिकैअर्थिपुरुषकारूंकूंपूजेवं- देहै वहुरियहन्यायहैजोजाकेजोवस्तुहोयसोअन्यकूंदेअणहोतीकहां तेंल्यावेतातैएच्यारिपुरुषार्थजिनदेवकैपाईयेहैधर्मतोजिनिकेदया १०२

रूपपाईएहैताकूंसाधिआपतीर्थंकरपदईमेदिक्षालेसर्वमोहतेरहित होयपरमार्थस्वरूपआत्मीकधर्मकूंसाधिमोक्षसुखकूंपायाऐसेतीर्थं- करजिनहैसोहीदेवहैलोकअज्ञानीजिनकूंदेवमानैंहैतिनिकैधर्मअ- र्थकाममोक्षनांहीजानेंतेकेईविषयासक्तहैमोहीहैतिनिकेधर्मकाहेका वहुरिअर्थकामकीजिनिकेवांछापाईएतिनिकेअर्थकामकाहेकावहु- रि वहुरिजन्ममरणतेंसहितहैतिनिकेमोक्षकैसेदेवसांचाजिनदेवहीहै यहहीभव्यजीवनिकेमनोरथपूरनकरैहैअन्यसर्वकल्पितदेवहैऐ- सेदेवाकारूपकह्या ॥ छ ॥ आगेतीर्थंकरकास्वरूपकहेहे ॥ गाथा ॥ वयसम्म- त्तविसुद्धे पंचिंदियसंजदे णिरावेक्खे ॥ ण्हाएउ मुणीतीत्थेदिक्खासि- क्खासुण्हाणेण ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ व्रतसम्यक्त्वकरिविशुद्धअरपंचइंद्रियनि

१०३ इसलोकका फलकी तथा परलोकविषै स्वर्गादिकके भोगनकी अपेक्षा १
तैं रहित ऐसा आत्मस्वरूप तीर्थविषै मुनि है सो दीक्षा सिक्षारूप स्नान
करि पवित्र होऊ ॥ भावार्थ ॥ तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यक्त्व सहित पंचम
हाव्रत करि शुद्ध अर पंचेंद्रियनिके विषयनितैं विरक्त इसलोक परलो
क विषै विषयभोगनिकी वांछातैं रहित ऐसा निर्मल आत्माका भावस्व
प तीर्थविषै स्नान कीये पवित्र होय है ऐसी प्रेरणा है ॥ २६ ॥ आगै फेरि क
है है ॥ गाथा ॥ जं णिम्मलं सुधम्मं सम्मत्तं संजमं तवं णाणं । तं तित्थं जिणमग्गे
हवेइ जदि संतिभावेण ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ जिनमार्गविषै सो तीर्थ है निर्मल उत्तम १०३
क्षमादि धर्म तथा तत्वार्थश्रद्धान लक्षण संकादिमलरहित सम्यक्त्व तथा

निर्मल इंद्रियका मनका वसिकरण षट्कायके जीवनिकी रक्षा कर
नां ऐसा निर्मल संयम तथा अनशन अवमोदर्य वृत्तिपरिसंख्यान रस
परित्याग विविक्तसय्यासन कायक्लेश ऐसा बाह्य तौ छह प्रकार वहुरि
प्रायश्चित विनय वैयावृत्त स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्यान ऐसा छह प्रकार अं
तरंग ऐसे बारह प्रकार निर्मल तप वहुरि जीव अजीवादिक पदार्थनि
का यथार्थ ज्ञान ए तीर्थ है ते भी जो शांतिभाव करि सहित होय कषाय भा
व न होय तब निर्मल तीर्थ है जातैं क्रोधादिकभावसहित होय तौ मलिन
ता होय जाय तब निर्मलता न रहै ॥ भावार्थ ॥ जिनमार्गविषै ऐसा तीर्थ क
ह्या है लोक सागर नदीनिकूं तीर्थ मानि स्नान करि निर्मल भया चाहै है सो
सरीरका बाह्यमल इनितैं किंचित् उतरै है ॥ अर शरीरमै धातु उपधात

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

...कर्मरूपमलअरुअज्ञानरा
१०४ गद्वेषमलमोहआदिभावकर्मरूपमलआत्माकैंअंतरमलहैसोलोइनि
तैकिंचितमात्रभीउतरैनांहीउलटाहिंसादिकतैंपापकर्मरूपमललागैहै
यातैसागरनदीआदिकूंतीर्थमाननाभ्रमहै॥ जाकरि तरियेसोतीर्थ
हैऐसातीर्थजिनमार्गमैंकह्यासोहीसंसारसमुद्रतैंतारनेवालाजाननं (
छै। ऐसैतीर्थकास्वरूपकह्या। आगैंअरहंतकास्वरूपकहैहै॥ गाथा॥
णामेठवणेहियसं। दव्वेभावेहिसगुणपज्जायाच्चउणागदिसंपदिमे
भावाभावेतिअरहंतं॥२८॥ अर्थ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावएच्यारिभावक
हियेपदार्थहैतेअरहंतकूंजनावैहै॥ वहुरिसगुणपर्यायकहिएअरहं १०५
तकेगुणपर्यायनिसहित वहुरिच्यवनकहिएच्यवनवहुरिआगति

वहुरिसंपदाऐसैएभावअरहंतकूंजनावैहै॥ भावार्थ॥ अरहंतशब्दक
रियद्यपिसामान्यअपेक्षाकेवलज्ञानीहोयतेसर्वहीअरहंतहैतथा
पिइहांतीर्थकरपदकूंप्रधानकरिकथनकरिएहैतातैंनामादिक
करिजनावनाकह्याहै॥ तहांलोकव्यवहारमैंनामआदिकीप्रवृ
त्तिऐसैहैजोजावस्तुमैंनामहोयतैसागुणनहोयताकूंतौनामनिक्षे
पकहिए वहुरिजिसवस्तुकाजैसाआकारहोयतैसाआकारताकी
काष्ठपाषाणादिककीमूर्त्तिवणायताकासंकल्पकरियेताकूंस्थापना
कहिये॥ वहुरिजिसवस्तुकीपहलीअवस्थाहोयतिसहीकूंआगली
अवस्थाप्रधानकरिकहै॥ ताकूंद्रव्यकहिए वहुरिवर्त्तमानमैंजोअव
स्थाहोयताकूंभावकहिए ऐसैच्यारिनिक्षेपकीप्रवृत्तिहैताकाकथा

अ०पा० [illegible]

१०५ स्थापना द्रव्य कूं भाव न समझै नां नाम कूं नाम समझना स्थापना कूं स्थाप
ना समझनी द्रव्य कूं द्रव्य समझनां भाव कूं भाव समझनां अन्य कूं अन्य
समझै। विभचार नामा दोष आवै है। सो इहां तैसा निषेप ताकै मेटनैं कूं
लोक कूं यथार्थ समझावनें कूं शास्त्र मैं कथन है। सो इहां तैसा निषेप विधा
न करि नाम स्थापना का कथना इहां तो निश्चय कूं प्रधान करि कथन है
सो जैसा अरहंत का नाम है तैसा ही गुण सहित नाम जाननां। बहुरि स्था
पनै जैसा ताकी देहसहित मूर्त्ति है सो स्थापना जाननी। बहुरि जैसा ताकूं 1
द्रव्य है तैसा द्रव्य जाननां बहुरि जैसा ताका भाव है तैसा ही भाव जाननां १०५
छै। ऐसै ही कथन आगैं करियै है तहां प्रथम ही नाम कूं प्रधान करि कहै

हैं। गाथा। दंसण अणंत णाणे मोक्खो णट्ठट्ठकम्मबंधेण। णिरुवमगुणमा
रूढो अरहंतो एरिसो होइ॥२९॥ अर्थ। जाकै दर्शन अर ज्ञान ए तौ अनंत
है घाति कर्म के नाश तैं सर्व ज्ञेय पदार्थनि कूं देषनां जाननां जाकै है॥
बहुरि नष्ट भया जो अष्ट कर्म का बंध ताकरि जाकै मोक्ष है इहां सत्व की अ
र उदय की विवक्षा लेणी केवली कै आव ही कर्म का बंध नाहीं यद्यपि सा
ता वेदनीय का बंध सिद्धांत मैं कह्या है तथापि स्थिति अनुभाग रूप ना
हीं तातैं अबंध तुल्य ही है ऐसैं आव ही कर्म के बंध के अभाव की अपे
क्षा भाव मोक्ष कहिये। बहुरि उपमा रहित गुणनि करि आरूढ है सहित
है ऐसे गुण छद्मस्थ मैं कहूं ही नाहीं तातैं उपमा रहित गुण जामैं है ऐ
सा अरहंत होय है। भावार्थ। केवल नाम मात्र ही अरहंत होय ताकूं नै

१०६ कहिए ॥ छ ॥ आगें फेरि कहै है ॥ ऐसें गुणनिकरि सहित होय ताकूं ना
म अरहंत कहिए ॥ आगें फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ जरवाहिजम्ममरणं ॥ चउग
इगमणं च पुण्णपावं च ॥ हंतूण दोसकम्मे हुउ णाणमयं च अरहंतो
॥ ३० ॥ अर्थ ॥ जरा कहिए बुढापा अर व्याधि कहिए रोग अर जन्ममरण
च्यारि गति विषै गमन पुण्य पाप अर दोषनिका उपजावनहा
रा कर्म तिनिका नाश करि अर केवलज्ञानमयी अरहंत हुवा होय
सो अरहंत है ॥ भावार्थ ॥ पहली गाथा मैं तौ गुणनिका सद्भाव करि अर
हंत नाम कह्या अर इस गाथा मैं दोषनिका अभाव करि नाम अर १०६
हंत कह्या तहां राग द्वेष मोह अरति चिंता भय विस्मय निद्रा विषाद खे

द ग्यारह दोष तौ घातिकर्म उदयतै होय है अर तृषा क्षुधा जन्म ज
रा मरण रोग स्वेद ए अघातिकर्म के उदयतै होय है तहां इस गाथा मैं जा
रा रोग जन्म मरण च्यारि गति मैं गमन का अभाव पुण्य पाप इनिका
अभाव कहनें तैं तौ अघातिकर्म तैं भये दोष तिनिका अभाव जाननां
जातैं अघातिकर्म मैं इन दोषनिकी उपजावनहारी पापप्रकृति तिन
का उदय अरहंत कै अभाव है अर रागद्वेषादिक दोषनिका घाति
कर्म के अभावतैं अभाव है इहां कोई पूछै मरण का अर पुण्य का
अभाव कह्या सो मोक्षगमन होनां यह मरण अरहंत कै है पुण्य पाप
प्रकृतिनिका उदय पाइये है तिनिका अभाव कैसै ताका समाधान जो इहां म
रण होय करि फेरि संसार मैं जन्म होय ऐसा मरण की अपेक्षा है ऐसा का

[illegible]

१०७ पेक्षा कहै ऐसे गुणपके उदय का अभाव जाननां अथवा बंध अपेक्षा गु
णपका भी बंध नाही है साता वेदनी वधै सो स्थिति अनुभाग विना अबंध
तुल्य ही है बहुरि कोई पूछै केवली कै असाता वेदनी का उदय सिद्धां
त मैं कह्या है ताकी प्रवृत्ति कैसे है ताका समाधान ऐसो जो असाता का
निपट मंद अनुभाग उदय है अर साता का अति तीव्र अनुभाग उदय है ता
के वसतैं असाता की छू वाह्य कारज करनें समर्थ नांही सूक्ष्म उदय देय
खिरि जाय है तथा संक्रमण होय साता रूप होय जाय है ऐसे जाननां ॥ छ
आगै अनंतचतुष्टय करि सहित सर्व दोषरहित सर्वज्ञ वीतराग होय ॥ १०७
सो नाम करि अरहंत कहियै ॥ छ ॥ आगै स्थापना करि अरहंतका वर्ण

नकरै है ॥ गाथा ॥ गुणठाणमग्गणेहिं य पज्जत्तीपाणजीवठाणेहिं । ठावण
पंचविहेहिं पणमिय अरहंतपुरिसस्स ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ गुणस्थान मार्गणा व
हुरि पर्याप्त प्राण जीवस्थान इनि पांच प्रकार करि अरहंत पुरुष की स्थाप
ना प्राप्त करणी अथवा ताकूं प्रणाम करनां ॥ भावार्थ ॥ स्थापना निक्षेप
मैं काष्ठ पाषाणादि विषै संकल्प करणा कह्या है सो इहां प्रधान नांही इ
हां निश्चय प्रधान करि कथन है तहां गुणस्थानादि अरहंत का स्थाप
ना करना कह्या है सो ही ॥ छ ॥ आगै विशेष करि कहै है ॥ गाथा ॥ तेरहमे गु
णठाणे सजोयकेवलिय होय अरहंतो । चउतीस अइसयगुणा होंति
हु तस्सट्ठपडिहारा ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ गुणस्थान चउदह कहे है तिनि मैं संयोग
केवली नाम तेरहा गुणस्थान है तिस विषै योगनिकी प्रवृत्ति सहित

[illegible]

१०८ अतिशय ते हैं गुण जाके वहुरि जाके आठप्रातहार्य होय है, औसा तो गु
णस्थान करि स्थापना अरहंत कहिजे है भावार्थ इहां चउतीस अति
शय अर आठ प्रातहार्य कहने तें विवहार की प्रवृति अर वचन की
प्रवृत्ति सिद्ध होय है वहुरि केवली कहने तें केवलज्ञान करि सर्वतत्त्व का
जाननां सिद्ध होय है तहां चउतीस अतिशय तो औसे जन्म तें प्रगट होय
१० मलमूत्र का अभाव १ धवल रुधिर मास होय १ समचतुरस्र संस्थान
१ वज्रऋषभनाराच संहनन १ सुंदररूप १ सुगंध सरीर १ भले लक्ष
ण होय १ बल अनंत १ मधुर वचन १ औसे दश वहुरि केवलज्ञान उ १०८
पजें होय १० उपसर्ग का अभाव १ शरीर की छाया न पडे १ च्यारि मुख दी

न

पै १ सर्वविद्या का स्वामीपणा १ नेत्र टिमकार नाही १ केश नख वधै
नाही १ शतयोजन सुभक्षता १ आकाशगमन १ कवलआहार नाही
१ औसे दश वहुरि चोदह देवकृत १४ सकलार्द्धमागधी भाषा १ सव जी
वनि के मैत्री भाव १ सर्वऋतु के फल फूलै फलै १ दर्पण समान भूमि का
१ भूमि कंटक रहित १ मंदसुगंध पवन १ सर्व कै आनंद १ गंधोदक वृ
ष्टि १ पाद तलै कमल देव रचै १ सर्व धान्य निष्पत्ति १ आकाश दिशा नि
र्मल १ देव कों आह्वानन शब्द १ धर्मचक्र आगे चालै १ आठ मंगलद्रव्य
तिनि के नाम छत्र ध्वजा दर्पण कलश चामर भृंगार ताल सुप्रतीक
औसें आठ औसें चोतीस के नाम है वहुरि आठ प्रातहार्य होय है तिनि
के नाम अशोकवृक्ष १ पुष्पवृष्टि १ दिव्यध्वनि १ चवर १ सिंघासन १ भा

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

१०८ हंतका स्थापन कह्या अब मार्गणा कहै है ॥ गाथा ॥ गइइंदिएसु काये जो
एवेए कसायणाणे य ॥ संयम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥
३३ ॥ अर्थ ॥ गति इंद्रिय काय योग वेद कषाय ज्ञान संयम दर्श
न लेश्या भव्य सम्यक्त्व संज्ञी आहार ॥ ऐसे चोदह तहां अरहंत सयो
गकेवली तेरहैं गुणस्थान हैं तहां मार्गणा लगाए तब गति च्यारि मैं मनु
ष्यगति है ॥ इंद्रियजाति पांच मैं पंचेंद्रियजाति है काय छह मैं त्रसकाय है
योग पंद्रह मैं मनयोग सत्य अनुभय ऐसें दोय बहुरि तेही वचनयोग दो
य बहुरि काययोग उदारिक ऐसें पांच है अर समुद्घात करै ताकै ऊ १०८
दारिकमिश्र कार्मण ए दोय मिलि सात है बहुरि वेद तीन ही का अभाव है

बहुरि कषाय पचीस सर्व ही का अभाव है ॥ बहुरि ज्ञान आठ मैं केवल
ज्ञान है संयम सात मैं एक यथाख्यात ॥ दर्शन च्यारि मैं एक केवलदर्शन है
लेश्या छह मैं एक शुक्ल योग निमित्त कहै है ॥ भव्य दोय मैं एक भव्य है ॥ सम्य
क्त्व छह मैं क्षायक सम्यक्त्व है ॥ संज्ञी दोय मैं मैं संज्ञी है सो द्रव्य करि है ॥
भाव करि क्षयोपशमरूप मन का अभाव है ॥ आहार मैं आहारक है सो
नोकर्म वर्गणा अपेक्षा है कवलाहार नाही हैं ॥ अर समुद्घात करै तौ अ
नाहारक भी है ॥ ऐसें दोऊ है ऐसैं मार्गणा अपेक्षा अरहंतका स्थाप
न जाननां ॥ छ ॥ आगै पर्याप्तकरि कहै है ॥ गाथा ॥ आहारे य सरीरे
इंद्रिय मण आण पाण भासा य ॥ पज्जत्तगुणसमिद्धो उत्तमदेवो हवइ
अरहो ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ आहार बहुरि शरीर इंद्रिय मन आणपाण कहिए

...ह रसपर्याप्तगुणाकारसमस्तकाहयपुक्तउत्तमद
११० व अरहंत है ॥ भावार्थ ॥ पर्याप्तका स्वरूप ऐसा जो अन्य पर्यायतें च्यवनकरि अन्य
पर्यायमें प्राप्त होय तब तीन समय उत्कृष्ट अंतरालमें रहै पीछें सैनी पंचेंद्रिय उपजै
सो तहां तीन जाति की वर्गणातें तो आहार शरीर इंद्रिय स्वासोछास ऐसें च्यारि प
र्याप्ति अंतरमुहूर्त ही मैं भाषा का समै पूर्ण करै पीछै भाषा जाति मनो जाति की व
र्गणातें अंतरमुहूर्त ही मैं भाषा मन पर्याप्ति पूर्ण करै ऐसै छह रूप पर्याप्ति अंतमुहू
र्तमें पूर्ण करै पीछै आयु पर्यंत पर्याप्ति ही कहावै अर नोकर्म वर्गणा का ग्रहण
करवो ही करै इहां आहार नाम कवलाहार का न जानना ऐसें तेरह गुणस्थान
मी अरहंत के पर्याप्त पूर्ण ही है ऐसे पर्याप्तकरि अरहंत का स्थापन है ॥ ८ ॥ आ ११०
गैं प्राणकरि कहै है ॥ गाथा ॥ पंचवि इंद्रियपाणा । मणवचकाएण तिण्णि बलपा

णा । आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दह पाणा ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ पांच तो इंद्रियप्रा
ण अर मन वचन काय करि तीन बलप्राण एक स्वासोछास प्राण एक आयु प्रा
णकरि सहित दश प्राण हैं ॥ भावार्थ ॥ जीवसमास चौदह कहे है ॥ एकेंद्रिय सूक्ष्म बा
दर २ बेंइंद्रिय तेंद्रिय चौंइंद्रिय ऐसें विकलत्रय असैनी सैनी ॥ १ ॥ ऐसैं सात ॥
ये पर्याप्ति अपर्याप्तिकरि चौदह भये तिनि मैं चौदमा सैनी पंचेंद्रिय जीवसमा
स अरहंत के है गाथा मैं सैनी का नाम न लीया अर मनुष्यभव का नाम लीया
सो मनुष्य सैनी ही होय है असैनी न होय ता तैं मनुष्य कहनै तैं सैनी ही जाननं (
ऐसै गुणनि करि सहित स्थापना अरहंत का वर्णन कीया ॥ ७ ॥ आगै द्रव्यकूं
प्रधान करि अरहंत का निरूपण करै है ॥ गाथा ॥ जरवाहिदुरकरहियं आहार
णीहारवज्जियं विमलं । सिंहाण खेल सेउ णत्थि दुगंछा य दोसो य ॥ ३६ ॥ दश

१११ चसद्वंग॥ ३७ ॥ एरिसगुणेहिसव्वं अइसयवंतं सुपरिमलामोयं उरालियं चका
यं णायव्वं अरहपुरिसस्स ॥ ३८ ॥ अर्थ॥ अरहंतपुरुषका औदारिककाय ऐसा
जाननां जराव्याधिरोगादिनिसंबंधी दुःख जामैं नांही है वहुरि आहार
निहारकरि वर्जित है वहुरि विमलकहिए मलमूत्रकरि रहित है ॥ वहुरि सिंहा
णकहिए श्लेषम खेलकहिए थूक स्वेदकहिए पसेव वहुरि दुर्गंछा कहिए घृ
णाग्लानता दुर्गंधादि दोष जामैं नाही है ॥ ना॥ दशनतौ जाकै प्राण है ते दशप्राणज ।
ननां ॥ वहुरि पूर्णपर्याप्त है ॥ वहुरि एकहजार आठलक्षण जाकै कहे हे ॥ वहुरि
गोखीरकहिए गोदुग्ध तथा संखसारिषा जामैं सरवंगि रुधिर मांस है ॥ ऐसे गु १११
णनिकरि सर्वही अतिशयनिकरि संयुक्त निर्मल है आमोदकहिए सुगंध जामै

ऐसा औदारिकदेह अरहंतपुरुषका जाननां ॥ भावार्थ॥ इहां द्रव्यनिक्षेपनाहीस
मझनां आत्मातैं जुदा बाह्य देहकूं प्रधानकरि द्रव्य अरहंतका वर्णन है ॥ ऐसें
द्रव्य अरहंतका वर्णन कीया ॥ ३९ ॥ आगे भावकूं प्रधानकरि निरूपण करै है
तहां प्रथमही भावमें दोषनिका अभावकूं हे है ॥ गाथा॥ मयरायदोसरहिओक
सायमलवज्जिओ य सुविसुद्धो चित्तपरिणामरहिदो केवलभावे मुणेयव्वो ॥ ४० ॥
॥ अर्थ॥ केवलभावकहिए केवलज्ञानीहीरूप एकभाव होतैं सतैं अरहंत ऐ
साजाननां मदकहिए मानकषाय तैं तथा भई वहुरि रागद्वेष कहिए कषाय
निके तीव्रउदयतें होय ऐसा प्रीति अप्रीतिरूप परिणाम इनितें रहित है ॥ वहुरि प
चीसकषायरूप मलसत्ताका द्रव्यकर्म तथा तिनिके उदयतैं भया भावमलता
करि वर्जित है ॥ याहीतैं अतिशयकरि विशुद्ध है निर्मल है ॥ वहुरि चित्तपरिण ।

तैं क्षयोपशमरूप मनका विकल्प नांही है ऐसा केवलज्ञानरूप अरु वीत
रागस्वरूपता करि अरहंत जानना ॥ ३ ॥ आगैं या वही का विशेषक है है ॥ गाथा ॥ समं
दंसणपरसइ ॥ जाणदि णाणेदु दव्वपज्जाया ॥ सम्मत्तगुणविसुद्धो भावो अरहस्स
णायव्वो ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ सम्यग्दर्शन करि तौ आपकूं तथा सर्वकूं सत्तामात्र देखैं क
रि देषै है ऐसा केवलदर्शन जाकै है बहुरि ज्ञान करि सर्व द्रव्य पर्यायनिकूं जानै
है ऐसा जाकै केवलज्ञान है ॥ बहुरि सम्यक्त्व गुण करि विशुद्ध है क्षायिक स
म्यक्त्व जाकै पाईये है ॥ ऐसा अरहंत का भाव जानना ॥ भावार्थ ॥ अरहंत होय
है सो घातिकर्म के नास तैं होय है सो मोहकर्म के नाशतैं मिथ्यात्व कषाय के
अभावतैं परम वीतरागपणां सर्वप्रकार निर्मलता होय है बहुरि ज्ञानाव ११२

रणदर्शनावरणकर्म के नाशतैं अनंतदर्शन अनंतज्ञान प्रगट होय है ति
निकरि सर्व द्रव्यपर्यायनिकूं एककाल प्रत्यक्ष देखै जानै है तहां द्रव्य छ
ह है तिनिमैं जीवद्रव्य तौ संख्याकरि अनंतानंत है ॥ बहुरि पुद्गलद्रव्यनितैं अ
नंतानंतगुणे है ॥ बहुरि आकाशद्रव्य एक है सो अनंतानंत प्रदेशी है तामैं मध्य
सर्व जीव पुद्गल असंख्यात प्रदेशमैं तिष्ठै है ॥ बहुरि एक धर्मद्रव्य एक अधर्मद्र
व्य ए दोऊ असंख्यात असंख्यात प्रदेशी है ॥ इनि तैं आकास कै लोक अलोक
का विभाग है तिस लोक ही मैं कालद्रव्य के असंख्यात कालाणु तिष्ठै है इनि स
र्व द्रव्यके परिणमरूप पर्याय है ते एक एक द्रव्य के अनंतानंत है तिनिकूं
कालद्रव्य का परिणमन निमित्त है ताके निमित्त तैं क्रमरूप होना समयादिक
व्यवहारकाल कहावै है तीस की गणना तैं अतीत अनागत वर्त्तमान द्रव्य।

११३ कालदेषैजानैहैयाहीतैंअरहंतकूंसर्वदर्शीसर्वज्ञकहियेहै॥ऐसैंअरहं
तकानिरूपणचौदहगाथामैंकीयातहांप्रथमगाथामैंनामस्थापनाद्रव्यना
वगुणपर्यायसहितच्यवनआगमनसंयुक्त॥नामअरहंतकूंजनावैहैताका
आख्याननामादिकथनमैंसर्वहीआगयाताकासंक्षेपमात्रअर्थलिखिये
हैतहांप्रथमतौगर्भकल्याणकहोयहैसोगर्भमैंपहलीछहमहीनाइंद्रकीआ
ज्ञाधनदजिसराजाकीराणीकेगर्भमैंआवसीताकेनगरकीसोभाकरैरत्न
मयीसुवर्णमयीमंदिररचैनगरकैकोटखाईदरवाजेसुंदरवनउपवनकी
रचनाकरैसुंदरजिनिकेवेषऐसेनरनारीउरमैवसावैवहुरितिसराजमं ११३
दिरपरिरत्ननकीवर्षाहोवोकरैवहुरिमाताकेगर्भमैंआवैतवमाताकूंसो

लहसुपनाआवैरुचिकद्वीपकीवसनेवालीदेवांगनामाताकीनि
त्यसेवाकरवोकरैऐसैंनवमासवीतैप्रभुकातीनज्ञानदशअतिशय
लोक लीयेजन्महोयतवतीनूंमैंक्षोभहोयदेवनिकैविनावजायेवाजेवाजैंइंद्र
काआसनकांपैतवइंद्रप्रभुकाजन्महूवाजानिस्वर्गतैंऐरावतिहस्तीच
ढिआवैसर्वच्यारिप्रकारकादेवदेवीनैंलेहोयआवैसचीइंद्राणीमाताप
सिजायप्रछन्नप्रभुकूंलेआवैइंद्रहर्षितहजारनेत्रकरिदेषैसौधर्मइंद्र
आपनीगोदमैंलेऐरावतिहस्तीपरिचढिमेरुपर्वतमैंचालैईशानछत्र
धारैसनतकुमारमाहेंद्रचमरढारैमेरुकेपांडुकवनकीपांडुकशिलापर
सिंहासनपरिप्रभुकूंथापैसारेदेवक्षीरसमुद्रतैएकहजारआठकलशा
निमैंजलल्यायदेवदेवांगनागीतवाजित्रनृत्यकरैउछाहसहितप्रभुकूं

MEMORIAL

११४ णपहराय माताके मंदिर स्थाय माताकूं सोंपें इंद्रादिक देव अपने स्थानक
जाय कुमेर सेवाकूं रहै पीछे कुमार अवस्था तथा राज अवस्था भोगे तामें
मनो वांछित भोग भोगवे पीछे किछु वैराग्य का कारण पाय संसार देह भोग
तें विरक्त होय तब लौकांतिक देव वैराग्य के वधावनहारी स्तुति करैं पीछे
इंद्र आय तप कल्याणक करै पालकी में बैठाय वडे उत्सव तें वनमें ले जाय
तहां प्रभु पवित्र शिलापरि वैठि पंच मुष्टी लोंच करि पंच महाव्रत अंगीका
र करै समस्त परिग्रह का त्याग करि दिगंवर रूप धारि ध्यान करै तत्का।
ल मनपर्ययज्ञान उपजै पीछे केतेक काल वीतें तप के वल करि घातिकर्म ११४
प्रकृति ४७ अघाति कर्म का प्रकृति १६ ऐसैं त्रेसठि प्रकृति का सत।

मैं सत्ता नाश करि केवलज्ञान उपजाय अनंत चतुष्टय पाय क्षुधादिक अ
ठारह दोष निनितैं रहित होय अरहंत होय तब इंद्र आय समवसरण र
चै सो आगम में कह्या अनेक सोभा सहित मणि सुवर्णमयी कोट खाई वेदी
च्यारू दिशा दरवाजा मानस्तंभ नाटशाला वन आदि अनेक रचना करै
ताके मध्य सभामंडप में वारह सभा तिनिमें मुनि अर्यका श्रावक श्राविका
देव देवी तिर्यंच तिष्ठै प्रभु के अनेक अतिशय प्रगट होय सभामंडप के वीचि।
सिंहासन परि कमलासन अंतरीक्ष प्रभु विराजै अर अष्ट प्रातिहार्य युक्त
होय वाणी खिरै ताकूं सुणि गणधर द्वादशांग शास्त्र रचैं ऐसे केवल कल्या
णक उत्सव इंद्र करै पीछे प्रभु विहार करै ताका वडा उत्सव देव करैं पी।
छे केतेक काल पीछे आयु के दिन थोरे रहैं तब योग निरोध करि अघाति

तनिवोलोकस्यालोककरैंऐसेतीर्थकरपचकल्याणककीपूजापायअ
रहंतकहायतिवोणकापतिहोयऐसैंजाननां ॥ ॥ आगैंप्रव्रज्याकानि
रूपणकरैहैताकूंदिक्षाकहिए ॥ तहांप्रथमहीदिक्षाकेयोग्यस्थानकवि
शेषकूंतथादीक्षासहितमुनितहांतिष्टैंताकास्वरूपकहैहै ॥ गाथा ॥ सुण्णह
रेतरुहिट्ठेउज्जाणे ॥ तहमसाणवासेवा ॥ गिरिगुहगिरिसिहरेवा ॥ भीमव
णेअहववसितेवा ॥ ४२ ॥ सवसासत्तंतीछं ॥ वचचइदालतयंचवुत्तेहिं ॥ जि
णभवणंअहवेझंजिणमग्गेजिणवरावित्ते ॥ ४३ ॥ पंचमहव्वयजुत्ता ॥ पंचिं
दियसंजयाणिरावेक्खा ॥ सज्झायझाणजुत्तामुणिवरवसहाणिइछंति ॥ ११५
४४ ॥ गाथा ॥ सूनाघरवृक्षकामूलकोटरउद्यानवनमसाणभूमिगिरिकीगुः

फागिरकासिखरभयानकवनअथवावसतिका ॥ इनिकैविषैदिक्षास
हितमुनितिष्टैएदीक्षायोग्यस्थानकहे ॥ वहुरिस्ववसासक्तकहियेस्वाधीन
मुनिनिकरिआसक्तजेक्षेत्रजिनिमैंमुनिवसैतथाजहांतैंमुक्तिपधारेऐ
सेतीर्थस्थानवहुरिवचचैत्यआलयऐसात्रिकजेपूर्वैंउक्तकहिएआय
तनआदिकपरमार्थरूपसंयमीमुनिअरहंतसिद्धस्वरूपतिनिकानामा
केअक्षररूपमंत्रतथातिनिकीआज्ञारूपवाणीसोतोवचअरतिनेकेआ १
कारधातुपाषाणकीप्रतिमाकास्थापनसोचैत्यअरतिसप्रतिमातथाअ
क्षरमंत्रवाणीजिसमैंस्थापियेऐसाआलयमंदिरयंत्रपुस्तगऐसावचन
चैत्यआलयकात्रिकवहुरिअथवाजिनभवनकहियेअकृतिमचैत्या
लयमंदिरऐसाआयतनादिकतिनिकेसमानहीतिनिकाव्यवहारताहि

११६ चितवनकरनैयोग्यकहैहै ॥ ७ ॥ बहुरिजे मुनिवृषभजे मुनिनिमैप्रधानहै
तेकहेहैं तैसे सून्यग्रहादिकतथातीर्थनाममंत्रस्थापनारूपमूर्त्तिअरतिनिक १
आलयमंदिरउत्तंग अरअकर्त्तिमजिनमंदिरतिनिकूंलिइछै तिकहिए नि
श्चयकरिइष्टकरैहै तिनिमैंसून्यघरआदिकमेवसैहै अरतीर्थआदिकाध्या
नचितवनकरैहै अरअन्यकूंतहांदीक्षादेहै इहांलिइछैतिकापाठांतरलिइ
छैतिऐसाभीहै ताकाकाकोक्तिकरि तौऐसाअर्थहोयहै जोकहांनइष्टक
रैहीहै ॥ अरएकटिपणमैंऐसाअर्थकीयाहैजो ऐसेसून्यग्रहादिकतथाती
र्थादिकजोस्ववसासक्तकहिए स्वेच्छाचारीभ्रष्टआचारीतिनिकरिआसक्त ११६
होयतौतेमुनिप्रधानतिनिकूंइष्टकरैतहांनवसैं ॥ कैसेहैमुनिप्रधानपांच

महाव्रतनिकरिसंयुक्तवेहै बहुरिकैसेहै पांचइंद्रियनिकाहैजनलेप्रकार
जीतिकै बहुरिकैसेहै निरापेक्षहै काहूप्रकारकीवांछाकरिमुनिनम
येहै ॥ बहुरिकैसेहै स्वाध्यायध्यानकरियुक्तहै ॥ कैतौशास्त्रपढैपढावैहै ॥
कैधर्म्मशुक्लध्यानकरैहै ॥ भावार्थ ॥ इहांदिक्षायोगस्थानकतथादिक्षासहि
तदिक्षादेनेंवालामुकेतथातिनिकैचित्तवनयोग्यव्यवहारकास्वरूपक
ह्याहै ॥ ७ ॥ आगैप्रव्रज्याकास्वरूपकहैहै ॥ गाथा ॥ गिहगंथमोहमुक्का बावी
सपरीसहाजियकसाया ॥ पावारंभविमुक्का पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ४५ ॥ अ
र्थ ॥ गृहकहिए घरअरग्रंथकहिए परिग्रहइनिदोऊनितैतथातिनिका ॥
मोहममत्वइष्टअनिष्टबुद्धितातैरहितहै बहुरिबाईसपरीसहकासहनां
जामैहोयहै ॥ बहुरिजीतेहैकषायजामैं बहुरिपापरूपजोआरंभताक

११७ हनांही सर्वसंसारकामोह नांही बाईसपरीसहका जामें सहनां कषायनि
का जीतना पापारंभका जामें अभाव ऐसी दीक्षा अन्यमत मैं नांही ॥ फेरि
कहै है ॥ गाथा ॥ धणधण्णवच्छदाणं हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइं कुद्दाणविरह
रहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ४६ ॥ अर्थ ॥ धनधान्यवस्त्र इनिका दान वहु
रि हिरण्य कहिए रूपा सोना आदिक वहुरि शय्या आसन आदि वहुरि छत्र
चामरादि वहुरि क्षेत्र आदिका एकुदान नाका देना ताकरि रहित ऐसी
प्रव्रज्या कहिए ॥ भावार्थ ॥ अन्यमती केई ऐसी प्रव्रज्या कहै है जो गऊ धा
न वस्त्र सोना रूपा शयन आसन छत्र चामर भूमि आदिका दान करना सो ११७
प्रव्रज्या है ताका या गाथा मे निषेध कीया है प्रव्रज्या तो निर्ग्रंथस्वरूप है जो ध

न धान्य आदि राखि दान करै ताकि काहे के प्रव्रज्या ए तो ग्रहस्थ का कर्म है । वहु
रि ग्रहस्थ के भी इनि वस्तुनि के दान तै विशेष पुण्य तौ नांही उपजै है पाप वहुत
है पुण्य अल्प है सो वहुत पाप कार्य तो ग्रहस्थ कूं करनें मैं लाभ नांही जामें वहु
त लाभ होय सो ही करना योग्य है दीक्षा तो इनि वस्तुनि करि रहित ही जाननां
॥ आगे फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ सत्तूमित्ते य समा पसंसणिंदा अलद्धिलद्धिसमा
तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ४७ ॥ अर्थ ॥ वहुरि जामें शत्रु मि
त्र विषै समभाव है वहुरि प्रशंसा निंदा विषैं अर लाभ अलाभ विषै समभाव
हैं वहुरि तृण कंचन विषै राग द्वेष का अभाव है ताते वैरी मित्र निंदा प्रशंसा
लाभ अलाभ तृण कंचन विषै तुल्यभाव है । जैन के मुनिनि कै ऐसी दीक्षा है
॥ आगे फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ उत्तममज्झमगेहे दारिद्दे ईसरे निरावेक्खा ॥

सहित ऐसा राजमंदरादिक अर मध्य में गेह कहिए सो भारहित सामान्य
जन का घर इनि विषै तथा दारिद्री अर धनवान इनि विषै निरापेक्ष कहिए
जामै अपेक्षा नांही ऐसी सर्व जायगा आहार है पिंड कहिए आहार जामैं ऐसी
प्रव्रज्या कही है ॥ भावार्थ ॥ मुनि दीक्षा सहित होय है ते आहार लेनेंकूं जाय तब
ऐसी न विचारै जो वडे घर जाना अथवा छोटे घर जानां तथा दलिद्री कै न जै
धनवान कै जानां ऐसी वांछा रहित अपनां निर्दोष आहार की योग्य
ता होय तहां सर्वत्र ही जाय योग्य आहार ले ऐसी दीक्षा कहै है ॥४८॥ आगे
फेरि कहे है ॥ गाथा ॥ णिग्गंथा णिस्संगा णिम्माणासा अराय णिद्दोसा ॥ २२५
णिम्मम णिरहंकारा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ४९ ॥ अर्थ ॥ वहुरि कैसी है प्रव्रज्या

निरग्रंथ स्वरूप है परिग्रह तैं रहित है ॥ वहुरि कैसी है निःसंगा कहिए स्त्री आ
दिक परद्रव्य का संग मिलाप जामै नाही है ॥ वहुरि निर्मांना कहिए मान कषाय
जामै नांही है मद रहित है ॥ वहुरि कैसी है निराशा है आशा जामे नांही है सं
सार देह भोग की आशा रहित है ॥ वहुरि कैसी है अराग कहिये राग का जा
मे अभाव है संसार देह भोग सूं प्रीति जामै नांही है ॥ वहुरि कैसी है निर्दोष
है काहू सूं द्वेष जामैं नाही है ॥ वहुरि कैसी है निर्ममा कहिए जामैं काहू सूं मम
त्व भाव नाही है ॥ वहुरि कैसी है निरहंकारा कहिए अहंकार रहित है जो कछु
कर्म का उदय है सो होय है ऐसे जानने तैं परद्रव्य मैं कर्तापणा का अहंकार
नाही है अपना स्वरूप ही का जामै साधन है ऐसी प्रव्रज्या कही है ॥ भावार्थ ॥ अ
न्यमती भेषपहरि तिस मात्र दीक्षा मानै है सो दीक्षा नांही है जैन दीक्षा ऐसी ॥

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

११९ कलुसा णिब्भय णिरासभावा ॥ पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥५०॥ अर्थ ॥ बहुरि प्र
व्रज्या ऐसी कही है कैसी है ॥ निस्नेहा कहिये जामैं काहूसूं स्नेह नांही प
रद्रव्यसूं रागादिरूप सचिक्कण भाव जामैं नांही है बहुरि कैसी है निर्लोभा कहि
ये जामैं किछू परद्रव्य के लेने की वांछा नांही है ॥ बहुरि कैसी है निर्मोहा कहि
ये जामैं काहू परद्रव्यसूं मोह नांही है भूलिकरि भी परद्रव्य तैं आत्मबुद्धि न
ही उपजै है बहुरि कैसी है निर्विकार है बाह्य अभ्यंतर विकारसूं रहित है बा
ह्य शरीर की चेष्टा तथा वस्त्राभूषणादिक का तथा अंग उपंग का जामैं वि
कार नांही है अंतरंग काम क्रोधादिक का विकार जामैं नांही है ॥ बहुरि कैसी ११९
है निःकलुषा कहिये मलिन भाव रहित है ॥ आत्माकूं कषाय मलिन करै है सो

कषाय जामैं नांही है अपना स्वरूपकूं अविनासी जानै ताकै काहे का भय होय
बहुरि कैसी है निराशभाव कहिये जामैं ॥ ॥ काहू प्रकार का परद्रव्य की
आसा का भाव नांही है आशा तौ किछू वस्तु की प्राप्ति होय ताकी लगी रहै है अ
र जहां परद्रव्यकूं अपना जान्या नांही अर अपने स्वरूप की प्राप्ति भई तब कि
छू पावना न रही तब काहू की आशा होय प्रव्रज्या ऐसी कही है ॥ भावार्थ ॥ जै
न दीक्षा ऐसी है अन्यमत मैं स्वपरद्रव्य का भेदज्ञान नांही तिनिकै ऐसी दी
क्षा काहे तैं होय ॥ [illegible] ॥ आगैं दीक्षा का बाह्यरूप कहै है ॥ गाथा ॥ जधजायरूव
सरिसा ॥ अवलंबियभुव णिराउहा ॥ संता परकियणिलयणिवासा पव्व
ज्जा एरिसा भणिया ॥५१॥ अर्थ ॥ कैसी है प्रव्रज्या यथाजातरूप सदृशा क
हिये जैसा जन्म्या बालक का नग्नरूप होय तैसा नग्नरूप जामैं है ॥ बहुरि

[illegible]
पेक्षा कायोत्सर्ग षडा रहना जामे होय है ॥ बहुरि कैसी है निरायुधा कहिए
आयुधनि करि रहित है ॥ बहुरि शांत कहिए अंग उपांग के विकार रहित
अंगमुद्रा जामे होय है बहुरि कैसी है परिकृति निलय निवासा कहिये प
रका कीया निलय जो वसतिका आदिकता मैं है निवास जामे ॥ आप कूं
कृत कारित अनुमोदना मन वचन काय करि जामे दोष न लाग्या होय ऐ
सी परकी करी वसतिका आदिक मैं वसना होय है ऐसी प्रवज्या कही है ॥ भा
वार्थ ॥ अन्यमती केई वा स्त्र वस्त्रादिक राखे है केई आयुध राखे है केई सुख
निमित्त आसन चलाचल राखे है केई उपाश्रय आदि वसने का निवास व
णाय तामे वसे है अर आपकूं दिक्षा सहित माने है ॥ तिनिके भेष मात्र है ।

जैनदीक्षा तो जैसी कही तैसी ही है ॥ आगे फेरि कहे हैं ॥ गाथा ॥ उवसमखम
दमजुत्ता ॥ सरीरसक्कारवज्जिया रूक्खा ॥ मयरायदोसरहिया ॥ पव्वज्जा एरि
सा भणिया ॥ ५२ ॥ अर्थ ॥ बहुरि कैसी है प्रवज्या उपशमक्षमदमयुता कहिए उप
शम तो मोहकर्म का उदय का अभावरूप शांतिपरिणाम अर क्षमा क्रोध का
अभावरूप उत्तम क्षमा अर दम इंद्रिय का विषयनि मे न प्रवर्तावना इनि
भावनि करि युक्त है शरीरसंस्कारवर्जिता कहिये स्नानादिक करि शरी
र का सवारना ताकरि रहित है ॥ बहुरि रूक्ष है तैलादिक का मर्दन शरी
र कै जामे नाही है बहुरि कैसी है मदरागद्वेष इनि करि रहित है ॥ ऐसी प्रव्र
ज्या कही है ॥ भावार्थ ॥ अन्यमत के भेषी क्रोधादिकरूप परिणमै है सरीर
कूं वारि सुंदर राखे है इंद्रियनि के विषय निके विषय सेवै है अर आप ही

१२१ थ्यात्व दृढ करै है जैन दीक्षा ऐसी है सो सत्यार्थ है याकूं अंगीकार करै
तो साचे अतीत है ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ विवरीयमूढभावा पणट्ठ
कम्मट्ठ णट्ठमिच्छत्ता । सम्मत्तगुणविसुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ५३ ॥ अर्थ
वहुरि कैसी है प्रव्रज्या विपरीत भया है दूरि भया है मूढभाव कहिये अज्ञा
नभाव जामें अन्यमती आत्मा का स्वरूप सर्वथा एकांत करि अनेक प्रका
र न्यारे न्यारे कहि विवाद करै है आत्मा का स्वरूप विषै मूढभाव है जैनी
मुनिनिकै अनेकांत तैं साधा हूवा यथार्थ ज्ञान है मूढभाव नांही है वहु
रि कैसी है प्रणष्ट भया है कर्म आठ जातैं जैनदीक्षा लेनेवाले कै कर्मनिका १२१
नाश होय मोक्ष होय है वहुरि कैसी है नष्ट भया है मिथ्यात्व जामें जैनदीक्षा

मैं अतत्वार्थश्रद्धानरूप मिथ्यात्व का अभाव है याही तैं सम्यक्त नाम गुण
करि विशुद्ध है निर्मल है सम्यक्त सहित दीक्षा मैं दोष नाही रहै है ऐसी प्रव्र
ज्या कही है ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ जिणमग्गे पव्वज्जा छहसंघयणे
सु भणिय णिग्गंथा । भावंति भव्वपुरिसा कम्मक्खयकारणे भणिया ॥ ५४ ॥ अ
र्थ ॥ प्रव्रज्या है सो जिनमार्ग विषै छह संहनन वाले जीवनिकै होना कह्या
है कैसी है निर्ग्रंथ स्वरूप है परिग्रह तैं रहित यथाजातस्वरूप है याकूं भव्य
रूप है ते भावै है ऐसी प्रव्रज्या कर्म कै क्षय का कारण कही है ॥ भावार्थ ॥ वज्र
रिषभनाराच आदि छह शरीर के संहनन कहे है तिनि मैं सब ही मैं दीक्षा हो
ना कह्या है सो जे भव्य पुरुष हैं ते कर्म कै क्षय का कारण जाणि याकूं अंगीक
र करो ऐसा नाही है जो दृढ संहनन वज्र रिषभ आदिक है तिन ही मैं होय ॥

[illegible]
हननविषैभीहोयहैं॥ आगैफेरिकहैहै॥गाथा॥ तिचत्तूसमित्त॰ णिमित्तं
१२२ समवाहरिगंथसंग होणा छिपा॥ वजोहवइएसाजहनणियासव्वदस्सी
हिं॥५५॥अर्थ॥ जिनप्रहज्याविषैतिलकेतुसमात्रका संग्रहकाकारण ऐ
साभायरूपइछानामा अंतरंपरिग्रहवकुरितिसतिलकेतुसमात्रवाह्य
परीग्रहकासंग्रहनाहीहै॥ ऐसीप्रहज्याजेसैसर्वज्ञदेवकहीहैसोहीहै
अन्यप्रकारप्रहज्यानाहीहै ऐसानियमजानना॥भावार्थ॥स्वेतांवरआदि
कहैहैअपवादमार्गमेवस्त्रादिककासंग्रहसाधुकेकह्याहैसोसर्वज्ञदेव
केसूत्रमेतोकह्याहैनाहीतिनिकेकल्पितसूत्रवणायेहैतिनिमेंकह्या॥ १२२
हैसोकालदोषहै॥छ॥ आगैफेरिकहैहै॥गाथा॥उवसग्गपरिस्सहसहा

णिज्जनदेसेहिणिच्चअबेई॥सिलकट्ठेभूमितलेसव्वेआरुहइसव्वछ
५६॥अर्थ॥कैसीहैप्रहज्याउपसर्गकहिएदेवमानुषतिर्यंचअचेतनकृत
उपद्रवअरपरीसहकहिएदैवकर्मकेयोगतैआयेजेवाईसतिनिकूं
समभावतैहैसहनांजामे ऐसीप्रहज्यासहितमुनिहैतेजहांअन्यज
ननांही ऐसानिर्जनवनादिकप्रदेसतहांसदातिष्टैहै तहांभीशिलात
लकाष्टभूमितलविषेतिष्टैइनसर्वहीप्रदेशनिकूंआरोहणकरैहैसोस
र्वकहेमेतैवनमेरहनेतैवनमेरहतोअरकिंचतकालनगरीमैरहेतो
ऐसेहीठिकानैरहै॥भावार्थ॥जैनदीक्षावालेमुनिउपसर्गपरीसहमेंसम
भावरहैअरजहांसोवैवैठैतहांनिर्जनप्रदेशमेसिलाकाष्ठभूमिही
विषैयेठैसोवै ऐसानाहीजोअन्यमतकेभेषीकीज्यांस्वछंदप्रमादीर

॥ॐनमः सिद्धेभ्यः॥ अथपाहुडग्रंथनिकीदेशभाषामयवचनिकालिखियेहै॥
॥दोहा॥ श्रीमतवीरजिनेशरवि मिथ्यातमहरतार विघनहरनमंगलकरन
वंदौंवृषकरतार १ वानीवंदौंहितकरी जिनमुखनभतैंगाजि गणधरगण
अतेंभूकरी बूंदवर्णपदसाजि २ गुरुगौतमवंदौंसुविधि संयमतपधर
और जिनतैंपंचमकालमैं वरत्यौजिनमतऔर ३ कुंदकुंदमुनिकूं
नमूं कुमतध्वांतहरभान पाहुडग्रंथरचेजिनूं प्राकृतवचनमहान ४
जिनिमैंकेईप्रसिद्धलखि करूंसुगमसुविचारि देशवचनिकामयलिखौं
भव्यजीवहितधारि ५ ऐसैंमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकरिश्रीकुंदकुंदआचा १
र्यकृतप्राकृतगाथाबंधपाहुडग्रंथहैतिनमैंसूंकेईकनिकीदेशभाषाम १
यवचनिकालिखियेहैतहांप्रयोजनऐसाहैजोइसहुंडावसर्पिणीका

लविषैमोक्षमार्गकूंअन्यथाप्ररूपणाकरनहारेकुमतप्रवर्तेतहांभीइसपंच
मकालमैंकेवलीश्रुतकेवलीकाव्युछेदहोनेतैंजिनमतमैंभीजडवक्रजीव
निकेनिमित्तकरिपरंपरामार्गकूंउलंघिबुद्धिकल्पितस्वेतांवरआदिकभ
येहैतिनिकानिराकरणयथार्थस्वरूपस्थापनकेअर्थिदिगंवरआम्नायमूल
संघमैंआचार्यभयेतिनिनैंसर्वज्ञकीपरंपराकाअव्युछेदरूपप्ररूपणांकेअ
नेकग्रंथरचेहैतिनिमैंदिगंवरसंप्रदायमूलसंघनंदिआम्नायसरस्वतीगछ
मैंश्रीकुंदकुंदमुनिभयेतिनिनैंपाहुडग्रंथरचेतिनिकूंसंस्कृतभाषामैंप्राकृ
तनामकहिएतेप्राकृतगाथाबंधहैसोकालदोषतैंजीवनिकीबुद्धिमंदहोय
हैंसोअर्थसमझ्याजातानांहीतातैंदेशभाषामयवचनिकाहोयतौसर्वहीवांचै
अर्थसमझैश्रद्धानदृढहोययहप्रयोजनविचारिवचनिकालिखियेहैं अन्य

अ० पा०
२

किछूख्यातिवडाईलाभकाप्रयोजनहैनांहीयातैंनकजीवताकूंवांचिअर्थि
समझिचित्तमैंधारणाकरियथार्थमतकावाह्यलिंगतथातत्वार्थकाश्रद्धानदृढ
करियौअरयामैंकिछुवुद्धिकीमंदतातैंतथाप्रमादकेवशतैंअर्थअन्यथालि।
खूंतौवडेबुद्धिवानमूलग्रंथदेषिशुद्धकरियांचियौमोकूंअल्पवुद्धीजांनिक्षमं ।
कीजियौ॥छ॥अवइहांप्रथमहीदर्शनपाहुडकीवचनिकालिखियेहैं॥दोहा॥वं
दौश्रीअरिहंतकूं।मनवचतनइकतान।मिथ्याभावनिवारिकैं।करैसुदर्शनज्ञान
१अवग्रंथकर्त्ताश्रीकुंदकुंदआचार्यग्रंथकीआदिविषैंग्रंथकीउत्पत्तिअरता
काज्ञानकूंकारणजोपरापरगुरुकाप्रवाहताकूंमंगलकैअर्थिनमस्कारकरैहैं
॥गाथा॥काऊणणमुक्कारंजिणवरवसहस्सवद्दमाणस्स।दंसणमग्गंवोछा। १
मिजहाकम्मंसमासेण॥१॥याकादेसभाषामयअर्थ।आचार्यकहेहैंजोमैंजिन

वरवृषभऐसाजोआदितीर्थंकरश्रीरिषभदेवबहुरिवर्द्धमानऐसाजोवर्द्धमान
नामअंतमतीर्थंकरताहिनमस्कारकरिअरदर्शनकहियेमतताकामार्गहैता
हियथाअनुक्रमसंक्षेपकरिकहूंगा॥भावार्थ॥इहांजिनवरवृषभऐसाविसेषा
णहैंताकाऐसाअर्थहैं।जोजिनऐसाशब्दकातौयहुअर्थजोकर्मशत्रुकूंजीतैसे ।
जिनतौसम्यग्दृष्टीअव्रतीसूंलगायकर्मकीगुणश्रेणीरूपनिर्जराकरणवालेस
र्वहीजिनहैंतिनमैंवरकहियेश्रेष्टऐसेजिनवरगणधरआदिकमुनिनिकूंक।
हियेतिनिमैंवृषभकहियेप्रधानऐसेतीर्थंकरपरमदेवहैंतिनिमैंआदितौश्री
रिषभदेवभयेअरइसपंचमकालकीआदिचतुर्थकालकेअंतमैंअंतमतीर्थं
करश्रीवर्द्धमानस्वामीभयेतिनिकाविशेषणभया।बहुरिजिनवरवृषभऐसास
र्वहीतीर्थंकरभयेतिनकूंनमस्कारभयातहांवर्द्धमानऐसाविशेषणसर्वहीका।

अ॰पा॰ जाननांसर्वहीअंतरवाह्यलक्ष्मीकरिवर्द्धमानहैं॥ अथवाजिनवरवृषभशब्दका
३ रितौआदितीर्थकरश्रीवृषभदेवलेणांअरवर्द्धमानशब्दकरिअंतमतीर्थकर
लेणौ ऐसैंआदिअंततीर्थकरकूंनमस्कारकरनैंतैंमध्यकेनकूंनमस्कारसाम
र्थ्यतैंजाननां॥ वहुरितीर्थंकरसर्वज्ञवीतरागकूंतौपरमगुरुकहियेअरइनिकै १
परिपाटीतैंअनुगौतमादिकमुनिनयेतिनिकानामजिनवरवृषभऽसविशेष
णमैंजनायातिनिकूंअपरगुरुकहियेऐसैंपरापरगुरुकाप्रवाहजाननांतेश १
स्त्रकीउत्पत्तितथाज्ञानकूंकारणहैंतिनिकूंग्रंथकीआदिकेविषैंनमस्कारक
रनायुक्तहैं॥ छ॥ आगैंधर्मकामूलदर्शनहैतातैंजोदर्शनतैंरहितहैताकौंनवं
दनाऐसैंकहैहै॥ गाथा॥ दंसणमूलोधम्मो उवइट्ठोजिणवरेहिंसिस्साणं॥ तंसो ३
ऊणसकण्णे दंसणहीणोणवंदिव्वो॥ २॥ अर्थ॥ जिनवरजेसर्वज्ञदेवतिनिनैंसिष्य

जेगणधरआदिकतिनिकूंधर्मउपदेश्याहैंसोकैसाउपदेश्याहैंदर्शनहैंमूलजाकाताहीकौं।
कहियेजैसैंमंदरिकैनीवअथवाजैसैंवृक्षकैजडतैसैंधर्मकामूलदर्शनहैतातैंआचा
र्यउपदेशकरैहैसोहेसकरणाकहियेपंडितसतपुरुषहोतिसौंसर्वज्ञकेकहेदर्शन न
मूलरूपधर्मकूंअपनेकाननिविषैंसुणिकरिअरजोदर्शनकरिरहितहैसोतुमारै
वंदिवेयोग्पनांहीहैंदर्शनहीनकूंमतिवंदौजाकेदर्शननांहीताकैधर्मभीनांहीमू
लविनावृक्षकैस्कंधसाखापुष्पफलादिककहांतैंहोयतातैंयहउपदेशहैंजाकैध
र्मनांहीतातैंधर्मकीप्राप्तिनांहीताकूंधर्मनिमित्तकाहेकूंवंदियेऐसाजाननां॥
छ॥ अवइहांधर्मकातथादर्शनकास्वरूपजाण्यांचाहियेसोस्वरूपतौसंक्षेपक
रिग्रंथकारआगैंकहसी॥ तथापिकिंचूअन्यग्रंथनिकेअनुसारइहांभीलिखि
येहै॥ तहांधर्मऐसाशब्दकाअर्थयहजोआत्माकूंसंसारतैंउद्धारिसुखस्थानविषैं

अ० पा० स्वरूपसोधर्महै बहुरि दर्शननांमदेखनेंकाहै सो ऐसे धर्मकी मूर्त्ति देखनेमैं आवै सो
५ दर्शनहै सोप्रसिद्धतामैं जामैं धर्मकाग्रहणहोय ऐसामतकूं दर्शन ऐसानामकहि
एहै। सोलोकमैंधर्मकीतथादर्शनकीसामान्यपणें मान्यतौसर्वकैहै। परंतुसर्वज्ञवि
नायथार्थस्वरूपकातौजाननाहोयनांहीअरछद्मस्थप्राणीअपनीबुद्धितैंअनेक
स्वरूपकल्पनाकरिअन्यथास्वरूपस्थापितिसकीप्रवृत्तिकरैहै। सोजिनमतसर्वज्ञ
कीपरंपरातैंप्रवर्तैहैसोयामैंयथार्थस्वरूपकाप्ररूपणहै तहांधर्मनिश्चयव्यवहा
रकरिदोयप्रकारकरिसाध्याहैताकीच्यारिप्रकारप्ररूपणहैवस्तुस्वभाव। उत्तमक्ष
मादिकदशप्रकार। सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्ररूपजीवनिकीरक्षा ऐसाच्यारिप्रका
रहैतहांनिश्चयनयकरिसाधियेतबतौसर्वमैंएकहीप्रकारहै। जातैंवस्तुस्वभावक ५
हनेतैंतौजीवनामावस्तुकापरमार्थरूपदर्शनज्ञानपरिणाममयीचेतनाहैसोय

हुचेतनांसर्वविकारनितैंरहितशुद्धस्वभावरूपपरिणमैसोहीयाकाधर्महैबहुरि
उत्तमक्षमादिकदशप्रकारकहनेतैंक्रोधादिककषायरूपआत्मानहोयअपनेंस्व
भावमैंथिरहोयसोहीधर्महैयहभीशुद्धचेतनारूपहीभयाबहुरिदर्शनज्ञानचारि
त्रकहनेंतैंतीनूंएकज्ञानचेतनाहीकेपरिणामहैसोहीज्ञानस्वभावरूपधर्महै। बहु
रिजीवनिकीरक्षाकहनेंतैंजीवकैआपकैतथापरकैक्रोधादिककषायनिकेव
शतैंपर्यायकाविनाशरूपमरणतथादुःखसंक्लेशपरिणमनकरणां ऐसाअपनां
भावसोहीधर्महै ऐसैंशुद्धद्रव्यार्थिकरूपनिश्चयनयकरिसाध्याहूवाधर्मएकहीप्रका
रहै। बहुरिव्यवहारनयहैसोपर्यायाश्रितहैसोयहभेदरूपहैसोयाकरिविचारिये
तबजीवपर्यायरूपपरिणामअनेकप्रकारहैतातैंधर्मभीअनेकप्रकारकरिवर्णनक
याहैतहांएकदेशकूंप्रयोजनकेवशतैंसर्वदेशकहिएसोव्यवहारहैबहुरिअन्यव

अ॰ पा॰ ५ स्तुविषैंअन्यकाआरोपणनिमित्ततथाप्रयोजनकेवशतैंकरिएसोजीव्यवहारहैंता
हांवस्तुस्वभावकहनेमैंतोजेनिर्विकारचेतनाकेशुद्धपरिणामकेसाधकरूपमंदक
षायरूपशुभपरिणामतथाबाह्यक्रियाहैंतेसर्वहीव्यवहारधर्मकरिकहियेहैंऐसें
हीउत्तमक्षमादिकरूपमंदकषायहैंतथातिनिकेसाधकबाह्यक्रियादिकहैतेसर्व
हीव्यवहारधर्मकरिकहियेहैंबहुरितैसेंहीरत्नत्रयकहनेमैंस्वरूपकेभेददर्शनज्ञा
नचारित्रतथातिनिकेकारणबाह्यक्रियादिकतेसर्वहीव्यवहारधर्महैतथातैसैंही
जीवनिकीदयाकहनेतैंक्रोधादिककषायमंदहोनेतैंअपनेवापरकैमरनदुःखक्ले
शआदिनकरनातिसकेसाधकबाह्यक्रियादिकतेसर्वहीधर्महैंऐसैंनिश्चयव्यवहा
रनयकरिसाधाहूवाजिनमतमैंधर्मकहिएहैंतहांएकस्वरूपअनेकस्वरूपकहने
तैंस्याद्वादकरिविरोधनांहीआवैहैंकथंचितविवक्षातैंसर्वप्रमाणसिद्धहैं बहुरि। ५

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

ऐसेधर्मकामूलदर्शनकह्यासोऐसेधर्मकीश्रद्धप्रतीतिरुचिसहित आचरणक
रनांसोहीदर्शनहैयहधर्मकीमूर्त्तिहैयाहीकूंमतकहियेसोयहहीधर्मकामूलहै बहु
रिऐसाधर्मकीपहलेंश्रद्धाप्रतीतिरुचिनहोयतोधर्मकाआचरणनहोयजैसेवृक्ष
केमूलबिनास्कंधादिकनहोयतैसेंसोदर्शनकूंधर्मकामूलकहनायुक्तहै सोऐसा
दर्शनकाजैसेंसिद्धांतनिमेंवर्ननहैतैसेंकिछूलिखियेहैं तहांअंतरंगसम्यग्दर्शन
हैंसोतोजीवकाभावहैंसोनिश्चयकरिउपाधितैंरहितशुद्धजीवकासाक्षात्अनुभवहो
नाऐसाएकप्रकारहैंसोऐसाअनुभवअनादिकालमैंमिथ्यादर्शननामांकर्मकेउद
यतैंअन्यथाहोयरह्याहैयामिथ्यात्वकीसादिमिथ्यादृष्टीजीवकेतीनप्रकृतिसत्तामैं
होयहैमिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व ऐसैंअरयाहीकीसहकारि
णीअनंतानुबंधीक्रोधमानमायालोभकेरिभेदच्यारिकषायनामाप्रकृतिहैऐसेंएसा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

तप्रकृतइससम्यक्दर्शनकेघातकरनेवालीहैसोइनसातनिकाउपशमभयेपहलेतौ
इसजीवकेउपसमसम्यक्त्कहोयहै। इनिप्रकृतिनिकेउपशमहोनेकेंकाबाह्यकारन।
सामान्यकरिद्रव्यक्षेत्रकालभावहैतिनिमैंप्रधानद्रव्यमैंतौसाक्षात्तीर्थंकरकादे
षनाआदिकहैक्षेत्रमैंसमवशरणादिकहैकालमैंअर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनसंसार।
काभ्रमणबाकीरहैसोहैभावमैंअधःप्रवृत्तकरणआदिकहै। बहुरिविशेषकरिअ
नेकहैतिनिमैंकेईकनिकैतौअरहंतकाबिंबदेषनाहैकेईकनिकैजिनकेकल्याण
कआदिकीमहिमाश्रवणहैकेईकनिकैदेवनिकीऋद्धिकादेषणांहैइत्यादिबाह्य
कारणनितैंमिथ्यात्वकर्मकाउपशमभयेंउपशमसम्यक्त्वहोयहै। बहुरिइनिसात।
प्रकृतिनिमैंछहकातौउपशमअथवाक्षयहोयअरएकसम्यक्त्वप्रकृतिकाउदय।
होयतवक्षयोपशमसम्यक्त्वकहावेइसप्रकृतिकेउदयतेंकिछूअतीचारमललगै। ६

बहुरिइनसातप्रकृतिनिकासत्तामैंसैंनाशहोयतवक्षायिकसम्यक्त्वहोयहै। सोऐसैंउ
पशमादिकभयेंजीवकापरिणामभेदकरितीनप्रकारहोयहैतेपरिणामहोयसोअ
तिसूक्ष्महैकेवलज्ञानगम्यहैजातैंइनिप्रकृतिनिकाद्रव्यपुद्गलपरमाणूनिकेस्कंधहै
तेअतिसूक्ष्महैअरतिनिमैंफलदेनेकीशक्तिरूपअनुभागहैसोअतिसूक्ष्महैसोछ
द्मस्थकेज्ञानगम्यनांहीइनिकाउपशमादिकेवलज्ञानगम्यहीहैअरइनकाउपश।
मादिकहोतैंजीवकेपरिणामभीसम्यक्त्वरूपहोयतेसूक्ष्महैतेभीकेवलज्ञानगम्य
हैतथापिकिछूछद्मस्थकेज्ञानमैंआवनेयोग्यजीवकापरिणामहोयहैतेताकेजन।
वनेंकेबाह्यचिह्नहैतिनिकीपरीक्षाकरिनिश्चयकरनेकाव्यवहारहैऐसेनहोय
तौछद्मस्थव्यवहारीजीवकेसम्यक्त्वकानिश्चयनेंयहोयतवआस्तिक्यभावगह
रेव्यवहारकालोपहोययहबडादोषआवैंतातैंबाह्यचिह्ननिकाआगमअनुमा

अ०पा० नस्वानुभवतैंपरिक्षाकरि निश्चय करनां ते चिह्न कों नसो ही लिखियेहै। तहां मुख्य
७ चिह्न तो यह हैं जीव उपाधिरहित शुद्ध ज्ञानचेतनास्वरूप आत्मा की अनुभूति
है सो यद्यपि यह अनुभूत ज्ञान का विशेष है तथापि सम्यक्त्व भये यह होय है ता
तैं याकूं बाह्य चिह्न कहिए। ज्ञान है सो आपका आपकै स्वसंवेदनरूप है ताकारा
गादिक विकाररहित शुद्ध ज्ञानमात्र का आपकै आस्वाद होय सो यह शुद्ध ज्ञान
हैं सो मेरूं अर ज्ञान में रागादिक विकार है ते कर्म के निमित्त तै उपजै है ते मेरा रूप
नाही है ऐसें भेदज्ञान करि ज्ञानमात्र का आस्वाद कूं ज्ञान की अनुभूति तैं शुद्ध
नय के धौरे ऐसा भी श्रद्धान होय है जो सर्व कर्मजनित रागादिक भाव तैं रहित अ
नंतचतुष्टय मेरा रूप है अन्य भाव सर्व संयोगजनित है ऐसी आत्मा की अनुभूति ७
मुख्य सो सम्यक्त्व होय ताका चिह्न है यह मिथ्यात्व का अनंतानुबंधी का अभाव करि स

म म्यक्त्व कौ होय ताका चिह्न है सो चिह्न कूं ही सम्यक्त्व कहनां यह व्यवहार है वहु
रि याकी परिक्षा सर्वज्ञ के आगम करि तथा अनुमान करि तथा स्वानुभव प्रत्यक्ष
करि इनि प्रमाणनि करि कीजिए है। वहुरि याही कूं निश्चय तत्वार्थश्रद्धान भी क
हिए है तहां आपकै तौ आपका स्वसंवेदन कूं प्रधान करि होय है। अर परकै प
र की परिक्षा परके वचन काय की क्रिया की परीक्षा तै अंतरंग भये कौ परीक्षा होय
है यह व्यवहार है परमार्थ सर्वज्ञ जानै है व्यवहारी जीव कै सर्वज्ञ नैं भी व्यवहार ही
का सरनां उपदेश्या है। केई कहै है जो सम्यक्त्व तौ केवलीगम्य ही है। यातैं आपकै स
म्यक्त्व भयें का निश्चय न होय तातैं आपकूं सम्यग्दृष्टी न मांननां सो ऐसा सर्वथा
एकांत करि कहनां तौ मिथ्यादृष्टि है सर्वथा ऐसें कहे व्यवहार का लोप होय सर्व
मुनि श्रावक की प्रवृत्ति मिथ्यात्व सहित ठहरै तव सब ही मिथ्यादृष्टी आपकूं मानैं

अ॰पा॰
६

तवअवहारकाहेकारह्यातातैंपरीक्षाभयेंपीछैंयहश्रद्धांननराषणाजोमैंमि
थ्यादृष्टीहीहौंमिथ्यादृष्टीतौअन्यमतीकूंकहियेहैतवतिससामान्यआपभीव
हरैहै।तातैंसर्वथाएकांतपक्षग्रहणनकरणावहुरितत्वार्थकाश्रद्धानहैसोवा
ह्यचिह्नहैतहांतत्वार्थतौजीवअजीवआश्रववंधसंवरनिर्जरामोक्षऐसैंसात
हैवहुरिइनिमैंपुण्यपापकौविशेषकरियेंतवनवपदार्थहोयहैसोइनिकीश्रद्धाक
हियेइनिकैसनमुखबुद्धिअररुचिकहियेइनिरूपआपनाभावकरनांवहुरिप्र
तीतिकहियेजैसेसर्वज्ञभाषेतैसेंहीहैऐसैंअंगीकारकरनांवहुरिइनिकाआ
चरणरूपक्रियाऐसैंश्रद्धानादिकहोनासोसम्यक्त्वकावाह्यरूपचिह्नहै वहुरि
प्रशमसंवेगअनुकंपाआस्तिकएसम्यक्त्वकेवाह्यचिह्नहै तहांअनंतानुवंधी ६
क्रोधादिककषायकाउदयकाअभावसोप्रशमहैताकावाह्यचिह्नऐसाजोस

र्वथाएकांततत्वार्थकेकहनेंवालेजेअन्यमततिनिकाश्रद्धानतथावा
ह्यभेषताविषैंसत्यार्थपणांकाअभिमानकरनातथापर्यायनिविषैंएकां
ततैंआत्मबुद्धिकरिअभिमानतथाप्रीतिकरणीएअनंतानुवंधीका
कार्यहैसोयहजाकैनहोयतथाआपकाकाहूनैंबुराकीयाताकाघातक
रनांआदिविकाररूपबुद्धिमिथ्यादृष्टीकीजैसैंआपकैनैउपजैऐसैंविचारिमे
राबुराकरनवालामेरापरिणामकरिमैंवांध्याथाजोकर्मसोहैअन्यतोनिमित्त
मात्रहैऐसीबुद्धिआपकैउपजैऐसैंमंदकषायहोयअरअनंतानुवंधीविना
अन्यचारित्रमोहकीप्रकृतितिनिकैउदयतैंआरंभादिकक्रियामैंहिंसादिकहो
यहैतिसकूंभीभलीनजाणैहैयातैंतिसतैंप्रशमकाअभावनकहिए। वहुरि
धर्मविषैअरधर्मकाफलविषैपरमउत्साहहोयसोसंवेगहै तहांसाधर्मीनि

तैं अनुराग तथा परमेष्टीनि विषै प्रीति सो भी संवेग ही है। इस धर्म का फल विषै अनुराग कूं अभिलाषन कहना जातैं अभिलाष तौ इंद्रिय के विषयनि।

विषै होय ता कूं कहिये है अपुना स्वरूप की प्राप्ति विषै अनुराग कूं अभिला
षन कहिये। बहुरि इस संवेग मैं ही निर्वेद भी भया जाननां जातैं अपने स्वरू।
परूप धर्म की प्राप्ति विषै अनुराग भया तब अन्य सर्व ही अभिलाष का त्याग
भया सर्व परद्रव्यनि सूं वैराग्य भया सो ही निर्वेद है। बहुरि सर्व प्राणीनि विषै।
उपकार की बुद्धि तथा मैत्री भाव सो ही अनुकंपा है। तथा मध्यस्थ भाव होय जा
तैं सम्यग्दृष्टी कै शल्य नाही है काहू सूं वैर भाव न होय है सुख दुःख मरण जी
वन आपकै परकरि परकै आपकरि नाहीं श्रद्धहै है। बहुरि जो परविषै अनु
कंपा है सो आप ही विषै अनुकंपा है जातैं परका बुरा करनां विचारै तब

अपने कषाय भाव तें अपना बुरा भया परका बुरा नँ विचारै तब अपने कषाय भ
व न भये तब अपनी अनुकंपा भई। बहुरि जीव आदि पदार्थनि विषै अस्ति
त्व भाव सो आस्तिक्य है सो जीव आदि का स्वरूप सर्वज्ञ के आगम तैं जानि तिन।
विषै ऐसी बुद्धि होय जो ए जैसे सर्वज्ञ भाषै तैसें ही है अन्यथा नाही है ऐसा आ
स्तिक्य भाव होय है। ऐसें ए सम्यक्त्व के बाह्य चिह्न है। बहुरि सम्यक्त्व के आठ गु
ण कहे है। संवेग॥१॥ निर्वेद॥२॥ निंदा॥३॥ गर्हा॥४॥ उपशम॥५॥ भक्ति॥६॥ वात्सल्य॥७॥ अनुकंपा
॥८॥ ए प्रशमादिक च्यारि ही मैं आय गये। संवेग मैं तो निर्वेद वात्सल्य अर भ।
क्ति आय गये। बहुरि प्रशम मैं निंदा गर्हा आय गई। बहुरि सम्यग्दर्शन के आ
ठ अंग कहे है तिनि कूं लक्षण भी कहिये गुण भी कहिये। तिनि के नाम। निःशं
कित। निःकांक्षित। निर्विचिकित्सा। अमूढदृष्टी। उपगूहन। स्थितीकरण। वात्स

भय प्रभावना ऐसें आवतहां संकानाम संशयका भी है अर भयका भी है तहां
धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य कालाणुद्रव्य पुद्गलपरमाणु इत्यादि तौ सूक्ष्मवस्तु है बहुरि
द्वीप समुद्र मेरु पर्वत आदि दूरवर्ती पदार्थ है बहुरि तीर्थंकर चक्रवर्त्ति आदि
अंतरित पदार्थ हैं ते सर्वज्ञके आगम विषै जैसे कहे हैं तैसे हैं अथवा सर्वज्ञदेव
नै वस्तुका स्वरूप अनेकांतात्मक कह्या है सो सत्य है कि असत्य है ऐसें संदेह
करना सो संका कहिए यन होय ताकूं निःशंकित अंग कहिए बहुरि यह जु संका
होय है सो मिथ्यात्व कर्मके उदय है ताका पर विषैं आत्मबुद्धि होना कार्य है सो
यह पर विषे आत्मबुद्धी है सो पर्यायबुद्धि है यह पर्यायबुद्धि भय भी उपजावे
है संका नाम भयका भी है ताके सात भेद है इसलोकका भय परलोकका भय
मरणका भय वेदनाका भय अनरक्षाका भय अगुप्तिभय अकस्मात भय

ऐसें ए भय होय तब जानिये याके मिथ्यात्व कर्मका उदय है सम्यग्दृष्टी भयें ए भय नाहे
य ताही इहां प्रश्न जो भयप्रकृतिका उदय तौ आठमा गुणस्थानतांई है ताके निमित्त
तें सम्यग्दृष्टीकै भय होय ही है भयका अभाव कैसैं ताका समाधान जो यद्यपि स
म्यक्दृष्टीकै चारित्रमोहके भेदरूप भयप्रकृतिके उदयतैं भय होय है तथापि ता
कूं निर्भय ही कहिये जातैं याकै कर्मके उदयका स्वभाव विनासीक माने है तातैं भ
य होतैं भी निर्भय ही कहिये भय होतैं ताका इलाज भाजना इत्यादि करे है तहां वर्तमा
नकी पीडा न सही जाय तातैं इलाज करे है यह निबलाईका दोष है ऐसें संदेह अ
र भयरहित सम्यग्दृष्टी होय ताकै निःशंकित अंग होय है १ बहुरि कांक्षा नाम भो
गनिकी अभिलाषका है तहां पूर्वे कीये भोगनिकी वांछा तथा तिनि भोगनिकी मु
ख्यक्रिया विषै वांछा तथा कर्म अर कर्मके फल विषै वांछा तथा मिथ्यादृष्टीनिके

अ०पा०
११

भोगनिकीप्राप्तिदेषितिनिकूंअपनेंमनमैंभलेजानैंनांअथवाइंद्रियनिकूंनरु
चेंऐसेविषयनिविषैउद्वेगहीनां।भोगाअभिलाषाकेचिह्नहैसोयहभोगाभिला
षमिथ्यात्वकर्मकेउदयतैंहोयहैसो।दूजाकेनहोयसोनिःकांक्षितअंगयुक्त
सम्यग्दृष्टीहोयहै।सम्यक्दृष्टीयद्यपिअनेकक्रियाव्रतादिकआचरणकरैहैता
काफलअनेककर्मबंधहैताकूंभीनाहीवांछैहैव्रतादिककूंस्वरूपकेसाधकजा
निआचरैहैकर्मकेफलकीवांछानांहीऐसेनिःकांक्षितअंगहै॥२॥वहुरिआप
विषेअपनेगुणकीमहंतताकीबुद्धिकरिआपकूंश्रेष्ठमांनिपरविषेहीनताकी
बुद्धिहोयताकूंविचिकित्साकहिये।सहजाकेनहोयसोनिर्विचिकित्साअंगयु
क्तसम्यग्दृष्टीहोयहैयाकेचिह्नऐसेजोकोईपुरुषपापकेउदयतैंदुःखीहोय ११
असाताकेउदयतैंग्लानियुक्तसरीरहोयताविषेग्लानिबुद्धिनकरैऐसीबुद्धि

नकरैमैसंपदावांनहौंसुंदरसरीरवानहूंयहदीनरांकमेरीवरावरिनांहीउल
टाऐसाविचारैजोप्राणीनिकेकर्मकेउदयतैंविचित्रअनेकअवस्थाहोयहै
मेरैकर्मकाउदयऐसाआवैतवमैंभीऐसाहोयजांऊंऐसेविचारतैनिर्विचि
कित्साअंगहोयहै॥३॥वहुरिअतत्वविषेतत्वकाश्रद्धानसोमूढदृष्टिहैऐसीमू
ढदृष्टिजाकेनहोयसोअमूढदृष्टियुक्तसम्यग्दृष्टीहैतहांमिथ्यादृष्टीनिकरि
टाहेतुकरिदृष्टांतकरिसाध्यापदार्थहैसोसम्यग्दृष्टीकूंप्रतीतनांहीउपजावै
हैवहुरिलौकिकरूढिअनेकप्रकारहैसोयहनिःसारहै।निःसारपुरुषनिकरि
आचरियेहै।अनिष्टफलकीदेनहारीहैतथानिःफलहैतथाजाकाषोटाफ
लहैतथाताकाकिछूहेतनांहीताकाकिछूअर्थनांहीजोकिछूलोकरूढिच
लियेसोलोकआदरलेताकाफेरतजनाकठिनहोजायइत्यादिलौकिकरूढिहैंव

MEMORIAL

करि अदेवविषै तौ देवबुधि अधर्मविषै धर्मबुधि अगुरुविषै गुरुबुधि इत्यादि दे
वादिक मूढ है सो यह सो कल्याणकारी नांही सदोष देवकूं तौ देव माननौ बहुरि
तिनिकै निमित्त हिंसादिक करि अधर्मकूं धर्म माननौ बहुरि खोटा आचार
वांन सल्यवान परिग्रहवांन सम्यक्त्वव्रतरहितकूं गुरु माननां इत्यादि मूढ दृ
ष्टी के चिह्न है। अव ईहां देव धर्म गुरु कैसे होय तिनिका स्वरूप जान्यां चाहिये सो
ही कहिये है तहां रागादिक दोष अरु ज्ञानावरणादिक कर्म सो ही आवरणरासे
रजाकै नांही सो देव ताकै केवलज्ञान केवलदर्शन अनंतसुख अनंतवीर्य यह अ
नंतचतुष्टय होय है सो सामान्यतैं तौ देव ऐसा एक है अर विशेष करि अरहं
त सिद्ध ऐसे दोय भेद है। बहुरि इनके नाम भेदकूं भेद करिये तब हजारां नाम है १२
बहुरि गुण भेद करि भेद करिये तब अनंत गुण है तहां परम औदारिक देहा

विषै तिष्टना घातकर्म रहित अनंतचतुष्टय सहित धर्मका उपदेश करनहारा ऐ
सा तौ अरहंत देव बहुरि पुद्गलमई देहसूं रहित लोकके शिखर तिष्ठ्या सम्यक्त्वा
दि अष्टगुणमंडित अष्टकर्मरहित ऐसा सिद्ध देव है। इनके अनेक नाम है। अरहं
त जिन सिद्ध परमात्मा देव महादेव शंकर विष्णु। ब्रह्मा हरि बुद्ध सर्वज्ञ वीतराग
परमात्मा इत्यादि अर्थसहित अनेक नाम है। ऐसा तौ देव जाननां। बहुरि गुरु
भी अर्थ थकी विचारिये तौ अरहंत देव ही है जातै मोक्षमार्गका उपदेश करन
हारा अरहंत ही है साक्षात मोक्षमार्ग यह ही वतावै है। बहुरि अरहंतकै पीछै छ
द्मस्थ ज्ञानके धारक तिनही का निर्ग्रंथ दिगंबर स्वरूप धारनेंवाले मुनि है ते गुरु
है जातै अरहंतका एकदेश शुद्धपणा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र का तिनिकै पाइये
है सो ई संवर निर्जरा मोक्षका कारण है तातै अरहंतकी ज्यों एकदेश निर्दोष है। ते मु

हेस

अ॰पा॰ निभीगुरु है। मोक्षमार्गके उपदेसकरनहारे है बहुरि ऐसा मुनिपणां सामान्य
१३ करि एकप्रकार है अर विशेषकरि सो ही तीनप्रकार है आचार्य उपाध्याय सा
धु ऐसें यह पदवी का विशेष है। तिनिकै मुनिपणांकी क्रिया एक ही है। बाह्य
लिंग भी समान है। पंचमहाव्रत पंचसमिति तीनगुप्ति ऐसा चारित्र भी समान
ही है। तप भी शक्तिसारू समान ही है। साम्यभाव भी समान है। मूलगुण उत्त
रगुण भी समान है परीसह उपसर्गनिका सहना भी समान है आहार आदि
की विधि भी समान है चर्या स्थान आसन आदि भी समान है। मोक्षमार्गका सा
धना सम्यक्ज्ञानचारित्र भी समान है। ध्याता ध्यान ध्येयपणां ज्ञाता ज्ञान ज्ञे
यपणा चारि आराधनाका आराधना क्रोधादिक कषायनिका जीतना इत्या १३
दि मुनिनिकी प्रवृत्ति है सो सर्व समान है। इहां विशेष यह है जो आचार्य है सो १

तो पंच आचार आचरै है अन्यकूं अंगीकार करावै है बहुरि अन्यकूं दोष लागै ता
का प्रायश्चित की विधि बतावै है धर्मोपदेस दीक्षा शिक्षा दे सो तो आचार्य होय है।
सो ऐसा गुरु वंदने योग्य है। बहुरि उपाध्याय है सो वादित्व। वाग्मित्व कवित्व ग
मकत्व ए च्यारि विद्या है तिनि मैं प्रवीण होय है इस विषै शास्त्रका अभ्यास प्रधान
कारण है आप शास्त्र पढे अन्यकूं पढावै ऐसा उपाध्याय गुरु वंदने योग्य है या
कै अन्य मुनिव्रत मूलगुण उत्तरगुणकी क्रिया आचार्य समान ही होय है बहु
रि साधु है सो रत्नत्रयात्मक मोक्षका मार्ग है ताकूं साधै सो साधु है याकै दीक्षा शिक्ष १
उपदेशादिक देनेंकी प्रधानता नांही अपने स्वरूपके साधनेंविषै ही तत्परता
होय है निर्ग्रंथ दिगंबर मुनिकी प्रवृत्ति जैसी जिनागममैं वर्णन है तैसी सर्व ही हो
य है ऐसा साधु गुरु वंदने योग्य है अन्यलिंगी भेषी व्रतादिरहित परिग्रहवान वि

ऋ०पा०
१४

षपकषायनिमैंआज्ञाकरिगुरुनामधरावैतेवंदनेयोग्यनांहीहै।इसपंचमकालमैं
ऐसीजैनमतमैंनीनयेहैतेस्वेतांवरहैयापनीयसंघनयाहैगोपुच्छपिछसंघनया
हैनिःपिच्छसंघनयाहै।द्राविडसंघहैसोएसवहीवंदनेयोग्यहैनांही।मूलसंघनग्
नदिगंवरअठाईसमूलगुणधारकमयूरपिछकमंडलदयाकाअरशौचका
उपकरणधारैंयथोक्तविधिअहारकरनैंवालेगुरुवंदनेयोग्यहैजातैंःतीर्थंकर
देवदिक्षाधारैहैसोऐसाहीरूपधारैहैअन्यभेषनांहीधारैहैयाहीकूंजिनदर्शनक
हिएहैं।वहुरिधर्मजाकूंकहिएजोजीवकूंसंसारकेदुषरूपनीचापदयातैं।मोक्ष
कासुखरूपऊंचापदमैंधारैऐसाधर्ममुनिश्रावककेभेदकरिदर्शनज्ञानचारित्रा
त्मकएकदेशसर्वदेशरूपनिश्चयव्यवहारकरिदोयप्रकारकह्याहैंताकामूल १४
सम्यग्दर्शनहै।याविनाधर्मकीउत्पतिनांहीहैऐसैंदेवगुरुधर्मअरलोकविषेय

यथार्थदृष्टीहोयमूढतानहोयसोअमूढदृष्टिअंगहै।४।वहुरिअपनेआत्माकीशा
क्तिकावधावनासोउपवृंहणअंगहैसोसम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रकाअपनापौरुष
करिवधावनांसोहीउपवृंहणहैयाकूंउपगूहननीकहियेहै।५।वहुरिधर्मतैंजोच्यु
तहोताहोयताकूंदृढकरनासोस्थितीकरणअंगहैसोजोआपकर्मकेउदयकेवश
तैंकदाचिश्रद्धानतैंतथाक्रियाचरणतैंछूटैतौआपकूंफेरिपौरुषकरिश्रद्धानचारि
त्रमैंदृढकरणांवहुरितैसैंहीअन्यधर्मात्माधर्मतैंच्युतहोयतौताकूंउपदेशादिकक
रिधर्मविषैंस्थापनांऐसैंस्थितिकरणअंगहोयहै।६।वहुरिअरहंतसिद्धतथातिनि
केविंवतथाचैत्यालयतथाचतुर्विधसंघतथाशास्त्रदानविषैदासपणांहोयजैसैंस्वा
मीकाभृत्यदासहोयतैसैंवात्सल्यअंगहैतहांधर्मकैस्थानकनिकोंउपसर्गादिकआ
वैतिनिकूंअपनीशक्तिसामर्थ्यमैंटैअपनीशक्तिकूंछिपावैनांहीयहधर्मतैंअतिप्र

नीति होतै होय है ७ बहुरि धर्म का उद्योत करणां ऐसें प्रभावना अंग हो है ८ ऐसैं ए आ
ठ अंग तहां अपने आत्मा का रत्नत्रय करि उद्योत करणां अर दांन पूजा विद्या अतिश
य चमत्कारादिक करि जिनधर्म का उद्योत करणां ऐसें प्रभावना अंग होय है ८ ऐ
से ए आठ अंग सम्यक्त के है जाकै ए आठ होय ताकै जानियै सम्यक्त है इहां प्रश्न जो
ए सम्यक्त के चिह्न कहे तैसे ही मिथ्यादृष्टी कै भी दीषै न व सम्यक्त मिथ्या का विभाग कै
से होय ताका समाधान जो जैसे सम्यक्त दृष्टी कै होय तैसे न होय है तौऊ अपरीक्षक
कूं समान दीषै तहां परीक्षा किये भेद जान्यां जाय है बहुरि परीक्षा विषै अपनां स्वानु
भव प्रधान है सर्वज्ञ के आगम मैं आत्मा का अनुभव होनां कह्या है तैसा आप कै
होय तब ताके होतें अपनी वचन काय की प्रवृत्ति भी तिस अनुसार होय है तिस प्रवृ
त्ति कै अनुसार अन्य की भी वचन काय की प्रवृत्ति पहचांनियै है ऐसी परीक्षा की

ये विभाग होय है बहुरि यह व्यवहार मार्ग है सो व्यवहारी छद्मस्थ जीवनि के अप
ने ज्ञान कै अनुसार प्रवृत्ति है यथार्थ सर्वज्ञ देव जानै है व्यवहारी कूं सर्वज्ञ देव
व्यवहार ही का आश्रय बताया है यह तौ अंतरंग सम्यक्त भावरूप सम्यक्त सो ही स
म्यग्दर्शन है ॥ छ ॥ बहुरि बाह्य दर्शन व्रत समिति गुप्तिरूप चारित्र अर तप सहित अठ
ईस मूलगुण सहित नग्न दिगंबर मुद्रा याकी मूर्ति है ताकूं दर्शन कहिए यह सम्यक्त
सहित दर्शन जिनमत है ऐसैं धर्म का मूल सम्यग्दर्शन जानियै सम्यक्त दर्शन र
हित है तिनिका वंदना पूजनां निषेध्या है सो भव्य जीवनि कूं यह अंगीकार करनें
योग्य है ॥ छ ॥ आगै अंतरंग सम्यग्दर्शन विनां बाह्य चारित्र नैं निर्वाण नांही ऐसैं क
है ॥ गाथा ॥ दंसणभट्ठा भट्ठा दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं ॥ सिझंति चरिय भट्ठा
दंसणभट्ठा ण सिझंति ॥ छ ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष दर्शन तैं भ्रष्ट हैं ते भ्रष्ट है जे दर्शन तैं

भ्रष्ट है तिनिकै निर्वाण नांही होय है॥ जातें यह प्रसिद्ध है जे चारित्रतैं भ्रष्ट है ते तौ सिद्धि
कूं प्राप्त होय हैं अर दर्शन भ्रष्ट हैं ते सिद्धिकूं प्राप्त नांही होय है॥ भावार्थ॥ जो जिनमत
की श्रद्धातें भ्रष्ट है तिनिकूं भ्रष्ट कहिये अर श्रद्धातें भ्रष्ट नांही हैं अर कदाचित् चारित्र
तैं भ्रष्ट कर्म के उदयतें भये तैं हैं तिनिकूं भ्रष्ट न कहिये जातें जो दर्शनतैं भ्रष्ट है ताकै
निर्वाण की प्राप्ति नांही होय है जो चारित्रतैं भ्रष्ट होय है अर श्रद्धा दृढ रहै हैं तिनिकै
तौ सीघ्र ही फेरि चारित्र का ग्रहण होय मोक्ष होय है। बहुरि जे दर्शन श्रद्धानतैं भ्रष्ट हो
य हैं तिनिकै फेरि चारित्र का ग्रहण कठिन होय है। तातैं निर्वाण की प्राप्ति दुर्लभ हो
य है जैसें वृक्ष का स्कंधादिक कटि जाय अर मूल बण्या रहै तौ स्कंधादिक शीघ्र ही
फेरि होय फल लागै अर मूल उपडैं तब स्कंधादिक कैसैं होय तैसैं धर्म का मूल दर्शन
जाननां॥ छ॥ आगे सम्यग्दर्शनतैं भ्रष्ट हैं अर शास्त्रनिकूं बहुत प्रकार जाणै है

तौऊ संसारमै भ्रष्ट हैं ऐसैं ज्ञानतैं भी याकूं आराधक न कहिये ऐसा कहै हैं॥
गाथा॥ संमत्तरयणभट्ठा जाणंता बहुविहाइं सत्थाइं॥ आराहणाविरहिया भ
मंती तत्थेव तत्थेव॥४॥ अर्थ॥ जे पुरुष सम्यक्त्वरूप रत्नत्रय करि भ्रष्ट हैं अर बहु
त प्रकार के शास्त्रनिकूं जाणैं है तौऊ ते आराधना करि रहित भये संते तिस संसा
र विषै ही भ्रष्ट है दोय बार कहने तैं बहुत भ्रमणं जनाया है॥ भावार्थ॥ जे जिन
मत की श्रद्धातैं भ्रष्ट है अर शब्द न्याय छंद अलंकार आदि अनेक प्रकार के शास्त्र
निकूं जाणै है तौऊ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपरूप आराधना तिनिकै नांही हो
य है यातैं कुमरण करि चतुर्गतिरूप संसार विषै ही भ्रष्ट भ्रमण करै है मोक्ष नांही
पावै है जातैं सम्यक्त्व बिना ज्ञानकूं आराधना नाम कहिये॥ छ॥ आगे कहै है तप करै
करै अर सम्यक्त्व करि रहित होय तौ तिनिकै स्वरूप का लाभ न होय॥ गाथा॥

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

संमत्तविरहियाणं सुट्ठुवि उग्गं तवं चरंताणं ॥ ण लहंति बोहिलाहं अवि वास
सहस्सकोडीहिं ॥५॥ अर्थ ॥ जे पुरुष सम्यक्त्व करि विरहित हैं ते सुष्टु कहिये भ
लै प्रकार उग्र तप कूं आचरते हैं तोऊ ते बोधि कहिए सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
रित्रमयी आपना स्वरूप ताका लाभ कूं नाहीं पावै है जो हजार कोडि वर्ष तां
ई तप करै तोऊ स्वरूप की प्राप्ति न होय इहां गाथा मैं णं ऐसा दोय जायगा है।
सो प्राकृत मैं अव्यय है याका अर्थ वाक्य का अलंकार है ॥ भावार्थ ॥ सम्यक्त्व वि
ना हजार कोडि वर्ष पर्यंत तप करै तोऊ मोक्षमार्ग की प्राप्ति नाहीं इहां हजार
कोडि कहने तैं एते ही वर्ष न जानने काल का बहुतपना जनाया है तप मनुष्य
पर्याय ही मैं होय है तातै मनुष्य का काल भी थोडा है तातैं तप कहने तैं वर्ष बहु
त ही कहिए ॥५॥ आगैं ऐसैं पूर्वोक्त प्रकार सम्यक्त्व विना चारित्र तप निःफल क

हे अब सम्यक्त्व सहित सर्व ही प्रवृत्ति सफल है ऐसैं कहै हैं ॥ गाथा ॥ सम्मत्तणाणदंसण
बलवीरियवड्ढमाण जे सव्वे ॥ कलिकलुसपावरहिया वरणाणी होंति अइरेण
॥६॥ अर्थ ॥ जो पुरुष सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन बल वीर्य इनि करि वर्द्धमान है अर कलु
षपाप कहिये इस पंचम काल के मलिन पाप करि रहित है ते सर्व ही थोडे ही का
ल मैं वरज्ञानी कहिये केवलज्ञानी होय है ॥ भावार्थ ॥ इस पंचम काल मैं जड वक्र जी
वनि के निमित्त करि यथार्थ मार्ग अपभ्रंस भया है तिसकी वासना तैं रहित भये जे
जीव यथार्थ जिनमार्ग की श्रद्धानरूप सम्यक्त्व सहित ज्ञान दर्शन अपना पराक्रम
बल नांही छिपाय अर अपनी वीर्य शक्ति करि वर्द्धमान भये संते प्रवर्त्तै हैं ते थोडे
ही काल मैं केवलज्ञानी होय मोक्ष कूं पावै है ॥६॥ आगैं कहे है जो सम्यक्त्वरूप जल
का प्रवाह आत्मा कैं कर्मरज न लागने दे है ॥ गाथा ॥ सम्मत्तसलिलपवहो णिच्च

अ॰पा॰ ९५ हियएपवहूएजस्सकम्मेववलुयवरएां वंधच्चियएाासएतस्स ॥७॥ अर्थ ॥ जा
पुरुषका हृदयविषैसम्यक्त्वरूपजलकाप्रवाह निरंतरवर्त्तै है तापुरुषकै कर्मसो
हीभयावालुरजकाआवरणसोनांहीलागैहै । वहुरिताकै पूर्वैलगाकर्मकाबं
धसोभीनासकूं प्राप्त होयहै ॥ भावार्थ ॥ सम्यक्त्वसहितपुरुषकै कर्मकेउदयतें भयेजे
रागादिकभावतिनिकास्वामीपणानांहीहै तातैंजलकीउपमाहै जैसेंजलकाप्रव १
हनिरंतरवहैतहांवालूरेतरजलागैनांहीतातैंसम्यक्त्ववांनजीवकर्मकेउद
यकूंभोगताभीकर्मतैंनांहीलिपैहै । अरवाह्यव्यवहारअपेक्षाऐसाभावार्थ
जाननांजाकेनिरंतरहृदयमेंसम्यक्त्वरूपजलकाप्रवाहवहैहेसोसम्यक्त्वव १
नपुरुषइसकलिकालसंवंधीवासनांजोकुदेवकुशास्त्रकुगुरुनिकेनम ९५
स्कारादिरूपअतीचाररूपरजभीनांहीलगावैहै अरताकैमिथ्यात्वसंवंधी

प्रकृतिनिका आगामी वंधभीनांहीहोयहै ॥७॥ आगेकहैहैजेदर्शनभ्रष्टहैं।
अरज्ञानचारित्रतैंभीभ्रष्टहैं तेविशेषकरिभ्रष्टहैतेआपतौभ्रष्टहैहीपरंतु।
अन्यकूंभ्रष्टकरैहै यह अनर्थकरैहै ॥ गाथा ॥ जेदंसणेसुभट्ठा ॥ णाणेभट्ठाच
रित्तभट्ठाय ॥ एदेभट्ठविभट्ठा । सेसंपिजणंविणासंति ॥८॥ अर्थ ॥ जेपुरुषदर्शन
विषैभ्रष्टहै । वहुरिज्ञानचारित्रतैंभ्रष्टहै । तेपुरुषभ्रष्टनिविषैभीविशेषभ्रष्टहै
तेकेईतौदर्शनसहितहै अरज्ञानचारित्रजिनिकेनांहीहि वहुरिकेईअंतरं
गदर्शनभ्रष्टहैतौऊज्ञानचारित्रनीकैंपालैहै ॥ अरजेदर्शनज्ञानचारित्रइ।
नितीननिहीतेंभ्रष्टहैं तेतौअत्यंतभ्रष्टहै तेआपतौभ्रष्टहैहीपरंतुविशेषक
हियेआपशिवायअन्यजानहै । तिनिकूंभीनष्टकरैहैभ्रष्टकरैहै ॥ भावार्थ ॥ इहां
सामान्यवचनहै तातैंऐसाभीआशयसूचैहै जोसत्यार्थश्रद्धानज्ञानचारि

अ॰पा॰
१८

ष्ट तें तौ दूरि ही रहौ जो आपनें मत की श्रद्धान ज्ञान आचरण तें भी भ्रष्ट हैं ते तौ निरर्ग
ल स्वेच्छाचारी है ते आप भ्रष्ट है जैसैं ही अन्य लोक कूं उपदेसादिक करि भ्रष्ट करै है
तथा तिनि की प्रवृत्ति तें स्वयमेव लोक भ्रष्ट होय है तातें ऐसे तीव्र कषाई निषिद्ध है
तिनि की संगति करनां भी उचित नांही ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो ऐसे भ्रष्ट पुरुष आप भ्र
ष्ट है ते धर्मात्मा पुरुषनि कूं दोष लगाय भ्रष्ट बतावै है ॥ गाथा ॥ जो कोवि धम्मसीलो
संजमतवणियमजोयगुणधारी ॥ तस्स य दोस कहंता भग्गा भग्गत्तणं दिंति ॥ ९ ॥ अ
र्थ ॥ जो कोई पुरुष धर्मशील है आपना स्वरूपरूप धर्म साधनें का जाका स्वभा
व है तथा संयम कहिये इंद्रिय मन का निग्रह षट्काय जीवनि की रक्षा अर तप क
हिये बाह्य अभ्यंतर भेद करि बारह प्रकार तप नियम कहिये आवश्यक आदि नि १८
त्य कर्म योग कहिये समाधि ध्यान तथा वर्षाकाल आदि त्रिकाल योग गुण कहिये

मूलगुण उत्तरगुण इनि का धारनेंवाला हैं ताकै केई मतमैं भ्रष्ट जीव दोषनि क १
आरोपण करि कहै है जो ए भ्रष्ट है दोषनि सहित है ते पापात्मा जीव आप भ्रष्ट है
तातें अपनां अभिमान पोषनें कूं अन्य धर्मात्मा पुरुषनि कूं भी भ्रष्टपणा दे है
॥ भावार्थ ॥ पापीनि का ऐसा ही स्वभाव होय है जो आप पापी है तैसैं ही धर्मात्मा मैं
दोष बताय कै आप समान कीया चाहै है ऐसे पापीनि की संगति न करनी ॥ छ ॥ आगैं
कहै हैं जो दर्शन भ्रष्ट है सो मूल भ्रष्ट है ताकै फल की प्राप्ति नांही ॥ गाथा ॥ जह मू
लम्मि विणट्ठे दुमस्स परिवार णत्थि परिवड्ढी ॥ तह जिण दंसण भट्ठा मूलवि
णट्ठा ण सिज्झंति ॥ १० ॥ अर्थ ॥ जैसैं वृक्ष का मूल विनष्ट होतें संतें ताकै परिवार क
हिये स्कंध शाखा पत्र पुष्प फल ता की वृद्धि न होय तैसैं जे जिन दर्शन तें भ्रष्ट है बा
ह्य तौ निर्ग्रंथलिंग नग्न दिगंबर यथाजातरूप मूलगुण का धारण मोरपांख की

अ०पा० पीछी अरु कमंडलु धारणा यथाविधि दोष टालि शुद्ध षड़ा भोजन करणा इत्यादि
२० शुद्ध भेष का धारण तथा भेष धारण न होय तो ताका श्रद्धा नहीं करणा अरु अंत
रंग जीवादि षट्‌ द्रव्य नव पदार्थ सप्त तत्व का यथार्थ श्रद्धान तथा भेद विज्ञान क
रि आत्मस्वरूप का अनुभवन ऐसा दर्शण मत तैं बाह्य है ते मूलविनष्ट है तिनिकै
सिद्धि नाहीं होय है मोक्षफल कूं नांहीं पावै है ॥ ७ ॥ आगैं कहै है जो जिनदर्शन है सो
ही मोक्षमार्ग है ॥ गाथा ॥ जह मूलं तो खंधो साहापरिवार बहुगुणो होई । तह जिणदं
सण मूलो णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जैसैं वृक्ष कै मूल तैं स्कंध होय है
कैसा स्कंध होय है साखा आदि परिवार बहुत है साखा आदि परिवार बहुत है सुगण जा
कै इहां गुण शब्द बहुत का वाचक है । तैसे ही मोक्षमार्ग का मूल जिनदर्शन गण २०
धर देवादिकनैं कह्या है ॥ भावार्थ ॥ इहां जिनदर्शन कहिये जो भगवान तीर्थंकर दे

न

व दर्शन ग्रहण कीया सो ही उपदेश्या सो ऐसा मूलसंघ है । अठाईस मूलगुण सहि
त कह्या है पंच महाव्रत पांच समिति । छह आवश्यक पांच इंद्रियनिका वसि करने
भूमि मैं सोवनां स्नान न करनां वस्त्र का त्याग दिगंबर रहना । केशलोंचन करना एक
वार भोजन करनां खड़ा भोजन करनां दंतधावन न करनां ए अठाईस मूलगु
ण है । बहुरि छियालीस दोष टालि आहार करनां सो एषणा समिति मैं आय ग
या ईर्यापथ सोधि चालणा सो ईर्या समिति मैं आय गया अर दया का उपकरण तै
मोर की पांख की पीछी अर शौच का उपकरण कमंडल का धारण ऐसा तौ बाह्य भे
ष है बहुरि अंतरंग जीवादिक षट्‌ द्रव्य पंचास्तिकाय सप्त तत्व नव पदार्थ नि
कूं यथोक्त जाति श्रद्धान करना अर भेद विज्ञान करि अपना आत्मस्वरूप
का अनुभव करना ऐसा दर्शन जो मत सो मूलसंघ का है । ऐसा जिनदर्शन

अ० पा० हैसोमोक्षमार्गकामूलहैमोक्षमार्गकीसर्वप्रवृत्तिसफलहोयहै। वहुरिजेइसतें
२१ भ्रष्टभयेहैसोइसपंचमाकालकेदोषतेंजेनाभासभयेहैं॥ श्वेतांवरद्राविड
यापनीयगोपुच्छिकनिःपिच्छऐसेंपांचसंघभयेहैं॥ तिनिनैंसूत्रसिद्धांतअपभ्रं
सकीयेहै। वाह्यभेषपलटिविगाड्याहैं॥ तेजिनमतकेमूलसंघतैंभ्रष्टहै। ति
निकैमोक्षमार्गकीप्राप्तिनाहीहै। मोक्षकीप्राप्तिमूलसंघकेश्रद्धानज्ञानआ
चरनहीतैंहै ऐसानियमजानना॥३॥ आगैंकहैहैजोयथार्थदर्शनतें
भ्रष्टहैअरदर्शनकेधारकनितैंआपविनयकरायाचाहैहै तेदुर्गतिपा
वैहै॥ गाथा॥ जेदंसणेसुभट्ठा॥ पाएपाडंतिदंसणधराणं॥ तेहोंतिलुल्लमू
या॥ वोहीपुणदुल्लहातेसिं॥१२॥ अर्थ॥ जेपुरुषदर्शनविषैभ्रष्टहैअरअ २१
न्यजेदर्शनकेधारकहैतिनिकूंआपनेंपगांनिपडावैहैनमस्कारकरावैहैते

परभवविषैलूलामूकाहोयहै अरतिनिकैवोधकहियेसम्यग्दर्शनज्ञानचा
रित्रकीप्राप्तिसोदुर्लभहोयहै॥ भावार्थ॥ जेदर्शनभ्रष्टहैतेमिथ्यादृष्टिहैअरद
र्शनकेधारकहैंतेसम्यग्दृष्टीहैसोमिथ्यादृष्टीहोयकरिअरसम्यग्दृष्टीनिकौ
नमस्कारचाहैहैतेतीव्रमिथ्यात्वकेउदयसहितहै तेपरभवविषैलूलामूका
होयहैभावार्थएकेंद्रियहोयहैतिनिकैपगनाहीवचननाहीतेपरमार्थतैं
लूलामूकाहेऐसैंएकेंद्रियथावरहोयनिगोदमैंवासकरैहैंतहांअनंत
कालरहैहैं। तिनिकैदर्शनचारित्रकीप्राप्तिदुर्लभहोयहैमिथ्यात्वकाफल
निगोदहीकह्याहै॥ इसपंचमकालमैंमिथ्यामतकेआचार्यवणिकलोक
तेविनयादिकपूजाचाहैहैतिनिकैजानियेहैत्रसरासिकाकालपूराहूव ।
थावरएकेंद्रियहोयनिगोदमैंवासकरैंगेऐसैंजान्याजायहै॥४॥ आगैंक

MEMORIAL

अ०पा०
२२

हैं है जो जे दर्शनभ्रष्ट हैं तिनिके लज्जादिकतैं भी पगां पडै है तौ भी तिनि सारीषे
ही हैं ॥ अथ ॥ जे षिपडै ते चेतसि । जाणंता लज्जागारवभयेण तेसिं पिणि अस्थि
बोही पावं अणुमोयमाणाणं ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष दर्शनसहित हैं ते हैं अर दर्श-
नभ्रष्ट हैं तिनिकूं मिथ्यादृष्टी जाणतें संतें भी तिनिकै पगां पडै है तिनिका लज्जा
भय गारव करि विनयादिक करै है । तिनिकै भी बोधि कहिए दर्शन ज्ञान चा-
रित्र ताकी प्राप्ति नाही है जातैं ते भी पाप जो मिथ्यात्व ताका अनुमोदना क-
रते हैं । करना करावना अनुमोदना करना समान कह्या है । इहां लज्जा
तो ऐसे जो हम काहूका विनय न करैंगे तौ लोक कहैंगे ए उद्धत हैं मानी हैं
तातैं हमकूं तौ सर्व ही का साधन करना । ऐसैं लज्जा करि दर्शनभ्रष्टका भी २२
विनयादिक करै बहुरि भय ऐसैं जो यह राजमान्य है तथा मंत्र विद्यादिक

कीसामर्थ्ययुक्त है याका विनय न करैंगे तौ किछु हमारै परि उपद्रव करैगा ऐसैं
ऐसैं भय करि विनय करै बहुरि गारव ऐसा जो गारव तीन प्रकार कह्या है रस
गारव ऋद्धिगारव सातगारव तहां रसगारव तौ ऐसा जो मिष्ट इष्ट पुष्ट भोजना-
दिक मिलवौ करै तब ताकरि प्रमादी रहै है बहुरि रिद्धिगारव ऐसा जो किछू
आदि तपके प्रभावकरि रिद्धीकी प्राप्ति होय ताका गौरव आय जाय ताकरि उद्धत प्र-
मादी रहै । बहुरि सातगारव ऐसा जो सरीर नीरोग होय कछू क्लेशका कार-
न न आवै तब सुखियापणा आय जाय ताकरि मग्न रहै इत्यादि गारव भाव म-
स्ताईतैं किछू भले बुरे का विचार न करै तब दर्शनभ्रष्टका भी विनय करने ला-
गि जाय इत्यादि निमित्ततैं दर्शनभ्रष्टका विनय करै तौ यामैं मिथ्यात्वकी अ-
नुमोदना आवै ताकूं भला जाणै तब आप भी ता समान भया तब ताकै बोधि

अ० पा० २३ काहेकी कहिये ऐसैं जाननां ॥ छ ॥ आगे कहै है जो दर्शन की मूर्त्ति ऐसी होय
है ॥ गाथा ॥ दुविहं पि गंथचायं तीसु वि जोएसु संजमो ठादि । णाणम्मि करणसु
द्धे उब्भसणे दंसणं होई ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ जहां बाह्य अभ्यंतर भेद करि दोय प्रकार का प
रिग्रह का त्याग होय ॥ अर मन वचन काय ऐसे तीनूं योगनि विषैं संयम ति
ष्टै ॥ बहुरि कृत कारित अनुमोदना ऐसी तीन करण जामैं शुद्ध ऐसा ज्ञान
होय बहुरि कृत कारित अनुमोदना आपका न लागै ऐसा निर्दोष पाणिपा
त्र आहार करै ऐसैं मूर्त्तिवंत दर्शन होय है ॥ भावार्थ ॥ इहां दर्शन नाम मत का है
तहां बाह्य भेष शुद्ध दीखै सो दर्शन सो ही ताके अंतरंग भाव कूं जनावै तहां बा
ह्य परिग्रह तौ धन धान्यादिक अर अंतरंग परिग्रह मिथ्यात्व कषाय जहां न २३
होय यथाजात दिगंबर मूर्त्ति होय ॥ बहुरि इंद्रीय मन का वसि करनां त्रस था

वर जीवनि की दया करनी ऐसा संयम मन वचन काय करि शुद्ध पालनां जहां है
य अर ज्ञान विषैं विकार का करनां करावनां अनुमोदनां ऐसी तीन करण नि
करि विकार न होय अर निर्दोष पाणिपात्र खडा रहि भोजन करनां ऐसैं दर्शन की
मूर्त्ति है सो जिनदेव का मत है सो ही वंदनें पूजनें योग्य है अन्य पाखंड भेष वंद
नें पूजनें योग्य नाहीं है ॥ छ ॥ आगें कहै है जो इस सम्यग्दर्शन तैं ही कल्याण अक
ल्याण का निश्चय होय है ॥ गाथा ॥ सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभाव उवलद्धी
उवलद्धपयत्थे पुण सेयासेयं वियाणेदि ॥ अर्थ ॥ सम्यक्त्व तैं तौ ज्ञान सम्य
क् होय है ॥ बहुरि सम्यक् ज्ञान तैं सर्व पदार्थनि की उपलब्धि कहिये प्राप्ति
था जाननां होय है ॥ बहुरि पदार्थनि की उपलब्धि होतैं श्रेय कहिये क
ल्याण अर अश्रेय कहिये अकल्याण इनि दोऊनि कूं जानिये ॥ भावार्थ ॥ स

म्यग्दर्शन ज्ञान विनां कूं मिथ्याज्ञान कह्या है तातें सम्यग्दर्शन भये हीं सम्यग्ज्ञा
न होय है। अर सम्यग्ज्ञानतें जीव आदि पदार्थनिका स्वरूप यथार्थ जानिये है। व
हुरि जब पदार्थनिका यथार्थ स्वरूप जानिये तब भला बुरा मार्ग जानिये है ऐसें
मार्ग के जानने में भी सम्यग्दर्शन ही प्रधान है॥१५॥ आगें कल्याण अकल्याण
कूं जानेकहा होय है सो कहै है॥ गाथा॥ सेयासेयविदण्हू। उद्धुददुस्सीलसीलवं
तो वि। सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहइ णिव्वाणं॥१६॥ अर्थ॥ कल्याण मार्ग अ
कल्याण मार्ग का जाणनेवाला पुरुष है सो उद्धुद दुसील कहिये उडाया है मिथ्या
स्वभाव ताका फल करि अभ्युदय पावै है तीर्थंकर आदि पद पावै है बहुरि अभ्यु
दय पाय पीछें निर्वाण कूं प्राप्ति होय है॥ भावार्थ॥ भला बुरा मार्ग जाणें तब अनादि २४
संसार तें लगाय मिथ्या भाव रूप प्रकृति है सो पलटि सम्यक् स्वभाव रूप प्रकृ

ति होय सि तिस प्रकृति तें विशिष्ट गुण बांधे तब अभ्युदय रूप पदई तीर्थंकर आ
दि की पाय करि निर्वाण पावै॥१६॥ आगें कहै है जो ऐसा सम्यक्त्व जिनवचन
तैं पाईए है तातें ते ही सर्व दुःख के नाश करण हारे है॥ गाथा॥ जिणवयणमोसहमि
मिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूयं॥ जरमरणवाहिहरणं खयकरणं
सव्वदुक्खाणं॥१७॥ अर्थ॥ यह जिनवचन है सो औषध है कैसा औषध है विषय
सुख सो इंद्रियनि कें विषयनि तैं मान्या सुख ताका विरेचन कहिये दूरि करन
हारा है बहुरि कैसा है अमृत भूत कहिये अमृत सारिषा है॥ याही तैं जरा मरण
रूप रोग ताका हरण हारा है॥ बहुरि सर्व दुःखनि का क्षय करनहारा है॥ भावा
र्थ॥ यह संसारी विषय सुख सेवै है तिस तें कर्म बंधै है तिस तें जन्म जरा मरण
रूप रोग करि पीडित है तहां जिनवचन रूप औषध ऐसा है जो विषय सुख

अ०पा० तेंअरुचिउपजायतिसकाविरेचनकरैहैजैसैंगरिष्टआहारतैंमलबंधैतव
२५ ज्वरआदिरोगउपजैतवताकेविरेचनकूंहरडैआदिऔषधहोयतैसैंहैसो
विषयनितैंवैराग्यहोयतवकर्मबंधनहोयतवजन्मजरामरणरोगनहोयत
वसंसारकादुःखकाअभावहोयऐसैजिनवचनकूंअमृतसारिषेजाणिग्र
हीकारकरनें ॥१७॥ आगैजिनवचनविषैदर्शनकालिंगभेदषकेप्रकारकु
ह्याहैसोकहैहै ॥गाथा॥ एगंजिणस्सरूवं बीयंउक्किट्ठसावयाणंतु। अवरि
ट्ठियाणतइयं चउत्थंपुणलिंगदंसणेणत्थि ॥१८॥ अर्थ॥ दर्शनविषैएकतोजि
नकास्वरूपहैजैसाजिनदेवलिंगधार्याहैसो ॥ बहुरिदूजाउत्कृष्टश्रावक
निकाहै। बहुरितीजाअवरस्थितकहियेजघन्यपदविषैस्थितऐसीआर्यि २५
कानिकाहै बहुरिचौथालिंगदर्शनविषैनाहीहै ॥भावार्थ॥ जिनमतविषैती

नहीलिंगकहिएनेषकत्पाणकतोयथाजातरूपजिनदेवधार्यासोहै। बहुरिदूजाउत्कृ
ष्टश्रावकग्यारमीप्रतिमाकाधारककाहै। बहुरितीजास्त्रीआर्यिकाहोयताकाहै। बहु
रिचौथाअन्यप्रकारकाभेषजिनमतविषैनांहीहै ॥ जेमांनैहैतेमूलसंघतेंबाह्य
है ॥१८॥ आगैऐसाबाह्यलिंगहोयताकेअंतरंगश्रद्धानऐसाहोयसोसम्यग्दृष्टी
है ॥गाथा॥ छहदव्वणवपयत्था पंचत्थीसत्ततच्चणिद्दिट्ठा॥ सद्दहइताणरूवं॥ सो
सद्दिट्ठीमुणेयव्वो ॥१९॥ अर्थ॥ छहद्रव्यनवपदार्थपंचास्तिकायसप्ततत्वएजिनव
चनविषैकह्याहैतिनिकास्वरूपकूंतोश्रद्धानकरैसोसम्यग्दृष्टीजाननां ॥भावार्थ
जीवपुद्गलधर्मअधर्मआकाशकालएतौछहद्रव्यहै बहुरिजीवअजीवआश्र
वबंधसंवरनिर्जरामोक्षपुण्यपापएनवपदार्थहै। छहद्रव्यकालबिनांपंचास्ति
कायहै पुण्यपापविनांनवपदार्थसाततत्वहै। इनिकासंक्षेपस्वरूपऐसाजे १

अ॰पा॰ २६

जीवतौचेतनस्वरूपहैसोदर्शनज्ञानमयीहै पुद्गलस्पर्शरसगंधवर्णगुणमयी
मूर्त्तीकहैया केपरमाणु अरस्कंधऐसैदोयभेदहै। बहुरिस्कंधकेभेददशहैसूक्ष्म
बंधसूक्ष्मस्थूल॥ संस्थानभेदतमछायाआतापउद्योतइत्यादिअनेकप्रकार
है। धर्मद्रव्यजीवपुद्गलकूं गमनसहकारीहै। अधर्मद्रव्यजीवपुद्गलकूंस्थानस
हकारीहै॥ आकाशद्रव्यअवगाहनागुणस्वरूपहैकालद्रव्यवर्त्तनानिमि
त्तहै। जीवअनंताहैपुद्गलतिनितैंअनंतगुणहैधर्मद्रव्यअधर्मद्रव्यआका
शद्रव्यएकएकहै। कालाणुअसंख्यातद्रव्यहै। पांचद्रव्यकैबहुप्रदेशीपणातै
पांचअस्तिकायहैकालद्रव्यबहुप्रदेशीनाहीतातैंअस्तिकायनहीइत्यादिइ
नकास्वरूपतत्त्वार्थसूत्रतैंजांनना॥ बहुरिएकतौजीवपदार्थअजीवपदार्थ २६
पांच एहतौछद्रव्यबहुरिजीवकेपुद्गलकर्मबंधयोग्यहोयसोआस्रवकर्मबं

धयोग्यहोयसोआस्रवकर्मबंधैसोबंधआस्रवरुकैसोसंवरकर्मबंधझडैसो
निर्जरासंपूर्णनासहोयसोमोक्षजीवकूंसोसुखकानिमित्तसोपुण्यदुःखकानि
मित्तसोपापऐसैंसप्ततत्त्वनवपदार्थइनिकाआगमकेअनुसारस्वरूपजा
णिश्रद्धानकरैसोसम्यग्दृष्टीहोयहै॥ ६॥ आगैंव्यवहारनिश्चयसम्यक्त्वकूंक
हैहै॥ गाथा॥ जीवादीसद्दहणं सम्मत्तंजिणवरेहिपण्णत्तं ववहाराणिच्छयदो
अप्पाणंहवइसम्मत्तं॥२०॥ अर्थ॥ जीवआदिकहैजेपदार्थतिनिकाश्रद्धानसो
तौव्यवहारतैंसम्यक्त्वजिनभगवाननैंकह्याहै॥ बहुरिनिश्चयतैंअपनाआ
त्माहीकाश्रद्धानसोसम्यक्त्वहैहै॥ भावार्थ॥ तत्त्वार्थकाश्रद्धानसोतौव्यवहारतै
सम्यक्त्वहैं। बहुरिअपनांआत्मस्वरूपकाअनुभवकरितिसकीश्रद्धाप्रती
तिरुचिआचरणसोनिश्चयतैंसम्यक्त्वहैसोयहसम्यक्त्वआत्मातैंजुदाहीव

डाक्टर भाऊदाजी इत्याख्य स्मारकम्
Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

अ०पा० वस्तुनाहीहै आत्माहीकापरिणामहै वहुरिपरिणामहैसोआत्माहीहै ऐसैं
२३ सम्यक्त्वअरआत्माएकहीवस्तुहैयहनिश्चयनयकाआशयजाननां ॥ ॐ ॥
आगेंकहेहैजोयहसम्यग्दर्शनहैसोसर्वगुणनिमेंसारहैताहिधारणकरो
॥ गाथा ॥ एवंजिणपण्णत्तं ॥ दंसणरयणंधरेहभावेण ॥ सारंगुणरयणत्तय
सोवाणंपढमंमोक्खस्स ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ जैसेंपूर्वोक्तप्रकारजिनेश्वरदेवनेंकह्या
हैदर्शनहैसोगुणनिविषैंअरदर्शनज्ञानचारित्रइनितीनरत्ननिविषै
सारहैउत्तमहैवहुरि मोक्षमंदिरकेचढनेकूंप्रथमपैडीहैसोआचा
र्यकहेहैहेभव्यजीवहोतुमयाकूंअंतरंगभावकरिधारणकरो ॥ वाह्य
क्रियादिककरिधारणातोपदार्थनांहीअंतरंगकीरुचिकरिधारणांमो २३
क्षकाकारणहोहै ॥ ॐ ॥ आगेंकहेहैजोश्रद्धानकरैताहीकैसम्यक्त्व हो

यहै ॥ ॐ ॥ जंसक्कइतंकीरइजंचणसक्केइतंचसद्दहणं ॥ केवलिजिणेहिंभ
णियंसद्दहमाणस्ससम्मत्तं ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ जोकरनेंकूंसमर्थहूजियेतौतौकी
जियेवहुरिजोकरनेंकूंसमर्थनहूजियेसोश्रद्धियेजातैंकेवलीभगवानश्र
द्धानकरनेंवालेकैसम्यक्त्वकह्याहै ॥ भावार्थ ॥ इहांआशयऐसाहैजोकोऊक
हैसम्यक्त्वभयेंपीछैंतौसर्वपरद्रव्यसंसारकूंहेयजाणियेहैसोजाकूंहेयजाणैं
ताकूंछोडैमुनिहोयचारित्रआचरैतवसम्यक्त्वभईजांणियेताकासमाधा
नरूपयहगाथाहै ॥ जोसर्वपरद्रव्यकूंहेयजाणिनिजस्वरूपकूंउपादेयजाणि
तिनांश्रद्धानकीयातवमिथ्याभावतौमिट्यापरंतुचारित्रमोहकर्मकाउदयप्रवा
लहोयजेतैंचारित्रअंगीकारकरनेंकीसामर्थ्यनैंहोयतेतैंजीतीसामर्थ्यहोयते
तातौकरैतिससिवायकाश्रद्धानकरैऐसैंश्रद्धानकरनेंवालाहीकैभगवानस

द०पा० सम्यक्त कह्याहै॥ छ॥ आगेंकहेहै जोऐसेंदर्शनज्ञानचारित्रविषेजेतिष्टैहैते वंदनें
२८ योग्यहै॥गाथा॥ दंसणणाणचरित्ते तवविणयेणिच्चकालसुपसच्छा। ए देदुवंदणी
या जेगुणवादीगणधराणं॥२३॥अर्थ॥ दंसणज्ञानचारित्रतथातपईं विनयइ
निविषेजे नलेप्रकारतिष्टैहैप्रसस्तहैसराहनेंयोग्यहैअथवानलेप्रकारस्व
स्थहैलीनहैवहुरिगणधरआचार्यहैतिनिकेगुणअवादकरनेंवालेहै तेवं
दनेयोग्यहैअन्यजेदर्शनादिकतेंभ्रष्टहैअरगुणवाननितेंमत्सरभावराषि
विनयरूपनप्रवर्त्तैहै तेवंदवेयोग्यनांहीहै॥ छ॥ आगेंकहैहैजोयथाजात
रूपकूं देषिमत्सरभावकारवंदनांकरैहैसोमिथ्यादृष्टीहै॥गाथा॥सहजुप्प ० श्रि ० २८
णंरूवं दठ्ठुंजोमण्णएणमच्छरिउ॥ सोसंजमपडिवण्णो मिच्छाइट्ठीहवइएसो॥
॥२४॥अर्थ॥जोसहजोत्पन्नयथाजातरूपकूंदेषिकरिनमांनेहैतिसकाविनय

सत्कारप्रीतिनाहीकरैहैअरमत्सरभावकरैहैसोसंयमप्रतीपन्नहै।दीक्षा
ग्रहणकरीहैतोउप्रत्यक्षमिथ्यादृष्टीहै।भावार्थ।जोयथाजातरूपकूंदेषिमत्स
रभावकरितिकाविनयनकरैहैतोजानियेयाकेंइसरूपकीश्रद्धारुचिनाहीजै
सें।श्रद्धारुचिविनातौमिथ्यादृष्टीहीहोय॥इहांआशयऐसोजोश्वेतांवरा
दिकभयेतेदिगंवररूपतैमत्सरभावराषेंअरतिसकाविनयनकरैतिनिका
निषेदहै॥ छ॥ आगैंयाहीकूंदृढकरैहै॥गाथा॥अमराण वंदियाणं रूवंदट्ठू
णसीलसहियाणं।जेगारवंकरैंतिसंमत्तविवज्जियाहोंति॥२५॥अर्थ॥देवनिके श्रि
रिवंदनेंयोग्यजेजिनेश्वरदेवकायथाजातरूपताकूंसीलसहितधारणक
रनेंवालेंनिकारूपदेषिकरिगर्वकरैहैविनयादिकनकरैहैतेसम्यक्तरहित
र्जितहै।भावार्थ।जातरूपकूंदेषिअणिमादिकऋद्धिकेधारीदेवभीपायांपडैंतो

कूं देखि जे मत्सरभाव करि न वंदै है तिनिकै सम्यक्त्व काहे का । ते सम्यक्त्व तैं रहित
ही है ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो असंयमी वंदिवे योग्य नांही है ॥ गाथा ॥ असंजदं ण वंदे
वच्छविहीणो वि सो ण वंदिज्जो । दोण्ण वि होंति समाणा एगो वि ण संजदो होदि
॥ २६ ॥ अर्थ ॥ आचार्य कहै है जो जे तपकरि सहित श्रमणपणा धारै है तिनिकूं व
हुरि तिनिके शीलकूं वहुरि तिनिके गुणकूं वहुरि तिनिके ब्रह्मचर्यकूं मैं सम्य
क्त्व सहित शुद्ध भाव करि वंदौ हौं । असंयमीकूं नाहि वंदिये वहुरि भाव संय
म न होय अर वाह्य वस्त्र रहित होय सो भी वंदिवे योग्य नाहीं जातैं ए दोऊ ही संय
म रहित समान है इनि मैं एक भी संयमी नांही ॥ भावार्थ ॥ जो गृहस्थ भेष धारया है तो
तौ असंयमी है ही वहुरि जो वाह्य नग्न रूप धारण कीया अंतरंग भाव संयम नं १ २९
ही है तो वह भी असंयमी है ना तै ए दोऊ असंयमी है तातैं दोऊ ही वंदिवे योग्य

नांही । इहां आशय ऐसा है जो ऐसे मति जानियो जो आचार्य यथाजात रूप
कूं दर्शन कहते आवे है सो केवल नग्न रूप ही यथाजात रूप होगा जातैं आचा
र्य तौ वाह्य अभ्यंतर भाव संयम विना वाह्य नग्न भये तौ किछू संयमी होय है नांही
ऐसैं जाननां ॥ छ ॥ इहां कोई पूछै जो वाह्य भेष शुद्ध होय आचार निर्दोष पालता
होय ताकै अभ्यंतर भाव मैं कपट होय ताकी निश्चय कैसे होय तथा सूक्ष्म भाव
केवली गम्य मिथ्यात्व होय ताका निश्चय कैसे होय । निश्चय विनां वंदनां की क
क हारीति । ताका समाधान ऐसा जो पट का जे तै निश्चय न होय तैं तैं आचार शुद्धि
देखि वंदै तामैं दोष नाहीं कपट का कोई कारण तैं निश्चय होय तव न वंदै । वहु
रि केवली गम्य मिथ्यात्व का व्यवहार मैं चरचा नांही छद्मस्थ के ज्ञान गम्य की चर
चा है जो अपने ज्ञान का विषय ही नांही ताका वाध निर्वाध करनें का व्यवहार नां

अ॰ पा॰ हीसर्वज्ञकीनीयहीआज्ञाहैव्यवहारीजीवकूंव्यवहारहीकाशरणाहै।अपनां
३० ग्यानगोचरअंतरंगबाह्यकीशुद्धतानिश्चयकरिवंदनापूजनाऐसेजाननां
॥२६॥ आगैंइसहीअर्थकूंदृढकरतेसंतेकहैहै॥गाथा॥णविदेहोवंदिज्जइ ण
वियकुलोणवियजाइसंजुत्तो।कोवंदमिगुणहीणो।णहुसवणोणेयसावओ
होई॥२७॥अर्थ-देहकूंनांहीवंदियेहै।बहुरिकुलकूंनांहीवंदियेहै।बहुरिजातिसंयु
क्तकूंनांहीवंदियेहै।जातैंगुणरहितहोयताकूंकोणवंदै गुणविनानतौमुनिनश्रा
वक।भावार्थ-लोकमैंभीऐसान्यायहै।जोगुणहीणहोयताकूंकोऊश्रेष्ठमानैनांही
देहरूपवानहोयतौकहाकुलबडाभयातौकहाजातिबडीभईतौकहा तातैंमोक्ष
मार्गमैंतौदर्शनज्ञानचारित्रगुणहै इनविनाजातिकुलरूपआदिकवंदनीकन ३०
नांही इनितैंमुनिश्रावकपणाआवैनांही मुनिश्रावकपणातौसम्यग्दर्शनज्ञान

चारित्रतैंहोयहै तातैं तेहीवंदिवेयोग्यहै जातिकुलरूपआदिवंदवेयोग्यनांही
॥२७॥ आगैंकहैहै जोतपआदिकरिसंयुक्तहैतिनिकूं वंदौंहौं॥गाथा॥वंदमितव
सामण्णा।सीलंचगुणंचबंभचेरंच।सिद्धिगमणंच तेसिं सम्मत्तेणसुद्धभावेण
॥२८॥अर्थ-आचार्यकहैहै जोजेतपकरिसहितश्रमणपणाधारैहैतिनिकूं बहु
रितिनिकेशीलकूं।बहुरितिनिकेगुणकूं बहुरितिनिकेब्रह्मचर्यकूंमैंसम्यक्त्व
सहितशुद्धभावकरिवंदौंहौं जातैंतिनिकैंतिनगुणनिकरिसम्यक्त्वसम्यक्त्व
सहितशुद्धभावकरिसिद्धिकहिएमोक्षताप्रतिगमनहोयहै॥भावार्थ-पहलैंक
ह्याथा जोदेहादिकवंदिवेयोग्यनांही गुणवंदिवेयोग्यहै॥अवइहांगुणसहि
तकूंवंदनाकरीहैं।तहांजेतपधारिग्रहस्थपणाछोडिमुनिभयेहैतिनिकूं त
थातिनिकेशीलगुणब्रह्मचर्यसम्यक्त्वसहितशुद्धभावकरिहोयतिनिकूं

अ०पा० वंदनां करी है। तहां सील शब्द करि तौ उत्तरगुण लेणा बहुरि गुण शब्द करि आ
३१ त्मस्वरूप विषै लीनपणा लेणा ॥ ३७ ॥ आगें कोई आशंका करै जो संयमी वंदनें
योग्य कह्या तौ समोसरणादि विभव विभूति सहित तीर्थंकर है ते वंदिवे योग्य
है कि नांही ताका समाधान कूं गाथा कहै है जो तीर्थंकर परमदेव है ते सम्य
क्त सहित तपके महात्म्य करि तीर्थंकर पदवी पावै है सो भी वंदिवे योग्य है ॥
गाथा। चउसट्ठिचमरसहिओ। चउतीसहि अइसएहिं संजुत्तो। अणवरबहु
सत्तहिओ कम्मक्खयकारणणिमित्तो॥ ३८॥ अर्थ। जो चउसठि चमरनिकरि स
हित है। बहुरि चउतीस अतिशयनिकरि सहित है। बहुरि निरंतर बहुत प्राणी
निका हित जाकरि होय है। बहुरि कर्मका क्षयका कारण है ऐसे तीर्थंकर प ३१
रमदेव है ते वंदिवे योग्य है। भावार्थ। इहां चउसठि चमर चउतीस अतिशय

सहित विशेषण करि तौ तीर्थंकरका प्रभुत्व जणाया है अर प्राणीनिका हित
करना अर कर्मक्षयका कारण विशेषणनि तैं परका उपकार करनहारा प
णा जनाया है ॥ ए दोऊ ही कारणनि तैं जगतमैं वंदनें पूजनें योग्य है। यातैं ऐसे
भ्रमण करनां यो तीर्थंकर कैसे पूज्य है ए तीर्थंकर सर्वज्ञ वीतराग है तिनिकै
समवसरण आदिक विभूति रचि इंद्रादिक भक्तजन महिमा करै है इनिकै
किछू प्रयोजन नांही है आप जैसा दिगंबर रूप है ताकूं धारै अंतरीक्ष तिष्टै है ऐसें
जानेनां ॥ ३८॥ आगें मोक्षका हेतै होय है सो कहै है। गाथा॥ णाणेण दंसणेण
य। तवेण चरियेण संजमगुणेण। चउहिं पि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे दि
ट्ठो॥ ३९॥ अर्थ। ज्ञानकरि दर्शनकरि तपकरि अर चारित्रकरि इनि च्यारिनिका
समाजोग होतैं जो संयमगुण होय ताकरि जिनसासन विषै मोक्ष होनां कह्या है

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

॥ ७ ॥ आगैं इनि ज्ञानआदिकै उत्तरोत्तर सारपणां कहै है ॥ गाथा ॥ णाणं णरस्स
सारं सारो विणरस्स होइ संमत्तं संमत्ताउ चरणं । चरणाउ होइ णिव्वाणं ॥ ३१ ॥ अ
र्थ ॥ प्रथम तौ या पुरुषकै ज्ञान सार है जातै ज्ञानतै सर्व हेय उपादेय जांन्यां जाय
है । वहुरि या पुरुषकै सम्यक्त निश्चय करि सार है सम्यक्त विना ज्ञान मिथ्या
नाम पावै है । वहुरि सम्यक्तते चारित्र होय है जातै सम्यक्त विनां चारित्र भी
मिथ्या ही है । वहुरि चारित्रतै निर्वाण होय है ॥ भावार्थ ॥ चारित्रतै निर्वाण होय है
अर चारित्र ज्ञानपूर्वक सत्यार्थ होय है अर ज्ञान सम्यक्तपूर्वक सत्यार्थ होय
है ऐसै विचार कीयें सम्यक्तकै सारपणां आया यातैं पहलै तौ सम्यक्त सार है
पीछैं ज्ञान चारित्र सार है पहलै ज्ञानतैं पदार्थनि कूं जानियै है यातैं पछै है ज्ञा ३२
न सार है तौऊ सम्यक्त विना ताका भी सारपणां नांही ऐसा जाननां ॥ ७ ॥ आ

गैं इस ही अर्थ कूं दृढ करै है ॥ गाथा ॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवेण चरएण सम्मस
हिएण । चोह्णं पि समाजोगे सिद्धा जीवा ण संदेहो ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ ज्ञान होतैं दर्शन होतैं
सम्यक्त सहित तप करि चारित्र करि इनि च्यारिनिका समायोग होतै जीव
सिद्धि भये हैं यामैं संदेह नांही है ॥ भावार्थ ॥ पूर्वै जे जीव सिद्ध भये है ते सम्यक्त दर्श
न ज्ञान चारित्र तप इनि च्यारिनिकै संयोगही तैं भये है यह जिनवचन है यामैं सं
देह नांही ॥ ७ ॥ आगैं कहै है जो कल्याण विषै यह सम्यग्दर्शन रत्न सर्वरत्न मैं अमो
लिक है जो देव दानवनि करि पूज्य है ॥ गाथा ॥ कल्लाणपरंपरिया लहंति जीवा
विसुद्धसम्मत्तं सम्मद्दंसणरयणं अग्घेदि सुरासुरे लोए ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ जीव है ते विशु
द्ध सम्यक्त है ताहि कल्याणकी परंपरा सहित पावै है तातैं सम्यग्दर्शन रत्न है सो इ
स सुर असुरनिकरि भर्या लोक विषै पूज्य है ॥ भावार्थ ॥ विशुद्ध कहियै पचीस मल

ल०पा० लदोषनिकरिरहित निरतिचारसम्यक्ततें कल्याणकी परंपरा कहिये ती
३३ र्थंकरपदई पावैहै सो यातें यह सम्यक्त रत्न सर्वलोक देव दानव मनुष्यनि
करि पूज्य होय है॥ तीर्थंकर प्रकृति के बंध के कारण सोलह भावना कही है ति
निमैं पहलें दर्शन कही प्रधानपणा है॥ ७॥ आगैं कहै है उत्तम गोत्र सहित मनुष्य
पणां कूं पाय सम्यक्त पाय मोक्ष पावै यह सम्यक्त का महात्म्य है॥ गाथा॥ लद्धू
णाय मणुयत्तं॥ सहियं तह उत्तमेण गोत्तेण॥ लद्धूणय संमत्तं॥ अक्खयसुक्खं
च मोक्खं च॥ ३४॥ अर्थ॥ उत्तम गोत्र सहित मनुष्यपणां प्रत्यक्ष पाय करि अर तहां
सम्यक्त पाय करि अविनाशी सुखस्वरूप केवलज्ञान पावै है॥ बहुरि तिस
सुखसहित मोक्ष पावै है॥ भावार्थ॥ यह सम्यक्त का महात्म्य है॥ ७॥ आगैं प्रश्न उप ३३
जै है जो सम्यक्त के प्रभाव तें मोक्ष पावै है तत्काल ही॥ मोक्ष होय है कि कि छू का

ल अवस्थान नी रहै है॥ ताका समाधान रूप गाथा कहै है॥ गाथा॥ विहरदि जा
व जिणिंदो॥ सहसट्ठसुलक्खणेहिं संजुत्तो॥ चउतीस अइसयजुदो॥ सा पडि
मा थावरा भणिया॥ ३५॥ अर्थ॥ केवलज्ञान भयें पीछें जिनेंद्र भगवान् जेतें इ
स लोक मैं आर्य खंड मैं विहार करै है तिनिकी तो प्रतिमा कहिए सरीर सहित
प्रतिबिंब तिसकूं स्थावर प्रतिमा ऐसा नाम कहिये कैसे है जिनेंद्र एक हजार
आठ लक्षणनि करि संयुक्त है॥ बहुरि कैसे है चौतीस अतिशयनि करि सं
युक्त है तहां श्रीवृक्ष कूं आदि लेय एक सो आठ तो लक्षण होय है॥ बहुरि ति
ल मसक कूं आदि लेय नव सैं व्यंजन होय है॥ बहुरि चौतीस अतिशय मैं दश तो जन्म तें
ही लीये उपजे हैं निस्वेदता निर्मलता श्वेत रुधिरता समचतुरस्र संस्थान वज्र
वृषभनाराच संहनन सुरूपता सुगंधता सुलक्षणता अतुल वीर्य हितमित व

अ०पा०
३४

चनंऐसैंदशवकुरियातिकर्मक्षयभयेंदशहोय॥शतयोजनसुर्भिक्षता॥आका
शगमन॥प्राणिवधकाअभाव॥कवलाहारकाअभाव॥उपसर्गकाअभाव॥चतुर्मुखत्व॥सर्वए
विद्याप्रभुत्व॥छायारहितत्व॥लोचननिस्पंदकेशनखवृद्धिरहितत्व॥ऐसैंदश
वकुरिदेवनिकरिभयेचोदहसकलार्द्धमागधीभाषा॥सर्वजीवमैत्रीभाव॥स
र्वऋतुफलपुष्पप्रादुर्भाव॥आदर्शसदृशीपृथ्वीहोय॥मंदसुगंधपवनचलै
सर्वलोककैंआनंदवर्तै॥भूमिकंटकादिरहितहोयदेवगंधोदकवृष्टिक
रैंविहारहोयतवपरकमलतलैंदेवसुवर्णमयीकमलरचै॥भूमिधान्यनिष्प
त्तिसहितहोय॥दिशाआकाशनिर्मलहोय॥देवनिकाआह्वाननशब्दहोय॥धर्म
चक्रआगैंचालैं॥अष्टमंगलद्रव्यहोय॥ऐसैंचोदहसवमिलिचोतीसभये॥व ३४
कुरिआठप्रातिहार्यहोयहैतिनिकेनाम॥अशोकवृक्ष॥पुष्पवृष्टि॥दिव्यध्व

नि॥चामर॥सिंहासन॥छत्र॥भामंडल॥दुंदुभिवाजित्र॥ऐसैंआठ॥ऐसेअतिश
यनिसहितअनंतज्ञानअनंतदर्शनअनंतसुखअनंतवीर्यसहिततीर्थंकरप
रमदेवजेतैंजीवनिकेसंबोधननिमित्तविहारकरतेविराजैंतेतैंस्थावरप्रति
माकहियेऐसैंस्थावरप्रतिमाकहनेतैंतीर्थंकरकेकेवलज्ञानभयेंपीछेंप
वस्थानजनायाहैं॥अरधातुपाषाणकीरचिस्थापियेहैसोयाकाव्यवहारहै॥
॥आगैंकर्मनाशकरिमोक्षप्राप्तहोयहैऐसैंकहैहै॥गाथा॥वारसविहतवजु
त्ता॥कम्मंखविऊणविहिवलेणस्स॥वोसट्टचत्तदेहाणिव्वाणमणुत्तरंपत्ता
॥३८॥अर्थ॥जोवारहप्रकारतपकरिसंयुक्तभयेसंतेविधिकेवलकरिअपनें
कर्मकूंक्षपायकरिव्युत्सर्गचितकहियेन्याराकरिछोड्याहैदेह॥ज्यांऐसैंभये
तेअनुत्तरकहियेजातैंपरैंअन्यअवस्थानाहीऐसीनिर्वाणअवस्थाकूंप्रा

प्त होय है। भावार्थ। जे तप करि केवलज्ञान उपजाय जेतैं विहार करै तेतैं अवस्था
न रहै पीछैं द्रव्य क्षेत्र काल भावकी सामग्रीरूप विधि केवल करि कर्म खिपाय कु
त्सर्ग करि देहकूं छोडि निर्वाणकूं प्राप्त होय है। इहां आशय ऐसा जो निर्वाण
कूं प्राप्त होय तब लोकके शिखर जाय तिष्ठै तहां गमन विषै एक समय लागै
तिस काल जंगम प्रतिमा कहिये। ऐसैं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र करि मोक्ष
की प्राप्ति होय है तहां सम्यग्दर्शन प्रधान है सो इस पाहुड मैं सम्यग्दर्शनका प्र
धानपणा का व्याख्यान कीया है। सवैया ३१। मोक्ष उपाय कह्यो जिनराज जु सम्य
कदर्शन ज्ञान चरित्रा। तामधि सम्यकदर्शन मुख्य भयें निज बोध फलै सु चरि
त्रा। जे नर आगम जानि सु मानि करै पहिचान यथावत मित्रा। घाति खिपाय
स केवल पाय अघाति हनैं लहि मोक्ष पवित्रा। २। दोहा। नमूं देव गुरु धर्मकूं

जिन आगमकूं मानि। जा परसाद लह्यो अमल। सम्यक दर्शन जानि ॥ इति
श्री दर्शनपाहुडकी वचनिका समाप्त ॥ १ ॥ ॥ अथ सूत्रपाहुड
की वचनिका लिखिये है ॥ दोहा ॥ वीर जिनेश्वरकूं नमूं। गौतम गणधर ला
र काल पंचमा आदि मैं। भये सूत्र करतार ॥ १ ॥ ऐसैं मंगल करि अर श्री कुं
द आचार्यकृत प्राकृत गाथाबंध सूत्रपाहुड है ताकी देशभाषामय वच
निका लिखिये है तहां प्रथम ही कुंदकुंद आचार्य सूत्रकी महिमा गर्भित सू
त्रका स्वरूप जणावै है ॥ गाथा ॥ अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथि
यं सम्मं। सुत्तत्थमग्गणत्थं सवणा साहंति परमत्थं ॥ १ ॥ अर्थ। जो गणधर देव
नि तैं सम्यक प्रकार पूर्वापर विरोध रहित गूंथ्या रच्या सो सूत्र है कैसा है।
सूत्र अरहंत देव घाति कर्मका नाश करि सर्वज्ञ भये तिनि करि भाष्या है अ

अ० पा० थ्रंजामैं।वकरिकैसाहैसूत्रका जोकिछूअर्थहैताकामार्गणाकहिएहेरण
३६ जाननांसोहैप्रयोजनजामैं।ऐसेसूत्रकरिश्रमणाकहिएमुनिहैतेपरमा
र्थकहिएउत्कृष्टअर्थप्रयोजनजोअविनाशीआनंदमयमोक्षताहिसा
धैहै।इहागाथामैसूत्रऐसाविशेषतोपदनकह्यातोऊविशेषणनिकी
सामर्थ्यतेलीयाहै।भावार्थ।जोअरहंतसर्वज्ञकरिभाषितहैअरगणधर
देवनिकरिअक्षररूपद्वादशांगमयीगूंथ्याहैअरसूत्रकेअर्थजाननेकाहीहै
अर्थप्रयोजनजामैंऐसासूत्रकरिमुनिपरमार्थजोमोक्षताहिसाधैहैअर
अन्यअक्षरयादृकणाहैजैमिनिकपिलसुगतआदिछद्मस्थनिकरिरचेक
ल्पितसूत्रहैतिनिकरिपरमार्थकीसिद्धिनांहीहै।ऐसाआशयजाननं ३६
॥१॥आगेंकहैहैजोऐसासूत्रकाअर्थआचार्यनिकीपरंपराकरिवर्त्तै

तिसकूंजाणिमोक्षमार्गकूंसाधैहैसोभव्यहै॥गाथा॥सुत्तम्मिजंसुदिट्ठं
आयरियपरंपरेणमग्गेणणाऊणदुविहसुत्तं।वट्टइसिवमग्गजोभव्वो
॥२॥अर्थ।जोसर्वज्ञभाषितसूत्रकूंशब्दथकीअरअर्थथकीजाणिअ
रजोमोक्षमार्गकरिदोयप्रकारसूत्रकूंशब्दथकीअरअर्थथकीजाणिअ
रजोमोक्षमार्गविषैप्रवर्त्तैहैसोभव्यजीवहैमोक्षपावनेयोग्यहै।भावार्थ।इ
हांकोईकहैअरहंतकाभाष्याअरगणधरकागूंथ्यासूत्रतौद्वादशांगरू
पहैतेतौअबारकालदीषैनांहीपरमार्थरूपमोक्षमार्गकैसैंसधैताका
समाधानकूंयहगाथाहैजोअरहंतभाषितगणधरगूंथितसूत्रमैं
जोउपदेशहैतिसिकूंआचार्यनिकीपरंपराकरिजानियेहैतिसकूंसब्दअ
रअर्थकरिजाणिजोमोक्षमार्गसाधैहैसोमोक्षप्राप्तहोनेयोग्यभव्यहै।२

MEMORIAL

ति
अ०पा० हां फेरि कोई पूछै आचार्यकी परंपरा कहा तहां और ग्रंथनि मैं आचार्यनि
३१ की परंपरा कही है सो ऐसै है ॥ श्री वर्द्धमान तीर्थंकर सर्वज्ञदेव पीछैं तीन
तौ केवलज्ञानी भये गौतम सुधर्म जंबू वहुरि तापीछै पांच श्रुतकेवली भये
तिनिकूं द्वादशांग सूत्रका ज्ञान भया ॥ विष्णु नंदिमित्र अपराजित गोवर्द्ध
न भद्रबाहु ॥ तिनि पीछैं ग्यारह अंग दश पूर्वनी के पाठी ग्यारह भये ॥ विशाख
प्रोष्ठिल क्षत्रिय जयसेन नागसेन सिद्धार्थ ॥ धृतिषेण विजय बुधिल गंगदे
वसेन ऐसैं ॥ तिन पीछै पांच ग्यारह अंगके धारक भये नक्षत्र जयपाल पां
डु ध्रुवसेन कंस ऐसैं ॥ वहुरि तिन पीछै एक अंगके धारक च्यारि ॥ सुभ
द्र यशोभद्र भद्रबाहु लोहाचार्य ॥ ऐसैं इनि पीछैं अंगके पूर्ण ज्ञानकी तो ३१
व्युछित्ति भई ॥ अर अंगका एकदेश अर्थके ज्ञानी आचार्य भये तिनिके केतेक

निके नाम ॥ अर्हद्बलि ॥ माघनंदि ॥ धरसेन ॥ पुष्पदंत भूतिबलि ॥ जिनचंद्र
कुंदकुंद ॥ उमास्वामि ॥ समंतभद्र शिवकोटि शिवायन पूज्यपाद वीरसेन
जिनसेन इत्यादि ॥ वहुरि तिनि पीछैं तिनिकी परिपाटीमैं आचार्य भये तिनि
तैं अर्थका व्युछेद न भया ऐसै दिगंवरनिके संप्रदायमैं प्ररूपणा यथार्थ है
वहुरि अन्य श्वेतांवरादिक वर्द्धमानस्वामीतैं परंपरा मिलावै है सो कल्पित है
जातैं भद्रबाहुस्वामी पीछैं केई के मुनि कालमैं भ्रष्ट भये ते अर्द्धफालक कहा
ये तिनिकी संप्रदायमैं श्वेतांवर भये तिनिमैं देवगुण नाम साधु तिनिकी संप्र
दायमैं भया है तानैं सूत्र रचे है सो तिनिमैं शिथलाचार पोषने कूं कल्पित कथा
तथा कल्पित आचरणकी कथनी करी है सो प्रमाणभूत नांही है पंचमकालमैं
जैनाभासनिकै शिथलाचारकी वाहुल्यता है सो युक्त है इस कालमैं साचा भे ७

अ०पा० क्षमार्गकी विरलता है ताते सिथ्याचारीनें कैसा चांमोक्षमार्ग कहां तैं होय
३८ ऐसैं जाननां। अब इहां किछू द्वादशांग सूत्र तथा अंगबाह्य सूत्र श्रुतकौ व
र्णीन लिखियेहैं। तहां तीर्थंकरांके मुखतैं उपजी जो सर्वभाषामय दिव्यधुनि
ताकूं सुनिकरि च्यारि ज्ञान सप्त ऋद्धि के धारक गणधरदेवनितैं अक्षरप
दमय सूत्ररचना करी तहां सूत्र दोय प्रकार है अंग अंगबाह्य तिनिके अपु
नरुक्त अक्षरनिकी संख्या बीस अंकनि प्रमाण है ते अंक एक घाटि इकट्ठा
ही प्रमाण है ते ऐसे ॥१८४४६७४४०७३७०९५५१६१५॥ एते अक्ष
र हैं तिनिके पद करिए तब एक मध्यम पदके अक्षर सोलासै चौतीस को
डि तीयासी लाष सात हजार आठसै अठ्यासी कहे है तिनिका भाग दीयेंए
कसौ बारह कोडि तियासी लाष अठावन हजार पांचसै इतनें पावें ये ते पद हैं ३८

ते तौ बारह अंगसूत्ररूपके पद हैं अर अवशेष बीस अंकनिमैं अक्षर रहे ते
अंगबाह्य श्रुत कहिये ते आठ कोडि एक लाष आठ हजार एकसौ पिचहत्त
र अक्षर हैं तिनि अक्षरनिमें चौदह प्रकीर्णक रूप सूत्र रचना है अर इनि द्वा
दशांग रूप सूत्ररचनाके नाम अर पद संख्या लिखिये है तहां प्रथम अंग
आचारांग है तामैं मुनिश्वरनिके आचारका निरूपण है ताके पद अठारह
हजार है। बहुरि दूसरा सूत्रकृतअंग है ता विषै ज्ञानका विनय आदिक अ
ध्याधर्मक्रियामैं स्वमत परमतकी क्रियाका विशेषका निरूपण है याके
पद छत्तीस हजार हैं। बहुरि तीसरा स्थानअंग है ता विषै पदार्थनिका एक
आदि स्थाननिका निरूपण है। जैसैं जीव सामान्यकरि एक प्रकार विशेष रि
करि दोय प्रकार तीन प्रकार इत्यादि ऐसैं स्थान कहे हैं। याके पद पैंतालीस

अ०पा० हजार है। बहुरि चौथा समवाय अंग है ता विषै द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपेक्षा जी
३९ व आदि पदार्थनि के समानता का वर्णन है याके पद एक लाख चौसठि हजा
न र है बहुरि पांचवां व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग है या विषै द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपे
क्षा जीव कै अस्ति नास्ति आदिक साठि हजार प्रश्न गणधर देव तीर्थंकर नि कै
कटि कीये तिनका वर्णन है याके पद दोय लाख अठाईस हजार है। बहु
रि छठा ज्ञातृधर्मकथा नामा अंग है या विषै तीर्थंकरनि के धर्म की कथा जी
वादिक पदार्थनि का स्वभाव का वर्णन तथा गणधर के प्रश्ननि का उत्तरनि का
वर्णन है याके पद पांच लाख छप्पन हजार है। बहुरि सातवां उपासकाध्य
यन नामा अंग है या विषै ग्यारै है प्रतिमा आदि श्रावक का आचार का वर्णन है ३९
याके पद ग्यारह लाख सत्तरि हजार है। बहुरि आठमां अंतकृतदशा नामा अं

ग है या विषै एक एक तीर्थंकर के वारे दश दश अंतकृत केवली भए तिनका
वर्णन है याके पद तेईस लाख अठाईस हजार है। बहुरि नौमा अनुत्तरोप
पादिकदशा नामा अंग है या विषै एक एक तीर्थंकर के वारे दश दश महामु
नि घोर उपसर्ग सहि अनुत्तर विमाननि मैं उपजे तिनिका वर्णन है याके
पद बाणवै लाख चवालीस हजार है। बहुरि दशवां प्रश्नव्याकरण नामा अं
ग है या विषै अतीत अनागत काल संबंधी शुभाशुभ का प्रश्न कोई करै
ता का उत्तर यथार्थ कहने का उपाय का वर्णन है तथा आक्षेपिणी विक्षेपणी
संवेजनी निर्वेजनी ए च्यारि कथा का भी अंग मैं वर्णन है याके पद तेराणवै
लाख सोलह हजार है। बहुरि ग्यारमां विपाकसूत्र नामा अंग है या विषै
या विषै कर्म का उदय का तीव्र मंद अनुभाग द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा

अ० पा० लीयें वर्णन है। याके पद एक कोडि चौरासी लाख है। असैं ग्यारह अंग है ति
४० निके पदनिकी संख्याका जोड दीयें च्यारि कोडि पंद्रै लाख दोय हजार पद
होय है। बहुरि बारमा दृष्टिवाद नामा अंग है ताविषै मिथ्यादर्शन संबंधी ती
नसै तरेसठ कुवाद है तिनिका वर्णन है याके पद एकसौ आठ कोडि अ
डसठि लाख छप्पन हजार पांच एते पद है। या बारमां अंगके पांच अधिका
र है। परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग पूर्वगत चूलिका असैं तहां परिकर्म
विषैं गणितीके करणसूत्र है ताके पांच भेद है तहां चंद्रप्रज्ञप्ति पहला तामैं
चंद्रमांका गमनादिक तथा परिवार ऋद्धि वृद्धि हानि ग्रहण आदिका व
र्णन है याके पद छत्तीस लाख पांच हजार है दूजा सूर्यप्रज्ञप्ति है यामैं सूर्य ४०
का ऋद्धि परिवार गमन आदिका वर्णन है याके पद पांच लाख छत्तीस ह

जार है। बहुरि तीजा जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति है यामैं जंबूद्वीप संबंधी मेरुगिरि क्षेत्र
कुलाचल आदिका वर्णन है याके पद तीन लाख पचीस हजार है। बहुरि चै
था द्वीपसमुद्रप्रज्ञप्ति तामैं द्वीपसागरका स्वरूप तथा तहां तिष्ठते ज्योति
षी व्यंतर भवनवासी देवनिके आवास तथा तहां तिष्ठते जिनमंदिरनिका
वर्णन है। याके पद बावन लाख छत्तीस हजार है। बहुरि पांचवां व्याख्याप्रज्ञ ती
प्ति है यामैं जीव अजीव पदार्थनिका प्रमाणका वर्णन है याके पद चौ
रासी लाख छत्तीस हजार है। असैं परिकर्मके पांच भेदनिके पद जोडें एक
कोडि इक्यासी लाख पांच हजार है। बहुरि बारमां अंगका दूजा भेद सूत्र ना
म है ताविषै मिथ्यादर्शन संबंधी तीनसै तरेसठि कुवाद है तिनिकी पूर्वपक्ष
लेकरि तिनिका जीव पदार्थ परि लगावनौ आदिक वर्णन है याके पद अ

अ०पा०
४१

ग्यासीलाषहै। बहुरिबारमांअंगकातीजाभेदप्रथमानुयोगहैयाविषैप्र
थमजीवकूंउपदेशयोग्यतीर्थकरआदितरेसठिसलाकापुरुषनिकावर्ण
नहैयाकेपदपांचहजारहै। बहुरिबारमांअंगकाचोथाभेदपूर्वगतहै॥
ताकेचोदहभेदहै। तहांप्रथमपूर्वउत्पादनामाताविषैजीवआदिवस्तु
निकेउत्पादव्ययध्रौव्यआदिअनेकधर्मनिकीअपेक्षाभेदवर्णनहैयाके
पदएककोडिहै। बहुरिदूजाअग्रायणीनामपूर्वहैयाविषैसातसैसुनय
अरदुर्नयकाषट्द्रव्यसप्ततत्वनवपदार्थकावर्णनहैयाकेछिनवैलाष
पदहै। बहुरितीजावीर्यानुवादनामापूर्वहैयाविषैद्रव्यनिकीशक्तिरूपवी
र्यकावर्णनहैयाकेपदसत्तरिलाषहै। बहुरिचोथाअस्तिनास्तिप्रवाद
नामापूर्वहै। याविषैजीवादिवस्तुकूंस्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावकीअ

क

पेक्षालेअस्तिनास्तिआदिअनेकधर्मनिविषैविधिनिषेधकरिसप्तभंगकरिकथं
चितविरोधमेटनेरूपमुख्यगोणकरिवर्णनहैयाकेपदसाठिलाषहै। बहुरिज्ञा
नप्रवादनामापांचवांपूर्वहैयामैज्ञानभेदनिकास्वरूपसंख्याविषयफलआ
दिकावर्णनहैयाकेपदएकघाटिकोडिहै। बहुरिछठासत्यप्रवादनामापूर्वहै
याविषैसत्यअसत्यआदिकवचननिकीअनेकप्रकारप्रवृत्तिहैताकावर्णनहै
याकेपदएककोडिछहहै। बहुरिसातमाआत्मप्रवादनामापूर्वहैयाविषैआ
त्माजोजीवपदार्थताकाकर्त्ताभोक्ताआदिअनेककर्मनिकानिश्चयव्यवहा
रनयअपेक्षावर्णनहैयाकेपदछवीसकोडिहै। बहुरिकर्मप्रवादनामाआ
ठवांपूर्वहैयाविषैज्ञानावर्णादिआठकर्मबंधसत्वउदयउदीरणआदिका
तथाक्रियारूपकर्मनिकावर्णनहैयाकेपदएककोडिअसीलाषपदहै। बहुरि

...HAU DAJI MEMORIAL

प्रत्याख्याननामा नवमा पूर्व है । यामैं पापका त्याग अनेक प्रकार करि वर्णन है
याके पद चौरासी लाष है । बहुरि दशमा विद्यानुवाद नामा पूर्व है यामैं सात सै क्षुद्र
विद्या अर पांच सै महाविद्या इनिका स्वरूप साधना मंत्रादिक अर सिद्ध भयें इनिक १
फलका वर्णन है । तथा अष्टांग निमित्त ज्ञानका वर्णन है याके पद एक कोडि द
श लाष है । बहुरि कल्याणवाद नामा ग्यारमा पूर्व है । यामैं तीर्थंकर चक्रवर्त्ति आ
दि गर्भका आदिक कल्याणकका उत्सव तथा तिसके कारण षोडश भावनादि तप
श्चरणादिक तथा चंद्रमा सूर्य आदिक के गमन विशेष आदिक का वर्णन है । या
के पद छव्वीस कोडि है । बहुरि प्राणवाद नामा बारमां पूर्व है । यामैं आठ प्रकार
वैद्यक भूतादिक व्याधि दूरि करनेंके मंत्रादिक तथा विष दूरि करनेके उपाय तथ १ ४२
स्वरोदय आदिका वर्णन है । याके तेरह कोडि पद है । बहुरि क्रियाविशाल नामा तेर

२

मा पूर्व है यामैं संगीत शास्त्र छंद अलंकारादिक तथा चौसठि कला गर्भाधानादि
क चौरासी क्रिया सम्यग्दर्शन आदि एक सौ आठ क्रिया देववंदनादिक पचीस क्रि
या नित्य नैमित्तिक क्रिया इत्या वर्णन है । याके पद नव कोडि है । चौदमां त्रिलो
क बिंदुसार नामा पूर्व है । या विषै तीन लोक का स्वरूप अर बीजगणित का स्वरूप
तथा मोक्ष का वा मोक्ष का कारणभूत क्रिया इत्यादिका वर्णन है याके पद बार
ह कोडि पचास लाष है ऐसैं चौदह पूर्व है इनिके सर्व पदनिका जोड पिच्याणवै को १
डि पचास लाष पांच है । बहुरि बारमां अंगका पांचमां भेद चूलिका है ताके पां
च भेद है तिनिके पद दोय कोडि गुणचास लाष वियासी हजार है । तहां जलगता
चूलिका मै जलका थंभन करनां जलमैं गमन करनां अग्निका थंभन अग्निमैं
प्रवेश अग्निका भक्षण करणा इत्यादि के कारणभूत मंत्र तंत्रादिक का प्ररूपण है या

ज्ञ०पा० ४३ केपददोयकोडिनवलाषनिवासीहजारदोयहैं। एतेएतेहीपदअन्यआरिचू
लिकाकेजाननें। वहुरिदूजीथलगताचूलिकाहैयाविषेमेरुपर्वतभूमिइ
त्यादिविषेप्रवेशकरनांशीघ्रगमनकरनांइत्यादिक्रियाकेकारणमंत्रतंत्रत
पश्चरणादिकाप्ररूपणहै। वहुरितीजीमायागताचूलिकाहैतामैंमायामईइंद्र
जालविक्रियाकेकारणभूतमंत्रतंत्रतपश्चरणादिकाप्ररूपणहै। वहुरिचौथी
रूपगतानामाचूलिकाहै यामैंसिंघहाथीघोडावैलहरिणइत्यादिअनेकप्रकार
रूपपलटिलेनांताकेकारणभूतमंत्रतंत्रतपश्चरणआदिकप्ररूपणहै। तथा
चित्रामकाष्ठलेपादिककालक्षणवर्णनतथाधातुरसरसायणकानिरूपणहै। व
हुरिपांचमीआकाशगताचूलिकाहै यामैंआकाशविषेगमनादिककेकारण ४३
भूतमंत्रतंत्रयंत्रादिककाप्ररूपणहै। ऐसेंवारमांअंगहैयाप्रकारतौवारहअं

गरूपसूत्रहै। वहुरिअंगवाह्यश्रुतकेचौदहप्रकीर्णकहैतिनिमैंप्रथमप्र
कीर्णकसामायिकहैताविषेनामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालभावभेदकरिछप्र
कारइत्यादिकसामायककाविशेषकरिवर्णनहैवहुरिदूजाचतुर्विंशतिस्त
वननामप्रकीर्णकहैताविषेचोईसतीर्थंकरनिकामहिमाकावर्णनहैव
हुरितीजावंदनांनामप्रकीर्णकहैताविषेचोईसतीर्थंकरनिकामहिमाका
वर्णनहैवहुरिचौथाप्रतिक्रमणनामप्रकीर्णकहै तामैंसप्तप्रकारकेप्रति
क्रमणकावर्णनहैं। वहुरिपांचमांवैनयिकनामप्रकीर्णकहै तामैंपंचप्रका
रकेविनयकाप्ररूपणहै। वहुरिछठाकृतिकर्मनामाप्रकीर्णकहैताविषे
अरहंतआदिककीवंदनाकीक्रियाकावर्णनहैं। वहुरिसातमांदशवैका
लिकनामाप्रकीर्णकहैताविषेमुनिकाआचारआहारकीशुद्धताआदिक

अ०पा०
६६

वर्णनहै। बहुरिइग्यारमाउत्तराध्ययननामाप्रकीर्णकहैताविषैपरीसहउप
सर्गकासहनेकाविधानवर्णनहै। बहुरिनवमाकल्पव्यवहारनामाप्रकीर्ण
कहै। तामेंमुनिनिकैयोग्यआचरणअरअयोग्यसेवनेकेप्रायश्चित्तति
निकावर्णनहै। बहुरिदशमाकल्पाकल्पनामप्रकीर्णकहैताविषैमुनिकूंय
हयोग्यहैयहअयोग्यहैऐसाद्रव्यक्षेत्रकालभावअपेक्षावर्णनहै बहुरिग्या
रमांमहाकल्पनामाप्रकीर्णकहैतामैजिनकल्पीमुनिनकेप्रतिमायोगत्रि
कालयोगकानिरूपणहै। तथास्थविरकल्पीमुनिनिकीप्रवृत्तिकावर्णनहै
बहुरिबारमांपुंडरीकनामप्रकीर्णहै ताविषैच्यारिप्रकारकेदेवनिविषैउ
पजनेंकेकारणनिकाप्ररूपणहै बहुरितेरमांमहापुंडरीकनामाप्रकीर्ण ६६
कहैताविषैइंद्रादिकबडीऋद्धिकेधारकदेवनिकेउपजनेंकेकारननिकाप्र

रूपणहै। बहुरिचौदमांनिषिद्धिकानामप्रकीर्णकहैताविषैअनेकप्रकारके
दोषकीशुद्धिजानिमित्तिप्रायश्चित्तनिकाप्ररूपणहैयहप्रायश्चित्तशास्त्रहै
याकानिसीतिकाऐसाभीनामहै ऐसैंअंगवाह्यश्रुतचौदहप्रकारकह्या। व
हुरिपूर्वनिकीउत्पत्तिपर्यायसमासज्ञानमैतैंलगायपूर्वज्ञानपर्यंतबीसभे
दकाविशेषकरिवर्णनहैसोश्रुतज्ञानकावर्णनगोमटसारग्रंथमेंविस्तार
करिहैतहांतैंजाननां। १०। आगैंकहैहैजोसूत्रविषैप्रवीनहैसोसंसारकानि
शकरैहै। गाथा। सुत्तम्मिजाणमाणो भव्वो भवणासणं च सो कुणदि। सूईज
हाअसुत्ताणासदिसुत्तेसहाणोवि। ३। अर्थ। जोपुरुषसूत्रविषैजाणमान
हैप्रवीणहैसोसंसारकाउपजनेंकानाशकरैहै बहुरिजैसैंलोहकीसूईहै
सोसूत्रकहियेडोरातिसविनाहोयतौनष्टहोजायअरडोरासहितहोयतौनष्ट

अ॰पा॰ नहोयग्रहदृष्टांतहै ॥ भावार्थ ॥ सूत्रकाज्ञाताहोयसोसंसारकानाशकरैहैजोसोई
६५ डोरासहितहोयतौदृष्टिगोचरहोयहैसोपावैनष्टहीयअरडोराविनाहोयतौ
दीखैनांहीनष्टहोयजायजैसेंजांननां ॥ ३ ॥ आगेंसूईकादृष्टांतकादार्ष्टांत
कहैहै ॥ गाथा ॥ पुरिसोपिजोससुत्तोणविणासइसोगओविसंसारे ॥ सच्चेयण
पच्चक्खंणासदितंसोअदिस्समाणोवि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जैसेंसूईसूत्रसहितनष्ट
नहोयतैसेंसोपुरुषभीसंसारमेंगतहोयरह्याहैअपनारूपआपकेदृष्टि
गोचरनांहीहैतोऊसूत्रसहितसूत्रकाज्ञाताहोयतौताकेआत्मासहितरू
पचैतन्यचमत्कारमयीस्वसंवेदनकरिप्रत्यक्षअनुभवमेंआवैहैयातेंगत
नांहीहैनष्टनभयाहैसोजिससंसारमेंगतहैतासंसारकानाशकरैहै ॥ भावा ६५
र्थ ॥ यद्यपिआत्माइंद्रियगोचरनांहीहैतोऊसूत्रकेज्ञाताकैस्वसंवेदनप्र

त्यक्षकरिअनुभवगोचरहैसोसूत्रकाज्ञातासंसारकानाशकरैहैआपप्रग
टहोयहैयातेंसूईकादृष्टांतयुक्तहै ॥ ४ ॥ आगेंसूत्रमेंअर्थकह्याहैसोकहैहै
॥ गाथा ॥ सुत्तत्थंजिणभणियंजीवाजीवादिबहुविहंअत्थं ॥ हेयंचतहाजोजाणइ हेया
इसोहुसद्दिट्ठी ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ सूत्रकाअर्थहैसोजिनसर्वज्ञदेवकरिकह्याहैबहु
रिसूत्रविषैअर्थहैसोजीवअजीवआदिबहुतप्रकारहै ॥ तथाहेयकहिएत्या
गनेंयोग्यपुद्गलादिकअरअहेयकहियेत्यागनेंयोग्यपनांहीऐसाआत्माऐसाहै
सोयाकूंजांणैसोप्रगटसम्यग्दृष्टीहै ॥ भावार्थ ॥ सर्वज्ञकेभाषेसूत्रविषैजीवादिकन
वपदार्थअरइनमेंहेयउपादेयऐसेंबहुतप्रकारकरिव्याख्यानहैताकूंजा
नैंसोश्रद्धानवानहोयसम्यग्दृष्टीहोयहै ॥ ५ ॥ आगेंकहैहैजोजिनभाषितसूत्र
हैसोव्यवहारपरमार्थरूपदोयप्रकारहैताकूंजाणियोगीश्वरसुखभावका

अ॰पा॰
९६

रिसुखकूं पावैहै ॥ गाथा ॥ जंसुत्तंजिणउत्तं ववहारोतहयजाणपरमत्थो । तंजा
णिऊणजोई । लहईसुहंखवइमलपुंजं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जोजिनभाषितसूत्रहैसोव्यव
हाररूपहैतथापरमार्थरूपहैताकूंयोगीश्वरव्यवहारपरमार्थकूंजाणिसुखकूं
पावैहै । वहुरिमलपुंजकहिद्रव्यकर्मभावकर्मनोकर्मताहिक्षेपैहै ॥ भावार्थ ॥
जिनसूत्रकूंव्यवहारपरमार्थरूपयथार्थजाणियोगीश्वरमुनिहैसोकर्मकाना
शकरिअविनाशीसुखरूपमोक्षकूंपावैहै । तहांपरमार्थकहियेनिश्चयअरव्य
वहारइनिकासंक्षेपस्वरूपऐसाजोजिनआगमकीव्याख्यानच्यारिअनुयोग
रूपशास्त्रनिमैदोयप्रकारसिद्धहै । एकआगमरूपदूजीअध्यात्मरूपतहांसामा
न्यविशेषकरिसर्वपदार्थनिकाप्ररूपणकरियेसोआगमहै । तहांअहेतुमतअ ९६
रहेतुमतऐसेभीदोयप्रकारहैतहांजोसर्वज्ञकीआज्ञाहीकरिकेवलप्रमा

णताकामानियेसोतौअहेतुमतहै । अरजहांप्रमाणनयनिकरिवस्तुकीनिर्वा
धसिद्धिजामैंकरिमानिएसोहेतुमतहै । ऐसैदोयप्रकारआगममैंनिश्चयव्यव
हारकरिव्याख्याऐसैंहैसोकिछूलिखियेहैं । तहांजबआगमरूपनिरूपणसर्व
पदार्थनिकाव्याख्यानपरिलगाईएतबतौवस्तुकास्वरूपसामान्यविशेषरूपअ
नंतधर्मस्वरूपहैग्यानगम्यहैं तिनिमैंसामान्यरूपतौनिश्चयनयकाविष
यहै । अरविशेषरूपजेतेहैतिनिकूंभेदरूपकरिन्यारेन्यारेकहैसोविवहा
रनयकाविषयहैअरविशेषरूपजेतेहैतिनिकूंभेदरूपकरिन्यारेन्यारेक
हैसोविवहारनयकाविषयहैताकूंद्रव्यपर्यायस्वरूपभीकहिये । तहांजिनव
स्तुकूंव्यवछितकरिसाधिएताकौद्रव्यक्षेत्रकालभावकरिजोकिछूसामान्य
विशेषरूपवस्तुकासर्वस्वहोयसोतौनिश्चयव्यवहारकरिकह्यातैसैंसधैहै । व

MEMORIAL

ऊरि तिस वस्तु के किछू अन्य वस्तु के संयोग रूप अवस्था होय तिसकूं तिस व
स्तु रूप कहनां सो भी व्यवहार है तिस वस्तु कै किछू अन्य वस्तु के संयोग रूप अ
वस्था होय तिसकूं उपचार ऐसा भी नाम कहिये याको उदाहरण ऐसा जो ऐसैं एक
विवक्षित घट नामा वस्तु परि लगाईए तब जिस घट का द्रव्य क्षेत्र काल भाव रू
प सामान्य विशेष रूप जेता सर्वस्व है तेता कह्या तैसै निश्चय व्यवहार करि क
हनां सो तौ निश्चय व्यवहार है अर घट कै किछु अन्य वस्तु का लेप करि तिस
घट कूं तिस नाम करि कहना तथा अन्य पटादिक विषै घट का आरोपण क
रि घट कहनां सो भी व्यवहार है तहां व्यवहार का दोय आश्रय है एक प्रयो
जन दूजा निमित्त तहां किछू प्रयोजन साधने कूं काहू वस्तु कूं घट कहनां सो तौ
प्रयोजनाश्रित बहुरि काहू अन्य वस्तु के निमित्त तैं घट मैं अवस्था भई ताकूं

घट रूप कहनां सो निमित्ताश्रित है ऐसैं विवक्षित सर्व जीव अजीवादिक वस्तु
नि परि लगावणां सो अध्यात्म है तहां जीव सामान्य कूं भी आत्मा कहिए है अ
र जो जीव अपनां सर्व जीवनि तैं भिन्न अनुभव करै ताकूं भी आत्मा करिए है
तहां अपना आपकूं सर्व तैं न्यारा अनुभव करि आपा परि निश्चय व्यवहार ल
गाईए तब ऐसैं जो आप अनादि अनंत अविनाशी सर्व अन्य द्रव्यनि तैं भिन्न
एक सामान्य विशेष रूप अनंत धर्मात्मक द्रव्यपर्यायात्मक जीव नामा शुद्ध वस्तु है सो
कैसा है शुद्ध दर्शन ज्ञानमयी चेतना स्वरूप असाधारण धर्म कूं लीये अनंत श
क्ति का धारक है तामैं सामान्य चेतना अनंत शक्ति का समूह सो तौ द्रव्य है बहु
रि अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्य ए तौ चेतना के विशेष है ते तौ गुण है अर अ
गुरुलघु गुण कै द्वारै षट्स्थानपतित हानि वृद्धि रूप परिणमता त्रिकालात्मक

अनंतपर्याय है। ऐसैं शुद्धजीवनामा वस्तु सर्वज्ञ देख्या जैसा आगममैं प्रसिद्ध
है सो तौ एक अभेदरूप शुद्धनिश्चयनैका विषयभूत जीव है इस दृष्टिकरि अ
नुभव कीजै तब ऐसा है अर अनंतधर्मविषै भेदरूप कोई एकधर्मकूं लेकरि क
हनां सो व्यवहार है। बहुरि आत्मवस्तुकै अनादिहीतैं पुद्गलकर्मका संयोग है
ताके निमित्ततैं रागद्वेषमोहरूप विकार होय है ताकूं विभावपरिणति कहिए।
तिसकरि फेरि आगामी कर्मका बंधन होय है ताकूं विभावपरिणतिकं हि। ऐसैं
अनादि निमित्तनैमित्तिक भावकरि चतुर्गतिरूप संसारका भ्रमणरूप प्रवृत्ति
होय है तहां जिस गतिकूं प्राप्ति होय तिसा ही जीवनाम कहावै तथा जैसा रागा-
दिकभाव होय तैसा नाम कहावै। बहुरि जब द्रव्यक्षेत्रकालभावका बाह्य अंतरंग सा ५८
मग्रीका निमित्तकरि अपना शुद्धस्वरूप शुद्धनिश्चयनयका विषयस्वरूप आ

पकूं जानि श्रद्धा करै अर कर्मसंयोगकूं अर तिसके निमित्ततैं अनेक भाव हो-
य है तिनिका यथार्थ स्वरूप जानैं तब भेदज्ञान होय तब परभावनितैं विरक्त
होय तब तिनिका मेटनेंका उपाय सर्वज्ञके आगमतैं यथार्थ समझि ताकूं अंगी
कार करै तब अपनें स्वभावमैं थिर होय अनंतचतुष्टय प्रगट होय सर्वकर्मका
क्षयकरि लोकके शिखर विराजै तब मुक्त भया कहावै ताकूं सिद्ध कहिये। ऐ
सै जेती संसारकी अवस्था अर यह मुक्त अवस्था ऐसैं भेदरूप आत्माकूं निरूपै
है सो भी सर्व व्यवहारनयका विषय है याकूं अध्यात्मशास्त्रमैं अभूतार्थ अस
त्यार्थ नाम कहकरि वर्णन कीया है जातैं शुद्ध आत्मामैं संयोगजनित अवस्था
होय सो तौ असत्यार्थ ही है किछु शुद्धवस्तुका तौ यह स्वभाव नांही तातैं अस
त्य ही है। बहुरि जो निमित्ततैं अवस्था भई तौ आत्माही का परिणाम है सो जो आ

अ०पा० त्मा का परिणाम है सो आत्मा ही है। तातैं कथंचित याकूं सत्य भी कहिए परंतु जे
४९ तै भेदज्ञान न होय तेतै ही यह दृष्टि है भेदज्ञान भयें जैसैं है तैसैं जानै है बहुरि
जे द्रव्यरूप पुद्गल कर्म है ते आत्मा तैं न्यारे है ही तिनितैं शरीरादिका संयोग है
सो आत्मा तैं प्रगट ही भिन्न है तिनिकूं आत्माके कहिये सो यह व्यवहार प्रसिद्ध
है ही याकूं असत्यार्थ कहिये उपचार कहिये इहां कर्मके संयोगजनित भाव है ते
सर्व निमित्ताश्रित व्यवहारका विषय है। अर उपदेश अपेक्षा याकूं प्रयोजना
श्रित भी कहिये। ऐसैं निश्चय व्यवहारका संक्षेप है। तहां सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
रित्रकूं मोक्षमार्ग कह्या तहां ऐसैं समझनां जो एतीनूं एक आत्मा ही के भाव है ऐ
सैं तिनिस्वरूप आत्मा ही का अनुभव होय सो तौ निश्चय मोक्षमार्ग है तामैं भी जेते ४९
अनुभव की साक्षात् पूर्णता न होय तेते एकदेशरूप होय ताकूं कथंचित्। सर्वदे

शरूप नाम करि कहिए सो तौ व्यवहार है अर एकदेश नाम करि कहिए सो निश्च
य है। बहुरि दर्शन ज्ञान चारित्र कूं भेदरूप कहि मोक्षमार्ग कहिए तथा इनिके
बाह्य परद्रव्य स्वरूप द्रव्य क्षेत्र काल भाव निमित्त है तिनि कूं दर्शन ज्ञान चारित्र
नाम करि कहिए सो व्यवहार है। देव शास्त्र गुरु की श्रद्धा कूं सम्यग्दर्शन कहिए
जीवादि तत्त्वनि की श्रद्धा कूं सम्यग्दर्शन कहिए शास्त्र के ज्ञान कूं ज्ञान कहिए जी
वादिक पदार्थनि के ज्ञान कूं ज्ञान कहिए इत्यादि तथा पंच महाव्रत पंच समिति
तीन गुप्ति रूप प्रवृत्ति कूं चारित्र कहिए तथा बारह प्रकार तप कूं तप कहिए ऐ
सैं भेदरूप तथा परद्रव्य के आलंबनरूप प्रवृत्ति है ते अध्यात्म शास्त्र अपेक्षा
व्यवहार नाम करि कहिए जातैं वस्तु का एकदेश कूं वस्तु कहनां सो भी व्यवहा
र अर परद्रव्य का आलंबनरूप प्रवृत्ति कूं तिस वस्तु नाम करि कहनां सो भी

अ०पा० ५० व्यवहारहैवहुरिअध्यात्मशास्त्रमेंऐसेंभीवर्णनहैजोवस्तुअनंतधर्मरूपहै
सोसामान्यविशेषकरितथाद्रव्यपर्यायकरिवर्णनकीजिएहैतथाद्रव्यमात्रक
हनातथापर्यायमात्रकहनांसोतौव्यवहारकाविषयहैवहुरिद्रव्यकानीतथा
पर्यायकानीनिषेधकरिवचनअगोचरकहनांसोनिश्चयनयकाविषयहै।वहु
रिद्रव्यरूपहैसोहीपर्यायरूपहैऐसैंदोयहीकूंप्रधानकरिकहनासोप्रमाणकावि
षयहैयाकाउदाहरणऐसाजैसैंजीवकूंचैतन्यस्वरूपनित्यएकअस्तिइत्यादिअ
भेदमात्रकहनांसोतौद्रव्यार्थिककाविषयऐसेंएकदोऊप्रकारकूंप्रधानक
रिकहनांप्रमाकाविषयइत्यादि।ऐसेंनिश्चयव्यवहारकासामान्यसंक्षेपस्वरू
पहैताकूंजाणिजैसैंआगमअध्यात्मशास्त्रनिमेंविशेषकरिवर्णनहोयताकू ५०
सूक्ष्मदृष्टिकरिजाननाजिनमतअनेकांतस्वरूपस्याद्वादहैअरअनेकनय।

निकेंआश्रयकथनीहै।तहांनयनिकेंआश्रयकथनीहै।तहांनयनिकेपर
स्परविरोधहै।ताकूंस्याद्वादमेटैहैताकाविरोधअविरोधकास्वरूपनीकै
जांननांसोयथार्थतौगुरुआम्नायहीतेंहोयहैपरंतुगुरुकानिमित्तकालमें
विरलाहोयगयाताते्ंअपनाज्ञानकावलचालैंजेतैंविशेषसमझवोहीकरि
णांकिछूलेसपायउद्धतनहोनांअवारकालमेंअल्पज्ञानीवहुतहैयातेंतिनितें
किछूअधिकअभ्यासकरितिनिमेंमहंतवणिउद्धतभयेमदआवैतवज्ञान
थकेतहोयजायविशेषसमझनेंकीअभिलाषानरहैतवविपर्ययहोययहात
काकहैतकअन्यकैविपर्ययऐसेंआपकेअपथकाप्रसंगआवैतातेंशास्त्र
कूंसमुझजाणिअल्पस्वरूपहीअपनांभावराषणांतातेंविशेषसमझनेकीअ
भिलाषारहैंज्ञानकीवृद्धिहोयहैअल्पज्ञानीनिमेंवेगिमहंतबुद्धिराषेपायाज्ञान

मीन ष्ट होय है ऐसैं जाननां ॥ निश्चय व्यवहार रूप आगम की कथनी समझि
करि ताका श्रद्धान करि यथाशक्ति आचरण करनां इस काल मैं गुरु संप्रदाय
विनां महंत न वणनां जिन आज्ञा न लोपणी आचार तौ शक्ति सारू करणा क
ह्या है अर श्रद्धान आज्ञा होय सो करणां कह्या है केई कहै है जो हम तौ परीक्षा
करि जिनमत कूं मानेंगे ते वृथा वकै है अल्प बुद्धी का ज्ञान परीक्षा करने लाय
क नांही ॥ आज्ञा कूं प्रधान राखि वणै जे तौ परीक्षा करनि मैं दोष नांही केवल प
रीक्षा ही कूं प्रधान राखने मैं जिनमत तैं च्युत होय जाय तौ वडा दोष आवै जिनि
कै आपने हित अहित परीक्षा ही है ते तौ ऐसैं जानूं अर जिन कूं अल्पज्ञानीनि
मैं महंत वणि आपने मांन लोभ वडाई विषय कषाय पोषनें होय तिनि की कथा ५२
नांही ते तौ आपने जैसें विषय कषाय सधैंगे जैसें करैंगे तिनि कूं मोक्षमार्ग का उ

पदेश लागै नांही विपर्यस्त कूं काहे का उपदेश ऐसैं जाननां ॥ ७ ॥ आगैं कहै है
जो सूत्र के अर्थ पद तैं भ्रष्ट है ता कूं मिथ्यादृष्टी जाननां ॥ गाथा ॥ सुत्तत्थपयविणट्ठो
मिच्छादिट्ठी हु सो मुणेयव्वो खेडे वि ण कायव्वं पाणिपत्तं सचेलस्स ॥ ७ ॥ अर्थ ॥
जो सूत्र का अर्थ अर पद है विनष्ट जा कै ऐसा है जो प्रगट मिथ्यादृष्टी है । याही तैं जो
सचेल है वस्त्र सहित है ता कूं खेडे वि कहिए हास्य कुतूहल मात्र भी पाणिपात्र क
हिए आहारदान सो न करनां ॥ भावार्थ ॥ सूत्र विषै मुनि का रूप नग्न दिगंबर क
ह्या है अर जो ऐसे सूत्र के अर्थ करि तथा अक्षर रूप पद जा कै विनष्ट है तथा आ
प जा करि विनष्ट है इस अर्थ पद कूं छोडि दीया है सो मुनि का रूप वस्त्र सहित क
हे है तथा आप वस्त्र धारि मुनि कहावै है सो जिन आज्ञा तैं भ्रष्ट भया प्रगट मिथ्यादृष्टी
है या तैं ऐसैं वस्त्र सहित कूं हास्य कुतूहल करि भी पाणिपात्र कहिए आहार

MEMORIAL

अ॰ पा॰ ५२ दाननकरणां ॥ तथा ऐसा भी अर्थ होय है जो ऐसे मिथ्यादृष्टी कूं पाणिपात्र आहा
र लेणा योग्य नांही ऐसा भेष हास्यकौतूहल करि भी धारणा योग्य नाही । जो वस्त्र
सहित रहणा अर पात्र मैं भोजन करणां ऐसैं क्रीडामात्र करि भी न करणा ॥ ८ ॥ आ
गैं कहै है जो जिनसूत्रतैं भ्रष्ट है सो हरिहरादिक तुल्य है तौऊ मोक्ष न पावै है ॥ गाथा ॥
हरिहरतुल्लो वि णरो सग्गं गच्छेइ एइ भवकोडी । तह वि ण पावइ सिद्धिं संसारत्थो
पुणो भणिदो ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ जो नर सूत्रके अर्थपदतैं भ्रष्ट है सो हरि कहिए नारायण
अर हर कहिए रुद्र इनि तुल्य भी होय अनेक ऋद्धि करि युक्त होय तौऊ सिद्धि क
हिए मोक्ष कूं प्राप्त न होय जो कदाचित दान पूजादिक करि पुण्य उपजाय स्वर्ग
जाय तौ तहां तैं चय करि कोड्यां भव ले इस संसार मैं रहै है ऐसैं जिनागम मैं कह्या ५२
है ॥ गाथा ॥ श्वेतांवरादिक ऐसे कहै है जो गृहस्थ आदि वस्त्र सहित है तिनि

कैं भी मोक्ष होय है ऐसैं सूत्र मैं कह्या है ताका इस गाथा मैं निषेध का आशा
य है जो हरिहरादिक बडी सामर्थ्य के धारक भी है तौऊ वस्त्र सहित तौ मोक्ष नांही पा
वै है श्वेतांवरां नैं सूत्र कल्पित वणाये है तिनि मैं यह लिखी है सो प्रमाणभूत नां
ही ते जिनसूत्र के अर्थपदतैं च्युत भये है ऐसैं जाननां ॥ ८ ॥ आगैं कहै है जो जे
जिनसूत्रतैं च्युत भये है ते स्वछंद भये प्रवर्तै है ते मिथ्यादृष्टी है ॥ गाथा ॥ उक्कि
ट्ठसीहचरियं बहुपरियम्मो य गुरुय भारो य । जो विहरइ सच्छंदं पावं गच्छेदि
होदि मिच्छत्तं ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ जो मुनि होय करि उत्कृष्ट सिंहवत् निर्भय भया आ
चरण करै है बहुरि बहुत परिकर्म कहिए तपश्चरणादि क्रिया विशेषनि करि
युक्त है बहुरि गुरु का भार कहिए बडा पदस्थरूप है संघनायक कहावै है अ
र जिनसूत्रतैं च्युत भया स्वछंद प्रवर्तै है तौ वह पाप ही कूं प्राप्त होय है । बहुरि

अ० पा० मिथ्यात्वकूं प्राप्त होय है॥ भावार्थ॥ जो धर्मकी नायकी लेकरि निर्ग्रंथ होय तप
५३ श्चरणादिक करि बडा कहाय अपनां संप्रदाय चलावै है जिनसूत्रतैं च्युत होय
स्वेछाचारी प्रवर्त्तै है सो पापी मिथ्यादृष्टी है ही ताका प्रसंग श्रेष्ठ नांही॥ आ
आगैं कहै है जो जिनसूत्रमैं ऐसा मोक्षमार्ग कह्या है॥ गाथा॥ णिच्चेलपाणिप लि
त्तं उवइट्ठं परमजिणवरिंदेहिं एक्को वि मोक्खमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे
॥१०॥ अर्थ॥ जो निश्चेलक कहिए वस्त्ररहित दिगंबर मुद्रास्वरूप अर पाणिपा
त्रक कहिए हाथही मैं पात्र ऐसें बडा रहि आहार करनां ऐसा एक अद्विती
य मोक्षमार्ग तीर्थंकर परमदेवनितै उपदेश्या है इस सिवाय अन्य रीति है ते
सर्व अमार्ग कहे हैं॥ भावार्थ॥ जे मृगचर्म वृक्षके वकल कपास पट्ट कूल रोम ५३
सुवा वनके तृणके वस्त्र इत्यादि राषि आपकूं मोक्षमार्गमानै है तथा इसक १

लमैं जे जिनसूत्रतैं च्युत भये है तिनिमैं अपनी इछातैं अनेक भेष चलाये हैं केई
स्वेत वस्त्र केई रक्त वस्त्र केई पीत वस्त्र केई टाटके वस्त्र केई घासके वस्त्र इत्या
दि राषै है तिनिकूं मोक्षमार्ग नांही जातैं जिनसूत्रमैं तो एक नग्न दिगंबर स्वरूप
पाणिपात्र भोजन करनां ऐसा मोक्षमार्ग कह्या है अन्य सर्व भेष मोक्षमार्ग नांही
जे मानै है ते मिथ्यादृष्टी हैं॥ १०॥ आगैं दिगंबर मोक्षमार्गकी प्रवृत्ति कहै है॥
गाथा॥ जो संजमेसु सहिओ आरंभपरिग्गहेसु विरओ वि सो होई वंदणीओ
ससुरासुरमाणुसे लोए॥११॥ अर्थ॥ जो दिगंबर मुद्राका धारक मुनि इंद्रियम
नका वसि करनां छह कायके जीवकी दया करनां ऐसें संयम करि तौ सहि
त होय बहुरि आरंभ कहिए गृहस्थके जेते आरंभ है तिनितै विरक्त होय ति
निमैं न प्रवर्त्तै तथा अपिराह कहि ब्रह्मचर्य आदिक रि युक्त होय सो इस दे

अ॰पा॰ ५४

वदाभवकरिसहितमनुष्यलोकविषैवंदनेयोग्यहै।अन्यभेषीपरिग्रहआ
रंभादिकरियुक्तपाषंडीवंदिवेयोग्यनांहीहै॥११॥आगेंफेरितिनिकीप्रवृत्ति
काविशेषकहेहै॥गाथा॥जेबावीसपरीसहसहंतिसत्तीसएहिंसंजुत्ता।तेहों
तिवंदणीया।कम्मक्खयणिज्जरासाहू॥१२॥अर्थ॥जेसाधुमुनिअपनीश
क्तिकेसैकडांनिकरियुक्तभयेसंतेक्षुधातृषादिकबाईसपरीसहनिकूंस
हैहै।तेसाधुवंदनेयोग्यहैकैसेहैंतेकर्मनिकाक्षयरूपतिनिकीनिर्जराता
विषैप्रवीणहै॥भावार्थ॥जेवडीशक्तिकेधारकसाधुहैतेपरीसहनिकूंसहे
हैंपरीसहआयेंअपनेंपदतेंच्युतनेंहोयहैतिनिकैकर्मनिकीनिर्जराहो
यहैतेवंदनेयोग्यहै॥१२॥आगेंकहैहैंजोदिगंबरमुद्रासिवायकोईवस्त्रधा ५४
रंसम्यग्दर्शनज्ञानकरियुक्तहोयतेइछाकारकरनेयोग्यहै॥गाथा॥अव

सेसाजेलिंगीदंसणणाणेणसंमसंयुत्ता।चेलेणयपरिगहिया।तेभणिया
इछाणिज्जोय॥१३॥अर्थ॥दिगंबरमुद्राशिवायअवशेषलिंगीहैंभेषकरिसं
युक्तहैंअरसम्यक्त्वसहितदर्शनज्ञानकरिसंयुक्तहैंअरवस्त्रकरिपरिग्र
हीतहैवस्त्रधारेहैं।तेइछाकारकरनेयोग्यकहेहैं॥भावार्थ॥जेसम्यग्दर्शन
करिसंयुक्तहैंअरउत्कृष्टश्रावककाभेषधारेहैंएकवस्त्रमात्रपरिग्रहरा
खैहैंसोइछाकारकरनेयोग्यहैमैंतुमकूंइछोंहौंऐसाइछामिशब्दकाअर्थ
हैऐसैइछाकारकरनाजिनसूत्रमेंकह्याहै॥१३॥आगेंइछाकारयोग्यश्राव
ककास्वरूपकहैहै॥गाथा॥इछायारमहत्थं।सुत्तट्ठिओजोहुछंडएकम्मं।ठा
णेट्ठियसम्मत्तं।परलोयसुहंकरोहोइ॥१४॥अर्थ॥जोपुरुषजिनसूत्रविषैतिष्ठ
संताइछाकारशब्दकामहानप्रधानअर्थहैताहिजानैहैवहुरिस्थानजोश्रा

वककेजेदरूपप्रतिमातिनिमैंतिष्ठासम्यक्तसहितवर्त्तताआरंभआदिककर्म
निकूंछोडेहेसोपरलोकविषेंसुषकरनेवालाहोयहै॥भावार्थ॥उत्कृष्टश्राव
ककूंइछाकारकरियेहेसोइछाकारकाजोप्रधानअर्थहेताकूंजानैहेसू
त्रअनुसारसम्यक्तसहितआरंभादिकछोडिउत्कृष्टश्रावकहोयहेसो
लोकविषेस्वर्गकासुखपावैहे॥छ॥आगेकहेहैजोइछाकारकाप्रधानअ
र्थकूंनांहीजांणेहेंअरअन्यधर्मकाआचरणकरैहेंसोसिद्धिकूंनाहीपावैहे
॥गाथा॥अहपुणअप्पाणिछदिधम्माइकरेइनिरवसेसाइंतहविणपावदि
सिद्धिसंसारत्थोपुणोभणिदो॥१५॥अर्थ॥अथपुनः॥जैसापहलेकाअर्थजो
पहलीगाथामेंकह्याथाजोइछाकारकाप्रधानअर्थजानेंसोआचरणक
रिस्वर्गसुखपावैहेसोअवफेरिकहेहैजोइछाकारकाप्रधानअर्थआत्म 1

काचाहनांहेअपनेंस्वरूपविषेरुचिकरनाहेसोयाकूंजोनांहीइष्टकरैहेअर
अन्यधर्मकेसमस्तआचरणकरैहेतोऊसिद्धिकहिएमोक्षकूंनांहींपावैहे।
वऊरिताकूंसंसारविषेहीतिष्टनैवालाकह्याहें॥भावार्थ॥इछाकारकाप्रध 1
नअर्थआत्माकाचाहनाहेसोजाकेअपनेंस्वरूपकीरुचिरूपसम्यक्तना
हीताकैसर्वमुनिश्रावककेआचरणरूपप्रवृत्तिमोक्षकाकारणनांही॥छ॥
आगैंइसहीअर्थकूंदृढकरिउपदेशकरैहै॥गाथा॥एएणकारणेणयत
तंअप्पाणसद्दहेहतिविहेणजेणयलहेहमोक्खंतंजाणिज्जहपयत्तेण॥१६॥
॥अर्थ॥पूर्वैकह्याजोआत्माकूंइष्टनकरैहैताकेसिद्धिनांहीहैतिसहीका
रणकरिहेभव्यजीवहौतुमतिसआत्माकूंश्रद्धौताकाश्रद्धानकरौमन
वचकायकरिस्वरूपविषेरुचिकरौतिसकारणकरिमोक्षकूंपावौयद्यपि

जी४ सुमतिजी५ पदमप्रभ
जी६ सुपारसजी७ चंद्र
प्रभजी८ पहोपदंतजी९
सीतलजी१० श्रीयांसजी
११ वासपुज्यजी१२ विमल
जी१३ अनंतजी१४ धरम
नाथजी१५ सांतिनाथजी
१६ कुंथनाथजी१७ अर
हनाथजी१८ मलिनाथ
जी१९ मनसुब्रतजी२०
नमनाथजी२१ श्रीनेमना

थजी२२ श्रीपारसनाथज
२३ श्रीमहावीरवरधमान
जी२४ अथ केणहारचो
इसीलिष्यते॥ महापमजी
१ सुरदेवजी२ सुपारसज
३ सुयंप्रभजी४ सरवातम
भूतजी५ देवपुत्रजी६ कु
लपुत्रजी७ उदंकोजी८
प्रोसटलजी९ जैकीरति
जी१० मनसुव्रतजी॥११ अ
रनाथजी१२ अपाकजी

अ०पा० जिसकरि मोक्ष पाईए तिसकूं प्रयत्न करि हिए सर्वप्रकार उद्यम करिजो एं॥ गा
५६ थार्थ॥ जिसकरि मोक्ष पाईए तिसका जाननां श्रद्धान करनां यह प्रधान उपदेश
है अन्य आडंबर करि कहा प्रयोजन ऐसें जाननां॥१६॥ आगैं जे जिनसूत्र
के जाननें वाले मुनि है तिनिका स्वरूप फेरि दृढ करनेंकूं कहै है॥ गाथा॥ वाल
ग्गकोडिमित्तं परिगहगहणं ण होइ साहूणं भुंजेइ पाणिपत्ते दिण्णण्णं इ
कट्ठाणम्मि॥१७॥ अर्थ॥ वालके अग्रभागकी कोटि कहिए अणी तिसमात्र
भी परीग्रहका ग्रहण साधुनिकै नहीं होय है॥ इहां आशंका है जो परिग्रह किछू
भी नांही तौ आहार कैसे करै है तहां कहै है जो आहार ऐसैं करै है॥ पाणिपा
त्र कहिए करपात्र अपनें हाथहीमें भोजन करै है सो भी अन्य का दीया प्रासु
क अन्नमात्र लेहैं सो भी एकस्थान लेहै॥ वारवार नलेहै अर अन्य स्थानमैं न ५६

लेहै॥ भावार्थ॥ जो मुनि आहार ही परका दीया प्रासुक योग्य अन्नमात्र निर्दोष ए
कवार दिनमैं अपनें हाथ करि लेहै तौ अन्य परिग्रहका है कूं दोष दिषावै है॥
आगैं कोई कहै है अल्प परिग्रह ग्रहण करै तामैं दोष कहा ता कूं दोष दिषावै है
॥गाथा॥ जहजायरूवसरिसो तिलतुसमित्तं ण गहदि हत्थेसु जइ लेइ अप्पवहु
अं तत्तो पुण जाइ णिग्गोदं॥१८॥ अर्थ॥ मुनि है सो यथाजातरूप सारिषा है जै
सा जन्म्या बालक नग्न होय तैसा नग्न दिगंबर मुद्राका धारक है सो अ
पनें हाथनि विषै तिलके तुसमात्र भी किछू ग्रहण नांही करै है॥ वहुरि जो
किछू अल्प वहुत लेग्रहण करै तौ तिसतै निगोद जाय॥ भावार्थ॥ मुनि यथा
जातरूप दिगंबर निर्ग्रंथ कहे है सो ऐसे होय करि भी किछू परिग्रह राषै तौ
जानिये इनिकै जिनसूत्रकी श्रद्धा नांही मिथ्यादृष्टी है यातैं मिथ्यात्वका फ

MEMORIAL

अ॰ पा॰ जनिगोदहीहैकहा किछूतपश्चरणादिककरै तौताकरि शुभकर्मबांधि
५१ स्वर्गादिकपावैतौभीफेरिएकेंद्रियहोयसंसारहीमैंभ्रमैहै॥ इहांप्रश्न जोमु
निकेसरीरहै॥ आहारकरैहैकमंडलपीछीपुस्तकराषैहैइहांतिलकेतुस
मात्रभीराषनानकह्यासोकैसा॥ ताकासमाधान॥ जोमिथ्यात्वसहितराग
भावसंकल्परूपअपनाविषयकषायपोषनैकूंराषैताकूंपरिग्रहकहि
येहैतिसनिमित्तकिछूअल्पवस्तुराषनानिषेध्याहैवहुरिकेवलसंजम
केनिमत्तकातौसर्वथानिषेधनाहीं॥ शरीरहैसोतौआयुपर्यंतछोड्यांछूटै
नांहीयाकातौममत्वहीछूटैहै वहुरिजेतैशरीररहैतेतैआहारनकरैतौसा
मर्थहीनहोयतवसंयमनसधैतातैंकिछूयोग्यआहारविधिपूर्वकशरीर ५१
सूंरागरहितभयेसंतेलेकरिशरीरकूंखडाराषिसंयमसाधैहै॥ वहुरि

कमंडलुशौचकाउपकरणहैनराषैतौमलमूत्रकीअशुचिताकरिपंचप
रमेष्ठीभक्तिवंदनांकैसेंकरैअरलोकनिंद्यहोयपीछीदयाकाउपकरणहै
नराषैतौजीवनिसहितभूमिआदिकीप्रतिलेषणाकाहेतैकरै॥ वहुरिपुस्त
कहैसोज्ञानकाउपकरणहैजोनराषैतौपठनपाठनकैसेंहोयवहुरिइनि
उपकरणनिकाराषणाभीममत्वपूर्वकनांहीहैतिनितैंरागभावनाहीहै
वहुरिआहारविहारपठनपाठनकीक्रियायुक्तजेतैरहैहैतेतैकेवलग्यांन
भीनांहीउपजैहै॥ तिनिकूंछोडिशरीरकाभीसर्वथाममत्वछोडिध्यानअ
वस्थालेकरितिष्ठैअपनास्वरूपमैंलीनहोयतवपरमनिर्ग्रंथअवस्था
होयहैतवश्रेणीकूंप्राप्तभयेकेवलज्ञानउपजैहैअन्यक्रियासहितहो
यतैतैकेवलग्याननांहीउपजैहै॥ ऐसानिर्ग्रंथपणामोक्षमार्गजिनसूत्र

अ०पा० मैंकह्या स्वेतांवरकहैहै जो भवथितिपूरीभयेसर्वअवस्थामैंकेवलज्ञानउ
५८ पजैहैसोयकहनामिथ्याहैजिनसूत्रकायहवचननांहीतिनिमैंकल्पित
सूत्रवणायेहैंतिनिमैंलिषीहोयगीवहुरिहांस्वेतांवरकहैहैजोतुमनें
कह्यासोतोउत्सर्गमार्गहैवहुरिअपवादमार्गमेंवस्त्रादिकउपकरणरा
षणांकह्याहैजैसैंतुमधर्मोपकरणकहैतैसैंवस्त्रादिकभीधर्मोपकरण
हैजैसैंक्षुधाकीवाधाआहारतैंमेटिसंयमसाधियेतैसैंसीतआदिकीवा ।
धावस्त्रआदितैंमेटिसंयमसाधियेयामैंविशेषकहाताकूंकहियेजोयामैंतौ
वडादोषआवैहैकोईकहैकामचिरकारउपजैतवस्त्रीसेवनकरैतौयांमें
कहाविशेषसोऐसैंतौकहनायुक्तनांहीक्षुधाकीवाधाआहारतैंमेटनातौ । ५८
युक्तहैआहारविनादेहअशक्तहोयहैतथाछूटिजायतौअपघातकादोष

आवेअरशीतआदिकीवाधातौअल्पहैसोयहतौज्ञानाभ्यासआदिके
साधनतैंहीमिटिजायहैअरअपवादमार्गकह्यासोजामैंमुनिपदरहैऐसी
क्रियाकरनातौअपवादमार्गहैंअरजिसपरिग्रहतैंतथाक्रियातैंमुनिप
दभ्रष्टहोयग्रहस्थवतहोयजायसोतौअपवादमार्गहैंनाहीदिगंवरमु
द्राधारिकमंडलुपीछीसहितआहारविहारउपदेशादिकमैंप्रवर्तैंसोअ
पवादमार्गहै अरसर्वप्रवर्त्तिकूंछोडिध्यानारूढहोयशुद्धोपयोगमैंलीनहै ।
यउत्सर्गमार्गकह्याहैऐसामुनिपदआपतैंसधतानजाणिकछासिथलाचा
रपोषणांमुनिपदकीसामर्थ्यनहोयतौश्रावकधर्महीपालनापरंपराकरि
याहीतैंसिद्धहोयगीजिनसूत्रकीयथार्थश्रद्धाराषेसिद्धहैयाविषैअन्यक्रि
यासर्वहीसंसारमार्गहैमोक्षमार्गनांहीऐसैंजाननां [illegible] आगैंइसहीअर्थ

कासमर्पनकरैहै ॥गाथा॥ जस्सपरिग्गहगहणं अप्पंबहुयंचवहलिंगस्स
सोगरहिउजिणवयणे परिग्गहरहिओनिरायारो ॥१९॥ अर्थ॥ जाकेमतमैलिंग
जेभेषताकैपरिग्रहकाअल्पतथाबहुतकाग्रहणकह्याहैसोमततथातिस
काश्रद्धानगेर्हितहैनिंद्यायोग्यहैजातैंजिनवचनविषैपरिग्रहरहितहैसो
निराकारहैनिर्दोषमुनिहैऐसैकह्याहै ॥भावार्थ॥ स्वेतांवरादिककेकल्पित
सूत्रनिमैंभेषमैंअल्पबहुतपरिग्रहकाग्रहणकह्याहैसोसिद्धांततथाकेश्र
द्धानीनिंद्यहैजिनवचननिविषैपरिग्रहरहितकूंनिर्दोषमुनिकह्याहै ॥छ॥
आगेंकहैहैजिनवचनविषैंऐसामुनिवंदनेयोग्यकह्याहै ॥गाथा॥ पंचम
हव्वयजुत्तो तिहिंगुत्तीहिंजोसुसंजदोहोइ ॥णिग्गंथमोक्खमग्गो ॥ सोहोदि
हुवंदिणिज्जोय ॥२०॥ अर्थ॥ जोमुनिपंचमहाव्रतकरियुक्तहोयअरतीनगु ५९

प्तिकरिसंयुक्तहोयसोहीसंयतहैसंयमवांनहै ॥ बहुरिनिर्ग्रंथमोक्षमार्ग
है सोहीप्रगटपणैनिश्चयकरिवंदनेयोग्यहै ॥भावार्थ॥ अहिंसासत्यअस्ते
यब्रह्मचर्यअरपरिग्रहइनिपांचमहाव्रतनिकरिसहितहोयबहुरिम
नवचनकायरूपतीनगुप्तनिकरिसहितहोयसोसंयमीहैसोईनिर्ग्रंथस्व
रूपहैसोईवंदवेयोग्यहैजोकिछूअल्पबहुतपरिग्रहराखैसोमहाव्रतीसं
यमीनाहीयहमोक्षमार्गनाहीयहगृहस्थवतहै ॥छ॥ आगेंकहैहैजोपूर्वोक्त
तोएकभेषमुनिकाकह्याअवदूसराभेषउत्कृष्टश्रावककाऐसाकह्याहै ॥
॥गाथा॥ दुइयंचउत्तलिंगंउक्किट्ठंअवरसावयाणंच ॥ भिक्खंभमेइपत्तो स
मदीभासेणमोणेण ॥२१॥ अर्थ॥ द्वितीयकहिएदूसरालिंगभेदउत्कृष्टअ
परश्रावककहिएजोगृहस्थनाहीऐसाउत्कृष्टश्रावकताकाकह्याहैसो

अ॰पा॰ उत्कृष्ट श्रावक ग्यारमी प्रतिमा का धारक है सो भिक्षा करि भोजन करै व
६० हुरि यितक हि पात्र मे करै तथा हाथ में करै बहुरि समिति रूप प्रवर्त्तन
भाषा समिति रूप बोलै अथवा मौन करि प्रवर्त्तै ॥ भावार्थ ॥ एक तो मुनि का
यथाजातलिंग रूप लिंग कह्या बहुरि दूसरा यह उत्कृष्ट श्रावक का कह्या
सो ग्यारमी प्रतिमा का धारक उत्कृष्ट श्रावक है ॥ सो एक वस्त्र तथा कोपी
नमात्र धारै है बहुरि भिक्षा करि भोजन करै है ॥ बहुरि पात्र मैं भी भोजन करै
करपात्र भी करै ॥ बहुरि समिति रूप वचन भी कहै ॥ अथवा मौन भी राषै
ऐसा दूसरा भेष है ॥ २१ ॥ आगैं तीसरा लिंग स्त्री का कहै है ॥ गाथा ॥ लिंगं इत्थी
ण हवदि भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि अज्जियवि एकवत्था वत्थावरणे ॥ ६०
ण भुंजेइ ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ लिंग है सो स्त्रीनि का ऐसा है एक काल विषै तो भोजन

करै वारवार न षाय ॥ बहुरि अर्जिका भी होय तौ एक वस्त्र धारै ॥ बहुरि भोजन करत
ते भी वस्त्र के आवरण सहित करै नग्न न होय ॥ भावार्थ ॥ स्त्री अर्जिका भी होय
है अर क्षुल्लका भी होय है सो दोऊ ही भोजन तौ दिन मैं एक वार ही करै अर्जिका
होय सो एक वस्त्र धारै वस्त्र धारे ही भोजन करै नग्न न होय ऐसा स्त्री का तीसरा
लिंग है ॥ २२ ॥ आगैं कहै है वस्त्र धारक कै मोक्ष नाही मोक्ष मार्ग नग्नपणा ही है
॥ गाथा ॥ णवि सिज्झइ वत्थधरो जिणसासण जइवि होइ तित्थयरो णग्गो विमोक्खम
ग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ जिनशासन विषै यह कह्या है जो वस्त्र धार
नै वाला सीझै नाही है मोक्ष नाही पावै ॥ जो तीर्थंकर भी होय तौ जेतैं ग्रहस्थ रहै ते
तै मोक्ष न पावै ॥ दिक्षा ले दिगंबर रूप धारै तब मोक्ष पावै जातै नग्नपणा है सो ही
मोक्ष मार्ग है अवशेष वाकी सर्व ही उन्मार्ग है ॥ भावार्थ ॥ स्वेतांबर आदिक वस्त्र

धारीकै भी मोक्ष होनां कहै है सो मिथ्या है यह जिनमत नांही ॥ ७ ॥ आगैं स्त्रीनिकूं दी
क्षा नांही ताका कारण कहै है ॥ गाथा ॥ लिंगम्मि य इत्थीणं थणंतरे णाहिकक्ख
देसेसु भणिओ सुहुमो काओ तासिं कह होइ पव्वज्जा ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ स्त्रीनिकै लिंग
कहिए योनि ता विषै तथा स्तनांतर कहिए दोऊ कुचनिके मध्य प्रदेश विषै त
था कक्ष देश कहिए कांख विषै सूक्ष्मकाय कहिए दृष्टिकै अगोचर जीव कहे
है सो ऐसी स्त्रीनिकै प्रव्रज्या कहिए दीक्षा कैसै होय ॥ भावार्थ ॥ स्त्रीनिकै हायो
नि स्तन कांख विषै पंचेंद्रिजीवनिकी उत्पत्ति निरंतर कही है तिनिकै महाव्र
तरूप दिक्षा कैसे होय ॥ बहुरि महाव्रत कहे है सो उपचार करि कहे है तिनि
कै महाव्रतरूप दिक्षा कैसें होय ॥ बहुरि महाव्रत कहे है परमार्थ नाहीं स्त्री आ
पना सामर्थ की हद कूं पहुंचि व्रत धारै तिस अपेक्षा उपचार महाव्रत कहे है ॥ ७ ॥ ६१

आगै कहै है जो स्त्री भी दर्शन करि शुद्ध होय तो पापरहित है भली है ॥ गाथा ॥ ज
इ दंसणेण सुद्धा उत्ता मग्गेण सा वि संजुत्ता ॥ घोरं चरिय चरित्तं इत्थीसु ण पाव
या भणिया ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ जो स्त्रीनि विषै जो स्त्री दर्शन कहिये यथार्थ जिनमतकी
श्रद्धा करि शुद्ध है सो भी मार्ग करि संयुक्त कही है ॥ जो घोर चारित्र ताव्रत
तपश्चरणादिक आचरण करि अर पापतैं रहित होय है ताते पापयुक्त न
कहिए ॥ भावार्थ ॥ स्त्रीनि विषै जो स्त्री सम्यक्त करि सहित होय अर तपश्चरण क
रै तौ पापरहित होय स्वर्ग कूं प्राप्त होय है ॥ तातैं प्रसंसा योग्य है अर स्त्री पर्याय तै
मोक्ष नांही ॥ ७ ॥ आगै कहै है जो स्त्रीनिकै ध्यानकी सिद्धि भी नांही ॥ गाथा ॥
चित्तासोहि ण तेसिं ढिल्लं भावं तहा सहावेण ॥ विज्जदि मासा तेसिं इत्थीसु ण संक
या झाणं ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ तिनि स्त्रीनिकै चित्तकी शुद्धता नाहीं है ॥ तैसैं ही स्वभाव

अ०पा०
६२

हीकरि तिनिकै ढीलाभाव है सिथिलापरिणाम है॥ बहुरि तिनिकै मासा कहि
ये मासमास मै रुधिरका श्रवण विद्यमान है ताकी संका रहै है ताकरि स्त्रीनि
विषै ध्यान नाहीं है॥ भावार्थ॥ ध्यान होय है सो चित्तकी शुद्ध होय दृढ परिणाम होय
काहू तरैकी संका न होय है सो स्त्रीनि कै तीनूं ही कारण नांही तब ध्यान कै
सैं होय अर ध्यान विना केवल कैसें उपजैं केवलज्ञान विना मोक्ष नांही असें
स्त्रीनि कै मोक्ष नांही श्वेतांवरादिक कहै है सो मिथ्या है॥ २३॥ आगैं सूत्रपाहुड
कूं समापत करै है सो सामान्य करि सुखका कारण कहै है॥ गाथा॥ गाहेण अ
प्पगाहा समुद्दसलिले सचेल अच्छेण॥ इछा जाहु णियत्ता ताहणियत्ताई सव्व
दुक्खाइं॥ २७॥ अर्थ॥ जे मुनि ग्राह्य कहिए ग्रहण करनें योग्य वस्तु आहार आदि ६२
कतिनि करि तौ अल्पग्राह्य है थोरा ग्रहण करै है जैसे कोई पुरुष बहुत ज

ल तैं भरया जो समुद्र ता विषें अपनें वस्त्र के प्रक्षालनें कूं वस्त्र धोवनें मात्र जल ग्र
हण करै तैसें बहुरि जिन मुनिनि कैं इच्छा निवृत्ति भई तिनि सर्व दुःख निवृत्ति
भये॥ भावार्थ॥ जागत लैय हप्रसिद्ध है जो जिनकै संतोष है ते सुखी है इस न्यायक
यह सिद्ध भया जो मुनिनि कै इच्छा की निवृत्ति है संसार के विषय कषाय संबंधि
इच्छा किंचितमात्र भी नाहीं देहतैं भी विरक्त है तातैं परमसंतोषी है आहार
आदिक कछू ग्रहणयोग्य है तिनि कूं भी अल्प कूं ग्रहण करै है॥ तातैं ते परमसंतो
षी है ते परमसुखी है। यह जिनसूत्र के श्रद्धान का फल है। अन्य सूत्र मैं यथार्थ
निवृत्ति का प्ररूपण नांही तातैं कल्याण के सुख के अर्थीनि कूं जिनसूत्र का
सेवन निरंतर करना योग्य है। असें सूत्रपाहुड कूं पूर्ण कीया॥ छप्पय॥ जि
नवर की धुनि मेघध्वान सम मुख तैं गरजै॥ गणधर के श्रुत भूमि . बरषि

MEMORIAL

अ०पा० अक्षस्यदसरजै ॥ सकलतत्त्वप्रकाशकरैजगतापनिवारै ॥ हेयअहेय
६३ विधानलोकनिकैंमनधारैं ॥ विधिपुण्यपापअरलोककीमुनिश्रावकआचा
रकुनिकरिस्वपरभेदनियेंसकलकर्मनाशिवलहैमुनि ॥ दोहा ॥ वर्द्धमा
नजिनकेवचन ॥ पवरतेपंचमकाल ॥ भव्यपायसिवमगलहै ॥ नमूंतास
गुणमाल ॥ १ ॥ इतिश्रीसूत्रपाहुडकीवचनिकासमाप्त ॥ ॥ अथचारि
त्रपाहुडकीवचनिकालिख्यते ॥ दोहा ॥ विगतरागसर्वज्ञजिन ॥ वंदोंमन
वचकाय ॥ चारितधर्मवषानिये साचोमोक्षउपाय ॥ १ ॥ कुंदकुंदमुनिराज
कृत ॥ चारितपाहुडग्रंथ ॥ प्राकृतगाथाबंधकी करूंवचनिकापंथ ॥ २ ॥ ऐ
सेंमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकरिअरचारित्रपाहुडप्राकृतगाथाबंधकीदेश ६३
भाषामयवचनिकालिखियेहै ॥ तहांश्रीकुंदकुंदाचार्यप्रथमहीमंगलकै

थिइष्टदेवकूंनमस्कारकरिचारित्रपाहुडकहनेकीप्रतिज्ञाकरैहै ॥ गा
था ॥ सव्वण्हु सव्वदंसी णिम्मोहा वीयराय परमेट्ठी ॥ वंदित्तु तिजगवंदा अर
हंता भव्वजीवेहिं ॥ १ ॥ णाणं दंसण सम्मं चारित्तं सोहिकारणं तेसिं ॥ मुक्खाराह
णाहेउं चारित्तं पाहुडं वोच्छे ॥ २ ॥ अर्थ ॥ आचार्यकहैहै जोमैंअरहंतपर
मेष्ठीकूंवंदिकरिचारित्रपाहुडहैताहिकहौंगा ॥ कैसेहैंअरहंतपरमेष्ठी ॥
अरहंतऐसाप्राकृतअक्षरअपेक्षातौऐसाअर्थअकारआदिअक्षर
करितौअरिऐसातौमोहकर्मवहुरिरकारआदिअक्षरअपेक्षारजऐसा
ज्ञानावरणदर्शनावरणकर्मवहुरितिसहीरकारकरिरहस्यऐसाअंतराय
है ॥ वहुरिसंस्कृतअपेक्षाअर्हऐसापूजाअर्थविषैधातुहैताकाअर्हत्ऐ
सानिपजैतवपूजायोग्यहोयताकूंअर्हंतकहिएसोभव्यजीवनिकरिपूज्य

अ॰ पा॰ हे वहुरि परमेष्ठी कहनेतैं परम कहिये उत्कृष्ट इष्ट कहिये पूज्य होय सो परमे
६४ ष्ठी कहिये अथवा परम जो उत्कृष्ट पद तामैं तिष्ठै ऐसा होय सो परमेष्ठी ऐ १
सा इंद्रादिक करि पूज्य अरहंत परमेष्ठी है वहुरि कैसे है सर्वज्ञ सर्व लोका
लोक स्वरूप चराचर पदार्थनि कूं प्रत्यक्ष जानैं सो सर्वज्ञ वहुरि कैसे है सर्व
दर्शी कहि सर्व पदार्थनिके देखने वाले है। वहुरि कैसे है निर्मोह है मोहनी
य नामा कर्म का प्रधान प्रकृति मिथ्यात्व है ताकरि रहित है। वहुरि कैसे है वी
तराग है विशेषकरि जाकै राग दूरि गया होय सो वीतराग जिनकै चारित्रमोह
कर्म के उदय होय ऐसे रागद्वेष भी नाही है। वहुरि कैसे है त्रिजगद्वंद्य है ती
न जगत के प्राणी तथा तिनिके स्वामी इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्ति तिन करि वंद ६४
वे योग्य है ऐसें अरहंत पद कूं विशेष करि अन्य पद विशेषण करि अर्थ की

या है वहुरि सर्वज्ञ पद कूं विशेष्य करि अन्य पद विशेषण करिए ऐसे भी अ
र्थ होय है तहां अरहंत सर्व जीवनि करि पूज्य है ऐसा विशेषण होय है। व
हुरि चारित्र ऐसा है। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र ए तीन आत्मा
के परिणाम है तिनिके शुद्धता का कारण है॥ चारित्र अंगीकार भये सम्यग्दर्श
नादि परिणाम निर्दोष होय है वहुरि कैसा है चारित्र मोक्ष का आराधन का का
रण है ऐसा चारित्र है ताका पाहुड कहिये प्राभृत ग्रंथ कहौंगा ऐसा आचा
र्य मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा करी है॥ छ॥ आगै सम्यग्दर्शनादि तीन भावनिका स्वरू
प कहै है॥ गाथा॥ जं जाणइ तं णाणं जं पिच्छइ तं च दंसणं भणियं। णाणस्स पिच्छ म
यस्स य समवण्णा होइ चारित्तं॥ ३॥ अर्थ॥ जो जाणै सो ज्ञान है वहुरि जो देखै सो द
र्शन है। ऐसें कह्या है। वहुरि ज्ञान का अर दर्शन का समायोग तैं चारित्र होय है

अ०पा० भावार्थ॥ जाणै सो तौ ज्ञान अर श्रद्धान होय सो दर्शन अर दोऊनि एकरूप होय
६५ थिर होना चारित्र है॥ ३॥ आगैं कहै है जो ए तीन भाव जीवकै है तिनकी शुद्धता
कै अर्थि चारित्र दोय प्रकार कह्या है॥ गाथा॥ एए तिण्णि वि भावा हवंति जीव
स्स अक्खयामेया। तिण्हं पि सोहणत्थे जिणभणियं दुविहचारित्तं॥ ४॥ अ
र्थ॥ ए ज्ञान आदिक तीन भाव कहे ते अक्षय अर अनंत जीवकै भाव है इनके
साधनेके अर्थि जिनदेव दोय प्रकार चारित्र कह्या है॥ भावार्थ॥ जाननां देखनां
आचरण करना ए तीन भाव जीवकै अक्षयानंत हैं। अक्षय कहिए जाका
नाश नांही अमेय कहिए अनंत जाका पार नांही सर्व लोकालोककूं जान
नैवाला ज्ञान है ऐसा ही दर्शन है ऐसा ही चारित्र है। तथापि यह कर्मके नि ६५
मित्ततैं अशुद्ध है मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्ररूप है तातैं श्री जिनदेव तिनिके शु

द्ध करनेकूं इनिका चारित्र आचरन करनां दोय प्रकार कह्या है॥ ४॥ आगैं ते दो
य प्रकार कह्या सो कहै है॥ गाथा॥ जिणणाणदिट्ठिसुद्धं पढमं सम्मत्तचरणचा
रित्तं। विदियं संजमचरणं जिणणाणसदेसियं तंपि॥ ५॥ अर्थ॥ प्रथम तौ स
म्यक्त्वका आचरणस्वरूप चारित्र है सो कैसा है जिनदेवका ज्ञान अर दर्शन
श्रद्धान ताकरि कीया शुद्ध है। बहुरि दूसरा संयमका आचरणस्वरूप
चारित्र है सो भी जिनदेवका ज्ञानकरि दिखाया शुद्ध है॥ भावार्थ॥ चारि
त्र दोय प्रकार कह्या तहां प्रथम तौ सम्यक्त्वका आचरण कह्या सो जो सर्व
ज्ञका आगममैं तत्त्वार्थका स्वरूप कह्या ताकूं यथार्थ जाणि श्रद्धान करणं
अर ताके शंकादि अतीचार मलदोष कहे तिनिका परिहार करि शुद्ध कर
नां अर ताके निःशंकितादि गुणनिका प्रगट होना सो सम्यक्त्वाचरण चारित्र

हे वकुरिजो महाव्रतआदिअंगीकारहैकरि सर्वज्ञके आगममें कह्या तैसा
संयमका आचरण करनां अरताके अतीचार आदिदोषनिका दूरिकर
नां सो संयमचरणचारित्र है। ऐसें संक्षेपकरि स्वरूप कह्या॥ ५॥ आगैं सम्य
क्त्वचरणचारित्रके मलदोषनिका परिहार करि आचरणकरणां ऐसें
कहैहै॥ गाथा॥ एवं चिय णाऊण य सव्वे मिच्छत्तदोससंकाई परिहरसम्मत्त
मला जिण भणिया तिविहजोएण॥ ६॥ अर्थ॥ ऐसे पूर्वोक्तप्रकार सम्यक्त्वा
चरणचारित्रकूं जाणि अर मिथ्यात्वकर्मके उदयतैं भये जे संकादिक दोष
ते सम्यक्त्वके अशुद्धकरणेवाले मल है ते जिनदेव कहे है तिनि सर्वनि कूं
मन वचकायकरि भये जे तीनप्रकारके योग तिनिकरि छोडणे॥ भावार्थ॥ स
म्यक्त्वाचरणचारित्रकूं संकादिदोष सम्यक्त्वके मल है तिनिकूं सागें शुद्ध

होय है यातें तिनिका त्याग करनें का उपदेश जिनदेव कीया है। ते दोष कहा सो
कहिये है। जो जिनवचन विषै वस्तुका स्वरूप कह्या है ता विषै संशय करनां सो १
तो संका है याके होतें सप्तभयके निमित्ततें स्वरूपतैं चिगि जाय सो भी संका है
बहुरि भोगनिकी अभिलाष सो कांक्षा है याके होतें भोगनिके अर्थि स्वरूपतैं
भ्रष्ट होय है बहुरि वस्तुका धर्म विषै गलानि करनां सो जुगुप्सा है याके होतें ध
र्मात्मा पुरुषनिकै पूर्वकर्मके उदयतें बाह्यमलिनता देखि धर्मतैं चिगनां होय
है। बहुरि देवधर्मगुरु तथा लौकिक कार्यनि विषै मूढता यथार्थ स्वरूप
न जाननां सो मूढदृष्टि है याके होतें अन्य लौकिक करि मानें जे सरागी देव हिं
सा धर्म सग्रंथ गुरु तथा लोकनि मैं बिना विचार्यां मानें जे अनेक क्रिया
विशेष तिनितें विनयादिककी प्रवृत्ति करनेंतैं यथार्थ मततैं भ्रष्ट होय है व

अ॰पा॰ ६१ ऊरि धर्मात्मा पुरुषनि विषैं कर्म उदय तैं किछू दोष उपज्या देषि तिनिकी अ
वज्ञा करनां सो अनूपगूहन है याके होतैं धर्म तैं छूटि जाना हो है। बहुरि
धर्मात्मा पुरुषनि कूं कर्म के उदय के वस तैं चिगता देषि तिनिकी थिरता न
करनी सो अस्थितीकरन है याके होतैं जानिये याकै धर्म तैं अनुराग नां
ही अर अनुराग न होनां सो सम्यक्त मै दोष॥ बहुरि धर्मात्मा पुरुषनि तैं वि
शेष प्रीति न करनां सो अवात्सल्य है याके होतैं सम्यक्त का अभाव प्रगट
सूचै है। बहुरि धर्म का माहात्म्य सक्ति सारू प्रगट करना सो अप्रभावना
है याके होतैं जानिये याकै धर्म का माहात्म्य की श्रद्धा दृढ न भई ऐसे ए आ
ठ दोष सम्यक्त के मिथ्यात्व के उदय तैं होय हैं जहां ए तीव्र होय तहां तो ६१
मिथ्यात्व प्रकृति का उदय जनावै है सम्यक्त का अभाव जनावै है अर

जहां किछू मंद अतीचार रूप होय तो सम्यक्त प्रकृति नाम मिथ्यात्व की प्र
कृति के उदय तैं होय ते अतीचार कहिये तहां क्षायोपसमेक सम्यक्त का
सद्भाव हो है परमार्थ विचारिये तौ अतीचार त्यागने ही योग्य है। बहुरि
इनि के होतैं अन्य भी मल प्रगट होय है। तहां तीन तौ मूढता देव पाखंड मू
ढ लोक मूढ तहां देव मूढता तौ ऐसा जहां किछू वर की वांछा करि सरा
गी देवनि की उपासना करनां तिनिकी पाषाणादि विषै स्थापना करि पूज
नां। बहुरि पाखंडि मूढता ऐसा जहां ग्रंथ आरंभ हिंसादिक सहित पाषं
डीनि की तिनिका सत्कार पुरस्कारादिक करनां। बहुरि लोक मूढता ऐ
सा जहां अन्यमतीनि के उपदेश तैं तथा स्वयमेव विना विचारे किछू प्र
वृति करने लगि जाय जैसें सूर्य कूं अर्घ देनां ग्रहण विषैं स्नान करनां संक्रां

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

आ॰पा॰ तिविषैदां न करनां अग्निका सत्कार करनां देहलीघरकूं पूजनां गऊके
६८ पृष्ठकूं नमस्कार करनां गऊकामूत्रकूं पीवणां रत्नघोडाआदि वाहनपृ
थ्वी वृक्ष शस्त्र पर्वत आदिका सेवन पूजन करनां नदीसमुद्र आदिकूं ती
र्थमांनि तिनिमै स्नान करनां पर्वततैं पडनां अग्निमैं प्रवेश करनां इत्यादि
जाननां । बहुरि छह अनायतन है कुगुरु कुदेव कुशास्त्र अर इनिके सक्त
ऐसैं छह इनिकूं धर्मके ठिकाणे जाणि इनकी मनकरि प्रशंसा वचनकरि
सराहनां करनां ए धर्मके ठिकाणे नांही तातैं इनिकूं अनायतन कहे ॥ बहु
रि जाति लाभ कुल रूप तप बल विद्या ऐश्वर्य इनिका गर्व करनां ऐसे आठ
मद है । तहां जाति तौ माता पक्ष है अर लाभ धनादिका कर्मके उदयके आ ६८
श्रय है कुल पिता पक्ष है रूप कर्म उदयाश्रित है तप अपना स्वरूप साध

नेंकूं है बल कर्म उदयाश्रित है विद्या कर्मके क्षयोपशमाश्रित है ऐश्वर्य क
र्मोदयाश्रित है इनिका गर्व कहा परद्रव्यके निमित्ततैं होय ताका गर्व करनें
सम्यक्त्वका अभाव जनावै है ॥ अथवा मलिनता करै है ऐसैं ए पचीस सम्य
क्त्वके मलदोष है तिनिकूं त्यागैं सम्यक्त्व शुद्ध होय है सो ही सम्यक्त्वचरणचारि
त्रका अंग है ॥ ६ ॥ आगैं संकादि दोष दूरि भयें आठ अंग सम्यक्त्वके प्रगट हो
य है तिनिकूं कहै हैं ॥ गाथा ॥ निस्संकिय निक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढदि
ट्ठी य उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पहावणा य ते अंगं ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ निःशं
कित निःकांक्षित निर्विचिकित्सा अमूढदृष्टि उपगूहन स्थितिकरण वात्स
ल्य प्रभावना ऐसैं आठ अंग है ॥ भावार्थ ॥ आगें अंगपदसैं कहे जे संकादि
आठदोष तिनिके अभावतैं प्रगट होय है तिनिके उदाहरण पुराणनिमैं है ति

अ०पा०७
६९

निकीकथातैंजाननेंनिशंकितकातौअंजनचोरकाउदाहरणहैजानैजि
नवचनविषैसंकानकरीनिर्भयहोयछींकेकीलडकाटिमंत्रसिद्धकीया
बहुरिनिःकांक्षितकाती अनंतमतीसुताराआदिकाउदाहरणहै।
जिनिनैंभोगनिकैअर्थिधर्मनछोड्या बहुरिनिर्विचिकित्साकाउदायनरा
जाकाउदाहरणहैयानैमुनिकाशरीरअपवित्रदेषिग्लानिनकरी। ब
हुरिअमूढदृष्टीकारेवतीराणीकाउदाहरणहै जानैविद्याधरअनेकम
हिमादिषाई तौऊश्रद्धातैंसिथिलनभई बहुरिउपगूहनकाजिनेंद्रभक्तसे
ठकाउदाहरणहैजानैंचोरब्रह्मचारभेषकरिछत्रचोर्‍यातौब्रह्मचार
पदकीनिंदाहोतीजाणितादोषछिपाया बहुरिस्थितीकरणकावारि ६९
षेणकाउदाहरणहैजानिपुष्पदंतब्राह्मणकूंमुनिपदतैंसिथिलभयाजा॥

णिदृढकीया॥ बहुरिवात्सल्यकाविष्णुकुमारमुनिकाउदाहरणहैजानैं
अकंपनआदिमुनिनिकाउपसर्गनिवारणकीया। बहुरिप्रभावनाविषैं
वज्रकुमारमुनिकाउदाहरणहैजानैंविद्याधरनिकासहायपायधर्मकाप्र
भावनाविषैंवज्रकुमारमुनिकीया ऐसैंआठअंगप्रगटभयेसम्यक्त्वाच
रणचारित्रसंभवैहै जैसैंशरीरमैंहाथपगहोयतैसैंसम्यक्त्वकेअंगहैंएन
होयतौविकलांगहोय॥ आगैंकहैहै जोऐसैंपहलासम्यक्त्वाचरण
चारित्रहोयहै॥ गाथा॥ तंचेवगुणविसुद्धं जिणसम्मत्तंसुमुक्खठाणाए। जं
चरइणाणजुत्तं पढमंसम्मत्तचरित्तचारित्तं॥८॥ अर्थ तत् कहियेसोजिन
सम्यक्त्वकहियेअरहंतभगवंतजिनदेवकीश्रद्धानिःशंकितआदिगुण
निकरिविशुद्धहोयतातियथार्थज्ञानकरिसहितआचरणकरैसोप्रथ

अ०पा० मसम्यक्त्वचरणचारित्रहैसोमोक्षस्थानकैअर्थिहोय ।भावार्थ। सर्वज्ञके
७० भाषितत्वार्थकीश्रद्धानिःसंकितआदिगुणनिकरिसहितपचीसमलदो
षनिकरिरहितज्ञानवानआचरणकरैताकूंसम्यक्त्वचरणचारित्रक
हियेसोयहमोक्षकीप्राप्तिकैअर्थिहोयहैजातैमोक्षमार्गमैपहलैसम्यग्द
र्शनकह्याहैतातैमोक्षमार्गमैप्रधानयहीहै॥८॥ आगैकहैहैजोऐसास
म्यक्त्वचरणचारित्रकूंअंगीकारकरिजोसंयमचरणचारित्रकूंअंगीका
रकरैतौसीघ्रहीनिर्वाणकूंपावै ।गाथा। सम्मत्तचरणसुद्धा संजमचरण
स्सजइयसुपसिद्धा। णाणीअमूढदिट्ठीअचिरेपावंतिणिव्वाणं ।९। अर्थ
जेज्ञानीभयेसंतेअमूढदृष्टीहोयकरिअरसम्यक्त्वचरणचारित्रक ७०
रिशुद्धहोयहैअरजोसंयमचरणचारित्रकरिसम्यक्प्रकारशुद्धहोय

तौसीघ्रहीनिर्वाणकूंप्राप्तहोयहै ।भावार्थ। जोपदार्थकायथार्थज्ञानकरि
मूढदृष्टिरहितविशुद्धसम्यग्दृष्टीहोयकरिसम्यक्चारित्रस्वरूपसंयमा
आचारैतौसीघ्रहीमोक्षकूंपावैसंयमअंगीकारभयेस्वरूपसंयमआ
चारैतौसीघ्रहीमोक्षकूंपावैसंयमअंगीकारभयेंस्वरूपकासाधनरूपए
काग्रधर्मध्यानकेबलतैसातिशयअप्रमत्तगुणस्थानरूपहोयश्रेणिचढि
अंतरमुहूर्तमैकेवलज्ञानउपजायअघातिकर्मकानासकरिमोक्षपावै
हैसोयहसम्यक्त्वचरणचारित्रकाहीमहात्म्यहै॥९॥ आगैकहैहैजोसम्य
क्त्वकेआचरणकरिभ्रष्टहैतेसंयमकाआचरणकरैहैतौभीमोक्षनाहीपा
वैहै ।गाथा। सम्मत्तचरणभट्ठा संयमचरणंचरंतिजेविणरा। अण्णाण
णाणमूढातहविणपावंतिणिव्वाणं ।१०। अर्थ जेपुरुषसम्यक्त्वचरणचारि

त्रकरि भ्रष्ट है अर संयम आचरण करै है ते ऊ अज्ञान करि मूढदृष्टी भये संते
ते निर्वाण कूं नांही पावै है ॥ भावार्थ ॥ सम्यक्त्वचरण चारित्र विना संयमाचरण
चारित्र निर्वाण का कारण नांही है ॥ जातैं सम्यग्ज्ञान विना तौ चारित्र मि
थ्या कहावै है ॥ अर सम्यक्त्वाचरण विना ज्ञान मिथ्या कहावै है सो सम्यक्त्व
विना चारित्र कै मिथ्यापणा पावै है ॥ १० ॥ आगें पूछै उपजे है जो ऐसा सम्य
क्त्वाचरण चारित्र के चिह्न कहा है तिनि करि तिसकूं जाणिये ताका उत्तर
रूप गाथा मैं सम्यक्त्व के चिह्न कहै है ॥ गाथा ॥ वच्छल्लं विणयेण य अणुकं
पाए सुदाणदच्छाए। मग्गगुणसंसणा। अवगूहण रक्खणाए य ॥ ११ ॥
एएहिं लक्खणेहिं वलरिक्कज्जइ अज्जवेहिं भावेहिं जीवो आराहंतो
जिणसम्मत्तं अमोहेण ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ जिनदेव की श्रद्धा जो सम्यक्त्व ताकूं

मोह कहिए मिथ्यात्व ताकरि रहित आराधता जीव है सो ए ते लक्षण कहि
ये चिह्न तिनि करि लखिये है जानिये है प्रथम तौ धर्मात्मा पुरुषनि तैं वात्स
ल्य भाव होय जैसें तत्काल की प्रसूतिवान गऊ कै वच्छा सूं प्रीति होय तैसी धर्मा
त्मा सूं प्रीति होय एक तौ यह चिह्न है ॥ बहुरि सम्यक्त्वादि गुणनि करि अधि
क होय ताका विनय सत्कारादिक जाकै होय ऐसा विनय एक यह चिह्न
है बहुरि दुखी प्राणी देखि करुणाभावस्वरूप अनुकंपा जाकै होय यह ए
चिह्न है बहुरि अनुकंपा कैसी होय भले प्रकार दान करि योग्य होय ॥ बहुरि
निर्ग्रंथस्वरूप मोक्षमार्ग की श्रद्धा हनठ नाही ॥ बहुरि धर्मात्मा पुरुषनि कै क
र्म कै उदय तैं दोष उपजै ताकूं विख्यात न करै ऐसा उपगूहन भाव होय ए
क यह चिह्न है ॥ बहुरि धर्मात्मा कूं मोक्षमार्ग तैं चिगता जाणि तिसकी थिरता

अ०पा०
७२

करै ऐसा रखणा नामचिह्न है। याकूं स्थितीकरण भी कहिए। बहुरि इनि
सर्व चिह्ननिका सत्यार्थ करनेवाला एक आर्जव भाव है जातें निष्कपट प
रिणाम तें ए सर्व चिह्न सत्यार्थ होय है ऐते लक्षणनि करि सम्यग्दृष्टीकूं
जानिये है। भावार्थ। सम्यक्त्व भाव मिथ्यात्व कर्म के अभाव तें जीव का भाव
प्रगट होय है सो यह भाव तो सूक्ष्म है छद्मस्थ के ज्ञानगोचर नाहीं अर ता
के बाह्य चिह्न सम्यग्दृष्टी के प्रगट होय है तिन करि सम्यक्त्व भया जानिये
है ते ए वात्सल्य आदि भाव कहे ते आपके तो आपके अनुभवगोचर हो
य है। अर अन्यके ताकी वचन काय की क्रियातें जानिये है। तिनिकी परीक्षा
जैसे आपकै क्रिया विशेष होय तैसे अन्य के परीक्षा तें जानै जाय ऐसा व्य ७२
वहार है जो ऐसा न होय तो सम्यक्त्व का। व्यवहारमार्ग का लोप होय जातें

व्यवहारी प्राणीकूं व्यवहारही का आश्रय कह्या है परमार्थ सर्वज्ञ जानै है
॥ छ॥ आगैं कहै है जो ऐसे कारणनि करि सहित होय तौ सम्यक्त्व छोडै है॥
गाथा॥ उच्छाहभावणासंपसंससेवा कुदंसणे सद्धा। अण्णाणमोहमग्गे॥
कुणंतो जहदि जिणसम्मं॥ २७॥ अर्थ॥ कुदर्शन कहिये नैयायिक वैशेषिक
मत सांख्यमत अर मीमांसक वेदांत मत अर बौद्ध चार्वाक अन्यवादके
मत इनिके भेष तथा भाषे पदार्थ तिनिकी उपासना। बहुरि श्वेतांबरादि
क जैनाभास इनकै विषै श्रद्धा तथा उत्साह भावना तथा प्रशंसा तथा इ
निकी उपासना सेवा करता पुरुष है सो जिनमतकी श्रद्धारूप सम्यक्त्वकूं छो श्र
डै है। कैसा है कुदर्शनि अज्ञान अर मिथ्यात्व का मार्ग है। भावार्थ। अ
नादि काल तें मिथ्यात्व कर्म के उदय तें यह जीव संसार मैं भ्रमै है सो कोई

अ०पा०
७४

मोहकेउदयतैंजिनमार्गकीश्रद्धानहीहोय अरफेरिमिथ्यामतकेप्रसं
गकरिमिथ्यामतकेविषैकिछूकारणतैंउत्साहभावनाप्रशंसासेवाश्रद्धाउपजै
तौसम्यक्त्वकाअभावहोयजायजातैंजिनवचनतसिवायअन्यमतहैति
निमैंछद्मस्थअज्ञानीनिकरिप्ररूप्यामिथ्यापदार्थतथामिथ्याप्रवृत्तिरू
पमार्गहैताकीश्रद्धाआवैतवजिनमतकीश्रद्धाजातीरहैतातैंमिथ्याद
ष्टीनिकासंसर्गहीनकरनाऐसाभावार्थजाननां ॥१४॥ आगेकहैहै
जोयेहीउछाहभावनादिककहेतैसुदर्शनविषैहोयतौजिनमतकी
श्रद्धारूपसम्यक्तकूंनछोडैहै ॥गाथा॥ उछाहभावणासंपसंससेवासु
दंसणेसद्दहणजहदिजिनसम्मत्तं कुव्वंतोणाणमग्गेण ॥१५॥ अर्थ॥ सु
दर्शनकहियेसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूपसम्यक्मार्गताविषैउ ७३

छाहभयोभावनाकहियेग्रहणकरनेंकाउत्साहअरवारवारचितवना
रूपभाववहुरिसंशंसाकहियेमनवचनकायकरिभलाजाणिस्तुति
करनांसेवाकहियेउपासनापूजादिककरनावहुश्रद्धाकरनीऐसेज्ञा
नमार्गकरियथार्थजाणिकरतापुरुषहैसोजिनमतकीश्रद्धारूपसम्य
क्तहैताहिनछोडैहै ॥भावा॥ जिनमतविषैउत्साहभावनाप्रसंसासेवाश्र
द्धाजाकैहोयसोसम्यक्त्वतैंच्युतनहोय ॥१५॥ आगेंअज्ञानमिथ्यात्वकु
चारित्रकात्यागकाउपदेशकरैहै ॥गाथा॥ अण्णाणंमिछत्तंवज्जहणा
णेविसुद्धसम्मत्ते अहमोहंसारंभंपरिहरधम्मेअहिंसाए ॥१६॥ अर्थ॥
आचार्यकहैहैजोहैभव्यतूंज्ञानकेहोतेंतौअज्ञानकूंवर्जित्यागक
रि वहुरिविशुद्धसम्यक्तकेहोतेंमिथ्यात्वकूंत्यागिकरि वहुरिअहिं

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

अ॰पा॰
७४

साधुश्रमणधर्मकहिये तिआरंभसहितमोहकूंपरिहरि ॥ भावार्थ ॥ सम्यग्दर्श
नज्ञानचारित्रकीप्राप्तिभयेंफेरिमिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रविषैमतिप्रव
र्तै ऐसाउपदेशहै ॥ ८० ॥ आगैफेरिउपदेशकरैहै ॥ गाथा ॥ पव्वज्जसंगचा
एपयट्टसुतवेसुसंजमेभावे ॥ होइसुविसुद्धझाणंणिम्मोहेवीयरायत्ते
॥ ८१ ॥ अर्थ ॥ हेभव्यतूसंगकहियेपरिग्रहकात्यागजामेंहोयऐसेंदीक्षाग्र
हणकरि ॥ बहुरिभलेप्रकारसंयमस्वरूपभावहोतैंसम्यक्प्रकारतप
विषैप्रवर्त्तनकरिजातेंतेरैमोहरहितवीतरागपणांहोतैंनिर्मलधर्म्म
शुक्लध्यानहोय ॥ भावार्थ ॥ निर्ग्रंथहोयदीक्षालेसंयमभावकरिभलै
प्रकारतपकरिविषैप्रवर्तै तबसंसारकामोहदूरिहोयवीतरागपणा ७४
होयतबनिर्मलधर्मध्यानशुक्लध्यानहोयहै ऐसैंध्यानतैंकेवलज्ञानउ

अरबुद्धिकहियेअज्ञानतिनिकेउदयकरिप्रवर्त्तैहै भावार्थ रागमूढमि थ्यात्व वै॰
६

पजायमोक्षप्राप्तहोयहैतातैंऐसाउपदेशहै ॥ ८१ ॥ आगैंकहैहैजोयह
जीवअज्ञानअरमिथ्यात्वकेदोषकरिमिथ्यामार्गविषैप्रवर्त्तैहै ॥ गाथा ॥
मिच्छादंसणमग्गेमलिणेअण्णाणमोहदोसेहिं ॥ वज्झंतिमूढजीवामिच्छ
त्ताबुद्धिदोसेण ॥ ८२ ॥ अर्थ ॥ मूढजीवहै तेअज्ञानअरमोहकहियेमिथ्यात्व
इनिकेदोषनिकरिमलिनजोमिथ्यादर्शनकहियेकुमतकामार्गताविषै
मिथ्यादर्शनत्वअरअज्ञानकेउदयकरिमिथ्यामार्गविषैप्रवर्त्तैहैजातै
मिथ्यात्वअज्ञानकानाशकरनायहउपदेशहै ॥ ८२ ॥ आगैंकहैहैजोस
म्यग्दर्शनज्ञानचारित्रश्रद्धानकरिचारित्रकेदोषदूरिहोयहै ॥ गाथा ॥ स
म्मद्दंसणपस्सदिजाणदिणाणेणदव्वपज्जाया ॥ सम्मेणयसद्दहदि ॥ परि
हरदिचरित्तजेदोसे ॥ ८३ ॥ अर्थ ॥ यहआत्मादर्शनकरितौसत्तामात्रवस्तु

अ० पा० देषेहै वहुरिसम्यग्ज्ञानकरि सर्वद्रव्यपर्यायनिकूंजाणैहै वहुरिसम्यक्
७५ करिद्रव्यपर्यायस्वरूपसत्तासंयुक्तका श्रद्धानकरैहै वहुरिऐसैदे
षनाजाननाश्रद्धानहोयतेवचारित्रकहिए आचरणविषैउपजैजेदोषति या
निकूंछोडैहै। भावार्थ वस्तुकास्वरूपद्रव्यपर्यायात्मकसमतास्वरूपहैसोजैस
हैतैसादेषैजाणैश्रद्धानकरैतवआचरणशुद्धकरैतोसर्वज्ञकेआगम
तैवस्तुकानिश्चयकरिआचरणकरणा। तहांवस्तुहैसोद्रव्यपर्यायस्व
रूपहै। तहांद्रव्यकासत्तालक्षणहैतथागुणपर्यायवानकूंद्रव्यकहिए
वहुरिपर्यायहैसोदोयप्रकारहैसहवर्त्तीअरक्रमवर्त्ती तहांसहवर्त्ती ७५
कूंगुणकहियेहैक्रमवर्त्तीपर्यायकहियेहै तहांद्रव्यसामान्यकरिएक।
हैतोऊविशेषकरिछहैहै जीवपुद्गल।धर्मअधर्मआकाशकालऐसैं

तहांजीवकैदर्शनज्ञानमयीचेतनातोगुणहै अरमतिआदिकज्ञानअ
रक्रोधमानमायालोभआदितथानरनारकआदिविभावपर्यायहैस्व
भावपर्यायअगुरुलघुगुणकेद्वारेहानिवृद्धिकापरिणमनहै। वहुरि
पुद्गलद्रव्यकैस्पर्शरसगंधवर्णस्वरूपमूर्त्तीकपणातोगुणहै अरस्पर्शर
सगंधवर्णकाभेदरूपपरिणमनतथा अणुस्कंधरूपहोनातथाश
ब्दबंधआदिरूपहोनां इत्यादिपर्यायहै। वहुरिधर्मअधर्मद्रव्यकेगति
हेतुत्वपणातोगुणहै अरइसगुणकेजीवपुद्गलकेगतिस्थितिकेभे
दहोयतेपर्यायहैतथाअगुरुलघुगुणकेद्वारेहानिवृद्धिकापरिणम
नहैसोस्वभावपर्यायहै। वहुरिआकाशकेअवगाहनागुणहैअर
जीवपुद्गलआदिकेनिमित्ततेप्रदेशभेदकरिकल्पियेतेपर्यायहैत

अ० पा०
७६

थाहानिवृद्धि का परिणमनसो स्वभावपर्याय है। बहुरि कालद्रव्यकै वर्त्त
नालैगुण है और जीव पुद्गल के निमित्ततैं समय आदि कल्पना सो पर्या
य है याकूं व्यवहारकाल भी कहिए है बहुरि हाणिवृद्धि का परिणमन सो
स्वभावपर्याय है इत्यादि इनिका स्वरूप जिनआगमतैं जानि देषनां जांन
नां श्रद्धनां यातैं आचरण शुद्ध होय है विना ज्ञान श्रद्धान आचरण शु
द्ध नांही होय है ऐसैं जाननां ॥ ७ ॥ आगै कहै है जो यह सम्यग्दर्शन ज्ञा
न चारित्र तीन भाव है मोहरहित जीव कै होय है इनि कूं आचरतैं शीघ्र मो
क्ष पावै है। गाथा। एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स मोहरहियस्स। णि
यगुण आराहंतो अचिरेण वि कम्म परिहरइ ॥ १९ ॥ अर्थ। ए पूर्वोक्त सम्य
ग्दर्शन ज्ञान चारित्र तीन भाव है ते निश्चयकरि मोह मोह कहिये मि ७६

थ्यात्वभाव करि रहित होय तिस जीव कै होय है। तब यह जीव अपना निज
गुण जो शुद्धदर्शनज्ञानमयी चेतना ताकूं आराधता संता थोरेही कालमें
कर्मनाश करै है। भावार्थ। निजगुण का ध्यानतैं शीघ्र केवलज्ञान उपजाय मो
क्ष पावै है ॥ ७ ॥ आगै इस सम्यक्त्वचरणचारित्र के कथनकूं संकोचै है। गाथा।
संखिज्जमसंखिज्जगुणं च संसारिमेरुमित्ता णं सम्मत्तमणुचरंता करंति
दुक्खक्खयं धीरा ॥ २० ॥ अर्थ। सम्यक्त्व कूं आचरण करते धीर पुरुष है ते सं
ख्यातगुणी तथा असंख्यातगुणी कर्मनि की निर्जरा नैं होय तैं संख्यातगु
णी करै है बहुरि कर्मनि के उदयतैं भया संसार का दुःख ता का नाश करै है
कैसे है कर्म संसारी जीवनि की मेरु कहिये मर्याद मात्र है सिद्ध भये पीछै
कर्म नांही है। भावार्थ। इस सम्यक्त्व के आचरण भये प्रथम काल मैं तौ गुण

श्रेणी निर्जरा होय है सो तो असंख्यात के गुण का स्वरूप है। बहुरि पीछै
संयम का आचरण न होय तै तै गुण श्रेणी निर्जरा न होय तहां संख्यात गु
ण का स्वरूप होय है तातें संख्यात गुण असंख्यात गुण ऐसें दोऊ वच
न कहे बहुरि कर्मनि की संसार अवस्था है जेतें है तेतैं निमें दुःख का कारण मो
ह कर्म है तिसमें मिथ्यात्व कर्म प्रधान है सो सम्यक्त्व भये मिथ्यात्व का तो
अभाव ही भया अर चारित्र मोह दुःख का कारण है सो यहु जेतें है तेतैं नि
र्जरा करै है ऐसे अनुक्रम तैं दुःख का क्षय होय है संयमाचरण भये सर्व दुः
ख का क्षय होय ही गा। इहां सम्यक्त्व का माहात्म्य ऐसा है सो सम्यक्त्व चरण
भये संयमाचरण भये संयमाचरण भी सीघ्र ही होय है यातें सम्यक्त्व कूं मो ७७
क्षमार्ग में प्रधान जाणि या ही का वर्णन पहले कीया है। ७। आगें संयमच

रण चारित्र कूं कहै है। गाथा। दुविहं संयमचरणं सायारं तह हवे णिराया
रं। सायारं सग्गंथे परिग्गहा रहिय खलु णिरायारं। २१। अर्थ। संयमच
रण चारित्र है सो दोय प्रकार है सागार तथा निरागार ऐसें तहां साग ।
र तौ परिग्रह सहित श्रावक कै होय है। बहुरि निरागार परिग्रह रहित
मुनि कै होय है यह निश्चय है। ७। आगें सागार संयमाचरण कूं कहै है।
क्षे गाथा। दंसण वय सामाइय पोसह सचित्त राय भत्ते य। बंभारंभ परिग्ग
ह अणुमण उद्दिट्ठ देशविरदो य। २२। अर्थ। दर्शन व्रत सामायिक प्रो ।
का षध आदि का नाम एक देश है नाम ऐसें कहे सामायिक प्रोषध उपवास सचित
त्याग। रात्रि भक्त त्याग ब्रह्मचर्य आरंभ त्याग परिग्रह त्याग। अनुमति त्या ।
ग उद्दिष्ट त्याग ऐसे ग्यारह प्रकार देश विरत है। भावार्थ। सागार

अ०पा० संयमचरणके ग्यारह स्थान हैं इनि कूं प्रतिमा नाम कहिए ॥ छ ॥ आगैं इ
७६ नि स्थान विषै संयम का आचरण कौन प्रकार है सो कहै है ॥ गाथा ॥ पंचेव
णुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि ॥ सिक्खावय चत्तारि ॥ संयमचर
णं च सायारं ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ अणुव्रत पांच गुणव्रत तीन सिक्षाव्रत च्यारि
ऐसैं बारह प्रकार संयमचरण चारित्र है ॥ सो यह साकार ग्रंथ सहित सो है
तिस श्रावक कैं होय है ताते साकार कह्या है ॥ भावार्थ ॥ जो एबारह प्रकार रहाश्र
व्रत कहे अर पहलैं गाथा मैं ग्यारह नाम कहे तिनिका प्र
थम दर्शनि नाम कह्या है तामैं एक व्रत कैसैं होय है ॥ ताका समाधान ऐ
सा जो अणुव्रत ऐसा नाम किंचित् व्रत का है सो पांच अणुव्रत मैं किं ७६
चित् व्रत का है सो पांच अणुव्रत मैं किंचित् इहां भी होय है ताते दर्शि

न प्रतिमा का धारक भी अणुव्रती ही है याका नाम दर्शन ही कह्या तहां ऐसा न जा
नना जो याकै केवल सम्यक्त्व ही होय है अर अव्रती है अणुव्रत नांही है याकै
अणुव्रत अतीचार सहित होय है ताते व्रती नाम कह्या इहां जो प्रतिमा मैं अणुव्र
त अतीचार रहित पालै ताते व्रत नाम कह्या है इहां सम्यक्त्व के अतीचार टालै
है ताते सम्यक्त्व ही प्रधान है ताते दर्शन प्रतिमा नाम है ॥ अन्य ग्रंथनि मैं याका
स्वरूप ऐसैं कह्या जो आठ मूलगुण पालै सात व्यसन त्यागै सम्यक्त्व अती चा
र रहित शुद्ध जाकै होय सो दर्शन प्रतिमा का धारक है तहां पांच उदंबर फल अ
र मद्य मांस सहत इनि आठनि का त्याग करै सो आठ मूलगुण है ॥ अथवा कोई
ग्रंथ मैं ऐसैं कह्या है जो पांच अणुव्रत पालै अर मद्य मांस मधु इनि का त्याग
करै ऐसैं आठ मूलगुण है सो यामैं विरोध नांही है विवक्षा का भेद है पांच उदंबर

Dr. ... MEMORIAL

फलअरतीनमकारकात्यागकहनेंतैंजिनवस्तुनिमैंसाक्षात्त्रसदीखैंतिस
वेहीवस्तुभक्षणनकरैदेवादिकनिमित्ततथाऔषधादिकनिमित्तइत्यादि
ककारणनिमैंहूत्रसजीवघातनकरैऐसाआशयहैसोयांमैंतौअहिंसा
अणुव्रतआयाअरसातव्यसनकेत्यागमैंजूवाकाअरचोरीकाअरपर
स्त्रीकात्यागआयाअरव्यसनहीकेत्यागमैंअन्यायपरधनपरस्त्रीकाग्रह
णनाहीयामैंअतिलोभकात्यागतैंपरिग्रहकाघटावनाआयाऐसैंपांच
अणुव्रतआवैहैइनिकेअतीचारटलैनांहीतातैंअणुव्रतीनामनपावैऐ
सेंदर्शनप्रतिमाकाधारकभीअणुव्रतीहैतातैंदेशविरतसाकारसंयमच
रणचारित्रमैंयाकूंलीगिण्याहै॥७॥आगैपांचअणुव्रतकास्वरूपकहैहै॥ ७९
॥गाथा॥थूलेतसकायवहेथूलेमोसेअदत्तथूलेय परिहारोपरमहिलापरि

ग्गहारंभपरिमाणं॥अर्थ॥थूलजोत्रसकायकाघातथूलमृषाकहियेअ
सत्यथूलअदत्तकहियेपरकाविनादीयाधनपरमहिलाकहियेपरकीस्त्रींका नि
तौपरिहारकहियेत्यागवहुरिपरिग्रहँआरंभकापरमाणऐसेंपांचअणुव्र अर
तहै॥भावार्थ॥इहांथूलकहनेमैंऐसाअर्थजाननांजामैंअपनांमरणहोय
परकामरणहोयअपनांघरविगडैपरकाघरविगडैराजकादंडयोग्यहोय
पंचनिकैदंडयोग्यहोयऐसेमोटेअन्यायरूपपापकार्यजाननेंऐसेस्थूल
पापराजादिककाभयकरिनकरैसोव्रतनाहीइनिकूंतीव्रकषायकेनिमित
तेतीव्रकर्मबंधकेनिमित्तजाणिस्वयमेवनकरनेंकेभावरूपत्यागहोयसो
व्रतहैतथायाकेग्यारहस्थानककहेतिनिमैंउपरिउपरित्यागवधताजायहै
सोयाकीउत्कृष्टताताईऐसाहैजोजिनकार्यनिमैंत्रसजीवनिकूंवाधाहोय

ऐसैसर्वही कार्य छूटि जाय है तातैं सामान्य ऐसा कह्या है जो त्रसहिंसा का त्यागी दे
सव्रती होय है या का विशेष कथन अन्य ग्रंथनि में जानना ॥ ॥ आगैं तीन गु
णव्रतनीकूं कहै है ॥ गाथा ॥ दिसिविदिसिमाणपढमं अणत्थदंडस्सवज्जणं बि
दियं भोगोपभोगपरिमाणं इयमेव गुणव्वया तिण्णि ॥ ४५ ॥ अर्थ ॥ दिसाविदिसा
विषै गमनका परिमाण सो प्रथम गुणव्रत है बहुरि अनर्थदंडका वर्जना दि
तीय अणुव्रत है बहुरि भोग उपभोगका परिमाण सो तीसरा गुणव्रत है ऐसै
ए तीन अणुव्रत है ॥ भावार्थ ॥ इहां गुण शब्द है सो उपकार वाचक है ए अणुव्र
तनिकूं उपकार करै है बहुरि दिशा विदिसा पूर्व दिशा आदिक है तिनि विषै
गमन करनेकी मर्याद करै बहुरि अनर्थदंड कहिये जिन कार्यमै अपना प्र ८७
योजन न सधै ऐसा पापकार्य तिनिकूं न करै इहां कोई पूछै प्रयोजन विना

तौ कोई भी पुरुष कार्य नै करै है जो कहे है जो किछू प्रयोजन विचारी ही करै
अनर्थदंड कहा ता का समाधान सम्यग्दृष्टी श्रावक होय सो प्रयोजन अप
ने पद योग्य विचारै है पद सिवाय सो अनर्थ है और पापी पुरुषनिकै तौ सर्व ही
पाप प्रयोजन है तिनिकी कहा कथा बहुरि भोग कहने में भोजनादिक उप
भोग कहने में स्त्री वस्त्र आभूषण आदि तिनिका परिमाण करै ऐसै जानना ।
॥ ॥ आगैं च्यारि सिक्षाव्रतनिकूं कहै है ॥ गाथा ॥ सामाइयं च पढमं विदियं
च तहेव पोसहं भणियं ॥ तईयं च अतिहिपूजं चउत्थ सल्लेहणा अंते ॥ ४६
॥ अर्थ ॥ सामायिक तौ पहला सिक्षाव्रत है तैसे ही दूजा प्रोषध व्रत है तीजा ।
अतिथिका पूजन है चौथा अंत समय सल्लेखना व्रत है ॥ भावार्थ ॥ इहां सि
क्षाका शब्द करि तौ ऐसा अर्थ सूचै है जो आगामी मुनिव्रत है ताकी सिक्षा

इनिमै है जो मुनि होगा तब ऐसें रहना होयगा ॥ तहां सामायिक कहने तैं तो राग
द्वेषका त्यागि करि सर्व ग्रहारंभ संबंधी पापक्रियातैं निवृत्ति करि एकांत स्थान क
वे विषं नातिमध्याह्न अपराह्न कि कछु काल की मर्याद करि आपना स्वरूप का चिंत
वन तथा पंचपरमेष्टी की भक्ति का पाठ पढना तिनिकी वंदना करनी इत्यादि वि
धान करना जाननां ॥ बहुरि तैसे ही प्रोषध कहिये आठे चोदसि पर्वनि विषै प्रत
ख्यान करि धर्मकार्य मैं प्रवर्त्तना सो प्रोषध है ॥ बहुरि अतिथि कहिये मुनि तिनि
का पूजन करना आहारदान करनां सो अतिथि पूजन है ॥ बहुरि अंत समय विषै
काय का अर कषाय का कृस करना समाधिमरन करनो सो अंत सलेखनां है
ऐसें च्यारि सिक्षाव्रत है इहां प्रश्न जो तत्वार्थसूत्र मैं तो तीन गुणव्रत मै देशव्रत ८२
कह्या अर भोगोपरिमाण सिक्षाव्रत मैं कह्या अर संलेखना मारणांतिक कह्या अर

इहां ऐसें कह्या सो यह कैसें ता का समाधान जो यह विवक्षा का भेद है इहां दे
शव्रत दिग्व्रत मैं गर्भित है अर सलेखना सिक्षाव्रत मैं कह्या है किछु विरोध है
नाही ॥ छ ॥ आगै कहै है जो संयमचरण चारित्र विषैं ऐसें तो श्रावक धर्म कह्या ।
अब यतीधर्म कूं कहूंगा ॥ गाथा ॥ एवं सावयधम्मं संयमचरणं उदेसियं सयल
लं । सुद्धं संयमचरणं जइधम्मं निक्कलं वोच्छे ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ एवं कहिए या प्रकार
श्रावक धर्मस्वरूप संयमचरण तो कह्या कैसा है यह सकल कहिये कला स
हित है एकदेश कूं कला कहिए बहुरि अब यती का धर्मस्वरूप संयमचरण है
ताहि कहूंगा ऐसी आचार्य प्रतिज्ञा करी है ॥ कैसा है यतीधर्म शुद्ध है निर्दो
ष है या मैं पापाचरण का लेस नाही है ॥ बहुरि कैसा है निकल कहिये कला तैं
निःक्रांत है संपूर्ण है श्रावक धर्म की ज्यौं एकदेश नाही है ॥ छ ॥ आगै यतीधर्म की

अ०पा० सामग्री कहै है ॥गाथा॥ पंचिंदियसंवरणं पंचवया पंचविंसकिरियासु पंचस
८२ मितितयगुत्ती संयमच्चरणं निरायारं ॥२८॥ अर्थ ॥ पंच इंद्रियका संवरण ॥ पां
च व्रत ते पचीस क्रियाके सद्भाव होतें होय ॥ बहुरि पांच समिति तीन गुप्ति ऐसें
निराकार संयमचरण चारित्र होय है ॥ छ ॥ आगें पांच इंद्रिय संवरणका स्वरूप
कहै है ॥गाथा॥ अमणुण्णे य मणुण्णे सजीवदव्वे अजीवदव्वे य ॥ न करेय रायदो
से पंचिंदियसंवरो भणिओ ॥२९॥ अर्थ ॥ अमनोज्ञ तथा मनोज्ञ ऐसे जे जिनकूं
लोक अपने मानैं ऐसे सजीव द्रव्य स्त्री पुत्रादिक अर अजीव द्रव्य धनधान्य
आदि सर्व पुद्गल द्रव्य आदि अजीव द्रव्य तिनि विषै रागद्वेष न करै सो ये पांच
इंद्रियनिका संवर कह्या है ॥भावार्थ॥ इंद्रियगोचर जे जीव अजीव द्रव्य है ते इं ८२
द्रियनिके ग्रहणमें आवै हैं तिनिमें यह प्राणी काहूकूं इष्ट मानि राग करै

है काहूकूं अनिष्ट मानि द्वेष करै है सो ऐसें रागद्वेष मुनि नांही करै ताकै सं
यमचरण चारित्र होय ॥ छ ॥ आगे पांच व्रतनिका स्वरूप कहै है ॥गाथा॥
हिंसाविरइ अहिंसा असच्चविरई अदत्तविरई य ॥ तुरियं अबंभविरई
पंचम संगम्मि विरई य ॥३०॥ अर्थ ॥ प्रथम तो हिंसातैं विरति सो अहिंसा है ॥ बहु
रि दूजा असत्यविरति है ॥ बहुरि तीजा अदत्तविरति है ॥ बहुरि चौथा अब्रह्म
विरति है बहुरि पांचमां परिग्रह विषै विरति है ॥भावार्थ॥ इनि पांच पापनिका
सर्वथा त्याग जिनमें होय ते पांच महाव्रत है ॥ छ ॥ आगें इनिकूं महाव्रत ऐसा
नाम काहे तैं है सो कहै है ॥गाथा॥ साहंति जं महल्ला आयरियं जं महल्लपुव्वे
हिं जं च महल्लाणि तदो महव्वयाइं तहेयाइं ॥३१॥ अर्थ ॥ वचनगुप्ति बहु
रि मनोगुप्ति ऐसें दोय तौ गुप्ति अर ईर्यासमिति बहुरि भले प्रकार कमंडलु

अ॰पा॰ ८३

दिकाग्रहण निक्षेपण ह्न आदान निक्षेपणा समिति ॥ बहुरि नीके देखि विधि
पूर्वक शुद्ध भोजन करणां यह एषणा समिति ऐसें ए पांच अहिंसा महाव्रतकी
भावना है ॥ भावार्थ ॥ भावना नाम वार वार तिसही का अभ्यास करनां ताका
है सो इहां प्रवृत्ति निवृत्ति मैं हिंसा लागै ताका निरंतर यत्न राखै तब अहिंसा
व्रत पलै यातैं इहां योगनि की निवृत्ति करणी तौ भले प्रकार गुप्तिरूप करणी
अर प्रवृत्ति करणी तौ समिती रूप करणी ऐसें निरंतर अभ्यासैं अहिंसा महा
व्रत दृढ रहै है ऐसा आशय तै इनिकूं भावना कही है ॥ ३ ॥ आगैं सत्य महा
व्रतकी भावनाकूं कहै है ॥ गाथा ॥ कोहभयहासलोहामोहाविवरीयभा
वनाचेव विदियस्स भावणाए एएं चेव पंच तहा होंति ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ क्रोध भय ८३
हास्य लोभ मोह इनि तैं विपरीत कहिये उलटा इनिका अभाव ए द्वितीय व्र

त जो सत्य महाव्रत ताकी भावना है ॥ भावार्थ ॥ असत्य वचनकी प्रवृत्ति हो
य है सो क्रोध तैं तथा भय तैं तथा हास्य तैं तथा लोभ तैं तथा परद्रव्य तैं मोह
रूप मिथ्यात्व तैं होय है सो इनिका त्याग भये सत्य महाव्रत दृढ रहै है ॥ ब
हुरि तत्वार्थसूत्र मैं पांचमी भावना अनुवीची भाषणा कहिये है सो याका
अर्थ यहु जो जिनसूत्र अनुसार वचन बोलै अर इहां मोहका अभाव
कह्या सो मिथ्यात्वके निमित्त तैं सूत्रविरुद्ध कहै मिथ्यात्वका अभाव भये
सूत्र विरुद्ध कहै सो अनुवीची भाषणा भी यह है ही अर्थ नयामैं अर्थ भेद
नाही है ॥ ३ ॥ आगैं अचौर्य महाव्रतकी भावनाकूं कहै है ॥ गाथा ॥ सुण्णाया
रणिवासो विमोचिदावासजं परोधं च । एसणसुद्धिसउत्तं साहम्मीसंविसं
वादो ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ सुन्यागार कहिये गिरि गुफा तरुकोटरादि विषै निवास क

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

अ० पा० ८४ रना॥ वहुरि विमोचितावास कहिए जो लोककूं कारणतैं छोडि दीया
ऐसा ग्रह ग्रामादिक तामैं निवास करनां॥ वहुरि परोध कहिए पर का जहां उ
परोध न करिये वस्तिकादिक कूं अपणा पर कूं वर्जना ऐसैं न करनां॥ व
हुरि एषणाशुद्ध कहिए आहार शुद्ध लेणां वहुरि साधर्मीनिकरि विसंवाद
न करना ए पांच भावनां अचौर्य महाव्रत की है॥ भावार्थ मुनिनि कै वस्तिका
मैं वसनां अर आहार लेनां ए दोय प्रवृत्ति हैं अर कंप होय तहां लोक मैं इनि ही
के निमित्त अदत्त का आदान होय है मुनि वसै सो असी जायगा वसै जहां
अदत्त का दोष न लागै वहुरि आदिकतैं विसंवाद न उपजै ऐसैं ए पांच भा
वना कही है इनि के होतें अचौर्य महाव्रत दृढ रहै है॥ ० ॥ आगै ब्रह्मचर्य म ८४
हाव्रत की भावना कूं कहै है॥ गाथा॥ महिलालोयणपुव्वरयसरण संस
त्तवसहिविकहाहिं पुट्ठियरसेहि विरओ भावण पंच वि तुरियम्मि॥३५॥
अर्थ॥ स्त्रीनि की आलोकन कहिए रागसहित देखना पूर्वभोग कीये का
स्मरण करनां स्त्रीनिकरि संसक्त वस्तिका मैं वसनां स्त्रीनि की कथा करना
पुष्टकारी रस का सेवन करना इनि पांचनितैं विकार उपजै ता तैं इनितैं विर
त रहनां ए पांच ब्रह्मचर्य महाव्रत की भावनां है॥ भावार्थ॥ कामविकार के
निमित्तनितैं ब्रह्मचर्य व्रत भंग होय है सो स्त्रीनि का रागभावतैं देखना इत्या
दिक निमित्त कहे तिनि मैं विरक्त होनां प्रसंग करनां या तैं ब्रह्मचर्य महाव्र
त दृढ रहै है॥ ० ॥ आगै पांचमहाव्रत की भावनां कहै है॥ गाथा॥ अपरिग्ग
हसमणुण्णेसु सद्दपरिसरसरूवगंधेसु रायद्दोसाईणं परिहारो भावणा
होंति॥३५॥ अर्थ॥ शब्द स्पर्श रस रूप गंध ए पांच इंद्रियनि के विषय तिन के स

अमनोज्ञकहियेमनोज्ञकरिसहितअमनोज्ञऐसैंदोऊनिविषैंरागद्वेषआ
दिकानकरनांतेपरिग्रहत्यागव्रतकीएपांचभावनाहै॥भावार्थ॥पांचइंद्रि
यनिकेविषयस्पर्शरसगंधवर्णशब्दहैंतिनिविषैइष्टअनिष्टबुद्धिरूपरा
गद्वेषनकरैअपरिग्रहव्रतदृढरहैहैतातैंएपांचभावनाअपरिग्रहम
हाव्रतकीकहीहै॥३०॥आगेंपांचसमितिकूंकहैहै॥गाथा॥इरियाभासा
एसणा॥जासाआदाणाचेवनिरकेवो॥संजमसोहिणिमित्तंखंतिजि
णापंचसमिदीओ॥३७॥अर्थ॥ईर्याभाषाएषणावहुरिजोआदानअरनि
क्षेपऐसैएपंचसमितिसंयमकीशुद्धताकेकारणहै॥तेजिनदेवकहैहै
॥भावार्थ॥मुनिपंचमहाव्रतरूपसंयमकासाधनकरैहैतिससंयमकीशु ८५
द्धताकेअर्थिपांचसमितिरूपप्रवर्त्तैहैयाहीतैंयाकानामसार्थिकहैसे

कहियेसम्यक्प्रकारइनिकहियेप्रवृत्तिजामैंहोयसोप्रवृत्तिहै॥गमनक
रैतबजूडाप्रमाणधरतीदेखिचालैहैबोलैतबहितमितरूपवचनबो
लैहैआहारलेयसोछीयालीसदोषबत्तीसअंतरायटालिचौदामलर
हितशुद्धआहारलैहैधरमउपकरणनिकूंउठायलैतबयत्नपूर्वकग्र
हणकरैहैतैसैंहीकिछूक्षेपैतबयत्नपूर्वकक्षेपैहै॥ऐसैंनिःप्रमादप्र
वर्त्तैतबसंयमशुद्धपलैहैतातैंपंचसमितिरूपप्रवर्त्तिकहीहै॥३०॥
आगेंसंयमचरणचारित्रकीप्रवृत्तिकहीअबआचार्यनिश्चयचारित्र
कूंमनमैंधारिज्ञानकास्वरूपकहैहै॥अरज्ञानस्वरूपआत्माहैताका
अनुभवकाउपदेशकरैहै॥गाथा॥भवजणबोहणत्थंजिणमग्गेजि
णवरेहिंजहभणियंणाणंणाणसरूवंअप्पाणंतंवियाणेहि॥३८॥

जिनमार्गविषैजिनेश्वरदेवनैभव्यजीवनिकेसंबोधनकेअर्थिजैसाज्ञा
नअरज्ञानकास्वरूप क ह्याहैतिसज्ञानस्वरूपआत्माहैताहिहे
भव्यजीवतूजाणि॥भावार्थ॥ज्ञानकूंज्ञानकास्वरूपकूंअन्यमतीअ
नेप्रकारकहैहैतैसाज्ञानअरतैसास्वरूपज्ञानकानांहीहैजोसर्वज्ञ
वीतरागदेवभाषितज्ञानअरज्ञानकास्वरूपहैसोनिर्बाधसत्यार्थहै
अरज्ञानहैसोहीआत्माहैतथाआत्माकास्वरूपहैतिसकूंजाणिअ
रतिसमैथिरताभावकरैपरद्रव्यनितैरागद्वेषनकरैसोहीनिश्चय
चारित्रहैसोपूर्वोक्तमहाव्रतादिकीप्रवृत्तिकरिइसज्ञानस्वरूपआ
त्माविषैलीनहोनांऐसाउपदेशहै॥३८॥आगैंकहैहैजोऐसेज्ञान ८६
करिऐसैंजानैसोसम्यग्ज्ञानीहै॥गाथा॥जीवाजीवविभत्ती जोजाण

इसोहवेइसण्णाणी॥रायादिदोसरहिओजिणसासणमोरकमग्गुत्ति॥३९
॥भावार्थ॥जोपुरुषजीवअरअजीवइनिकाभेदजाणैसोसम्यग्ज्ञानी
होय।बहुरिरागादिदोषनिकरिरहितहोयऐसाजिनसासनविषैमो
क्षमार्गहै॥भावार्थ॥जोजीवअजीवपदार्थकास्वरूपभेदरूपजाणिआ
पापरकाभेदजाणैसोसम्यग्ज्ञानीहोयअरपरद्रव्यनितैंरागद्वेषछोड
मेंतैज्ञानमैथिरताभयेंनिश्चयसम्यक्चारित्रहोयसोहीजिनमतमै
मोक्षमार्गकास्वरूपकह्याहैअन्यमतीनितैंअनेकप्रकारकल्पनांक
रिकह्याहैसोमोक्षमार्गनाही॥३९॥आगेंऐसामोक्षमार्गकूंजाणिश्र
द्धासहितयामैंप्रवर्त्तेहैसोसीघ्रहीमोक्षपावैहैऐसाकहैहै॥गाथा॥दंसण
णाणचरित्तंतिण्णिविजाणेहपरमसद्धाए।जंजाणिऊणजोइ।अइरेण
ति

अ०पा० ८१

लहंतिणिव्वाणं ॥४०॥ अर्थ ॥ हि भव्य तूं दर्शन ज्ञान चारित्र इनि तीननि
कूं परम श्रद्धा करि जाणि ॥ जिसकूं जाणि करि जोगी मुनि हैं सो थोरे
ही कालमें निर्वाण कूं पावै है ॥ भावार्थ ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र त्र
यात्मक मोक्षमार्ग है ताकै श्रद्धा पूर्वक जाननेंका उपदेश है जातें य ।
कूं जानें मुनिनिकै मोक्षकी प्राप्ति होय है ॥ ॥ आगे कहै है ऐसैं निश्च
य चारित्र रूप ज्ञानका स्वरूप कह्या इसकूं जो पावै है सो सिवरूप मंदिरके
वसनेंवाले होय है ॥ गाथा ॥ पीऊण णाणसलिलं । णिम्मलसुविसुद्धभावसंजु
त्ता । हुंति सिवालयवासी तिहुवणचूडामणी सिद्धा ॥४१॥ अर्थ ॥ जे पुरुष
इस जिनभाषित ज्ञानरूप जलकूं पाय करि अपना निर्मल भलै प्रका ८१
र विशुद्ध भाव करि संयुक्त होय है ते पुरुष तीन भवनके चूडामणि

अर शिव कहिये मुक्ति सो ही भया आलय कहिये मंदिर तामैं वसनें
वाले ऐसे सिद्ध परमेष्ठी होय है ॥ भावार्थ ॥ जैसैं जलतैं स्नान करि शु
द्ध होय उत्तम पुरुष महलमें निवास करै है । तैसैं यह ज्ञान है सो जलव
त है अर आत्माकै रागादिक मल लगनेतैं मलिनता होय है सो इ
स ज्ञानरूप जलतैं रागादिक मल धोय जे अपने आत्माकूं शुद्ध करै है
ते मुक्तिरूप महलमें वसि आनंद भोगवै है तिनिकूं तीन भवनके
सिरोमणि सिद्ध कहिये है ॥ ॥ आगे कहै है ज्ञान गुणकरि जे रहि
त है ते इष्ट वस्तु न पावैं गुण दोषके जाननेंकूं ज्ञानकूं भलै प्रकार जा
नना ॥ गाथा ॥ णाणगुणेहिं विहीणा ण लहंते ते सुइच्छियं लाहं । इय णा
उं गुणदोसं तं सण्णाणं वियाणेहि ॥४२॥ अर्थ ॥ ज्ञान गुण करि हीन जे

अ०पा० पुरुष है ते अपना इच्छित इष्टवस्तु का लाभ कूं नाही पावै है ऐसा
८८ जाणि करि हे भव्य तू पूर्वोक्त सम्यज्ञान है ताहि गुण दोष के जानने कूं
जाणि ॥ भावार्थ ॥ ज्ञान विना गुण दोष का ज्ञान नांही होय तब अपा
नें इष्टवस्तु तथा अनिष्ट कूं नाही जानैं तब इष्टवस्तु का लाभ न हो
य तातैं सम्यग्ज्ञान ही करि गुण दोष जान्या जाय है यातैं गुण दोष जा
ननें कूं सम्यग्ज्ञान कूं जाननां सम्यग्ज्ञान विना हेय उपादेय वस्तु
का जाननां न होय अर हेय उपादेय जानें विनां सम्यक्चारित्र नाही
होय है तातैं ज्ञान ही कूं चारित्र तें प्रधान करि कह्या है ॥ छ ॥ आगैं कहै है
जो सम्यग्ज्ञान सहित चारित्र धारै है थोरे ही काल मैं अनुपम सुख कूं ८८
पावै हैं ॥ गाथा ॥ चारित्तसमारूढो अप्पासु परं ण ईहए णाणी ॥ पाव

इ अइरेण सुहं अणोवमं जाण णिच्छयदो ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ जो पुरुष ज्ञानी
है अर चारित्र करि सहित है सो अपने आत्मा विषै कूं ही नांही इछै है
पर द्रव्य विषै राग द्वेष मोह नाही करै है सो ज्ञानी जाकी उपमा नाही ऐ
सा अविनाशी मुक्ति का सुख पावै है ऐसै हे भव्य तू निश्चय तैं जाणि इहां
ज्ञानी होय है यउपादेय कूं जानि संयमी होय है परद्रव्य कूं आपमैं न मि
लावै सो परम सुख पावै है ऐसा जनाया है ॥ छ ॥ आगैं इस चारित्र के क
थन कूं संकोचै है ॥ गाथा ॥ एवं संखेवेण य भणियं णाणेण वीयराएण ॥ सं
म्मत्तसंजमासय दुण्हं पि उद्देसियं चरणं ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ एवं कहिए ऐसै
पूर्वोक्त प्रकार संक्षेप करि श्री वीतराग देव नै कह्या ऐसा सम्यक्त्व अर
संयम इनि दोऊनि कै आश्रय दोऊनि के चारित्र दोय प्रकार कह्या है

BHAU DAJI MEMORIAL

अष्टपा॰ कैसाहैवीतरागज्ञानरूपसर्वज्ञहै॥भावार्थ॥श्रीवीतरागसर्वज्ञदेव
८९ नैभाष्याजोचारित्रताकापूर्वोक्तप्रकारसंक्षेपकरिसम्यक्त्वअरसंय
मइनिदोऊनिकैआश्रयसम्यक्त्वचरणस्वरूपअरसंयमचरणस्वा
रूपदोयप्रकारकरिउपदेशकीयाहै॥आचार्यचारित्रकाकथनसंक्षेप
रूपकहिसंकोच्याहै॥४॥आगैइसचारित्रपाहुडकूंभावनेकाउपदे
शअरयाकाफलकहैहै॥गाथा॥भावेहभावशुद्धंफुडरइयंचरणपाह
उडंचेवलहुचउगइचइऊणं॥अचिरेणउणभवाहोह॥४५॥अर्थ
आचार्यकहैहैजोहेभव्यजीवहोयहचरणकहियेचारित्रकापाहु
डहमनेस्फुटप्रगटकरिरच्याहैताकूंतुमअपनाभावकूंशुद्धकरि ८९
भावोअपनेभावनिमैंवारंवारअभ्यासकरोयातैंसीघ्रहीच्यारिगति

निकूंछोडिकरिवहुरिअपुनर्भवजोमोक्षसोतुमारैहोयगा॥फेरिसं
सारमैंजनमनपावोगे॥भावार्थ॥इसचारित्रपाहुडकावाचनापढना
धारनावारवारभावनाअभ्यासकरनायहउपदेशहैयातैंचारित्रक 1
स्वरूपजाणिधारनेकीरुचिहोयअंगीकारकरैतवच्यारिगतिरूप
संसारकेदुःखतैंरहितहोयनिर्वाणकूंप्राप्तिहोयफेरिसंसारमैंज
न्ममरणधारैनातैंजेकल्याणकेअर्थिहैतेऐसेकरो॥४५॥छप्पय॥चा
रितदोयप्रकारदेवजिनवरनैंभाष्या॥समकितसंयमचरणज्ञान
पूरवतिसराष्या॥जेनरसरधावानयाहिधारैविधिसेती॥निश्चय
अरव्यवहाररीतिआगममैंजेती॥जवजगधंधासवमेटिकैंनिज
स्वरूपमैंथिररहैं॥तवअष्टकर्मकूंनासिकैंअविनासीसुखशिवव

है ॥ १ ॥ ऐसैं सम्यक्त्वचरण चारित्र अर संयमचरण चारित्र ऐसैं
दोय प्रकार चारित्र का स्वरूप इस प्राभृत विषै कह्या ॥ दोहा ॥ जिन
भाषित चारित्र कूं पालै जे मुनिराज ॥ तिनिके चरणनमूं सदा
पाऊं तिन गुण साज ॥ १ ॥ इति श्रीचारित्रपाहुडकी वचनिका
समाप्त ॥ ॥ अथ बोधपाहुडकी देशभाषामय वचनि
का लिखिये है ॥ दोहा ॥ देव जिनेश्वर सर्वगुरु ॥ वंदौं मन वच काय
जा प्रसाद भवि बोध ले पावै जीवनिकाय ॥ १ ॥ ऐसैं मंगल करि श्रीकुं
दकुंद आचार्य कृत गाथाबंध बोधपाहुड ग्रंथ है ताकी देशभाषा
मय वचनिका लिखिये है तहां प्रथम ही आचार्य ग्रंथ करनेकी मं
गलपूर्वक प्रतिज्ञा करै है ॥ गाथा ॥ बहुसत्थअत्थजाणे ॥ संयमसम्मत्त

सुद्धतवयरणे ॥ वंदित्ता आयरिए कसायमलवज्जिदे सुद्धे ॥ १ ॥ सय
लजणबोहणत्थं ॥ जिणमग्गे जिणवरेहि जह भणियं ॥ वुच्छामि सम
सेण छक्कायसुहंकरं सुणसु ॥ २ ॥ युग्मं ॥ अर्थ — आचार्य कहै है जो मैं
आचार्यनि कूं वंदि करि अर छकायके जीवनिकौं सुखका करने
वाला जिनमार्ग विषै जिनवरदेवनि जैसैं कह्या तैसा समस्तलोक
निका हितका है प्रयोजन जामैं ऐसा ग्रंथ संक्षेप करि कहूंगा ताकूं
हे भव्यजीव तू सुणि जिनि आचार्यनि कूं वंदे ते आचार्य कैसे है ब
हुत शास्त्रनिका अर्थके जाननेवाले है ॥ बहुरि कैसे है संयम अर
सम्यक्त्व इनि करि शुद्ध है तपश्चरण जिनिके ॥ बहुरि कैसे है कषा
यरूप मल करि वर्जित है याहीतै शुद्ध है ॥ भावार्थ ॥ इहां आचार्यनि कूं

अ०पा०
८१

वंदनाकरीतितिनिकेविशेषणनितैंजानियेहैगणधरादिकतैंलगा
यअपनेंगुरूपर्यंततिनिकूंवंदनाहै॥ बहुरिग्रंथकरनेंकीप्रतिज्ञाक
रीताकेविशेषणनितैंजानियेहैजोवोधपाहुडग्रंथकरियेगासो
लोककूंधर्ममार्गमैंसावधानकरिकुमार्गछुडायअहिंसाधर्म
काउपदेसकरियेगा॥ २॥ आगैंइसवोधपाहुडमैंग्यारहस्थान
वांधेहैतिनिकेनामकहेहै॥ गाथा॥ आयदणंचेदिहरं॥ जिणप
डिमादंसणंचजिणविंवं॥ भणियंसुवीयरायं जिणमुद्दाणाण
मादत्थं॥ ३॥ अरहंतेणसुदिट्ठं जंदेवंतित्थमिहय॥ अरहंतंपाव
ज्जगुणविसुद्धा॥ इयणायव्वाजहाकमसो॥ ४॥ अर्थ॥ आयतनचै
त्यगृहजिनप्रतिमा दर्शन जिनविंवकैसाहै जिनविंवसुष्ठुअजैस

८१

कारवीतरागहैरागसहितनांहीजिनमुद्रा॥ ज्ञानसोकैसाआत्माही
हैअर्थकहियेप्रयोजनजामैं॥ ऐसैंसाततौएजैसैंवीतरागदेवनेंकहे
तैसैंयथाक्रमतेजाननें॥ ७॥ वहुरिदेवतीर्थअरहंतअरगुणकरि
विशुद्धप्रव्रज्याएच्यारिजोअरहंतभगवांनकहेतैसैंइसग्रंथविषै
जाननें ऐसैंयेग्यारहस्थानभये॥ भावार्थ॥ इहांऐसाजाननांजोधर्ममा
र्गमैंकालदोषतैंअनेकमतभयेहैतथाजैनमतमैंभीभेदहैतिनिमैंआ
यतनआदिविषैविपर्ययभयाहैतिनिकापरमार्थभूतसांचास्वरूप
तौलोकजानैंनांहीअरधर्मकेलोभीभयेजैसीवाह्यप्रवृत्तिदेषैतिस
हीमैंलागिप्रवर्त्तनलगिजायतिनकूंसंवोधनेंकेअर्थयहुवोधपाहु
डरच्याहैतामैंआयतनआदिग्यारहस्थानकनिकापरमार्थभूतस्वरू

अ॰ पा॰ १५१

पजैसा सर्वज्ञदेवनैं कह्या हैं। तैसा कहियेगा ते अनुक्रमतें जैसें नाम कहे तैसें ही
अनुक्रम करि इनिका व्याख्यान करियेगा सो जाननें योग्य है॥ छ॥ आगैं प्रथम
ही आयतन कह्या ताका निरूपण करै है॥ गाथा॥ मणवयणकायदव्वा आयत्ता
जस्स इंदिया विसया आयदणं जिणमग्गेणिद्दिट्ठं संजयं रूवं॥ ५॥ अर्थ॥ जि
नमार्ग विषै संयमसहित मुनिरूप है सो आयतन कह्या है। कैसा है मुनिरूप
जाकै मन वचन काय द्रव्यरूप है ते तथा पांच इंद्रियनिके स्पर्श रस गंध वर्ण
शब्द ये विषय हैं ते आयत्ता कहिये आधीन है वसीभूत है इनिकै संयमी मुनि
आधीन नांही है मुनिकै वसीभूत है ऐसा संयमी है सो आयतन है॥ आगैं
फेरि कहै है॥ गाथा॥ मयराय दोस मोहो कोहो लोहो य जस्स आयत्ता। पंचम १५१
हव्वयधारी आयदणं महरिसी भणियं॥ ६॥ अर्थ॥ जा मुनिकै मद राग द्वेष मो

ह क्रोध लोभ अर चकार तैं माया आदिक ए सर्व आयतन कहिए निग्रह
कूं प्राप्त भये बहुरि जो पांच महाव्रत जे अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य प
रिग्रहका त्याग इनिका धारी होय ऐसा महामुनि ऋषिश्वर आयतन कह्या है
॥ भावार्थ॥ पहली गाथामें तो बाह्यका रूप कह्या था। इहां बाह्य अभ्यंतर दो
उ प्रकार संयमी होय सो आयतन है ऐसा जाननां॥ छ॥ आगैं फेरि कहै है
॥ गाथा॥ सिद्धं जस्स सदत्थं॥ विसुद्धझाणस्स णाणजुत्तस्स सिद्धायतणं सि
द्धं मुणिवरवसहस्स मुणिदत्थं॥ ७॥ अर्थ॥ जा मुनिकै सदर्थ कहिये समी
चीन अर्थ जो शुद्ध आत्मा सो सिद्ध भया होय सो सिद्धायतन है कैसा है मु
नि विशुद्ध है ध्यान जाकै धर्मध्यानकूं साधि शुक्लध्यानकूं प्राप्त भया है ब
हुरि कैसा है ज्ञानकरि सहित है केवलज्ञानकूं प्राप्त भया है। बहुरि

केसा है शुद्ध है घाति कर्मरूप मलतें रहित है। याही तें मुनिनि में वृषभ कहि
ये प्रधान है। बहुरि केसा है जानें है समस्त पदार्थ जानें ऐसे मुनि प्रधान कूं
सिद्धायतन कहिये। भावार्थ ऐसें तीन गाथा में आयतन का स्वरूप कह्या
हां तो पहली गाथा में तो संयमी सामान्य का बाह्यरूप प्रधान करि कह्या
दूजी में अंतरंग बाह्य दोऊ की शुद्धता रूप ऋषिधारी मुनि ऋषीश्वर क
ह्या बहुरि तीसरी गाथा में केवलज्ञानी है मुख्य सो मुनिनि में प्रधान है ताकूं
सिद्धायतन कह्या है। इहां ऐसा जानना जो आयतन नाम जामें बसिये निवा
स करिये ताका है सो धर्म पद्धति में जो धर्मात्मा पुरुष के आश्रय करनें यो
ग्य होय सो धर्मायतन है सो ऐसे मुनि ही धर्म के आयतन है अन्य केई भे ९३
षधारी पाखंडी विषय कषायनि में आयत परिग्रहधारी धर्म के आयतन

नाही है तथा जैनमत में भी जे सूत्र विरुद्ध वर्त्तें हैं ते भी आयतन नाही है ते
सर्व अनायतन है तथा बौद्धमत में पांच इंद्रिय तिनिके विषय राक्ष मन एक ध
र्मायतन शरीर ऐसें बारह आयतन कहे हैं ते भी कल्पित है या तें जैसा आय
तन कह्या जैसा ही जानना धर्मात्मा कूं तिस ही का आश्रय करना आपकी स्तु
ति वंदना प्रशंसा विनयादिक न करना यह बोधपाहुड ग्रंथ करनें का आ
रा शय है। बहुरि जामें ऐसे मुनि बसे ऐसा क्षेत्र कूं भी आयतन कहिये है सो व्य
वहार है॥७॥ आगें चैत्यगृह का निरूपण करे है। गाथा। बुद्धं जं बोहंतो अ
प्पाणं चेइयाइ अण्णं च। पंचमहव्वयसुद्धं णाणमयं जाण चेदिहरं॥८॥ अर्थ।
जो मुनि बुद्धि कहिये ज्ञानमयी ऐसा आत्मा ताहि जानता होय बहुरि अन्य
जीवनि कूं चैत्य कहिये चेतनास्वरूप जानता होय बहुरि आप ज्ञानमयी हो

MEMORIAL

अ०पा
९४

य बहुरि पांच महाव्रत तिनकरि शुद्ध होय निर्मल होय ता मुनिकूं हे भव्य तूं चैत्य
ग्रह जाणि॥ भावार्थ॥ जामैं आपा परकौं जाननें वाला ज्ञानी निःपाप निर्मल ऐ
सा चैत्य कहिये चेतना स्वरूप आत्मा वसै सो चैत्यग्रह है सो ऐसा चैत्यग्रह
संयमी मुनि है अन्य पाषाण आदिका मंदिर कूं चैत्यग्रह कहना व्यवहार है॥
॥८॥ आगैं फेरि कहै है॥ गाथा॥ चेइय बंधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पयं तस्स॥
चेइहरं जिणमग्गे छक्कायहियंकरं भणियं॥९॥ अर्थ॥ जीव बंध अर मोक्ष बहु
रि सुख अर दुःख आत्मक होय जाके स्वरूपमैं होय ताही कै बंध मोक्ष सु
ख दुःख संभवै ऐसा जो चैत्य ताका ग्रह होय सो चैत्यग्रह है सो जिनमार्ग
विषै ऐसा चैत्यग्रह छह कायका हित करनें वाला होय सो ऐसा मुनि है सो ९४
पांच थावर अर त्रसमैं विकलत्रय अर असैनी पंचेंद्रिय तांई तौ केवल र

क्षा ही करनें योग्य है तातैं तिनकी रक्षा करनेंका उपदेश करै है तथा आप
तिनिकी घात न करै तिनिका यही हित है बहुरि सैनी पंचेंद्रिय जीव है तिन
की रक्षा भी करै है तथा तिनिकूं संसारतैं निवृत्तिरूप मोक्ष होनेंका उप
देश करै है ऐसे मुनिराजकूं चैत्यग्रह कहिये॥ भावार्थ॥ जो किकजन चैत्य
ग्रहका रूप अन्यथा अनेक प्रकार मानैं है तिनिकूं सावधान कीये है॥ जो
जिनसूत्रमैं छकायका हित करनेवाला ज्ञानमयी संयमी मुनि है सो चैत्य
ग्रह है अन्यकूं चैत्यग्रह कहनां माननां सो व्यवहार है॥ ऐसैं चैत्यग्रहका
स्वरूप कह्या है॥९॥ आगैं जिनप्रतिमाका निरूपण करै है॥ गाथा॥ सपरा
जंगमदेहा दंसणणाणेण सुद्धचरणाणं॥ णिग्गंथवीयराया जिणमग्गे एरि
सा पडिमा॥१०॥ अर्थ॥ दर्शन ज्ञान करि शुद्ध निर्मल है चारित्र जिनिकै ति

अ॰पा॰ निकीस्वपरकहिए आपनी अरपरकीचालनी देहहैसोजिनमार्गविषेप्र
१०५ तिमाहै अथवास्वपराकहिए आत्मातैंपरकहिए भिन्नऐसी देहहैसोकै
सीहैनिर्ग्रंथस्वरूपहैजाकैकिछूपरिग्रहकालेशनाहीऐसीदिगंबरमुद्रा
वहुरिकैसीहैवीतरागस्वरूपहैजाकैकाहूवस्तुसूंरागद्वेषनांहीजिनमा मोह
र्गविषेऐसीप्रतिमाकहीहै ॥ भावार्थ ॥ दर्शनज्ञानकरिनिर्मलचारित्रजि
निकेपाईएऐसेमुनिनिकीगुरुशिष्यअपेक्षाआपनीतथापरकीचालनी
देह ॥ निर्ग्रंथवीतरागमुद्रास्वरूपहैसोजिनमार्गविषेप्रतिमाहै अन्यकल्पि
तहै ॥ अरधातुपाषाणआदिकरिदिगंबरमुद्रास्वरूपप्रतिमाकहियेहैसे ।
व्यवहारहैसोभीवाह्यआकृतिऐसीहीहोयसोव्यवहारमेंमानेहै ॥ ७ ॥ आ १०५
गेंफेरिकहेहै ॥ गाथा ॥ जंचरदिसुद्धचरणंजाणइपिच्छेइसुद्धसंमत्तं ॥ साहो

दूवंदणीया ॥ णिग्गंथासंयदापडिमा ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जोशुद्धचारित्रकूंआचरैहै
वहुरिसम्यग्ज्ञानकरियथार्थवस्तुकूंजानैहैवहुरिसम्यग्दर्शनकरिआपने
स्वरूपकूंदेखैहैऐसेंशुद्धसम्यक्तजाकेपाईएहैऐसीनिर्ग्रंथसंयमस्वरूप
प्रतिमाहैसोवंदनेयोग्यहै ॥ भावार्थ ॥ जाननेंवालादेखनेंवालाशुद्धसम्यक्त्व
शुद्धचारित्रस्वरूपनिर्ग्रंथसंयमसहितऐसामुनिकास्वरूपहैसोहीप्र
तिमाहैसोवंदिवेयोग्यहै ॥ अन्यकल्पितवंदिवेयोग्यनाहीहैवहुरितैसेंही
रूपसदृशधातुपाषाणकीप्रतिमाहोयसोव्यवहारकरिवंदिवेयोग्यहै ॥ ७ ॥
आगेंफेरिकहेहै ॥ गाथा ॥ दंसणअणंतणाणं अणंतवीरियअणंतसुक्खा
यसासयसुखअदेहा मुक्काकम्मट्ठबंधेय ॥ १२ ॥ निरुवममचलमखोहाणिम्मा
वियाजंगमेणरूवेण ॥ सिद्धट्ठाणम्मिठियावोसरपडिमाधुवासिद्धा ॥ १३ ॥ मु

अ॰पा॰ १८६ मां॰अर्थ॥ जो अनंतदर्शन अनंतज्ञान अनंतवीर्य अनंतसुख इनि करि सहि
त है। बहुरि शास्वता अविनाशी सुखस्वरूप है बहुरि अदेह है कर्म नोकर्मरू
प पुद्गलमयी देहि जिनि कै नांही है बहुरि अष्टकर्म के बंधकरि रहित है। बहु
रि उपमा रहित है जाकी उपमा दीजिये ऐसा लोक मैं वस्तु नांही है। बहुरि अ
चल है प्रदेशनि का चलनां जाकै नांही है। बहुरि अक्षोभ है। जाकै उपयोग
मैं किछू क्षोभ नांही है निश्चल है। बहुरि जंगमरूप करि निर्मापित है बहुरि सि
द्धस्थान जो लोक का अग्र भाग ता विषै स्थित है याही तैं व्युत्सर्ग कहिये काय
रहित जैसा पूर्वै देह मैं आकार था तैसा प्रदेशनि का आकार किछू घा
टि ऊन है संसार तैं मुक्त होय एक समय गमन करि लोक के अग्र भाग विषै १८६
जाय तिष्ठै पीछैं चलाचल नांही है ऐसी प्रतिमा सिद्ध है॥ भावार्थ॥ पहलैं

दोय गाथा मैं जंगम प्रतिमा संयमी मुनि की देह सहित कही। बहुरि इनि दोय
गाथा मैं थिर प्रतिमा सिद्धनि की कही॥ ऐसैं जंगम थावर प्रतिमा का स्वरू
प कह्या अन्य केई अन्यथा बहुत प्रकार कल्पै है सो प्रतिमा वंदवे योग्य
नांही है। इहां प्रश्न जो यह तो परमार्थ स्वरूप कह्या अर बाह्य व्यवहार
मैं प्रतिमा पाषाणादिक की वंदिये है सो कैसैं। ताका समाधान जो बाह्य व्य
वहार मैं मतांतर के भेद तैं अनेक रीति प्रतिमा की प्रवृत्ति है सो इहां परमार्थ
कूं प्रधान करि कह्या है व्यवहार है सो जैसा परमार्थ होय ताही कूं सूचता हो
य सो निर्बाध होय है सो जैसा प्रतिमा का परमार्थरूप आकार कह्या तैसा ही
आकार कूं लियें व्यवहार होय सो व्यवहार भी प्रशस्त है व्यवहारी जीवनि
कैं यह भी वंदिवे योग्य है स्याद्वाद न्याय करि साधे परमार्थ व्यवहार मैं विरोध

नाही है ऐसा जिनप्रतिमा का स्वरूप कह्या ॥ १३ ॥ आगैं दर्शन का स्वरूप कहै है
॥ गाथा ॥ दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च ॥ णिग्गंथं णाणमयं जिणम
ग्गे दंसणं भणियं ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ जो मोक्षमार्ग कूं दिखावै सो दर्शन है ॥ कैसा है मो
क्षमार्ग सम्यक्त कहिये तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यक्त रूप है वहुरि कैसा है ॥
संयम कहिये चारित्र पंचमहाव्रत पांच समिति तीन गुप्ति ऐसैं तेरह प्रका
र चारित्र रूप है वहुरि कैसा है सुधर्म कहिये उत्तम क्षिमादिक दश लक्ष
ण धर्म रूप है ॥ वहुरि कैसा है ज्ञानमयी है जीव अजीव आदि पदार्थ कूं जा
ननेवाला है ॥ इहां निर्ग्रंथ अर ज्ञानमयी ए दोय विशेषण दर्शन का ली होय है
जातैं दर्शन है सो वाह्य तो याकी मूर्त्ति निर्ग्रंथ रूप है वहुरि अंतरंग ज्ञानम
यी है सो मुनि के रूप कूं जिनमार्ग मैं दर्शन कह्या है तथा ऐसे रूप का श्रद्धा

न रूप सम्यक्त कूं भी दर्शन कहिये है ॥ भावार्थ परमार्थ रूप अंतरंग दर्शन तौ
सम्यक्त है अर वाह्य याकी मूर्त्ति ज्ञान सहित ग्रहण कीया निर्ग्रंथ रूप ऐसा मु
नि का रूप है सो दर्शन है याते मत की मूर्त्ति कूं दर्शन कहना लोक मै प्रसिद्ध है ॥ १४ ॥
आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ जह फुल्लं गंधमयं भवदि हु खीरं च घियमयं चा
वि तह दंसणम्मि सम्मं णाणमयं होइ रूवत्थं ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ जैसैं फूल है सो गंध
मयी है वहुरि दूध है सो घृतमयी है ॥ जैसे दर्शन कहिये मत विषै सम्यक्त है
कैसा है दर्शन अंतरंग तौ ज्ञानमयी है ॥ वहुरि वाह्य रूपस्थ है मुनि का रूप
है तथा उत्कृष्ट श्रावक अर्जिका का रूप है ॥ भावार्थ ॥ दर्शन नाम मत का प्र
सिद्ध है सो इहां जिनदर्शन विषै मुनि श्रावक अर्जिका जैसा वाह्य वेष क
ह्या सो दर्शन जानना अर याकी श्रद्धा सो अंतरंग दर्शन जानना सो ए दोऊ ही ॥

ज्ञानमयी हैं यथार्थ तत्वार्थ का जाननारूप सम्यक्ज्ञान पाईये है याही तैं फ
लमैं गंध का अर इधमै धीव का दृष्टांत युक्त है ऐसैं दर्शन का स्वरूप कह्या अन्य
मत मैं तथा कालदोष करि जिनमत मैं जैनाभास भेषी अनेक प्रकार अन्यथ ।
कहै है सो कल्याणरूप नांही संसार का कारण है ॥ १७ ॥ आगैं जिनबिंब का निरू
पण करै है ॥ गाथा ॥ जिणबिंबं णाणमयं संयमसुद्धं सुवीयरायं च । जो देइ दिक्ख
सिक्खा कम्मक्खयकारणे सुद्धा ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ जिनबिंब कैसा है ज्ञानमयी है अर
संयम करि शुद्ध है बहुरि अतिशयकरि वीतराग है बहुरि जो कर्म का क्षय
कूं कारण अर शुद्ध ऐसी दिक्षा अर सिक्षा दे है ॥ भावार्थ ॥ जो जिन कहिये अर
हंत सर्वज्ञ ताका प्रतिबिंब कहिये ताकी जायगां तिसकौ ज्यौं मानने योग्य ९६
होय ऐसे आचार्य है सो दिक्षा कहिए व्रत का ग्रहण अर सिक्षा कहिये व्रत का

विधान बताबनाए दोऊ कार्य भव्य जीवनि कूं दे है यातैं प्रथम तौ सो आचा
र्य ज्ञानमयी होय जिनसूत्र का जिनकूं ज्ञान विना यथार्थ दिक्षा सिक्षा कैसैं
होय बहुरि आप संयमकरि शुद्ध होय ऐसा न होय तौ अन्य कूं भी संयम
शुद्ध करावै बहुरि अतिशयकरि वीतराग न होय तौ कषायसहित होय
तब दिक्षा सिक्षा यथार्थ न दे यातैं ऐसे आचार्य कूं जिन के प्रतिबिंब जा
ननें ॥ १८ ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ तस्स य करह पणामं सव्वं पुज्जं च विणय
वच्छल्लं ॥ जस्स य दंसण णाणं अत्थि धुवं चेयणाभावो ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ ऐसैं पूर्वो
क्त जिनबिंब कूं प्रणाम करौ बहुरि सर्वप्रकार करि पूजा करौ बहुरि विनय
करौ बहुरि वात्सल्य करौ काहे तैं जा तैं जाकैं ध्रुव कहिये निश्चय तैं दर्शन
ज्ञान पाईये रे है बहुरि चेतनाभाव है ॥ भावार्थ ॥ दर्शनज्ञानमयी चेतनाभा

MEMORIAL

अ०पा० वसहित जिनबिंब आचार्य है तिनिकूं प्रणाम करनां इहां परमार्थ
९९ प्रधान कह्या है तहां जडप्रतिबिंबकी गौणता है ॥ छ ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गा
था ॥ तववयगुणेहि सुद्धो जाणदि पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं । अरहंतमुद्द एसा दा
यारा दिक्खसिक्खाय ॥ १८ ॥ अर्थ जो तप अर व्रत अर गुण कहिए उत्तरगुण
तिनिकरि शुद्ध होय बहुरि सम्यग्ज्ञान करि पदार्थनिकूं यथार्थ जानैं बहु
रि सम्यग्दर्शन करि पदार्थनिकूं देखै याहीतैं शुद्ध सम्यक्त्व जाकै होय ऐ
सा जिनबिंब आचार्य है सो यह दि ही । दीक्षा सिक्षाकी देनें वाली अरहंतकी
मुद्रा है ॥ भावार्थ ॥ ऐसा जिनबिंब है सो जिनमुद्रा ही है ऐसैं जिनबिंबका स्व
रूप कह्या ॥ छ ॥ आगैं जिनमुद्राका स्वरूप कहै है ॥ गाथा ॥ दिढसंजममुद्दाए इं ९९
दियमुद्दा कसायदिढमुद्दा । मुद्दा इह णाणाए जिणमुद्दा एरिसा भणिया

१९ ॥ अर्थ ॥ दिढ कहिए वज्रवत् चलाया न चलै ऐसा संयम इंद्रिय मनका व
शि करना षट् जीवनिकायकी रक्षा करनां ऐसा संयमरूप मुद्रा करि तौ
पांच इंद्रियनिकूं विषयनिमैं न प्रवर्त्तावनां तिनिका संकोचनां यह तौ इं
द्रियमुद्रा है बहुरि ऐसा संयम करि ही कषायनिकी प्रवृत्ति जामैं नांही ऐसी
कषाय दृढमुद्रा है बहुरि ज्ञानका स्वरूप विषै लगावणां ऐसे ज्ञान करि सर्व
बाह्य मुद्रा शुद्ध होय है ऐसैं जिनशासन विषै ऐसी जिनमुद्रा होय है ॥ भावार्थ
संयमसहित इंद्रिय जाकै वसीभूत कषायनिकी प्रवृत्ति नांही ज्ञानकूं स्वरू
पमैं लगावणा ऐसा मुनि होय है सो ही जिनमुद्रा है ॥ छ ॥ आगैं ज्ञानका नि
रूपण करै है ॥ गाथा ॥ संजमसंजुत्तस्स य झाणजोयस्स मोक्खमग्गस्स णाणे
ण लहदि लक्खं तम्हा णाणं च णायव्वं ॥ २० ॥ अर्थ ॥ संजम करि संयुक्त अर ध्या

नकै योग्य ऐसा जो मोक्षमार्ग ताका लक्ष्य कहिए लक्षणैं योग्य वेध्य निसा-
णां जो आपका निजस्वरूप सो ज्ञान करि पाइए है। तातैं ऐसे लक्ष्यकै जान-
नेंकूं ज्ञानकूं जाननां॥भावार्थ॥संजम अंगीकार करि ध्यान करै अर आत्मा
का स्वरूप न जानै तौ मोक्षमार्गकी सिद्धि नाही तातैं ज्ञानका स्वरूप जान-
नां याके जाननें सर्वै सिद्ध हैं॥छ॥आगैं याकूं दृष्टांत करि दृढ करै हैं॥गा-
था॥जह णवि लहदि हु लक्खं रहिओ कंडस्स वेज्झयविहीणो। तह णवि लक्ख-
दि लक्खं अण्णाणी मोक्खमग्गस्स॥२१॥अर्थ॥जैसे वेध्यके वेधनेंवा-
ला बेधक बाण ताकरि विहीन कहिये रहित ऐसा पुरुष है सो कांड क-
हिये धनुष ताका अभ्यास करि रहित होय सो लक्ष्य कहिये निसाणा ताकूं
न पावै तैसे ज्ञान करि रहित अज्ञानी है सो दर्शनज्ञानचारित्ररूप जो

मोक्षमार्ग ताका लक्ष्य कहिये लक्षनै योग्य परमात्माका स्वरूप ताकूं न पा-
वै है॥भावार्थ॥धनुषधारी धनुषका अभ्यास रहित अर वेधनें वाला वेधक बा-
ण करि रहित होय तौ निसाणाकूं न पावै तैसे ज्ञान करि रहित अज्ञानी मो-
क्षमार्गका निसाणा परमात्मा स्वरूप है ताकूं न पहचानै तब मोक्षमार्गकी
सिद्ध न होय तातैं ज्ञानकूं जाननां परमात्मा रूप निशाणा ज्ञानरूप बाण
ही करि वेधनें योग्य हैं॥छ॥आगै कहै है ऐसा ज्ञान विनयसंयुक्त पुरुष हो-
य सो पावै है॥गाथा॥णाणं पुरिसस्स हवदि लहदि सुपुरिसो वि विणयसं-
जुत्तो णाणेण लहदि लक्खं लक्खंतो मोक्खमग्गस्स॥२२॥अर्थ॥ज्ञान होय है
सो पुरुषकै होय है व कुरि पुरुष ही विनयसंयुक्त होय सो ज्ञानकूं पावै है व
करि ज्ञान पावै तब तिस ज्ञान ही करि मोक्षमार्गका लक्ष्य जो परमात्माका

अ०पा० १०१ स्वरूपताकूं लक्षता ध्यावता संता तिस लक्षकूं पावै है। भावार्थ। ज्ञान पुरुषकै
होय है बहुरि पुरुष ही विनयवान होय तो ज्ञानकूं पावै है तिस ज्ञान ही क
रि शुद्धात्माका स्वरूप जानियै है यातैं विशेष ज्ञानीनिका विनय करि ज्ञा
नकी प्राप्ति करणी जातैं निज शुद्ध स्वरूपकूं जाणि मोक्ष पाईयै है इहां जे
विनय करि रहित होय यथार्थ सूत्रपदतैं चिगे है भ्रष्ट भया तिनिका निषेध
जाननां ॥२२॥ आगैं याही कूं दृढ करै है ॥ गाथा ॥ मइधणुहं जस्स थिरं सुद
गुणबाणं सुअत्थि रयणत्तं परमत्थबद्धलक्खो ण वि चुक्कदि मोक्खमग्ग
स्स ॥२३॥ अर्थ जा मुनिकै मतिज्ञानरूप धनुष थिर होय बहुरि श्रुतज्ञान
रूप जाकै गुण कहिये प्रत्यंचा होय बहुरि रत्नत्रयस्वरूप जाकै बाण नला हो
य बहुरि परमार्थस्वरूप निजशुद्धात्मारूपका संबंधरूप कीया है लक्ष्य १०१

जानै ऐसा मुनि है मोक्षमार्गकूं नांही चूकै है ॥ भावार्थ ॥ धनुषकी सर्व सामग्री
यथावत मिलै तब निसाणा नाही चूकै है तैसे मुनिकै मोक्षमार्गकी यथाव
त सामग्री मिलै तब मोक्षमार्गतैं भ्रष्ट नाही होय है ताका साधन करि मोक्ष पा
वै है यह ज्ञानका माहात्म्य है तातैं जिनागमके अनुसार सत्यार्थ ज्ञानीनिका
विनय करि ज्ञानका साधन करनां ॥ ऐसैं ज्ञानका निरूपण कीया ॥२३॥ आ
गैं याही कूं दृढ करै है ॥ गाथा ॥ सो देवो जो अत्थं धम्मं कामं सुदेइ णाणं च
सो देइ जस्स अत्थि हु अत्थो धम्मो य पव्वज्जा ॥२४॥ अर्थ ॥ देव ताकूं कहिये
जो अर्थ कहिये धन अर धर्म अर काम कहिए इच्छाका विषय ऐसा भोग ब
हुरि मोक्षका कारण ज्ञान इनि च्यारिनि कूं देवै ॥ तहां यह न्याय है जो जाकै जो
वस्तु होय जो देय अर जाकै जो वस्तु न होय सो कैसे देय इस न्याय करि अर्थ

अ०पा० १०२ धर्मस्वर्गादिककोभोगअरमोक्षकासुखकाकारणएहम्याकहिरादीक्षाजा।
कैहोयसोदेवजाननां ॥ छ ॥ आगेधर्मादिककास्वरूपकहैहैजिनिकेजानें
देवकास्वरूपजान्याजाय ॥ गाथा ॥ धम्मो दयाविसुद्धो पव्वज्जासव्वसंगप॥
रिचत्ता देवोवगयमोहो उदयकरो भव्वजीवाणं २५ ॥ अर्थ ॥ धर्महैसोतो
दयाकरिविशुद्धहैं वहुरिप्रव्रज्याकहिएदीक्षाहैसोसर्वहीपरिग्रहतैंर
हितहैवहुरिदेवहैसोनष्टभयाहैमोहजाकाऐसाहैसोऐसादेवभव्यजी
वनिकैउदयकाकरनेंवालाहै ॥ भावार्थ ॥ लोकमैंयहप्रसिद्धहैजोधर्मअर्थ
काममोक्षएच्यारिपुरुषकेप्रयोजनहैइनिकैअर्थिपुरुषकाहूकूंपूजैवं
देहै वहुरियहन्यायहैजोजाकेजोवस्तुहोयसोअन्यकूंदेअणाहुतीकहा १०२
तेंल्यावेताते एच्यारिपुरुषार्थजिनदेवकैपाईयेहैधर्मतोजिनिकैदया

रूपपाईयेहैताकूंसाधिआपतीर्थंकरपदईमैंदिक्षालेसर्वमोहतैंरहित
होयपरमार्थस्वरूपआत्मीकधर्मकूंसाधिमोक्षसुखकूंपायाऐसेतीर्थं
करजिनहैसोहीदेवहैलोकअज्ञानीजिनकूंदेवमानैंहैंतिनिकैधर्मअ
र्थकाममोक्षनांहीजानैंतेकेईविषयासक्तहैंमोहीहैंतिनिकैधर्मकाहेका
वहुरिअर्थकामकीजिनिकैवांछापाईएतिनिकैअर्थकामकाहेकावहु
रिवहुरिजन्ममरणतैंसहितहैंतिनिकैमोक्षकैसेदेवसांचाजिनदेवहीहै
येहहीभव्यजीवनिकैमनोरथपूरनकरैहैअन्यसर्वकल्पितदेवहैंऐ
सेदेवाकारूपकह्या ॥ छ ॥ आगेतीर्थंकरकास्वरूपकहैहै ॥ गाथा ॥ वयस
म्मत्तविसुद्धे पंचिंदियसंजदे णिरावेक्खे ॥ ण्हाएउमुणीतित्थेदिक्खासि
क्खासुण्हाणेण ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ व्रतसम्यक्त्वकरिविशुद्धअरपंचइंद्रियनि

अ०पा० १०३

करिसंयत कहिये संवर सहित वहुरि निरापेक्ष ख्याति लाभ पूजादिक इसलोक का फल की तथा परलोक विषै स्वर्गादिक के भोगनकी अपेक्षा तैरहित ऐसा आत्मस्वरूप तीर्थ विषै मुनि है सो दीक्षा सिक्षा रूप स्नान करि पवित्र होऊ ॥ भावार्थ ॥ तत्वार्थ श्रद्धान लक्षण सम्यक्त्व सहित पंच महाव्रत करि शुद्ध अर पंचिंद्रियनि के विषयनि तैं विरक्त इसलोक परलोक विषै विषय भोगनि की वांछा तैं रहित ऐसा निर्मल आत्मा का भाव स्वरूप तीर्थ विषै स्नान कीये पवित्र होय है ऐसी प्रेरणा है ॥ २६ ॥ आगै फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ जं णिम्मलं सुधम्मं सम्मत्तं संजमं तवं णाणं । तं तित्थं जिणमग्गे हवेइ जदि संतिभावेण ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ जिनमार्ग विषै सो तीर्थ है निर्मल उत्तम क्षमादि धर्म तथा तत्वार्थ श्रद्धान लक्षण संकादि मल रहित सम्यक्त्व तथा १०३

निर्मल इंद्रिय का मन का वसि करणा षट्काय के जीवनि की रक्षा करनां ऐसा निर्मल संयम तथा अनशन अवमोदर्य वृत्तिपरिसंख्यान रसपरित्याग विविक्तसय्यासन कायक्लेश ऐसा बाह्य तो छह प्रकार वहुरि प्रायश्चित्त विनय वैयावृत्त स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्यान ऐसा छह प्रकार अंतरंग ऐसे बारह प्रकार निर्मल तप वहुरि जीव अजीवादिक पदार्थनि का यथार्थ ज्ञान ए तीर्थ है ए भी जो शांतिभाव करि सहित होय कषायभाव न होय तब निर्मल तीर्थ है जातैं क्रोधादिक भाव सहित होय तौ मलिनता होय जाय तब निर्मलता न रहै ॥ भावार्थ ॥ जिनमार्ग विषै ऐसा तीर्थ कह्या है लोक सागर नदीनि कूं तीर्थ मानि स्नान करि निर्मल भया चाहै है सो सरीर का बाह्यमल इनि तैं किंचित् उतरै है ॥ अर शरीर मैं धातु उपधात

डाक्टर भाऊ दाजी इंदुस्मारक DR BHAU DAJI MEMORIAL

रूपमलइनितैंउतरैनांही॥ अरज्ञानावर्णआदिकर्मरूपमलअरअज्ञानरा
गद्वेषमत्नमोहआदिभावकर्मरूपमलआत्माकैंअंतरमलहैसोतोइनि
तैंकिंचितमात्रभीउतरैनांहीउलटाहिंसादिकतैंपापकर्मरूपमललागैहै
यातैंसागरनदीआदिकूंतीर्थमाननाभ्रमहै॥ जाकरि तरियेसोतीर्थ
है ऐसातीर्थजिनमार्गमैंकह्यासोहीसंसारसमुद्रतैंतारनेंवालाजाननं (
॥ ऐसैतीर्थकास्वरूपकह्या॥ आगैंअरहंतकास्वरूपकहैहै॥ गाथा॥
णामेठवणेहियसं॥ दव्वेभावेहिसगुणपज्जायाचउणागदिसंपदिमे
भावाभावेतिअरहंता॥२८॥ अर्थ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावएच्यारिभावक
हियेपदार्थहैतेअरहंतकूंजनावैहै॥ बहुरिसगुणपर्यायकहिएअरहं १०४
तकेगुणपर्यायनिसहित बहुरिच्यवणकहिएच्यवनबहुरिआगति

बहुरिसंपदाऐसेएभावअरहंतकूंजनावैहै॥ भावार्थ॥ अरहंतशब्दक
रियद्यपिसामान्यअपेक्षाकेवलज्ञानीहोयतेसर्वहीअरहंतहैतथा
पिइहांतीर्थंकरपदकूंप्रधानकरिकथनकरिएहैतातैंनामादिक
करिजनावनाकह्याहै॥ तहांलोकव्यवहारमैंनामआदिकीप्रवृ
त्तिऐसैहैजोवस्तुमैंनामहोयतैसागुणनहोयताकूंतोनामनिक्षे
पकहिए बहुरिजिसवस्तुकाजैसाआकारहोयतैसाआकारताकी
काष्ठपाषाणादिकहीमूर्त्तिबणायताकासंकल्पकरियेताकूंस्थापना
कहिये॥ बहुरिजिसवस्तुकीपहलीअवस्थाहोयतिसहीकूंआगली
अवस्थाप्रधानकरिकहै॥ ताकूंद्रव्यकहिए बहुरिवर्त्तमानमैंजोअव
स्थाहोयताकूंभावकहिए ऐसैच्यारिनिक्षेपकीप्रवृत्तिहैताकाकथा

न शास्त्र मैं भी लोक कूं समझावनें कूं कीया है जे निक्षेप विधान करि नाम
स्थापना द्रव्य कूं भाव न समझै तौं नाम कूं नाम समझना स्थापना कूं स्थाप
ना समझनी द्रव्य कूं द्रव्य समझनां भाव कूं भाव समझनां अन्य कूं अन्य
समझै विभचार नाम दोष आवै है। सो इहां तैसा निक्षेप ताके मेटनें कूं
लोक कूं यथार्थ समझावनें कूं सास्त्र मैं कथन है। सो इहां तैसा निक्षेप विधा
न करि नाम स्थापना का कथन। इहां तौ निश्चय कूं प्रधान करि कथन है
सो जैसा अरहंत का नाम है तैसा ही गुण सहित नाम जाननां। बहुरि स्था
पनैं जैसा ताकी देह सहित मूर्ति है सो स्थापना जाननी। बहुरि जैसा ताका ।
द्रव्य है तैसा द्रव्य जाननां बहुरि जैसा ताका भाव है तैसा ही भाव जाननां
छै॥ ऐसे ही कथन आगैं करियै है तहां प्रथम ही नाम कूं प्रधान करि कहै

हैं॥ गाथा॥ दंसणअणंतणाणे मोक्खो णट्ठट्ठकम्मबंधेण। णिरुवमगुणमा
रूढो अरहंतो एरिसो होइ॥२९॥ अर्थ॥ जाकै दर्शन अर ज्ञान ए तौ अनंत
है घातिकर्म के नाश तैं सर्व ज्ञेय पदार्थनि कूं देखनां जाननां जाकै है॥
बहुरि नष्ट भया है अष्टकर्म का बंध ता करि जाकै मोक्ष है इहां सत्व की अ
र उदय की विवक्षा लेणी केवली कै आवु ही कर्म का बंध नाहीं यद्यपि सा
ता वेदनीय का बंध सिद्धांत मैं कह्या है तथापि स्थिति अनुभागरूप ना
हीं तातैं अबंध तुल्य ही है ऐसे आठ ही कर्म के बंध के अभाव की अपे
क्षा भावमोक्ष कहिये। बहुरि उपमारहित गुणनि करि आरूढ है सहित
है ऐसे गुण छद्मस्थ मैं कहूं ही नाहीं तातैं उपमारहित गुण जामैं है ऐ
सा अरहंत होय है॥ भावार्थ॥ केवल नाम मात्र ही अरहंत होय ता कूं नौ

अरहंतन कहिए॥ ऐसे गुणनिकरि सहित होय ताकूं नाम अरहंत।
कहिए॥ छ॥ आगें फेरि कहै है॥ ऐसे गुणनिकरि सहित होय ताकूं ना
म अरहंत कहिए॥ आगें फेरि कहै है॥ गाथा॥ जरवाहिजम्ममरणं॥ चउ
इगमणं च पुण्णपावं च॥ हंतूण दोसकम्मे हुउ णाणमयं च अरहंतो
॥३०॥ अर्थ॥ जरा कहिए बुढापा अर व्याधि कहिए रोग अर जन्ममरण
च्यारि गति विषै गमन पुण्य पाप बहुरि दोषनिका उपजावनहा
रा कर्म तिनिका नाश करि अर केवलज्ञानमयी अरहंत हूवा होय
सो अरहंत है॥ भावार्थ॥ पहली गाथा मैं तौ गुणनिका सद्भाव करि अर
हंत नाम कह्या॥ बहुरि इस गाथा मैं दोषनिका अभाव करि नाम अर
हंत कह्या तहां राग द्वेष मोह अरति चिंता भय विस्मय निद्रा विषाद खे

द ग्यारह दोष तौ घातिकर्म उदय तें होय है बहुरि तृषा क्षुधा जन्म ज
रा मरण रोग स्वेद ए अघातिकर्म के उदय तें होय है तहां इस गाथा मैं जा
रा रोग जन्म मरण च्यारि गति मैं गमन का अभाव पुण्य पाप इनिका
अभाव कहनें तैं तौ अघाति कर्म तें भये दोष तिनिका अभाव जानना
जातें अघातिकर्म मैं इन दोषनिकी उपजावनहारी पापप्रकृति तिन
का उदय अरहंत कै अभाव है बहुरि रागद्वेषादिक दोषनिका घात
कर्म के अभाव तें अभाव है इहां कोई पूछै मरण का अर पुण्य का
अभाव कह्या सो मोक्षगमन होना यह मरण अरहंत कै है पुण्य पाप
प्रकृतिनिका उदय पाईए है तिनिका अभाव कैसें ता समाधान जो इहां म
रण होय करि फेरि संसार मैं जन्म होय ऐसा मरण की अपेक्षा है ऐसा

मरणअरहंतकैंनांही तैसेही जो उदयप्रकृतिका उदयपापप्रकृतिकी सा
पेक्षा कहै ऐसे उदयके उदयका असाधता नां अथवा बंध अपेक्षा उ
दयका भी बंध नाही है साता वेदनी बंधै सो स्थिति अनुभाग विना अबंध
तुल्य ही है बहुरि कोई पूछै केवली कै असाता वेदनीका उदय सिद्धां
तमैं कह्या है ताकी प्रवृत्ति कैसे है ताका समाधान ऐसा जो असाताका
निपट मंद अनुभाग उदय है अर साताका अति तीव्र अनुभाग उदय है ता
के वसतैं असाताकी दूवाह्यकारज करनैं समर्थ नांही सूक्ष्म उदय दे
खरि जाय है तथा संक्रमण होय साता रूप होय जाय है ऐसैं जानना ॥छ॥
आगै अनंतचतुष्टय करि सहित सर्व दोष रहित सर्वज्ञ वीतराग होय ॥
सो नाम करि अरहंत कहिये ॥छ॥ आगैं स्थापनाकरि अरहंतका वर्ण

न करै है ॥ गाथा ॥ गुणठाणमग्गणेहिं य पज्जत्तीपाणजीवठाणेहिं ठाव व
णपंचविहेहिं पणयव्वा अरहपुरिसस्स ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ गुणस्थान मार्गणा व
हुरि पर्याप्ति प्राण जीवस्थान इनि पांच प्रकार करि अरहंत पुरुषकी स्थाप
ना प्राप्त करनी अथवा ताकूं प्रणाम करनां ॥ भावार्थ ॥ स्थापना निक्षेप
मैं कांष्टपाषाणादिविषैं संकल्प करणा कह्या है सो इहां प्रधान नांही इ
हां निश्चय प्रधान करि कथन है तहां गुणस्थानादि अरहंतका स्थाप
ना करना कह्या है सो ही ॥छ॥ आगै विशेष करि कहै है ॥ गाथा ॥ तेरहमे
गुणठाणे सजोयकेवलिय होय अरहंतो ॥ चउतीस अइसयगुणा होंति
हु तस्सट्ठपडिहारा ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ गुणस्थान चउदह कहे हैं तिनि मैं संयोग
केवली नामा तेरहा गुणस्थान है तिस विषैं योगनिकी प्रवृत्ति सहित

न०स्पा० केवलग्यानकरिसहितसंयोकेवलीअरहंतहोयहै॥ वहुरिचउतीस
१०८ अतिशयतेहैंगुणजाकेवहुरिजाकेआठप्रातिहार्यहोयहै ऐसातोगु
णस्थानकरिस्थापनाअरहंतकहिततयेहै॥ भावार्थ॥ इहांचउतीसअति
शयअरआठप्रातिहार्यकहनेतेंविवहारकीप्रवृत्तिअरवचनकी
प्रवृत्तिसिद्धहोयहै॥ वहुरिकेवलीकहनेतेंकेवलज्ञानकरिसर्वतत्वका
जाननांसिद्धहोयहैं॥ तहांचउतीसअतिशयतौऐसेजन्मतेंप्रगटहोय॥
१० मलमूत्रकाअभाव॥ १ धवलरुधिरमासहोय॥ १ समचतुरसंस्थान
१ वज्रऋषभनाराचसहनन॥ १ सुंदररूप॥ १ सुगंधसरीर॥ १ भलेलक्ष
णहोय॥ १ वलअनंत॥ १ मधुरवचन॥ १ ऐसेदश॥ वहुरिकेवलज्ञानउ १०८
पजेंहोय॥ १० उपसर्गकाअभाव॥ १ शरीरकीछायानपडै॥ १ च्यारिमुषदी

न

षै॥ १ सर्वविद्याकास्वामीपणा॥ १ नेत्रटिमकारनाही॥ १ केशनखवधै
नाही॥ १ शतयोजनसुभक्षता॥ १ आकाशगमन॥ १ कमलआहारनाही
१ ऐसेदश॥ वहुरिचोदहदेवकृत॥ १४ सकलार्द्धमागधीभाषा॥ १ सवजी
वनिकैमैत्रीभाव॥ १ सर्वऋतुकेफलफूलेफलै॥ १ दर्पणसमानभूमिका
१ भूमिकंटकरहित॥ १ मंदसुगंधपवन॥ १ सर्वकैआनंद॥ १ गंधोदिकवृ
ष्टि॥ १ पादतलैकमलदेवरचै॥ १ सर्वधान्यनिष्पत्ति॥ १ आकाशदिशानि
र्मल॥ १ देवकोआह्वाननशब्द॥ १ धर्मचक्रआगेचालै॥ १ अष्टमंगलद्रव्य॥ १
तिनिकेनाम छत्र ध्वजा दर्पण कलश चामर भृंगार ताल सुप्रतीक
ऐसैंआठ॥ ऐसैंचोतीसकेनामहैं॥ वहुरिआठप्रातिहार्यहोयहै॥ तिनि
केनाम अशोकवृक्ष॥ १ पुष्पवृष्टि॥ १ दिव्यध्वनि॥ १ चवर॥ १ सिंघासन॥ १ भा

MEMORIAL

अ॰पा॰ १०८

मंडल॥२॥ इंदुभिवा जित्र॥२॥ छ॥ ऐसैं आगे ऐसैं तो गुणस्थान करि अर
हंतका स्थापन कह्या॥ अब मार्गणा कहै है॥ गाथा॥ गइइंदिएछकायजो
एवेए कसायणाणेय॥ संयम दंसण लेस्सा भविया समत्त सण्णि आह
रे॥३३॥ अर्थ॥ गति इंद्रिय काय योग वेद कषाय ज्ञान संयम दर्श
न लेश्या भव्य सम्यक्त्व संज्ञी आहार ऐसे चौदह तहां अरहंत सयो
गकेवली तेरहैं गुणस्थान हैं तहां मार्गणा लगाए तब गतिच्यारि मैं मनु
ष्यगति है॥ इंद्रियजाति पांचमें पंचेंद्रियजाति है काय छह में त्रसकाय है
योगपदरा में मनयोग सत्य अनुभय ऐसें दोय वचन रितेही वचनयोग दो
यवचनरिकाययोग उदारिक ऐसें पांच है अर समुद्घात करै ताकै उ	१०८
दारिकमिश्र कार्मण ए दोय मिलि सात है वचनरि वेद तीन ही का अभाव है

वचनरि कषाय पचीस सर्व ही का अभाव है॥ वचनरि ज्ञान आठ मैं केवल
ज्ञान है संयम सात मैं एक यथाख्यात॥ दर्शन च्यारि में एक केवल दर्शन है
लेश्या छह मैं एक शुक्ल योग निमित्तक है॥ भव्य दोय में एक भव्य है॥ सम्य
क्त्व छह मैं क्षायक सम्यक्त्व है॥ संज्ञी दोय मैं में संज्ञी है सो द्रव्य करि है
भाव करि क्षयोपसमरूप मन का अभाव है॥ आहार मैं आहारक है सो
नोकर्म वर्गणा अपेक्षा है कवलाहार नाही हैं॥ अर समुद्घात करै तो अ
नाहारक भी है॥ ऐसें दोऊ है ऐसैं मार्गणा अपेक्षा अरहंतका स्थाप
न जाननां॥ छ॥ आगै पर्याप्त करि कहै है॥ गाथा॥ आहारे य सरीरे
इंद्रियमण आणपाणभासाय॥ पज्जत गुण समिद्धो उत्तमदेवो हवइ
अरहो॥३४॥ अर्थ॥ आहार वचनरि शरीर इंद्रिय मन आणपाण कहिए

स्वासोछासभाषामेंऐसैंछपर्याप्तहै। इसपर्याप्तिगुणकरिसमृद्धकहियेयुक्तउत्तमदे
वअरहंतहै॥ भावार्थ॥ पर्याप्तकास्वरूपऐसाजोअन्यपर्यायतैंच्यवनकरिअन्य
पर्यायमेंप्राप्तहोयतबतीनसमयउत्कृष्टअंतरालमैंरहैपीछैसैनीपंचेंद्रिउपजै
सोतहांतीनजातिकीवर्गणातैंतौआहारशरीरइंद्रियस्वासोछासऐसैंच्यारिप
र्याप्तिअंतरमुहूर्तहीमैंभांषांकालमैंपूर्णकरैपीछैभाषाजातिमनोजातिकीव
र्गणातैंअंतरमुहूर्तहीमैंभाषामनपर्याप्तिपूर्णकरैऐसैंछहूपर्याप्तअंतमुहू
र्तमैंपूर्णकरैपीछैआयुपर्यंतपर्याप्तिहीकहावैअरनोकर्मवर्गणांकाग्रहण
करवोहीकरैइहांआहारनामकवलाहारकानजाननांऐसैंतेरहगुणस्थान
मीअरहंतकेपर्याप्तपूर्णहीहैऐसेपर्याप्तकरिअरहंतकास्थापनहै॥ ॥ आ ११०
गैंप्राणकरिकहैहैं॥ गाथा॥ पंचविइंद्रियपाणा। मणवचकाएणतिणिबलपा

णा॥ आणप्पाणप्पाणाआउगपाणेणहोंतिदहपाणा॥३५॥ अर्थ॥ पांचतौइंद्रियप्रा
णावहुरिमनवचनकायकरितीनबलप्राणएकस्वासोछासप्राणएकआयुप्रा
णकरिसहितदशप्राणहैं॥ भावार्थ॥ जीवसमासचौदहकहेहैं॥ एकेंद्रियसूक्ष्मबा
दर२बेंइंद्रियतेंइंद्रियचौंइंद्रियऐसैंविकलत्रय३असैनीसैनी२॥ ऐसैंसात॥
तेयेपर्याप्तिअपर्याप्तिकरिचौदहतिनिमैंचौदमासैंनीपंचेंद्रियजीवस्था
नअरहंतकेहैगाथामेसैनीकानाममनलीयाअरमनुष्यभवकानामलीया
सोमनुष्यसैंनीहीहोयहैअसैंनीनहोयतातैंमनुष्यकहनेंतैसैंनीहीजाननं
ऐसैगुणनिकरिसहितस्थापनाअरहंतकावर्णनकीया॥ ॥ आगैंद्रव्यकूं
प्रधानकरिअरहंतकानिरूपणकरैहै॥ गाथा॥ जरवाहिदुक्खरहियंआहार
णीहारवज्जियंविमलं। सिंहाणखेलसेउराणिदुगंधायदोसो ण॥३६॥ ॥दश

अ०पा० पाणपज्जत्ती अठसहस्सायलक्खणा भणिया ॥ गोखीरसंखधवलं मंसंरुहि
१११ चसव्वंगे ॥ ३४ ॥ एरिसगुणेहिसव्वं अइसयवंतं सुपरिमलामोयं उरालियं च का
यंणायव्वं अरहपुरिसस्स ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ अरहंतपुरुषका औदारिककाय ऐसा
जामैं नां जरा वहुरि व्याधि रोगादिनि संबंधी दुःख जामैं नांही है वहुरि आहार
निहार करि वर्जित है वहुरि विमल कहिए मलमूत्र करि रहित है ॥ वहुरि सिंहा
ण कहिए श्लेष्म खेल कहिए थूल स्वेद कहिए पसेव वहुरि दुर्गंछा कहिए घृ
णग्लानता दुर्गंधादि दोष जामैं नांही है ॥ ना ॥ दश तौ जाकै प्राण है ते द्रव्यप्राण ज १
ननां ॥ वहुरि पूर्णपर्याप्त है ॥ वहुरि एक हजार आठ लक्षण जाकै कहे हैं ॥ वहुरि ।
गोखीर कहिए गोदुग्ध तथा संख समा धवला जामैं सर्वंगि रुधिर मांस है ॥ ऐसे गु १११
णनि करि सर्वही अतिशयनि करि संयुक्त निर्मल है आमोद कहिए सुगंध जामैं

ऐसा औदारिक देह अरहंतपुरुषका जाननां ॥ भावार्थ ॥ इहां द्रव्यनिक्षेप नाहीं स
मझना आत्मातैं जुदा बाह्य देहकूं प्रधान करि द्रव्यअरहंतका वर्णन है ॥ ऐसैं
द्रव्यअरहंतका वर्णन कीया ॥ ३५ ॥ आगै भावकूं प्रधान करि निरूपण करै है
तहां प्रथमही भावमैं दोषनिका अभावकूं कहै है ॥ गाथा ॥ मयरायदोसरहिओ क
सायमलवज्जिओ य सुविसुद्धो चित्तपरिणामरहिदो ॥ केवलभावे मुणेयव्वो ॥ ३६ ॥
॥ अर्थ ॥ केवलभाव कहिए केवलज्ञानहीरूप एक भाव होतैं संतैं अरहंत ऐ
सा जाननां मद कहिए मान कषायतैं तथा गर्व वहुरि रागद्वेष कहिए कषाय
निके तीव्र उदयतैं होय ऐसा प्रीति अप्रीतिरूप परिणाम इनितैं रहित है ॥ वहुरि प
चीस कषायरूप मलसत्ताका द्रव्यकर्म तथा तिनिके उदयतैं भया भावमल ता
करि वर्जित है ॥ याहीतैं अतिशय करि विशुद्ध है निर्मल है ॥ वहुरि चित्तपरिण १

अ॰ष्पा॰ मकहि०॥मनकापरिणमनरूपविकल्पताकरिरहितहैज्ञानावर्णकर्मकेक्षय
११२ तैंक्षयोपशमरूपमनकाविकल्पनांहीहैऐसाकेवलएकज्ञानस्वरूपअरहंतवीत
रागस्वरूपताकूंअरहंतजानना॥३॥आगैंताहीकाविशेषकहैहै॥गाथा॥सम्मं
दंसणपस्सइजाणदिणाणेणदव्वपज्जाया॥सम्मत्तगुणविसुद्धोभावोअरहस्स
णायव्वो॥४॥अर्थ॥सम्यग्दर्शनकरितौआपकूंतथासर्वकूंसत्तामात्रदेखैक
रिदेखैहैऐसाकेवलदर्शनजाकैहैबहुरिज्ञानकारिसर्वद्रव्यपर्यायनिकूंजानै
हैऐसाजाकैकेवलज्ञानहै॥बहुरिसम्यक्त्वगुणकरिविशुद्धहैक्षायिकस
म्यक्त्वजाकैपाईयेहै॥ऐसाअरहंतकाभावजानना॥भावार्थ॥अरहंतहोय
हैसोघातिकर्मकेनासतैंहोयहैसोमोहकर्मकेनाशतैंमिथ्यात्वकषायके ११२
अभावतैंपरमवीतरागपणांसर्वप्रकारनिर्मलताहोयहैबहुरिज्ञानाव

रणदर्शनावरणकर्मकेनाशतैंअनंतदर्शनअनंतज्ञानप्रगटहोयहैति
निकरिसर्वद्रव्यपर्यायनिकूंएककालप्रत्यक्षदेखैजानैहैतहांद्रव्यछ
हहैतिनिमैंजीवद्रव्यतौसंख्याकरिअनंतानंतहै॥बहुरिपुद्गलद्रव्यनितैंअ
नंतानंतगुणेहै॥बहुरिआकाशद्रव्यएकहैसोअनंतानंतप्रदेशीहैतामैमध्य
सर्वजीवपुद्गलअसंख्यातप्रदेशमैतिष्ठैहै॥बहुरिएकधर्मद्रव्यएकअधर्मद्र
व्यदोऊअसंख्यातअसंख्यातप्रदेशीहैइनितैंआकाशकेलोकअलोक
काविभागहैतिसलोकहीमैंकालद्रव्यकेअसंख्यातकालाणुतिष्ठैहैइनिस
र्वद्रव्यकेपरिणमनरूपपर्यायहैतेएकएकद्रव्यकेअनंतानंतहैतिनिकूं
कालद्रव्यकापरिणमननिमित्तहैताकेनिमित्ततैंक्रमरूपहोनासमयादिक
व्यवहारकालकहावैहैतीसकीगणनातैंअतीतअनागतवर्त्तमानद्रव्य॥

अ०पा० तिकेपर्यायअनंतानंतहैतिनिसर्वद्रव्यपर्यायनिकूंअरहंतकादर्शनज्ञानएकं
११३ कालदेखैजानेहैयाहीतैंअरहंतकूंसर्वदर्शीसर्वज्ञकहियेहै ॥ ऐसैंअरहं
तकानिरूपणचौदहगाथामैकीयातहांप्रथमगाथामैनाममात्रस्थापनाद्रव्यभा
वगुणपर्यायसहितच्यवनआगतिसंपत्तिनाकरिअरहंतकूंजनावैहैताका
व्याख्याननामादिकथनमैंसर्वहीआगयाताकासंक्षेपभावार्थलिखिये
है तहांप्रथमतौगर्भकल्याणकहोयहैसोगर्भमैंपहलीछमहीनाइंद्रकीआ
ज्ञाथनदजितराजाकीराणीकेगर्भमैंआवसीताकेनगरकीसोभाकरैरत्न
मयीसुवर्णमयीमंदिररचैनगरकैकोटखाईदरवाजेसुंदरवनउपवनकी
रचनाकरैसुंदरजिनिकेवेषऐसेनरनारीउरमैवसावैवहुरितिसराजमं ११३
दिरपरिरत्ननकीवर्षाहोवोकरै वहुरिमाताकेगर्भमैंआवैतबमाताकूंसो ।

लहसुमनसुपनाआवैरुचिकदीपकीवसनेवालीदेवांगनामाताकीनि
त्यसेवाकरवौकरैऐसैंनवमासवीतिप्रभुकातीनज्ञानदशाअतिशयसं ।
लोक लीयेजन्महोयतबतीनूंमैंक्षोभहोयदेवनिकेविनाबजायेबाजेबाजैइंद्र
काआसनकांपैतबइंद्रप्रभुकाजन्महूवाजानिस्वर्गतेंऐरावतिहस्तीचं
ढिआवैसर्वच्यारिप्रकारकादेवदेवीनेलेहोयआवैसचीइंद्राणीमाताप ।
सिजायप्रछन्नप्रभुकूंलेआवैइंद्रहरषितहजारनेत्रकरिदेखैसोधर्मइंद्र
आपनीगोदमैंलेऐरावतिहस्तीपरिचढिमेरुपर्वतमैंचालिईशानइंद्रछत्रधा
रैसनतकुमारमाहेंद्रचमरढारैमेरुकेपांडुकवनकीपांडुकशिलापर
सिंहासनपरिप्रभुकूंथापैसारेदेवक्षीरसमुद्रतेंएकहजारआठकलशा
निमैंजललयायदेवदेवांगनागीतवाजित्रनृत्यकरैउछाहसहितप्रभुकूं

Dr. ... DA... MEMORIAL

अ०पा० मस्तकपरि ढारि जन्मकल्याणकका अभिषेक करै पीछैं श्रृंगार वस्त्र आभूष
११५ णपहराय माताके मंदिर ल्याय माताकूं सौंपें इंद्रादिक देव अपने स्थानक
जाय कुमेर सेवा करै है पीछैं कुमार अवस्था तथा राज अवस्था मांगै तामैं
मनो वांछित जोग भोग वै पीछैं किछु वैराग्यका कारण पाय संसार देह भोग
तैं विरक्त होय तव लौकांतिक देव वैराग्यके वधावनहारी स्तुति करैं पीछै
इंद्र आय तप कल्याणक करै पालकी मैं बैठाय वस्तिस्वं तैं वनमैं लेजाय
तहां प्रभु पवित्र शिलापरि बैठि पंचमुष्टी लोंच करि पंचमहाव्रत अंगीका
र करै समस्त परिग्रहका त्याग करि दिगंवर रूपधारि ध्यान करै। तत्का।
ल मनपर्यय ज्ञान उपजै पीछैं केतेक काल वीतै तपके वलकरि घातिकर्म ११५
प्रकृति ४७ अघाति कर्मका प्रकृति १६ ऐसैं त्रेसठि प्रकृतिका सत्त।

मैं सत्तानाश करि केवलज्ञान उपजाय अनंतचतुष्टय पाय क्षुधादिक अ
ठारह दोषनितैं रहित होय अरहंत होय तब इंद्र आय समवसरण र।
चै सो आगमोक्त अनेक सोभासहित मणि सुवर्णमयी कोट खाई वेदी
च्यारयौं दिशा दरवाजा मानस्तंभ नाटशाला वन आदि अनेक रचना करै
ताकै मध्य सभामंडपमैं वारह सभा तिनिमैं मुनि अर्यका श्रावक श्राविका
देव देवी तिर्यंच तिष्ठै प्रभुकै अनेक अतिशय प्रगट होय सभामंडपकै बीचि।
सिंहासन परि कमलासन अंतरीक्ष प्रभु विराजै अर अष्टप्रातिहार्य युक्त
होय वाणी खिरै ताकूं सुणि गणधर द्वादशांग शास्त्र रचैं ऐसे केवलकल्या
णका उत्सव इंद्र करै। पीछैं प्रभु विहार करै ताका वडा उत्सव देव करैं। पी।
छैं केतेक काल पीछैं आयु के दिन थोरे रहैं तब योग निरोध करि अघाति

अ॰पा॰
११५

कर्मका नाश करि मुक्त पधारे तब पीछै शरीरका संस्कार इंद्र उत्सवसहि
त निर्वाणकल्याणक करै ऐसैं तीर्थंकर पंचकल्याणककी पूजा पाय अ
रहंत कहाय निर्वाणप्राप्ति होय ऐसैं जाननां ॥ ७ ॥ आगै प्रव्रज्याका नि
रूपण करै है ताकूं दीक्षा कहिए । तहां प्रथम ही दीक्षाकै योग्य स्थानकवि
शेषकूं तथा दीक्षासहित मुनि तहां तिष्ठै ताका स्वरूप कहै है ॥ गाथा ॥ सुण्णह
रे तरुहिट्ठे उज्जाणे तह मसाणवासे वा । गिरिगुह गिरिसिहरे वा भीमव
णे अहव वसिते वा ॥ ४२ ॥ सवसासत्तं तित्थं वचचइदालत्तयं च वुत्तेहिं । जि
णभवणं अह वेज्झं जिणमग्गे जिणवरा विंति ॥ ४३ ॥ पंचमहव्वयजुत्ता पंचि
दियसंजया णिरावेक्खा । सज्झायझाणजुत्ता मुणिवरवसहा णिइच्छंति ११५
॥ ४४ ॥ गाथा ॥ सूना घर वृक्षका मूल कोटर उद्यान वन मसाणभूमि गिरिकी गु

फा गिरिका शिखर भयानक वन अथवा वसतिका ॥ इनिकै विषै दीक्षासा
हित मुनि तिष्ठै ए दीक्षायोग्य स्थानक है ॥ बहुरि स्ववसासक्त कहिये स्वाधीन
मुनिनिकरि आसक्त जे क्षेत्र जिनिमैं मुनि वसै तथा जहांतैं मुक्ति पधारे ऐ
सैं तीर्थस्थान बहुरि वच चैत्य आलय ऐसा त्रिक जे पूर्वै उक्त कहिए आय
तन आदिक परमार्थरूप संयमी मुनि अरहंत सिद्धस्वरूप तिनिका नाम
के अक्षररूप मंत्र तथा तिनिकी आज्ञारूप वाणी सो तो वच अर तिनिकै आ १
कार धातुपाषाणकी प्रतिमा का स्थापन सो चैत्य अर तिस प्रतिमा तथा अ
क्षर मंत्र वाणी जिसमैं स्थापिये ऐसा आलय मंदिर यंत्र पुस्तक ऐसा वचन
चैत्य आलय का त्रिक बहुरि अथवा जिनभवन कहिये अकृत्रिम चैत्या
लय मंदिर ऐसा आयतनादिक तिनिकै समान ही तिनिका व्यवहार ताहि

अ०पा० जिनमार्गविषैजिनवरदेववेध्यकहिए दिक्षासहितमुनिनकैंध्यावनेंयोग्य।
११६ चिंतवनकरनैंयोग्यकह्याहै॥ ६०॥ वहुरिजेमुनिवृषभजेमुनिनिमैंप्रधानहै
तेकहेहैंसेसून्यग्रहादिकतथातीर्थनाममंत्रस्थापनारूपमूर्त्तिअरतिनिका
आलयमंदिरपुस्तगअरअकृत्रिमजिनमंदिरतिनिकूंणिइच्छंतिकहिएनि
श्चयकरिइष्टकरैहैतिनिमैंसूनाघरआदिकमैवसैहैअरतीर्थआदिकाध्या
नचिंतवनकरैहैअरअन्यकूंतहांदीक्षादेहै इहांणिइच्छंतिकापाठांतरणिइ
च्छंतिऐसाभीहैताकाकाक्कोक्तिकरितौऐसाअर्थहोयहैजोकहांनइष्टक
रैहै॥ अरएकटिप्पणमैंऐसाअर्थकीयाहैजोऐसेसून्यग्रहादिकतथाती
र्थादिकजोस्ववसासक्तकहिएस्वेच्छाचारीभ्रष्टआचारीतिनिकरिआसक्त ११६
होयतोतेमुनिप्रधानतितिनिकूंइष्टकरैतहांनवसैं॥ कैसेहैमुनिप्रधानपांच

महांव्रतनिकरिसंयुक्तवैंहैवहुरिकैसेहैपांचइंद्रियनिकाहैजैलेप्रकार
जीनिकैंवहुरिकैसेहैनिरापेक्षहैकाहूप्रकारकीवांछाकरिमुनिनभ
येहै वहुरिकैसेहैस्वाध्यायध्यानकरियुक्तहै॥ केतौशास्त्रपढेंपढावैहै।
केधर्मशुक्लध्यानकरैहै॥ भावार्थ॥ इहांदिक्षायोग्यस्थानकतथादिक्षासहि
तदिक्षादेनेंवालामुकैतथातिनिकैचिंतवनयोग्यव्यवहारकास्वरूपक
ह्याहै॥ ५७॥ आगैप्रव्रज्याकास्वरूपकहैहै॥ गाथा॥ गिहगंथमोहमुक्का वावी
सपरीसहाजियकसाया॥ पावारंभविमुक्का पव्वज्जाएरिसाभणिया॥ ४५॥ अ
र्थ॥ गृहकहिएघरअरग्रंथकहिएपरिग्रहइनिदोऊनितैतथातिनिका॥
मोहममत्वइष्टअनिष्टबुद्धितातैरहितहै वहुरिवाईसपरीसहकासहनां
जामैहोयहै वहुरिजीतेहैकषायजामैंवहुरिपापरूपजोआरंभ०ताक

रिरहितहै॥ ऐसी प्रव्रज्या जिनेश्वरदेव कही है॥ भावार्थ॥ जैन दीक्षा मैं सर्व परीग्र
हनांही सर्वसंसारका मोह नांही बाईस परीसहका जामैं सहनां कषायनि
का जीतना पापारंभका जामैं अभाव ऐसी दीक्षा अन्यमत मैं नांही॥ ॥ फेरि
कहै है॥ गाथा॥ धणधण्णवत्थदाणं हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइं उद्धाणविरह
रहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया॥ ४६॥ अर्थ॥ धनधान्य वस्त्र इनिका दान व
हुरि हिरण्य कहिए रूपा सोना आदिक वहुरि शय्या आसन आदिक छत्र
छत्र चामरादि वहुरि क्षेत्र आदिकाएकु दान ताका देना ताकरि रहित ऐसी
प्रव्रज्या कही है॥ भावार्थ॥ अन्यमती केई ऐसी प्रव्रज्या कहै है जो गऊ धा
न वस्त्र सोना रूपा शयन आसन छत्र चामर भूमि आदिका दान करना सो
प्रव्रज्या है ताका या गाथा मै निषेध कीया है प्रव्रज्या तौ निर्ग्रंथस्वरूप है जो ध

न धान्य आदि राषि दान करै ताकै काहेके प्रव्रज्या ए तौ ग्रहस्थका कर्म है॥ वहु
रि ग्रहस्थकै भी इनि वस्तुनिके दानतै विशेष उत्पत्तौ नांही उपजै है पाप वहुत
है उत्पत्ति अल्प है सो वहुत पापकार्य तौ ग्रहस्थकूं करनेमैं लाभ नांही जामैं वहु
त लाभ होय सो ही करना योग्य है दीक्षा तौ इनि वस्तुनिकरि रहित ही जाननां
॥ ॥ आगे फेरि कहे है॥ गाथा॥ सत्तूमित्ते य समा पसंसणिंदाअलद्धिलद्धिसमा
तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया॥ ४७॥ अर्थ॥ वहुरि जामैं शत्रु मि
त्र विषै समभाव है वहुरि प्रसंसा निंदा विषैं अर लाभ अलाभ विषै समभाव
हैं वहुरि तृण कंचन विषै रागद्वेषका अभाव है तातै वैरी मित्र निंदा प्रसंसा
लाभ अलाभ तृण कंचन विषै तुल्यभाव है॥ जैनके मुनिनिकै ऐसी दीक्षा है
॥ ॥ आगैं फेरि कहै है॥ गाथा॥ उत्तममज्झमगेहे। दारिद्दे ईसरे निरावेक्खा॥

श्रा०पा० सवत्थगिहत्थपिंडा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ४८ ॥ अर्थ ॥ उत्तमगेह कहिए सोभा
२२८ सहित ऐसा राजमंदरादिक अर मध्यमगेह कहिए सोभा रहित सामान्य
जनका घर इनि विषै तथा दारिद्री अर धनवान इनि विषै निरापेक्ष कहिए
जामैं अपेक्षा नांही ऐसी सर्वजायगा आहार है पिंड कहिए आहार जामैं ऐसी
प्रव्रज्या कही है ॥ भावार्थ ॥ मुनि दिक्षा सहित होय है ते आहार लेनेंकूं जाय तब
ऐसी न विचारै जो वडे घर जानां अथवा छोटे घर जानां तथा दलिद्री कै न जै ।
धनवान कै जानां ऐसी वांछा रहित अपनां निर्दोष आहार की योग्य
ता होय तहां सर्वत्र ही जाय योग्य आहार लें ऐसी दिक्षा कहे है ॥ आगे ।
फेरि कहे है ॥ गाथा ॥ णिग्गंथा णिस्संगा णिम्माणासा अरायणिद्दोसा णि २२८
म्मम णिरहंकारा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ४९ ॥ अर्थ ॥ वहुरि कैसी है प्रव्रज्या

निरग्रंथ स्वरूप है परिग्रह तैं रहित है ॥ वहुरि कैसी है निःसंगा कहिए स्त्री आ
दिक परद्रव्य का संग मिलाप जामै नांही है ॥ वहुरि निर्मांणा कहिए मान कषाय
जामै नांही है मद रहित है ॥ वहुरि कैसी है निराशा है आशा जामै नांही है सं
सार देह भोग की आशा रहित है ॥ वहुरि कैसी है अराग कहिये राग का जा
मै अभाव है संसार देह भोग सूं प्रीति जामै नांही है ॥ वहुरि कैसी है निर्दोष
है काहूसूं द्वेष जामैं नांही है ॥ वहुरि कैसी है निर्ममा कहिए जामैं काहूसूं मम
त्वभाव नांही है ॥ वहुरि कैसी है निरहंकारा कहिए अहंकार रहित है जो कछू
कर्म का उदय है सो होय है ऐसे जानने तैं परद्रव्य मैं कर्तापणा का अहंकार
नांही है अपना स्वरूप ही का जामै साधन है ऐसी प्रव्रज्या कही है ॥ भावार्थ ॥ अ
न्यमती भेषपहरि तिसमात्र दीक्षा मानै है सो दीक्षा नांही है जैन दीक्षा ऐसी ॥

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

अ०पा० कही है ॥ ॐ ॥ आगै फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ णिण्णेहा णिल्लोहा णिम्मोहा णिव्वियार णि
११९ क्कलुसा णिब्भय णिरासभावा ॥ पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ५० ॥ अर्थ ॥ बहुरि प्र
व्रज्या ऐसी कही है कैसी है ॥ निस्नेहा कहिये जामै काहूसूं स्नेह ममत्व नांही प
रद्रव्यसूं रागादिरूप सचिक्कण भाव जामै नांही है बहुरि कैसी है निर्लोभा कहि
ए जामैं किछू परद्रव्य के लेने की वांछा नांही है ॥ बहुरि कैसी है निर्मोहा कहि
ए जामै काहूं परद्रव्यसूं मोह नांही है भूलिकरि भी परद्रव्य तै आत्मबुद्धि न
ही उपजै है बहुरि कैसी है निर्विकार है बाह्य अभ्यंतर विकारसूं रहित है बा
ह्य शरीरकी चेष्टा तथा वस्त्राभूषणादिकका तथा अंग उपंगका जामै वि
कार नांही है अंतरंग काम क्रोधादिकका विकार जामैं नांही है ॥ बहुरि कैसी ११९
है निःकलुषा कहिये मलिनभाव रहित है आत्माकूं कषाय मलिन करै है सो

कषाय जामैं नांही है अपना स्वरूपकूं अविनाशी जानै ताकै काहेका भय होय
बहुरि कैसी है निराशाभाव कहिए जामैं ॥ ॥ काहू प्रकारका परद्रव्यकी
आशाका भाव नांही है आशा तौ किछू वस्तुकी प्राप्ति होय ताकी लगी रहै है अ
र जहां परद्रव्यकूं अपना जाण्या नांही अर अपने स्वरूपकी प्राप्ति भई तब कि
छू पावना न रह्या तब काहूकी आशा होय प्रव्रज्या ऐसी कही है ॥ भावार्थ ॥ जै
न दीक्षा ऐसी है अन्यमत मैं स्वपरद्रव्यका भेदज्ञान नांही तिनिकै ऐसी दी
क्षा काहेतै होय ॥ ॐ ॥ आगैं दीक्षाका बाह्यरूप कहै है ॥ गाथा ॥ जहजायरूव
सरिसा ॥ अवलंबियभुव णिराउहा ॥ संता परकियणिलयणिवासा पव्व
ज्जा एरिसा भणिया ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ कैसी है प्रव्रज्या यथाजातरूपसदृशा क
हिए जैसा जन्म्या बालकका नग्नरूप होय तैसा नग्नरूप जामै है बहुरि

अ०पा० कैसी है अवलंबितभुजा कहिए लंबायमान कीये है भुजा जामे बहुरि अप्र
१२० पेक्षा कायोत्सर्ग धारहना जामे होय है। बहुरि कैसी है निरायुधा कहिए
आयुधनि करि रहित है। बहुरि शांता कहिए अंगउपांग के विकार रहि
त अंगलंभुजा जामे होय है बहुरि कैसी है परिकृतनिलयनिवासा कहिये प
रका कीया निलय जो वसतिका आदिक तामै है निवास जामे॥ आप कूं।
कृतकारित अनुमोदना मनवचनकाय करि जामे दोष न लाग्या होय कै
सी परकी करी वसतिका आदिक मैं वसना होय है ऐसी प्रव्रज्या कही है। भा
वार्थ। अन्यमती केई वा त्रवस्त्रादिक राखै है केई आयुध राखै है केई सुख
निमित्त आसन चलाचल राखै है केई उपाश्रय आदि वसने का निवास ब
णाय तामे वसे है अर आप कूं दीक्षासहित मानै है। तिनि के भेषमात्र है। १२०

जैनदीक्षा तौ जैसी कही तैसी ही है॥ ५१॥ आगे फेरि कहै हैं। गाथा। उवसमखम
दमजुत्ता॥ सरीरसंक्कारवज्जिया रूक्खा। मयरायदोसरहिया॥ पव्वज्जा एरि
सा भणिया॥ ५२॥ अर्थ॥ बहुरि कैसी है प्रव्रज्या उपशमक्षमदमयुता कहिए उप
शम तौ मोहकर्म का उदय का अभावरूप शांतिपरिणाम अर क्षमा क्रोध का
अभावरूप उत्तमक्षमा अर दम इंद्रियका विषयनि मे न प्रवर्त्तावना इनि
भावनि करि युक्त है शरीरसंस्कारवर्जिता कहिये स्नानादिक करि सरी
र का सवारना ता करि रहित है। बहुरि रूक्षा है तैलादिक का मर्दन शरी
र कै जामै नाही है बहुरि कैसी है मदरागद्वेष इनि करि रहित है। ऐसी प्रव्र
ज्या कही है॥ भावार्थ॥ अन्यमत के भेषी क्रोधादिकरूप परिणमै है सरीर
कूं बारि सुंदर राखै है इंद्रियनि के विषयनि कै विषय सेवै है अर आप ही

अ०पा० कूं दीक्षा सहित मानै है सो वे तो मत स्तुत्य है अतीत कहा पउलहा मि
१२१ थ्यात्व दृढ करै है जैन दीक्षा ऐसी है सो सत्यार्थ है या कूं अंगीकार करै
तौ साचै अतीत है ॥७॥ आगै फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ विवरीयमूढभावा पणा
ट्ठकम्म णट्ठमिच्छत्ता ॥ सम्मत्तगुणविसुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥ ५३ ॥ अर्थ
वहुरि कैसी है प्रव्रज्या विपरीत भया है दूरि भया है मूढभाव कहिये अज्ञा
नभाव जामें अन्यमती आत्मा का स्वरूप सर्वथा एकांत करि अनेक प्रक
र न्यारे न्यारे कहि एवि वाद करै है आत्मा का स्वरूप विषै मूढभाव है जैनी
मुनिनिकै अनेकांत तैं साधा हूवा यथार्थ ज्ञान है मूढभाव नाही है वहु
रि कैसी है प्रणष्ट भया है कर्म आवजातें जैनदीक्षा लेनेवाले कै कर्मनिक १२१
नाश होय मोक्ष होय है वहुरि कैसी है नष्ट भया है मिथ्यात्व जामें जैनदीक्षा

मैं अतत्वार्थश्रद्धानरूप मिथ्यात्व का अभाव है । याही तैं सम्यक्त्व नाम गुण
करि विशुद्ध है निर्मल है सम्यक्त्व सहित दीक्षा मैं दोष नाही रहै है ऐसी प्रव्र
ज्या कही है ॥७॥ आगै फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ जिणमग्गे पव्वज्जा छहसंघयणे
सु भणिय णिग्गंथा ॥ भावंति भव्वपुरिसा कम्मक्खयकारणे भणिया ॥५४॥ अ
र्थ ॥ प्रव्रज्या है सो जिनमार्ग विषै छह संहनन वाले जीवनिकै होनी कह्या
है कैसी है निर्ग्रंथ स्वरूप है परिग्रह तैं रहित यथाजात स्वरूप है या कूं भव्य
रूप है ते भावै है ऐसी प्रव्रज्या कर्म के क्षय का कारण कही है ॥ भावार्थ ॥ वज्र
रिषभनाराच आदि छह शरीर के संहनन कहे है तिनि मैं सर्व ही मैं दीक्षा हो
नी कह्या है सो जे भव्य पुरुष है ते कर्म के क्षय का कारण जाणि या कूं अंगीक
र करो ऐसा नाही है जो दृढ संहनन वज्रऋषभ आदिक है तिन ही मैं होय ।

 अरस्फाटिकसहनतैंनमैनहोयहैऐसीनिर्ग्रंथरूपदीक्षास्फाटिकसा
हननविषैभीहोयहैं॥ आगैफेरिकहैहै॥ गाथा॥ तिलतुसमित्त णमित्तं
 समवाहरिगंथसंगहोणछिपा॥ वज्जहवइएसाजहभणियासव्वदरसी
हिं॥५५॥ अर्थ॥ जिनप्रव्रज्याविषैतिलकेतुसमात्रकासंग्रहकाकारणऐ
साभावरूपइच्छानामाअंतरंगपरिग्रहवहुरितिसतिलकेतुसमात्रवाह्य
परीग्रहकासंग्रहनाहीहै ऐसीप्रव्रज्याजैसैसर्वज्ञदेवकहीहैसोहीहै
अन्यप्रकारप्रव्रज्यानाहीहैऐसानियमजाननां॥ भावार्थ॥ स्वेतांबरआदि
कहैहैअपवादमार्गमैवस्त्रादिककासंग्रहसाधुकैकह्याहैसोसर्वज्ञदेव
केसूत्रमैतौकह्याहैनाहीतिनिकेकल्पितसूत्रवणायेहैतिनिमैंकह्या
हैसोकालदोषहै॥ ५५॥ आगैफेरिकहैहै॥ गाथा॥ उवसग्गपरिसहसहा

णिज्जणदेसेहिणिच्चअत्थेई॥ सिलकठेभूमितलेसव्वेआरुहइसव्वछ
५६॥ अर्थ॥ कैसीहैप्रव्रज्याउपसर्गकहिएदेवमनुष्यतिर्यंचअचेतनकृ
तउपद्रवअरपरीसहकहिएदेवकर्मकेयोगतेआयेजेवाईसतिनिकूं
समभावतेंहैसहनांजामैऐसीप्रव्रज्यासहितमुनिहैतेजहांअन्यज
ननांहीऐसानिर्जनवनादिकप्रदेसतहांसदातिष्टेहै तहांभीशिलात
लकाष्टभूमितलविषैतिष्टैइनसर्वहीप्रदेशनिकूंआरोहणकरैहैसोस
र्वकहैमैतैवनमैरहनेतैनगरमैरहतौअरकिंचितकालनगरीमैरहेतौ
ऐसेहीठिकाणैरहै॥ भावार्थ॥ जैनदीक्षावालेमुनिउपसर्गपरीसहमैंसम
भावरहैअरजहांसोवैवैठेतहांनिर्जनप्रदेशमैसिलाकाष्टभूमिही
विषैवैठैसोवैअसानाहीजोअन्यमतकेभेषीकीज्योस्वछंदप्रमादीर

अ०पा है ऐसा जाननां ॥छ॥ आगे अन्य विशेष कहै है ॥गाथा॥ पसुमहिलसंढ
१२३ संगं ॥ कुसीलसंगं ण कुणइ विकहाओ ॥ सज्झायझाणजुत्ता पव्वज्जा एरिस १
भणिया ॥५७॥ अर्थ ॥ जिस प्रव्रज्या विषै पशु तिर्यंच महिला स्त्री संढ नपुंस
क इनिका संग तथा कुशील व्यभिचारी पुरुषका संग न करै है बहुरि
स्त्री राज भोजन चोर इत्यादिककी कथा ते विकथा तिनिकूं न करै तो क
हा करै स्वाध्याय कहिए शास्त्र जिनवचननिका पठन अर ध्यान कहिए
धर्म शुक्ल ध्यान इनिकरि युक्त रहै ॥ प्रव्रज्या ऐसी जिनदेव कही है ॥
भावार्थ ॥ जैन दीक्षा लेकरि कुसंगति करि विकथादिक करि प्रमादी रहै
तो दीक्षाका अभाव होय जाय याते कुसंगति निषेध है अन्य भेषकी ज्यौं १२३
यह भेष नाहीं है यह मोक्षमार्ग है अन्य संसारमार्ग है ॥छ॥ आगै फेरि

विशेष कहै है ॥गाथा॥ तववयगुणेहिं सुद्धा संजमसम्मत्तगुणविसुद्धा य
॥ सुद्धा गुणेहिं सुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥५८॥ अर्थ ॥ प्रव्रज्या जिनदे
व ऐसी कही है कैसी है तप कहिए बाह्य अभ्यंतर बारह प्रकार अर व्रत
कहिए पांच महाव्रत अर गुण कहिए इनिके भेदरूप उत्तरगुण तिनिकरि
शुद्ध है ॥ बहुरि कैसी है संजम कहिए इंद्रियमनका निरोध षट्कायजीव
निकी रक्षा सम्यक्त्व कहिए तत्वार्थश्रद्धान लक्षण निश्चय व्यवहाररूप स
म्यग्दर्शन बहुरि इनिको गुण कहिए मूलगुण उत्तरगुण तिनिकरि शुद्ध
अतीचार रहित निर्मल है बहुरि जे प्रव्रज्याके गुण कहे तिनि शुद्ध है भेष
मात्र ही नाहीं है ऐसी शुद्ध प्रव्रज्या कही है इनि गुणनि विनां प्रव्रज्या शु
द्ध नाहीं है ॥ भावार्थ ॥ तप व्रत सम्यक्त्व इनिकरि सहित अर इनके मूलगुण उत्त

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

अ०पा० रगुण अर अतीचार निका शोधना जामैं होय ऐसी दिक्षा शुद्ध है अन्य
१२५ वादी तथा श्वेतांवर जैसे तैसे कहै है सो ही दिक्षा शुद्ध नाहीं है ॥ ५९ ॥ आ
गैं प्रव्रज्या का कथन कूं संकोचै है ॥ गाथा ॥ एवं आयतनगुणपज्जत्ताव
हुविसुद्धसम्मत्ते ॥ णिग्गंथे जिणमग्गे संखेवेणं जहाखादं ॥ ६० ॥ अ
र्थ ॥ ऐसे पूर्वोक्त प्रकार आयतन जो दिकाणा निर्ग्रंथमुनि ताके गुण
जेते है तिनि करि पज्जत्ता कहिए परिपूर्ण बहुरि अन्यमती जे बहुत दीक्षा
मैं थी चाहिये ते गुण जामे होय ऐसी प्रव्रज्या जिनमार्गमे जैसैं ख्यात
कहिए प्रसिद्ध है तैसे संक्षेप करि कही कैसा है जिनमार्ग विशुद्ध है सम्य
क्त जामैं अतीचार रहित सम्यक्त जामैं पाइए बहुरि कैसा है जिनमार्ग १२५
निर्ग्रंथ रूप है जामै बाह्य अभ्यंतर परिग्रह नाही है ॥ भावार्थ ॥ ऐसा ॥

र्वोत्कृ प्रव्रज्या निर्मल सम्यक्त सहित निर्ग्रंथ रूप जिनमार्ग विषै कही है ॥ अन्य नै।
यायिक वैशेषिक सांख्य वेदांत मीमांसक पातंजलि बौद्ध आदिक मतमै नाही है
बहुरि कालदोष तै जैनमत मैं तै च्युत भये अर जैनी कहावै ऐसे श्वेतांवर आदि
कनि मैं भी नाही है ॥ ऐसैं प्रव्रज्या का वर्णन कीया ॥ ७ ॥ आगैं बोधपाहुड के
कथन कूं संकोचता संता आचार्य कहै है ॥ गाथा ॥ रूवत्थं सुद्धत्थं जिणमग्गे जिण
वरेहिं जह भणियं ॥ भव्वजणबोहणत्थं ॥ छक्कायहियंकरं उत्तं ॥ ६१ ॥ अर्थ ॥ शु
द्ध है अंतरंग भाव रूप अर्थ जामैं ऐसा रूपस्थ कहिए बाह्यस्वरूप मोक्षमार्ग जैसा।
जिनमार्ग विषै जिनवरदेव कह्या है तैसा छह काय के जीवनि का हित करनेवाला १
मार्ग भव्य जीवनि के संबोधने के अर्थि मैं कह्या है ऐसैं आचार्य नैं अपना अ।
भिप्राय प्रगट कीया है ॥ भावार्थ ॥ इस बोधपाहुड विषैं आयतन आदि प्रव्रज्या

अ० पा० पर्यंतग्पारहेस्वलकहेतितिकावाह्यअंतरंगस्वरूपजैसैंजिनदेवनेंजिनमार्गमैं
१२५ कह्याहैतैंसाकह्याहैकेसाहेयहरूपछहकायकेजीवनिकाहितकरनेंवालाहै
एकेंद्रिआदिअसेंनीपर्यंतजीवनिकीतोरक्षाकाजामैंअधिकारहैवङरिसैंनी
पंचेंद्रीयजीवनिकीरक्षाजीकरावैहै॥अरमोक्षमार्गकाउपदेशकरिसंसारकादु
खमेटिमोक्षकूंप्राप्तिकरैहै॥असामार्गनविजीवनिकेसंबोधनेंकेअर्थिकह्या
है॥जगतकेप्राणीअनादितैंलगायमिथ्यामार्गमेप्रवृत्तिसंसारमैंभ्रमैहैसोदुःख
मेटनेंकूंआयतनआदिग्यारहस्थानकधर्मकेठिकाणेंकाआश्रयलेहैतेतिक
णिंअन्यथास्वरूपस्थापितितितैसुखलीयाचाहैहै॥सोयथार्थविनासुखकहां
तातैंआचार्यदयालहोयजैसैंसर्वज्ञभाषेतैसैंआयतनआदिककास्वरूपसं १२५
क्षेपकरियथार्थकह्याहै॥ताकूंवाचोपढोधारणकरोयाकीश्रद्धाकरिइनिस्व।

रूपप्रवर्तौयातैंवर्त्तमानमैंसुखीरहो॥अरआगामीसंसारदुःखतैछूटिपर
मानंदस्वरूपमोक्षकूंप्राप्तहोऊ॥आचार्यकाकहनेंकाअभिप्रायहैंइहांकोई
पूछैजोइसबोधपाहुडमैंधर्मव्यवहारकीप्रवर्त्तिकेग्पारहस्थानकहेतिनिका॥
विशेषणकीयाजोछहकायकेजीवनिकेहितकेकरनेंवालेएहैंसोअन्यमती
इनिकूंअन्यथास्थापिप्रवृत्तिकरैहै॥तेहिंसारूपहैअरजीवनिकेहितकरनेंवा
लेनाहीहैंतहांएग्पारहैहीस्थानकसंयमीमुनिअरहंतसिद्धहीकूंकहेतहांतैं
छहकायकेजीवनिकेहितकरनेंवालेहीहैं॥तातैंपूज्पहैयहतोसत्यहैअरए
जहांवसैऐसेआईदेप्रदेशरूपक्षेत्रतथापर्वतकीगुफामंगादिकतथाअ॥
कर्त्रिमचैत्यालयएस्वयमेवणिरहेहैतिनिकूंभीप्रयोजनअरनिमत्तविचारिउ
पचारमात्रकरिछहकायकेजीवनिकेहितकरनेंवालेकहिएतोविरोधना॥

श्रा० पा० १२५ ही दै ताते एप्रदेश जड है ते बुद्धिपूर्वक काहू का बुरा भला करै नाही तथा जड कूं सु
ख दुःख आदि फल का अनुभव नाही ताते ऐसी व्यवहार करि पूज्य है जातें अर
हंतादिक जहां तिष्ठे वह क्षेत्रादिक भी पूज्य है ॥ बहुरि ग्रहस्थ जिनमंदिर वणावै ।
वस्तिका प्रतिमा वणावै प्रतिष्ठा पूजा करै तामें तो छह काय के जीवनि की विराध
ना होय है ॥ सो यह उपदेश अर प्रवृत्ति की वाहुल्यता कैसें है ॥ ताका समाधान
ऐसा जो ग्रहस्थ अरहंत सिद्ध मुनिनि का उपासक है सो राह जहां साक्षात होय
तहां तौ तिनि की वंदना पूजन करै ही है अर साक्षात नाही तहां परोक्ष संकल्प
मैं ले वंदना पूजनां करै तथा तिनि का वसने का क्षेत्र तथा ते मुक्ति प्राप्ति भ
ये तिस क्षेत्र मैं तथा अकृत्रिम चैत्यालय मैं तिनि का संकल्प करि वंदै पूजै या १२६
मैं अनुराग विशेष सूचै है ॥ बहुरि तिनि की मुद्रा प्रतिमा तदाकार वणा कै प्र

रतिस्थ का मंदिर वणा प्रतिष्ठा करि स्थापै तथा नित्य पूजन करै या मैं अत्यंत अ
नुराग सूचै है तिस अनुराग तैं विशिष्ट पुण्य बंध होय है ॥ अर तिस मंदिर मैं छ
ह काय के जीवनि का हित का रक्षा का उपदेश होय है तहां निरंतर सुणनें वाला
धारणे वाले कै अहिंसा धर्म की श्रद्धा दृढ होय है ॥ तथा तिनि की तदाकार
प्रतिमा देखनें वाला कै सांतभाव होय है ध्यान की मुद्रा का स्वरूप जान्या जाय
है वीतराग धर्म तै अनुराग विशेष होनें तैं पुण्य बंध होय है ॥ तातें इनि कूं छह
काय के जीवनि के हित करनें वाले उपचार करि कहिये अर जिनमंदिर वा
वस्तिका प्रतिमा वणावने मैं तथा पूजा प्रतिष्ठा करनें मैं आरंभ होय है ता मैं कि
छू हिंसा भी होय है सो ऐसा आरंभ तो ग्रहस्थ का कार्य है या मैं ग्रहस्थ कूं अल्प पा
प कह्या है ॥ पुण्य बहुत कह्या है जातें ग्रहस्थ की पदई मैं तो मिथ्यात्व अर चोरी

श्र०पा० आदि अन्यायकार्य अर मांसादिक अभक्ष खावाना महापाप कह्या है
१२३ ग्रहस्थ की पदई मैं न्यायकार्य करना न्यायपूर्वक धन उपार्जन करनां रहै
मैं कूं जाय गावणा वेणा ब्याहादिक करनां यत्नपूर्वक आरंभ करि आ
हारादिक आप करि अर षानां इत्यादिक कार्य तिनमैं यद्यपि किछू हिंसा नी है ।
य है तो ऊ ग्रहस्थ कूं इनिका महापाप न कहियें ग्रहस्थ कै तो महापाप मिथ्या
त्व का सेवनां अन्याय चोरी आदि करि धन कूं मावनां त्रसजीवनि कूं मारि मा
स आदि अभक्ष खावाना परस्त्री सेवनां ए महापाप है॥ अर ग्रहस्थचारा छो
डि मुनि होय तब ग्रहस्थ के न्यायकार्य आरंभ करि आहार उपजावना मुनि
के महापाप है जातें मुनि की पदई मैं ए कार्य भी अन्याय ही है अर मुनि कै भी १२४
आहार विहार आदि की प्रवृत्ति मैं किछू हिंसा होय है ताकरि मुनि कूं हिंसा

कन कहिए तातै जिन मंदिर वस्तिका पूजा प्रतिष्ठा के कार्यनि मैं आरंभ का अ
ल्प पाप है अर बहुरि मोक्षमार्ग मैं प्रवर्त्तिनेवाले तिनतैं अति अनुराग होय
है॥ अर तिनिकी भावना करै है तिनि कूं आहार दानादिक दे है तिनिका वै
यावृत्य करै है सो यह सम्यक्त्व का अंग है अर महान पुण्य की कारना है तातें
ग्रहस्थनि कूं सदा करना उचित है अर ग्रहस्थ होय ए कार्य न करै तो जानिये या
कै धर्मानुराग विशेष नांही॥ इहां फेरि कोई कहै है जो ग्रहस्थचारा के कार्य विना
तौ ग्रहस्थ कूं सरै नांही तातैं ते तौ करै ही करै अर धर्मपक्ष मैं बडे आरंभ का
कार्य करि पाप क्यौं मिलावै सामायिक प्रतिक्रमण प्रोषध आदि करि पुण्य उ
पजावै ता कूं कहिए जो तू ऐसें कहै है तहां तेरे रीते परिणाम की तो पहचा
न नांही केवल बाह्य क्रियामात्र ही मैं तू पुण्य समझै है बाह्य बडा आरंभ भी परि

मो॰पा॰ ग्रहीका मन सामायिक प्रतिक्रमण आदि निरारंभ कार्यनिमैं विशेष लागैं ना
१२८ ही है यह अनुभव गोचर है सो तेरै अपनें भावनिका अनुभव नाही केवल
बाह्य सामायिकादि निरारंभ कार्यकानै बधारिवैगें तौ किछू विशेष पुण्य है
नाही शरीरादिक बाह्य वस्तु तौ जड है केवल जडकी क्रियाका फल तौ आ
त्माकूं लागै नाही अपनां भाव जेता अंश बाह्य क्रियामें लागे तेता अंश शु
भाशुभ फल आपकूं लागै है ऐसे विशिष्ट पुण्य तौ भावनिकै अनुसार है ब
हुरि आरंभी परिग्रही का भाव तौ पूजा प्रतिष्ठादिक बडे आरंभमें ही वि
शेष अनुराग सहित लागै है ॥ अर जो ग्रहस्थाचारा के बडे आरंभतें विरक्त
होगा सो त्याग करि अपनी पदई बधावैगा तब ग्रहस्थाचाराके बडे आरंभ छो १२९
डैगा ताही रीति बडे आरंभके धर्मप्रवृत्तिके भी आरंभ पदईकी रीति घटावै।

गा मुनि होगा तब सर्व ही आरंभ काहेकूं करैगा तातै मिथ्यादृष्टी बहिरबुद्धी जे
बाह्य कार्यमात्र ही पुण्यपाप मोक्षमार्ग समझै है तिनिका उपदेश सुणि आपा
कूं अगपानी न होणा पुण्यपापका बंधमें भाव ही प्रधान है अर पुण्यपापरहित
मोक्षका मार्ग है तामैं सम्यग्दर्शनादिकरूप आत्मपरिणाम प्रधान है ॥ अ
र धर्मानुराग है सो मोक्षमार्गका सहकारी है ॥ अर धर्मानुरागकै तीव्रमंदके
भेद बहुत है तातैं अपने भावनिका यथार्थ पहचानि अपनी पदई सामर्थ्य
विचार श्रद्धान ज्ञान प्रवृत्ति करनी अपना बुरा भला अपने भावनके आधी
न है बाह्य परद्रव्य तौ निमित्तमात्र है उपादान कारण होय तौ निमित्त भी स
हकारी होय अपादान न होय तो निमित्त कछु भी न करै है ऐसें इस बोध
पाहुडका आशय जाननां याकूं भी के समझि आयतनादिक जैसे कहे है ते

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

सैं इस्र अरहूनिकाव्यवहारजीवाह्य तैसाही अरचैत्यग्रह प्रतिमाजिनविंवजि
नमुद्राओंश्रो तुपाषाणादिककानी व्यवहार तैसाही ज्ञानिश्रद्धानकरनां
अरप्रवृत्ति करणीं अन्यमती अनेकप्रकारस्वरूपविगाडि प्रवृत्तिकरै हैति
निवुद्धिकल्पितजाणि उपासना नकरनी इसव्यवहारकास्वरूपप्रद्दन्याके
स्थानमैंआदि सैं लेइ सरीगाथामैंवचंचैत्यालयत्रिकअरजिनभवनएभी
मुनिकैध्यावनेंयोग्यहोयहै जातैंजिनमंदिरप्रतिमापूजाप्रतिष्ठाआदिककेल
र्वथानिषेधकरनेवालेसर्वथाएकांतीकीज्यो मिथ्यादृष्टी हैतिनिकीसंगतिन
करनी ॥ छ ॥ आगैंआचार्यइसबोधपाहुडकाकहनां अपनीबुद्धिकल्पितना
हीहैपूर्वाचार्यनिकेअनुसारकह्याहै ऐसेंकहै है ॥ गाथा ॥ सद्दवियारो हूओ ॥ १२९
भासासुत्तेसु जं जिणे कहियं ॥ सो तह कहियं णायं सिसेण य भद्दबाहुस्स

६१ ॥ अर्थ ॥ शब्दकाविकारतैंउपज्या ऐसा अक्षररूपपरिणाया भाषासूत्र
निविषैजिनदेवनैकह्याहै सोही श्रवणमैंअक्षररूपआया वहुरिजैसाजिन
देवकह्यातैसा परंपराकरिभद्रबाहु नामा पंचमश्रुतकेवलीतैं ज्यानया अप
नेशिष्यविसाषाचार्य आदिकूं कह्या सोतिनिनैं जाण्या सोही अर्थरूपविशाष
चार्यकी परंपरातैंचल्या आया सोही अर्थ आचार्य कहै है हमनैंकह्या है ह
मारीबुद्धिकरिकल्पितनकह्याहै ऐसा अभिप्राय है ॥ छ ॥ आगैंभद्रबाहु ॥ १
स्वामीकीस्तुतिरूपवचनकहै है ॥ गाथा ॥ वारसअंगवियाणं ॥ चउदसपुव्वं
गविउलवित्थरणं ॥ सुयणाणि भद्दबाहू गमयगुरू भयवओ जयउ ॥ ६२ ॥ अ
र्थ ॥ भद्रबाहुनामआचार्य है सोजयवंतहोहु कैसे हैं बारहअंगकाहैविज्ञा
नजिनिकूं ॥ वहुरिकैसेहै चउदहपूर्वनिका है विपुलविस्तार जिनिकै ॥ याही

अ०पा० तैंकैसेहैंअनंतज्ञानीहैपूर्णभावज्ञानसहितअक्षरात्मकश्रुतज्ञानजिन
२५७ केपाईयहैबहुरिकैसेहैं॥गमकगुरुहैजेसूत्रतिकेअर्थकूंपाइजैसाकातैंसं
वाक्यार्थकरैतिनिकूंगमककहियेतिनिकेगुरुहैतिनिमेंप्रधानहैं॥बहुरिकैसे
हैंभगवानहैसुरासुरनिपूज्यहै॥ऐसेहैसोजयवंतहोउऐसेंकहनेमैंस्तुति
रूपतिनिकूंनमस्कारसूचैहैजयतिधातुसर्वोत्कृष्टअर्थमेंहैसोसर्वोत्कृ
ष्टकहनेंतैंनमस्कारहीआवैहै॥भावार्थ॥भद्रबाहुस्वामीपंचवांश्रुतके
वलीभयेतिनिकीपरंपरातैंशास्त्रकाअर्थजानियहबोधपाहुडग्रंथरच
्याहैतातैंतिनिकूंअंतमंगलकेअर्थआचार्यस्तुतिरूपनमस्कारकीया
हैऐसेंबोधपाहुडसमाप्तकीयाहै॥भावार्थ॥प्रथमआयतनद्वितीयचै २५७
त्यगृहतीजोप्रतिमादर्शन अरजिनबिंबछठोजिनमुद्रायतिमाज्ञान

॥छप्पय॥

सातमूंदेवआठमूंनवमूंतीरथ॥दशमूंहैअरहंतग्यारमूंदीक्षाश्री
पथ॥इमपरमारथमुनिरूपसत्यआत्मभेषसबनिंद्यहैं॥व्यवहारधातुप
षाणमयआकृतिइनिकीवंद्यहै॥दोहा॥कह्यौवीरजिनबोधयहु
गौतमगणधरधारि॥बरतायोपंचमसमय॥नमूंतिनहिमदछारि॥१॥
इतिबोधपाहुडकीवचनिकासमाप्त॥ ॥अथभावपाहुडकीव
चनिकालिख्यियेहै॥दोहा॥परमानंदकूंवंदिकरि॥शुद्धभावकरतार
करूंभावपाहुडतणी॥देशबचनिकासार॥१॥ऐसेंमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाक
रिश्रीकुंदकुंदआचार्यकृतभावपाहुडप्राकृतगाथाबंधग्रंथहै॥ताकीदे
शभाषामयवचनिकालिखियेहै॥तहांप्रथमहीआचार्यइष्टकेनमस्का
ररूपमंगलकरिग्रंथकरनेकीप्रतिज्ञाकासूत्रकहैहै॥गाथा॥णमिऊणजि

णवरेंदे ॥ नरसुरभवणेंद वंदिये सिद्धे ॥ वोछामि भावपाहुड मवसेसे संजदे
सिरसा ॥ २ ॥ अर्थ ॥ आचार्य कहे है जो मैं भावपाहुड नाम ग्रंथ है ताहि कहूं
गा ॥ पूर्वे कहा करि जिनवरेंद्र कहिये तीर्थंकर देव बहुरि सिद्ध कहिए अ
ष्ट कर्म का नाश करि सिद्ध पद कूं प्राप्त भये ॥ बहुरि अवशेष संयत कहिए
आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु ऐसे पंच परमेष्टी तिनहि मस्तक करि वंदना क
रि कै कहूंगा ॥ कैसे हैं पंच परमेष्टी नर कहिए मनुष्य सुर कहिए स्वर्गवासी
देव भवन कहिए पाताल वासी देव इनि के इंद्र तिनि करि वंदनें योग्य है ॥
॥ भावार्थ ॥ आचार्य भावपाहुड रचे है सो भाव प्रधान पंच परमेष्टि है तिनिकूं
आदि मैं नमस्कार युक्त है ॥ जातें जिनवरेंद्र तौ ऐसे है जिन कहिए गुणश्रे
णी निर्जरा करि युक्त है ऐसे अविरत सम्यग्दृष्टी आदिक तिनि मैं वर कहि

ए श्रेष्ठ ॥ गणधरादिक तिनि मैं इंद्र तीर्थंकर परम देव है सो गुणश्रेणी निर्जरा
शुद्ध भाव ही तें होय है सो तीर्थंकर भाव के फल कूं प्राप्त भये घाति कर्म का नाश
करि केवलज्ञान पाया ॥ बहुरि तैसें ही सर्व कर्म का नाश करि परम शुद्ध
भाव कूं पाय पूर्णता कूं आप साधै है अन्य कूं शुद्ध भाव सिष्यादीक्षा दे है ब
बहुरि साधु है ते भी तैसें ही शुद्ध भाव कूं आप साधे है ॥ बहुरि शुद्ध भाव ही
के माहात्म्य करि तीन लोक के प्राणीनि करि पूजनें योग्य वंदनें योग्य भये
है तातें भावप्राभृत की आदि विषै इनि कूं नमस्कार युक्त है बहुरि मस्तक
रि नमस्कार करनें मैं सर्व अंग आय गये जातें मस्तक अंगनि मैं उत्तम है
बहुरि आप नमस्कार कीया तब अपना भावपूर्वक भया ही तब मन वच
काय तीनूं ही आय गये ऐसें जाननां ॥ ॥ आगैं कहे है जो लिंग द्रव्य भाव

करिदोयप्रकारहैतिनिमैंभावलिंगपरमार्थहै ॥गाथा॥ भावोहिपढमलिंगंणदव्वे
लिंगंचजाणपरमत्थं भावोकारणभूदो ॥गुणदोसाणंजिणाबिंति॥ २ ॥अर्थ॥
भावहैसोप्रथमलिंगहैयाहीतैंहेभव्यतूंद्रव्यलिंगहैताहिपरमार्थरूपमति
जाणिजातैंगुणअरदोषइनिकाकारणभूतभावहीहैऐसैंजिनभगवान
कहैहै ॥भावार्थ॥ गुणजेस्वर्गमोक्षकाहोनाअरदोषजेनारकादिकसंसार
काहोनाइनिकाकारणभगवांनभावहीकुंकह्याहैयाकारणहोयसोका
र्यकैपहलैप्रवर्त्तैसोइहांमुनिश्रावककैद्रव्यलिंगकैपहलैंभावलिंगहोयतो
साचामुनिश्रावकहोयहैतातैंभावलिंगहीप्रधानहैप्रधानहोयसोहीपरमा
र्थहैयातैंद्रव्यलिंगकूंपरमार्थनजाणणाऐसैंउपदेशकीयाहै॥ इहांकोई
पूछैभावकास्वरूपकेहाहैताकासमाधानजोभावकास्वरूपतोआचार्य

आगैंकहसीतथापिइहांभीकछूकहिएहै॥ यालोकमैंषट्द्रव्यहैंतिनिमैंजी
वपुद्गलकाप्रवर्त्तनप्रगटदेषनेमैआवैहैतहांजीवतोचेतनस्वरूपहैअर
पुद्गलस्पर्शरसगंधसह्रूपजडहैइनिकीअवस्थातैंअवस्थारूपभावतो
दर्शनज्ञानहैअरपुद्गलकर्मकेनिमित्ततैंज्ञानमैंमोहरागद्वेषहोनांसोवि
भावभावहै॥ बहुरिपुद्गलकैस्पर्शतैंस्पर्शांतर॥ नरसतैंरसांतरइत्यादिगु
णतैंगुणांतरहोनांसोतोस्वभावहैअरपरमाणूतैंस्कंधहोनातथास्कंधतै
अन्यस्कंधहोनांतथाजीवकेभावकेनिमित्ततैंकर्मरूपहोनांएविभावभा
वहैऐसेंइनिकैपरस्परैंनिमित्तनैमित्तिकभावप्रवर्त्तैहैतहांपुद्गलतोजड
हैताकैनैमित्तिकभावहैंकिछूसुखदुःखआदिनांहीअरजीवचेतनहैया
कैपुद्गलकेनिमित्ततैंभावहोयतिनितैंसुखदुःखआदिप्रवर्त्तैहै तहांपुद्

अ॰पा॰ तैंजीवकेस्वभावभावरूपरहनेंकाअरनिमित्तिकभावरूपनप्रवर्त्तनेकूं।
१३३ उपदेशहै अरजीकेसंयोगतैंदेहादिकद्रव्यकासंबंधहैसोइसबाह्यरूपकूं
द्रव्यकहिए सो भावतैंद्रव्यकीप्रवृत्तिहोयहैविभावरागद्वेषमोहरूपप्रवर्त्ते
विभावमैंनप्रवर्त्तैतातैंसंसारसंबंधीदुःखहोयहै अरद्रव्यरूपहैसोपुद्गल
काविभावहैयासंबंधीजीवकैंदुःखसुखहोयहैतातैंभावहीप्रधानहै ऐसैंन
होयतौकेवलीभगवांनकैंभीसंसारीकसुखदुःखकीप्राप्तिआवैहैसोहैनं।
ही ऐसैंजीवकेज्ञानदर्शनअररागद्वेषमोहए तीनौस्वभावविभावहै
अरपुद्गलकैस्पर्शादिकअरस्कंधादिकस्वभावविभावहैतिनिमैंजीवका।
हीभावप्रधानहैपुद्गलद्रव्यसंबंधीप्रधाननांही बाह्यद्रव्यनिमित्तमात्रहै। १३३
उपादानविनांनिमित्तकछूकरैनांहीयहतौसामान्यपणैंस्वभावविभावका

स्वरूपहैबहुरियाहीकाविशेषसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रतौजीवकास्वभाव
हैतिनिमैंसम्यक्दर्शनभावसोप्रधानहैयाविनांसर्वबाह्यअभ्यंतरक्रिया।
मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रहैसोविभावहैसोसंसारकाकारणहैसो ऐसैंजान
ना॥ २॥ आगेंकहैहैंजोबाह्यद्रव्यनिमित्तमात्रहैसोयाकाअभावजीवकै।
भावकीविशुद्धताहेतकानिमित्तजाणिबाह्यद्रव्यकात्यागकीजियेहै॥ गाथा॥
भावविसुद्धिणिमित्तंबाहिरगंथस्सकीरएचाओ॥ विहलोअब्भंतरगंथ
जुत्तस्स॥ ३॥ अर्थ॥ बाह्यपरिग्रहकात्यागकीजियेहैसोभावकीविशुद्धताकेअ
र्थिकीजियेहै॥ बहुरिअभ्यंतरपरिग्रहजोरागादिकतिनिकरियुक्तहैता
कैबाह्यपरिग्रहकात्यागनिःफलहै॥ भावार्थ॥ अंतरंगभावविनांबाह्यत्याग
दिककीप्रवृत्तिनिःफलहैयहप्रसिद्धहै॥ ३॥ आगेंकहैहैजोकोटिभवमें

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

अ०पा०
१३६

तप करै तौऊ भाव विना सिद्धि नाही ॥ गाथा ॥ भावरहिउ न सिज्झइ जइ वि तवं
चरइ कोडिकोडीउ । जम्मंतराय बहुसो लंबियहत्थो गलियवत्थो ॥४॥ अर्थ
जो बहुत जन्मांतरतांई कोडिसंख्यामात्र तांई हस्त लंबायमान करि वस्त्रादि
त्याग करि तपश्चरण करै तौऊ भावरहितकै सिद्धि नाही होय है ॥ भावार्थ ॥ भा
वमै मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान मिथ्याचारित्ररूप भाव विभावरहित सम्यग्दर्श
न ज्ञान चारित्र स्वरूप स्वभावकै विषै प्रवृत्ति न होय तौ कोडाकोडी भवतांई
कायोत्सर्ग करि ॥ नग्नमुद्रा धारि तपश्चरण करै तौऊ मुक्तिकी प्राप्ति न होय
ऐसें भावमैं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्ररूप भाव प्रधान है तिनिमैं भी सम्यग्दर्शन प्र
धान है जातैं या विना ज्ञान चारित्र मिथ्या कहे हैं ऐसैं जाननां ॥४॥ आगैं इ १३५
सही अर्थकूं दृढ करै है ॥ गाथा ॥ परिणाममि असुद्धे गंथे मुंचेइ बाहिरे य ज

इ । बाहिरगंथचाओ भावविहूणस्स किं कुणइ य ॥ अर्थ ॥ जो मुनि होइ परिणाम
अशुद्ध होतें बाह्य ग्रंथकूं छोडै तौ बाह्य परिग्रहका त्याग है सो भावरहित मु
निकै कहा करै किछू भी न करै ॥ भावार्थ ॥ जो बाह्य परिग्रहकूं छोडि मुनि होय ।
अर परिणाम अशुद्ध होय अभ्यंतर परिग्रह न छोडै तौ बाह्यका त्याग कि
छू कल्याणरूप फल न करि सकै है सम्यग्दर्शनादि भाव विनां कर्मनिर्जरारू
प कार्य न होय है ॥ पहली गाथामें या मैं यह विशेष है जो मुनिपद लीले अर प
रिणाम उज्ज्वल न रहै आत्मज्ञानकी भावना न रहै तौ कर्म कटै नाही ॥५॥
आगैं उपदेश करै है जो भावकूं परमार्थ जाणि याहीकूं अंगीकार करना ॥
॥ गाथा ॥ जाणहि भावं पढमं किं ते लिंगेण भावरहिएण । पंथिय सिवपुरिपंथं ।
जिणउवइट्ठं पयत्तेण ॥६॥ अर्थ ॥ हे मुनि मोक्षपुरीका मार्ग जिनदेवका ।

रिउपदेस्याभावहीहैतातैंहैसिवपुरीकापथिककहि॥मार्गचलनेवाला॥
तूंभावहीकूंप्रथमजाणि॥परमार्थभूतजाणि॥भावरहितद्रव्यमात्रलिंगकरि
तैरैकहासाध्यहैकिछूभीनाही॥भावार्थ॥मोक्षमार्गजिनेश्वरदेवसम्यग्दर्श
नज्ञानचारित्रआत्माकास्वरूपपरमार्थकरिकह्याहैतातैंयाहीकूंपरमा
र्थजाणिअंगीकारकरणाकेवलद्रव्यमात्रलिंगकरिक हासाध्यहै
ऐसाउपदेशहै॥६॥आगैंकहैहैद्रव्यलिंगअनादितैंबहुतधारेतिनितैं
किछूसिद्धिनभई॥भावार्थ॥भावरहिएणसउरिसअणाइकालंअनंतसंसा
रेगहिउज्झियाइंबहुसोबाहिरणिग्गंथरूवाइं॥७॥अर्थ॥हेसत्पुरुषअनादि
कालतैंलगायइसअनंतसंसारविषैंतैंभावरहितनिर्ग्रंथरूपबहुतवारग्र २३५
हणकीएअरछोडे॥भावार्थ॥भावजोनिश्चयदर्शनज्ञानचारित्रतिसकरि १

बाह्यनिर्ग्रंथरूपद्रव्यलिंगसंसारविषैंअनादिकालतैंलगायबहुतवा
रधारेअरछोडेतथापिकिछूसिद्धिनभई।च्यारिगतिविषैंभ्रमताहीरह्यासो
हीकहैहै॥गाथा॥भीसणणरयगईएतिरियगईएकुदेवमणुगईए।पत्तो
सितीव्वदुक्खंभावहिजिणभावणाजीव॥८॥अर्थ॥हेजीवतैंभीषणभयका
रीनरकगतितथातिर्यंचगतिबहुरिकुदेवमनुष्यगतिविषैंतीव्रदुःखपा
येतातैंतूअबजिनभावनाकहिएशुद्धआत्मतत्त्वकीभावनाभायातैंते
रैसंसारकाभ्रमणमिटै॥भावार्थ॥परमात्माकीभावनाबिनांच्यारिगतिकेदु
खअनादिकालतैंसंसारविषैंपायेतातैंअबजीवतूंजिनेश्वरदेवका॥
शरणलेकरिअरशुद्धस्वरूपकाबारबारभावनारूपअभ्यासकरिया
तैंसंसारकाभ्रमणतैंरहितमोक्षकूंप्राप्तहोयऐसाउपदेशहै॥८॥आगे

अ॰पा॰ च्यारिगतिकेदुःखनिकूं विशेषकरिकहैहै। तहांप्रथमहीनरकगतिकेदुः
१३६ खनिकूंकहैहै। गाथा। सत्तसुणरयावासे दारुणभीसाइअसहणीयाइं
भुत्ताइसुइरकालं दुरकाइणिरंतरंहिसहियाइ। १०। अर्थ। हेजीवतैंसातन
रकभूमिनिविषैनरकआवासजेबिलतिनिविषैदारुणकहिएलीक्रू
रभयानकअरअसहनीयकहियेसहेनजायऐसेंघणेकालपर्यंतदुःख
निकूंनिरंतरहीभोग्याअरसह्या। भावार्थ। नरककीपृथ्वीसातहैतिनिमैंबिल
बहुतहैतिनिविषैएकसागरतेंलगायतेतीससागरपर्यंतआयुहैतहांआ ।
युपर्यंतअतितीव्रदुःखयहजीवअनंतपायाहै। १०। आगैंतिर्यंचगतिके
दुःखनिकूंकहैहै। गाथा। खणणुत्तावणवालणवेयणविछेयणाणिरोहं १३६
चपत्तोसिभावरहिउतिरयगईएचिरंकालं। ११। अर्थ। हेजीवतैंतिर्यंचग

तिविषैखननउत्तापनवेंजनव्युछेदननिरोधनइत्यादिदुःखबहुतका ।
लपर्यंतपायेकैसाभयासंताभावरहितकरिसम्यग्दर्शनआदिभावर
हितभयासंता। भावार्थ। याजीवनैंसम्यग्दर्शनादिभावविनातिर्यंचगतिवि
षैचिरकालदुःखपायेपृथ्वीकायमैंतौकुदालआदिखोदनेकरिदुः
खपाये। अपकायविषैअग्नितैंतपनाढोलनाइत्यादिकरिदुःखपा
येतेजकायविषैज्वालनाबुझावनाआदिकरिदुःखपायेपवनकाय
विषैभारेतैंहलकाकाचलनांफटकनांआदिकरिदुःखपाये। वनस्पतिवि
षैकाटनाछेदनारांधनाआदिकरिदुःखपाये। पंचेंद्रियपशुपंषीजलच
रआदिविषैपरस्परघाततथामनुष्यादिककीकरीवेदनाभूखतृषारो
कनांबंदनदेनांइत्यादिकरिदुःखपाये। ऐसैंतिर्यंचगतिविषैअसंख्यात

अ०पा० अनंतकालपर्यंत दुःख पाये ॥ छ ॥ आगैं मनुष्यगति के दुःखनिकूं कहै है
१३३ ॥ गाथा ॥ आगंतुक माणसियं सहजं सारीरियं च चत्तारि । दुक्खाइं मणु
यजम्मे पत्तोसि अणंतयं कालं ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ हे जीव तैं मनुष्य जन्म विषैं अ
नंतकालपर्यंत मानसीक कहिए मन ही विषै भया ऐसा विषयनि की वांछा १
होय अर मिलै नाहीं ऐसा वक्रुति सहज कहिए वात पित्त कफ करि सह
ही उपज्या तथा रागद्वेषादिक तैं वस्तु कूं इष्ट अनिष्ट मानि दुःख ए च्यारि
प्रकार अस्वकार तैं इनि कूं आदि लेअनेक प्रकार दुःख पाये ॥ छ ॥ आ
गैं देवगति विषै दुःखनि कूं कहै है ॥ गाथा ॥ सुरणिलएसु सुरच्छरविओय
कालेय माणसं तिव्वं । संपत्तोसि महाजस दुक्खं सुहभावणारहिओ ॥ १२ ॥ १३३
अर्थ ॥ हे महाजस तैं सुरनिलय कहिये देवलोक विषै सुर ब्रर कहिए प्या

रा देव तथा प्यारी अपसरा का वियोग काल विषै तिसि के वियोग संबंधी दु
ख तथा इंद्रादिक बडा रिद्धिधारी कूं देखि आपकूं हीन मानि मानतां ऐसा
मानसीक दुःख ऐसैं तीव्र दुःख शुभभावना करि रहित भये संते पाया
भावार्थ ॥ इस महाजस ऐसा संबोधन कीया ताका आशय यह है जो मुनि
निर्ग्रंथलिंग धारैं अर द्रव्यलिंग मुनी की समस्त क्रिया करै परंतु आत्मा
का स्वरूप शुद्धोपयोग कै सन्मुख न होय ता कूं प्रधानपणौ उपदेश है ॥
जो मुनि भया सो तो बडा कार्य कीया ते राजस लोक मैं प्रसिद्ध भया परंतु भ
ली भावना यो शुद्धात्मतत्व का अभ्यास विनां तपश्चरणादिक करि तु
स्वर्ग विषै देव भी भया तौ बडा विषयनि का लोभी भया संता मानसीक
दुःखही तप्तायमान भया ॥ छ ॥ आगैं शुभभावना तैं रहित अशुभभा

अ० पा० वनांका निरूपण करै है ॥ गाथा ॥ कंदप्पमाईयाउ ॥ पंचवि असुहादिभा
१३८ वणाई या होऊण दव्वलिंगी ॥ पहीणदेवो दिवे जाउ ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ हे जीव
तूं द्रव्यलिंगी मुनि होय करि कांदर्पी कूं आदि लेकरि पांच अशुभ
भावना हैं आदि जिनिकैं ऐसी अशुभ भावना भाय करि प्रहीण देव कहि
ए नीच देव स्वर्ग विषै उपज्या ॥ भावार्थ ॥ कांदर्पी किल्विषी संमोहो ॥
दानवी ॥ आभियोगकी ए पांच असुभ भावना है तहां निर्ग्रंथ मुनि होय क
रि सम्यक्त्व भावना विना इनि अशुभ भावना नकूं भावै तब किल्विष आदि
नीच देव होय मानसीक दुःखकूं प्राप्त होय है ॥ छ ॥ आगै द्रव्यलिंगी पार्श्वस्थ
आदि होय है तिनि कूं कहै है ॥ गाथार्थ ॥ पासत्थभावणाउ अणाइकालं अ
णेयवाराउ ॥ भाऊण दुहं पत्तो ॥ कुभावणाभावबीएहिं ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ हे जीव १३८

तूं पार्श्वस्थ भावनातैं अनादि कालतैं लेकरि अनंतवार भाय करि दुःख
कूं प्राप्त भया ॥ काहे करि दुःख पाया कुभावना कहीये भावना ता का भा
व तेही भये दुःख के बीज तिनि करि दुःख पाया ॥ भावार्थ ॥ जो मुनि कहावै
अर वसतिका बांधि आजीवका करै सो पार्श्वस्थ भेषधारी कहिए ॥ ब
हुरि जो कषायी होय व्रतादिकतैं भ्रष्ट करै संघका अविनय करै ऐसा
भेषधारी कूं कुशील कहिये ॥ बहुरि जो वैद्यक ज्योतिषी विद्या मंत्र क
आजीवका करै राजादिकका सेवक होय ऐसा भेषधारी कूं संसक्त क
हिए ॥ बहुरि जो जिनसूत्रतैं प्रतिकूल चारित्र मैं भ्रष्ट आलसी ऐसा भेष
धारी कूं मृगचारी कहिए ॥ इनि की भावना भावै सो दुःख ही कूं प्राप्त हो
य ॥ छ ॥ आगै देव होय करि मानसीक दुःख पाय ऐसै कहै है ॥ गाथा ॥ दे

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारकम्

अ॰ पा॰ वाणगुणविहूई रिद्धीमाहप्पबहुविहं दट्ठूं होऊणहीणदेवो पत्तोबहु
१३६ माणसं दुःखं ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ हे जीव तू हीणदेव होय करि अन्य महर्द्धिकदे
वनिकी गुणविभूति ऋद्धिका महात्म्य बहुत प्रका महात्म्य बहुत प्रकार २
देषि करि बहुत मानसीक दुःखकूं प्राप्त भया ॥ भावार्थ ॥ स्वर्ग मैं हीणदे
व होय करि बडी रिद्धिके धारी देवनिकै अणिमा आदि गुणकी विभू
ति देषि तथा देवांगना आदिका बहुत परिवार देषि तथा आज्ञा ऐश्व
र्य आदिका महात्म्य देषि तब मनमैं ऐसै विचारै जो मैं पुण्यरहित होए
बडे पुण्यवान है जिनिकै ऐसी विभूति महात्म्य देषि तब मनमैं ऐसै वि
चारै जो मैं पुण्यरहित हों ए बडे पुण्यवान हैं जिनिकै ऐसी विभूति महा १३७
त्म्य ऋद्धि है ऐसे विचारतै मानसीक दुःख होय है ॥ छ ॥ आगै कहै है जो

अशुभभावनातैं नीचदेव होय ऐसै दुःख पावै है ऐसैं कहि इस कथनकूं ।
संकोचै है ॥ गाथा ॥ चउविहविकहासत्तो मयमत्तो असुहभावपयडत्थो हो
ऊण कुदेवत्तं पत्तोसि अणेयवाराओ ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ हे जीव तू च्यारि प्रकार वि
कथा विषै आसक्त भया संता मद करि माता अशुभ भावना ही का है प्रग
ट प्रयोजन जाकै ऐसा होय करि अनेक वार कुदेवपणाकूं प्राप्त भया ॥
भावार्थ ॥ स्त्रीकथा भोजनकथा चोरकथा राजकथा ऐसी च्यारि विकथा ।
तिनि विषै परिणाम आसक्त होय लग्या तथा जाति आदि आठ मद क
रि मत्त भया ऐसैं अशुभभावना ही का प्रयोजन धारि अनेक वार
नीचदेवपणाकूं प्राप्त भया तहां मानसीक दुःख पाया इहां यह विशेष
जानना जो विकथादिक करि तौ नीच देव भी न होय परंतु इहां मुनिकूं

अ० पा० उपदेश है सो मुनिपद धारि किछू तपश्चरणादिक भी करै ऐसे भेषमैं वि
१४० कथादिक मैं रत होय तब भी च्यवदेव होय है ऐसा जाननां ॥ छ ॥ आगै कहै
है जो ऐसैं कुदेवयोनि पाय तहांतै चय जो मनुष्य तिर्यंच होय तहां गर्भमैं आ
वै ताकी ऐसी अवस्था है ॥ गाथा ॥ असुई बीहच्छे हि य कलिमलबहुलाहि
गब्भवसहीहि ॥ वसिओ सि चिरं कालं अणेयजणणीहिं मुणिपवर ॥ १७ ॥
अर्थ ॥ हे मुनिप्रवर तू कुदेवयोनितैं चय करि अनेक माताके गर्भकी व
सती विषै बहुत काल बस्या कैसी है गर्भकी वसती अशुचि है अपवित्र
है बहुरि कैसी है बीभत्स है घिणावणी है बहुरि कैसी है कलिमल बहुल
है जामैं पापरूप मलिन मलकी बहुलता है ॥ भावार्थ ॥ इहां मुनिप्रवर ऐ १४०
सा संबोधन है सो प्रधानपणैं मुनिहीकूं उपदेश है जो मुनिपद लेकैं

मुनिनि मैं प्रधान कहावैं अर शुद्धात्मस्वरूप निश्चय दर्शन ज्ञान चारित्र
कै सन्मुख होय ताकूं कहै है जो बाह्य द्रव्यलिंग लेवऊ तथापि च्यारि गतिविषै
ही भ्रमण कीया देव भी हूवा तो तहांतै चय करि ऐसे मलिन गर्भवास विषै
विषै आया तहां भी बहुत बार बस्या ॥ छ ॥ आगैं फेरि कहै है जो ऐसे गर्भ
वासतैं नीसरि जनमले अनेक माताका दूध पीया ॥ गाथा ॥ पीओसि थणच्छी
रं अणंतजम्मंतराइं जणणीणं ॥ अण्णण्णाण महाजस सायरसलिला दु अ
हियतरं ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ हे महाजस तिस पूर्वोक्त गर्भवास विषै अन्य जन्म विषै
अन्य माताका स्तनका दूध तैं समुद्रके जलतैं भी अतिशय करि अधिक
पीया ॥ भावार्थ ॥ जन्म जन्म विषै अन्य अन्य माताके स्तनका दूध एता पीया ताकूं
एकत्र कीजिये तो समुद्रके जलतैं भी अतिशय करि अधिक होय ॥ इ

हां अतिशय का अर्थ अनंतगुणा जानना जातें अनंतकाल का एकत्र
कीया अनंतगुणा होय ॥ छ ॥ आगैं फेरि कहै है जो जन्म लेकरि मरण
कीया तब माता का रुदन का अश्रुपात का जल भी एता भया ॥ गाथा ॥
तुह मरणे दुक्खेणं ॥ अण्णण्णाणं अणेयजणणीणं ॥ रुण्णाण णयणणी
रं सायरसलिलादु अहिययरं ॥१९॥ अर्थ ॥ हे मुनि तैं माता के गर्भ मैं वसि
जन्म लेकरि मरण कीया सो तेरे मरण करि अन्य अन्य जन्म विषै अन्य
अन्य माता के रुदन का नयननि का नीर एकत्र कीजिये तब समुद्र के ज
लतैं भी अतिशय करि अधिक गुणा होय अनंतगुणा होय ॥ छ ॥ आगै
फेरि कहै है जो तु संसार मैं जन्म लीये तिनमैं केश नख नाल कटे तिनि
का पुंज कीजिये तौ मेरुतैं अधिक राशि होय ॥ गाथा ॥ भवसायरे अणं

ते छिण्णुज्झिय केसणहरणालट्ठी ॥ पुंजइ जइ को वि जयेह वदि य गिरिसमधिया रासी
॥२०॥ अर्थ ॥ हे मुनि तैं या अनंत संसार सागर मैं तैं जन्म लीये तिनि मैं तैं जन्म लीये ति
निमैं केस नख नाल के अलि कटे छोडे तिनि का जो कोई पुंज करै तो मेरु गिरितै
भी अधिक राशि होय अनंतगुणा होय ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो हे आत्मा तू ज
ल थल आदि स्थान मैं सर्वत्र बस्या ॥ गाथा ॥ जलथलसिहिपवणं ॥ वरगिरिस
रिदरितरुवणाइ ॥ सव्वत्तो वसिओसि चिरं कालं ॥ तिहुवणमज्झे अणप्पवसो
॥२१॥ अर्थ ॥ हे जीव तू जल विषै थल कहिये भूमि विषै सिखि कहिए अग्नि विषै
तथा पवन विषै अंबर कहिए आकाश विषै सरित कहिए नदी विषै दरी कहि
ए पर्वत की गुफा विषै तरु कहिए वृक्षनि विषै बहुत कहा कहिए सर्व ही स्था
नक विषै तीन लोक विषै बहुत काल पर्यंत बस्या निवास कीया ॥ कैसा भया

भा॰ पा॰ १४२ संतोऽप्रात्मा स्वभावकहिएपराधीनहूवासंता ॥भावार्थ॥ निजशुद्धात्माकीभावनांवि
नाकर्मकैआधीनभयातीतलोकमेंसर्वत्रदुःखसहितवासकीया ॥छ॥ आगैंफेरिक
हेहैजोहेजीवतैंयालोकमैंसर्वपुद्गलभखेतौउतृप्तनभया ॥गाथा॥ गसिदूपुग्गला
इंभुवणोदरवत्तियाइंसव्वाइं। पत्तोसितोणतोलिंपुणरुत्तंताइंभुजंतो ॥२२॥ अर्थ॥ हे
जीवतैंयालोककाउदरविषैवर्त्ततेजोपुद्गलस्कंधतिनिसर्वनिकूंग्रसेभखेवफेरिति
निकूंपुनरुक्तफेरिफेरिभोगतासंताहूतृप्तिकूंप्राप्तिनभयो ॥छ॥ आगैंफेरि
कहेहै ॥गाथा॥ तिहुवणसलिलंसयलंपीयंतएहाइपीडिएणतुमं। तोविणतएहं
छेउजायउचिंतेसुभवमहणं ॥२३॥ अर्थ॥ हेजीवतैंयालोकविषैतृष्णाकापी
ड्यातीनभवनकाजलसमस्तपीया तोऊतृष्णाकायछेदनभया। तातैंतूयासंसार १४२
कामथनकहियेनासहोयतैसेचितवनकरि ॥भावार्थ॥ संसारमैंकाहूप्रकारतृप्ति

नांहीतातैंजैसैंआपनैंसंसारकाअभावहोयतैसैंचितवनकरनांनिश्चयसम्य
ग्दर्शनज्ञानचारित्रकूंसेवणांयहउपदेशहै ॥छ॥ आगैंफेरिकहैहै ॥गाथा॥ गहिउज्झि
याइंमुणिवरकलेवराइंतुमेअणेयाइं। ताणंणत्थिपमाणंअणंतभवसायरेधीर
॥२४॥ अर्थ॥ हेमुनिवरहेधीरतैंअनंतभवसागरविषैकलेवरकहिएशरीरतैंअने
कग्रहणकीयेअरछोडेतिनिकापरिमाणनांहीहै ॥भावार्थ॥ हेमुनिप्रधानतूइसशा
रीरस्यूंकिछूस्नेहकीयाचाहैतोयासंसारविषैऐसैशरीरभयेछोडेतिनिकाकिछूप
रिमाणनकीयाजायअनंतग्रहेछोडेतातैंशुद्धात्मकीभावनांकूंप्राप्यशरीरतैंस्नेह
मतिविचारियहउपदेशहै ॥छ॥ आगैंकहैहैजोपर्यायहूंथिरजाणेतोथिरनाहीहै
आयुकर्मकेआधीनहैसोआयुअनेकप्रकारक्षीणहोयहैं ॥गाथा॥ विसवेयणरत्त
क्खय।भयसत्थग्गहणसंकिलेसाणं। आहारुस्सासाणंणिरोहणाखिज्जएआऊ

भा० पा० २५॥ हिमजलणसलिलगुरुपरपव्वयतरुरुहणपडणभंगेहिं रसविज्जजोयधा
१४३ रणअणयपसंगेहिं विविहेहिं ॥२६॥ इयतिरियमणुयजम्मे सुइरं उववज्जिऊण व
हुवारं अवमिच्चुमहादुक्खं तिव्वं पत्तोसि तं मित्त ॥२७॥ त्रिभिः ॥ कुलकं ॥ अर्थ ॥ विष
भक्षणतैं वेदनापीडाके निमित्ततैं रक्त कहिए रुधिर ताका क्षयतैं भयतैं सस्त्रका
घाततैं संक्लेश परिणामतैं आहारका तथा स्वासका निरोधतैं इनि कारण आयु
का क्षय होय है ॥ वहुरि हिम कहिए शीयालातैं अग्नितैं जलतैं वडे पर्वतके चढनेतैं
पडनेतैं वडे वृक्ष चढि करि पडनेतैं शरीरका भंग होनेतैं वहुरि रस कहिए पारा आ
दिककी विद्या ताका संयोग करि धारण करै भषै तातैं वहुरि अन्याय कार्य चोरी व्य
भिचार आदिके निमित्ततैं अनेक प्रकार कारणनितैं आयुकाय छेद होय कुमरण १४३
होय है ॥ यातैं कहै है जो हे जीव हे मित्र ऐसे तिर्यंच मनुष्य जन्म विषे वहुत काल व

हुत वार उपजि करि अपमृत्यु कहिए कुमरण तिस संबंधी तीव्र महादुःख प्राप्त
भया ॥ भावार्थ ॥ या संसार विषे प्राणीकी आयु तिर्यंच मनुष्य पर्याय विषें अनेक क
रणनितैं छिदै है तातैं कुमरण होय है तामैं मरतैं तीव्र दुःख होय है तथा खोटे परि
णामनितैं कुमरण करि फेरि फेरि दुरगति हीमैं पडै है ऐसे यह जीव संसारमे दुःख
पावै है यातैं आचार्य दयाल होय वार वार प्रगट करि दिषावै है संसारतैं
मुक्ति होनेका उपदेश करै है ऐसें जाननां ॥ आगैं निगोदका दुःखकूं कहै है
॥ गाथा ॥ छत्तीसं तिण्णि सया छावट्ठि सहस्स वार मरणाणि अंतोमुहुत्तमज्झे
पत्तोसि णिगोयसम्मि ॥२८॥ अर्थ ॥ हे आत्मन तूं निगोदके वासमैं एक अंतरमुहू
र्त्तमें छयासठि हजार तीनसै छत्तीस वार मरणकूं प्राप्त भया ॥ भावार्थ ॥ निगोदमैं एक
श्वासकै अठारवें भाग आयु पावै तहां एक मुहूर्त्तके सैंतीसै तेहत्तरि स्वासो

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

अ० पा० छासठिण है तिनिमैं छतीससै पच्यासी श्वासोछास अर एक स्वास का तीसरा
१४४ भागके बाणवै हजार तीनसै छतीस वार निगोदमैं जन्ममरण होय है ताके दुः
खयह प्राणी सम्यग्दर्शन भाव पाये विना मिथ्यात्व का उदय का वशीभूत भया
सहै है॥छ॥ आगैं इसही अंतमुहूर्त्त के जन्ममरण मैं क्षुद्रभव का विशेष कहै
है॥गाथा॥ वियलिंदिए असीई सट्ठी चालीस मेव जाहेण॥ पंचिंदिये चोवीसं खु
द्दभवं तोमुहुत्तस्स॥२९॥अर्थ॥ इस अंतरमुहूर्त्त के भवनिमैं वेंद्रिय के क्षुद्रभव
असी तेंद्रिय के साठि चौइंद्रिय के चालीस पंचेंद्रिय के चोवीस ऐसै है आत्मा
त क्षुद्रभव जाणि॥भावार्थ॥ क्षुद्रभव अन्यशास्त्रमें ऐसे गिणे हैं॥ पृथ्वी अप तेज
वाय साधारण निगोद के सूक्ष्म वादर करि दश अर प्रतिष्टित वनस्पति एक ऐ
सै ग्यारह स्थानक के भव तौ एक एक के छह हजार वारा छह हजार वारा ताके छा १४४

वठि हजार एक सो वतीस भये वहुरि इस गाथा मैं कहे ते वेइंद्रिय आदिक के दो
यसैं च्यारि ऐसे एक अंतरमुहूर्त्त मैं क्षुद्रभव कहै॥छ॥ आगैं कहै है के ऐसा
आत्म तू इस दीर्घसंसार विषै ऐसै पूर्वोक्त प्रकार सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय की प्रा
प्ति विनां भ्रम्या था तैं अव रत्नत्रय अंगीकार करि॥गाथा॥ रयणत्तय सु अलद्धे
एवं भमिओसि दीहसंसारे॥ इय जिणवरेहिं भणियं॥ तं रयणत्तयं समायरह॥३०॥
अर्थ॥ हे जीव तैं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र जो रत्नत्रय ताकूं न पाये संते इस दी
र्घ अनादि संसार विषै पूर्वैं कह्या तैं संभ्रम्या ऐसा जाणि करि अव तू तिस रत्न
त्रय का आचरण करि ऐसे जिनेश्वरदेव कह्या है॥भावार्थ॥ निश्चय रत्नत्रय
पाये विनां यह जीव मिथ्यात्व के उदय तैं संसार मैं भ्रमै है यातैं रत्नत्रय का आ
चरण का उपदेश है॥गाथा॥ अप्पा अप्पम्मि रओ॥ सम्माइट्ठी हवेइ फुडु जीवो॥ जा

अ० पा० १६५ णइतं समायाणं चरदि हु चारित्तमग्गुत्ति ॥ ३१ ॥ अर्थ जो आत्मा आत्माविषे रत होय
यथार्थ स्वरूपका अनुभव करि तद्रूप होय श्रद्धान करै सो प्रगट सम्यग्दृष्टी हो
य ॥ बहुरि तिस आत्माकूं जाणै सो सम्यग्ज्ञान है ॥ बहुरि तिस आत्माकूं आचरण
करै रागद्वेषरूप न परिणमै ऐसें यह निश्चयरत्नत्रय है सो मोक्षमार्ग है ॥ भावार्थ
आत्माका श्रद्धान ज्ञान आचरण जो निश्चयरत्नत्रय है अर बाह्य याका व्यवहार
जीव अजीवादि तत्वनिका श्रद्धान करनां जाननां परद्रव्य परभावका त्याग कर
ना ॥ ऐसें निश्चय व्यवहार स्वरूप रत्नत्रय मोक्षका मार्ग है ॥ तहां निश्चय तौ प्रधा
न है या विना व्यवहार संसारस्वरूप ही है ॥ बहुरि व्यवहार है सो निश्चयका
साधनस्वरूप है या विनां निश्चयकी प्राप्ति नांही है अर निश्चयकी प्राप्ति भये १६५
पीछें व्यवहार किछू है नांही ऐसा जाननां ॥ ३१ ॥ आगें संसारविषै या जीवनैं

जन्ममरण कीये ते कुमरण कीये अब सुमरणका उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ अण्णे
कुमरणमरणं अणेयजम्मंतराइं मरिओसि भावय सुमरणमरणं जरमरण
विणासणं जीव ॥ ३२ ॥ अर्थ हे जीव या संसारविषै अनेक जन्मांतरविषै अन्य कु
मरणमरण जैसें होय तैसें तूं मरया अब तूं जा मरणतैं जन्ममरण है ॥ १ ॥ तद्भ
वमरणं ॥ २ ॥ अवधिमरणं ॥ ३ ॥ आद्यंतमरणं ॥ ४ ॥ बालमरणं ॥ ५ ॥ पंडितमरणं
६ ॥ आसन्नमरणं ॥ ७ ॥ बालपंडितमरणं ॥ ८ ॥ ससल्यमरणं ॥ ९ ॥ पलायमरणं ॥ १०
वशार्त्तमरणं ॥ ११ ॥ विप्राणसमरणं ॥ १२ ॥ गृद्धपृष्ठमरणं ॥ १३ ॥ भक्तप्रत्याख्यानं
१४ ॥ इंगिनीमरणं ॥ १५ ॥ प्रायोपगमनमरणं ॥ १६ ॥ केवलिमरणं ॥ १७ ॥ ऐसें सत
रह इनिका स्वरूप ऐसा जो आयुकर्मका उदय समयसमय आयुकर्म खिरै है सो
समयसमय मरण है यह आवीचिकामरण है ॥ १ ॥ बहुरि वर्त्तमान पर्यायका ॥
जो

भ॰ पा॰ १५६

आभावसोतद्भवमरणहै ॥२॥ बहुरिजोजैसामरणवर्त्तमानपर्यायकाश्रै तो
होयतैसाहीआगिलीपर्यायकाहोयगासोअवधिमरणहै ॥ याकाहोयभेदत
हांजैसीप्रकृतिस्थितिअनुभागवर्त्तमानकाउदैआयातैसाहीआगिलीक
बाधैउदयआवैसोसर्वावधिमरणहै ॥ अरएकदेशबंधउदयहोयतौदेशा
वधिमरणकहेए ॥३॥ बहुरिजोवर्त्तमानपर्यायकास्थितिआदिकजैसाउ
दयथातैसाआगिलीकासर्वदेशबंधउदयहोयसोआद्यंतमरणहै ॥४॥ पां
चवांबालमरणहैसोबालपांचप्रकारहै ॥ अव्यक्तबालव्यवहारबालग्या
नबाल ॥ दर्शनबाल ॥ चारित्रबाल ॥ तहांजोधर्मअर्थकामइनिकार्यनि
कूंनजानै ॥ इनिकाआचरणकूंनजानै ॥ इनिकाआचरणकूंसमर्थजाक १५६
शरीरनाहीसोअव्यक्तबालहैजोलोककाअरशास्त्रकाव्यवहारकूंनजा

नैंतथाबालकअवस्थाहोयसोव्यवहारबालहै ॥ तत्वश्रद्धानरहितप्राणी
चारित्रबालहै मिथ्यादृष्टीदर्शनबालहैवस्तुकायथार्थज्ञानरहितज्ञा
नबालहै ॥ चारित्ररहितप्राणीचारित्रबालहैइनिकामरणसोबालमरणहै
इहांप्रधानपणैदर्शनबालहीकाग्रहणहैजातेसम्यग्दृष्टीहैअन्यबालपणा
होतैभीदर्शनपंडितताकासद्भाववत्तैपंडितमरणविषैहीगणियेहै ॥ तहांद
र्शनबालसंक्षेपतैदोयप्रकारमरणकह्याहै इछाप्रवृत्तिअनिछाप्रवृत्त ॥ त
हांअग्निकरिधूमकरिशस्त्रकरिविषकरिजलकरिपर्वततैपडनें
करिउछासकरिविरुद्धआहारसेवनेंकरिबालअज्ञानीचाहिकरिमरैसे
इछाप्रवृत्तेहै ॥ अरजोजीवनिकाइछकहोयअरमरैसोअनिछाप्रवृत्तहै
प ॥ बहुरिपंडितमरणच्यारिप्रकारहै ॥ व्यवहारपंडितसम्यक्पंडितज्ञान

आ०पा० पंडित ॥ चारित्रपंडित तहां लोक शास्त्र का व्यवहार विषें प्रवीण होय सो व्यवहार
१४७ पंडित है ॥ सम्यक्त सहित होय सो सम्यक्त्वपंडित है ॥ इहां दर्शन ज्ञान सहित होय सो
ज्ञानपंडित है ॥ सम्यक् चारित्र करि सहित सो चारित्रपंडित है ॥ इहां दर्शन ज्ञा
न चारित्र सहित पंडित का ग्रहण है जातैं व्यवहार पंडित मिथ्यादृष्टी का स्म
रण में आय गया ॥ ६ ॥ बहुरि जो मोक्षमार्ग में प्रवर्त्तिने वाले साधु संघ मतें छूट
ताकूं ओसन्न कहिए है तिनि मे पार्श्वस्थ छंद कुशील संसक्त भी लेणे ऐसे
पांच प्रकार भ्रष्ट साधुनि का मरण सो ओसन्न मरण है ॥ ७ ॥ बहुरि सम्यग्द
ष्टी श्रावक का मरण सो बालपंडित मरण ॥ ८ ॥ बहुरि सशल्य मरण दोय
प्रकार तहां मिथ्यादर्शन माया निदान ए तीन शल्य तो भावशल्य है अर पं १४७
च स्थावर अर त्रस मे असैनी ए द्रव्यशल्य सहित है ॥ ऐसें सशल्य मरण है

९ बहुरि जो प्रशस्त क्रिया विषें आलसी होय प्रमादी होय व्रतादिक विषें श
क्ति कूं छिपावै ध्यानादिक तैं दूरि भागै ऐसा का मरण सो पलाय मरण है ॥ १०
वशार्त्तमरण च्यारि प्रकार है सो आर्त्त रौद्र ध्यान सहित मरण है ॥ तहां पांच इं
द्रियनि के विषयनि विषें राग द्वेष सहित मरै सो इंद्रियवशार्त्तमरण है ॥ वेद
ना साता असाता की सहित मरै सो वेदनावशार्त्तमरण है ॥ क्रोध मान माया लो
भ कषाय के वस तैं मरै सो कषायवशार्त्तमरण है ॥ हास्यादि नोकषाय के व
श तें मरै सो नोकषायवशार्त्तमरण ॥ ११ ॥ बहुरि जो अपना व्रत क्रिया चारि
त्र विषें उपसर्ग आवै सो सह्या भी न जाय अर भ्रष्ट होनेका भय आवै तब
अशक्त भया अन्नपानी का त्याग करि मरै सो विप्राणस मरण है ॥ १२ ॥ बहुरि
जो शस्त्रग्रहण करि मरण होय गृद्धपृष्ठमरण है ॥ १३ ॥ बहुरि जो अनुक्र

भ० पा० मसुआहारपांणीकायथाविधित्यागकरि मरैसो भक्तप्रत्याख्यानमरणहै
२५८ २४ वहुरिजोसंन्यासकरै अरु अन्यपासिवैयावृत्त्यनकरावैसोइंगिनीमर
णहै ॥२५॥ वहुरिजोप्रायोगमनसन्यासकरैकाहूपासिवैयावृत्त्यनकरावैअ
पनाआपभीनकरैप्रतिमायोगरहैसोप्रायोपगमनमरणहै ॥२६॥ वहुरि
जोकेवलीमुक्तिप्राप्तहोयसोकेवलमरणहै ॥२७॥ ऐसैंसतरहप्रकारक
हेतिनिकासंक्षेपऐसाकीयाहै ॥ जोमरणपांचप्रकार है ॥ पंडितपंडि
त१ पंडित२ वालपंडित३ वाल४ वालवाल५ तहांदर्शनज्ञानचारित्रकेप्र
व त्रकाअतिशयकरिसहितहोयसोतोपंडितपंडितहैं अरइनिकीप्रकर्ष
ताकैनहोयसोपंडितहै ॥ सम्यग्दृष्टीश्रावकसोवालपंडितअरपहलैंच्यारिप्र २५८
कारपंडितकहे तिनिमैंसूंएकभीभावनाजाकैनांहीसोवालहै ॥ अरजोसर्व

थाहूनहोयसोवालवालहै ॥ इनिमैंपंडितपंडितमरणअरपंडितमरणअ
रवालपंडितमरण एतीनप्रशस्तसुमरणकह्याहै ॥ अन्यरीतिहोयसोकुम
रणहै ॥ ऐसैंजोसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रएकदेशसहितमरैसोसुमरणहै
ऐसासुमरणकरणेकाउपदेशहै ॥३॥ आगैंयहजीवसंसारमैंभ्रमैहैतिस
भ्रमणकेपरावर्त्तनकास्वरूपमनमैंधारिनिरूपणकरैहै ॥ तहांप्रथम
हीसामान्यकरिलोककेंप्रदेशनिकीअपेक्षाकरिकहैहै ॥ गाथा ॥ सोणत्थिद
व्वसवणोपरमाणुपमाणमेत्तओणिलओ ॥ जत्थणजाओणमओतियलोयपमाणओ
सव्वो ॥३३॥ अर्थ ॥ यहजीवद्रव्यलिंगकाधारकमुनिपणांहीतैंसत्तैंभीयउत्ती
नलोकप्रमाणसर्वस्थानकहै तामैंएकपरमाणुपरिमाणएकप्रदेशमात्रभी
ऐसास्थाननाहीहै तामैंजन्म्यांनहीतथामर्यानाहीद्रव्यलिंगधारिकरिभीसर्व

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

अ०पा० लोक मैं यह जीव जन्म्यां मर्‍या ऐसा प्रदेश न रह्या जामैं जन्म्या मर्‍या नांही
२४८ ऐसैं भावलिंग विना द्रव्यलिंगतैं मुक्ति प्राप्त न भया ऐसैं जाननां ॥ छ ॥ आगैं य
ही अर्थ कूं दृढ करनें कूं भावलिंग कूं प्रधान करि कहै है ॥ गाथा ॥ कालमणंतं जी
वो जम्मजरामरणपीडिओ दुक्खं ॥ जिणलिंगेण वि पत्तो परंपराभावरहिएण ॥
३४ ॥ अर्थ ॥ यह जीव संसार विषै जामै परंपरा भावलिंग न भया ऐसा जिनलिं
ग कहिए बाह्य दिगंबर रूप लिंग ताकरि जन्म जरा मरण करि पीडित भया सं
ता अनंत काल पर्यंत दुःख ही कूं प्राप्त भया ॥ भावार्थ ॥ द्रव्यलिंग धार्‍या तामैं परं
परा करि भी भावलिंग की प्राप्ति न भई यातैं द्रव्यलिंग निःफल गया मुक्त की
प्राप्त न भई संसार ही मैं भ्रम्या ॥ छ ॥ इहां आशय ऐसा जो द्रव्यलिंग है सो भा २४८
वलिंग का साधन है परंतु काललब्धि विना द्रव्यलिंग धारे भी भावलिंग की

प्राप्ति न होय यातैं द्रव्यलिंग निःफल जाय है ॥ ऐसै मोक्षमार्ग प्रधानता
करि भावलिंग ही है ॥ इहां कोई कहै ऐसैं है तौ द्रव्यलिंग पहलै काहे कूं धारणा
ता कूं कहिए ऐसे मानें तौ व्यवहार का लोप होय है तातैं ऐसैं माननां जो द्रव्य
लिंग पहलै धारनां ता कूं ऐसा न जाननां जो याही तैं सिद्धि है ॥ भावलिंग कूं प्रधा
न मानि तिस के सन्मुख उपयोग राखणा द्रव्यलिंग कूं यत्नतैं साधनां ऐसा
श्रद्धान भला है ॥ छ ॥ आगैं पुद्गल द्रव्य कूं प्रधान करि भ्रमण कहै है ॥ गाथा ॥ पडि
देससमयपुग्गलआउगपरिणामणामकालट्ठं ॥ गहिउज्झियाइं बहुसो
अणंतभवसायरे जीवो ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ या जीव नैं इस अनंत अपार भवसमु
द्र विषै लोकाकाश के जेते प्रदेश है तिनि प्रति समय समय अर पर्याय के
आयुप्रमाण काल अर अपनै जैसा जोग कषाय के परिणमन स्वरूप परि

भा०पा०
१५०

णामअर॥ जैसा गतिआदि नामकर्मके उदयतैं भयातौं मअर कालजैसा उत्स
र्पिणी अवसर्पिणी तिनिविषै पुद्गलके परमाणूरूप स्कंध ते बहुत वार अनंत वा
र ग्रहण कीये अर छोडे॥ भावार्थ॥ भावलिंगविनां लोकमैं जे ते पुद्गलस्कंध हैं ते ते
सर्वही ग्रहे छोडे तौहू मुक्त न भया॥ छ॥ आगैं क्षेत्रकूं प्रधानकरि कहै है॥ गाथा॥ ते
यालातिंनिसयार जुत्तं लोयखित्तपरिमाणं॥ मुत्तूणअट्ठपयसा॥ जच्छणदुरडु
ल्लिऊजीवो॥३६॥ अर्थ॥ यहु लोक तीनसै तीयालीस रजुपरिमाण क्षेत्र है ता
के बीचि मेरुके तलैं गोस्तनाकार आठ प्रदेश है तिनिकूं छोडिकरि अन्य प्रदे
श ऐसा न रह्या जामैं यहु जीव नाहीं जन्म्या मर्‍या॥ भावार्थ॥ इहां दुरदुल्लिऊ ऐ
सा प्राकृतमैं भ्रमण अर्थकी धातुका आदेश है॥ अर क्षेत्रपरावर्त्तनमैं मेरुके १५१
तलैं आठ प्रदेश लोकके मध्यके है तिनिकूं जीव अपने प्रदेशनिके मध्यप्रदे

उपजै है॥ तहांतैं क्षेत्रपरावर्त्तनका प्रारंभ कीजिए है॥ तातैं तिनिकूं पुनरुक्त
भ्रमणमैं न गिणिए है॥ छ॥ आगैं यहु जीव सरीरसहित उपजै मरै है तिस श
रीरमैं रोग होय है तिनिकी संख्या दिषावै है॥ गाथा॥ एकेकंगुलिवाही छण्ण
वदी होंति जाण मणुयाणं॥ अवसेसे य सरीरे रोया भण कित्तिया भणिया
॥३७॥ अर्थ॥ इस मनुष्यके सरीरविषै एक एक अंगुलमैं छिनवै रोग होय है॥
तब कहो अवशेष समस्त शरीरविषै केते रोग कहे ऐसैं जाणूं॥ छ॥ आ
गैं कहै है हे जीव तिनि रोगनिका दुःख तैं सह्या॥ गाथा॥ ते रोया वि य सयला
सहिया ते परवसेण पुव्वभवे॥ एवं सहसि महाजस किं वा बहुएहिं लविए
हिं॥३८॥ अर्थ॥ हे महायश हे मुनि तैं पूर्वोक्त सर्व रोग पूर्वभवविषै तैं परव
श सहे ऐसैं ही फेरि सहैगा बहुत कहनेंकरि कहा॥ भावार्थ॥ यहु जीव परा॥

अ० पा०
१५२

धीनहुवासर्वदुःखसहेहैजोज्ञानभावनांकरदुःखआयेंतासूंविगैंनां
हीऐसैंस्ववशसहैतौकर्मकानाशकरिमुक्तहोयजायऐसैंजाननां ॥छ॥
आगैंकहैहैजोअपवित्रगर्भवासमैंवस्या ॥गाथा॥ पित्तंतमुत्तफेफस ॥ का
लिज्जयरुहिरखरिसकिमिजालेउयरेवसिओसिचिरंनवदसमासेहिंपत्ते
हिं ॥३९॥ अर्थ हेमुनितूंऐसेमलिनअपवित्रउदरविषेनवमासतथाद
दशमासप्राप्तकरिवस्याकैसाहैउदरजामैंपित्तअरआंततिनिकरिवेढ्या ॥
अरमूत्रकाश्रवणअरफेफसकहिएजोरुधिरबिनांमेदफूलिजायव
बहुरिकालिज्जकहिएकालिजोबहुरिरुधिरबहुरिखरिसकहिएअप
क्वमलसूंमिल्यारुधिरश्लेष्मबहुरिकृमिकहिएलटजीवनिकेसमूह १५१
सर्वपाईएऐसास्त्रिकाउदरविषेबहुतबारवस्याफेरियाहीकूंकहैहै

॥गाथा॥ दियसंगट्ठियमसणंआहारयमायभुत्तमण्णंते ॥ छद्दिखरिसाण
मज्झेजठरेवसिओसिजणणीए ॥४०॥ अर्थ हेजीवतूंजननीमाताकेउदर
गर्भविषैवस्यातहांमाताकाअरपिताकाभोगकेअंतिछर्दिकहिएवमन
काअन्नखरिसकहिएअपक्वमलरुधिरसूंमिल्यातिनिकैमध्यवस्या
कहाकरिवस्यामाताकादांतनिकरिचाब्यातिनिकादांतनिकेलग्या ॥
तिष्ट्याऐसाजोभोजनमाताकेखायेपीछैंजोउदरमेगयाताकारसआहा
रकरिवस्या ॥छ॥ आगैंकहैहैजोगर्भतैंनीसरिबालपणाऐसैंभोग्या ॥
॥गाथा॥ सिसुकालेयअयाणे ॥ असुईमज्झंमिलोलिओसितुमंअसुईअ
सिया बहुसोमुणिवरबालत्तपत्तेण ॥४१॥ अर्थ हेमुनिवरतूंबालपणाके
कालविषैआपांनअवस्थामैंअशुचिअपवित्रस्थानविषेअशुचिकैवी

चिलो ड्यावऊ खिकृतवार अशुचिवस्तुही खाईवालपणा कूंपायकरि ऐसीचे
ष्टाकरी ॥ भावार्थ ॥ इहां मुनिवर ऐसा संबोधन है सो पूर्वे वतज्ञाननां जो बाह्य आच
रणसहित मुनि होय ताही कूं इहां प्रधानपणें उपदेश है जो बाह्य आचरण की
या सो तो बहुत कार्य कीया परंतु भावविनां यह निःफल है तातें भावतें सन्मु
ख रहनां भावविनां अपवित्रस्थान मिलै है ॥ आगें कहै है कि यह देह ऐ
सा है ता कूं विचारो ॥ गाथा ॥ मंसट्ठिसुक्कसोणियपित्तंतसवत्तकुणिमदुग्गंधं । खर
सवसपूयखिब्भिसभरियं चिंतेहि देहउडं ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥ हे मुनि तूं देहरूप घर कूं
ऐसा विचारि कैसा है देह घट मांस अर हाड अर शुक्र कहिए वीर्य अर शो
णित कहिए रुधिर अर पित्त कहिए उष्णविकार अर अंत्र कहिए आंत ते झर
ति निकरि तत्काल के मृतक की ज्यों दुर्गंध है । बहुरि कैसा है देह घट खरिसक

हिए रुधिर सूं मिल्या अपक्व मल वसा कहिए मेद अर पूति कहिए विगड्या लो
हि राधि सर्व मिलिन वस्तु तिनि करि पूर्ण भर्या है ऐसा देहरूप घटि कूं वि
चारि ॥ भावार्थ ॥ यह जीव तौ पवित्र है शुद्धज्ञानमयी है अर यह देह ऐसा है ता में व
सनां अयोग्य है ऐसा जनाया है ॥ आगें कहै है जो कुटंब तैं छूट्या सो छूट्या
नाही भाव तैं छूटे छूट्या कहिए ॥ गाथा ॥ भावविमुत्तो मुत्तो ण य मुत्तो बंधवाइमि
त्तेण । इय भाविऊण उज्झसु गंधं अब्भंतरं धीर ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ जो मुनि भावनि करि
मुक्त भया ता कूं मुक्त कहिए अर बांधव आदि कुटंब तथा मित्र आदिक रि
मुक्त भया ता कूं मुक्त न कहिए यातैं हे धीर मुनि तूं ऐसा जाणि करि अभ्यंत
र की वासनां कूं छोडि ॥ भावार्थ ॥ जो बाह्य बांधव आदि कुटंब तथा मित्र इनि कूं छोडि
करि निर्ग्रंथ भया अर अभ्यंतर का ममत्वभावरूप वासनां तथा इष्ट अनिष्ट वि

सूंरागद्वेषवासनानछूटीतौनाग्नकूंनिर्ग्रंथनकहिए।अभ्यंतरवासनाछूटैंनि
र्ग्रंथहैतातैंयहउपदेशहैजोअभ्यंतरमिथ्यात्वकषायछोड़िभावमुनिहो
ना॥४३॥आगैंकहैहैंजेपूर्वैंमुनिभयेतिनिनैंभावशुद्धविनासिद्धिनपाई।
तिनिकाउदाहरणमात्रनामकहैहै॥प्रथमतौहांप्रथमहीबाहुबलीकाउदाहर
णकहैहै॥गाथा॥देहादिचत्तसंगो।माणकसाएणकलुसिओधीर।अत्तावणे
णजादो॥बाहुबलीकित्तियंकालं॥४४॥अर्थ॥देखोबाहुबलीश्रीरिषभदे
वकापुत्रसोदेहादिकछोड्याहैपरिग्रहजानैंऐसाधीरनिर्ग्रंथमुनिभयातौ
ऊमानकषायकरिकलुषपरिणामरूपभयासंताकेतेककालआता
पनयोगकरितिष्ठ्यासिद्धिनपाई॥भावार्थ॥बाहुबलीनैंभरतचक्रवर्त्तिविरोध १५३
करियुद्धआरंभ्यांतहांअपमानपायापीछेबाहुबलीविरक्तहोयनिर्ग्रंथा

थमुनिभयातौऊमानकषायकरिकलुषपरिणामरूपताएहीजोभरतकी।
भूमिमैंमैंकैसैंरहूंतबकायोत्सर्गयोगकरिएकवर्षताईतिष्ठेतैतैकेवलज्ञा
ननपायापीछैकलुषतामिटितबकेवलज्ञानउपज्यातातैंकहैहैजोऐसेम
हानपुरुषबडीशक्तिकेधारकभीभावशुद्धविनासिद्धिनपाईतबअन्यकीक
हाकथातातैंभावशुद्धकरनायहउपदेशहै॥४४॥आगैमधुपिंगलकाउदा
हरणकहैहै॥गाथा॥महुपिंगोणाममुणीदेहाहारादिचत्तवावारो।सवणत्तणंण
पत्तो।णियाणमित्तेणभवियणुय॥४५॥अर्थ॥मधुपिंगलनामामुनिहैसो
कैसाभयादेहआहारआदिविषैछोड्याहैव्यापारजानैंतौऊनिदानमा
त्रकरिभावश्रमणपणाकूंप्राप्तभयानाहिंहेभव्यजीवनिकरिनमनेंयो
ग्यमुनितूंदेखि॥भावार्थ॥मधुपिंगनाममुनिकीकथापुराणमैंहैताकासंक्षे

MEMORIAL

पश्चैसा ॥ इस भरत क्षेत्र विषै सुरम्य देश विषै पोदनापुर का राजा तृण
पिंगल का पुत्र मधुपिंगल था सो चारणयुगल नगर का राजा सुयोधन की
पुत्री सुलसा का स्वयंवर मैं आया था अर तहां ही साकेतापुरी का राजा सग
र आया था सो सगर कै मंत्री मधुपिंगल कूं कपट करि सामुद्रिक शास्त्र नवी
न बणाय दूषण दीया जो याके नेत्र पिंगल है मांजरा है सो याकूं जो कन्या
वरै सो मरण कूं प्राप्त होय तब कन्या सगर के गलै वरमाला गेरी मधुपिंगल
कूं वरया नांही तब मधुपिंगल विरक्त होय दीक्षा लई पीछै कारण पाय सग
र का मंत्री का कपट कूं जाणि क्रोध करि निदान कीया जो मेरे तप का फल
यह होय जो जन्मांतर विषै सगर के कुल कूं निर्मूल करौं ता पीछै मधुपिंगल
मरि महाकाल असुर नामा असुर देव भया तब सगर कूं मंत्री सहित मारणे का

उपाय हेरता भया तब क्षीरकदंब ब्राह्मण का पुत्र पर्वत पापी याकूं मिथ्यात
व पशूनि की हिंसारूप यज्ञ का सहायी होय कही सगर राजा कूं यज्ञ का उप
देश करि यज्ञ कराय मैं तेरा यज्ञ का सहाई हूंगा तब पर्वत सगर पासि यज्ञ
कराया पशु होमे तिस पाप तैं सगर सातमैं नरक गया अर कालासुर सहाई
भया सो यज्ञ के कर्त्ता कूं स्वर्ग गये दिखाये ऐसे मधुपिंगल नाम मुनि निदान क
रि कालासुर देव होय महापाप उपाज्यी तातैं आचार्य कहै हैं मुनि होय तो छ
लाव विगाडै तब सिद्ध कूं न पावै या की कथा विस्तार करि पुराणनितैं जान
नी ॥ ७ ॥ आगैं वसिष्ठ मुनि का उदाहरण कहै हैं ॥ गाथा ॥ असंच वसितु मुणीप
त्तो दुरकांतियाणदोसेण। सोण छिगराणो जह्वण। दुरू दुत्ति उजीवो ॥ ८६
अर्थ ॥ बहुरि अन्य कहिए और एक वसिष्ठ नामा मुनि निदान के दोष

अ०पा० निकरि दुःखकूं प्राप्त भया। यातैं ऐसा लोकमैं वासस्थान नाही जामैं यह जी
१५५ व जन्म मरण सहित भ्रमणकूं प्राप्त न भया है। तहां जरत्कौशिक नामा ता
पसीकी पल्ली है। तहां एक वशिष्ठ नामा तापसी पंचाग्नि तपै है। तहां गुणभद्र वी
रभद्र नामा दोय चारण मुनि आये। तिनि वसिष्ठ तापसकूं कही जो तू अज्ञा
न तप करै, यामैं जीवनिकी हिंसा होय है। तब तापस प्रत्यक्ष हिंसा देखि अर
विरक्त होय जैनदीक्षा लई। मासोपवास सहित आतापन योग स्थाप्या ति
सके तपके महात्म्यतैं सात व्यंतर देव आय कही हमकूं आज्ञा द्यो सो ही
करां। तब वसिष्ठ कही अबार तो मेरे किछू प्रयोजन नांही जन्मांतरमैं
तुमकूं याद करूंगा। पाछै वसिष्ठ मथुरापुरी आय मासोपवास सहित आ १५५
तापन योग स्थाप्या ताकूं मथुरापुरीके उग्रसेन राजा देखि भक्ति थकी या

विचारी जो याकूं पारणा मैं कराऊंगा। ऐसैं नगरमैं घोषणा दीवाई ज्यो या मु
निकूं अन्य आहार न दे। पीछै पारणाके दिन मुनि नगरमैं आया तहां अग्नि
का उपद्रव देखि अंतराय जानि उलटा फिरया। फेर पारणाके दिन नगरमैं आ
या तब हस्तीका क्षोभ देखि अंतराय जानि उलटा फिरया। फेरि मासोपवास थ
प्या पीछै पारणाके दिन फेरि नगरमैं आया तब राजा जरासंधका पत्र आ
या ताके निमित्ततैं व्यग्रचित्त था, सो मुनिकूं पडगाहे नांही। तब अंतराय क
रि उलटा वनमैं जाता लोकनिके वचन सुनि राजापरि क्रोध करि निदान की
या जो या राजाकै पुत्र होय करि राजाका निग्रह करि मैं राज करूंगा। तपक
मेरे यह फल होहु। ऐसे निदान करि मूवा राजा उग्रसेनकी राणी पद्माव
तीका गर्भमैं आया। पूर्णमास भये जन्म्या तब याकूं क्रूर दृष्टि देखि कांसी

अ०पा० कीमंजूषामैंस्थाप्यतातकालेखसहितयमुनानदीमैंवहायातबको
१५६ शांबीपुरीमैंमंदोदरीनामाकल्यपालीताकूंलेयत्रवृद्धिकरिपल्याकं
सनामदीयातहांवडाभयातबबालकनिसूंक्रीडाकरतैसर्वकूंदुःखदे
तबमंदोदरीउराहनाकेदुःखतैंयाकूंनिकासिदीयातबयहकंससौर्य
पुरजायवसुदेवराजाकैपयादाचाकररह्यापीछैजरासंधप्रतिनारायण
केपत्रआयोजोपोदनापुरकाराजासिंहरथनैंजोबांधिल्यावैताकूंआ
धाराजसहितपुत्रीपरणाऊंतबवसुदेवतहांकंससहितजाययुद्धकरि
तिससिंहरथकूंबांधिल्यायाजरासिंधकूंसोंप्यातबजरासिंधजीवंज
सापुत्रीसहितआधाराजदीयातबवसुदेवकहीसिंघरथकूंकंसबांधि १५६
ल्यायाहैकयाकूंद्योतबजरासंधयाकाकुलकूंजाणिवेकौंमंदोदरीकूंबुला

यकुलकानिश्चयकरियाकूंजीवंजसापुत्रीपरणाईतबकंसमथुराका
राजलेआयपिताउग्रसेनराजाकूंअरपद्मावतीमाताकूंबंदीषानांमैं
दीयापीछैकृष्णनारायणकरिमरणकूंप्राप्तभयाताकीकथाविस्तारसूंह
रिवंशपुराणादिकतैंजाननीऐसैवशिष्टमुनिनिदानकरिसिद्धिकूं
नपाईतातैंभावलिंगहीतैंसिद्धिहै॥ ७॥ आगैंकहैहैभावरहितचउरासी
लाषयोनिमैंभ्रमैंहै॥ गाथा॥ सोणत्थितंपएसोचउरासीलक्खजोणिवा
सम्मिभावविरउविसमणोजत्थणढुरुढुल्लिउजीवो॥४७॥ अर्थ यासंसा
रमैंचौरासीलाषयोनितिनिकेवासमैंऐसाप्रदेशनाहीहैजामैंयहजीवद्
रव्यलिंगीश्रमणहोयकरिभीभावरहितभयासंतातैंभ्रमणनकीया॥ भावार्थ
द्रव्यलिंगधारिनिर्ग्रंथमुनिहोयकरिशुद्धस्वरूपकाअनुभवरूपभाव

अ०पा० विनां यह जीव चौरासी लाष योनिमैं भ्रमता ही रह्या ऐसा ठिकाणा नां
१५७ ही रह्या जामैं न जन्म्या न मर्‍या ऐसैं जाननां॥ चौरासी लाष योनिके भे
द ऐसे है॥ पृथ्वी अप तेज वायु नित्यनिगोद इतरनिगोद ए तौ सात सात ला
ष है ते बयालीस लाष भये॥ वनस्प दस लाष है बेंद्रिय तेंद्रिय चौ ती
रिंद्रीय दोय लाष हैं पचेंद्रिय तिर्यंच च्यारि लाष देव च्यारि लाष नारकी
च्यारि लाष मनुष्य चौदह लाष ऐसैं चौरासी लाष है ए जीवनिके उप
जनेके ठिकाणे जाननें॥ ७७॥ आगैं कहै है जो द्रव्यमात्र करि लिंगी न होय
है भाव करि लिंगी होय है॥ गाथा॥ भावेण होय लिंगी ण हु लिंगी होइ दव्वमि
त्तेण तम्हा कुणिज्ज भावं किं कीरइ दव्वलिंगेण॥ ४८॥ अर्थ॥ लिंगी हो १५७
य है सो भावलिंग ही धारण करनां द्रव्यलिंग करि कहा कीजिये॥ भावार्थ॥ आ

चार्य कहै है जो सिवाय कहा कहिए भाव विनां लिंगी नाम ही होय नांही जातै
यह प्रगट है जो भाव शुद्ध न देषै तब लोक ही कहै जो कहा है का मुनि है कपटी
है तातैं द्रव्यलिंग करि कछू साध्य नांही भावलिंग ही धारणां [illegible] आगै याही
कूं दृढ करनेंकूं द्रव्यलिंगधारककै उलटा उपद्रव भया ताका उदाहरण क
हैहै॥ गाथा॥ दंडयणयरं सयलं डहिउ अब्भंतरेण दोसेण। जिणलिंगेण
वि बाहू पडिउ सो रउरवं णरयं॥ ४९॥ अर्थ॥ देषो बाहु नामा मुनि बा
ह्य जिनलिंग करि सहित था तौऊ अभ्यंतरके दोष करि दंडक नामा नगर
कूं समस्त देशकूं दग्ध कीया अर सप्तम पृथ्वीका रौरव नां मां विलामैं प
ड्या॥ भावार्थ॥ द्रव्यलिंग धारि किछू तप करै ताकरि किछू सामर्थ्य वधै त
व किछू कारण पाय क्रोध करि आपकौ अर परकौं उपद्रव करनेंका का

रणवणावैतातैंद्रव्यलिंगभावसहितधारणातौश्रेष्ठहैअरकेवलद्रव्यलिंग
तौउपद्रवकाकारणहोयहैऐसेयाउदाहरणबाहुमुनिकाबताया॥ताकी
कथाऐसैं॥दक्षणदिशामैंकुंभकारकटकनगरविषैंदंडकनामाराजा
ताकैबालकनाममंत्रीतहांअभिनंदनआदिपांचसैमुनिआयातिनि
मैंएकखंडकनाममुनिथातानैंबालकनाममंत्रीकूंवादविषैंजीत्यातब
मंत्रीक्रोधकरिएकभांडकूंमुनिकारूपकरायराणीसुव्रतासहितरमता
राजाकूंदिखायाअरकहीजोदेखोराजाकैऐसीभक्तिहैअपनीस्त्रीभीदिगं
बरकूंरमवानैदईहैतबराजादिगंबरनितैंक्रोधकरिपांचसैमुनिनि
कूंघाणीमैंपील्यातेमुनिउपसर्गसहिपरमसमाधिकरिसिद्धकूंप्राप्त
भयेपाछैतिसनगरबाबाहुनामामुनिआयाताकूंलोकनिमनैंकीयाजो

इहांराजादुष्टहैसोतुमनगरमैंप्रवेशमतिकरोआगैंपांचसैंमुनियांघाणी
मैंपील्याहैसोतुमरूंकूंतैसैहीकरैगातबलोकनिकेवचनकरिबाहु
मुनिकूंक्रोधउपज्यातबअशुभतैजससमुद्घातकरिराजाकूंमंत्रीस
हितसर्वनगरकूंभस्मकीयाराजामंत्रीसातवैंनरकरौरवनामाबि
लामैंपडेतहांहीबाहुमुनिभीमरिकरिरौरवबिलामैंपड्याऐसैंद्रव्य
लिंगमैंभावकेदोषतैंउपद्रवहोयहैतातैंभावलिंगकाप्रधानउपदेश
है॥गाथा॥आगैंइसहीअर्थपरिदीपायणमुनिकाउदाहरणकहैहै॥गाथा॥
अवरोविदव्वसवणोदंसणवरणाणचरणपब्भट्ठोदीवायणुत्तिणा
मोअणंतसंसारिउजाउ॥५०॥अर्थ॥आचार्यकहैहैजोपहलैबाहु
मुनिकह्यातैसैंहीअवरभीदीपायणनामाद्रव्यश्रमणसम्यक्दर्श

MEMORIAL

अ० पा० १५९ न ज्ञान चारित्र तैं भ्रष्ट भया संता अनंत संसारी भया ॥ भावार्थ ॥ पूर्वे वलभ्या की कै
थासंक्षेप ऐसैं नव मा वलभद्र श्री नेमनाथ तीर्थंकर कूं पूछी जो स्वामी या
द्वारकापुरी समुद्र मैं है सो याकी स्थिति केते काल है तब भगवान कही ।
रोहिणी को भाई द्वीपायन तेरो मामूं बारह वर्ष पीछैं मद्य का निमित्त करि
क्रोध करि या पुरी कूं दग्ध करसी ऐसैं वचन भगवान के सुणि निश्चय क
रि अरहदीक्षा ले पूर्व देश नैं गया बारह वर्ष व्यतीत करनैं कूं तप करणा
आरंभ्या अर बलभद्र नारायण द्वारिका मैं मद्य निषेध की घोषणा दई ।
तब मद्य का वासण तथा ताकी सामग्री मद्य करणे वाला बाह्य पर्वतादि
क मैं क्षेप्या तब वासण की तथा मद्य की सामग्री की मदिरा जल के निवा १५९
सनि मैं फली पीछैं बारह वर्ष बीत्या जाणि द्वीपायन द्वारिका आया न

गर बाह्य आतापन योग करि तिष्ठ्या भगवान की प्रतीति न राखी पीछैं संभु
व कुमारादिक क्रीडा करते तृषावंत होय कुंडनि मैं जल जानि पीवते भये
तब तिस मद्य के निमित्त तैं कुमार उन्मत्त भये तहां द्वीपायन मुनि कूं ति
ष्ठ्या देखि कहते भये जो यह द्वारिका के दग्ध करनें वाला द्वीपायन है ऐ
से कहकरि तिस कूं पाषाणादिक करि घात करते भये तब द्वीपायन भूमि
मैं गिर पड्या तब ताकूं क्रोध उपज्या ताकै निमित्त तैं द्वारिका दग्ध भई
ऐसैं द्वीपायन भाव अशुद्ध विनां अनंत संसारी भया ॥ ५० ॥ आगैं भाव
शुद्ध करि सहित मुनि भया त्यां सिद्धि पाई ताका उदाहरण कहै है ॥ गाथा ॥
भावसमणो य धीरो जुवईयणवेढिओ विसुद्धमई । णामेण सिवकुमा
रो परीससंसारिओ जादो ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ सिवकुमार नामा भावश्रमण स्त्री

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

अ० पा० जनकरि चेथ्याकुया नी विशुद्धताथी रवीर संसार का पार पावता भ
१६० या ॥ भावार्थ ॥ सिवकुमार नामा की शुद्धता करि ब्रह्मस्वर्ग मे विद्युन्माली दे
व होय तहां तें चय करि जंबूस्वामी केवली होय मोक्ष पाई ताकी कथा ।
ऐसें ॥ इस जंबूद्वीप पूर्व विदेह पुष्कलावती देश वीतशोक पुर विषे म
हापद्म राजा वनमाला नामा राणी कै शिवकुमार नामा पुत्र होता भया
सो एकै दिन मित्र सहित वनक्रीडा करि नगर मैं आवै था सो मार्ग मैं लो
क कूं पूजा की सामग्री ले जाता देष्या तब मित्र कूं पूछी एकहां जाय हैं त
ब मित्र कही जो सागरदत्त नामा मुनि रिद्धिधारी कूं वन मैं पूजने कूं जा
य हैं तब शिवकुमार मुनि पासि जाय अपना पूर्वभव सुणि संसार सुं विर १६०
क्त होय दीक्षा लई अर दृढधर्म नामा श्रावक कै घरि प्रासुक आहार ली

या ता पीछें स्त्रीनि कै निकटि असिधाराव्रत परम ब्रह्मचर्य पालता सं
ता बारा वर्ष ताई तप करि सैं अंत संन्यास मरण करि ब्रह्मकल्प विषे वि
द्युन्माली देव भया तहां तें चय करि जंबूकुमार भया सो दीक्षा ले केवलज्ञा
न पाय मोक्ष पाया ऐसें शिवकुमार भावमुनि मोक्ष पाई याकी विस्तारस
हित कथा जंबूचरित्र मैं है तहां तैं जाननी ऐसें भावलिंग प्रधान है
॥ ७ ॥ आगै शास्त्रनि पढें अर सम्यग्दर्शनादि रूप भाव विशुद्धता न होय तो
सिद्धि कूं न पावै ताका उदाहरण अभव्यसेन का कहे हैं ॥ गाथा ॥ केवलि
जिणपण्णत्तं ॥ एयादसंगसुयणाणं ॥ पढिऊ अभव्वसेणो ण भावस
मणत्तणं पत्तो ॥ ५२ ॥ अर्थ ॥ अभव्यसेन नामा द्रव्यलिंगी मुनि है सो केवली
भगवान का प्ररूप्या ग्यारह अंग पढ्या तथा ग्यारह अंग कूं शब्द तें श्रुतज्ञा

अष्टपा० नमीकहिए जानें। ता पढ्याकूं अर्थ अपेक्षा पूर्णश्रुतज्ञान भी होय जाय
१६१ है। तहां अभव्यसेन पढ्या तोऊ भी अभव्य भावपणाकूं प्राप्त भया ॥ भा
वार्थ ॥ इहां ऐसा आशय है जो कोई जानैगा बाह्य क्रियामात्रतैं तो सिद्धि
नांही अर शास्त्रके पढनेकरि तो सिद्धि है यह भी जानें नाही जातैं शास्त्र प
ढनेमात्रतें भी सिद्धि नांही है अभव्यसेन द्रव्यमुनि भी भया अर ग्यारह अंग
भी पढ्या तौऊ जिनवचनकी प्रतीति न भई तातैं सम्यक्त्वकी प्राप्ति न भई ता
तैं भावलिंग न पाया अभव्यसेनकी कथा पुराणनिमैं प्रसिद्ध है तहांतैं जा
ननी ॥ ५२ ॥ आगैं शास्त्र पढ्यां विनां शिवभूत मुनि तुषमाषकूं घोषताई
भावकी विशुद्धिकूं पाया मोक्ष पाई ताका उदाहरण कहैं हैं ॥ गाथा ॥ तुस १६१
मासं घोसंतो भावविसुद्धो महाणुभावो य ॥ णामेण य सिवभूई केव

लणाणी फुडं जाओ ॥ ५३ ॥ अर्थ ॥ आचार्य कहै है जो सिवभूति नामा मुनि है सो शास्त्र प
ढ्या विनां ही तुषमाष ऐसा शब्दकूं घोषता संता भावकरि विशुद्ध महानुभाव होय क
रि केवलज्ञानी भया यह प्रगट है ॥ भावार्थ ॥ कोई जानैगा शास्त्र पढे ही सिद्ध है सो ऐ
सैं भी नांही शिवभूति मुनि तुषमाष ऐसा शब्दमात्र ही घोषता भावनिकी विशु
द्धतातैं केवलज्ञान पाया ॥ याकी कथा ऐसै कोई शिवभूति नामा मुनि था सो गुरु
निपासि शास्त्र पढै सो धारणा होय नांही तब गुरु निये शब्द पढाया जो मा रुष मा १
तुष सो या शब्दकूं घोषने लगाया याका अर्थ यह जो रोष मति करै तोष मति करै रा
ग द्वेष मति करै यातैं सर्व सिद्धि है तब यह भी शब्द शुद्ध याद न रह्या तब तुषमाष
ऐसा पाठ घोषणे लगा दोऊ पदके रुकार तुकार विस्मरण होय गये तुषमाष ऐ
सा याद रह्या ताकूं घोषता विचरै तब एक कोई स्त्री उडदकी दालि धोवै थी ताकूं

अ० पा० काहूनैं पूछी तूं कहा करै है तब वानैं कही तुष अर माष भिन्न न्यारे न्यारे करूं त
१६२ बया मुनिनैं सुणि तुषमाष शब्द का भावार्थ यह जान्या जो यह शरीर तौ तुष है अ
र यह आत्मा माष है दोऊ भिन्न हैं न्यारे न्यारे हैं ऐसा भाव जान्या आत्मा का अनु
भव करनै लगा चिन्मात्र शुद्ध आत्मा कूं जानि तामैं लीन भया तब घाति कर्म का
नाश करि केवलज्ञान उपजाया ऐसैं भावनि की शुद्धता तैं सिद्धि भई जानि भाव
शुद्ध करना यह उपदेश है ॥ छ ॥ आगैं याही अर्थ कूं सामान्य करि कहै है ॥ गाथा ॥
भावेण होइ णग्गो बाहिरलिंगेण किं च णग्गेण । कम्मपयडीण णियरं णासइ भावे
ण दव्वेण ॥ ५४ ॥ अर्थ भाव करि नग्न होय है बाह्य नग्नलिंग करि कहा कार्य हो
य नाहीं होय जातैं भाव सहित द्रव्यलिंग करि कर्मप्रकृति का समूह का नाश होय १६२
है ॥ भावार्थ ॥ आत्मा कै कर्मप्रकृति नाश करि निर्जरा तथा मोक्ष होना कार्य है सो य

र कार्य द्रव्यलिंग ही करि तौ नाहीं होय भाव सहित द्रव्यलिंग भयें कर्म की निर्ज
रा नामा कार्य होय है केवल द्रव्यलिंग करि तौ न होय है तातैं भाव सहित द्रव्य
लिंग धारणा यह उपदेश है ॥ छ ॥ आगैं याही अर्थ कूं दृढ करै है ॥ गाथा ॥ णग्गत्त
णं अकज्जं भावरहियं जिणेहि पण्णत्तं । इय णाऊण य णिच्चं भाविज्जहि अप्पयं
धीर ॥ ५५ ॥ अर्थ भावरहित नग्नपणा है सो अकार्य है किछू कार्यकारी नांही
यह जिनभगवान कह्या है ऐसैं जाणि करि हे धीर है धैर्यवान मुनि निरंतर
नित्य आत्मा ही कूं भाय ॥ भावार्थ ॥ आत्मा की भावना निरंतर करणी या सहित
नग्नपणा सफल है ॥ छ ॥ आगैं शिष्य पूछै है जो भावलिंग कूं प्रधान करि निरू
पण कीया सो भावलिंग कैसा है ताका समाधान कूं भावलिंग का निरूपण क
रै है ॥ गाथा ॥ देहादिसंगरहिओ माणकसाएहिं सयलपरिचत्तो । अप्पा अप्पम्मि

रउ॥ स भावलिंगी हवे साहू॥ ५६॥ अर्थ॥ भावलिंगी साधु ऐसा होय है देह आ
दिक जे परिग्रह तिनि तैं रहित होय॥ बहुरि समस्त मान कषाय करि रहित हो
य बहुरि आत्मा विषै लीन होय सो आत्मा भावलिंगी है॥ भावार्थ॥ आत्मा का
स्वाभाविक परिणाम कूं भाव कहिए है॥ तिस मयी लिंग कहिए चिह्न तथा लक्षण त
था रूप होय सो भावलिंग है तहां आत्मा अमूर्त्तीक चेतनारूप है ताका परि
णाम कूं भाव कहिए है॥ तिस मयी लिंग कहिए चिह्न तथा लक्षण तथा रूप होय
सो भावलिंग है तहां आत्मा अमूर्त्तीक चेतनारूप है ताका परिणाम दर्शन
ज्ञान है तिस मैं कर्म के निमित्त तैं बाह्य तौ शरीरादिक मूर्त्तिक पदार्थ का
संबंध है अर अंतरंग मिथ्यात्व अर रागद्वेष आदि कषायनि कूं भावै हैं ता १६३
तैं कहै हैं जो बाह्य तौ देहादिक परिग्रह तैं रहित अर अंतरंग रागादिक परि

णामनि विषैं अहंकार रूप मान कषाय पर भावनि विषै आपा माननां तिस
भाव तैं रहित होय अर अपना दर्शन ज्ञान स्वरूप चेतना भाव ता विषै लीन
होय सो भावलिंग है यह भाव जाकै होय सो भावलिंगी साधु है॥ ॥ आगै याही
अर्थ कूं स्पष्ट करि कहै है॥ गाथा॥ ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो
आलंबणं च मे आदा अवसेसाइं वोसरे॥ ५७॥ अर्थ॥ भावलिंगी मुनि कै ऐसे भा
व होय है मैं परद्रव्य अर परभावनि तैं ममत्व अपना माननां ताकूं छोडूं हो ब
हुरि मेरा निज भाव ममत्व रहित है ताकूं अंगीकार करि तिष्ठौं हौं॥ अब मेरे
मेरा आत्मा ही का आलंबन है॥ अवशेष परद्रव्य संबंधी आलंबन सर्व ही कूं
छोडूं हों॥ भावार्थ॥ सर्व द्रव्यनि का आलंबन छोडि अपने आत्म स्वरूप विषै
तिष्ठौं हौं ऐसा भावने लगे हैं॥ ॥ आगै कहै है जो ज्ञान दर्शन संयम त्याग सं

अ०पा०
१६४

वरयोग्यभाव भावलिंगी मुनिकै होय है ते अनेक है तौ आत्मा ही है तातैं भी
अभेदका अनुभव करै है ॥ गाथा ॥ आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवर जोगे ॥५८॥ अर्थ भावलिंगी मुनि विचारै है जो मे
रै ज्ञानभाव प्रगट है ताविषै आत्मा ही की भावना है किछू ज्ञान न्यारा वस्तु नांही
है ज्ञान है सो आत्मा ही है ऐसैं ही दर्शनविषै भी आत्मा ही है वहुरि चारित्र है सो
ज्ञानविषै थिरता रहना ही है सो याविषै भी आत्मा ही है ॥ वहुरि प्रत्याख्यान ।
आगामी परद्रव्यका संबंध छोडना है सो या भावविषै आत्मा ही है ॥ वहुरि सं
वर परद्रव्यके भावरूप न परणमनेका है सो या भावविषै भी मेरै आत्मा ही है व
हुरि योग नाम एकाग्रचिंतारूप समाधिध्यानका है सो या भावविषै मेरै आत्मा १६४
ही है ॥ भावार्थ ज्ञानादिक कछू न्यारे पदार्थ तौ है नाही आत्मा ही के भाव है संज्ञादिक

भेदतैं न्यारे कहिए हैं तहां अभेददृष्टि करि देखिये तब ए सर्व भाव आत्मा ही है तातैं
भावलिंगी मुनि अभेद अनुभव करै है भेद अनुभवमें विकल्प है तातैं निर्वि
कल्प अनुभवमें प्रसिद्धि है यह जानि ऐसैं करै है ॥५८॥ आगैं इस ही अर्थकूं दृ
ढ करनेकूं कहै है ॥ गाथा ॥ एगो मे सस्सदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो सेसा
मे बाहिरा भावा सव्वे संयोगलक्खणा ॥५९॥ अर्थ भावलिंगी मुनि विचारै है जो
ज्ञानदर्शन है लक्षण जाका ऐसा अर शाश्वता नित्य ऐसा आत्मा है सो ही ए
क मेरा है अन्य बाकी जे भाव है ते मोतैं बाह्य है ते सर्व ही संयोगस्वरूप है परद्र
व्य है ॥ भावार्थ ज्ञानदर्शनमयि एक आत्मा है सो तो मेरा रूप है तादात्म्यस्वरूप
है अर अन्य परद्रव्य है ते मोतैं बाह्य है सर्व संयोगस्वरूप है भिन्न है यह भावना
भावलिंगी मुनिकै है ॥५९॥ आगैं कहै है जो मोक्ष चाहै सो ऐसैं आत्माकी भावना

करै॥ गाथा॥ भावह भावं शुद्धं अप्पा सुविसुद्धणिम्मलं चेव लंहु॥ चउगइ चइ
ऊणं जइ इच्छइ सासयं सुक्खं॥ ६०॥ अर्थ॥ हो मुनि जन हो जो च्यारि गतिरूप सं
सार तैं छूटि करि शीघ्र शाश्वता सुखरूप मोक्ष तुम चाहो हो तो भाव करि शुद्ध
जैसैं होय तैसैं अतिशय करि विशुद्ध निर्मल आत्मा कूं भावो॥ भावार्थ॥ जो संसार
तैं निवृत्ति करि मोक्ष चाहो हो तो द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म तैं रहित शुद्ध आत्म
कूं भावो ऐसा उपदेश है॥ छ॥ आगैं कहै हैं जो आत्मा कूं भावै सो याका स्वभा
व कूं जाणि भावै सो मोक्ष पावै॥ गाथा॥ जो जीवं भावंतो जीवसहावं सुभावसंजुत्ते
सो जरमरणविणासं कुणइ फुडं लहइ णिव्वाणं॥ ६१॥ अर्थ॥ जो भव्य पुरुष
जीव कूं भावता संता भले भाव करि संयुक्त भया जीव का स्वभाव कूं जाणि क १६५
रि भावै सो जरा मरण का विनाश करि प्रगट निर्वाण कूं पावै है॥ भावार्थ॥ जीव

ऐसा नाम तौ लोक मैं प्रसिद्ध है परंतु याका स्वभाव कहा है ऐसा लोक कै
यथार्थ स्वरूप जाणि भावै है ते संसार तैं निवृत्ति करि मोक्ष पावै है॥ छ॥ आगैं
जीव का स्वरूप सर्वज्ञदेव कह्या है सो कहै हैं॥ गाथा॥ जीवो जिणपण्णत्तो णा
णसहाउ य चेयणायव्वो कम्मक्खयकारणणिमित्ते॥ ६२॥ अर्थ॥ जिन सर्वज्ञ
देव जीव का स्वरूप ऐसा कह्या है॥ जीव है सो चेतनासहित है व ज्ञानस्व
भाव है॥ ऐसा जीव का भावना कर्म का क्षय के निमित्त जाननां॥ भावार्थ॥ जी
व का चेतनासहित विशेषण कीया यातैं तौ चार्वाक जीव कूं चेतनासहित न
मानै है ताका निराकरण है॥ व ज्ञानस्वभाव विशेषण तैं सांख्यमती
ज्ञान कूं प्रधान का धर्म मानै है जीव कूं उदासीन नित्य चेतनारूप मानै है ताक
निराकरण है॥ तथा नैयायिकमती गुणगुणी भेद मानि जीव तैं ज्ञान सर्वथा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारकम्

भिन्नमानै है ताका निराकरण करै है वहुरि ऐसा जीवका स्वरूपका भावना कर्म
क्षयनिमित्त होय है अन्य प्रकार भाया मिथ्याभाव है ॥ ॥ आगें कहै है जो जे पुरुष
जीवका अस्तित्व मानै है ते सिद्ध होय है ॥ गाथा ॥ जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो
य सव्वहा तस्स । ते होंति भिन्न देहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा ॥ ६३ ॥ अर्थ ॥ जिनि भ
व्यजीवनिकै जीव नामा पदार्थ सद्भावरूप है अर सर्वथा अभावरूप नांही है ते
भव्यजीव देह तैं भिन्न ऐसे सिद्ध होय है ते कैसे है सिद्ध वचन गोचर तैं अतीत है ॥
भावार्थ ॥ जीव है सो द्रव्यपर्यायस्वरूप है सो कथंचित् अस्तित्वरूप है कथंचित् ना
स्तित्वरूप है तहां पर्याय अनित्य है या जीवकै कर्मके निमित्त तैं मनुष्य तिर्यंच दे
व नारक पर्याय होय है ताका कदाचित् अभाव देषि जीवका सर्वथा अभाव मा
नै है ॥ ताके संबोधने कूं ऐसा कह्या है जो जीवका द्रव्य दृष्टि करि नित्य स्वभाव है

पर्यायका अभाव होतैं सर्वथा अभाव न मानै है सो देह तैं भिन्न होय है ते सिद्ध व
चनगोचर नांही है अर जे देहकूं विनसता देषि जीवका सर्वथा नाश मानै है ते मि
थ्या दृष्टी है ते सिद्ध कैसें होय न होय ॥ ॥ आगैं कहै है जो जीवका स्वरूप वचन
कै अगोचर है अनुभवगम्य है सो ऐसा है ॥ गाथा ॥ अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेय
णागुणमसद्दं ॥ जाणमलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ॥ ६४ ॥ अर्थ ॥ हे भव्य
तू जीवका स्वरूप ऐसा जाणि कैसा है अरस कहिए पंच प्रकार रसकरि रहित है
वहुरि अरूप कहिए पांच प्रकार रूपकरि रहित है ॥ वहुरि दोय प्रकार गंध करि र
हित है वहुरि अव्यक्त कहिए अष्ट करि रहित है वहुरि अलिंगग्रहण कहिए स्त्री
पुरुष आदि का रूप अन्य चिह्न करि ग्रहण मैं नांही आवै है ॥ वहुरि अनिर्दिष्ट
संस्थान कहिए चौकूंण गोल आदिक कूं जाका आकार कह्या जात नांही
इंद्रियनिकै गोचर व्यक्त नांही है वहुरि चेतना है गुण जामैं वहुरि असद्द कहिए

टूः ३

अ०पा० ऐसा जीव जाणु ॥ भावार्थ ॥ रस रूप गंध अर स्पर्श ए तौ पुद्गल के गुण हैं तिनिका निषेध
१६७ रूप जीव कह्या बहुरि अव्यक्त अलिंगग्रहण अनिर्दिष्टसंस्थान कह्या सो यह भी
वैसा है पुद्गल के स्वभाव की अपेक्षा करि निषेधरूप ही जीव कह्या अचेतना
गुण कह्या सो यह जीव का है सो निषेध अपेक्षा तौ वचन कै अगोचर जाननां
अर विधि अपेक्षा स्वसंवेदन गोचर जाननां ऐसैं जीव का स्वरूप जाणि अ-
नुभवगोचर करना यह गाथा प्रवचनसार समयसार ग्रंथ मैं भी है सो याका व्या-
ख्यान ही का कारण विशेष करि कह्या है तहांतें जाननां ॥ ६४ ॥ आगै जीव
का स्वभाव ज्ञान स्वरूप भावनां कह्या सो वह ज्ञान के प्रकार भावनां सो कहै
है ॥ गाथा ॥ भावहि पंचपयारं णाणं अण्णाणणासणं सिग्घं। भावणभावियस- १६७
हिओ दिवसुहभायणो होई ॥ ६५ ॥ अर्थ ॥ हे भव्यजन तूं यह ज्ञान पांच प्रकार भा-

य कैसा है यह ज्ञान अज्ञान का नाश करनेंवाला है ॥ कैसा भया भाय भावना
करि भावित जो भाव तिस सहित भया भाय बहुरि कैसैं भाय सीघ्र भायया
तें तूं दिव कहिए स्वर्ग शिव कहिए मोक्ष ता का भाजन होय ज्ञान यद्यपि ज्ञा-
न स्वभाव करि एक प्रकार है तौऊ कर्म के क्षयोपशम क्षय की अपेक्षा पं-
च प्रकार भया है तामैं भी मिथ्यात्वभाव के अपेक्षा करि मति श्रुत अवधि ए तीन
मिथ्या कहाए हैं तातैं मिथ्याज्ञान का अभाव करनेकूं ज्ञानकूं मति श्रुत
अवधि मनःपर्यय केवलज्ञान स्वरूप पंच प्रकार सम्यग्ज्ञान जाणि तिनि
कूं भावणां परमार्थ विचार तैं ज्ञान एक ही प्रकार है ॥ यह ज्ञान की भावनां स्वर्ग
मोक्ष की दाता है ॥ ६५ ॥ आगैं कहै है जो पढनां सुणनां भी भाव विनां किछू है नां
ही ॥ गाथा ॥ पढिएण वि किं कीरइ किं वा सुणिएण भावरहिएण। भावो कारण

अ॰पा॰
२६८

भूदो सायारणायारभूदाणं ॥६६॥ अर्थ॥ भावरहित पढनां अर सुणनां ति-
निकरि कहा कीजिए किछू भी कार्यकारी नांही है जातैं श्रावकपणा तथा
मुनिपणा इनिका कारणभूत भाव ही है ॥ भावार्थ॥ मोक्षमार्गमैं एकदेश सर्व-
देश व्रतनिकी प्रवृत्तिरूप मुनि श्रावकपणा है सो दोऊका कारणभूत नि-
श्चय सम्यग्दर्शनादिक भाव है तहां भाव विनां व्रतक्रियाकी कथनी हां
केवल किछू कार्यकारी नांही है तातैं ऐसा उपदेश है जो भाव विना पढना
सुणनां आदि करि कहा कीजिये केवल प्रयासमात्र है तातैं भावसहित जे १
किछू करो सो सफल है ॥ इहां ऐसा आशय है जो कोऊ जानैंगा पढनां सु-
नना नांही ज्ञान है सो ऐसैं नांही है पढि सुणि करि आपकूं ज्ञानस्वरूप जाणि २६८
अनुभव करैं भाव जानिये है तातैं वार वार भावनां करि भाव लगायें सिद्धि है

॥छ॥ आगैं कहै है जो बाह्य नग्नपणा ही करि सिद्ध होय तौ नग्न तौ सारे ही हो-
य है ॥ गाथा ॥ दव्वेण सयलणग्गा ॥ णारयतिरिया य सयलसंघाय ॥ परिणामेण
असुद्धा ॥ ण भावसवणत्तणं पत्ता ॥६७॥ अर्थ॥ द्रव्यकरि बाह्य तौ सकल प्रा-
णी नागा होय है नारकी जीव अर तिर्यंच जीव तौ निरंतर वस्त्रादिक रहित
नागा ही रहै है बहुरि सकल संघातक कहनें तैं अन्य मनुष्य आदिक भी का-
रण पाय नग्न होय है तौऊ परिणामकरि अशुद्ध है तातैं भावश्रमणपणां
कूं न प्राप्त भये ॥ भावार्थ॥ जो नग्न रहे ही मुनिलिंग होय तौ नारकी तिर्यंच आ-
दि सकल जीवसमूह नग्न रहै है ते सर्व मुनि ठहरे तातैं मुनिपणा तौ भाव-
शुद्ध भयें ही होय है अशुद्ध भाव रहे तें द्रव्य करि नग्न भी होय तौ भावमुनि-
पणा न पावै है ॥छ॥ आगैं याही अर्थकूं दृढ करनेंकूं केवल नग्नपणानि:

अ०पा० फल दृष्टि पावै है ॥ गाथा ॥ णग्गो पावइ दुक्खं णग्गो संसारसायरे भमई ॥ णग्गो ण लह
१६७ इ बोहिं जिणभावणवज्जिओ सुइरं ॥ ६८ ॥ अर्थ ॥ नग्न है सो सदा दुःख पावै है ब
हुरि नग्न है सो सदा संसारसमुद्र मैं भ्रमै है । नग्न है सो बोधि कहिए सम्यग्ज्ञान
ताहि न पावै है कैसा है कैसा नग्न जो जिनभावना करि वर्जित होय है ॥ भावार्थ ॥
जिनभावना जो सम्यग्दर्शन भावना तिस करि वर्जित जो जीव है सो नग्न
भी रहै तौ बोधि जो सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूप मोक्षमार्ग ताकूं न पावै है
याही तैं संसारसमुद्र मैं भ्रमता संता दुःख ही कूं पावै है ॥ तथा वर्त्तमान भी जो
मनुष्य नागा होय है सो दुःख ही कूं पावै है सुख तौ भावमुनि नागा होय ते ही
पावै है ॥ ६ ॥ आगै इस ही अर्थ कूं दृढ करने कूं कहै है ॥ जो द्रव्य नग्न होय मु १६७
नि कहावै ताका अपजस होय है ॥ गाथा ॥ अयसाण भायणेण य किं ते ण

ग्गेण पावमलिणेण ॥ पेसुण्णहासमच्छरमायाबहुलेण सवणेण ॥ ६९ ॥ अर्थ
हे मुनि तेरै नग्नपणा करि तथा मुनिपणा करि कहा साध्य है कैसा है पैशुन्य क
हिए अन्य का दोष कहने का स्वभाव हास्य कहिए अन्य का हास्य करना मत्स
र कहिए आपसमान तैं ईर्षा राखि पर कूं नीचा पाडने की बुद्धि माया कहिए कु
टिल परिणाम इन भाव है बहुल प्रचुर जामै याही तैं कैसा है पाप करि मलिन है
याही तैं कैसा है अयशा कहिए अपकीर्त्ति तिनि का भाजन है ॥ भावार्थ ॥ पैशुन्य आ
दि पाप तिन करि मैला अैसा नग्नपणां स्वरूप मुनिपणा करि कहा साध्य है उल
टा अपकीर्त्ति का भाजन होय अवहास्य मैं कीहास्य का करावणहारा होय है
तातैं भावलिंगी होना योग्य है यह उपदेश है ॥ ० ॥ आगैं अैसैं भावलिंगी हो
ना यह उपदेश करै हैं ॥ गाथा ॥ पयडहि जिणवरलिंगं अब्भिंतरभावदोसप

अष्टपा०
१७०

रिग्गहो। भावमलेणायजीवोवाहिरसंगम्मिमइलिवई॥७०॥ अर्थ॥ हे आत्मन
अभ्यंतर भावदोषनिकरि रहित अत्यंत शुद्ध ऐसा जिनवरलिंग कहिए नि
र्ग्रंथलिंग प्रगटकरि भावशुद्धविना द्रव्यलिंग बिगडिजायगा जातैं भावमल
करि जीव है सो बाह्यके परिग्रहविषै मलिन होय है॥ भावार्थ॥ जो भावशुद्ध क
रि द्रव्यलिंग धारै तौ निश्चल होय अर भावमलिन होय तौ बाह्य भी परिग्रहकी
संगति करि द्रव्यलिंग भी बिगडै तातैं प्रधानपणै भावलिंग ही का उपदेश है
भावशुद्ध विना बाह्य भेषधारणा योग्य नाहीं॥ ७०॥ आगैं कहै है जो भावरहि
त नग्न मुनि है सो हास्य का स्थान है॥ गाथा॥ धम्ममि णिप्पवासो दोसावासो
य उच्छुफुल्लसमो। णिप्फलणिग्गुणयारो णडसवणो णग्गरूवेण॥७१॥ १७०
धर्म कहिए अपना स्वभाव तथा दशलक्षणस्वरूप तिस विषै जो वासनां ही

॥अर्थ॥ २

सो जीव दोषनिका आवास है अथवा दोष जामैं वसैं है सो ईखु के फूल समान
है जाकै फल नाही अर किछु सुगंधादिक गुण नाही सो ऐसा मुनि तौ नग्नरूप
करि नटश्रमण कहिये नाचने वाला भांड का स्वांग सारिखा है॥ भावार्थ॥ जाकै
धर्म मैं वासनां ही तातैं क्रोधादिक दोष ही वसैं अर दिगंवररूप धारै तौ व
ह मुनि ईखु के फूल सारिखा निर्गुण अर निफल है ऐसे मुनिकै मोक्षरूप
फल न लागै अर सम्यग्ज्ञानादिक गुण जामैं नांहीं होय तब नग्न भया भां
ड का सा स्वांग दीखै सो भांड जो नाचै तब शृंगारादिक करि नाचै तौ सो
भा तौ पावै नग्न होय नाचै तब हास्य कूं पावै तैसे केवल द्रव्यनग्न हास्य
का स्थान कहै है॥ ७१॥ आगैं इस ही अर्थ का समर्थन रूप कहै है जो द्रव्यलिं
गी बोधि समाधि जैसी जिनमार्ग मैं कही है तैसी नांहीं पावै है॥ गाथा॥ जेराय

DR. BABU DAU ... MEMORIAL

अ० पा०
१७२

जे

संगजुत्ता जिणभावणरहियदव्वणिग्गंथा। णलहंति ते समाहिं बोहिं जिण
सासणे विमले ॥७२॥ अर्थ ॥ जे मुनि राग कहिये अभ्यंतर परद्रव्यसं प्रीति
सो ही भया संग कहिए परिग्रह ताकरि युक्त है बहुरि जिनभावना कहि
ए शुद्धस्वरूपकी भावना करि रहित है ते द्रव्यनिर्ग्रंथ है तौऊ निर्मल जिन
शासन विषै जो समाधि कहिए धर्मशुक्लध्यान अर बोध कहिए सम्यग्दर्श
नज्ञानचारित्रस्वरूप मोक्षमार्ग ताहि न पावै है ॥ भावार्थ ॥ द्रव्यलिंगी अभ्यंतर
का राग छोडै नांही परमात्माकूं भावै नांही तब कैसै मोक्षमार्ग पावै तथा
समाधिमरण कैसे पावै ॥ छ ॥ आगे कहै है जो पहले मिथ्यात्व आदि दो
ष छोडि भावकरि अंतरंग नग्न होय पीछै द्रव्यमुनि होय यह मार्ग है ॥ १७२
गाथा ॥ भावेण होइ णग्गो मिच्छत्ताई य दोस चइऊणं ॥ पच्छा दव्वेण मुणी

पयडदि लिंगं जिणाणाए ॥७३॥ अर्थ ॥ पहले मिथ्यात्व आदि दोषनिकूं छो
डि अर भावकरि अंतरंग नग्न होय एकस्वरूप शुद्ध आत्माका श्रद्धान
ज्ञान आचरण करै पीछै मुनि द्रव्यकरि बाह्यलिंग जिनआज्ञाकरि प्रगट
करै यह मार्ग है ॥ भावार्थ ॥ भाव शुद्ध हूवा विना पहलैं ही दिगंबररूप धारि
ले तो पीछै भाव बिगडे तब भ्रष्ट होय अर भ्रष्ट होय भी मुनि कहावो करै तौ मा
र्ग की हास्य करावो करै तै जिनआज्ञा बाह्य ही है भाव शुद्ध करि बाह्य मु
निपणा प्रगट करै ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो शुद्धभाव ही स्वर्गमोक्षका का
रण है मलिनभाव संसारका कारण है ॥ गाथा ॥ भावो वि दिव्वसिवसुखभा
यणो भाववज्जिओ सवणो कम्ममलमलिणचित्तो तिरियालयभायणो प १
वो ॥७४॥ अर्थ ॥ भाव है सो स्वर्गमोक्षका पात्र है बहुरि भावकरि वर्जित श्रम

अ०पा० णा है सो पापस्वरूप है तिर्यंचगति का स्थानक है। कैसा है श्रमण कर्ममलक
१७२ रि मलिन है चित्त जाका ॥ भावार्थ ॥ भाव करि शुद्ध है सो तो स्वर्ग मोक्ष का पात्र है अ
र भाव करि मलिन है सो तिर्यंचगति मैं निवास करै है ॥ छ ॥ आगैं फेरि भा
व का फल का माहात्म्य कहै है ॥ गाथा ॥ खयरामरमणयकरंजलिमाला
हिं संथुया विउला चक्कहररायलछी लब्भइ बोही सुभावेण ॥ ७५ ॥ अर्थ ॥
सुभाव करि भले भाव करि मंदकषायरूप विशुद्ध भाव करि चक्रवर्त्ति
आदि राजानि की विपुल कहिए बडी लक्ष्मी पावै है कैसी है लक्ष्मी खचर
कहिए विद्याधर अमर कहिए देव मनुज कहिए मनुष्य इनि की अंजल
माला कहिए हस्तनी की अंजुली तिनि की पंक्ति करि संस्तवन नमस्का १७२
र पूर्वक स्तुति करनेयोग्य है। बहुरि केवल यह लक्ष्मी ही नांही पावै है बो

धि कहिए रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग भी पावै है ॥ छ ॥ आगैं भावनि का विशेष
कहै है ॥ गाथा ॥ भावं तिविहपयारं सुहासुहं सुद्धमेव णायव्वं ॥ असुहं च अ
ट्टरुद्दं सुह धम्मं जिणवरिंदेहिं ॥ ७६ ॥ अर्थ ॥ जिनवरदेव भाव तीन प्रकार
कह्या है शुभ अशुभ अर शुद्ध ऐसैं ॥ तहां अशुभ तौ आर्त्त रौद्र ध्यान
है बहुरि शुभ है सो धर्मध्यान है ॥ गाथा ॥ शुद्धं सुद्धसहावं ॥ अप्पा अप्पमि
तं णायव्वं इदि जिणवरेहिं भणियं जं सेयं तं समायरह ॥ ७७ ॥ अर्थ ॥ बहु
रि शुद्ध भाव है सो शुद्ध है सो अपना आपही मैं है ऐसैं जिनवरदेव कह्या
है सो जानना ॥ तिनि मैं जे कल्याण रूप होय ता कूं अंगीकार करौ ॥ भावा
र्थ ॥ भगवान भाव तीन प्रकार कह्या शुभ अशुभ शुद्ध तहां अशुभ तौ
आर्त्त रौद्र ध्यान है सो तो अति मलिन है सो त्याज्य ही है ॥ बहुरि शुभ है सो

भा॰ पा॰ १७३ धर्मध्यान है सो यह कथंचित् उपादेय है जातैं मंदकषायरूप विशुद्धता
विषै शुद्धता विषै शुद्धभाव की प्राप्ति है वहुरि शुद्धभाव है सो सर्वथा उपादे
य है जातैं यह आत्मा का स्वरूप ही है ऐसैं हेय उपादेय जानि त्याग ग्रहण
करना तातैं। ऐसैं कह्या है जो कल्याणकारी होय सो अंगीकार करणा य
ह जिनदेव का उपदेश है॥७७॥ आगैं कहै है जो जिनशासन का ऐसा माहा
त्म्य है॥ गाथा॥ पयलियमाणकसाओ पयलियमिच्छत्तमोहसमचित्तो। पावइ
तिहुयणसारं बोही जिणसासणे जीओ॥७८॥ अर्थ॥ यह जीव है सो जिनशासन
विषै तीनभवन मैं सार ऐसी वोधि कहिए रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग पावै
है कैसा भया संता प्रगलित मान कषाय कहिए प्रकर्षकरि गल्या है मान
कषाय जाका काहू परद्रव्य सूं अहंकाररूप गर्व नांही करै है वहुरि १७३

कैसा भया संता प्रगलित कहिए गलि गया है नष्ट भया है मिथ्यात्व का उ
दयरूप मोह जाका या ही तैं समचित्त है परद्रव्य विषै ममकाररूप मि
थ्यात्व अर इष्ट अनिष्ट वुद्धिरूप रागद्वेष जाकै नांही है॥ भावार्थ॥ मिथ्या
भाव अर कषायभाव का स्वरूप अन्यमतनि मैं यथार्थ नांही यह कथ
नीया वीतरागरूप जिनमत मैं ही है तातैं यह जीव मिथ्यात्व कषाय के अ
भावरूप मोक्षमार्ग तीनभवन मैं सार जिनमत मैं ही का सेवन तैं ही पा
वै है अन्यमत नांही॥७८॥ आगैं कहै है जो जिनसासन विषै ऐसा मुनि ही ती
र्थंकर प्रकृति वांधै है॥ गाथा॥ विसयविरत्तो समणो छद्दसवरकारणा
इं भाऊण। तित्थयरणामकम्मं वंधइ अइरेण कालेन॥७९॥ अर्थ॥ इंद्रियनि
के विषयनि करि विरक्त है चित जाका ऐसा श्रमण कहिए मुनि है सो सो

अ॰पा॰ लहकारणभावनांकूंभायकरितीर्थंकरनांमानांमकर्मकीप्रकृतिहै।
१७४ ताहिथोरेहीकालमैंबांधैहै॥भावार्थ॥यहभावकामहात्म्यहैजोविषयनितैं
विरक्तभावहोयसोलहकारणभावनाभावैतौअचिंत्यमहात्म्यजाका
ऐसीतीनलोककरिपूज्यतीर्थंकरनामप्रकृतिबांधैताकूंमोक्षपअरमे ।
लप्राप्तिहोयइहांसोलहकारणभावनाकेनाम॥दर्शनविशुद्धि॥विनय
संपन्नता॥शीलव्रतेष्वनतिचार॥अभीक्ष्णज्ञानोपयोग:संवेग:शक्तित
स्त्याग:शक्तितस्तपसाधुसमाधिवैयावृत्यकरण॥अर्हद्भक्तिआचार्यभ।
क्ति॥बहुश्रुतभक्तिप्रवचनभक्ति॥आवश्यकापरिहाणमार्गप्रभावना
प्रवचनवात्सल्यऐसैसोलहभावनाहैइनिकास्वरूपतत्वार्थसूत्रकी १७५
टीकातेजाननां॥इनिमैंमुख्यदर्शनप्रधानहैयहनहोयअरपंदरह।

भावनाकाव्यवहारहोयतौकार्यकारीनांहीं॥अरयहहोयतौपंदरह
भावनाकाकार्ययहहीकरिलेऐसें॥जांनना॥७७॥आगैंभावकी॥
शुद्धतानिमित्तआचरणकरैहै॥गाथा॥बारसविहतवयरणंतेरस।
किरियाउभाविविहेण॥धरहिमणमत्तदुरियं॥णाणंकुसएणमुणि
पवर॥८०॥अर्थ॥हेमुनिप्रवरमुनिनिमैंश्रेष्ठतूंबारहप्रकारतपअर
तेरहप्रकारक्रियामनवचनकायअरज्ञानरूपअंकुशकरिमनतूं
यमांतेहस्तीकूंअपनैंवशिराखि॥भावार्थ॥यहमनरूपहस्तीमदोन्मत्त
हैसोतपश्चरणक्रियादिकसहितज्ञानरूपअंकुशहीतैंवशिहोय
हैतातैंयहउपदेशहै॥इहांबारहतपकेनाम॥अनशन॥अवमौदर्य॥वृत्ति अव
परिसंख्यान॥रसपरित्याग॥विविक्तशय्यासन॥कायक्लेश॥ऐसैंतौछहप्र।

अ० पा० कारबाह्यतपहै॥ बहुरि प्रायश्चित विनय वैयावृत्त्य स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्या
१७५ न ए छह प्रकार अभ्यंतर तप है इनिका स्वरूप तत्त्वार्थसूत्र की टीका तैं जा
नना॥ बहुरि तेरह क्रिया ऐसैं पंच परमेष्ठीकूं नमस्कार ए पांच॥ छह आव
श्यककूं क्रिया निषेधका आशिका॥ ऐसा भाव शुद्ध होने के कारण कहे॥ आ
गैं अब द्रव्य भाव रूप सामान्य करि जिनलिंगका स्वरूप कहै है॥ गाथा॥
पंचविहचेलचायं खिदिसयणं दुविहसंजमं भिक्खू। भावं भावियपु
व्वं जिणलिंगं णिम्मलं सुद्धं॥ ८१॥ अर्थ॥ निर्मल शुद्ध जिनलिंग ऐसा है
जहां पंच प्रकार वस्त्र का त्याग है बहुरि जहां भूमि विषै शयन है बहु
रि जहां दोय प्रकार का संयम है बहुरि जहां भिक्षा भोजन है बहुरि भा १७५
वितपूर्व कहिए पहलै शुद्ध आत्मा का रूप परद्रव्य तैं भिन्न सम्यग्दर्श

न ज्ञान चारित्रमयी भाया वारंवार भावना करि अनुभव कीया ऐसे ज १
मैं भाव है ऐसा निर्मल कहिए बाह्यमलरहित शुद्ध कहिए अंतरमलर
हित जिनलिंग है॥ भावार्थ॥ इहां लिंग द्रव्य भाव करि दोय प्रकार है तहां द्रव्य
तौ बाह्य त्याग अपेक्षा है जामैं पांच प्रकार वस्त्र का त्याग है ते पांच प्रका
र ऐसे॥ अंडज कहिए रेसम तैं उपज्या बोंडज कहिए कपास तैं उपज्या
रोमज कहिए ऊन तैं उपज्या रोमज कहिए ऊन तै उपज्या वल्कज कहि
ए वृक्ष की॥ तुचा छालि तैं उपज्या॥ चर्मज कहिए मृग आदि की चर्म तैं उपा
ज्या ए पांच प्रकार कहे तहां ऐसा न जानना जो इनि सिवाय अन्य वस्त्र
ग्राह्य है ए उपलक्षणमात्र कहे हैं तातैं सर्व ही वस्त्र मात्र का त्याग जान
ना॥ बहुरि भूमि विषै सोवना बैठना तहां काष्ठ तृण गिणि लेणा बहु

अ०पा० रिंद्रियमनकावसिकरणां छकायजीवकीरक्षाकरणां ऐसेदोय
१७६ प्रकारसंयमहै॥ वहुरिनिद्राजीतनां ताम्हें हूतकारितअनमोदनाका
दोषनलागैछीयालीसदोषटलैवतीसअंतरायटलैऐसैंयथाविधि
विहारकरिभोजनकरै ऐसेतोवाह्यलिंगहै वहुरिभावपूर्वैकह्यातै।
सेहीय ऐसैदोयप्रकारशुद्धजिनलिंगकह्याहै॥ अन्यप्रकारस्वेतां
वरादिककहैसोजिनलिंगनांहीहै॥ ८१॥ आगैजिनधर्मकीमहिमाकहैहै
गाथा॥ जहरयणीणंपवरंव॥ जंजहतरुवराणगोसीरं॥ तहधम्माणंपव
रंजिणधम्मंभाविभवमहणं॥ ८२॥ अर्थ॥ जैसैंरत्ननिविषैप्रवरश्रेष्ठउत्त
मवज्रकहिएहीराहै॥ वहुरिजैसैंतरुवरकहिएवडेवृक्षनिविषेप्र १७६
वरश्रेष्ठउत्तमं॥ गोसीरकहिएवावनाचंदनहैतैसैंधर्मनिविषेउत्त

मप्रवरश्रेष्टजिनधर्महै कैसाहैजिनधर्मभावभवप्रथमंकहिए आ
गामीसंसारकामथनकरनेवालेहैयातैंमोक्षहोयहै॥ भावार्थ॥ धर्मऐ
सासामान्यनामतौलोकमैंप्रसिद्धहै अरलोकअनेकप्रकारक्रिकि
याकांडादिकमैंधर्मजानिसेवैहै तहांपरीक्षाकीयेमोक्षकीप्राप्तिक
रनेंवालाजिनधर्महीहैं अन्यसर्वेसंसारकेकारणहै तेक्रियाकांडा
दिकसंसारहीमेंराषैहैं कदाचित्संसारकेभोगकीप्राप्तिकरैंहै तौ
ऊफेरिभोगमैंलीनहोयतवएकेंद्रियादिकपर्यायपावैतथानरक
कूंपावैहै ऐसेंअन्यधर्मनाममात्रहै तातैंउत्तमजिनधर्मजाननां॥
आगैंशिष्यपूछैहैजोजिनधर्मउत्तमकह्यासोधर्मकाकहास्वरूपआ
चार्यकहैहैधर्मऐसाहै गाथा॥ पूयादिसुवयसहियंपुण्णंहिजिणेहिसास

णंसणियं ॥ मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो धम्मो ॥ ८३ ॥ अर्थ ॥ जि
नशासनविषै जिनेश्वरदेव ऐसे कह्या है जो पूजा आदिकविषैं अर व्रतस
हित होय सो तौ पुण्य है ॥ बहुरि मोहके क्षोभकरि रहित जो आत्माका परि
णाम सो धर्म है ॥ भावार्थ ॥ लौकिकजन तथा केई अन्यमती कहै है जो पूजा
आदिक शुभक्रिया तिनिविषै अर व्रतक्रियासहित है सो धर्म है ऐसें
नाही है जिनमतमें भगवानने ऐसें कह्या है जो पूजादिकविषै अर व्रतनिस
हित होय सो तौ पुण्य है तहां पूजा अर आदि शब्दकरि भक्ति वंदना वैया
वृत्त आदिक लेणा यह तौ देवगुरुशास्त्रके अर्थि होय है बहुरि उपवा
स आदिक व्रत है ते शुभक्रिया है इनिमें आत्माका रागसहित शुभ
परिणाम होय है ताकरि पुण्यकर्म निपजै है तातै इनिकूं पुण्य कहै है ।

याका फल स्वर्गादिकके भोगकी प्राप्ति है ॥ बहुरि मोहका क्षोभकरि रहित
आत्माका परिणाम लेणा तहां मिथ्यात्व तौ अतत्त्वार्थश्रद्धान है ॥ बहु
रि क्रोध मान अरति शोक भय जुगुप्सा ए छह तौ द्वेषप्रकृति है बहु
रि माया लोभ हास्य रति पुरुष स्त्री नपुंसक ए छह वेद विकार ऐसे सा
त प्रकृति रागरूप है इनिके निमित्ततैं आत्माका ज्ञानदर्शनस्वभाव विका
रसहित क्षोभरूप चलाचल व्याकुल होय है ॥ यातें इनि विकारनिरहित हो
य तब शुद्धदर्शनज्ञानरूप निश्चल होय सो आत्माका धर्म है इस धर्म
मैं ते आत्माकै आगामी कर्मका तौ आश्रव रुकि संवर होय है अर पूर्वे
कर्म तिनिकी निर्जरा होय है संपूर्ण निर्जरा होय तब मोक्ष होय है ऐसे ध
र्मका स्वरूप कह्या है ॥ अर शुभपरिणाम होय तब या धर्मकी प्राप्ति क

अ०पा० भी अवसर होय है तथा एकदेश मोहके क्षोभकी हानि होय है तातैं शु-
१७८ भ परिणामकूं भी उपचारकरि धर्म कहिए है अर जे केवल शुभपरिणाम
ही कूं धर्म मानि संतुष्ट हैं तिनिकै धर्मकी प्राप्ति नांही है यह जिनमतका
उपदेश है ॥ ८३ ॥ आगैं कहै है पुण्यही कूं धर्म जाणि श्रद्धै है तिनिकै केवल
भोगका निमित्त है कर्मका क्षयका निमित्त नांही ॥ गाथा ॥ सद्दहदि य प-
त्तेदि य रोचेदि य तह पुणो वि फासेदि । पुण्णं भोयणिमित्तं ण हु सो कम्म-
क्खयणिमित्तं ॥ ८४ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष पुण्य कूं धर्म जाणि श्रद्धान करै है रु-
चि प्रतीति करै है बहुरि स्पर्शै है तिनिकै यह पुण्य भोगका निमित्त है या-
तैं स्वर्गादिकका भोग पावै है बहुरि सो पुण्य कर्मका क्षयका निमित्त न १७८
होय है यह प्रगट जाणूं ॥ भावार्थ ॥ शुभक्रियारूप पुण्य कूं धर्मका बंध हो-

य है ताकरि स्वर्गादिकके भोगकी प्राप्ति होय है ॥ ८४ ॥ आगैं कहै है जो आ-
त्माका स्वभावरूप धर्म है सोई मोक्षका कारण है ॥ गाथा ॥ अप्पा अप्पमि
रओ रायादिसु सयलदोसपरिचत्तो । संसारतरणहेदु धम्मो त्ति जिणेहिं णि-
द्दिट्ठो ॥ ८५ ॥ अर्थ ॥ जो आत्मा आत्मा विषै ही रत होय रत होय है सा रत भया-
तैं होय रागादि समस्त दोषनि करि रहित भया संता ऐसा धर्म जिनेश्वरदे-
व नै संसारतैं तरणेका कारण कह्या है ॥ भावार्थ ॥ पूर्वै कह्या था जो मोह-
के क्षोभकरि रहित आत्माका परिणाम है सो ऐसा धर्म ही संसारतैं पा-
र करि मोक्षका कारण भगवान कह्या है यह नियम है ॥ ८५ ॥ आगैं याही
अर्थ कूं दृढ करनै कूं कहै है जो आत्माकूं इष्ट नाही करै है अर समस्त पु-
ण्यकूं आचरै है तौऊ सिद्धि कूं न पावै है ॥ गाथा ॥ अह पुण अप्पा णिच्छ-

अ०पा० १७८ रिपुण्णाइंकरेदिणिरवसेसाइं तहविणपावदिसिद्धिं ॥ संसारत्थोपुणोभ
णिदो ॥८६॥ अर्थ अथवा जो पुरुष आत्माकूं नांही इष्ट करै है ताका स्व
रूप न जानै है अंगीकार नांही करै है अर समस्त पुण्यकूं करै है तोऊ
सिद्धि कहिए मोक्ष नांही पावै है वहुरि वह पुरुष संसारही मैं तिष्ठ्या रहै
है ॥ भावार्थ आत्मीक धर्म धार्या विना सर्व प्रकार पुण्यकी आचरण नैं क
रै तोऊ मोक्ष न होय संसारी ही रहै है कदाचित् स्वर्गादिकके भोग पावै तो
तहां भोगनिमैं आसक्त होय तहां तैं चय एकेंद्रियादिक होय
संसारही मैं भ्रमै है ॥ छ ॥ आगैं इस कारणकरि आत्माहीका श्रद्धान क
रो प्रयत्नकरि जानो मोक्ष पावो ऐसा उपदेश विशेषकरि कहैं ॥ १७८
गाथा ॥ एएण कारणेण य ॥ तं अप्पा सद्दहेह तिविहेण जेणय लहेह मो

क्खं तं जाणिज्जह पयत्तेण ॥८७॥ अर्थ पूर्वें कह्या था जो आत्माके धर्म तैं मो
क्ष है तिसही कारणकरि कहै है जो हे भव्यजीव हो तुम तिस आत्माही कूं श्रद्धे
प्रतीति करो आचरो मन वचन काय करि ऐसैं करो जाकरि मोक्ष पावो ॥
भावार्थ ॥ जाकै जाणें श्रद्धान करै मोक्ष होय ताहीका जाननां श्रद्धान मो
क्षप्राप्ति करै है तातैं आत्माका जाननां श्रद्धानां सर्व प्रकार उद्यमकरि क
रनां याही तैं मोक्षप्राप्ति होय है तातैं भव्य जीवनिकूं वारवार यहही उपदे
श है ॥ छ ॥ आगैं कहै है बाह्य हिंसादिक क्रिया विनाही अशुद्ध भावतैं तंदु
ल मत्स्य तुच्छ जीव भी सातवैं नरक गया तब अन्य बडे जीवकी कहा क
था ॥ गाथा ॥ मच्छो वि सालिसित्थो असुद्धभावो गओ महाणरयं ॥ इय णाउं
अप्पाणं ॥ भावहि जिणभावणा णिच्चं ॥८८॥ अर्थ हे भव्य जीव तूं देखि सा

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

भा०पा० तिसिद्धकहिए तंदुलनाममत्स्य है सो भी अशुद्धभावभायासैं सातमा न
१८० रक कहिए सातवैं नरक गया इस हेसतैं तो तूं कूं उपदेश करै है अपने
आत्माकूं जाननेकूं जिनभावना निरंतर भाय ॥ भावार्थ ॥ अशुद्धभावके
महात्म्य करि तंदुलमत्स्य अल्पजीव भी सातवैं नरक गया तो अन्य व
डा जीव क्यौं न नरक न जाय तातैं भाव शुद्ध करनेका उपदेश है ॥ अर भा
व शुद्ध अपना परका स्वरूप जानें होय है अर अपना परका स्वरूप जि
नदेवकी आज्ञाकी भावना निरंतर रतायें होय है तातैं जिनआज्ञाकी
भावना निरंतर करना योग्य है ॥ तंदुलमत्स्यकी कथा ऐसें है काकं
दीपुरका राजा सूरसेन था सो मांसभक्षी भया अति लोलपी निरंतर १८
मांसभक्षणका अभिप्राय राखै ताकै पितृप्रिय नामा रसोईदार सो अ

नेक जीवनिका मांसभक्षण करावै ताकूं सर्प डस्या सो मरि करि स्व
यंभूरमण समुद्रमैं महामत्स्य भया ताकै कानविषैं सूरसेन सस्ता
नी मरि करि तंदुलमत्स्य भया तहां महामत्स्यके मुखमैं अनेक जीव
आवैं अर निकसि जाय तब तंदुलमत्स्य तिनिकूं देखि करि विचारै
जो यह महामत्स्य निर्भागी है जो मुखमैं आये जीवनिकूं भखै नाहीं
है मेरा सरीर जो एता वडा होय तो या समुद्रके जीवनिकूं सर्वकूं भ
खता ऐसे भावनिकै पापतैं जीवनिकूं भखै बिना ही सातवैं नरक
गया अर महामत्स्य तो भखणेवाला था सो नरक जाय ही जाया
या तैं अशुद्धभाव सहित बाह्य पाप करना तो नरकका कारन है ही
परंतु बाह्य हिंसादिक पाप कीये बिना केवल अशुद्धभाव भी तिसस

अ॰ पा॰ मान है तातैं भावमैं अशुभध्यान छोडि शुभध्यान शुद्धध्यान करना योग्य है ॥ छ ॥
१८१ इहां ऐसा जाननां जो पहलै राज पाया था सो पूर्वे पुण्य कीया था ताका फल
था पीछें कुभावनितैं नरक गया यातैं आत्मभावना विना केवल पुण्यही मो
क्षका साधन नांही ॥ आगैं कहै है जो भावरहितनिकै बाह्यपरिग्रहका त्या
गादिक सर्व निःप्रयोजन है ॥ भावार्थ ॥ बाहिरसंगच्चाओ गिरिदरिसरिकंदराइ
आवासो । सयलो णाणज्झयणो णिरत्थओ भावरहियाणं ॥ ८९ ॥ अर्थ ॥ जे पुरु
ष भावकरि रहित है शुद्ध आत्माकी भावनांकरि रहित है अर बाह्य आचरण
करि संतुष्ट है तिनिका बाह्यपरिग्रहका त्याग है सो निरर्थक है वहुरि गिरि क
हिए पर्वत दरि कहिए पर्वतकी गुफा सरित कहिए नदीके तट कंदर कंदर क १८१
हिए पर्वतका जलकरि विदार्या स्थानक इत्यादिक विषै आवास कहिए व

सकहिए वसनां निरर्थक है वहुरि ध्यान करना आसन करि मनकूं थापन
नां अध्ययन कहिए शास्त्रका पढनां समस्त निरर्थक है ॥ भावार्थ ॥ बाह्यक्रि
याका फल आत्मज्ञानसहित होय तौ सफल है नातरि सर्व निरर्थक है पुण्य
फल होय तौ ऊ संसारहीका कारण है मोक्षफल नांही ॥ ८९ ॥ आगैं उपदेश क
रै है जो भावशुद्धकै अर्थि इंद्रियादिक वसि करो भावशुद्ध विना बाह्यभेषका
आडंबर मति करै ॥ गाथा ॥ भंजसु इंदियसेणं भंजसु मणमक्कडं पयत्तेण । मा जे
जणरंजणकरणं बाहिरवयवेस मा कुणसु ॥ ९० ॥ अर्थ ॥ हे मुनि तूं इंद्रियनिकी
सेना है ताहि भंजन करि विषयनिमैं रमावै मति ॥ वहुरि मनरूप वंदर है ता
हि प्रयत्नकरि बडा उद्यम करि भंजन करि वसीभूत करि ॥ वहुरि बाह्यव्रतका
भेष लोककूं रंजन करनेंवाला मति धारण करै ॥ भावार्थ ॥ बाह्यमुनिका भेष ले १

अ॰पा॰ करंजन करनेवाला है तातैं यह उपदेश है लोकरंजनतैं किछू परमार्थसिद्धि नां
१८२ हीं तातैं इंद्रियमनके वसीकरनेकूं बाह्य यत्न करै तो श्रेष्ठ है अर इंद्रियमनव
सकीयें विना केवल लोकरंजनामात्र भेषधारनेमैं तौ किछू परमार्थसिद्धि है नां
हीं ॥ छ ॥ आगैं फेरि उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ णवणोकसायवग्गं ॥ मिच्छत्तं चय
सु भावसुद्धीए ॥ चेइयपवयणगुरूणं करेहि भत्तिं जिणाणाए ॥ ९१ ॥ अर्थ ॥ हे
मुनि तूं नव जे हास्य रति अरति शोक भय जुगुप्सा स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंस
कवेद ए नोकषायवर्ग ॥ बहुरि मिथ्यात्व इनिकूं छोडि बहुरि जिनआज्ञातैं चै
त्यप्रवचन गुरु इनिकी भक्ति करि ॥ छ ॥ फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ तित्थयरभासियत्थं
गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं ॥ भावहि अणुदिणु अतुलं विसुद्धभावेण सुयणा १८२
णं ॥ ९२ ॥ अर्थ ॥ बहुरि हे मुनि तू अरहंत भगवाननै कह्या अर गणधरदेव

नि तैं गूंथ्या शास्त्ररूप रचना करी ऐसा श्रुतज्ञान ताहि सम्यक् प्रकार भाव
शुद्ध करि अनुदिन निरंतर भाय कैसा है श्रुतज्ञान अतुल है या बराबरि
अन्य मतका भाष्या श्रुतज्ञान नांहीं है ॥ छ ॥ ऐसैं कीयें कहा होय सो कहै
है ॥ गाथा ॥ पीऊणणाणसलिलं ॥ णिम्महतिसडाहसोसउम्मुक्का ॥ हुंति सिवाल
यवासी तिहुवण ॥ चूडामणी सिद्धा ॥ ९३ ॥ अर्थ ॥ पूर्वोक्त प्रकार भावशुद्धि की
यें ज्ञानरूप जलकूं पीय करि सिद्धि होय है ॥ कैसे है सिद्ध निर्मल कहिए मद्या
न जाय ऐसा तृष्णा तृषा दाह सोष ताकरि रहित है ऐसे सिद्ध होय हैं ज्ञानरूप ज
ल पीयेंका ये फल है ॥ बहुरि कैसे हैं सिद्ध सिवालय कहिए मुक्तिरूप महल ताके वा
सी हैं ॥ लोकके शिखर जिनिका वास है ॥ याही तैं कैसे हैं तीन भुवनके चूडामणि
हैं मुकटमणि हैं ॥ तथा तीन भुवनमैं ऐसा परमानंदरूप अविनाशी सुखकूं भो

अ० पा०
२८३

वैहै ॥ ऐसे भीतीनभवनकेमुकटमणि है ॥ भावार्थ ॥ जो वैराग्य दृढ कीये ज्ञानस्वरूप ज
लपीय तृष्णाका दाह सो बुमिटै है तातैं ऐसे कह्या है ॥ तातें परमानंदस्वरूप सि
द्ध होय है ॥ ७ ॥ आगैं भाव शुद्धि कै अर्थि फेरि उपदेश करै है ॥ ५४ ॥ गाथा ॥ दस
दस दो सुपरीसह ॥ हि मुणि सयलकालकाएण ॥ सुत्तेण अप्पमत्तो संजम
घादं पमुत्तूण ॥ ५४ ॥ अर्थ ॥ हे मुने तू दस दस दो कहिए बाईस जे सुपरीसह क
हिये अतिशय करि सहने योग्य ऐसे परीसह तिनि कूं ॥ सूत्रेण कहिए जैसें जि
नवचन मैं कहे तिस रीति करि निःप्रमादी भया संता संजम का घात निवारि क
रि अर तेरे काय करि सदा काल निरंतर सहि ॥ भावार्थ ॥ जैसैं संयम न बिगडै अ
र प्रमाद का निवारण होय तैसें निरंतर मुनि क्षुधा तृषा आदिक बाईस प २८३
रीसह सहो इनि का सहनें का प्रयोजन सूत्र मैं ऐसा कह्या है जो इनि के सहने

तैं कर्म की निर्जरा होय है अर संयम के मार्ग छूटनां न होय है परिणाम दृढ हो
य है ॥ ७ ॥ आगैं कहै है जो परीसह सहनें मैं दृढ होय तौ उपसर्ग आये भी दृढ र
हे चिगै नांही ताका दृष्टांत दार्ष्टांत कहे है ॥ गाथा ॥ जह पच्छरोण भिज्जई ॥ परि
ट्ठिउ दीहकालमुदएण ॥ तह साहूण विभिज्जई ॥ उवसग्गापरीसहेहिंतो ॥ ५५ ॥
अर्थ ॥ जैसें पाषाण है सो जल करि बहुत काल तिष्ठ्या भी भेदकूं प्राप्त न होय
है तैसैं साधु है सो उपसर्ग परीसहनि करि भितांही च्युत है ॥ भावार्थ ॥ पाषाण
ऐसा कठिन है सो जल मैं बहुत काल रहै तोउ जा मैं जल प्रवेश न करै है ऐ
से साधु कै परिणाम ऐसे दृढ होय है ॥ जो परीसह उपसर्ग आये संयम के प
रिणाम तैं च्युत न होय है अर पूर्वैं कह्या जो संयम का घात जैसे न होय तैसै
परीसह कूं कदाचित संयम का घात होना जानैं तौ जैसें घात न होय तैसें क

भ०पा०
१८४

रै ॥ छ ॥ आगैं परीसह उपसर्ग आयें भावशुद्ध रहैं ऐसा उपाय कहै है ॥ गाथा ॥ भा
वहि अणुवेक्खाउ अवरे पणवीसभावणा भाविभावरहिएण किं पुण बा
हिरलिंगेण कायव्वं ॥ ९६ ॥ अर्थ ॥ हे मुनि तू अनुप्रेक्षा कहिए अनित्य आदि बा
रह अनुप्रेक्षा है तिनिकौं भावि बहुरि अपर कहिए और पांच महाव्रतनिकी
भावनां कही है तिनिकूं भाय भावरहित जो बाह्यलिंग ताकरि कहा कर्त्तव्य
है किछूभी नांही है ॥ भावार्थ ॥ ऐसा कष्ट आये बारह अनुप्रेक्षाका और पची
स भावनांका भावणां वडा उपाय है इनिका बारबार चिंतवन कीये कष्ट
मैं परिणाम विगडै नांही तातैं यह उपदेश है ॥ छ ॥ आगैं फेरि भावशुद्ध राखि
नेंकूं ज्ञानका अभ्यास उपाय कहै है ॥ गाथा ॥ सव्वविरओवि भावहि णवयपय १८४
इं सत्त तच्चाइ जीवसमासाइ मुणि चउदसगुणठाणणामाइं ॥ ९७ ॥ अर्थ ॥

हे मुनि तू सर्व परिग्रहादिकतैं विरक्त भया है महाव्रतनिकरि सहित है तौऊ भाव
विशुद्धि कै अर्थि नव पदार्थ सप्त तत्त्व चउदह जीवसमास चउदह गुणस्थान
इनिके नाम लक्षण भेद इत्यादिककी भावना करि ॥ भावार्थ ॥ पदार्थनिका स्वरू
प चिंतवन करनां भावशुद्धिका वडा उपाय है तातैं यह उपदेश है ॥ इनिका
नाम स्वरूप अन्य ग्रंथनिमैं जाननां ॥ छ ॥ आगै भावशुद्धि कै अर्थि फेरि अ
न्य उपाय कहै है ॥ गाथा ॥ णवविहबंभं पयडहि अब्बंभं दसविहं पमुत्तूण
मेहुणसण्णासत्तो भमिओसि भवण्णवे भीमे ॥ ९८ ॥ अर्थ ॥ हे जीव तूं नव प्रकार
ब्रह्मचर्य है ताहि प्रगट करि भावनिमैं प्रत्यक्ष करि पूर्वै कहा करि दस प्रका
र अब्रह्म है ताहि छोडि करि ॥ यह उपदेस काहेतैं दीया जातैं तूं मैथुनसंज्ञा
जो कामसेवनका अभिलाष ताविषै आसक्त भया अशुद्ध भाव करि इस भी

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टरभाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्

अ॰पा॰ भ्रमयानकसंसाररूपसमुद्रविषै भ्रम्या है ॥ गाथा ॥ यह प्राणी मैथुनसंज्ञाविषै
२८५ आसक्त भया गृहस्थपणां आदिक अनेक उपाय करि स्त्रीसेवनादिक अशुद्धभा
व करि अशुभकार्यनिमैं प्रवर्त्तै है ताकरि इस भयानकसंसारसमुद्रमैं भ्रमे
है ॥ तातैं यह उपदेस जो है दश प्रकार अब्रह्मकूं छोडि नव प्रकार ब्रह्मचार्य
कूं अंगीकार करै तहां दशविध अब्रह्म तौ ऐसे प्रथम तौ स्त्रिका चिंतव
न होय १ पीछै देषनेकी इच्छा होय २ पीछै निश्वास डारै ३ पीछै ज्वर
उपजे ४ पीछै दाह उपजै ५ पीछै कामकी रुचि उपजै ६ पीछै मूर्छा हो
य ७ पीछै उन्माद उपजै ८ पीछै जीवनेंका संदेह उपजै ९ पीछै मरण हो
य १० ऐसें दश प्रकार अब्रह्म है वहुरि नवविध ब्रह्मचर्य ऐसे नव कार २८५
णनितै ब्रह्मचर्य बिगडै है तिनिके नाम स्त्रीसेवनका अभिलाष १ स्त्रीका

अंगका स्पर्श २ पुष्टरसका सेवन ३ स्त्रीकरि संसक्त वस्तुका सेवन सय्य
आदिक ४ स्त्रीका मुख नेत्र आदिकका देषनां ५ स्त्रीका सत्कार पुरस्कार
करना ६ पहलैं स्त्रीका सेवन कीया ताका यादि करनां ७ आगामी स्त्रीसे
वनका अभिलाष करनां ८ मनवांछित इष्ट विषयनिका सेवन ९ कारन है ति
निका वर्जनां सो नव भेदरूप ब्रह्मचर्य है अथवा मन वचन काय कृत अनु
मोदना करि ब्रह्मचर्य पालनां ऐसें भी नव प्रकार कहिए है ऐसें करनां सो भ
भाव शुद्ध होनेंका उपाय है ॥ ९८ ॥ आगैं कहै है जो भाव विनां संसारमैं भ्रमै है ॥
गाथा ॥ भावसहिदो य मुणिणो पावइ आराहणाचउक्कं च । भावरहिदो य मु
णिवर भमइ चिरं दीहसंसारे ॥ ९९ ॥ अर्थ — हे मुनिवर जो मुनि भावसहित है
सो दर्शन ज्ञान चारित्र तप ऐसा आराधनाका चतुष्ककूं पावै है सो मुनि नि

मैं प्रधान है ॥ बहुरि जो भाव रहित मुनि है सो बहुत काल दीर्घ संसार मैं भ्रमै है
॥ भावार्थ ॥ निश्चय सम्यक्त्व शुद्ध आत्मा का अनुभूति रूप श्रद्धान है सो ही भा
व है ऐसे भाव सहित होय ताकै तौ च्यारि आराधना होय है ताका फल अर
हंत सिद्ध पद है ॥ बहुरि ऐसे भाव करि रहित होय ताकै आराधना न होय ता
का फल संसार का भ्रमण है ऐसा जाणि भाव शुद्ध करणां यह उपदेस
है ॥ छ ॥ आगै भाव ही का फल विशेष कहै है ॥ गाथा ॥ पावंति भावसवणा
कल्लाणपरंपराइं सोक्खाइं ॥ दुक्खाइं दव्वसवणा णरतिरियकुदेवजो
णीए ॥ १०० ॥ अर्थ ॥ जे भावश्रमण है भावमुनि है ते कल्याण की परंपरा
मैं ऐसे सुखनि कूं पावै है ॥ बहुरि जे द्रव्यश्रमण है भेषमात्र मुनि है ते तिर्यं
च मनुष्य कुदेव योनि विषै दुःखनि कूं पावै है ॥ भावार्थ ॥ भावमुनि सम्यग्द

र्शन सहित तीर्थंकर पद पाय मोक्ष पावै है ॥ बहुरि जे सम्यग्दर्शन रहित द्रव्यमु
नि है ते मनुष्य तिर्यंच कुदेव योनि पावै है यह भाव के विशेष तैं फल का वि
शेष है ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो अशुद्ध भाव करि अशुद्ध ही आहार कीया तैं दुर्ग
ति ही पाई ॥ गाथा ॥ छादालदोसदूसियमसणं गसिउं असुद्धभावेण ॥ पत्तो
सि महावसणं तिरियगईए अणप्पवसो ॥ १०१ ॥ अर्थ ॥ हे मुनि तैं अशुद्ध भाव
करि छियालीस दोसनि कहिए आहार ग्रास्या खाया ताकारण करि ति
र्यंचगति विषै पराधीन भया संता महान बडा व्यसन कहिए कष्ट ताकौं प्रा
प्त भया ॥ भावार्थ ॥ मुनि आहार करै तो छीयालीस दोष रहित शुद्ध करै है
बत्तीस अंतराय टालै है ॥ चौदह मल रहित करै है सो जो मुनि होय करि
अर सदोष आहार करै तो जानिये या कै भाव भी शुद्ध नांही ताकूं यह

अ०पा०६ उपदेश है ॥ जो मुनि होय तौ दोषसहित अशुद्ध आहार कीया तातैं तिर्यंच गति
१८७ मैं पूर्वै भ्रम्यां कष्ट सहे तातैं अव भाव शुद्ध करि आहार करज्यो फेरि नाही
भ्रमै छीयालीस दोष है सोल है तो उद्गम है ते आहार के उपजने के है ते
श्रावक आश्रित हैं ॥ बहुरि सोल है उत्पादन दोष है ते मुनि के आश्रय है
बहुरि दश दोष एषणा के है ते आहार के आश्रय है ॥ बहुरि च्यारि प्रमा
णादिक है इनिका नांम तथा स्वरूप मूलाचार ग्रंथ तै जाननां ॥ छ ॥ आगै
फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ सचित्तभत्तपाणं गिद्धीए दप्पदो धीय भुत्तूणं पत्तो सि ति
व्वदुक्खं अणादिकाले तं चिंत ॥ १०२ ॥ अर्थ ॥ हे जीव तू दुर्बुद्धी अज्ञानी नय १
संता अति चाहि करता थका अति उद्धतपणा करि सचित्त भोजन तथा पा २८७
न जीवनि सहित आहार पाणी लेकरि अनादि कालतैं लगाय तीव्र दुः

ख पाया ताहि चिंतवन करि विचारि ॥ भावार्थ ॥ मुनिकूं उपदेश करै है।
जो अनादि कालतैं लगाय जेते अज्ञानी रह्या जीव अजीव का स्वरूप न जान्यां ।
तेतै सचित्त जीवनि सहित आहार पांणी करता संसार मैं नीचे नरकादिक का
दुःख पाया यातैं अब मुनि होय करि भाव शुद्ध करि सचित्त आहार पाणी मति करै ॥ ना
तरि फेरि पूर्ववत दुःख भोगवैगा ॥ छ ॥ फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ कंदं बीयं मूलं पुप्फं प
त्तादि किंचि सच्चित्तं असिऊण माणगव्वे भमिदो सि अणंतसंसारे ॥ १०३ ॥ अर्थ
कंद कहिए जमी कंद आदिक बीयं कहिए बीज चणा आदिक अन्नादिक मूल
कहिए आदो मूला गाजर इत्यादिक पुप्फ कहिए फूल पत्र कहिए नागरवेलि
आदिक इनिकूं आदि लेकरि जो किछू सचित्त वस्तु ताहि मान करि गर्व करि भ
क्षण करी ता करि हे जीव तू अनंत संसार के विषै भ्रम्यां ॥ भावार्थ ॥ कंद मूलादि

अष्टपा० कसचित्त अनंतजीवनिकी काय है ॥ तथा अन्य वनस्पति वीजादिक सचित्त
१८८ है तिनिकूं भक्षण कीये तहां प्रथम तौ मान्यकरि जो हम तौ तपस्वी है हमारे घर
वार नांही वनके पुष्पफलादिक खायकरि तपस्या करै है ऐसे मिथ्यादृष्टी तपस्
होय मांन्यकरि खाये तथा गर्वकरि उद्धत होय दोष गिणा नांही स्वछंद हो
य सर्वभक्षी भया ऐसें इनि कंदादिकनिकूं खाय यह जीव संसारमैं भ्रम्या
अव मुनि होय इनिका भक्षण मति करै ऐसा उपदेश है अर अन्यमतके तप
स्वी कंदमूलादि फलफूल षाय आपकूं महंत माने है तिनिका निषेध है ॥
आगे विनय आदिकका उपदेश करै है तहां प्रथम ही विनयकी गाथा क
है है ॥ गाथा ॥ विणयं पंचपयारं पालहि मणवयणकायजोयेण ॥ अविण १८६
यणरा सुविहियं ततो मुत्तिं ण यावंति ॥ १०४ ॥ अर्थ ॥ हे मुनि जा कारण तैं अ

विनीत नर है ते भले प्रकार विहित जो मुक्ति ताहि न पावै है अभ्युदय तीर्थंकरा
दिपद सहित मुक्ति न पावै है ता तैं हम उपदेश करै है जो हस्त जोडनां पगां पडना
आये तैं उठनां साम्हा जानां अनुकूल वचन कहना यह पंच प्रकार विनय अथ
वा ज्ञान दर्शन चारित्र तप अर इनिका धारक पुरुष इनिका विनय करनां ऐ
सें पांच प्रकार विनयकूं तूं मन वचन काय इनि तीनूं योगनि करि पालि ॥ भावार्थ ॥
विनय विनां मुक्ति नांही ता तैं विनयका उपदेश है विनयमैं बडे गुन है ज्ञानकी प्रा
प्ति होय है मान कषायका नाश होय है शिष्टाचारका पालना है कलहका निवारना है
इत्यादि विनयके गुण जानने ता तैं सम्यग्दर्शनादिक करि जे महांन है तिनिका
विनय करनां यह उपदेश है ॥ अर जो विनय विनां जिनमार्ग तैं भ्रष्ट भये वस्त्रादिक
सहित मोक्षमार्ग माननें लगे तिनिका निषेध है ॥ आगैं भक्तिरूप वैयावृत्तका

अ०पा० पदेशहै ॥ गाथा ॥ णियमतिणामहाजस ॥ जहीराणाणिच्चकालम्मि तंकुणाजिणा म
२८८ णिपरंविजावच्चंदसविपय्यं ॥ १०५ ॥ अर्थ ॥ हेमयश हेमुनिजनकिकाराणकरितिस
वैयावृत्यकुंसदाकालअपनीशक्तिकतूरिकरित्तकरि ॥ कैसेजैसें जिनमक्तवि
षतत्परहोयतैसेकैसाहैवैयावृत्यदशविकल्पहैदशभेदरूपहै ॥ वैयावृत्यना
मपरकैदुःखकष्टआयेंटहलबंदगीकरनेंकाहैताकेदशभेदआचार्यउपाध्या
यतपस्वीशैष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञदशभेदमुनिकेहेतिनिका
कीजियेहैतातेंदशभेदकहेहैं ॥ ७ ॥ आगेंअपनेंदोषकुंगुरापासिकहनांऐ
सीगर्हीकाउपदेशकरैहै ॥ गाथा ॥ जंकिंचिकयंदोसंमणवयकायहिंअसुह
भावेण ॥ तंगरहिगुरुसयासंगारवमायंचमलुणं ॥ १०६ ॥ अर्थ ॥ हेमुनिजोकि २८८
छूआपमनवचनकायकरिअशुभभावकरिवतिनामैदोषकीयाहोयत

कूगुरुपासिअपनांगोरवकहियेमहंतपणागर्वछोडिकरिवक्करिमायाकहि
येकपटछोकरिमनवचनकायसरलकरिगर्हीकरिवचनकरिप्रकासि ॥ भाव
र्थ ॥ आपकूंकोईदोषलगायाहोयअरनिकपटहोयगुरुनिकूंनकहेतौव
हेदोषनिवृत्तनहोयतवआपशल्यवानरहेंतौमुनिपदमेंयहवडादोषहै
तातेंअपनांदोषछिपावनांनांहीजैसाहोयतैसासरलबुद्धितेंगुरुनिपा
सिकहनांतवदोषमिटै ॥ यहउपदेशहैकालकेनिमित्ततैंमुनिपदतैंभ्रष्टभये
पीछेगुरुनिपासिप्रायश्चितनलीयातवविपरीतिहोयसंप्रदायमाराचाय्य
ऐसेंविपर्ययगया ॥ ७ ॥ आगेंक्षमाकाउपदेशकरैहै ॥ गाथा ॥ दुज्जणवयण
चडक्कंणिठ्ठुरकडुयंसहंतिसप्पुरिसाकम्ममलणासणठ्ठंभावेणयाणिम्म
मासवणा ॥ १०७ ॥ अर्थ ॥ सत्पुरुषमुनिहैतेदुर्जनकेवचनरूपचपेटजोनिष्ठु

BHAU DAJI MEMORIAL

भ॰ पा॰ १८० रक कहिए कठोर द्यार हित अर कटुक कहिए सुणतैं ही काननिकूं कडा सल
समान लागैं ऐसे नीच पुरुष है ताहि सहै है ते कौन अर्थि सहै है कर्म के नाश हो
नेके अर्थि पूर्वें अशुभ कर्म बांध्या था ताका उदय के निमित्ततैं दुर्जननें क
टुकवचन कह्या आप सुण्यां ताकूं उपशम परिणामतैं सहै है तब अशुभ कर्म
छेदयदे करि गया ॥ ऐसे कटुकवचन सहें कर्मका नाश होय है ॥ ते मुनि सत्पु
रुष कैसे हैं ॥ अपने भावकरि वचनादिक तैं निर्मम तहैं वचन तै तथा मान
कषायतैं अर देहादिकतैं ममत्व के अभावतै दुर्वचन सहै है ॥ तातैं मुनि हो
यकारतैं क्रोध न करनां यह उपदेश है लोकीक मैं भी जे पुरुष है ते दुर्वचन
सुणि क्रोध न करै है तो मुनिकूं तो सहना उचित ही है ॥ जो क्रोध करै है ते कहवेके १८०
तपस्वी है साचे तपस्वी नांही ॥ ७ ॥ आगैं क्षमाका फल कहै है ॥ गाथा ॥ पावं

खवई असेसं खमादूपरिमंडिऊेय मुणिप्पवरो खेयर अमर णराणं पसंसणी।
ओ धुवं होई ॥ १०८ ॥ अर्थ ॥ जो मुनिप्रवर मुनिनि मैं श्रेष्ठ प्रधान क्रोध के अभा
वरूप क्षमा करि मंडित है सो मुनि समस्त पापकूं क्षय करै है बहुरि विद्याधर
देव मनुष्यनि करि प्रशंसा करनें योग्य निश्चय करि होय है ॥ भावार्थ ॥ क्षमा गु
ण बडा प्रधान है जातैं सर्वकै स्तुति करनें योग्य पुरुष होय तहां जे मुनि है तिनि
के उत्तम क्षमा होय है ते तौ सर्व मनुष्य देव विद्याधरनिके स्तुतियोग्य होय ही
य अर तिनिकै सर्व पापका क्षय होय ही य तातैं क्षमा करना योग्य है ऐसा उप
देश है क्रोधी सर्वके निंदने योग्य होय है तातैं क्रोधका छोडना श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥
आगै ऐसा क्षमा गुण जाणि क्षमा करना क्रोध छोडना ऐसें कहै है ॥ गाथा ॥
इय णाऊण खमागुण खमेहि तिविहेण सयलजीवाणं चिरसंचियकोहसि

अ०पा० हिं वसवसमसलिलेण सेंचेह ॥ १०९ ॥ अर्थ ॥ हे मुने हे क्षमा गुण क्षमा है गुण जाकै
१८१ ऐसा मुनि का संबोधन है ॥ इतिक हिए पूर्वोक्त प्रकार क्षमा कूं जाणि अर स
कल जीवनि परि मन वचन काय करि क्षमा करि बहुरि बहुत काल करि
संचय कीया जो क्रोधरूप अग्नि ताहि क्षमारूप जल करि सींच बुझाय ॥ भावा
र्थ ॥ क्रोधरूप अग्नि है सो पुरुष मैं भले गुण है तिनि कूं दग्ध करनें वाला है
अर परजीवनि के घात करने वाला है ता तैं या कूं क्षमारूप जल करि बुझाव
णां अन्य प्रकार यह है बुझै नाही अर क्षमा गुण सर्व गुणनि मैं प्रधान है ॥ ता तैं
यह उपदेश है जो क्रोध कूं छोडि क्षमा करनां ॥ ७ ॥ आगैं दीक्षा कालादिक की
भावनां का उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ दिक्खाकालादीयं भावहि अवियारदंस १८१
णविसुद्धो उत्तमबोहि णिमित्तं असार संसार मुणिऊणं ॥ ११० ॥ अर्थ ॥ हे

मुनि तू दिक्षाकाल आदिक की भावनां करिकै सा भया संता अविचारक
हिए अतीचार रहित जो निर्मल सम्यग्दर्शन ताकरि भया संता पूर्वैं कहा क
रि संसार कूं असार जाणि करि कहा है कैसा अर्थि उत्तम बोधक हिए सम्यग्दर्शन
ज्ञान चारित्र की प्राप्ति ता कै निमित्त ॥ भावार्थ ॥ दीक्षा ले है तब संसार देह भोग
कूं असार जाणि अत्यंत वैराग उपजै है ॥ तैसे ही ताकै आदिशब्द तैं रोगोत्प
त्ति मरण कालादिक जाननां तिनि कालनि मैं जैसे भाव होय है तैसे ही सं
सार कूं असार जाणि विशुद्ध सम्यग्दर्शन सहित भया संता उत्तम बोध जो
जा तैं केवलज्ञान उपजै ता कै अर्थि दीक्षाकालादिक की निरंतर भावनां
करणी ऐसा उपदेश है ॥ ७ ॥ आगैं भावलिंग शुद्ध करि द्रव्यलिंग सेवनें का
उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ सेवहि चउविह लिंगं अब्भंतरलिंग सुद्धिमावण्णो ॥

बाहिरलिंगमकज्जं होइ फुडं भावरहियाणं ॥१११॥ अर्थ॥ हे मुनिवर तूं अभ्यंतर
लिंगकी शुद्ध कहिये शुद्धताकूं प्राप्त भया संता च्यारि प्रकारका बाह्यलिंग है
ताहि सेवन करि जातें जे भावरहित हैं तिनिकै प्रगटपणै बाह्यलिंग अकार्य है
कार्यकारी नांही है ॥भावार्थ॥ जे भावकी शुद्धताकरि रहित हैं अपने आत्मा
का यथार्थ श्रद्धान ज्ञान आचरण जिनिकै नांही है तिनिकै बाह्यलिंग
कछू कार्यकारी नांही है कारण पाय तत्काल बिगडै तातैं यह उपदेश है पह
लै भावकी शुद्धता करि द्रव्यलिंग धारणां सो यह द्रव्यलिं_ग च्यारि प्रकार
कह्या ताकी सूचना ऐसी जो मस्तकका डाढीका मूछाका केशनिका तौं लो
चकरणां तीन चिह्न तौ ए अर चौथा नीचले केश राखणां अथवा वस्त्रका सा
गकेशनिकी लौचकरणां ॥ सरीरका स्नानादिककरि संस्कारकरनाप्र

तिलेखणा मयूरपिछका राखणां ॥ ऐसा नग्नरूप भावविशुद्ध विना हास्यका
ठिकाणा है ॥ अर किछू उत्तम फल भी नांही है ॥ ॥ आगैं कहै हैं जो भाव बिगड
नेके कारण च्यारि संज्ञा है ॥ तिनिकरि संसार भ्रमण होय है यह दिखावै है
॥गाथा॥ आहारभयपरिग्गह मेहुणसण्णाहि मोहिओ सि तुमं ॥ भमिओ संसार
वणे अणाइकालं अणप्पवसो ॥११२॥ अर्थ॥ हे मुने तूं आहार भय मैथुन
परिग्रह ए च्यारि संज्ञा तिनिकरि मोहित भया अनादिकालतैं लगाय पराधी
न भया संता संसाररूप वनविषै भ्रम्या ॥भावार्थ॥ संज्ञा नाम बांछाका चेत रहने
का है सो आहारकी दिशि भयकी दिशि मैथुनकी दिशि परिग्रहकी दिशि प्रा
णीकै निरंतर वांछा चेत रहै है यह जन्मांतरमैं चली जाय है जन्म लेतै ही त
त्काल उघडै है याही निमित्ततै कर्मनिका बंध करि संसारमैं भ्रमै है तातैं मुनि

अ॰पा॰ निकूं यह उपदेश है। जो अवइनि संज्ञानिका अभाव करै॥ छ॥ आगैं कहै है जो
१८३ बाह्य उत्तरगुणांकी प्रवृत्ति भी भावशुद्ध करि करणी॥ गाथा॥ बाहिरसयणत्ता
वण तरुमूलाईणि उत्तरगुणाणि॥ पालहि भावविसुद्धो पूयालाहं ण ईहंतो
११३॥ अर्थ॥ हे मुनिवर तू भाव करि विशुद्ध भया संता पूजा लाभादिक कूं न बा
हता संता बाह्य शयन आतापन वृक्षमूल योग धारणा इत्यादिक उत्तरगुण
हैं तिनि कूं पालि॥ भावार्थ॥ सीतकाल मैं तौ बाह्य खुले सोवना बैठना ग्रीष्मकाल
मैं पर्वत के शिखर सूर्य सन्मुख आतापन योग धरना॥ वर्षाकाल मैं वृक्ष के
मूल योग धरना जहां बूंद वृक्ष परि पड़ैं पीछै भेले होय शरीर परि पड़ैं तहां
किछू प्रासुक का भी संकल्प अर बाधा बहुत है इनिकूं आदि लेकरि उत्तर १८३
गुण हैं तिनिका पालना भी भावशुद्ध करना भावशुद्ध विना करै तौ तत्काल

बिगड़ै अर फल किछू नांही तातैं भावशुद्ध करि करनें का उपदेश है ऐसा
तौ न जानना जो इनिका बाह्य करना निषेध है इनिकौ करनें अर भावशुद्ध कर
ना यह आशय है अर केवल पूजा लाभादिक अपनी महंतता दिखावनें के
अर्थि ही करै तौ किछू भला फल की प्राप्ति नांही है॥ छ॥ आगै तत्व की भावना
करनें का उपदेश करै है॥ गाथा॥ भावहि पढमं तच्चं बिदियं तदियं चउछ पंच
मयं चउछ पंचमयं॥ तियरणसुद्धो अप्पं अणाइणिहणं तिवग्गहरं॥ ११४
॥ अर्थ॥ हे मुने तू प्रथम तत्व जो जीव तत्व ताकूं भाय बहुरि दुतीय तत्व अजी
व तत्व कूं भाय बहुरि तृतीय तत्व आस्रव तत्व ताकूं भाय बहुरि चतुर्थ
तत्व बंध तत्व कूं भाय पंचम तत्व जो संवर तत्व कूं भाय बहुरि त्रिकरण क
हिए मन वचन काय कृत कारित अनुमोदना करि शुद्ध भया संता आत्म १

कूंभायकैसाहैआत्माअनादिनिधनहै॥ बहुरिकैसाहैवर्णादिकहितधर्मद्र
व्यकामइनिकाहरनेवालाहैं॥ भावार्थ॥ प्रथमजीवतत्वकाभावनातौसामा
न्यंजीवदर्शनज्ञानमयीचेतनास्वरूपहैताकीभावनाकरनीपीछेमेरू
ऐसेंआत्मतत्वकीभावनांकरनीबहुरिदूसराअजीवतत्वहैसोसामान्य
अचेतनजडहैतेपुद्गलधर्मअधर्मआकाशकालहैइनिकूंविचारने
पीछेऐसेभावनाकरणीजोएमेनाहीहै॥ बहुरितीसराआश्रवतत्वहैसो
जीवपुद्गलकेसंयोगजन्यतभावहैतेजीवकेअभावतौरागद्वेषमोहहैअ
रजीवपुद्गलकेभावकर्मकाउदयरूपमिथ्याअविरतिकषाययोगएद्रव्य
आश्रवहैतिनिकीभावनाकरनीजोएमेरेहैयहैमेरेरागद्वेषमोहकाभा १८५
वहैतिनिकरिकर्मकावंधहैतिनिमैंसंसारहोयहैतातैतिनिकाकर्त्तान

होनां॥ बहुरिचौथावंधतत्वहैजोमेरागद्वेषमोहरूपपरिणामऊसोतौमे
राचेतनाइनिमैंवंधहैंअरकर्मपुद्गलज्ञानावरणआदिआठप्रकारहोए
वंधेहैतेप्रकृतिस्थितिअनुभागप्रदेशरूपच्यारिप्रकारहोयवंधहै॥ तेपुद्गलहै
सोमेरेप्रदेशनितैएकक्षेत्रअवगाहरूपहोयवंधेहैतेमेरेभावनथापुद्गलकौ
र्मसर्वयहसंसारकाकारणहैसोकूंरागद्वेषमोहरूपनहोनां ऐसैभावनांब
हुरिपांचमातत्वसंवरहैसोरागद्वेषमोहरूपजीवकेभावहैतिनिकानहो
नांदर्शनज्ञानरूपचैतनांभावमैंथिरहोनांयहसंवरहैसोतौअपनाभा
वहैअरपुद्गलकर्मकाआश्रवहोनासोपुद्गलकाभावहैसोयहसंवरतत्व
उपादेयहैयातैंकर्मकीनिर्जराहोयमोक्षहोयहै॥ संसारकाभ्रमणमिटैहै
ऐसैइनिपांचतत्वकाभावनांकरणेमैंआत्मतत्वकीभावनाप्रधानहैता

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

अं०पा० करिकर्मकी निर्जरा होय है मोक्ष होय है तब आत्मा का भाव शुद्ध अनुक्रम तें हो
१८५ नां यह तौ निर्जरा तत्व भया और सर्व कर्म का अभाव होनां यह मोक्ष तत्व भया ऐ
सैं सात तत्व की भावना करणी या ही तें आत्म तत्व का विशेषण कीया जो आ
त्म तत्व कैसा है धर्म अर्थ काम इस त्रिवर्ग का अभाव करै है या की भावनां
तें त्रिवर्ग तें न्यारा चौथा पुरुषार्थ मोक्ष है सो होय है॥ बहुरि यह आत्मा ज्ञान
दर्शनमयी चेतना स्वरूप अनादिनिधन है जाका आदि भी नांही और निधन
कहिए नाश भी नांही बहुरि भावनां नांम बार बार चिंतवन करना अभ्यास
करनां या का है सो मन करि वचन करि काय करि तथा आपकूं करनां अ
न्यकूं करावनां करते कूं भला जाननां ऐसे कृत्रिम शुद्ध करणा शुद्ध करि भाव १८५
नां करणी माया मिथ्या निदान शल्य न राखणी ख्याति लाभ पूजा का आश

नराखणी यह तत्व की भावना का उपदेश है आगे कहै है जो ऐसे तत्व की भा यना वा: ०

वना ऐसे तत्व की भावना करनें तें भाव शुद्ध होय है या का उदाहरण
ऐसा जो स्त्री आदि इंद्रिय गोचर होय तब ता के विषै तत्व विचारणा जो यह स्त्री
है सो कहा है जीव नाम तत्व का एक ही एक पर्याय है अर या का शरीर है सो पु
द्गल तत्व का पर्याय है॥ और यह हाव भाव चेष्टा पुद्गल की है वा विकार तें या
स्त्री कें आत्मा के कर्म का बंध होय है यह विकार या कै न हो तो आश्रव बं
ध होय ता मैं मोकूं विकार रूप न होनां यह संवर तत्व है वणै तो कछु उपदेश
करि या का विकार मेटूं॥ ऐसे तत्व की भावना सें अपना भाव अशुद्ध न होय
ता तैं जो दृष्टि गोचर पदार्थ आवै ता विषै ऐसे तत्व की भावनां जे तैं नां ही तें
तें मोक्ष नांही॥ गाथा॥ जावण भाव ई तच्च जाव ण चिंतेइ चिंतणीयाइं ता
वण पावइ जीवो जर मरण विवज्जियं ठाणं॥ ११५॥ अर्थ॥ हे मुनि जे यह जीव

अ० पा० आदितत्वकूं नाहीपावैहै॥ वहुरिचिंतवनकरनेंयोग्यवस्तुकूंनांहीचिं
१८६ तवैहै तैतैजराअरमरणकरिरहितजोस्थानमोक्षताहिनांहीपावैहै॥
भावार्थ॥ तत्वकीभावनासोपूर्वैंकहिसोअरचिंतवनकरनेंयोग्यधर्मशु
क्लध्यानकाविषयभूतध्येयवस्तुअपनांशुद्धदर्शनज्ञानमयीचेतनाभा
वअरऐसाहीअरहंतसिद्धपरमेष्टीकास्वरूपताकाचिंतवनांणदोऊ
जैतैयाआत्माकैनांहीतैतैसंसारतैनिवृतिहोनांनांहीताते तत्वकीभा
वनांअरशुद्धस्वरूपकाध्यानकाउपायनिरंतरराषणांयहउपदेशहै
॥छ॥ आगैंकहैहै जोपापपुण्यकाअरबंधमोक्षकाकारणपरिणामही
है॥ गाथा॥ पावंहवइअसेसंपुण्णमसेसंचहवइपरिणामापरिणामादो १८६
बंधोमुक्खोजिणसासणेदिट्ठो॥११६॥ अर्थ॥ जोकिछूपापहोयहैतथा

पुण्यहोयहैसोसर्वपरिणामहीतैहोयहै॥ वहुरिबंधअरमोक्षणभीपरिणा
महीतैहोयहै॥ ऐसैजिनेश्वरदेवकेशासनउपदेशमतविषैकह्याहै॥ भा
वार्थ॥ पापपुण्यबंधमोक्षकाकारणपरिणामहीकह्याहै तहांजीवकेमि
थ्यात्वविषयकषायअशुभलेश्यारूपतीव्रपरिणामहोयतिनितैंतोपाप
काआश्रववबंधहोयहै वहुरिपरमेष्टीकीभक्तिजीवनिकीदयाइत्यादिमंद
कषायशुभलेस्यारूपपरिणामहोयहैतिनितैंपुण्यकाआश्रववबंधहो
यहै॥ वहुरिरागादिकभावनितैंरहितशुद्धज्ञानदर्शनरूपपरिणामतैंमोक्षहो
अर यहैशुद्धपरिणामरहितविभावरूपपरिणामतैंबंधहोयहै॥ तहांशुद्धभा
वकैसन्मुखरहनांताकैअनुकूलशुभपरिणामराषनेअरअशुभपरि
णामसर्वथामेटनांयहउपदेशहै॥छ॥ आगैंपापपुण्यकाबंधजैसेभावनि

अं०पा० करि होय है तिनिकूं कहै है ॥ तहां प्रथम ही पापबंधके परिणाम कहै है ॥
१८७ गाथा ॥ मिच्छेत्तह कसायासंजमजोगेहिं असुहलेसेहिं ॥ बंधइ असुहं
कम्मं जिणजिणवयणपरम्मुहो जीवो ॥ ११६ ॥ अर्थ ॥ मिथ्यात्व तथा कषाय
अर असंयम अर योग तिनकैसे अशुभ है लेश्या जिनिमै ऐसे भावनिकरि
यह जीव अशुभ कर्मकूं बांधै है कैसा है जीव अशुभ कर्म बांधै है जिनव
चनतैं पराङ्मुख है सो पापबंध है ॥ भावार्थ ॥ मिथ्यात्वभाव तौ तत्वार्थश्रद्धा
नरहित परिणाम है ॥ बहुरि कषाय क्रोधादिक है अर असंयम परद्रव्य
के ग्रहणरूप भाव त्यागरूप नांही ऐसे इंद्रियनिके विषयनितैं प्रीति जी
वनिकी विराधना सहित भाव है ॥ योग मन वचन कायके निमित्ततैं आ १८७
त्मा प्रदेशनिका चलना है भाव है तेजवती कषाय सहित कृष्ण नी॥

बंध

ल कापोत अशुभलेश्यारूप होय तौ या जीवकै पापकर्मका बंध होय
है तहां पाप करने वाला जीव कैसा है जाकै जिनवचनकी श्रद्धा नांही है
इस विशेषणका यह आशय जो अन्यमतके श्रद्धानीकै जो कदाचित् शु
भलेश्याके निमित्ततैं पुण्यका बंध भी होय है तौ ताकूं पापही मैं गिणिए यज १
तैं एक भव मैं किछु पुण्यका उदय भोगै पीछे बहु पापहीका कारण होय
तातैं परंपरा करि पापही मैं गिणिए अर जो जिनआज्ञामै प्रवर्त्ते है क
दाचित् किंचित् पाप भी बंधै तौ ऊ वह जीव पुण्यजीवनिहीकी पंक्तिमै
गिणिए है मिथ्यादृष्टीकूं पापजीवमैं गिण्या है सम्यग्दृष्टीकूं पुण्यहीमै
गिण्या है ऐसे पापबंधके कारण है ॥ आगें यातैं उलटा जीव है सो सो पु
ण्य बांधै है ऐसें कहै है ॥ गाथा ॥ तव्विवरीउ बंधइ सुहकम्मं भावसुद्धिमा

अ०पा० वणोंदुविहपयारो वंधइ संखेव जिणो णा वज्जरियं ॥११७॥ अर्थ ॥ तिसपूर्वोक्त
१८८ जिनवचनका श्रद्धानी मिथ्यात्वरहित सम्यग्दृष्टी जीव है सो शुभकर्मकूं
बांधे है कैसे जीव भावनिकी जो विशुद्धता ताकूं प्राप्त है ॥ ऐसे दोऊ प्रका
र दोऊ अशुभ शुभ कर्मकूं बांधे है यह संक्षेपकरि जिनदेव कह्या है
॥भावार्थ॥ पूर्वै कह्या जिनवचनतैं पराङ्मुख मिथ्यात्वसहित जीव तिस
तै विपरीत जिनआज्ञाका श्रद्धानी सम्यग्दृष्टी जीव है सो विशुद्धभावभा
वकूं प्राप्त भया शुभकूं बांधे है जातै याकै सम्यक्त्वके महात्म्यकरि ऐसे उ
ज्वलभाव है ताकरि मिथ्यात्वकी लार बंधती पापप्रकृतिनिका अभाव
है कदाचित् किंचित् कोई पापप्रकृति बंधै है तिनिका अनुभाग मंद हो १८८
य है किछू तीव्र पापफलका दाता नांही है तातैं सम्यग्दृष्टी शुभकर्म ही

का बांधनेवाला है ॥ ऐसे शुभ अशुभ कर्म बंधका संक्षेपकरि विधान स
र्वज्ञदेवनैं कह्या है सो जाननां ॥छ॥ आगै कहै है जो हे मुनि तू ऐसी भावना
करि ॥गाथा॥ णाणावरणादीहिंय अठहिं कम्मेहिं वेढिओ य अहं डहिऊ
ण इण्हि पयडेमि अणंतणाणाइ गुणचित्तं ॥११८॥ अर्थ ॥ हे मुनिवर तूं
ऐसी भावना करि जो मैं ज्ञानावरणकूं आदि लेकरि आठ कर्म है ॥ तिनितैं
वेढ्या हौं यातैं इनिकूं भस्मकरि अनंतज्ञानादिक गुणनि स्वरूप चेतनां
कूं प्रगट करूं ॥भावार्थ॥ आपकूं कर्मनिकरि वेढ्या मानै अर तिनिकरि अ
पनै अनंतज्ञानादि गुण आच्छादे मानै तब तिनि कर्मनिका नाश करनां
विचारै तातैं कर्मनिका बंधकी अर तिनिका अभावकी भावना करनेका
उपदेश है अर कर्मनिका अभाव शुद्धस्वरूपके ध्यानतैं होय है सोकार

अ०पा० नैं का उपदेश है कर्म आठ है ते ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनी अंतराए
१९९ ए तौ घातिकर्म हैं इनिकी प्रकृति सैंतालीस है तिनि मैं केवलज्ञानावरण मैं
तौ अनंतज्ञान आछादित है अर केवलदर्शनावरण तैं अनंतदर्शन आ
छादित है अर मोहनीय तैं अनंतसुख प्रगट न होय है अर अंतराय तैं
अनंतवीर्य प्रगट न होय है सो इनिका नाश करनां वहुरि च्यारि अघाति
कर्म हैं तिनि तैं अव्याबाध अर अगुरुलघु सूक्ष्मता अवगाहना प्रगट न हो
य है इनि अघातिकर्मनि की प्रकृति १०१ है तिनि का घातिकर्मनि का ना
श भये स्वयमेव अभाव होय है ऐसें जाननां ॥ छ ॥ आगैं इस कर्मनिका ना
श होनें कूं अनेक प्रकार का उपदेश है ताका संक्षेप करि कहै हैं ॥ गाथा ॥ सील १९९
सहस्स ट्ठारस चउरासी गुणगणाण लक्खाई भावहि अणुदिणु णि

हिलं असप्पलावेण किं बहुणा ॥ १२० ॥ अर्थ ॥ शील तौ अठारह हजार
भेदरूप है ॥ बहुरि उत्तरगुण चौरासी लाख है ॥ तहां आचार्य कहै है जो हे मु
नि बहुत झूठे प्रलापरूप निरर्थक वचननि करि कहा इनि शीलनि
कूं अर उत्तरगुणनि कूं सर्व कूं तू निरंतर भाय ॥ इनिकी भावना चिंत
वन अभ्यास निरंतर राखि इनिकी प्राप्ति होय तैसैं करि ॥ भावार्थ ॥ आत्मा
जीव नामां वस्तु है सो अनंत धर्मस्वरूप है तहां संक्षेप करि याके दोय
परिणति हैं एक स्वाभाविक एक विभावरूप तामैं स्वाभाविक तौ
शुद्धदर्शनज्ञानमयी चेतना परिणाम है अर विभावपरिणाम कर्म के
निमित्त तैं है ॥ ते प्रधानता करि मोहकर्म कै निमित्त तैं भये संक्षेपरूप मिथ्या
त्व राग द्वेष है तिनिके विस्तार करि अनेक भेद है ॥ बहुरि अन्य कर्म के

MEMORIAL

उदय करि विभाव होय है तिनिपो मुख्य प्रधान नाहीं तातें उपदेश अपे-
क्षा तैं गौण है ॥ ऐसें शील अठारह हजार गुण स्वभाव विभाव परिणामनि
तिनिके भेद हैं भेद रूप करि कहे हैं ॥ तहां शील की तौ दोय प्रकार प्ररू-
पणा है । एक तौ स्वद्रव्य के विभाव अपेक्षा है अर स्त्री के संसर्ग की अपेक्षा
है तहां परद्रव्य का संसर्ग मन वचन काय करि होय अर कृत कारित अ-
नुमोदना करि होय सो नव करण इनि कूं परस्पर गुणें नव भेद होय ॥ ब-
हुरि आहार भय मैथुन परिग्रह ए च्यारि संज्ञा तें गुणें छतीस होय ॥
बहुरि पंच इंद्रियनि के निमित्त तें विषयनि का संसर्ग होय है तिनिकी प्र-
वृत्ति का अभाव रूप पांच इंद्रियनि करि छतीस गुणें एक सौ असी हो-
य ॥ बहुरि पृथ्वी अप तेज वायु प्रत्येक साधारण ए तौ एकेंद्रिय अर

कू

द्वीइंद्रिय त्रीइंद्रिय चौइंद्रिय पंचेंद्रिय ऐसें दश भेद रूप जीवनि का संसर्ग
इनि की हिंसा रूप प्रवर्त्तने तें परिणाम विभाव रूप होय है सो न करणा ऐसें
एक सौ असी तें दश करि गुणें अठारासें होय ॥ बहुरि क्रोधादि कषाय
असंयम परिणाम तें परद्रव्य संबंधी विभाव परिणाम होय है ॥ तिनि
के अभाव रूप दश लक्षण धर्म है तिनि तें अठारह हजार भेद होय है ऐसें
परद्रव्य के संसर्ग रूप कुशील के अभाव रूप शील के अठारह हजार
भेद हैं इनिकें पहलैं परम ब्रह्मचर्य होय है ॥ ब्रह्म कहिए आत्मा ता विषै
प्रवर्त्तनां रमनां ताकूं ब्रह्मचर्य कहिए है ॥ बहुरि स्त्री के संसर्ग की अ-
पेक्षा ऐसें है स्त्री दोय प्रकार तहां अचेतन स्त्री तौ काष्ठ पाषाण लेप
करि चित्राम ए तीन प्रकार मन अर काय इनि दोय करि संसर्ग होय

अ०पा० इहां वचन नांही तातैं दोयकरि गुणें छह होय बहुरि कृतकारित अ-
२०१ नुमोदना करि गुणें अठारह होय बहुरि पांचइंद्रियनि करि गुणें निवै
होय बहुरि द्रव्य भाव करि गुणें एकसो असी होय बहुरि क्रोध मान माय
लोभ इनि च्यारि कषायनि करि गुणें सातसै वीस होय । बहुरि चेतन
स्त्री देवी मनुष्यणी तिर्यंची ऐसै तीन तिनिकूं मन वचन काय इनि ती-
नतैं गुणें नव होय तिनिकूं कृत कारित अनुमोदनातैं गुणें सताईस
होय तिनिकूं पांच इंद्रियनितैं गुणें एकसो पैंतीस होय तिनिकूं द्रव्य
भाव इनि दोयकरि गुणें दोयसै सत्तरि होय तिनिकूं च्यारि संज्ञातैं गु-
णें एक हजार असी होय इनिकूं अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण २०१
संज्वलन क्रोध मान माया लोभ इनि सोलह कषायनितैं गुणें सतरा

हजार दोयसैं असी होय है ॥ ऐसैं अचेतन स्त्री के सातसै वीस मिलायें अठारह ह-
जार होय है ऐसैं स्त्री के संसर्गतैं विकार परिणाम होय ते कुसील है इनिका अभा-
वरूप परिणाम ते शील है याहीकूं ब्रह्मचर्य संज्ञा है ॥ चौरासी लाख उत्तरगुण ऐ-
सैं है जो आत्माके विभाव परिणामनि के बाह्य कारणनि की अपेक्षा लेइ हौ है ति-
तिके अभावरूप गुणनिके भेद है ॥ तिनि विभावनिका संक्षेप करि भेदनि
की गणना ऐसैं हिंसा १ अनृत २ स्तेय ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मा-
न ७ माया ८ लोभ ९ जुगुप्सा १० भय ११ अरति १२ रति १३ मनोदुष्टत्व १४
वचनदुष्टत्व १५ कायदुष्टत्व १६ मिथ्यात्व १७ प्रमाद १८ पैशून्य १९ अज्ञान
२० इंद्रियनिका अनिग्रह २१ ऐसैं इकईस दोष है तिनिकूं अतिक्रम व्यतिक्रम
अतिचार अनाचार इनि च्यारितैं गुणें चौरासी होय । बहुरि पृथ्वी अप तेज वायु

ग्रं०पा० प्रत्येकसाधारणएतौथावरएकेंद्रियजीवअरविकलत्रय३ पंचेंद्रिय१ ऐसे।
२०२ जीवनिकेदशभेदतिनिकापरस्परआरंभतैंघातहोतैंपरस्परगुणेंसौहोयतितिनि
तैंचोरासीकूंगुणेंचोरासीहोयबहुरितिनिकूंदशशीलविराधनातैंगुणेंचौरासी सें
हजारहोयतितिनिकेदशनाम स्त्रीसंसर्ग १ पुष्टरसभोजन २ गंधमाल्यकाग्रहण ३
शयनआसनसुंदरकाग्रहण ४ भूषणकामंडन ५ गीतवादित्रकाप्रसंग ६ ध
नकासंप्रयोग ७ कुशीलकासंसर्ग ८ राजसेवा ९ रात्रिसंचरण १० एदशशी
लविराधनाहै बहुरितिनिकूंआलोचनाकेदशदोषहैजोगुरुनिपासिलगेदोष
कीआलोचनाकरैसोसरलहोयनकरैंकिछूशल्यराखैंताकेदशभेदकीयेंहैति
नितैंगुणेंआठलाषचालीसहजारहोयहैं बहुरिआलोचनकूंआदिदेप्राय २०२
श्चितकेभेदहैंतितिनितैंगुणेंचौरासीलाषहोयहैंसोसर्वव्रतदोषनिकाभेदहै। इनि

काअभावतैंगुणहै॥ इनिकीभावनाराखैंचिंतवनअभ्यासराखैइनिकीसंपूर्णप्र १
प्तिहोनेंकाउपायराखैं ऐसैइनिकीभावनाकाउपदेशहैआचार्यकहैहैजोबार
बारबहुतवचनकेप्रलापकरितौकिछूसाध्यनाहीजेकिछूआत्माकेस्वभावकी
प्रवृत्तिकेव्यवहारकेभेदहैतिनिकूंगुणसंज्ञाहैतिनिकीभावनाराखणी। बहुरि
इहांएताऔरजाननाजोगुणस्थानचौदहकहेहैंतिसिपरिपाटीकरिगुणदोषनिका (
विचारहै तहांमिथ्यात्वसासादनमिश्रइनितीनगुणस्थाननिमैंतोविभावपरिणा
महीहैतहांतोगुणकाविचारहीनांही। बहुरिअविरतिदेशविरतिआदिमेंगुणका
एकदेशआवैहैतहांअविरतमेंमिथ्यात्वअनंतानुबंधीकषायकेअभावरूपगुण
काएकदेशआवैहैतहांअविरतमेंमिथ्यात्वअनंतानुबंधीकषायकेअभावरू
पगुणकाएकदेशसम्यक्त्वअरतीव्ररागद्वेषकाअभावरूपगुणआवैहै। बहुरिदे

अ०पा० शविरतमैंकिछुव्रतकाएकदेशआवैहैअरप्रमत्तमैंमहाव्रतरूपसामायिकचारित्र
२०३ काएकदेशआवैहैजातैंसंसारदेहसंबंधीतौरागद्वेषतहांनांहीपरंतुधर्मसंबंधी
रागहैअरसामायिकरागद्वेषकाअभावकानामहैतातैंसामायिककाएकदेशही
कहिये॥अरइहांस्वरूपकैसन्मुखहोनेविषैंक्रियाकांडकेसंबंधतैंप्रमादहैता
तैंप्रमत्तनामदीयाहै॥बहुरिअप्रमत्तविषैंस्वरूपसाधनेविषैंप्रमादतौनांहीपरं
तुकिछुस्वरूपकेसाधनेकाव्यक्तरागहैतातैंतहांभीसामायिककाएकदेशक
ह्या॥बहुरिअपूर्वकरणअनिवृत्तिकरणविषैंरागव्यक्तनांहीअव्यक्तकषा
यकासद्भावहैतातैंसामायिकचारित्रकीपूर्णताकही॥बहुरिसूक्ष्मसांपरायहैसो
अव्यक्तकषायभीसूक्ष्मरहिगईतातैंयाकानामसूक्ष्मसांपरायदीयाबहुरि २०३
६ उपशांतमोहक्षीणमोहविषैंकषायकीअभावहीहैतातैंजैसाआत्माकामोहके

विकाररहितशुद्धस्वरूपथाताथौकाअनुभवभयातातैंतहांयथाख्यातचारित्र
नामपाया॥ऐसामोहकर्मकेअभावकीअपेक्षातौतहांहीउत्तरगुणनिकीपूर्ण
ताकहियेपरंतुआत्माकास्वरूपअनंतज्ञानादिस्वरूपहै॥सोघातिकर्मकाना
शभयेअनंतज्ञानादिस्वरूपहै॥सोघातिकर्मकानाशभयेअनंतज्ञानादिप्रगट
होयतबसयोगकेवलीविषैंकहिएतहांभीकिछुयोगनिकीप्रवृत्तिनैंतैंज्ञाना
दिप्रगटहैयातैंअयोगकेवलीचौदमागुणस्थानहैतहांयोगनिकीप्रवृत्तिमिटिअ
वस्थितआत्माहोयजायहैतबचौरासीलाखउत्तरगुणनिकीपूर्णताकहिए॥ऐ
सेगुणस्थाननिकीअपेक्षाउत्तरगुणनिकीप्रवृत्तिविचारणी।एबाह्यअपेक्षा
भेदहैअंतरंगअपेक्षाविचारिएतबसंख्यातअसंख्यातअनंतभेदहै॥ऐसे
जाननां॥६॥आगैंभेदनिकाविकल्पतैंरहितहोयध्यानकरनेंकाउपदेशक

अ० पा० रेहै ॥ गाथा ॥ झायहि धम्मं सुक्कं अट्ट रउद्दं च झाण मुत्तूणं ॥ रुद्दट्ट झाइयाइं इमेण
२०४ जीवेण चिरं कालं ॥ १२१ ॥ अर्थ ॥ हे मुने तू आर्त्तरौद्र ध्यान कूं छोडि अर धर्म शुक्ल
ध्यान है तिनि ही ध्याय ॥ जातैं रौद्र ध्यान तौ या जीव नैं अनादितैं लगाय बहुत अर आर्त्त
काल ध्याये ॥ भावार्थ ॥ आर्त्तरौद्र ध्यान तौ अशुभ है संसार के कारण है तहां ए दो १
ऊ ध्यान तौ जीव कै विना उपदेश ही अनादितैं प्रवर्त्तै है तातैं तिनि कूं तौ
छोडने का उपदेश है ॥ बहुरि धर्म शुक्ल ध्यान है ते स्वर्ग मोक्ष के कारण है इनि
कूं कबहू ध्याये नाही तातैं तिनि कूं ध्यावने का उपदेश है तहां ध्यान का स्वरूप ए
काग्रचिंता निरोध कह्या है तहां धर्मध्यान में तौ धर्मानुराग का सद्भाव है सो धर्म
के मार्ग के कारण विषै राग सहित एकाग्रचिंतानिरोध होय है तातैं शुभ राग के २०४
निमित्त तैं पुण्य बंध भी होय है अर विशुद्धता के निमित्त तैं पाप कर्म की निर्ज

रा भी होय है ॥ बहुरि शुक्ल ध्यान में आठमैं नवमैं दशमैं गुणस्थान तौ अव
क्त राग है तहां अनुभव अपेक्षा उपयोग उज्वल है तातैं शुक्ल नाम पाया
है ऊपरि के गुणस्थाननि में रागकषाय का अभाव ही है तातैं सर्वथा ही उप
योग उज्वल है तहां शुक्ल ध्यान युक्त ही है तहां एता विशेष और है जो उप
योग का एकाग्रपणा रूप ध्यान की स्थिति अंतर्मुहूर्त्त की कही है तिस अपे
क्षा तेरमें चौदमें गुणस्थान ध्यान का उपचार है अर योग क्रिया के थंभन की
अपेक्षा ध्यान कह्या है ॥ यह शुक्ल ध्यान कर्म की निर्जरा करि जीव कूं मोक्ष
प्राप्ति करै है ऐसैं ध्यान का उपदेश जानना ॥ ७ ॥ आगैं कहै है जो यह ध्यान
भावलिंगी मुनि के मोक्ष करै है ॥ गाथा ॥ जे के वि दव्वसवणा इंदियसुह आ
उला ण छिंदंति ॥ छिंदंति भावसवणा झाणकुठारेहिं भवरुक्खं ॥ १२२ ॥ अर्थ ॥

जे केई द्रव्यलिंगी श्रमण है ते तै इंद्रियसुखविषै व्याकुल है तिनिकै यह धर्मशु
क्लध्यान नाही होय है॥ अर जे भावलिंगी मुनि है ते ध्यानरूप कुठार करि संसा
ररूप वृक्षकूं काटै है॥ भावार्थ॥ जे मुनि द्रव्यलिंग तौ धार्या है परंतु परमार्थसुखका ।
अनुभव जिनिकै न भया तातैं इसलोक परलोकविषै इंद्रियनिका सुखही
कूं चाहै है तपश्चरणादिक भी याही अभिलाषातै करै है तिनिकै धर्मशुक्ल
ध्यान काहेतैं होय न होय॥ बहुरि जिनिमैं परमार्थसुखका आस्वाद लीया॥
तिनिकूं इंद्रियसुख दुःख भास्या तातैं परमार्थसुखका उपाय धर्मशुक्लध्यान है
ताकूं करि संसारका अभाव करै है तातैं भावलिंगी होय ध्यानका अभ्यासक
रनां॥ ॥ आगें इसही अर्थकूं दृष्टांतकरि दृढ करै है॥ गाथा॥ जह दीवो गब्भ २०५
हरे॥ मारुयबाहाविवज्जिओ जलइ॥ तह रायानिलरहिओ झाणपईवो विप

ज्जलइ॥ १२३॥ अर्थ॥ जैसैं दीपक है सो गर्भगृह कहिये जहां पवनका संचार नां
ही ऐसा मध्यका घर ताविषै पवनकी बाधाकरि रहित निश्चल भया उज्वलै
है उद्योत करै है॥ तैसैं अंतरंग मनविषै रागरूपी पवनकरि रहित ध्यानरू
प दीपक भी उज्वलै है उद्योत करै है एकाग्र होय बहरै है आत्मरूपकूं प्रकासै
है॥ भावार्थ॥ पूर्वै कह्या था जो इंद्रियसुखकरि व्याकुल है तिनिकै शुभध्यान न
होय है ताका यह दीपकका दृष्टांत है जहां इंद्रियनिके सुखविषै जो राग सो
ही नई पवन सो विद्यमान है तिनिकै ध्यानरूपी दीपक कैसे निर्बाध उद्योत
करै न करै अर जिनिकै यह रागरूप पवन बाधा न करै तिनिकै ध्यानरूप
दीपक निश्चल ठहरै है॥ ॥ आगें कहै है जो ध्यानविषै परमार्थ होय शु
द्ध आत्माका स्वरूप है तिस स्वरूपरूप तथा तिस स्वरूपके आराधनेंविषै नायक

अ॰पा॰ अथ ध्यान पंचपरमेष्ठी तिनिकूं ध्यावणां यह उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ झायहि पं-
२०६ च विगुरवे मंगलचउसरणलोयपरियरिए णरसुरखेयरमहिए आराह-
णणायगे वीरे ॥ १२४ ॥ अर्थ ॥ हे मुनि तूं पंचगुरु कहिए पंचपरमेष्ठी है तिनहीं ध्या-
य इहां अपि शब्द है सो शुद्धात्मस्वरूपके ध्यानकूं सूचै है ॥ ते पंचपरमेष्ठी
कैसे हैं ॥ मंगल कहिए पापका गालन अथवा सुखका देना अर चउसरण
कहिए च्यारि सरण अलोक कहिए लोकके प्राणी तिनिकरि अरहंत सिद्ध
साधु केवलीप्रणीत धर्म परिकरित कहिए परवारित है युक्त है ॥ बहुरि
नर सुर विद्याधर तिनिकरि सहित है पूज्य है याहीतैं लोकोत्तम कहे है ॥ बहुरि
आराधनाके नायक हैं बहुरि वीर है कर्मनिकूं सुभट है तथा विशिष्ट लक्ष्मी २०६
कूं प्राप्त है तथा दे है ऐसे पंच परमगुरुकूं ध्याय ॥ भावार्थ ॥ इहां पंचपरमेष्ठी

कूं ध्यावनां कह्या तहां ध्यानविषै विघ्नके निवारने वाले च्यारि मंगलरूप कहे
ते एही है ॥ बहुरि च्यारि शरण अर च्यारि लोकोत्तम कहे है ॥ तेभी इनिहीकूं कहे है
इनि सिवाय प्राणीकूं अन्य शरण रक्षा करनें वाला भी नहीं है अर लोकविषै उ-
त्तमभी एही है ॥ बहुरि आराधना दर्शन ज्ञान चारित्र तप च्यारि है ताके नायक
स्वामी भी एही है ॥ कर्मनिकूं जीतनें वाले भी एही है तातैं ध्यानके कर्त्ताकूं इनिका
ध्यान श्रेष्ठ है ॥ शुद्धस्वरूपकी प्राप्ति इनहीके ध्यानतैं होय है तातैं यह उपदेश
है ॥ ॐ ॥ आगैं ध्यान है सो ज्ञानका एकाग्र होना है सो ज्ञानका अनुभवनका उप-
देश करै है ॥ गाथा ॥ णाणमयविमलसीयलसलिलं पाऊण भविय भावेण
वाहिजरमरणवेयणडाहविमुक्का सिवा होंति ॥ १२५ ॥ अर्थ ॥ भव्य जीव है ते ज्ञान-
मयी निर्मल सीतल जल है ताहि सम्यक्त्व भाव करि सहित पायकरि अर व्याधि

अ० पा०
२०७

स्वरूप जो जरा अर मरण ताकी वेदना पीडा ताहि नष्ट करि मुक्त कहिए संसारतैं
रहित सिव कहिये परमानंद स्वरूप होय है ॥ भावार्थ ॥ जैसैं निर्मल अर शीतल कैं
औसें जलके पीये पित्तका दाह रूप व्याधि मिटै है ॥ अर शाता होय है तैसैं यह ज्ञा
न है सो जब रागादि मनसैं रहित निर्मल होय अर व्याकुलता रहित शांत रू
प दाह वेदना मिटि जाय ॥ अर संसार तैं निवृत्त होय सुखस्वरूप होय तातैं भ
व्य जीवनिकूं यह उपदेश है जो ज्ञानमैं लीन होय ॥ ॥ आगैं कहै है जो ध्या
नरूप अग्नि विकरनरूप अग्नि करि संसारका बीज आठ कर्म ताकूं बारै है दग्ध
भये पीछे फेरि संसार न होय है यह बीज भावमुनिकै दग्ध होय है ॥ गाथा ॥ जह बी
यम्मिय दड्ढे ण वि रोहइ अंकुरो य महिवीढे तह कम्मबीयदड्ढे भवंकुरो भाव ॥ २०७
सवणाणं ॥ १२६ ॥ अर्थ ॥ जैसैं पृथ्वीके स्थल विषै बीज दग्ध होते संतै तिसका अंकु

र है सो फेरि नांही ऊगै है ॥ तैसै ही भावलिंगी श्रमण है तिनिकै संसारका कर्मरूप बी
ज दग्ध होय जाय है यातैं संसाररूप अंकुरा फेरि नाही होय है ॥ भावार्थ ॥ संसारका बी
ज ज्ञानावरणादिक कर्म है सो कर्म भावश्रमणकै ध्यानरूप अग्नि करि दग्ध होय
जाय है तातै फेरि संसाररूप अंकुरा काहे तै होय नांही होय ॥ तातैं भावश्रमण हो
य धर्म शुक्लध्यान करि कर्मका नाश करना योग्य है यह उपदेश है ॥ कोई सर्वथा ए
कांती अन्यथा कहै है जो कर्मका अनादि है ताका अंत भी नांही होय ताका यह नि
षेध भी है बीज अनादि है सो एकवार दग्ध भये पीछे फेरि न ऊगै तैसैं जाननां ॥ ॥ आ
गैं संक्षेप करि उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ भावसवणो वि पावइ सुक्खाइं दुहाइं दव्वस
वणो य । इय णाउं गुणदोसे भावेण य संजुदो होहि ॥ १२७ ॥ अर्थ ॥ भावश्रमण तो सु
खनिकूं पावै है ॥ बहुरि द्रव्यश्रमण है सो दुःखनिकूं पावै है ऐसैं गुण दोषकूं जाणि

भा० पा० हे जीव तूं भाव करि संयमी होऊ ॥ सम्यग्दर्शन सहित तो भावश्रमण होय है सो
२०८ संसार का अभाव करि सुखनिकूं पावै है अर मिथ्यात्व सहित द्रव्यश्रमण भेष
मात्र होय है सो संसार का अभाव न करि सकै है ता तैं उपदेश करि है जो दोऊ १
गुणदोष जाणि भावसंयमी होनां योग्य है यह सर्व उपदेश का संक्षेप है ॥ छ ॥ फेरि
भी याका अर्थरूप संक्षेप करि कहै है ॥ गाथा ॥ तित्थयरगणहराइं अब्भुदयप
रंपराइं पावंति भावसहिया संखेवे जिणेहि वज्जरियं ॥१२८॥ अर्थ ॥ जे भाव सहि
त मुनि है ते अभ्युदय सहित तीर्थंकर गणधर आदि पदवी के सुख तिनिकूं पा
वै है यह संक्षेप करि कह्या है ॥ भावार्थ ॥ तीर्थंकर गणधर इंद्र चक्रवर्ति आदि पद
वी के सुख बड़े अभ्युदय सहित है तिनि हि भावसम्यग्दृष्टी मुनि है ते पावै है यह सर्व २०८
उपदेश का संक्षेप करि उपदेश कह्या है ता तैं भाव सहित मुनि होना योग्य है ॥

आगें आचार्य कहै है जो जे भावश्रमण है ते धन्य है तिनिकूं हमारा नमस्का
र होऊ ॥ गाथा ॥ ते धण्णा ताण णमो दंसणवरणाणचरणसुद्धाणं ॥ भावसहिया
ण णिच्चं तिविहेण पणट्ठमायाणं ॥१२९॥ अर्थ ॥ आचार्य कहै है जो जे मुनि
सम्यग्दर्शन श्रेष्ठ विशिष्ट ज्ञान अर निर्दोष चारित्र इनि करि शुद्ध है या ही तैं भा
व करि सहित है ॥ बहुरि नष्ट भई है माया कहिए कपट परिणाम जिनकै ऐसे
है ते धन्य है तिनि कै अर्थि हमारा मन वचन काय करि सदा नमस्कार होऊ ॥
भावार्थ ॥ भावलिंगीनि मैं दर्शन ज्ञान चारित्र करि जे शुद्ध है तिनि की आचार्य
कै भक्ति उपजी है ता तैं तिनिकूं धन्य कहि कहि करि नमस्कार कीया है सो
युक्त है जिनिकै मोक्षमार्ग विषै अनुराग है तिनि मैं मोक्षमार्ग की प्रवृत्ति
मैं प्रधानता दीखै तिनिकूं नमस्कार करै ही करै ॥ छ ॥ आगें कहै है जो भाव

अ॰पा॰
२०९

श्रमण है ते देवादिकी कऋद्धि देखि मोह कूं प्राप्त न होय है ॥ गाथा ॥ इड्ढिमतु
लं विउव्विय किंणरकिंपुरिस अमरखयरेहिं तेहिं वि ण जाइ मोहं जिण
भावणभाविउ धीरो ॥१३०॥ अर्थ ॥ जिनभावना जो सम्यक्त्व भावना ताकरि वा
सित जो जीव है सो किंनर किंपुरुष देव कल्पवासी देव अर विद्याधर
तिनिकरि विक्रियारूप विस्तारी जो अतुल्य ऋद्धि तिनिकरि मोह कूं प्राप्त ना
होय हैं । जातें कैसा है सम्यग्दृष्टी जीव धीर है दृढबुद्धि है निःशंकित आदि
अंग का धारक है ॥ भावार्थ ॥ जिसकै जिन सम्यक्त्व दृढ है तिसकै संसार की ऋ
द्धि तृणवत है परमार्थ सुख ही की भावना है विनाशीक ऋद्धि की वांछा काहे
कूं होय ॥छ॥ आगें इसही का समर्थन है जो ऐसी ऋद्धि ही न चाहै तो अन्य सं २०९
सारीक सुख की कहा कथा ॥ गाथा ॥ किं पुण गच्छइ मोहं णरसुरसुहाण

अप्पसाराणं । जाणंतो पस्संतो चिंतंतो मोक्खमुणिधवलो ॥१३१॥ अर्थ ॥ स
म्यग्दृष्टी जीव पूर्वोक्त प्रकार की ऋद्धि ही कूं न चाहै तो मुनिधवल कहिए मु
नि प्रधान है सो अन्य जे मनुष्य देवनि के सुख भोगादिक जिनि मैं अल्पसार ऐ
से तिनि विषै कहा मोह कूं प्राप्त होय कैसा है मुनिधवल मोक्ष कूं जाणता है तिस ही
की तरफ दृष्टि है तिसि ही का चितवन करता है ॥ भावार्थ ॥ जो मुनि प्रधान है ति
निकी भावना मोक्ष के सुखनि मैं है ते वडी वडी देव विद्याधरनि की फैलाई वि
क्रिया ऋद्धि विषैं ही लालसा न करै तौ किंचितमात्र विनाशीक जे मनुष्य दे व
निका भोगादिक का सुख तिनि की वांछा कैसें करै न करै ॥छ॥ आगै उपदेश
करै है जो जेतै जरा आदिक न आवै तेतै आप का हित करै ॥ गाथा ॥ उत्थरइ जा
ण जरओ रोयग्गी जाण डहइ देहउडिं । इंदियबलं ण वियलइ ताव तुमं कुणहि

MEMORIAL

अ०पा० अप्पहियं ॥१३२॥ अर्थ॥ हे मुने जेते तेरै जरा रूप पण न आवै॥ वहुरि रोगरूप अ-
२२० ग्नि तेरै देहरूप कुटीकूं जेते दग्ध न करै॥ वहुरि जेते तेरै इंद्रियनिका बल न घ-
टै तेते अपना हित कूं करि॥ भावार्थ॥ वृद्ध अवस्था मैं रोगनि करि देह जरजरा हो-
य इंद्रिय क्षीण पडै तब असमर्थ भया इसलोक के कार्य उठना बैठनादिक भी
न करि सकै तब परलोक कूं संबंधी तपश्चरणादिक तथा ज्ञानाभ्यास स्वरूप
का अनुभवनादिक कार्य कैसें करैगा तातैं यह उपदेश है॥ जेतैं सामर्थ्य है तेतै
अपना हितरूप कार्य करि ले॥ ७॥ आगैं अहिंसा धर्म का उपदेश करै है॥ गा-
था॥ छज्जीवछडायदणं णिच्चं मणवयणकायजोएहिं। कुण दयपरिहर मु-
णिवर भाविअपुव्वं महासत्तं ॥१३३॥ अर्थ॥ हे मुनिवर तू छह काय के जीवनिकी २२०
दया करि॥ वहुरि छह अनायतन कूं परिहर छोडि॥ कैसें छोडि मनवचनका-

य के योगनिकरि छोडि॥ वहुरि अपूर्व जो पूर्वैं न भाया ऐसा महासत्व कहि-
ये सर्व जीवनि मैं व्यापक महासत्व चेतना भाव ताहि भाय॥ भावार्थ॥ अना-
दि कालतैं या जीवनै जीव का स्वरूप न जाण्या तातै जीवनिकी हिंसा करी तातैं चेतनास्वरूप
यह उपदेश है जो अब जीव आत्मा का स्वरूप जाणि छह काय के जीवनि-
की दया करि॥ वहुरि अनादि ही तैं आप्त आगम पदार्थ का अर इनिका से-
वने वाले का स्वरूप जाण्या नाहीं तातैं अनायतन जे मोक्षमार्ग के ठिकाणे नं-
हीं तिनि कौं भले जाणि सेवन कीया तातैं यह उपदेश है जो अनायतन का
परिहार करि जीवका स्वरूप अर स्वरूप का उपदेशक दोऊ ही पूर्वैं तैं
जाणे नाहीं भाया नाहीं तातैं अब भाय ऐसा उपदेश॥ ७॥ आगैं कहै है
जो जीवका तथा उपदेश करने वाला का स्वरूप जाण्यां विना सर्व जीव-

अ० पा० निकेप्राण निका आहार कीया ऐसे देषावै है ॥गाथा॥ दसविहपाणाहारो अ
२११ णंतनवसायरे भमंतेण ॥ भोयसुहकारणट्ठं कदो य तिविहेण सयलजीवाणं ॥ १
३७ ॥अर्थ॥ हे जीव तैं अनंत भवसार मैं भ्रमते संकल त्रसथावर जीवनिका
दशविध प्राणनिका आहार भोगसुखके कारणकै अर्थि मनवचनकाय करि
कीया ॥भावार्थ॥ अनादिकालतें जिनमतका उपदेश विना अज्ञानी भया तैं त्रस
थावर जीवनिके प्राणनिका आहार कीया तैं अव जीवनिका स्वरूप जाणि जी
वनिकी दया पालि ऐसा शिक्षा यहो दिये यह उपदेश है ॥ ३॥ फेरि कहै है ऐसें प्रा
णीनिकी हिंसा करि संसारमै भ्रमिकरि दुःख पाया ॥गाथा॥ पाणिवहेहि महा १
जस चोरासीकरकजोणिमज्झंमि उप्पजंतमरंतो पत्तोसि निरंतरं दुक्खं ॥ १३४ २११
॥अर्थ॥ हे मुने हे महायश तैं प्राणीनिके के घातकरि चौरासी लाषयोनि

कैमध्य उपजतैं मरतैं निरंतर दुःखकूं पाया ॥भावार्थ॥ जिनमतके उपदेश
विना जीवनिकी हिंसा करि यह जीव चौरासी लाषयोनिमैं उपजै मरै है हिं
सातें कर्मबंध होय है कर्मबंधके उदयतैं उत्पतिमरणरूप संसार होय है ऐ
सें जन्म मरनका दुःख सहै है तातें जीवनिकी दयाका उपदेश है ॥ ३॥ आगैं
तिस दयाहीका उपदेश करै है ॥गाथा॥ जीवाण मभयदाणं देहमुणी पाणभू
दसत्ताणं कल्लाणसुहणिमित्तं परंपराति विहसुद्धीय ॥ १३५॥ हे मुने तू जीव ॥अर्थ॥
निकूं अर प्राणीनि तसत्वइनिकूं अपना परंपरा करि कल्याणसुखता
के निमित्त मनवचनकायकी शुद्धता करि अभयदान दे ॥भावार्थ॥ जीव तो पं
चेंद्रियनिकूं कहै है अर प्राणी विकलत्रयकूं कहै है अर भूत वनस्पतिकूं
कहै हैं अर सत्व पृथ्वी अप तेज वायु इनिकूं कहै है इनि सर्व जीवनिकूं

आपसमान जाणि अन्यदान देने का उपदेश है याते शुभप्रकृतिनिका बंध हो
नेतैं अभ्युदय का सुख होय है परंपराकरि तीर्थंकर पद पाय मोक्ष पावै है । य
ह उपदेश है ॥ १३६ ॥ आगैं यह जीव षट् अनायतनके प्रसंगकरि मिथ्यात्वतैं सं
सारमैं भ्रमै है ताका स्वरूप कहै है । तहां प्रथम ही मिथ्यात्वके भेदनिकूं क
हैं हैं ॥ गाथा ॥ असियसय किरियवाई अक्किरियाणं च होइ चुलसीदी । स
त्तट्ठी अण्णाणी वेणाईया होंति बत्तीसा ॥ १३७ ॥ अर्थ ॥ एकसौ असी तौ क्रिया
वादी हैं । चउरासी अक्रियावादीनिके भेद हैं । अज्ञानी सड़सठि भेदरूप
य हैं विनयवादी बत्तीस हैं ॥ भावार्थ ॥ वस्तु का स्वरूप अनंतधर्मरूप सर्वज्ञ
कह्या है सो प्रमाण नयनिकरि सत्यार्थ सधै है । तहां जिनिके मतमैं सर्वज्ञ २१२
नांही तथा सर्वज्ञका स्वरूप यथार्थ निश्चय करि ताका श्रद्धान न कीया ऐ

से अन्यवादीनिमैं वस्तु का एक एक धर्म ग्रहण करि तिस का पक्षपात कीया ऐ
जो हमनैं ऐसैं मान्या है सो ऐसै ही है अन्य प्रकार नांही है ऐसैं विधिनिषे
ध करि एक एक धर्म के पक्षपाती भये तिनिके ए संक्षेप करि तीन सै तरेसठि भे
द हैं तहां केई गमन करनां बैठनां खड़ा रहनां खानां पीनां सोवनां उपजनां
विनसनां देखनां जाननां करनां भोगनां भूलनां याद करनां प्रीति करनां ह
रख करनां द्वेष करनां जीवनां मरनां इत्यादि क्रिया हैं तिनिकूं जीवादि पदा
र्थनिकै देखि कोई कैसी क्रिया का पक्ष कीया कोई कैसी क्रिया का पक्ष की
या ऐसैं परस्पर क्रिया का विवाद करि भेद भये हैं तिनिके तिनिके संक्षेप क
रि एकसौ असी भेद का निरूपण कीया है विस्तार करि कीयें बहुत होय हैं ॥ भा
वार्थ ॥ बहुरि कोई अक्रियावादी हैं ते तिनिने जीवादि पदार्थनिविषैं क्रिया

काअभावमांनिपरस्परविवादकरैहैकेईकहैजीवजामैंनाहीहैकेईकहै
किछूकरैनाईहै॥केईकहैभोगवैनाहीहैकेईकहैउपजैनाहीहैकेईकहै
विसैनैनांहीहैकेईकहैगमननांहीकरैहैकेईकहैतिष्टैनाहीहैइत्यादि
क्रियाकाअभावकापक्षपातकरिसर्वथाएकांतीहोयतिनिकासंक्षेपक
रिचौरासीभेदकीयेहै॥बहुरिकेईअज्ञानवादीहैतिनिमेंकेईतौसर्वज्ञ
काअभावमानैहैकेईकहैजीवअस्तियहकोनजानैकेईकहैजीवना॥
स्तियहकोनजानैकेईकहैजीवनित्यहैयहकोनजानैकेईकहैअनित्यहै
यहकौंनजानैइत्यादिसंसयविपर्ययअनध्यवसायरूपभयेविवादकरै
हैतिनिकेसंक्षेपकरिसतसठिभेदकीयेहै॥बहुरिकेईविनयवादीहैतेकेई
कहैदेवकाविनयतैंसिद्धिहैकेईकहैगुरुकेविनयतैंसिद्धिहैकेईक

हैमाताकेविनयतैंसिद्धिहै॥केईकहैपिताकेविनयतैंसिद्धिहैकेईकहैरा
जाकेविनयतैंसिद्धिहै॥केईकहैसर्वकेविनयतैंसिद्धिहैइत्यादिविवाद
करैहैतिनिकेसंक्षेपकरिबतीसभेदकहेहैऐसैंसर्वथाएकांतनिके।
तीनसैंतरेसठिभेदसंक्षेपकरिकहेहैविस्तारकीयेंबहुतहोयहैइनिमैं
केईईस्वरवादीहैकेईकालवादीहैकेईस्वभाववादीहैकेईनियमवादी
हैकेईआत्मवादीहैतिनिकास्वरूपगोमट्टसारआदिग्रंथनिमैंतेंजांना।
ना॥ऐसैंमिथ्यात्वकेभेदहै॥छ॥आगेंकहैहैजोअभव्यजीवहैसोअप॥
नीप्रकृतिकौंछोडैनाहीहैताकामिथ्यात्वमिटैनाहीहै॥गाथा॥णमुयइप
यडिअभव्वोसुट्ठुविआयण्णिऊणजिणधम्मं॥गुडदुद्धंपिपिबंताणपण्णया
णिव्विसाहोंति॥१३६॥अर्थ॥अभव्यजीवहैसोभलेप्रकारजिनिधर्महि

अ०पा० ताहि स्तुति करि भी अपनी प्रकृति स्वभाव है ताहि न छोडै है। इहां दृष्टांत जो स
२२४ र्प है ते गुडसहित दूध कूं पीवता संता भी विषरहित नांही होय है। भावार्थ। जो
कारण पाय भी नष्ट है ताकूं प्रकृतिस्वभाव कहिए है सो अभव्य का स्वभाव
एहे जो अनेकांत है तत्व का स्वरूप जामैं ऐसा वीतराग विज्ञान स्वरूप जि
नधर्म मिथ्यात्व का मेटनेवाला है ताका भलेप्रकार स्वरूप सुणि करि भी जा
का मिथ्यात्वरूप स्वभाव बदलै नांही है सो यह वस्तु सरूप है काहू का की
या नांही। इहां उपदेश अपेक्षा ऐसें जाननां जो अभव्यरूप प्रकृति तौ
सर्वज्ञगम्य है तथापि अभव्य की प्रकृति सारिखी प्रकृति न राखणी मि २२४
थ्यात्व छोडणा यह उपदेश है॥ ॥ आगैं याही अर्थकूं दृढ करै है। गाथा
मिच्छत्तछण्णदिट्ठी दुद्धीया दुम्मएहिं दोसेहिं। धम्मं जिणपण्णत्तं अभव्व

जीवो न रोचेदि॥ २३९॥ अर्थ॥ अभव्यजीव है सो जिनप्रणीत धर्म है ताहि न रु १
चै है न श्रद्धै है रुचि न करै है। जातैं कैसा है अभव्यजीव दुर्मत जे सर्वथा एकां
तीनि के प्ररूपे अन्यमत ते ही भये दोष तिनि करि अपनी दुर्बुद्धी करि मि
थ्यात्व तैं आच्छादित है बुद्धि जाकी॥ भावार्थ॥ मिथ्यामत के उपदेश करि अ
र अपनी दुर्बुद्धि करि जाकै मिथ्यात्व दृष्टि है ताकूं जिनधर्म न रुचै है तब
जाणिये यह अभव्य जीव है यथार्थ अभव्य जीवकूं तौ सर्वज्ञ जाणै है अ
र यह अभव्य के चिह्न है तिनितैं परीक्षा करि जाणिये है॥ आगे कहै है जो
ऐसे मिथ्यात्व के निमित्त तैं दुर्गति का पात्र होय है॥ गाथा॥ कुच्छियधम्म
म्मि रओ कुच्छियपासंडिभत्तिसंजुत्तो। कुच्छियतवं कुणंतो कुच्छियगइभा
यणो होइ॥ २४०॥ अर्थ॥ आचार्य कहै है जो त्सित निंद्य मिथ्यात्वधर्म मैं जो र

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

तहै। अरजोपाषंडीतिंह्यनेषीतिनिकीभक्तिसंयुक्तहै। वहुरिजोनिंद्यमिथ्या १
अज्ञानतपकरतारहैहैसोजीवकुत्सितनिंद्यगतिकाभाजनहोयहै। भा
वार्थ। जोमिथ्याधर्मसेवैमिथ्यादृष्टीभेषीभेषीनिकीभक्तिकरैमिथ्याअज्ञा
नतपकरैसोदुर्गतिहीपावैतातैंमिथ्यात्वतोछोडणांयहउपदेशहै। छ। आ
गैंइसहीअर्थकूंदृढकरतेसंतेऐसेकहैहैजोऐसेमिथ्यात्वकरिमोह्याजी
वसंसारमैंभ्रम्यो॥गाथा॥इयमिछत्तावासेकुणयकुसछेहिमोहिईजीवो।
भमिउअणाइकालंसंसारेधीरचिंतेहि॥१४१॥अर्थ॥इतिकहियेपूर्वोक्तप्रका
रमिथ्यात्वकाआवासठिकाणांजोयहमिथ्यादृष्टीनिकानिवाससंसारता
विषैकुनयजोसर्वथाएकांततिनिसहितजेकुशास्त्रतिनिकरिमोह्यावे २१५
चित्तभयाजोयहजीवसोअनादिकालतैंलगायसंसारविषैभ्रम्याहैधीर

हेमुनितूंविचारि॥भावार्थ॥आचार्यकहैहैजोपूर्वोक्ततीनसेतरेसठिकुवा
दीनकरिसर्वथाएकांतपक्षरूपकुनयकरिरचेशास्त्रनिकरिमोहितभ
यायहजीवसंसारविषैअनादितैंभ्रमैहैसोहेधीरमुनिऐसेकुवादीनिक १
संगतिभीमतिकरैयहउपदेशहै॥छ॥आगेंकहैहैजोपूर्वोक्ततीनसेतरे
सठिपाषंडीनिकामार्गछोडिजिनमार्गविषैमनलगावै॥गाथा॥पाषंडी
तिणसयातीसठिभेयाउमग्गमुत्तूणंरुंभहिमणजिणमग्गेअसप्पला
वेणकिंबहुणा॥१४२॥अर्थ॥हेजीवतीनसैतरेसठिपाषंडीकहेतिनिका
मार्गकूंछोडिकरिअरजिनमार्गकेविषैअपनेमनकूंथांभियहसंक्षे
पहै।औरबहुतनिरर्थकबलापरूपकहनेकरिकहा॥भावार्थ॥ऐसेमि
थ्यात्वकानिरूपणकीयातहांआचार्यकहैहैजोबहुतनिरर्थककथ

अ०पा० नालापकरिकहाएताहीसंक्षेपकरिकहेहै॥ जोतीनसैततरेसठिकुवादीपा
२१६ षंडीतिनिकामार्गछोडिकरिजिनमार्गविषैप्रवर्त्तनाअन्यकुंजानेन
देना॥ इहांइतनाविशेषऔरजाननांजोकालदोषतेंइसपंचमकालमैं
अनेकपक्षपातिकरिमतांतरभयेहैतिनिकूंभीमिथ्याजानितिनिकाप्र
संगनकरनांसर्वथाएकांतकापक्षपातछोडिअनेकांतरूपजिनवचन
काशरणलेणां॥ छ॥ आगैसम्यग्दर्शनकानिरूपणकरैहै तहांकहै
हैजोसम्यग्दर्शनरहितप्राणीहैसोचालताम्रतकहै॥ गाथा॥ जीवविमु
क्कोसवओदंसणमुक्कोयहोयचलसवओ॥ सवओलोएअपुज्जोलोउत्त
रिगम्मिचलसवओ॥ १४३॥ अर्थ॥ लोकविषैजीवकरिरहितहोयताकूं २१६
सर्वकरिम्रतकमुरदाकहिएहे॥ तैसैहीजोसम्यग्दर्शनकरिरहितपुरु

षहैसोचालताम्रतकहै॥ वऊरिम्रतकतोलोकविषैअपूज्यहैअ
ग्निकरिदग्धकीजियेहै॥ तथापृथ्वीमेगाडियेहैअरदर्शनरहितच
लतामुरदाहै॥ सोलोकोत्तरजेमुनिसम्यग्द्रष्टीतिनिविषैअपूज्यहैतेता
कूंवंदनानांहीकरैहैमुनिभेषधरैतोउसंघबाह्यराषैहैअथवापरलो
कमैंनिंद्यगतिपायअपूज्यहोयहै॥ भावार्थ॥ सम्यग्दर्शनिविनापुरुषम्रत
कतुल्यहै॥ छ॥ आगैसम्यक्तकामहानपणाकहैहै॥ गाथा॥ जहतारया
णचंदो मयराओमयउलाणसव्वाणं॥ अहिओतहसम्मत्तोरिसिसावय
दुविहधम्माणं॥ १४४॥ अर्थ॥ जैसैतारानिकेविषैचंद्रमाअधिकहैव
ऊरिम्रगकुलकहिएपशूनिकेसमूहतिनिविषैजैसैम्रगराजकहिए
सिंहसोअधिकहैतैसैऋषिकहिएमुनिअरश्रावकऐसैदोयप्रका

रधर्मनिविषेसम्यक्त्व है सो अधिक है ॥भावार्थ॥ व्यवहारधर्मकी जेती
प्रवृत्ति है जिनिमें सम्यक्त्व अधिक है याविनासर्व संसारमार्गमें बंधके
कारण है ॥७॥ फेरि कहै है ॥गाथा॥ जह फणिराउ सोहइ फणमणिमाणिक्ककि
रणविप्फुरिओ। तह विमलदंसणधरो जिणभत्ती पवयणे जीवो ॥१५५॥
॥अर्थ॥ जैसे फणिराज कहिए धरणेंद्र है सो फण जो सहस्र फण तिनि
विषै जे माणिक तिनिके मध्य जो रक्त माणिक्य ताकी किरणनिकरि वि
स्फुरित कहिए देदीप्यमान सोहै है तैसें निर्मल सम्यग्दर्शनका धारक जी
व है सो जिनभक्ति सहित है याते प्रवचन जो मोक्षमार्गका प्ररूपण ता वि
षै सोहै है ॥भावार्थ॥ सम्यक्त्वसहित जीवकी जिनवचनविषै बडी अधि
कता है जहां तहां शास्त्रविषै सम्यक्त्वही की प्रधानता कही है ॥७॥ आ

गैं फेरि सम्यग्दर्शनसहित लिंग है ताकी महिमा कहै है ॥गाथा॥ जह ता
रायणसहियं ससहरबिंबं खमंडले विमले। भाविय तववयविमलं
जिणलिंगं दंसणविसुद्धं ॥१५६॥ ॥अर्थ॥ जैसे निर्मल आकाशमंडलवि
षै ताराानिके समूह सहित चंद्रमाका बिंब सोहै है तैसे ही जिनशासन
विषै दर्शनकरि विशुद्ध अर भावित कीये जे तप अर व्रत तिनिकरि
निर्मल जिनलिंग है सो सोहै है ॥भावार्थ॥ जिनलिंग कहिए निर्ग्रंथ मुनिभेष
है सो यद्यपि तप व्रतनिकरि सहित निर्मल है निर्दोष है तोऊ सम्यग्द
र्शन विना सोहै नाही या सहित होय तब अत्यंत सोभायमान होय है
॥७॥ आगै कहै है जो ऐसें जानिकरि दर्शन र[illegible]न कूं धारो ऐसें उप
देश करै है ॥गाथा॥ इय णाउं गुणदोसं दंसणरयणं धरेह भावेण सा

अ० पा० रंगुणरयणाणं सोवाणं पढम मोक्खस्स ॥१४७॥ अर्थ हे मुने तू इनिका
२१६ हि पूर्वोक्त प्रकार सम्यक्त्व के तौ गुण अर मिथ्यात्व के दोष तिन्हिका
णि करि सम्यक्त्वरूप रत्न है ताहि भाव करि धारि कैसा है सम्यक्त्व रत्न
गुणरूप जे रत्न है तिनिमैं सर्वमैं सार है उत्तम है बहुरि कैसा है मोक्ष
रूप मंदिर का प्रथम सोपान है चढनेकी पहली पैडी है ॥भावार्थ॥ जेते
व्यवहार मोक्षमार्ग के अंग है ग्रहस्थ के दान पूजादिक अर मुनि कै म
हाव्रत शीलसंयमादिक तिनिमैं सर्वमैं सार सम्यग्दर्शन है यातैं स
र्व सफल है तातैं मिथ्यात्वकूं छोडि सम्यग्दर्शन अंगीकार करना यह प्र २१६
धान उपदेश है ॥छ॥ आगैं कहै है जो सम्यग्दर्शन होय है जो जीव पदार्थ
का स्वरूप जाणि वाकी भावना करि ताका श्रद्धान करि अर आपकूं

जीव पदार्थ जाणि अनुभवन करि प्रतीति करै ताकै होय है सो यह जी
व पदार्थ कैसा है ताका स्वरूप कहै है ॥गाथा॥ कत्ता भोई अमुत्तो सरीरमि
त्तो अणाइणिहणो य दंसणणाणुवओगो णिद्दिट्ठो जिणवरिंदेहिं ॥१४८॥ अ
र्थ ॥ जीव नामा पदार्थ है सो कैसा है कर्त्ता है भोगी है अमूर्त्तीक है शरीरप्र
माण है अनादिनिधन है दर्शन ज्ञान है उपयोग ऐसा जाकैं जिनेंद्र जो
सर्वज्ञ वीतराग देव तिसिनै कह्या है ॥भावार्थ॥ इहां जीव नाम पदार्थ के छह
विशेषण कहे तिनिका आशय ऐसा जो कर्त्ता कह्या सो अशुद्ध निश्चयनय
करि तौ अपना अशुद्ध रागादिक भाव तिनिका अज्ञान अवस्था मैं आ
प कर्त्ता है अर व्यवहार नयकरि पुद्गल कर्म जे ज्ञानावरण आदि तिनि
का कर्त्ता है और शुद्धनयकरि अपने शुद्ध भावका कर्त्ता है बहुरि भो

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्

अ॰पा॰ गी कह्या सो निश्चयनय करि पुद्गलकर्म का फल जो सुखदुःख आ
२२७ दिक ताका भोक्ता है॥ बहुरि अमूर्त्तीक कह्या सो निश्चयनय करि तो
स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द पुद्गल के गुणपर्याय हैं तिनि करि रहित अमूर्त्ती
क है॥ अर व्यवहार करि जेते पुद्गलकर्म तैं बंध्या है ते ते मूर्त्तीक भी क
हिए है॥ बहुरि शरीरपरिमाण कह्या सो निश्चयनय करि तो असंख्या
त प्रदेशी लोकपरिमाण है परंतु संकोचविस्तार सक्ति करि शरीर तो
किछू घाटि प्रदेश परिमाण आकार रहै है॥ बहुरि अनादिनिधन क
ह्या सो पर्याय दृष्टि करि देखिए तब उपजै विनसै है तो द्रव्यदृष्टि करि दे
खिये तब अनादिनिधन सदा नित्य अविनासी है॥ बहुरि दर्शनज्ञानसहि २२७
त उपयोगसहित कह्या सो देखना जानना रूप उपयोग स्वरूप चेतना

स्वरूप है॥ बहुरि इनि विशेषणनि करि अन्यमती अन्य प्रकार सर्वथा
एकांत करि मानै है॥ तिनिका निषेध भी जाननां सो कैसें कर्त्ता विशेषण
करि तौ सांख्यमती सर्वथा अकर्त्ता मानै है ताका निषेध है॥ बहुरि भोक्ता
विशेषण करि बौधमती क्षणिक मान कहै है कर्म कूं करै और है भोगवै औ
र है ताका निषेध है जो जीव कर्म करै है ताका फल तो ही जीव भोगवै है॥ ऐ
से बौधमती का कहने का निषेध है॥ बहुरि अमूर्त्तीक कहने मैं मीमांस
क आदि इस शरीर सहित मूर्त्तीक ही मानै है ताका निषेध है॥ बहुरि
शरीरपरिमाण कहने मैं नैयायिक वैशेषिक वेदांती आदि सर्वथा
व्यापक मानै है ताका निषेध है॥ बहुरि अनादिनिधन कहने तै बौध
मती सर्वथा क्षणमात्र स्थाई मानै है ताका निषेध है॥ बहुरि दर्शनज्ञा

अ० पा० नउपयोगमयी कहने तै सांख्यमती ज्ञानरहित चेतनामात्र मानै है
२२० अर नैयायिक वैशेषिक गुणगुणी कै सर्वथा भेद मानि ज्ञान अर जीव
कै सर्वथा भेद मानै है अर बौधमत का विशेष ज्ञानाद्वैतवादी ज्ञानमा
त्रही मानै है अर वेदांती भी ज्ञान का किछू निरूपण न करै है तिनिका
निषेध है ऐसैं सर्वज्ञ का कह्या जीव का स्वरूप जानि आपकूं ऐसा मा
नि श्रद्धा रुचि प्रतीति करणी वहुरि जीव कहने मैं अजीव पदार्थ भी
जान्या जाय है अजीव न होय तो जीव नाम कैसै कहै तातै जीव का स्वरू
प कह्या है तैसा कौ श्रद्धान आगम अनुसार करना ऐसै जीव अ
जीव पदार्थ का स्वरूप जाणि अर इनि दोऊनि के संयोग तै अन्य आश्र २२०
वंध व संवर निर्जरा मोक्ष इनि भावनि की प्रवृत्ति होय है तिनिका आगम

अनुसार स्वरूप जानि श्रद्धान करैं सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होय है ऐसै जा
ननां ॥ आगै कहै है जो यह जीव ज्ञानमयी दर्शनउपयोगमयी है तौऊ
अनादि पुद्गल कर्म के संयोग तैं याकै ज्ञान दर्शन की पूर्णता न होय है ता
तै अल्प ज्ञान दर्शन अनुभव मैं आवै है अर तिनि मैं भी अज्ञान के निमित्त
तै इष्ट अनिष्ट बुद्धिरूप राग द्वेष मोह भाव करि ज्ञान दर्शन मैं कलुषता
रूप सुख दुःखादिक भाव अनुभव मैं आवै है ॥ तातै यह जीव जब जिन
भावनारूप सम्यग्दर्शनकूं प्राप्त होय है तब ज्ञान दर्शन सुख के घा
तक कर्मनि की नाश करै है ऐसा दीखावै है ॥ गाथा ॥ दंसणणाणावरणं
मोहणियं अंतराइयं कम्मं णिट्ठवइ भवियजीवो सम्मं जिणभावणाजुत्तो
१४९ ॥ अर्थ ॥ सम्यक् प्रकार जिनभावना करि युक्त भव्य जीव है सो ज्ञा

अ०पा० नावरणदर्शनावरणमोहनीयअंतराय ए च्यारिघातिकर्म है तिनिकूं निःशपा
२२१ नकरै है संपूर्णअनावर्ण करै है॥ भावार्थ॥ दर्शनघोकोंतक तो दर्शनावरणकर्म
है ज्ञानकाघातक ज्ञानावरणकर्म है सुखकाघातक मोहनीयकर्म है॥ वीर्य
काघातक अंतरायकर्म है तिनिका नाशक सम्यक्प्रकार जिनभावनाकहि
ए जिनआज्ञामानि जीवअजीवआदितत्त्वका यथार्थ निश्चय करि श्रद्धाव
नभया होय सो जीव करै है तातैं जिनमतकी आज्ञामानि यथार्थश्रद्धानक १
रना यह उपदेश है॥ छ॥ आगैं कहै है इनिघातिकर्मका नाश भये अनंतच
तुष्टय प्रगट होय है॥ गाथा॥ बलसोक्खणाणदंसण चत्तारिय पायडा गुणा होंति
णठ्ठेघाइचउक्के लोयालोयं पयासेदि॥२५०॥ अर्थ॥ पूर्वोक्त घातिकर्मका च २२१
तुष्क ताका नाश भये बलसुखज्ञानदर्शन ए च्यारिगुण प्रगट प्रगट होय है

वहुरिजब ए गुण प्रगट होय तब लोकालोकं प्रकाशै॥ भावार्थ॥ घाति
कर्मका नाश भयें अनंतदर्शन अनंतज्ञान अनंतसुख अनंतवीर्य अ
नंतचतुष्टय प्रगट होय है तहां अनंतदर्शनज्ञानतैं तौ छह द्रव्यकरि भस्या जो
यह लोक तामैं जीव अनंतानंत पुद्गल तिनितैं भी अनंतानंतगुणे अर ध
र्म अधर्म आकाश ए तीन द्रव्य अर असंख्याते कालाणु इनि सर्व द्रव्यनिके
अतीत वर्त्तमान अनागत कालसंबंधी अनंत पर्याय न्यारे न्यारे कूं एककाल
प्रत्यक्ष देखै जानै है अर अनंतसुखकरि अत्यंत तृप्तिरूप है अर अनंत
शक्तिकरि अब काहूनिमित्तकरि अवस्था पलटै नाही है॥ ऐसैं अनंतचतु
रू१ ष्टय जीवका निजस्वभाव प्रगट होय है तातैं जीवका स्वरूपका ऐसा परमा
र्थकरि श्रद्धानकरना सो ही सम्यग्दर्शन है॥ छ॥ आगैं कहै है ज्ञाकै अनंत

अ॰ पा॰ २२२ चतुष्टयप्रगटहोयताकूंपरमात्माकहिए हैताकेअनेकनामहैतिनिमेंके
तेकप्रगटकरिकहेहैं ॥ छ ॥ णाणीसिवपरमेठीसव्वण्हूविण्हूचउमुहो
वुद्धो अप्पोवियपरमप्पोकम्मविमुक्कोयहोफुडं ॥१५॥ अर्थ ॥ परमात्मा
हैसोऐसाहैज्ञानीहैसिवहैपरमेष्टीहैसर्वज्ञहैचतुर्मुखब्रह्माहैवुद्धहैआ
त्माहैपरमात्माहैकर्मकरिविप्रमुक्तरहितहैयहप्रगटजाणा ॥ भावार्थ ॥ ज्ञा
नीकहनेंतैतौजैसेसांख्यमतीज्ञानरहितउदासीनचैतन्यरूपमानैहै
ताकानिषेधहै ॥ वहुरि सिवहैसर्वकल्याणपरिपूर्णहैजैसांख्यमतीतथा
नैयायिकवैशेषिकमानेहैतैसानाहीहै ॥ वहुरिपरमेष्टीहैपरमउत्कृष्ट
पदविषेतिष्टैहैअथवाउत्कृष्टकछुथापिताकूंपरमेष्टीकहेहैतैनाहीहै २२२
वहुरिसर्वज्ञहैसर्वलोकालोकजानैहैअन्यकेईकोईएकप्रकरणसंबं

धीसर्ववातजानैताकूंभीसर्वज्ञकहैहैतैसानाहीहै ॥ वहुरिविष्णुहैजाकेज्ञा १
नसर्वज्ञेयव्यापकहैअन्यमतीवेदांतीआदिकहैहैजोसर्वपदार्थनिमैं
आपहैसोनांहीहै ॥ वहुरिचतुर्मुखकहनेतैकेवलीअरहंतकेसमोस
रणमैंच्यारिमुखच्यारयौदिसामैंदीषैऐसाअतिशयहैतातैचतुर्मुखक
हिएहैअन्यमतीब्रह्माकूंचतुर्मुखकहैहैसोऐसाब्रह्माचतुर्मुखअन्य
कोईहैनांही ॥ वहुरिवुद्धहैसर्वकाज्ञाताहैवौधमतीक्षणिककवाकूंवुद्धक
हैहैतैसानांहीहै वहुरिआत्माहैअपनेस्वभावहीविषेनिरंतरप्रवर्त्तैहै
अन्यमतीवेदांतीसर्वविषेप्रवर्त्तताआत्माकूंमानेहैंतैसानांहीहै ॥ व
हुरिपरमात्माहैआत्माकाशुद्धरूपअनंतचतुष्टयजाकेप्रगटभयाहै
तातैंपरमात्माहै ॥ वहुरिकर्मजेआत्माकेस्वभावकेघातकघातिकर्म

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

तिनितैं रहित भया है ता तै कर्म विप्रमुक्त है अथवा किछू करनें योग्य क
र्य न रह्या ता तै भी कर्म विप्रमुक्त है सो अन्यमती नैयायिक सदा ही कर्म रहि
त मानै है तैसें नांही हैं ऐसें परमात्मा के सार्थिक नाम है अन्यमती आप
नें इष्ट के नाम ए ही कहै है तिनि का सर्वथा एकांत का अभिप्राय करि अर्थ
बिगडै है सो यथार्थ नाही अरहंत के ए नाम नय विवक्षा तै सत्यार्थ है ऐ
सें जाननां ॥ छ ॥ आगैं आचार्य कहै है जो ऐसा देव है सो मोकूं उत्तम बोध
द्यो ॥ गाथा ॥ इय घाइकम्ममुक्को अट्ठारहदोसवज्जिओ सयलो तिहुवणभवण
पदीवो देउ मम उत्तमं बोहिं ॥ १५२ ॥ अर्थ ॥ इनि कहिए ऐसैं घातिकर्मनि
करि रहित क्षुधा तृषा आदि पूर्वोक्त अठारह दोषनि करि वर्जित सकल
कहिए शरीर सहित अर तीन भवन के प्रकासनें कूं प्रकृष्ट दीपक तुल्य

देव है सो मोकूं बोधि कहिए सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र की प्राप्ति द्यो ऐसें आचा
र्य नैं प्रार्थना करी है ॥ भावार्थ ॥ इहां और तौ पूर्वोक्त प्रकार जाननां अर सकल वि
शेषण है ता का यहु आशय है जो मोक्षमार्ग की प्रवृत्ति उपदेश के वचन प्रवर्त्तैं
बिना न होय अर वचन की प्रवृत्ति शरीर बिना न होय ता तैं अरहंत का आयु
कर्म उदय तैं शरीर सहित अवस्थान रहै है अर स्वर नाम आदि नामकें उ
दय तैं वचन की प्रवृत्ति होय है ऐसें अनेक जीवनि का कल्याण करनें वाला
उपदेश प्रवर्त्तै है अन्यमती कै ऐसी अवस्थान परमात्मा कै संभवै नांही
ता तैं उपदेश की प्रवर्त्ति न बणै तब मोक्षमार्ग का उपदेश भी न प्रवर्त्तै ऐसें
जाननां ॥ छ ॥ आगैं कहै है ऐसैं अरहंत जिनेश्वर के चरणनि कूं नमें है ते
संसार के जन्मरूप वेलि कूं काटै है ॥ गाथा ॥ जिणवरचरणंबुरुहं णमंति जि

यपरमभत्तिराएण। ते जम्मवेलिमूलं खणंति वरभावसत्थेण॥१५३॥ अर्थ॥ जे
पुरुष परम भक्ति अनुराग करि जिनवर के चरणकमलनि कूं नमैं है ते भावरू
प शस्त्र करि जन्म कहिए संसार सो ही भई वेलि ताका मूल जो मिथ्यात्व आ
दि कर्म ताहि खणै है खोदि डारै है॥ भावार्थ॥ अपना भाव जो श्रद्धा रुचि प्रती
ति ताकरि जिनेश्वर देव कूं नमै है। ताका सत्यार्थ स्वरूप सर्वज्ञ वीतरागप
णा कूं जाणि भक्ति के अनुराग करि नमस्कार करै है तब ताकै जाणिए सम
म्यग्दर्शन की प्राप्ति भई। ताका यह चिह्न है ताते जाणिए याकै मिथ्यात्व का ना
श भया अब आगामी संसार की वृद्धि याकै न होयगी ऐसे जनाया है॥ आ
गैं कहै है जो जिनसम्यक्त्व कूं प्राप्ति भया पुरुष है सो आगामी कर्म करि
न लिपै है॥ गाथा॥ जह सलिलेण ण लिप्पइ कमलिणिपत्तं सहावपयडीए। त

ह भावेण ण लिप्पइ कसायविसएहिं सप्पुरिसो॥१५४॥ अर्थ॥ जैसें कमलनि
का पत्र है सो अपनै प्रकृति स्वभाव करि जल करि नाही लिप्त है तैसें सत्पुरु
ष सम्यग्दृष्टी पुरुष है सो अपने भाव करि क्रोधादिक कषाय अर इंद्रियनि
के विषय इनि करि नाही लिपै है॥ भावार्थ॥ सम्यग्दृष्टी पुरुष कै मिथ्यात्व अनं
तानुबंधी कषाय का तौ सर्वथा अभाव ही है॥ अन्य कषाय का यथा संभव
अभाव है तहां मिथ्यात्व अनंतानुबंधी के अभाव तैं ऐसैं भाव होय है जो
परद्रव्य मात्र का तौ कर्तापणां की बुद्धि नाही है अर अब शेष कषाय के
उदय तैं किछू राग द्वेष प्रवर्तै है तिनि कूं कर्म के उदय के निमित्त तैं भये जानै
है ताते तिनि विषैं भी कर्त्तापणा की बुद्धि नाही है तथा तिनि भावनि कूं रोग
वत भये जाणि भले न जाणै है॥ ऐसैं आप करि कषायनि तैं प्रीति बुद्धि ना

अ॰पा॰ २२५

हीता तैं तिनि तैं न लिपै है जल कमलवत् निर्लेप रहै है याते आगामी कर्मका
बंध न होय है संसार की वृद्धि नांही होय है ऐसा आशय जाननां ॥ छ ॥ आ
गैं आचार्य कहै है जो जे पूर्वोक्त भाव करि सहित सम्यग्दृष्टी पुरुष है ते ही
सकल सील संयमादि गुणनि करि संयुक्त है अन्य नांही ॥ गाथा ॥ ते वियसणा
मि हं जेसि यं के रला सील संयम गुणेहिं । बहु दोसाणावासो सुमलिय चित्तो ण
सावय समो सो ॥ १५५ ॥ अर्थ ॥ पूर्वोक्त भाव करि सहित सम्यग्दृष्टी पुरुष है अर
शील संयम गुणनि करि सकल कला करि संपूर्ण कला वान होय है तिनि
हीकूं हम मुनि कहै हैं । बहुरि जो सम्यग्दृष्टी नांही है मलिन चित्त करि सहि
त मिथ्यादृष्टी है अर बहुत दोषनिका आवास है भिका ण है सो तो भेष धा २२५
रै है तो उ श्रावक समान भी नांही है ॥ भावार्थ ॥ जो सम्यग्दृष्टी है अर शील क

हिये उत्तर गुण अर संयम कहिए मूलगुण तिनि करि सहित है सो मुनि है ब
हुरि जो मिथ्यादृष्टी मिथ्यात्व करि जाका चित्त मलिन है अर क्रोधादि विका
र रूप बहुत दोष जामैं पाईए है सो तौ मुनि भेष धारै है तौऊ श्रावक समान
भी नांही है । श्रावक सम्यग्दृष्टी होय अर गृहस्थचारा के पापनिकरि सहि
त होय तौऊ तिस बराबरि केवल भेषी मुनि नांही है ऐसैं आचार्य कहै है ॥
छ ॥ आगैं कहै है जो सम्यग्दृष्टी होय करि जिनिनें कषायरूप सुभट जीते ते ही
धीर वीर है ॥ गाथा ॥ ते धीरवीरपुरिसा खमदमखग्गेण विप्फुरंतेण । दुज्जयपव
लबलुद्धरकसायभड णिज्जियाजेहिं ॥ १५६ ॥ अर्थ ॥ ज्यां पुरुषा क्षमा अर इंद्रि
यनिका दमन सो ही भया विस्फुरंत कहिए मलवा स्याह्रूवा मलिनता रहित
उज्वलती ह्णा खड्गता करि जिनिका जीतनां कठिन ऐसैं दुर्जय अर प्रबल

वलकरि उद्धत ऐसे कषायरूप सुभटनिकूं जीति ते धीर वीर सुभट हैं अन्य सं
ग्रामादिकमें जीतें ते कहवेके सुभट हैं ॥ भावार्थ ॥ युद्धमें जीतनेंवाले सूरवीर तौ लोक
मैं वहुत हैं अर जे कषायनिकूं जीति चारित्रवान होय हैं ते मोक्ष पावैं हैं यह अ
भिप्राय है ॥ छ ॥ आगैं कहै हैं जो जे आप दर्शन ज्ञान चारित्ररूप होय अन्यकूं तिनि
सहित करै हैं ते धन्य हैं ॥ गाथा ॥ धण्णा ते भयवंता दंसणणाणग्गपवरहत्थेहिं वि
सयमयरहरपडिया भविया उत्तारिया जेहिं ॥ १५७ ॥ अर्थ ॥ जा सत्पुरुष विषयरू
प मकरध्वज जो समुद्र ता विषै पड्या जे भव्य जीव तिनिकूं पार उतार्या कहा है करि
दर्शन अर ज्ञान तेई भये अग्र मुख्य दोय हाथ तिनि करि उतारे ते मुनि प्रधान
भगवान इंद्रादिक करि पूज्य ज्ञानी धन्य हैं ॥ भावार्थ ॥ इस संसार समुद्रतैं आप तिरैं
अन्यकूं तारैं ते मुनि धन्य हैं धनादिक सामग्री सहितकूं धन्य कहै हैं ते कहवे

के धन्य हैं ॥ छ ॥ आगैं ऐसे मुनिनिकी महिमा करै है ॥ गाथा ॥ मायावेल्लि असेसा मो
हमहातरुवरम्मि आरूढा ॥ विसयविसपुप्फफुल्लिय लुणंति मुणि णाणसत्थेहिं
॥ १५८ ॥ अर्थ ॥ मुनि हैं ते माया कहिये कपटरूपी वेलि है ताहि ज्ञानरूपी शा
स्त्र करि समस्तकूं काटै है ॥ कैसी है माया वेलि मोहरूपी जो महावृक्ष ता परि
आरूढ है चढी है ॥ वहुरि कैसी है विषयरूपी विषपुष्पनि करि फुलि रही है ॥
॥ भावार्थ ॥ यह माया कषाय है सो गूढ है याका विस्तार भी वहुत है मुनिनि तां
ई फैलै है तातैं जे मुनि ज्ञान करि याकूं काटै हैं ते साचे मुनि हैं ते ही मोक्ष पावै
हैं ॥ छ ॥ आगैं फेरि तिनि मुनिनका सामर्थ्यकूं कहै हैं ॥ गाथा ॥ मोहमयगा
रवेहिय मुक्का जे करुणभावसंजुत्ता ते सव्वदुरियखंभं हणंति चारित्तखग्
गेण ॥ १५९ ॥ अर्थ ॥ जे मुनि मोह मद गारव इनि करि रहित हैं अर करुणा

भ०आ०
२२७

भावकरि सहित है ते चारित्ररूपी खड्गकरि पापरूपी स्थंभ है ताहि हणै
है भल्लतै काटै है ॥ भावार्थ ॥ मोहतौ परद्रव्यसूं ममत्वभावकूं कहिये ॥ मद जा
त्यादिक परद्रव्यके संबंधतै गर्व होय ताकूं कहिए गौरव तीन प्रकार है ॥
ऋद्धिगौरव जो किछू तपोतैं वा बलकरि अपणा महंतता लोकमै होय ताका
आपकै मद आवै तामै हरषमानैं ॥ बहुरि सातगौरव अपने शरीरमै रोगा
दिक मै उपजै तब सुखमानैं प्रमादयुक्त होय अपनां महंतपना मानैं ॥ बहुरि
रसगौरव जो मिष्टरसीला आहारादिक मिलै ताके निमित्ततैं प्रमत्त होय स
यनादिक करै ऐसा गारवइनिकरि रहित है अर परजीवनिकी करु
णाकरि युक्त है ऐसा ज्ञानी जो परजीवसूं मोह ममता नाही यातैं निरद २२७
य होय तिनिकूं हणै जिनै रागअंश रहै ते तैं परजीवनिकी करुणा ही करै

उपगारबुद्धि रहै ॥ ऐसै मुनि ज्ञानी पापजो अशुभकर्म ताकूं चारित्र केवल
तै नाश करै है ॥ ॥ आगै कहै है जो ऐसे मूलगुण उत्तरगुणनिकरि मंडित
मुनि है ते जिनमतमै शोभै है ॥ गाथा ॥ गुणगणमणिमालाए जिणमयगयणे णि
सायरमुणिंदो ॥ ताराबलिपरियरिओ पुण्णिमइंदुव्व पवणपहे ॥ २६० ॥ अर्थ ॥
जैसे पवनपथ जो आकाश ताविषै तारानिकी पंक्ति करि परिवारित पूर्णिमा
सीका चंद्रमा सोभै है तैसे जिनमतरूप आकाशविषै गुणनिके समूह सो ही
भई मणिनीकी माला ताकरि मुनींद्ररूप चंद्रमा सोभै है ॥ भावार्थ ॥ अठाईस मूल
गुण दशलक्षण धर्म तीनगुप्ति चौरासीलाख उत्तरगुण इत्यादि गुणनिकी माला
करि सहित मुनि है सो चंद्रमावत सोभित है ऐसे मुनि अन्यमतमैं नांही ॥ ॥ आ
गैं कहै है जो ऐसे जिनिकै विशुद्धभाव है ते सत्पुरुष तीर्थंकर आदिक पद

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्

कासुखनिकूंपावैहै॥ गाथा॥ चक्कहररामकेसवसुरवजिणगणहराइसोक्खाइं
चारणमुणिरिद्धीओविसुद्धभावाणरापत्ता॥ १६१॥ अर्थ॥ विसुद्धहैभावजिनकेऐसे
नरमुनिहैतेचक्रधरकहिएचक्रवर्तिषट्खंडकाराजेंद्रामकहिएवलिभद्रकेश
वकहिएनारायणअर्द्धचक्रीसुरवरकहिएदेवनिकाइंद्रजिनकहिएतीर्थ
करपंचकल्याणकरिसहिततीनलोककरिपूज्यपदवीगणधरकहिच्यारिज्ञ
नसप्तऋद्धिकाधारकमुनिइनिकेसुखनिकूंवहुरिचारणमुनिकहियेआ
काशगामीआदिकऋद्धिजिनिकेपाइएतिनिकीऋद्धिइनिकूंप्राप्तभये॥ भावा
र्थ॥ पूर्वेंऐसेनिर्मलभावकेधारकपुरुषभयेतेऐसेपदईकेसुखनिकूंप्राप्त
भयेअबजेऐसेहोहिगेतेपावैगेऐसेंजाननां॥ ७॥ आगेंकहेहैमुक्तिकासु
खभीऐसेहीपावैहैं॥ गाथा॥ सिवमजरामरणलिंगमणोवममुत्तमंपरमविमलमतुलं॥ १

२२६

लं॥ पत्तावरसिद्धिसुखंजिणभावणभाविया जीवा॥ १६२॥ अर्थ॥ जेजिनभावना
करिसहितजीवहैतेहीसिद्धकहिएमोक्षताकेसुखकूंपावेहै॥ कैसाहैसिद्धि
सुखशिवहैकल्याणरूपकाहूप्रकारउपद्रवसहितनांहीहै॥ वहुरिकैसाहैअ
जरामरलिंगहैं॥ वृद्धिहोनांअरमरनांइनिदोऊनिलैंरहितहैचिह्नजाका
वहुरिकैसाहैअनोपमहैजाकूंसंसारीकसुखकीउपमालागैनांही॥ वहुरि
कैसाहैमहार्थहैमहानअर्थपूज्यउसंसायोग्यहै॥ वहुरिकैसाहैविमल
हैकर्मकेमलतथारागादिकमलकरिरहितहै॥ वहुरिकैसाहैअतुलहैज
याकेवराबरिसंसारीकसुखनाही॥ ऐसासुखकूंजिनभक्तिपावैहैअ
न्यकाभक्तनपावेहै॥ ७॥ आगेंआचार्यप्रार्थनाकरैहैऐसेसिद्धिकेसु
खकूंप्राप्तभयेसिद्धभगवानतेमोकूंभीभावकीसुद्धताकूंद्यो॥ गाथा॥ तेमेति
हुवणमहियासिद्धासुिद्धंजणणिरवादिंतुवरभाव॥ सुद्धिंदंसणणाणेचरित्तेय

अ॰ पा॰ १६३ ॥ अर्थ ॥ ते सिद्ध भगवान है ते मोकूं दर्शन ज्ञान विषै अर चारित्र विषै श्रेष्ठ उत्तम
२२८ भाव की शुद्धता द्यो ॥ कैसे है सिद्ध भगवान तीन भवन करि पूज्यनीक है ॥ बहु
रि कैसे है शुद्ध है द्रव्यकर्म नोकर्मरूप मल करि रहित है ॥ बहुरि कैसे है नि
रंजन है रागादिक भावकर्म करि रहित है फेरि तिनि कै कर्म का उपजना ना
ही है ॥ बहुरि कैसे है नित्य है पाये स्वभाव का फेरि नाश नाही है ॥ भावार्थ ॥ आ
चार्य शुद्धभाव का फल सिद्ध है अवस्था निश्चय करि अर जे इस फल कूं
प्राप्त भये सिद्ध तिनि तैं यही प्रार्थना करी है जो शुद्धभाव की पूर्णता हमारै
होहु ॥ ॥ आगै भाव के कथन कूं संकोचै है ॥ गाथा ॥ किं जंपिएण बहुणा अ
त्थो धम्मो य काममोक्खो य ॥ अण्णे वि य वावारा भावम्मि परिट्ठिया सुद्दे ॥ १६४ ॥
॥ अर्थ ॥ आचार्य कहै है जो बहुत कहने करि कहा अर्थ धर्म काम मोक्ष बहु २२८
रि अन्य जो किछू व्यापार है सो सर्व ही शुद्धभाव कै विषै समस्तपणा करि तिष्ठ

है ॥ भावार्थ ॥ पुरुष के च्यारि प्रयोजन प्रधान है अर्थ धर्म काम मोक्ष बहुरि अन्य
भी जो किछू मंत्र साधनादिक व्यापार है ते आत्मा के शुद्ध चेतन्य परिणाम
स्वरूप भाव विषै तिष्ठै है शुद्धभाव तैं सर्व सिद्धि है ॥ ऐसा संक्षेप करि कह
ना जाणूं बहुत कहा कहनां ॥ ॥ आगै इस भावपाहुड कूं पूर्ण करै है ता
का पढने सुनने भावनें का उपदेश करै है ॥ गाथा ॥ इसि भावपाहुडमिणं स
व्वं बुद्धेहि देसियं सम्मं ॥ जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासयं ठाणं ॥ १६५
॥ अर्थ ॥ इति कहिए या प्रकार यह भावपाहुड सर्वबुद्ध जे सर्वज्ञदेव तिनि
नैं उपदेश्या है सो याकौं जो भव्यजीव सम्यक्प्रकार पढै सुणै याकूं भावै सो
शाश्वता सुख का स्थानक जो मोक्ष ताहि पावै है ॥ भावार्थ ॥ यह भावपाहुड ग्रंथ
है सो सर्वज्ञ की परंपरा करि अर्थ लेकरि आचार्य नै कह्या है तातैं सर्वज्ञ ही का उप

अ०पा० देख्या है केवल छद्मस्थ ही का कह्या नांही है तातैं आचार्य अपना कर्त्तव्य
२३० प्रधान करि न कह्या है अर याके पढनें सुननें भावनें का फल मोक्ष कह्या
सो युक्त ही है शुद्धभाव तैं मोक्ष होय है अर याके पढनें तैं शुद्धभाव होय है
ऐसें परंपरा मोक्ष का कारण याका पढनां श्रवण नां ध्यावनां भावनां करनां
है तातैं भव्यजीव है ते या भावपाहुड कूं पढो सुनो सुनावो भावो निरंतर अ
भ्यास करो ज्यों शुद्धभाव होय सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र की पूर्णता कूं पाय मो १
सुखकूं क्ष पावो तहां परमानंदरूप शाश्वता भोगवो ॥ भावार्थ ॥ ऐसें श्री कुंदकुंद
नाम आचार्य भावपाहुड ग्रंथ पूर्ण कीया याका संक्षेप ऐसा है जो जीव नामा व
स्तु का एक असाधारण शुद्ध अविनासी चेतना स्वभाव है ताकी शुद्ध अशु २३०
द्धरूप दोय परिणति है तहां शुद्धदर्शनज्ञानोपयोगरूप परिणमना सो

तो शुद्धपरिणति है याकूं शुद्धभाव कहिए है बहुरि कर्म के निमित्त तैं रागद्वेष
मोहादिक विभावरूप परिनमना जो अशुद्धपरिणति है याकूं अशुद्धभा
व कहिए है । तहां कर्म का निमित्त अनादि तैं है ता तैं अशुद्धभावरूप अ
नादिही तैं परिणमै है तिस भाव तैं शुभरूप परिणमै है अनादि संतान चला
आवै है तहां जब इष्ट देवतादिक की भक्ति जीवनि की दया उपगार मंदकषा
यरूप परिणमै तब तौ शुभ का बंध करै है ताके निमित्त तैं देवादिक पर्याय
पाय किछू सुखी होय है बहुरि जब विषयकषाय तीव्रपरिणामरूप परिण
मै है तब पाप का बंध करै है ताके उदय मैं नरकादिक पर्याय पाय दुःखी हो
य है ॥ ऐसें संसार मैं अशुद्धभाव तैं अनादि तैं यहु जीव भ्रमै है । बहुरि जब को १
ई काल ऐसा आवै जा मैं जिनेश्वरदेव सर्वज्ञ वीतराग देव का उपदेश की प्रा
प्ति होय अर ताका श्रद्धा रुचि प्रतीति आचरण करै तब अपना अर पर ।

अ॰ पा॰ २३१

कामे दर्शनकरि शुद्ध अशुद्ध भावका स्वरूप जानि आपना हित अहितका श्र
द्धान रुचि प्रतीति आचरण होय तव शुद्ध दर्शनज्ञानमयी शुद्ध चेतनाका परि
णमनकूं तो हित जानै ताका फल संसारकी निवृत्ति है ताकूं जानै अर अशुद्ध
भावका फल संसार है ताकूं जानै तब शुद्धभावका अंगीकार अर अशुद्धभा
वका त्यागका उपाय करै तहां उपायका स्वरूप जैसा सर्वज्ञ वीतरागके आगम
मे कह्या है तैसा करै तहां ताका स्वरूप निश्चय व्यवहारात्मक सम्यग्दर्शनज्ञा
नचारित्रस्वरूप मोक्षमार्ग कह्या है तहां निश्चयतैं शुद्धस्वरूपका श्रद्धाना
ज्ञानचारित्रकूं कह्या है अर व्यवहार जिनदेव सर्वज्ञ वीतराग तथा ताके व
चन तथा तिस वचनके अनुसार प्रवर्त्तनेवाले मुनि श्रावक तिनिकी भक्ति २३१
वंदना सा वैयावृत्ति विनय करै सो है जातैं ए मोक्षमार्गमैं वर्त्तावनेंकूं उप
कारी हैं। उपकारी माननां न्याय है उपकार लोपनां अन्याय हैं। बहुरि स्वरू

के साधक अहिंसा आदि महाव्रत अरयत्नरूप प्रवृत्ति समिति गुप्तिरूप प्रव
र्त्तनां अर इनि विषै दोष लगैं अपनी निंदा गर्हादिक करनां गुरुनि का दीया
प्रायश्चित लेना सक्ति सारू तप करनां परीसह सहनां दशलक्षणधर्म विषै
प्रवर्त्तना इत्यादि श्रद्धात्माकै अनुकूल क्रियारूप प्रवर्त्तनां इनिमै कछू राग
का अंस रहै जे तै शुभकर्मका बंध होय है तौऊ सो प्रधान नाही तातैं इनिमै प्र
वर्त्तनेवालेकै शुभकर्मके फलकी इच्छा नांही तातै अबंधतुल्य है इत्यादि प्रवृ
त्ति आगम मोक्षव्यवहार मोक्षमार्ग हैं यामे प्रवृत्तिरूप परिणमन है तौऊ निवृत्ति
प्रधान हैं तातैं निश्चय मोक्षमार्गतैं विरोध नांही है। ऐसे निश्चय व्यवहारस्वरू
प मोक्षमार्गका संक्षेप है याही कूं शुद्धभाव कह्या है तहां भी यामैं सम्यग्दर्शन प्र
धान करि कह्या है जातै सम्यग्दर्शन बिना सर्व व्यवहार मोक्षका कारन नांही

अ॰पा॰ अरसम्यग्दर्शनकाव्यवहारमैंजिनदेवकीभक्तिप्रधानहैं यहसम्यग्दर्श
232 नकेजनावनेंकूंमुख्यचिह्नहै तातैजिनभक्तिनिरंतरकरणी आरजि-
नआज्ञामानिआगमोक्तमोक्षमार्गमैप्रवर्त्तनांयहश्रीगुरुनिकाउपदे
शहै अन्यजिनआज्ञासिवायसर्वकुमार्गहैतिनिकाप्रसंगछोडनांऐसें
करेंआत्मकल्याणहोयहै छप्पय जीवसदाचिद्भावएकअविनाशीध 1
रेकर्मनिमित्तकूंपायअशुद्धभावविस्तारै कर्मशुभाशुभबांधिउदैभरमै
संसारैं पावैदुःखअनंतच्यारिगतिमैडुलिसारै सर्वज्ञदेशनापायकेंत
जैभावमिथ्यातजब निजशुद्धभावधरिकर्महरिलहैमोक्षभरमैंनतब
१ दोहा मंगलमयपरमात्माशुद्धभावअधिकार नमूंपायपाऊंस्वा 232
पदजाचूंयहैकरार ॥ इतिश्रीभावपाहुडकीदेशभाषामयवचनिकासमाप्त ॥५॥

॥ अथमोक्षपाहुडकीवचनिकालिखिएहैं दोहा ॥ आठकर्मकानाशकरि शुद्धभा
वगुणपाय भयेसिद्धनिजज्ञानतैं नमूंमोक्षसुखदाय १ ऐसैंमंगलकैअर्थिसि
द्धनिकूंनमस्कारकरिअरश्रीकुंदकुंदआचार्यकृतमोक्षपाहुडग्रंथप्राकृतगाथा
बंधहैताकीदेशभाषामयवचनिकालिखियेहैं तहांप्रथमहीआचार्यमंगलकै
अर्थिपरमात्मादेवकूंनमस्कारकरैहैं गाथा णाणमयंअप्पाणं उवलद्धंजेणझ
डियकम्मेण चइऊणयपरदव्वं णमोणमोतस्सदेवस्स १ अर्थः आचार्यकहैहै
जोजानैंपरद्रव्यकूंछोडिकरिक्षडितकर्मकहिएक्षरेहैंद्रव्यकर्मभावकर्मनोकर्म
जाकैऐसाहोयकरिअरअज्ञांनमईआत्माकूंपायाऐसेदेवकेअर्थिहमारानम-
स्कारहोऊनमस्कारहोऊदोयबारकहनेंमैंअतिप्रीतियुक्तभावजनायेहैं भावार्थ
इहांमोक्षपाहुडकाप्रारंभहै तहांजिननैंसमस्तपरद्रव्यकूंछोडिकर्मकाअभावक

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

रिकेवलज्ञानानंदस्वरूपमोक्षपदपाया तिसदेवकूंमंगलकेअर्थिनमस्कारकीया
सोयहयुक्तहैतहांजैसाप्रकरणतैसीयोग्यताइहांभावमोक्षतौअरहंतकैहै अर
द्रव्यभावकरिदोऊप्रकारसिद्धपरमेष्टीकैहैयातैंदोऊनिकूंनमस्कारजाननां ॥ ३ ॥
आगैंऐसैंनमस्कारकरिग्रंथकरनेंकीप्रतिज्ञाकरैहै ॥ गाथा ॥ णमिऊणयंतदेवंअ
णंतवरणाणदंसणंसुहं । वोच्छंपरमप्पाणंपरमपयंपरमजोईणं २ ॥ अर्थः ॥ आचार्यक
हैहैंजोसिसपूर्वोक्तदेवकूंनमस्कारकरिपरमात्मांजोउत्कृष्टशुद्धआत्मांताहिपर
मयोगीश्वरजेउत्कृष्टयोगध्यानकेधरनहारेमुनिराजतिनिप्रतिकहूंगा । कैसाहैपू
र्वोक्तदेवअनंतअरश्रेष्टजोज्ञानदर्शनतेजाकैपाईयेहै । बहुरिशुद्धहैकर्ममलक
रिरहितहै । अथवाकैसाहैपरमात्मदेवअनंतहैवरकहियेश्रेष्टज्ञानअरदर्शनजा
मैं । बहुरिकैसाहैशुद्धहैकर्ममलतैंरहितहै । बहुरिकैसाहैपरमउत्कृष्टहैपदजाका ॥ २३३

भावार्थ । इसग्रंथमैंमोक्षकूंजिसकारणतैंपावैअरजैसामोक्षपदहैतैसाताकावर्ण
नकरियेगातिसरीतितिसहीकीप्रतिज्ञाकरीहै । बहुरियोगीश्वरनिप्रतिकहियेगाया
काआसययहहैजोऐसेमोक्षपदकूंशुद्धपरमात्माकाध्यानमैंपाइयेहैतिसध्यानकी
योग्यतायोगीश्वरनिकैहीप्रधानहै गृहस्थनिकैयहध्यानप्रधाननांही ॥ ३ ॥ आगैंकहै
हैंजोजिसपरमात्माकूंकहनेंकीप्रतिज्ञाकरीतिसकूंयोगीध्यानीमुनिजांणितिसकूं
ध्यायपरमपदपावैहै ॥ गाथा ॥ जंजाणिऊणजोई । जोअत्थोजोइऊणअणवरयंअव्वा
बाहमणंतंअणोवमंहवइणिव्वाणं २ ॥ अर्थः ॥ आगैंकहैहैजोप
रमात्मांताकूंजांणिकरियोगीमुनिसयोगजोध्यानताविषैतिष्टाहुवानिरंतरतिस
परमात्मांकूंअवलअनुभवगोचरकरिनिर्वाणकूंप्राप्तहोयहै । कैसाहैनिर्वाणअ
व्याबाधहैजहांकाहूप्रकारकीबाधानांहीहै । बहुरिकैसाहैअनंतहैजाकानांसनां

हीहै। बहुरि कैसा है अनुपम है जाकूं काहू हीकी उपमां लागै नांही ॥ भावार्थ ॥ आचार्य
कहै है ऐसे परमात्मांकूं आगै कहियेगा जिसकूं मुनि ध्यांन विषै निरंतर अनुभवक
रि अर केवलज्ञान उपजाय निर्वाणकूं पावै इहां यह तात्पर्य है जो परमात्मांका ध्यांन
तैं मोक्ष होय है ॥३॥ आगैं परमात्मां कैसा है ऐसैं जनावनैं कूं आत्मांकूं तीन प्रकार क
रि दिषावै है ॥ गाथा ॥ तिपयारो सो अप्पा परमंतर बाहिरो हु देहीणं। तत्थ परो झाइ
ज्जइ अंतोवाएण चयहि बहिरप्पं ॥४॥ अर्थ ॥ सो आत्मां प्राणीनिकै तीन प्रकार है अं
तरात्मां बहिरात्मां परमात्मां ऐसैं तहां अंतरात्मांके उपाय करि बहिरात्मांकूं छो-
डि करि परमात्मांकूं ध्याइये ॥ भावार्थ ॥ बहिरात्मांकूं छोडि अंतरात्मा रूप होय पर
मात्मांकूं ध्यावणां यातैं मोक्ष होय है ॥४॥ आगैं तीन प्रकार आत्मांका स्वरूप दिषावै है
॥ गाथा ॥ अक्खाणि बाहिरप्पा अंतरप्पा हु अप्पसंकप्पो। कम्मकलंकविमुक्को प

रमप्पा भण्णए देवो ॥५॥ अर्थः ॥ अक्ष कहिए इंद्रिय स्पर्शनादिक ते तो बाह्य आत्मां है जातैं इंद्रि-
यनिकरि स्पर्श आदि विषयनिका ज्ञान होय तब लोक ऐसा ही जानै है जो इंद्रिय है सो-
ही आत्मां है ऐसैं जो इंद्रियनिकूं बाह्य आत्मां कहिये। बहुरि अंतरात्मां है सो अंत-
रंग विषै आत्मांका प्रगट अनुभव गोचर संकल्प है शरीर इंद्रियनि तैं न्यारा मनकै द्वा र
रै देषनैं जाननैं वाला है सो मैं हूं ऐसैं स्वसंवेदन गोचर संकल्प सो ही अंतरात्मां है।
बहुरि कर्म जो द्रव्यकर्म ज्ञानावरण आदिक अर भावकर्म राग द्वेष मोहादिक नोक
र्म शरीरादिक सो ही भया कलंक मल तिस करि विमुक्त रहित अनंत ज्ञानादि गुण स
हित सो परमात्मां है सो ही देव है अन्यकूं देव कहनां उपचार है ॥५॥ भावार्थ ॥ बाह्य आ-
त्मां तौ इंद्रियनिकूं कह्या अर अंतरात्मा देहमैं तिष्ठता देषना जाननां जाकै पाइये ऐ-
सा मनकै द्वारै संकल्प सो है बहुरि परमात्मां कर्मकलंकसूं रहित कह्या सो इहां ऐ

साजनायाहैंजोयहजीवहीजेतैंवाह्यशरीरादिकहीकूंआत्मांजांनैंहैतेतैंतौवहिरा
त्मांहैसंसारीहै। वहुरिजवयेहीजीवअंतरंगविषैंआत्मांकूंजांनैंहैंतवसम्यग्दृष्टीहो
यहैंतवअंतरात्मांहैअरयेहीजीवजवपरमात्मांकाध्यांनकरिकर्मकलंकसूंरहि
तहोयतवपहलैंतौकेवलग्यांनउपजायअरहंतहोयहैंपीछैंसिद्धपदकूंपावैहै इ
निदोऊहीकूंपरमात्मांकहिएहै। अरहंततौभावकलंकरहितहैं अरसिद्धद्रव्यभाव
स्वरूपदोऊप्रकारकलंकरहितहैंऐसाजांननां। आगैंकहैहैंतिसपरमात्मांकावि
शेषणकरिस्वरूपकहैहैं। गाथा। मलरहिओकलचत्तो अणिंदिओकेवलोविसुद्धप्पा परमेट्ठीपरमजिणो सिवंकरोसासओसिद्धो ६ अर्थ। परमात्मांऐसाहैंप्रथमतौ
मलहैद्रव्यकर्मभावकर्मरूपमलकरिरहितहै वहुरिकलत्यक्तकहिएशरीरकरि २२५
रहितहै वहुरिअनिंद्रियकहिएइंद्रियनिकरिरहितहैं अथवाअनिंदितकहिएका

रुप्रकारनिंदायुक्तनांहीहैं सर्वप्रकारप्रसंसायोग्यहैं। वहुरिकेवलकहियेकेवल
ज्ञांनमईहै। वहुरिविशुद्धात्मांकहिएविशेषकरिशुद्धहैआत्मांस्वरूपजाकाज्ञांनमैं
ज्ञेयकेआकारप्रतिभासैहैतौऊतिनिस्वरूपनहोयहै। तथातिनतैंरागद्वेषनांहीहै। व
हुरिपरमेष्ठीहैपरमपदविषैंतिष्ठैहै। वहुरिपरमजिनहैंसर्वकर्मकूंजीतैहै वहुरिसि
वंकरहैभव्यजीवनिकैपरममंगलतथामोक्षकूंकरैहै। वहुरिशाश्वताहैअविनाशी
है। वहुरिसिद्धहैअपनेंस्वरूपकीसिद्धिकरिनिर्वाणपदकूंप्राप्तहैं।भावार्थ। ऐसापरमा
त्मांहैऐसेपरमात्मांकाध्यांनकरैसोऐसाहीहोयहैं। आगैंसोहीउपदेशकहैहै।
गाथा। आरुहविअंतरप्पा वहिरप्पछंडिऊणतिविहेण झाइज्जइपरमप्पा उपइ
ट्ठंजिणवरिंदेहि ७ अर्थ। वहिरात्मांकूंमनवचनकायकरिछोडिअंतरात्मांकाआ
श्रयलेकरिपरमात्मांकूंध्यायजे यहजिनचंद्रतीर्थंकरपरमदेवनिनैंउपदेश्याहै। भा

वार्थ ॥ परमात्मांकाध्यांनकरनेंकाउपदेशप्रधानकरिकह्याहै यातैंमोक्षपावैहै ॥ ७ ॥
आगैंवहिरात्माकीप्रवृत्तिकहैहै ॥ गाथा ॥ वहिरत्थेफुरियमणो इंदियदारेणणियसरू
वचउणियदेहंअप्पाणंअज्झवसदिमूढदिठीउ ॥ अर्थ ॥ मूढदृष्टीअज्ञानीमोहीमिथ्या
दृष्टीहैसोवाह्यपदार्थजेधनधान्यकुटंवआदिइष्टपदार्थतिनिविषैंस्फुरितहैतत्पर
हैमनजाका वहुरिइंद्रियद्वारकरिअपनेंस्वरूपतैंच्युतहैइंद्रियनिहीकूंआपाजांनैं
है ऐसाभयासंताअपनीदेहहैताहीकूंआत्माजांनैंहै ऐसामिथ्यादृष्टीवहिरात्मा
है ॥ भावार्थ ॥ ऐसावहिरात्माकाभावहैताकूंछोडनां ॥ ८ ॥ आगैंकहैहैजोमिथ्यादृष्टीअ
पनांदेहसारिषापरदेहकूंदेषितिसकूंपरजीवकाआत्मांमांनैंहै ॥ गाथा ॥ णियदेहंसा
रिछं पिछिऊणपरविग्गहंपयतेण अच्चेयणं पिगहियंझाइज्जइपरमभावेण ॥ ९ ॥ अ २३६
र्थ ॥ मिथ्यादृष्टीपुरुषअपनांदेहसारिषापरकादेहकूंदेषिकरियहदेहअचेतनहैतौ

ऊमिथ्याभावकरिआत्मभावकरिग्रहणकरिवडायत्नकरिपरकीआत्मांकूंध्यावै
है ॥ भावार्थ ॥ वहिरात्माकैमिथ्यादृष्टीकैमिथ्यात्वकर्मकाउदयकरिमिथ्याभावहैसो
जैसैंअपनांदेहकूंआपाजांनैंहैतैसैंहीपरकादेहअचेतनहैतौऊताकूंपरकाआ
त्मांजांनिध्यावैहैमांनैंहैतामैंवडायत्नकरैहैयातैंऐसेभावकूंछोडणायहतात्पर्य
है ॥ ९ ॥ आगैंकहैहैजोऐसीहीमांनितैंपरमनुष्यादिविषैंमोहप्रवर्त्तैहै ॥ गाथा ॥ सपरा
ज्झवसाएणादेहेसुयअविदियत्थअप्पाणं सुअदाराईविसए मणुयाणंवड्ढएमोहो
अर्थ ॥ १० ॥ ऐसैंदेहविषैंस्वपरकाअध्यवसायकरिएनिश्चयताकरिमनुष्यनिकैसुतदारा
दिकवाह्यजीवनिविषैंमोहप्रवर्त्तैहै कैसेहैमनुष्यअविदितकहिएनांहीजान्यांहै
अर्थकहिएपदार्थताकाआत्मांकहिएस्वरूपज्यां ॥ भावार्थ ॥ जिनमनुष्यनिमैंजीवा
अजीवपदार्थकास्वरूपयथार्थनजांण्यांतिनिकैदेहविषैंस्वपराध्यायसायहैअप

अष्टपाहुड॰ २३७

नांदेहकूंआपकीआत्मांजानैंहै अरपरकादेहकूंपरकाआत्मांजांनैंहै तिनकैपु
त्रस्त्रीआदिकुटंबविषैंमोहममत्वहोयहै जबजीवअजीवकास्वरूपजांनैं तबदे
हकूंअजीवजांनैंआत्मांकूंअमूर्त्तीकचेतनांजानैंअपनीआत्मांकूंआपाजानैं परकी
आत्मांकूंपरजांनैं तबपरविषैंममत्वनांहीहोय तातैंजीवादिकपदार्थकास्वरूपनी
कैंजांनिमोहकैंकरनोयहजनायाहै आगैंकहैहैंजोमोहकर्मकेउदयकरिमिथ्याज्ञा
नअरमिथ्याभावहोयहैताकरिआगांमीभवविषैंभीयहमनुष्यदेहकूंचाहैहै गाथा
मिछाणाणेसुरओमिछाभावेणभाविओसंतोमोहोदयएणपुणरविअंगंसम्मणएमणु
ऐ ११ अर्थ यहमनुष्यहैसोमोहकर्मकेउदयकरिमिथ्याज्ञानकरिमिथ्याभावकरि
भायासंतापेरिभीआगामीजोजन्मविषैंभीइसअंगकूंदेहकूंसन्मांनैंहैभलापांनिच २३७
हैहै भावार्थ मोहकर्मकीप्रकृतिजोमिथ्यात्वताकेउदयकरिज्ञानभीमिथ्याहोयहै पर

द्रव्यकूंआपनांजानैंहै वहुरितिसमिथ्यातहीकरिमिथ्याश्रद्धानहोयहैताकरिनिरं
तरद्रव्यविषैंयहभावनांरहैहैजोयहमेरैसदाप्राप्तहोज्यातैंयहप्रांणीआगामीभी
देहकूंभलाजांणिचाहैहै आगैंकहैहैंजोमुनिदेहविषैंममत्वनकरैहैसोनिर्वा
णकूंपावैहै गाथा जोदेहेनिरवेरके णिद्दंदोणिममोणिरारंभोआदसहावेसुरओ
जोईसोलहइणिव्वाणं १२ अर्थ जोयोगीध्यांनीमुनिदेहविषैंनिरपेक्षहैदेहकूंनां
हीचाहैहै उदासीनहै वहुरिनिर्द्वंदहैरागद्वेषइष्टानिष्टमांनितैंरहितहै वहुरिनिर्मम
त्वहैदेहादिकविषैंयहमेराहै असीवुद्धितैंरहितहै वहुरिनिरारंभहैयादेहकेअर्थि
तथाअन्यलौकीकप्रयोजनकेअर्थिआरंभतैंरहितहै वहुरिआत्मस्वभावविषैंरत
हैलीनहै निरंतरस्वभावकीभावनांसहितहैसोमुनिनिर्वाणकूंपावैहै भावार्थ जो
वहिरात्मांकेभावकूंछोडिअंतरात्मांहोयपरमात्मांमैंलीनहोयहै सोमोक्षपावैहै

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजीइत्यास्मरणस्मारकम्

यहउपदेशजनायाहै ॥ आगैंबंधकाअरमोक्षकाकारणकासंक्षेपरूपआगमकाव
चनकहैहैं ॥ गाथा ॥ परदव्वरओवज्झइ विरओमुंचेइविविहकम्मेहिं एसोजिणउवएसोस
मासओबंधमोक्खस्स १३ ॥ अर्थः ॥ जोजीवपरद्रव्यविषैंरत्तहैरागीहैसोतौअनेकप्रकार
केकर्मनिकरिबंधहैकर्मनिकाबंधकरैहै वहुरिजोपरद्रव्यविषैंविरतहैरागीनां
हीहैंअनेकप्रकारकेकर्मतिनितैंछूटैहै यहबंधकाअरमोक्षकासंक्षेपकरिजिनदे
वकाउपदेशहै ॥ भावार्थ ॥ बंधमोक्षकेकारणकीकथनीअनेकप्रकारकरिहैताकाय
हसंक्षेपहै जोपरद्रव्यसूंरागभावसोतौबंधकाकारणअरविरागभावसोमोक्षका
कारणहै ऐसासंक्षेपकरिजिनेंद्रकाउपदेशहै ॥ आगैंकहैहैंजोस्वद्रव्यविषैंरत्त
हैसोसम्यग्दृष्टीहोयहैअरकर्मकानांशकरैहै ॥ गाथा ॥ सद्दव्वरओसवणोसम्माइट्ठीह
वेइणियमेण सम्मत्तपरिणदोउण खवेइदुट्ठट्ठकम्माइं १४ ॥ अर्थः ॥ जोमुनिस्वद्रव्यजो

अपनांआत्मांताविषैंरतहैरुचिसहितहैसोनियमकरिसम्यग्दृष्टीहै वहुरिसोहीस
म्यक्त्वभावस्वरूपपरिणमांसंताउष्टजेआठकरमतिनिकूंक्षेपैहैनांशकरैहै ॥ भावार्थ ॥
यहभीकर्मकेनांशकरणेकाकारणकासंक्षेपकथनहै जोअपनांस्वरूपकीश्रद्धारु
चिप्रतीतिआचरणकरियुक्तहैसोनियमकरिसम्यग्दृष्टीहैइससम्यक्त्वभावपरिणमां
मुनिआठकर्मकानांशकरिनिर्वाणपावैहै ॥ आगैंकहैहैंजोपरद्रव्यविषैंरत्तहैसो
मिथ्यादृष्टीभयाकर्मकूंबांधैहै ॥ गाथा ॥ जोपुणपरदव्वरओमिच्छादिट्ठीहवेइसोसाहू ॥ मि
च्छत्तपरिणदोपुणवज्झदिदुट्ठट्ठकम्मेहिं १५ ॥ अर्थः ॥ पुनःकहियावहुरिजोसाधुपरद्रव्य
विषैंरत्तहैरागीहैसोमिथ्यादृष्टीहोयहै वहुरिसोमिथ्यात्वभावस्वरूपपरिणमांसंताउ
ष्टजेअष्टकर्मतिनिकरिबंधहै ॥ भावार्थ ॥ यहबंधकाकारणकासंक्षेपहैतहांसाधुकह
नेतैंऐसाजनायाहैजोबाह्यपरिग्रहछोडिनिर्ग्रंथहोयसाधुकहावैतौऊजोपरद्रव्यसू

पपरमाणंमात्रभीसमात्रनीरागहोयतौभैमिथ्यादृष्टीभयासंताउष्टजेसंसारकेहेनेवा
लेश्रष्टकर्मतिनिवंधेहैं ॥ छ ॥ आगैसंक्षेपकरिकहैहैंजोपरद्रव्यहीतैंदुर्गतिहोयहैंअर
स्वद्रव्यहीतैंसुगतिहोयहै ॥ गाथा ॥ परदव्वादोदुग्गईसद्दव्वादोहुसुग्गईहवइ ॥ इयणाऊ
णसदव्वे कुणहरईविरइइयरम्मि ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ परद्रव्यतैंतौदुर्गतिहोयहैवहुरिस्वद्र॰
व्यतैंसुगतिहोयहै ॥ यहप्रगटजांणं ॥ तातैंहेभव्यजीवहौतुमश्रैसैंजांणिकरिस्वद्रव्यवि
षैरतिकरौ ॥ अरइतरजोपरद्रव्यतातैविरतिकरो ॥ भावार्थ ॥ लोकमैंभीयहीरीतिहैंजोश्र
पनांद्रव्यसूंरतिकरिश्रापनांहीभोगवैहैंसोसुखपावैहै ॥ ताकूंकछूश्रापदानश्रावैहै
वहुरिपरद्रव्यसूंप्रीतिकरिजैसैंतैसैंलेकरिभोगवैहैतानैदुषहोयहैश्रापदाश्रावैता
तैंश्राचार्यसंक्षेपकरिउपदेशकीयाहैंश्रपनांश्रात्मस्वभावविषैंतौरतिकरौयातैंस्वग २३९
तिहैस्वर्गादिकभीयाहीतैंहोयहै ॥ श्ररमोक्षभीयाहीतैंहोयहै ॥ वहुरिपरद्रव्यतैंप्रीतिक

रोपरद्रव्यकीप्रीतितैंदुर्गतिहोयहैसंसारमैंभ्रमणहोयहै ॥ इहांकोईकहैहैजोस्वद्रव्यमैंली
नभयेमोक्षहोयहै ॥ श्ररसुगतिदुर्गतितौपरद्रव्यहीकीप्रीतिश्रप्रीतितैंहोयहै ॥ जोपरद्र॰
व्यतौविरक्तहोयस्वद्रव्यमैंलीनहोयतवविशुद्धतावधतहोयहै ॥ तिसविशुद्धताके॰
निमित्ततैंशुभकर्मभीवंधहै ॥ श्ररश्रत्यंतविशुद्धताहोयतवकर्मकीनिर्जराहोयहै ॥ मो
क्षहोयहै ॥ तातैंसुगतिदुर्गतिकाहोनांजैसैंकह्यातैसैंयुक्तहैंश्रैसैंजांननां ॥ छ ॥ आगैंसि॰
ष्यपूछैहैंजोपरद्रव्यकैसाहैताकाउत्तरश्राचार्यकहैहैं ॥ गाथा ॥ आदसहावादण्णंसचि
ताचित्तमिस्सियंहवदि तंपरदव्वंभणियंअविदत्थंसव्वदरसीहि ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ आत्मस्वभा
वतैंश्रन्यजोकिछूसचित्ततौस्त्रीपुत्रादिकजीवसहितवस्तु वहुरिश्रचितधनधान्य॰
हिरण्यसुवर्णादिकश्रचेतनवस्तुवहुरिमिश्रश्राभूषणादिसहितमनुष्यतथाकुटंब॰
सहितग्रहादिकरासर्वपरद्रव्यहै ॥ श्रैसैंजामैंजीवाजीवादिपदार्थकास्वरूपनजांण्यां

ताकेजनावनेंकेअर्थिसर्वदर्शीसर्वज्ञभगवांननैंकह्याहै।अथवाअविदछेदकहिए
सत्यार्थकह्याहै।भावार्थ।अपनांज्ञानस्वरूपआत्मांसिवायअन्यचेतनअचेतनमिश्र
वस्तुतेसर्वहीपरद्रव्यहैंऐसैंअज्ञांनीकूंजनावनेंकूंसर्वज्ञदेवनैंकह्याहै।छ।आगैं
कहैहैंजोआत्मांस्वभावस्वद्रव्यकह्यासोऐसाहै।गाथा।दुट्ठकम्मरहियंअणोव
मंणाणविग्गहं।णिच्चंसुद्धंजिणेहिंकहियंअप्पाणंहवदिसद्दव्वं।१८।अर्थ।दुष्टजेसंसार
केदुखकेदेनेंवालेज्ञानावर्णआदिकआठकर्मतिनिकरिरहितअरजाकूंकाहूकी
उपमांनांही।ऐसेअनुपमअरज्ञांनहीहैविग्रहकहिएशरीरजाकैऐसाअरनित्यजा
कानांशनांही।अविनासीअरशुद्धविकाररहितकेवलज्ञांनमयीआत्मांजिनभग
वांनसर्वज्ञदेवनैंकह्यासोस्वद्रव्यहै।भावार्थ।ज्ञानानंदमईअमूर्त्तिज्ञांनमूर्त्तीअपनां २५०
आत्मांहैसोहीएकस्वद्रव्यहैअन्यसर्वचेतनअचेतनमिश्रपरद्रव्यहै।छ।आगैंकहैहैं

जोजेऐसेनिजद्रव्यकूंभावैहैंतेनिर्वाणपावैहैं।गाथा।जेझायदिसदव्वंपरदव्वपरमुहर
उसुचरिता।तेजिणवराणमग्गंअणुलग्गालहदिणिव्वाणं।१९।अर्थ।जेमुनिपरद्रव्यतैं
परान्मुखभयेसंतेस्वद्रव्यजोनिजआत्मद्रव्यताहिध्यावैहैं।तेप्रगटसुचरिताकहिये
निर्दोषचारित्रयुक्तभयेजिनवरतीर्थंकरनिकेमार्गकूंअनुलग्नभयेलागेसंतेनिर्वा
णकूंपावैहैं।भावार्थ।परद्रव्यकात्यागकरिजेअपनांस्वरूपकूंध्यावैहैंतेनिश्चयचारि
त्ररूपहोयजिनमार्गमोक्षपावैहैं।छ।आगैंकहैहैंजोजिनमार्गमैंलग्यायोगीशुद्धात्मांकूं
ध्यायमोक्षपावैहैंतौकहाताकरिस्वर्गनपावैपावैहीपावै।गाथा।जिणवरमएणजोई
झाणेझाएइसुद्धमप्पाणं।जेणलहइणिव्वाणं।णलहइकिंतेणसुरलोयं।२०।अर्थ।योगी
ध्यानीमुनिहैसोजिनवरभगवांनकेमतकरिशुद्धात्मांकूंध्यानविषैंध्यावैहैंताकरिनि
र्वाणकूंपावैहैताकरिकहास्वर्गलोकनपावै।भावार्थ।कोईजानैगाजोजिनमार्गमैंलर

गिआत्मांकूंध्यावैसोमोक्षपावै। अरस्वर्गतौयातैंहोयनांहीताकूंकह्याहैंजोजिनमा
र्गमैंप्रवर्त्तनेंवालाशुद्धात्मांकूंध्यायमोक्षपावैहैंतौतिसकरिस्वर्गलोककहाकठि
नहैं यहतौताकेमार्गमेंहीहै ॥ आगैंयाअर्थकूंदृष्टांतकरिदृढकरैहैं ॥ गाथा ॥ जो
जाइजोयणसंदिहहियेणिक्केणलेविगुरुभारंसोकिंकोसद्धंपिहुणसक्कएजाउंभुव
णयले २१ ॥ अर्थ ॥ जोपुरषबडाभारलेएकदिनकरिसौयोजनजायसोयाभुवनतल
विषैंआधकोशकह्यानजायययहप्रगटजांणं ॥ भावार्थ ॥ जोपुरुषबडाभारलेकरिएक
दिनमैंसौजोजनचालैताकेंआधकोसचालनांतौअतिसुगमभया। तैसैंहीजिनमार्ग
तैंमोक्षपावैतौस्वर्गपावनांतौअत्यंतसुगमहै ॥ आगैंकहैहैं अयाहीअर्थकाअन्य
दृष्टांतकहैहैं ॥ गाथा ॥ जोकोडिणरेजिप्पइसुहडोसंगाममएहिंसव्वेहिं सोकिंजिप्पइए
क्कंणरेणसंगाममएसुहडो २२ ॥ अर्थ ॥ जोकोईसुभटसंग्रामविषैंसर्वहीसंग्रामकेकरनें २४१

वालेनिकरिसहितकोडिनरनिकूंसुगमताकरिजीतैसोसुभटएकनरकूंकहान
जीतैजीतैही ॥ भावार्थ ॥ जोजिनमार्गमैंप्रवर्तैसोसर्वकर्मकानांशकरैतौकहास्वर्गका
रोकनेंवालाएकपापकर्मताकानांशनकरैकरैहीकरै ॥ आगैंकहैहैंजोस्वर्गतौत
पकरिसर्वहीपावैहैंपरंतुजोध्यांनकायोगकरिस्वर्गपावैहैसोतिसध्यांनकेयोगसूं
मोक्षभीपावैहैं ॥ गाथा ॥ सग्गंतवेणसव्वोवियावइ तहविझाणजोएण। जोपावइसो
पावइ परलोएसासयंसोक्खं २३ ॥ अर्थ ॥ स्वर्गतौतपकरिसर्वहीपावैहैं तथापिजोध्यांन
केयोगकरिस्वर्गपावैहैं सोहीध्यांनकेयोगकरिपरलोकविषैंसास्वतासुखकूंपावै
है ॥ भावार्थ ॥ कायक्लेशादिकतपतौसर्वहीमतकेधारककरैहैंतेतपस्वीमंदकषाय
केनिमित्ततैंसर्वसुखकूंपावैहैं। वहुरिजोध्यांनकरिस्वर्गपावैहैसोजिनमार्गविषैंक
ह्यातैसाध्यांनकेयोगकरिपरलोकबिषैसास्वताहैंसुखजामैंअैसानिर्वाणकूंपावैहैं

छ आगैंध्यांनकेयोगकरिमोक्षपावैहै ताकूंदृष्टांतकरिदृढकरैहै गाथा अइसोह
णजोएणंसुद्धंहेमंहवेइजहतहयकालाईलद्धीएअप्पापरमप्पाओहवदि २४ अर्थ
जैसैंसुवर्णपाषाणहैसोसोधनेकीसामग्रीकेसंबंधकरिशुद्धसुवर्णहोयहै तैसैंका
लआदिलब्धिजाद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपसामग्रीकीप्राप्तिकरियहआत्माकर्मकेसं
योगकरिअशुद्धहैसोहीशुद्धपरमात्माहोयहै भावार्थ सुगमहै छ आगैंकहैहैजोसं
सारविषैंव्रततपकरिस्वर्गहोयहैसोव्रततपभलाहै अव्रतादिकरिनरकादिकगति
होयहैसोअव्रतादिकरिश्रेष्ठनहीं गाथा वरवयतवेहिसग्गोमादुक्खंहोउणिरइइयरे
हिंछायातवट्ठियाणंपडिवालंताणगुरुभेयं २५ अर्थ व्रतअरतपइनिकरिस्वर्गहोय
है सोश्रेष्ठहै बहुरिइतरजेअव्रतअरअतपतिनिकरिप्राणीकैनरकगतिविषैंदुःख
होयहैसोयहमतिहोउश्रेष्ठनांहीछायाअरआतापकैविषैंतिष्ठनेवालेकैजेप्रतिपा

लककारणहैतिनकैबडाभेदहै भावार्थ जैसैंछायाकाकारणतौवृक्षआदिकहैति
नकीछायाकोईबैठैसोसुखपावैबहुरिआतापकाकारणसूर्यअग्निआदिकहैति
निकैनिमित्ततैंआतापहोयताविषैंबैठैसोदुःखपावैऐसैंइनिमैंबडाभेदहै तैसैंजोव्र
ततपकूंआचरैसोस्वर्गकेसुखपावै अरइनिकूंनआचरैविषयकषायादिककूंसेवै
सोनरककेदुखपावैऐसैंइनिमैंबडाभेदहै तातैंइहांकहनेकायहआसयहैजोजेतै
निर्वाणनहोयतेतैंव्रततपआदिकमैंप्रवर्त्तनांश्रेष्ठहैयातैंसंसारीकसुखकी
प्राप्तिहैअरनिर्वाणकेसाधनेविषैंभीएसहकारीहै विषयकषायनिकीप्रवृत्तिकातौ
फलकेवलनरकादिककेदुःखहैसोतिनिकेकारनकूंसेवनां यहतौबडीभूलिहैऐसा
जांननां छ आगैंकहैहैजोसंसारमैंरहैतेतैंव्रततपपालनांश्रेष्ठकह्या परंतुजोसंसारतैं
नीसरनाचाहैहैसोआत्माकूंध्यावो गाथा जोइच्छइणिस्सरिउंसंसारमहण्ण

डाक्टर भाऊदाजी स्मारक
DR. BHAU DAJI MEMORIAL

वसरूपहैतसकम्मिंधणेणाडहणं। सोझायइअप्पयंसुद्धं २६। अर्थ। जोजीवरूपकादि
येवडाविस्ताररूपजोसंसाररूपसमुद्रतातैंतिरणेंकूंचाहैहैसोजीवकर्मरूपईंधनद
हनकरनेंवालाजोसुद्धआत्मांताहिध्यावैहै। भावार्थ। निर्वाणकीप्राप्तिकर्मकानांश
होयतवहोयहै औरकर्मकानांशशुद्धात्मांकेध्यांनतैंहोयहै। सोसंसारतैंनीसरिमोक्ष
कूंचाहैहैसोसुद्धआत्मांजोकर्ममलतैंरहितअनंतचतुष्टयसहितपरमात्मांताकूंध्या
वैहैमोक्षकाउपायविनांअन्यनांहीहै। आगैंआत्मांकूंकैसैंध्यावैताकीविधिदिषा
वैहै। गाथा। सव्वेकसायमुत्तुं गारवमयरायदोसवामोहं लोयववहारविरउअप्पाझा
एहझाणत्थो २७। अर्थ। मुनिहैसोसर्वकषायनिकूंछोडिकरितथागारवमदरागद्वेष
तथामोहइनिकूंछोडिकरिअरलोकव्यवहारतैंविरक्तभयाध्यांनविषैतिष्ठ्याआ
त्मांकूंध्यावैहै। भावार्थ। मुनिआत्मांकूंध्यावैसोऐसाभयाध्यावै प्रथमतौंक्रोधमान

मायालोभएकषायहै। तिनिसर्वकूंछोडिवकरिगारवकूंछोडिवकरिमदजातिआ
दिकाभेदकरिआठप्रकारहैताकूंछोडे। वकरिरागद्वेषकूंछोडिवकरिमोहकूंछोडे
वकरिलोकव्यवहारजोसंघमैंपरस्परविनयांचारवैयावृत्तधर्मोपदेशपढनांपढाव
नांहैताकूंभीछोडेध्यांनविषैंतिष्टैऐसैंआत्मांकूंध्यावैहै। इहांकोईपूछैसर्वकषा
यकाछोडनांकह्यातामैंतौसर्वगारवमदादिकआयगये। न्यारेकाहेकूंकहे। ताका
समाधांन। ऐसाजोएसर्वकषायमैंगर्भितहैतौऊविशेषजनावनेंकूंन्यारेकहेहैं। त
हांकषायकीप्रवृत्तितौऐसैंहैजोआपकेंअनिष्टहोयतासूंक्रोधकरै। अन्यकूंनीचा
मांनिमांनकरैकाहूकार्यनिमित्तकपटकरैआहारादिविषैंलोभकरै। वकरिगार
वहैसोरसऋद्धिसातऐसैंतीनप्रकारहैसोयद्यपियेमांनकषायमैंगर्भितहैतौऊप्र
मादकीवहुलताइनिमैंहैतातैंन्यारेकहेहैं। वकरिमदजातिलाभकुलरूपतपवल

विद्यायेश्वर्यइनिकाहोयहैसोनकरै। वहुरिरागद्वेषप्रीतिअप्रीतिकूंकहिएहै। का।
हूसूंप्रीतिकरनीकाहूसेंअप्रीतिनकरनीऐसैंलक्षणकेविशेषतैंभेदकरिकह्या। व
हुरिमोहनांमपरसूंममत्वभावकाहैसोसंसारकामोहतौमुनिकैहैहीनांही। अरध
र्मरागतैंसिष्यआदिविषैंममत्वकाव्यवहारहैसोएभीछोडैऐसैंभेदविवक्षाकरिन्या
रेकहेहैंयहध्यांनकाघातकभावहैइनिकूंछोडैंविनांध्यांनहोयनांही। तातैंजैसैंध्यां
नहोयतैसैंकरै। ॥ आगैंयाहीकूंफेरिविशेषकरिकहैहैं। गाथा। मिछतंअणाणंपावं
पुण्णंचएइतिविहेणमोणव्वएणजोईजोयछ्योजोयएअप्पा। २८। अर्थ। योगीध्यांनीमुनि
हैसोमिथ्यात्वअज्ञांनपापपुण्यइनिकूंमनवचनकायकरिछोडिमौंनिव्रतकरिध्यां।
नविषैंतिष्ठ्याआत्मांकूंध्यावैहै। भावार्थ। केईअन्यमतीयोगीध्यांनीकहावैहैंतयाजैंन २४४
लिंगीभीकोईद्रव्यलिंगधारेंहोयताकेनिषेधनिमित्तऐसैंकह्याहैजोमिथ्यात्वअरअ।

ज्ञांनकूंछोडिआत्मांकास्वरूपयथार्थजांनिश्रद्धांनजानैंनकीयाताकैमिथ्यात्वअज्ञा
नतौवन्यांरह्यातवध्यांनकाहेकाहोय वहुरिपुन्यपापदोऊवंधस्वरूपहैं इनिविषैंप्री
तिअप्रीतिरहैजेतैंमोक्षकास्वरूपजांन्यांनांहीतवध्यांनकाहेकाहोय वहुरिजोमन।
वचनकायकीप्रवृत्तिछोडिमौंनिनकरैतौएकाग्रताकैसैंहोयतातैंमिथ्यात्वअज्ञांन
पुंण्यपापमनवचनकायकीप्रवृत्तिछोडणांध्यांनविषैंयुक्तकह्याहैऐसैंआत्माकूं।
ध्यायेंमोक्षहोयहै। ॥ आगैंकहैहैंध्यांनकरनेवालामौंनिकरितिष्टैहैसोकहैहैं। गाथा।
जंमयदिस्सदिरूवंतंणजणादिसव्वहाजाणगंदिस्सदेणंतंतम्हाजंपेमिकेणहं। २९। अ
र्थ। जारूपकूंमैंदेषूं हूंसोरूपमूर्तीकवस्तुहैजडहैअचेतनहैसर्वप्रकारकरिकिछूही
जांनैनांहीहै अरमैंज्ञायकहूंसोअमूर्तीकहौंयहजडरूपीमोकूंदेषैनांहीहै। तातैंमैंकौ
नसूंवोलूं। भावार्थ। जोदूजाकोईपरस्परवातकरनेवालेहोयतौपरस्परवोलनासंभवै

सोआत्मातौअमूर्त्तीकर्ताकैबचनबोलनांनांहीजोरूपीपुद्गलहैंसोअचेतनहैंसो
किछूजानैंनांहीदेखैनांहीतातैंध्यांनकरनैंवालाकहैहैंमैंकौनसूंबोलूंतातैंमेरैमौं
निहैं ॥ आगैंकहैहैंजोऐसैंध्यांनकरतैंसर्वकर्मकाआश्रवकानिरोधकरिसंचित
कर्मकानाशकरैहैं गाथा सव्वासवणिरोहेण कम्मंखवदि संचिदं जोयत्थोजाणए
जोई नजिणदेवेणभासियं ३० अर्थ योगध्यानविषैंतिष्ठ्यायोगीमुनिहैंसोसर्वकर्मका
आश्रवकानिरोधकरिसंवरयुक्तभयापूर्वैंबांधेजेकर्मतेसंचयरूपहैंतिनिकाक्षय
करैहैं ऐसैंजिनदेवनैंकह्याहैंसोजांणिये भावार्थ ध्यांनकरिकर्मकाआश्रवरूकैया
तैंआगांमीबंधहोयनांही अरपूर्वसंचेकर्मकीनिर्जराहोयहै केवलग्यांनउपजाय
मोक्षप्राप्तिहोयहै यहआत्मांकेध्यांनकामहात्म्यहैं ॥ आगैंकहैहैंजोव्यवहारमैंतत्प
रहैंताकैयहध्यांननांही गाथा जोसुत्तोववहारेसोजोईजग्गएसकज्जम्मि जोजग्गदिव

हारेसोसुत्तोअप्पणोकज्जे ३१ अर्थ जोजोगीध्यांनीमुनिव्यवहारविषैंसूताहैसोमुनि
अपनांस्वरूपकाकार्यविषैंजागैहैं बहुरिजोव्यवहारविषैंजागैहैंसोअपनांआत्मका
र्यविषैंसूताहैं भावार्थ मुनिकैंसंसारीकव्यवहारतौकिछूहैनांहीअरजोहैतौमुनि
काह्रैकापांयमीहैं बहुरिधर्मकाव्यवहारसंघमैंरहनांमहाव्रतादिकपालनां ऐसे
व्यवहारमैंभीजोतत्परनांहीहैंसर्वप्रवृत्तिकीनिवृत्तिकरिध्यांनकरैहैंसोव्यवहार
मैंसूताकहिए अरआत्मस्वरूपमैंलीनभयादेखैजांनैंहैसोअपनेंआत्मकार्यमैंजागै
हैं बहुरिजोइसव्यवहारहीमैंतत्परहैसावधांनहैंस्वरूपकीदृष्टिनांहीहैसोव्यव
हारमैंजागताकहिए ऐसामुनिऐसाकार्यमैंसूताहैऐसैंकहिए ॥ आगैंयहकहैहैं
जोयोगीपूर्वोक्तकथनकूंजांणिव्यवहारकूंछोडिआत्मकार्यकरैहैं गाथा इयजाणि
ऊणजोईववहारंचयइसव्वहासव्वं झायइपरमप्पाणंजहभणियंजिणवरिंदेण ३२

अर्थ ऐसैंपूर्वोक्तकथनकूंजांणिकरिजोगीध्यांनीमुनिहैसोसर्वव्यवहारकूंसर्वप्र-
कारछोडैहै अरपरमात्मांकूंध्यावैहैकैसैंध्यावैहैजैसैंजिनवरेंद्रतीर्थंकरसर्वज्ञदेव
नैंकह्याहैतैसैंध्यावैहै भावार्थ सर्वथासर्वप्रकारव्यवहारकूंछोडनांकह्याताकातै
आशययहजोलोकव्यवहारतथाधर्मव्यवहारसर्वहीछोडैंध्यांनहोयहै अरजैसैंजि
नदेवनैंकह्यातैसैंपरमात्मांकाध्यांनकरनांकह्यासोअन्यमतीपरमात्माकास्वरूप-
अन्यप्रकारअन्यथाकहैहै ताकाध्यांनकाभीअन्यथाउपदेशकरैहैताकौनिषेधहै
जिनदेवनैंपरमात्माकातथाध्यानकास्वरूपकह्यासोसत्यार्थहैप्रमांणभूतहैतैसैंहि
योगीश्वरकरैहैतेहीनिर्वाणकूंपावैहै आगैंजिनदेवनैंध्यानअध्ययनकीप्रवृत्ति-
कहीहैतैसैंउपदेशकरैहै गाथा पंचमहव्वयजुत्तोपंचसमिदीसुतीसुगुत्तीसुरयणत्त २४६
यसंजुत्तो झाणज्झयणंसयाकुणह ॥ २३ ॥ अर्थ आचार्यकहैहैंजोपंचमहाव्रतकरियुक्त

भयावहुरिपंचसमितितीनगुप्तिइनिविषैंयुक्तभयावहुरिसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रजोर
त्नत्रयतिसकरिसंयुक्तभयाहेमुनिजनहौतुमध्यांनअरअध्ययनशास्त्रकाअभ्यासता
हिकरौ भावार्थ अहिंसासत्यअस्तेयब्रह्मचर्यपरिग्रहत्यागएतौपांचमहाव्रतअरई
र्याभाषा एषणाआदाननिक्षेपणप्रतिष्ठापनाएपांचसमितिअरमनवचनकायका-
निग्रहरूपतीनगुप्तियहतेरहप्रकारचारित्रजिनदेवनैंकह्याहैतिसकरियुक्तहोयअर
निश्चयव्यवहाररूपरत्नत्रयसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकह्याहैइनिकरियुक्तहोयध्यांन
अरअध्ययनकरनेंकाउपदेशहै तहांप्रधानतौध्यांनहीहैअरतिसमैंमनथंभैतवशास्त्र
काअभ्यासमैंमनलगावैयहभीध्यांनतुल्यहैजातैंशास्त्रमैंपरमात्माकास्वरूपकानि
र्णयहैसोयहध्यानहीकाअंगहै आगैंकहैहैजोरत्नत्रयकूंआराधैहैसोजीवआराध
कहीहै गाथा रयणत्तयमाराहंजीवोआराहओमुणेयव्वो आराहणाविहाणंतस्सफ-

लंकेवलंणाणं ३४ अर्थ रत्नत्रयजोसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रताहिआराधताजीवहैसो
आराधकजांननां अरजोआराधनाकाविधानहैताकाफलकेवलज्ञानहै भावार्थः
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकूंआराधैहैसोकेवलज्ञानकूंपावैहै यहजिनागममैंप्रसि
द्धहै छ आगैकहैहैंजोशुद्धआत्माहैसोकेवलज्ञानहैअरकेवलज्ञानहैसोशुद्धात्मा
है गाथा सिद्धोसुद्धोआदासव्वेण्हूसव्वलोयदरसीयसोजिणवरेहिंभणिओजाणितुमं
केवलंणाणं ३५ अर्थः आत्माजिनवरसर्वज्ञदेवनैंऐसाकह्याहैकैसाहैसिद्धहैकाहू
करिनिपज्यानांहीहैस्वयंसिद्धहै बहुरिशुद्धहैकर्ममलतैंरहितहै बहुरिसर्वज्ञहैसर्व
लोकालोककूंजानैंहै बहुरिसर्वदर्शीहैसर्वलोकअलोककूंदेषैहैऐसाआत्माहै
सोहेमुनितिसहीकूंतूकेवलज्ञानजांणिअथवातिसकेवलज्ञानहीकूंआत्माजांनि २४७
आत्मामैंअरज्ञानमैंकिछूप्रदेशभेदहैनांहीगुणगुणीभेदहैसोगौणहैयाआराधना

काफलपूर्वैंकेवलज्ञानकह्यासोहै छ आगैंकहैहैंजोयोगीजिनदेवकेमतकरिरत्नत्र
यकूंआराधैहैसोआत्माहीकूंध्यावैहै गाथा रयणत्तयंपिजोईआराहइजोहुजिणव
रमएणसोझायदिअप्पाणंपरिहरदिपरंणसंदेहो ३६ अर्थः जोयोगीध्यांनीमुनिजि
नेश्वरदेवकेमतकीआज्ञाकरिरत्नत्रयसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकूंनिश्चयकरिआराधै
हैसोप्रगटपणैंआत्माहीकूंध्यावैहै जातैंरत्नत्रयआत्माकागुणहैअरगुणगुणीमैंभेदनां
हीरत्नत्रयकाआराधनहैसोआत्माहीकाआराधनहैसोहीपरद्रव्यकूंछोडैहैयामैं सं
देहनांही भावार्थ सुगमहै छ आगैंपूछ्याजोआत्मांविषैरत्नत्रयकैसैंहैताकाउत्तर
आचार्यकहैहैं गाथा जंजाणइतंणाणंजंपिछइतंचदंसणंणेयं तंचारित्तंभणियंप
रिहारोपुण्णपावाणं ३७ अर्थ जोजाणैंसोज्ञानहैजोदेषैसोदर्शनहै बहुरिजोपुण्य
अरपापकापरिहारहैसोचारित्रहैऐसैंजांननां भावार्थ इहांजांननेंवालाअरदेषनें

डॉक्टर भाऊदाजी ... Dr. B... MEMORIAL

अष्टपाहुड़ वाला दर्शन ज्ञान चारित्र कूं कह्या सो एतौ गुणी के गुण हैं ते कर्त्ता होय नहीं याते जांननां
२४८ देषनां त्यागन क्रिया का कर्त्ता आत्मां है याते ए तीनूं आत्मां ही है गुण गुणी मैं किछू प्रदेश
भेद है नांही ऐसैं रत्नत्रय है सो आत्मां ही है ऐसैं जांननां ॥ आगैं इस ही अर्थ कूं अन्य प्र
कार करि कहै हैं ॥ गाथा ॥ तच्चरुई सम्मत्तं तच्चग्गहणं च हवइ सण्णाणं। चारित्तं परिहारो प
रूपियं जिणवरिंदेहिं ३८ ॥ अर्थ ॥ तत्त्वरुचि है सो सम्यक्त्व है तत्त्व का ग्रहण है सो सम्यग्ज्ञा
न है परिहार है सो चारित्र है ऐसैं जिनवरेंद्र तीर्थंकर सर्वज्ञ देव नैं कह्या है ॥ भावार्थ ॥ जी
व अजीव आस्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष इनि तत्त्वनि का श्रद्धान रुचि प्रतीति सो सम्यग्दर्श
न है बहुरि तिनि ही का जांननां सो सम्यग्ज्ञान है बहुरि परद्रव्य का परिहार तिस संबंधी
क्रिया की निवृत्ति सो चारित्र है ऐसैं जिनेश्वर देव नैं कह्या है इनि कूं निश्चय व्यवहार नय २४८
करि आगम कै अनुसार साधणां ॥ आगैं सम्यग्दर्शन कूं प्रधान करि कहै है ॥ गाथा ॥ दंस

१६

णसुद्धो सुद्धो दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं। दंसणविहीणपुरिसो ण लहइ तं इच्छियं लाहं ३
९ ॥ अर्थ ॥ जो पुरुष सम्यग्दर्शन करि शुद्ध है सो ही शुद्ध है जातैं दर्शनशुद्ध है सो निर्वाण कूं पा
वै है ॥ भावार्थ ॥ लोक मैं नीय हू प्रसिद्ध है जो कोई पुरुष किछू वस्तु चाहै ता की रुचि प्रतीति श्र
द्धान न होय तौ ता की प्राप्ति न होय तैसैं ही अपनां स्वरूप रूप तत्त्व की रुचि प्रतीति श्रद्धान
न होय तौ ता की प्राप्ति न होय यातैं सम्यग्दर्शन ही निर्वाण की प्राप्ति विषैं प्रधान है ॥ आ
गैं कहै हैं जो ऐसा सम्यग्दर्शन का ग्रहण का उपदेश सार है ता कूं जो मांनै है सो ही सम्य
क्त्व है ॥ गाथा ॥ इय उवएसं सारं जरमरणहरं खु मण्णए जं तु। तं सम्मत्तं भणियं समणाणं साव
याणं पि ४० ॥ अर्थ ॥ इति कहिए ऐसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र का उपदेश है जरा मरण का
हरणें वाला है तहां वा कूं जो मांनै है श्रद्धै है सो ही सम्यक्त्व है सो कह्या है सो मुनिनि कूं त
था श्रावकनि कूं सर्व ही कूं कह्या है जो सम्यक्त्व पूर्वक ज्ञान चारित्र कूं अंगीकार करो ॥

भावार्थ जीवके जेते भाव हैं तिनिमैं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र सार हैं उत्तम हैं जीवके हि
तू हैं वहुरि तिनिमैं भी सम्यग्दर्शन प्रधान है जातैं या विना ज्ञान चारित्र भी मिथ्या कहावे
हैं तातैं सम्यग्दर्शनकूं प्रधानकरि पहलै अंगीकार करनां यह उपदेश मुनिकूं तथा श्रा
वककूं सर्वहीकूं है ॥ ३१ ॥ आगैं सम्यग्ज्ञानका स्वरूप कहै हैं ॥ गाथा ॥ जीवाजीवविहत्ती जो
ई जाणेइ जिणवरमएण । संसण्णाणं भणियं अवियत्थं सव्वदरसीहिं ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ जो योगी मु
नि जीव अजीव पदार्थका भेद जिनवरके मतकरि जांणै है सो सम्यग्ज्ञान सर्वदर्शी सर्व
का देषनेवाला सर्वज्ञ देवनैं कह्या है सो ही सत्यार्थ है अन्य छद्मस्थका कह्या असत्या
र्थ हैं ॥ भावार्थ ॥ सर्वज्ञ देव जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल ए छह द्रव्य कहे हैं तिनिमैं
जीव तौ दर्शनज्ञानमई चेतनास्वरूप कह्या है अर मूर्तीक स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द इनितैं ॥ २५९
रहित है अर पुद्गल आदि पांच अजीव कहे हैं ते अचेतन हैं जड हैं तिनिमैं पुद्गल स्पर्श रस

गंध वर्ण शब्द सहित मूर्तीक है इंद्रियगोचर है अन्य अमूर्तीक हैं तहां आकाश आदि च्यारि
तौ जैसे हैं तैसे तिष्ठै हैं अर जीव पुद्गलकै तौ अनादि संबंध है छद्मस्थकै इंद्रियगोचर पुद्ग
ल स्कंध हैं तिनिकूं ग्रहणकरि रागद्वेषमोहरूप परिणमै है शरीरादिकूं आपा मांनै है त
था इष्ट अनिष्ट मांनि रागद्वेषरूप होय यातैं नवीन पुद्गल कर्मरूप होय बंधकूं प्राप्त होय है
यह निमित्तनैमित्तिक भाव है ऐसें यह जीव अज्ञानी भया संता जीव पुद्गलका भेद न जांनि
मिथ्याज्ञानी होय है यातैं आचार्य कहै हैं जो जिनदेवके मततैं जीव अजीवका भेद जांनि स
म्यग्ज्ञानका स्वरूप जांननां वहुरि यह जिनदेव कह्या सो ही सत्यार्थ है प्रमांणनयकरि ऐ
सें ही सिद्ध होय है जातैं जिनदेव सर्वज्ञ है सो सर्व वस्तुकूं प्रत्यक्ष देषिकरि कह्या है अन्य
मती छद्मस्थ हैं तिनिनैं अपनी बुद्धिमैं आया तैसें कल्पनांकरि कह्या है सो प्रमांणसिद्ध
नांही ते केई वेदांती तौ एक ब्रह्ममात्र कहै हैं अन्य कछू वस्तु भूत नांही मायारूप अवस्तु है

ऐसें मांनें हैं अर केई नैयायिक वैशेषिक जीवकूं सर्वथा नित्य सर्वगत कहै हैं जीवकै अ
र ज्ञान गुणकै भेद सर्वथा मानै हैं अर अन्य कार्य मात्र हैं तिनिकूं ईश्वर करै है ऐसें मांनें हैं
बहुरि केई सांख्यमती पुरुषकूं उदासीन चैतन्य स्वरूप मांनि सर्वथा अकर्त्ता मांनें हैं ज्ञान
कूं प्रधानका धर्म मानें हैं केई बौद्धमती सर्ववस्तुकूं क्षणिक मांनें हैं सर्वथा अनित्य मांनें
हैं तिनिमैं भी मतभेद अनेक हैं केई विज्ञानमात्र तत्व मांनें हैं केई सर्वथा शून्य मांनें हैं के
ई अन्य प्रकार मांनें हैं बहुरि मीमांसक कर्मकांड मात्र ही तत्व मांनें हैं जीवकूं अणुमात्र
मांनें हैं तौऊ कि छू परमार्थ नित्य वस्तु नांही इत्यादि मांनें हैं बहुरि चार्वाकमती जीवकूं
तत्व मांनें हैं नांही पंचभूततैं जीवकी उत्पत्ति मांनें हैं इत्यादि बुद्धिकल्पित तत्व मांनि पर
स्पर विवाद करै हैं सो युक्त नांही हैं वस्तुका पूर्णरूप दीखै नांही तब जैसें अंध हस्तीका वि
वाद करै तैसें विवाद ही होय तामैं जिनदेव सर्वज्ञ हैं वस्तुका पूर्णरूप देख्या है सो ही कह्या

है सो प्रमांण नयनिकरि अनेकांत स्वरूप सिद्ध होय है सो इनिकी चरचा हेतुवादके न्या
यशास्त्र हैं तिनितैं जाणी जाय है यातैं यह उपदेश है जिनमतमैं जीवाजीवका स्वरूप स
त्यार्थ कह्या है ताकूं जांणैं सो सम्यग्ज्ञान है ऐसा जांनि जिनदेवकी आज्ञा मांनि सम्यग्ज्ञा
नकूं अंगीकार करनां याहीतैं सम्यक्चारित्रकी सिद्धि होय है ऐसें जांननां आगें स
म्यक्चारित्रका स्वरूप कहै हैं गाथा जं जाणिऊण जोई परिहारं कुणइ पुण्णपावाणं
तं चारित्तं भणियं अवियप्पं कम्मरहिएणं ४२ अर्थ योगी ध्यानी मुनि है सो तिस पूर्वोक्त
जीवाजीवका भेदरूप सत्यार्थ सम्यग्ज्ञान ताहि जांणि करि अर पुण्य अर पाय इनि दोऊ
का परिहार करै त्याग करै सो चारित्र घातिकर्म रहित जो सर्वज्ञदेव तानैं कह्या है कैसा
है निर्विकल्प है सर्व प्रवृत्तिरूप जे क्रियाके विकल्प तिनिकरि रहित है भावार्थ चारित्र
निश्चय व्यवहार भेदकरि दोय भेदरूप है तहां महाव्रत समिति गुप्तिके भेदकरि कह्या

हैसोतौव्यवहारहैतिनिमैंप्रवृत्तिरूपक्रियाहैसोशुभकर्मरूपबंधकरैहैअरइनिक्रि
यानिमैंजेताअंशनिवृत्तिहैताकाबंधफलनांहीहै।ताकाफलकर्मकीदेशनिर्जराहै
अरसर्वक्रियातैंरहितअपनांआत्मस्वरूपहोनांसोनिश्चयचारित्रहैताकाफलकर्म
कानांशहीहैसोयहपुण्यपापकेपरिहाररूपनिर्विकल्पहैपापकातौत्यागमुनिकैहै
हीअरपुन्यत्यागऐसैंहैजोशुभक्रियाकापुण्यकर्मकाबंधहैताकीवांछानांहीहैबंध
केनांशकाउपायनिर्विकल्पनिश्चयचारित्रकाप्रधानउद्यमहैऐसैंइहांनिर्विकल्पपु
ण्यपापकरिरहितऐसानिश्चयचारित्रकह्याहै।चौदमांगुणस्थानकैअंतसमयपूर्ण
चारित्रहोयहैतिसतैंलगताहीमोक्षहोयहैऐसासिद्धांतहै॥७॥आगैंकहैहैजोऐसैंर
त्नत्रयसहितभयातपसंयमसमितिपालताशुद्धात्मांकूंध्यावतामुनिनिर्वाणपावैहै॥ २५१
गाथा॥जोरयणत्तयजुत्तोकुणइतवंसंजदोसमतीय।सोपावइपरमपयंझायंतोअप्पयं

सुद्धं॥४३॥अर्थ॥जोमुनिरत्नत्रययुक्तभयासंयमीअपनीशक्तिसारूतपकरैहैसोशुद्धआ
त्मांकूंध्यावतासंतापरमपदजोनिर्वाणताहिपावैहै॥भावार्थ॥जोमुनिसंयमीपंचमहाव्र
तपांचसमितितीनगुप्तियहतेराप्रकारचारित्रसोहीप्रवृत्तिरूपव्यवहारचारित्रसंयम
ताकूंअंगीकारकरिअरपूर्वोक्तप्रकारनिश्चयरत्नत्रयकरियुक्तभयाअपनीशक्तिसारू
उपवासकायक्लेशादिबाह्यतपकरैहैसोमुनिअंतरंगतपजोध्यानताकरिशुद्धआत्मां
कूंएकाग्रचित्तकरिध्यावतासंतानिर्वाणकूंपावैहै॥८॥आगैंकहैहैजोध्यानीमुनिऐसा
भयापरमात्मांकूंध्यावैहै॥गाथा॥तिहिंतिण्णिधरविणिच्चंतियरहिउतहतिएणपरिउ
दोदोसविप्पमुक्कोपरमप्पाझायइ॥४४॥अर्थ॥त्रिभिकहिएमनवचनकायकरितीनकहि
एवर्षाशीतउष्णतीनकालयोगतिनस्थिरिकरिबहुरित्रिरहितकहिएमायामिथ्यानि
दानइनितीनशल्यकरिरहितभयातथात्रयेणपरिकरित:कहिएदर्शनज्ञानचारित्र

करिमंडितभयावज्जरिहोयरागद्वेषतेईभयेदोषतिनिकरिरहितभयायोगीध्यांनीमुनिहैं
जोपरमात्मांजोसर्वकर्मरहितशुद्धपरमात्मांताकूंध्यावैहैं भावार्थ मनवचनकायकरि
तीनकालयोगधरिपरमात्मांकूंध्यावैसोऐसेकष्टमैंदृढरहैंतवजांणियेयाकैध्यांनकी
सिद्धिहैंकष्टआयेंचिगिजायतवध्यानकीसिद्धिकाहेकी वज्जरिकोईप्रकारकीचित्तमैं
शल्परहैतवचित्तएकाग्रहोयनांहीतवध्यांनकैसैंहोयतातैंशल्परहितकह्या वज्जरि
श्रद्धांनआचरणयथार्थनहोयतवध्यांनकाहेकातातैंदर्शनज्ञांनचारित्रमंडितकह्या
वज्जरिरागद्वेषइष्टअनिष्टवुरेहैं तवध्यांनकैसैंहोयतातैंपरमात्मांकाध्यांनकरैसोऐ
साहोयकरैयहतात्पर्यहै ॥छ॥ आगैंकहैहैंजोऐसाहोयसोउत्तमसुखकूंपावैहैं गाथा
मयमायकोहरहिओलोहेणविवज्जिओयजोजीवणिम्मलसहावजुत्तोसोपावइउत्तमं २५२
सोक्खं ४५ अर्थ जोजीवमदमायाक्रोधइनिकरिरहितहोय वज्जरिलोभकरिविशेषक

रिरहितहोययसोजीवनिर्मलविसुद्धस्वभावयुक्तभयाउत्तमसुखकूंपावैहैं भावार्थ लो
कमैंऐसेहैंजोमदकहियेअतिमांनीवज्जरिमायाकपटअरक्रोधइनिकरिरहितहोयअ
रलोभकरिविशेषरहितहोयसोसुखपावैहैंतीव्रकषाईअतिआकुलतायुक्तहोय
निरंतरदुःखीरहैहैं सोयहरीतिमोक्षमार्गमैंभीजांणंजोक्रोधमांनमायालोभच्यारिक
षायनितैंनिरंतरहोयहैं तवनिर्मलभावहोयतवयथाख्यातचारित्रपावैउत्तमसुख
पावैहैं ॥छ॥ आगैंकहैहैंजोविषयकषायनिमैंआशक्तहैंपरमात्मांकीभावनांतैंरहितहैं
रौद्रपरिणांमीहैंसोजिनमतसूंपरान्मुखहैंसोमोक्षकेसुषनिकूंनांहीपावैहैं गाथा
विसयकसायहिजुदोरुद्दोपरमप्पभावरहियमणोसोणलहइसिद्धिसुहंजिणमुद्द
परम्मुहोजीवो ४६ अर्थ जोजीवविषयकषायनिकरियुक्तहैं वज्जरिरुद्रपरिणांमी
होयहिंसादिकविषयकषायादिपापनिविषैंहर्षसहितप्रवर्तैहै वज्जरिपरमात्मांकी

Dr BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्

अष्टपाहुड· भावनांकरि रहित है चित्त जाका ऐसा जीव जिनमुद्रासूं पराङ्मुख है सो ऐसा सिद्धसु
२५२ ख जो मोक्षका सुख ताहि नाही पावै है ॥ भावार्थ ॥ जिनमतमैं ऐसा उपदेश है जो हिंसादि
पापनितैं विरक्त अर विषयकषायनिमैं आशक्त नांही अर परमात्माका स्वरूप जांणि
तिसकी भावनासहित जीव होय है सो मोक्ष पावै है तातैं जिनमतकी मुद्रासूं जो पराङ्मु
ख है ताकै काहेतैं मोक्ष होय है ते संसारही मैं भ्रमै है ॥ इहां रुद्र विशेषण कीया है ताका
ऐसा भी आशय है जो रुद्र ग्यारह होय है ते विषयकषायनिमैं आशक्त होय जिनमुद्रा
तैं भ्रष्ट होय है ताकै मोक्ष न होय है ताकी कथा पुरांणनितैं जांननी ॥ आगैं कहै है जो
जिनमुद्रातैं मोक्ष होय है सो यह मुद्रा जिनि जीवनिकूं न रुचै है ते संसारही मैं तिष्ठै है ॥ गा
था ॥ जिणमुद्दं सिद्धिसुहं हवेइ णियमेण जिणवरुद्दिट्ठं । सिविणे वि ण रुच्चइ पुण जीवा २५२
अच्छंति भवगहणे ॥ ४७ ॥ अर्थ ॥ जिनमुद्रा है सो ही सिद्धिसुख है मुक्तिसुख ही है यह कार

२१

ण विषैं कार्यका उपचार जांननां जिनमुद्रा मोक्षका कारण है मोक्षसुख ताका कार्य है
कैसी है जिनमुद्रा जिनभगवांननैं जैसी कही है तैसी है ॥ तहां ऐसी जिनमुद्रा जो जीवकूं
साक्षात् तौ दूरि रहौ स्वप्नाविषैं भी कदाचित् न रुचै है ताका सुपना आवै तब अवज्ञा आ
वै है तौ सो जीव संसाररूप गहनवन विषैं तिष्ठै है मोक्षके सुखकूं नही पावै है ॥ भावार्थ ॥
जिनदेवभाषित जिनमुद्रा मोक्षका कारण है सो मोक्षरूप ही है जातैं जिनमुद्राके धारक
वर्त्तमानमैं भी स्वाधीन सुखकूं भोगवै है ॥ अर पीछैं मोक्षके सुख पावै है ॥ अर जो जीवकूं य
ह न रुचै है सो मोक्ष नांही पावै है संसारही मैं रहै है ॥ आगैं कहै है जो परमात्माकूं ध्या
वै है सो योगी लोभरहित होय नवीन कर्मका आश्रव नांही करै है ॥ गाथा ॥ परमप्पा झा
यंतो जोई मुच्चेइ मलदलोहेण । णादियदि णवं कम्मं णिद्दिट्ठं जिणवरिंदेहिं ॥ ४८ ॥ अर्थ ॥
जो योगी ध्यांनी मुनि परमात्माकूं ध्यावता संता प्रवर्त्तै है सो मलका देनहारा लोभकषा

यताकरिछोडिएहैंताकैलोभमलनलागैहैयाहीतैंनवीनकर्मकाआश्रवताकैनहोय
हैंयहजिनवरेंद्रतीर्थंकरसर्वज्ञदेवनैंकह्याहैं भावार्थ मुनिभीहोयअरुपरजनमसं
बंधीख्यातिकालोभीहोयनिदांनकरैताकैपरमात्माकाध्यांननांहीयातैंजोपरमात्मांका
ध्यांनकरैताकैइसलोकपरलोकसंबंधीपरद्रव्यकाकिछूभीलोभनहोयहैयाहीतैंता
कैनवीनकर्मकाआश्रवनहोयहै यहजिनदेवकहीहैयहलोभकषायऐसाहैजोदश
मगुणस्थांनतांईपहुंचिअव्यक्तहोयभीआत्माकैमललगावैहातैंयाकांकाटनांहीयु
क्तहै अथवाजहांतांईमोक्षकीचाहिरूपलोभरहैतहांतांईमोक्षनहोयतातैंलोभकाअ
त्यंतनिषेधहै ॥ आगैंकहैहैंजोऐसेंनिर्लोभीहोयदृढसम्यक्त्वज्ञांनचारित्रवांनहोय
परमात्मांकूंध्यावैहै गाथा होऊण दिढचरित्तोदिढसमत्तेण भावियमईउ झायंतोअ
प्पाणंपरमपयंपावएजो ४९ अर्थ ऐसेंपूर्वोक्तप्रकारयोगीध्यांनीमुनिदृढसम्यक्त्वक

रिभावितहैमतिजाकीबहुरिदृढहैचारित्रजाकैऐसाहोयकरिआत्मांकूंध्यावता
संतापरमपदजोपरमात्मांपदताकूंपावैहै भावार्थ सम्यग्दर्शनज्ञांनचारित्ररूपदृढ
होयपरीसहआयेंनचिगैंऐसैंआत्मांकूंध्यावैसोपरमपदपावैयहतात्पर्यहै ॥ आ
गैंदर्शनज्ञांनचारित्रतैंनिर्वाणहैऐसाकहैतैंआएसोतहांदर्शनज्ञांनतौजीवका
स्वरूपहैतेजांणैंयहचारित्रकहाहै ऐसीआशंकाकाउत्तरकहैहैं गाथा चरणंहव
इसधम्मोधम्मोसोहवइअप्पसमभावोसोरायरोसरहिउजीवस्सअणण्णपरिणामो
५० अर्थ स्वधर्मकहियेआत्मांकाधर्मसोचरणकहिएचारित्रहै बहुरिधर्महैसोआ
त्मसमभावहै सर्वजीवनिविषैंसमांनभावहै जोअपनांधर्महैसोहीसर्वजीवनिमैंहै
अथवासर्वजीवनिकूंआपसमांनमांननांहै बहुरिजोआत्मसमभावसोरागद्वेषक
रिरहितहै काहूतैंइष्टअनिष्टबुद्धिनांहीहै ऐसाचारित्रहैसोजैसेंजीवकेदर्शनज्ञांन

हैं तैसैं ही अन्य परिणांम है जीव ही का भाव है। भावार्थ। चारित्र है सो ज्ञान विषैं रागद्वेष रहित निराकुलरूप थिरताभाव है सो जीव ही का अभेदरूप परिणांम है किछू अन्य वस्तु नांही है ॥ छ ॥ आगैं जीव के परिणांम कै स्वछता कों दृष्टांत करि दिषावै है ॥ गाथा ॥ जह फलिहमणि विसुद्धो परदव्वजुदो हवेइ अण्णं सो तह रागादिविजुत्तो जीवो हवदि हु अणण्णविहो ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ जैसैं फटिकमणि विशुद्ध है उज्जल है सो परद्रव्य जो पीत रक्त हरित पुष्प रदिक तिनि करि युक्त भया अन्य सा दीषै पीतादिक वर्णमयी दीषै तैसैं जीव है सो विशुद्ध है स्वछस्वभाव है सो राग है सो राग द्वेषादि भाव करि युक्त भया संता अन्य अन्य प्रकार भया दीषै है यह प्रगट है ॥ भावार्थ ॥ इहां ऐसा जांनना जो रागादिक विकार पुद्गल का विकार है अरु यह जब जीव के ज्ञान विषैं आय झलकै तब तिनि तैं उपयुक्त भया ऐसैं जांनैं जो ए भाव मेरे ही हैं तिनिका भेदज्ञांन न होय तब जीव अन्य अन्य प्रकार रूप अनुभव मैं आवै है।

तहां फटिकमणि का दृष्टांत है ताकै अन्य द्रव्य पुष्पादिक का डंक लागै तब अन्य सा दीषै है ऐसैं जीव के स्वछस्वभाव की विचित्रता जांननी याही तैं ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो जेतैं मुनि कै रागअंश होय है तेतैं सम्यग्दर्शन कूं धारता भी ऐसा होय है ॥ गाथा ॥ देवगुरुम्मि य भत्तो साहम्मियसंजदेसु अणुरत्तो सम्मत्तमुव्वहंतो झाणरओ होदि जोई सो ॥ ५२ ॥ अर्थ ॥ सो योगी ध्यांनी मुनि सम्यक्त कूं धारता संता है अर जेतैं यथाख्यात चारित्र कूं न प्राप्त होय है तेतैं देव जो अरहंत सिद्ध अर गुरु जो दिक्षा सिक्षा का देनेंवाला इनि विषैं तौ भक्त होय है इनि की भक्ति वंदनां विनयसहित होय है। बहुरि अन्य संयमी मुनि आप समांन धर्मसहित है तिनि विषैं अनुरक्त है अनुरागसहित होय है सो ही मुनि ध्यांन प्रीतिवांन होय है अर मुनि होय करि भी देवगुरसाधर्मी विषैं भक्तिअनुरागसहित न होय ताकौं ध्यांन के विषैं रुचिवांन न कहिए जातैं ध्यांनी होय ताकै ध्यांनवाला सूं रुचि प्रीति होय ध्यांनवाले न रुचै तब जां

अष्टपाहुड॰ निपैयाकूं ध्यानभीनसचैऐसैंजाननां ॥ आगैंकहैहैंजोध्यानसम्यग्ज्ञानीकैहोयहै
२५६ सोही तपकरिकर्मकाक्षयकरैहै ॥ गाथा ॥ उग्गतवेणण्णाणी जंकम्मंखवदिभवहिंबहु
एहिं ।तंणाणीतिहिगुत्तो खवेइअंतोमुहुत्तेण ॥ ५३ ॥ अर्थः ॥ अग्यानीहैसोउग्रकहिएतीव्र
जोतपताकरिबहुतभवनिकरिजोकर्मक्षयकरैहैतिसकर्मकूंज्ञानीमुनितीनगुप्तिक
रियुक्तभयाअंतर्मुहूर्त्तकरिक्षयकरैहै ॥ भावार्थ ॥ जोज्ञानकोसामर्थ्यहैसोतीव्रतपकीभी
सामर्थ्यनांहीजातैंऐसैंहैजोअज्ञानीअनेककष्टसहिकरितीव्रतपकूंकरतासंताको
ड्यांभवनिकरिजोकर्मकाक्षयकरैसोआत्मभावनासहितज्ञानीमुनितिसकर्मकूंअं॰
तर्मुहूर्त्तमैंक्षयकरैहैयहज्ञानकासंबंधकरिपरद्रव्यविषैंरागद्वेषकरैहैसोतिसभाव
करिअज्ञानीहोयहैज्ञानीयातैंउलटाहै ॥ गाथा ॥ सुभजोगेणसुभावंपरदव्वेकुणइरागदो २५६
साऊसोतेणडअण्णाणी णाणीएत्तोडविवरीदो ॥ ५४ ॥ अर्थः ॥ शुभयोगकहिएआपकेइ॰

ष्टवस्तुकायोगसंबंधकरिपरद्रव्यविषैंस्वभावकहिएप्रीतिभावताहिकरैहैसोप्रगटरा
गद्वेषहै ।इष्टविषैंरागभयातबअनिष्टवस्तुविषैंद्वेषभावहोयहीऐसैंजोरागद्वेषकरैहै
सोतिसकारणकरिरागीद्वेषीअज्ञानीहैबहुरियातैंविपरीतिउलटाहैपरद्रव्यविषैंराग
द्वेषमोहनांहीहै ।जातैंरागजाकूंकहिएजोपरद्रव्यकूंसर्वथाइष्टमांनिरागकरैतैसैंअ॰
निष्टद्वेषकरैसोसम्यग्ज्ञानीपरद्रव्यकूंकहिएइष्टअनिष्टकल्पैनांहीतबकाहेकूंराग॰
द्वेषहोयचारित्रमोहकेउदयतैंकिछूधर्मरागहोयताकूंभीरागजांणिभलानजांणैं ।तब
अन्यसूंकैसैंरागहोय ।परद्रव्यसूंरागद्वेषकरैसोतौअग्यानीहीहैऐसैंजाननां ॥ आ
गैंकहैहैंजोजैसैंपरद्रव्यकैविषैंरागद्वेषभावहोयहैतैसैंमोक्षकेनिमित्तभीरागद्वेषहो
यतौसोभीरागआस्रवकाकारणहैसोभीज्ञानीनकरै ॥ गाथा ॥ आसवहेऊयतहाभावं
मोक्खस्सकारणंहवदिसोतेणडअण्णाणी आदसहावस्सविवरीदो ॥ ५५ ॥ अर्थः ॥ जैसैंप

अष्टपा॰ज॰ २५७ रद्रव्यविषैरागकर्मबंधकाकारणपूर्वैकह्यातैसाहीरागभावजोमोक्षकैनिमित्तभीहो
यतौआस्रवहीकाकारणहैकर्मकाबंधहीकरैहै। तिसकारणकरिजोमोक्षकूंपरद्रव्य
कीज्यौंइष्टमांनितैसैंहीरागभावकरैतौसोजीवमुनिभीअज्ञानीहैजातैंकैसाहैसोआ
त्मस्वभावतैंविपरीतिहैआत्मस्वभावकूंजान्यांनांही॥भावार्थ॥मोक्षतौसर्वकर्मनितैं
रहितअपनांहीस्वभावयाआपकूंसर्वकर्मरहितहोनांतातैंयहभीरागभावज्ञानीकै
नहोययद्यपिचारित्रमोहकाउदयतैंहोयतौतिसरागकूंबंधकाकारणजांनिरोगव
तछोड्याचाहैतौज्ञानीहैही। अरइसरागभावकूंभलाजांणिआपकरैतौअग्यांनीहै
आत्माकास्वभावसर्वरागादिकतैंरहितहैताकूंयानैंनजाण्यांऐसैंरागभावकूंमोक्ष
काकारणअरभलाजांणिकरैताकानिषेधजाननां॥५०॥ आगैंकहैहैजोकर्महीमात्रसि २५७
द्धिमांनैंहैतानैंआत्मस्वभावजांन्यांनांहीसोअज्ञानीहैजिनमततैंप्रतिकूलहै॥गाथा॥जो

कम्मजादमईउसहावणाणस्सखंडदूसयरोसोतेणउअण्णाणीजिणसासणदूसगोभ
णिउ॥५१॥अर्थः॥ जोकर्महीकैविषैंउपजैहैबुद्धिजाकैऐसापुरुषहैसोस्वभावज्ञानसो।
केवलज्ञानताकूंखंडरूपदूषणाकाकरनेंवालाहै। इंद्रियज्ञानखंडखंडरूपहैअपनें
विषयकूंजांनैंहैतिसमात्रहीज्ञानकूंमांनैंहैतिसकारणकरिऐसैंमांननैंवालाअज्ञा
नीहैजिनमतकादूषणहै॥भावार्थ॥मीमांसकमतीकर्मवादीहैसर्वज्ञकूंमांनैंनांहीइंद्रि
यज्ञानमात्रहीज्ञानकूंमांनैंहैकेवलज्ञानकूंमांनैंनांहीताकाइहांनिषेधकीयाहैजातैं
जिनमतमैंआत्माकास्वभावसर्वकाजांननेंवालाकेवलज्ञानस्वरूपकह्याहैसोकर्मके
निमित्ततैंआछादितहोयइंद्रियनिकेद्वारैक्षयोपशमकेनिमित्ततैंखंडरूपभयाखंडखं
डविषयनिकूंजानैंहैकर्मकानाशभयेकेवलज्ञानप्रगटहोयतबआत्मासर्वज्ञहोयहै
ऐसैंमीमांसकमतीमांनैंनांहीसोअज्ञानीहैजिनमततैंप्रतिकूलहैकर्ममात्रहीकैविषैं

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

जाकी बुद्धि गत होय रही है ऐसैं कौं और भी मानैं सो ऐसा ही जानना ॥ छ ॥ आगैं कहै हैं ।
जो ज्ञान तौ चारित्र रहित होय अर तप सम्यक्त रहित होय अर अन्य भी क्रिया भावपूर्वक
न होय तौ ऐसैं केवल लिंग भेषमात्र ही करि कहा सुख है किछू भी नांही ॥ गाथा ॥ णाणं
चरित्तहीणं दंसणहीणं तवेहिं संजुत्तं । असेसभावरहियं लिंगग्गहणेण किं सोक्खं ॥ ५७ ॥
अर्थ ॥ जहां ज्ञान तौ चारित्र रहित है । बहुरि जहां तप करि तौ युक्त है अर दर्शन जो सम्यक्
ता करि रहित है । बहुरि अन्य भी आवश्यक आदि क्रिया है तिनि विषैं शुद्धभाव नांही है ।
ऐसैं लिंग जो भेष ताके ग्रहण विषैं कहा सुख है ॥ भावार्थ ॥ कोई मुनि भेषमात्र तौ निर्ग्रंथ
भया अर शास्त्र भी पढै है ताकूं कहै है जो शास्त्र पढि ज्ञान तौ किया परंतु निश्चय चारित्र ।
तौ शुद्ध आत्मा का अनुभवरूप तथा बाह्य चारित्र निर्दोष न कीया अर तप कायक्लेश । २५८
बहुत कीया अर सम्यक्त्व भावना भई अर आवश्यक आदि बाह्य क्रिया करी अर भा ।
व शुद्ध न लगाये तौ ऐसे बाह्य भेषमात्र मैं तौ क्लेश ही भया किछू शांतभावरूप सुख तौ न भ
या अर यहु भेष परलोक के सुख विषैं भी कारण न भया तातैं सम्यक्त्वपूर्वक भेष धारणा
श्रेष्ठ है ॥ छ ॥ आगैं सांख्यमती आदिका आशय का निषेध करै हैं ॥ गाथा ॥ अचेयणम्मि चेदा
जो मण्णइ सो हवेइ अण्णाणी । सो पुण णाणी भणिओ जो मण्णइ चेयणे चेदा ॥ ५८ ॥ अर्थ ॥ जो अ
चेतन कूं मानै है सो अज्ञानी है । बहुरि जो चेतन विषैं ही चेतन कूं मानै है सो ज्ञानी कह्या ।
है ॥ भावार्थ ॥ सांख्यमती ऐसैं कहै हैं जो उदासीन चेतना स्वरूप नित्य है अर ग्रहण ज्ञान
है सो प्रधान का धर्म है ताके मत मैं सो पुरुष कूं उदासीन चेतना स्वरूप मान्यां है सो ज्ञान
विना जड ही भया ज्ञान विना चेतन काहे का । बहुरि ज्ञान कूं प्रधान का धर्म मान्या अर
प्रधान कूं जड मान्यां तब अचेतन विषैं चेतना मानी तब अज्ञानी ही भया । बहुरि नैया
यिक वैशेषिकमती गुण गुणी कै सर्वथा भेद मानै है । तब चेतना गुण जीव कै न्यारा मा

अष्टपाहुड० न्यातवजीवतौअचेतनहीरह्या।अैसैंअचेतनविषैंचेतनांपणांवहुरिमृतवाचार्वाक
२५९ वादीमूतपृथ्वीआदिकतैंचेतनताउपजीमानैंहैंतहांमृततौजाडहैंतिनिविषैंचेतनां
कैसैंउपजैइत्यादिकअन्यमतीकेईमानैंहैंतेसर्वअज्ञानीहैं।तातैंजोचेतनविषैंहीचेत-
नांमानैंहैंसोज्ञानीहैयहजिनमतहैं॥छ॥आगैंकहैंहैंजोतपरहिततौज्ञानअरज्ञान-
रहिततपएदोऊहीअकार्थहैंदोऊसंयुक्तभयेंहीनिर्वाणहैं॥गाथा॥तवरहियंजंणा
णंणाणविजुत्तोतवोविअकयच्छोतम्हाणाणतवेणंसंजुत्तोलहइणिव्वाणं॥५९॥अ-
र्थः॥जोज्ञानतपरहितहैं।वहुरिजोतपहैंसोभीज्ञानरहितहैंतौदोऊहीअकार्थहैं।ता
तैंज्ञानतपकरिसंयुक्तहैंसोनिर्वाणकूंपावैहैं॥भावार्थ॥अन्यमतीसांख्यादिककोई
तौज्ञानचरचातौवहुतकरैंकहैंज्ञानहीतैंमुक्तिहैं।अरतपकरैंनांहीविषयकषाय २५९
निकूंप्रधानकाधर्ममांनिस्वछंदवर्तैंहैं।वहुरिकेईज्ञानकूंनिफलमांनिअरताकूंय

३३

थार्थजांनैंनांहीअरतपक्लेशादिकहीतैंसिद्धिमांनिताकेकरनेंमैंतत्परहैंतहांआचा-
र्यकहैंहैं।एदोन्हीअज्ञानीहैंजेज्ञानसहिततपकरैहैंतेमोक्षपावैहैंयहअनेकांतस्वरू-
पजिनमतकाउपदेशहैं॥छ॥आगैंयाहीअर्थकूंउदाहरणतैंदृढकरैहैं॥गाथा॥धुवसिद्धी
तित्थयरेचउणाणजुदोकरेइतवयरणंणाऊणंधुवकुज्जातवयरणंणाणजुत्तो वि॥
६०॥अर्थः॥आचार्यकहैंहैंदेषोनियमकरिजाकेमोक्षहोनीहैंअरच्यारिज्ञानमतिश्रुत
अवधिमनपर्ययइनिकरियुक्तहैंअैसातीर्थंकरहैंसोभीतपश्चरणकरैहैं।अैसैंनिश्च-
यकरिज्ञानकरियुक्तहैंतेभीतपकरनांयोग्यहैं॥भावार्थ॥तीर्थंकरमतिश्रुतिअवधितीन
ज्ञानसहिततौजन्मैंहैं।वहुरिदीक्षालेतैंहीमनपर्य्ययज्ञानउपजैहैं।वहुरिमोक्षजाके
नियमकरिहोनीहैंतौऊसोतपकरैंहैंयातैंअैसाजांनिकरिज्ञानहोतैंभीतपकरनेंवि-
षैंतत्परहोनांज्ञानमात्रहीतैंमुक्तिनमांननी॥छ॥आगैंजोवाह्यलिंगकरियुक्तहैंअरअ-

भ्यंतरलिंगारहितहैसोस्वरूपाचरणचारित्रतैंभ्रष्टभयामोक्षमार्गकाविनाशकरनें।
वालाहैंऐसासामान्यकरिकहैहैं गाथा बाहिरलिंगेणजुदोअभ्यंतरलिंगरहियपरिय
म्मो सोसगचरित्तभट्ठोमोक्खपहविणासगोसाहू ६१ अर्थः जोजीवबाह्यलिंगभेषक
रिसंयुक्तहैअरअभ्यंतरलिंगजोपरद्रव्यतैंसर्वरागादिममत्वभावतैरहितआत्माका।
अनुभवनताकरिरहितहैपरिकर्मपरिवर्त्तनजामैंऐसाहैसोमुनिस्वरकाचरित्रकहि
एअपनांआत्मस्वरूपकाआचरणरूपजोचारित्रताकरिभ्रष्टहैं याहीतैंमोक्षमार्गका
विनाशकरनैंवालाहैं भावार्थ यहसंक्षेपकरिकह्याजानूंसोबाह्यलिंगसंयुक्तहैंअ
रअभ्यंतरभावलिंगरहितहैंसोस्वरूपाचरणचारित्रतैंभ्रष्टभयामोक्षमार्गकानाश
करनैंवालाहैं आगैंकहैहैंजोसुखकरिभयाज्ञानहैसोदुःखआयेंनष्टहोयहै ２६०
तातैंतपश्चरणसहितज्ञानकूंभावणां श्लोक सुहेणभाविदंणाणं दुहेजादेविण

स्सदि तम्हाजहाबलंजोई अप्पादुक्खेहिंभावहि ६२ अर्थ सुखकरिभायाज्ञानहैंसो
दुःखआयेंविनष्टहोयहैं तातैंयहउपदेशहैंजोयोगीध्यांनीमुनिहैंसोतपश्चरणादिके
कष्टयथाशक्तिदुःखसहितआत्मांकूंभावो भावार्थ तपश्चरणकाकष्टअंगीकारक
रिज्ञानकूंभावैतौपरीसहआयेंज्ञानभावनांतैंचिगैंनांही तातैंशक्तिसारूदुःखसहि
तज्ञानकूंभावणांसुखहीमैंभयेदुःखआयेंव्याकुलहोयतबज्ञानभावनांनरहैतातैं
यहउपदेशहै आगैंकहैहैंजोआहारआसननिद्राइनिकूंजीतिकरिआत्मांकूंध्याव
णां गाथा आहारासणणिद्दाजयंचकाऊणजिणवरमएण झायव्वोणियअप्पाणाऊणं
गुरुपसाएण ६३ अर्थ आहारआसननिद्राइनिकूंजीतिकरिअरजिनवरकेमत।
करिगुरुकेप्रसादकरिजांणिनिजआत्मांकूंध्यावणां भावार्थ आहारआसननिद्रा
कूंजीतिकरिआत्मांकूंध्यावणांतौअन्यमतीभीकहैहैंपरंतुतिनिकैयथार्थप्रधांनना।

हौताते आचार्य कहै है कि जिनमतमैं कह्या है तिस विधानकूं गुरुनिके प्रसाद करि जां
णि नायें सफल है सो जैसें जैसें जैन सिद्धांतमैं आत्माका स्वरूप तथा ध्यानका स्वरूप अ
र आहार आसन निद्रा इनिका जीतनेंका विधान कह्या है तैसें जांनि करि तिनिमैं प्रव
र्तनां ॥ आगैं आत्मांकूं ध्यावणां सो आत्मां कैसा है सो कहै है ॥ गाथा ॥ आप्पा चरित्तवं
तो दंसणणाणेण संजुदो अप्पा सो झायव्वो णिच्चं णाऊणं गुरुपसाएण ॥६४॥ अर्थ ॥ आ
त्मां है सो चारित्रवांन है बहुरि दर्शन ज्ञान करि सहित है सो आत्मां गुरुके प्रसाद क
रि जांणि अर ध्यावणां ॥ भावार्थ ॥ आत्मांका रूप दर्शन ज्ञान चारित्रमई है सो याका स्वरू
प जैन गुरुनिके प्रसाद करि जाण्यां जाय है अन्यमती अपनी बुद्धिकल्पित जैसें तैसें मां
नि ध्यावै है तिनिकै यथार्थ सिद्धि नांही तातैं जैनमतकै अनुसार ध्यावणां ऐसा उपदे २६१
श है ॥ आगैं कहै है जो आत्मांका जांननां भावनां विषयनितैं विरक्त होनां ए उत्तरोत्तर

दुःखतैं पाईए है ॥ गाथा ॥ दुक्खे णज्जइ अप्पा अप्पा णाऊण भावणा दुक्खं भाविय सहाव पु
रिसो विसयेसु विरच्चए दुक्खं ॥६५॥ अर्थ ॥ प्रथम तौ आत्मांकूं जांनिये है सो दुःखतैं जां
निये है बहुरि आत्मांकूं जांनि करि भी भावनां करनां फेरि याहीका अनुभवन करनां
दुःखतैं होय है बहुरि कदाचित् भावनां भी कोई प्रकार होय तौ भाया है निज भावनां
तैं ऐसा पुरुष विषयनिविषैं विरक्त बडे दुःखतैं होय है ॥ भावार्थ ॥ आत्माका जांननां
भावनां विषयनितैं विरक्त होनां उत्तरोत्तर यह योग मिलनां बहुत दुर्लभ है जो ऐसा
योग मिलै प्रमादी न होनां ॥ आगैं कहै है जो जेतैं विषयनिमैं यह मनुष्य प्रवर्तै है तेतैं
आत्मज्ञान न होय है ॥ गाथा ॥ ताम ण णज्जइ अप्पा विसएसु णरो पवट्टए जाम विसए वि
रत्तचित्तो जोई जाणेइ अप्पाणं ॥६६॥ अर्थ ॥ जेतैं ये मनुष्य इंद्रियनिके विषयनिविषैं प्रव
र्तै है तेतैं आत्मांकूं नांही जाणै है तातैं योगी ध्यांनी मुनि है सो विषयनिविषैं विरक्त है चि

अष्टपाहुड़
२६२

नजाका ऐसा भयासंता आत्मा कूं जांणैं है ॥ भावार्थ ॥ जीवका स्वभाव कै उपयोग की ऐ
सी स्वच्छता है जो जिस ज्ञेय पदार्थसूं उपयुक्त होय तैसा ही होय जाय है तातैं आचार्य क
हैहैं जो जेतैं विषयनिमैं चित्त रहै तेतैं तिनरूप रहै आत्माका अनुभव नांही होय तातैं
योगी मुनि ऐसा विचारि विषयनितैं विरक्त होय आत्माका अनुभव नांही होय तातैं यो
गी मुनि ऐसा विचारि विषयनितैं विरक्त होय मैं उपयोग लगावै तब आत्मां कूं जानैं अ
नुभवै तातैं विषयनिमैं विरक्त होनां यह उपदेश है ॥ छ ॥ आगैं इसही अर्थकूं दृढ करै है
जो आत्मांकूं जांणि करि भी भावनां विना संसार ही मैं रहै है ॥ गाथा ॥ अप्पाणं णाऊण णरा के
ई सब्भाव पब्भट्ठा हिंडंति चाउरंगं विसएसु विमोहिया मूढा ॥६६॥ अर्थ ॥ केई मनुष्य आत्मां
कूं जांणि करि भी अपने स्वभावकी भावनां तैं अत्यंत भ्रष्ट भये विषयनि विषैं विमोहित २६२
होय करि अपांनी मूर्ख च्यारि गति रूप संसार विषैं भ्रमैं है ॥ भावार्थ ॥ पहलैं कह्याया जो आ

त्मां कूं जांननां भावनां विषयनितैं विरक्त होनां यह उत्तरोत्तर दुर्लभ पाईए है तहां
विषयनिमैं लगा प्रथम तौ आत्मां कूं जांनैं नांही ऐसैं कह्या अब इहां ऐसैं कह्या जो
आत्मां कूं जांणि करि भी विषयनिकै वसीभूत भया भावनां न करै तौ संसार ही मैं भ्रमै
है तातैं आत्मां कूं जांणि विषयनितैं विरक्त होनां यह उपदेश है ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो वि
षयनितैं विरक्त होय आत्मां कूं जांणि करि भावै है ते संसार कूं छोडै है ॥ गाथा ॥ जे पुण वि
सय विरत्ता आयाणा णाऊण भावणा सहिया छंडंति चाउरंगं तवगुणजुत्ता ण संदेहो
॥६७॥ अर्थ ॥ पुनः कहिए बहुरि जे पुरुष मुनि विषयनितैं विरक्त होय करि आत्मां कूं जां
णि भावै है वारवार भावनां करि अनुभवै है ते तपगुण कहिए वारा प्रकार तप अर मू
लगुण उत्तरगुणनि करि युक्त भये संसार कूं छोडै है मोक्ष पावै है ॥ भावार्थ ॥ विषयनितैं
विरक्त होय आत्मां कूं जांणि भावनां करनी यातैं संसारतैं छूटि मोक्ष पावो यह उपदेश

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

हैं ॥ आगैं कहै हैं जो जाकै परद्रव्यकै विषैं लेशमात्र भी राग होय सो पुरुष आपांनी
हैं आपनां स्वरूप जांन्यां नांही ॥ गाथा ॥ परमाणुपमाणं वा परदव्वे रदि हवेदि मोहा
दो सो मूढो अण्णाणी आदसहावस्स विवरीदो ॥ ६९ ॥ अर्थ ॥ जो पुरुषकै परद्रव्य विषैं प
रमाणुप्रमाण भी लेशमात्र भी मोहतैं रति कहिए राग प्रीति होय तौ वह पुरुष मूढ है
मोही है अज्ञानी है आत्मस्वभावतैं विपरीति है ॥ भावार्थ ॥ भेदज्ञांन भयें पीछैं जीव अजीव
कूं न्यारे न्यारे जांनैं तब परद्रव्यकूं आपनां न जांणैं तब तिसतैं राग भी न होय अर जो राग
होय तौ जांनियें यानैं आपा परका भेद जांन्यां नांही अज्ञानी है आत्मस्वभावतैं प्रतिकू
ल है अर ज्ञानी भयें पीछैं चारित्रमोहका उदय रहै जेतैं किछू राग रहै है ताकूं कर्मजन्य
अपराध मांनैं है तिस रागतैं राग नांही है तातैं विरक्त ही है तातैं ज्ञानीकै परद्रव्यतैं रा
ग न कहिए ऐसैं जाननां ॥ आगैं इस अर्थकूं संक्षेप करि कहै हैं ॥ गाथा ॥ अप्पा झायंता

णं दंसणसुद्धीण दिढचरित्ताणं । होदि धुवं णिव्वाणं विसएसु विरत्तचित्ताणं ॥ ७० ॥ अर्थ ॥
जे पूर्वोक्त प्रकार विषयनिसूं विरक्त है चित्त जिनिका ऐसे आत्माकूं ध्यावते संते वर्त्तैं
है बहुरि बाह्य अभ्यंतर दर्शनकी सुद्धता जिनिकै है बहुरि दृढ चारित्र जिनिकै है तिनिकै
निश्चय करि निर्वाण होय है ॥ भावार्थ ॥ पूर्वैं कह्या था जो विषयनिसूं विरक्त होय आत्मा
का स्वरूप जांणि जे आत्माकी भावनां करै है ते संसारतैं छूटैं हैं तिस ही अर्थकूं संक्षेप क
रि कह्या है जो इंद्रियनिके विषयनितैं विरक्त होय बाह्य अभ्यंतर दर्शनकी शुद्धता क
रि दृढ चारित्र पालै है तिनिकै नियम करि निर्वाणकी प्राप्ति होय है इंद्रियनिके विषय
निविषैं आसक्तता है सो सर्व अनर्थका मूल है तातैं इनितैं विरक्त भयें उपयोग आत्मा
मैं लागै तब कार्यसिद्धि होय है ॥ आगैं कहै है जो परद्रव्यविषैं राग है संसारका कारण
है तातैं योगीश्वर आत्माविषैं भावनां करै ॥ श्लोक ॥ जेण रागो परे दव्वे संसारस्स हि कारणं

तेणविजोइणो‾च्चं ऊज्जाअप्पेसुभावणा ७१ अर्थ जाकारणकरिपरद्रव्यविषैंरागहै
सोसंसारहीकाकारणहै तिसकारणकरियोगीस्वरमुनिहैंतेनित्यनिरंतरआत्माविषैं
हीभावनांकरैंहैं भावार्थ कोईऐसीआशंकाकरैजोपरद्रव्यविषैरागकरैंकहाहोयहै
परद्रव्यहैसोपरहैहीअपनेंरागजिसकालभयातिसकालहैपीछैंमिटिजायहैताकूंउ
पदेशकीयाहैसोपरद्रव्यसूंरागकीएंपरद्रव्यअपनीलारलागैंहैंयहप्रसिद्धहै वहुरि
अपनेंरागकासंस्कारदृढहोयहैतवपरलोकतांईभीचल्याजायहैयेतोयुक्तसिद्धहै
अरजिनागममैंरागतैंकर्मकावंधकह्याहैतिसकाउदयअन्यजन्मकूंकारणहैऐसैं
परद्रव्यविषैंरागतैंसंसारहोयहैतातैंयोगीस्वरमुनिपरद्रव्यतैंरागछोडिआत्मावि
षैंनिरंतरभावनांराषैंहै आगैंकहैहैजोऐसेसमभावतैंचारित्रहोयहै गाथा णिं २६४
दाणयपसंसाए दुक्खेयसुहएसुय सत्तूणंचेवबंधूणं चारित्तंसमभावदो ७२ अर्थ निं

दाविषैंवहुरिप्रसंसाविषैंवहुरिदुःखविषैंवहुरिसुखविषैंवहुरिसत्रुनिविषैंअरवं
धुमित्रनिविषैंसमभावजोसमतापरिणांमरागद्वेषतैंरहितऐसाभावतैंचारित्रहोयहै
भावार्थ चारित्रकास्वरूपयहकह्याहैजोआत्माकाज्ञांनस्वभावहैसोकर्मकेनिमित्त
तैंज्ञांनविषैंपरद्रव्यतैंइष्टअनिष्टवुद्धिहोयहैतिसइष्टअनिष्टवुद्धिकाअभावतैंज्ञांनही
मैंउपयोगताकूंशुद्धोपयोगकहिएहै सोहीचारित्रहैसोयहहोयजहांनिंदाप्रशंसादुःख
सुखशत्रुमित्रविषैंसमांनवुद्धिहोयहैनिंदाप्रसंसादिकहाद्विधाभावमोहकर्मकाउद
यजन्यहैयाकाअभावसोहीसुद्धोपयोगरूपचारित्रहै आगैंकहैहैजोकेईमूर्षऐसैं
कहैहैंजोअवारपंचमकालहैसोआत्मध्यांनकाकालनांहीतिनिकानिषेधकरैहै
गाथा चरियावरियावदसमिदिवज्जियासुद्धभावपब्भट्ठाकेईजंपंतिणराणहुकालोझा
णजोयस्स ७३ अर्थ जेकेईनरमनुष्यऐसेहैंजोचर्याकहिएआचारक्रियासोहैआवरि

तजिनकैचारित्रमोहकाउदयप्रबलहैताकरिचर्याप्रगटनहीहोयहै। याहीतैंव्रतसमिति
करिरहितहै। वक्रीमिथ्याअभिप्रायकरिशुद्धभावतैंअत्यंतभ्रष्टहै। तेऐसैंकहैहैंजो।
अबारपंचमकालहैसोयहकालप्रगटध्यानयोगकानांही। तेप्राणीकैसैंहैंसोआगैंक
हैहैं। गाथा। सम्मत्तणाणरहिओअभव्वजीवोहुमोक्खपरिमुक्को। संसारसुहेसुरदोणहु
कालोभणइझाणस्स ७४ अर्थ। पूर्वोक्तध्यानकाअभावकहनेवालाजीवकैसाहैसम्य
क्त्वअरज्ञानकरिरहितहैअभव्यहैयाहीतैंमोक्षकरिरहितहैअरसंसारकेइंद्रियसुषहैं
तिनिहीकूंभलेजांणितिनिमैंरतहैंआसक्तहैंयातैंकहैहैंजोअबारध्यानकाकालनांही
भावार्थ। जाकूंइंद्रियनिकेसुषहीप्रियलागेहैंअरजीवाजीवपदार्थकाश्रद्धानज्ञानतैंर
हितहैसोऐसैंकहैहैंजोअबारध्यानकाकालनांहीयातैंजांणियेहैंऐसैंकहनेवाला। २६५
अभव्यहैयाकैमोक्षनहोयगी। छ। आगैंफेरिकहैहैंजोअबारध्यानकाकालनकहैहैता

तेंपंचमहाव्रतपांचसमितितीनगुप्तिकास्वरूपजान्यांनांही। गाथा। पंचसुमहव्वदेसुयपं
चसुमिदीसुतीसुगुत्तीसुजोमूढोअण्णाणी। णहुकालोभणइझाणस्स ७५ अर्थ। जो
पांचमहाव्रतपांचसमितितीनगुप्तिइनिविषैंमूढहैअज्ञानीहैइनिकास्वरूपनांहीजांणै
है। अरचारित्रमोहकेतीव्रउदयतैंइनिकूंपालिनसकैहैसोऐसैंकहैहैं। छ। आगैंक।
हैहैंजोअबारइसपंचमकालमैंधर्मध्यानहोयहैयहनमांनैहैसोअज्ञानीहै। गाथा। भरहे
दुस्समकालेधम्मज्झाणंहवेइसाहुस्स। तंअप्पसहावठिदे णहुमण्णइसोविअण्णाणी ७६
अर्थ। इसभरतक्षेत्रविषैंदुस्समकालजोपंचमांकालताविषैंसाधूमुनिकैधर्मध्यानहो
यहैसोयहधर्मध्यानआत्मस्वभावकेविषैंस्थितहैतिसमुनिकैहोयहै। यहनमांनैसोअज्ञा
नीहै। जाकूंधर्मध्यानकास्वरूपकाज्ञाननांही। भावार्थ। जिनसूत्रमैंइसभरतक्षेत्रपंचमां
कालमैंआत्मभावनांविषैंस्थितमुनिकैधर्मध्यानकह्याहैसोजोयहनमांनैहैसोअज्ञा

नीहैं जाकूं धर्मध्यांनका स्वरूपका ज्ञांन नांही ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो अबार कालमैं रत्नत्रय
काधारी मुनि होय सो स्वर्ग विषैं इंद्रपणां लोकांतिक देवपणां पाय तहां चय मोक्ष जाय है
ऐसैं जिनसूत्रमैं कह्या है ॥ गाथा ॥ अज्जवि तिरयणसुद्धा अप्पा झाएवि लहइ इंदत्तं लोयं
तियदेवत्तं तत्थ चुया णिव्वुदिं जंति ७७ ॥ अर्थ ॥ अबार इस पंचमकालमैं भी जे मुनि सम्यग्द
र्शनज्ञानचारित्र शुद्धकरि युक्त होय है ते आत्माकूं ध्याय करि इंद्रपणां पावै है तथा लोकां
तिकदेवपणां पावै है बहुरि तहांतैं चय करि निर्वाणकूं प्राप्ति होय है ॥ भावार्थ ॥ कोई कहै
जो अबार पंचमकालमैं जिनसूत्रमैं मोक्ष होनां कह्या नांही है तातैं ध्यानका करनां तौ नि:
फल खेद है ताकूं कहै है रे भाई मोक्ष जांनां निषेध्या है अर शुक्लध्यांन निषेध्या है धर्मध्या
न तौ निषेध्या है नांही अबार भी जे मुनि रत्नत्रय करि शुद्ध भये धर्मध्यान विषैं लीन होय । २६६
आत्माकूं ध्यावै है ते मुनि स्वर्गमैं इंद्रपणां पावै है अथवा लोकांतिकदेव एकाभवतारी है

तिनिमैं जाय उपजै है तहां तहां चय करि मनुष्य होय मोक्ष पावै है ऐसैं धर्मध्यांनतैं परंपरा मो
क्ष होय तब सर्वथा निषेध काहेकूं कीजिये । जे निषेध करै ते अज्ञानी मिथ्यादृष्टी है तिनिकूं
विषयकषायनिमैं स्वच्छंद रहनां है तातैं ऐसैं कहै है ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो अबार कालमैं ध्यां
नका अभाव मांनि लिंग पहलैं ग्रहण कीया तिसकूं गौण करि पापमैं प्रवर्त्तै है ते मोक्षमा
र्गतैं च्युत है ॥ गाथा ॥ जे पावमोहियमई लिंगं घित्तूण जिणवरिंदाणं । पावं कुणंति पावा ते
चत्ता मोक्खमग्गम्मि ७८ ॥ अर्थ ॥ जे पाप करि मोहित है बुद्धि जिनकी ऐसे है ते जिनवर इंद्र ती
र्थंकर देवका लिंग ग्रहण करि भी पाप करै है ते पापी है मोक्षमार्गतैं च्युत है ॥ भावार्थ ॥ जे पह
लैं निर्ग्रंथलिंग धारया पाछैं ऐसी पापबुद्धि उपजी जो अबार ध्यांनका तौ काल नांही तातैं कर
हेकूं प्रयास करै ऐसैं विचारि पापमैं प्रवर्त्तनि लगि जाय है ते पापी है तिनिकै मोक्षमार्ग नां
ही ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो जे मोक्षमार्गतैं च्युत भये ते कैसे है ॥ गाथा ॥ जे पंचचेलसत्ता गंथग्गाही

यजायणासीलाआधाकम्ममिरया। तेचत्तामोरकमग्गम्मि ७९ अर्थ। जेपंचप्रकारकेचेल
कहिएवस्त्रतिनिविषैंआशक्तहैंअंडजकर्पासजवल्कलजचर्मजरोमजऐसैंपंचप्रका-
रवस्त्रमैंसूंकोईएकवस्त्रकूंग्रहणकरिहै। बहुरिग्रंथग्राहीकहिएपरिग्रहकाग्रहणकरनेवा-
लाहै। बहुरियाचनाशीलकहिएयाचनामांगनेहीकाजिनकास्वभावहै। बहुरिआधा-
कर्मजोपापकर्मताविषैंरतहैसदोषआहारकरैहैतेमोक्षमार्गतैंच्युतहैं। भावार्थ। इहांअ-
शयऐसाहैजोपहलैतौनिर्ग्रंथदिगंबरमुनिभयेथेपीछैंकालदोषविचारिचारित्रपा-
लनेंकूंअसमर्थहोयनिर्ग्रंथलिंगतैंभ्रष्टहोयवस्त्रादिकअंगीकारकीयापरिग्रहराखनें
लगेयाचनाकरनेंलगे अधःकर्मउद्देशिकआहारकरनेंलगेतिनिकानिषेधहैतेमोक्षमा-
र्गतैंच्युतहैंतेपहलैंतौभद्रबाहुस्वामीपीछैंदुर्भिक्षकालमैंभ्रष्टहोयअर्द्धफालककहावै २६७
थेपीछैंतिनिमैंश्वेतांबरभयेतिनिमैंतिसभेषकेपोषनेंकूंसूत्रबणायेतिनिमैंकेईकल्पित

आचरणतथातिसकीसाधककथालिषी। बहुरिइनसिवायअन्यभीकेईभेषबदलेऐसें
कालदोषतैंभ्रष्टनिकासंप्रदायप्रवर्त्तैहैसोयहमोक्षमार्गनाहीहैऐसाजनायाहै। यातैंभ्र-
ष्टनिकूंदेषिऐसाहीमोक्षमार्गहैऐसाश्रद्धाननकरनां॥७९॥ आगैंकहैहैजोमोक्षमा-
र्गतौऐसेमुनिनिकैहै॥ गाथा॥ णिग्गंथमोहमुक्का। बावीसपरीसहाजियकसाया। पावारंभवि-
मुक्कातेगहियामोरकमग्गम्मि ८० अर्थ। जेमुनिनिर्ग्रंथहैपरिग्रहकरिरहितहै। बहुरि
मोहकरिरहितहैकाहूपरद्रव्यसूंममत्वभावजिनिकैनाहीहै। बहुरिबाईसपरीसह
कासहनाजिनिकैपाईएहै। बहुरिजीतेहैक्रोधादिककषायजिनिनैं। बहुरिपापारंभ-
करिरहितहैगृहस्थकेकरनेंकाआरंभादिकपापहैतिनिमैंनाहीप्रवर्त्तैहै। ऐसेहैतेमु-
निमोक्षमार्गमैंग्रहणकीयेहैमानेंहै। भावार्थ। मुनिहैतेलौकिकवृत्तितैंरहितहैजैसाजि-
नेश्वरमोक्षमार्गबाह्यअभ्यंतरपरिग्रहतैंरहितनग्नदिगंबररूपकह्यातैसेंप्रवर्त्तैहैतेही

डाक्टर भाऊ दाजी ... Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

मोक्षमार्गीहोयअन्यमोक्षमार्गीनांहीहै ॥ आगैंफेरिमोक्षमार्गकीप्रवृत्तिकहैहै ॥ गाथा ॥
उद्दुमझलोएकेईमझंणअहयमेगागीइयभावणाएजोईपावंतिहुसासयंसोक्खं ॥ ८१ ॥
अर्थ ॥ मुनिऐसीभावनांकरैजोऊर्द्धलोकअधोलोकमध्यलोकइनितीनूंलोकमैंमेरा
कोईभीनांहीहैं ॥ मैंएकाकीआत्मांहौंऐसीभावनांकरियोगीमुनिप्रगटपणैंशास्वता
सुखहैताहिपावैहैं ॥ भावार्थ ॥ त्रिलोकमैंजीवएकाकीहैयाकासंबंधीदूजाकोईनांहीय
हपरमार्थरूपएकस्वभावकीभावनांहैसोजामुनिकैऐसीभावनांनिरंतररहैहैसोही
मोक्षमार्गीहै ॥ जोभेषलेकरिभीलौकिकजननिसूंलालपालराखैहैसोमोक्षमार्गीनांही
॥ आगैंफेरिकहैहैं ॥ गाथा ॥ देवगुरूणंभत्ताणिव्वेयपरंपराविचिंतंता ॥ झाणरयासुच
रित्तातेगहियामोक्खमग्गम्मि ॥ ८२ ॥ अर्थ ॥ जेमुनिदेवगुरुनिकेभक्तहैंबहुरिनिर्वेदकहि २६८
एसंसारदेहभोगतैंवैराग्यताकीपरंपराताकूंचितवनकरतेहैं ॥ बहुरिध्यानकेविषैंरत

हैंरक्तहैंतत्परहैं ॥ बहुरिभलाहैचारित्रजिनिकैतेमोक्षमार्गविषैंग्रहणकीयेहैं ॥ भा
वार्थ ॥ जिनितैंमोक्षमार्गपायाऐसाअरहंतसर्वज्ञवीतरागजिनदेवअरतिसकेअनुसारि
बडेमुनिदिक्षासिक्षाकेदेनेवालेजिनिकीभक्तियुक्तहोय ॥ बहुरिसंसारदेहभोगसूं
विरक्तहोयमुनिभयेतैसैंहीपरंपराकरिजिनिकैनिरंतरवैराग्यभावनांहै ॥ बहुरिआत्मं र
काअनुभवरूपशुद्धउपयोगरूपएकाग्रतासोहीभयाध्यानताविषैंतत्परहैं ॥ बहुरिव्रत
समितिगुप्तिरूपनिश्चयव्यवहारात्मकसम्यक्चारित्रजिनकैपाईएहैतेहीमुनिमोक्ष
मार्गीहैंअन्यभेषीमोक्षमार्गीनांहीहैं ॥ आगैंनिश्चयनयकरिध्यानऐसैंकरणांऐसैं
कहैहैं ॥ गाथा ॥ णिच्छयणयस्सएवंअप्पाअप्पम्मिअप्पणेसुरदो ॥ सोहोदिहुसुचरित्तोजोर
ईसोलहइणिव्वाणं ॥ ८३ ॥ अर्थ ॥ आचार्यकहैहैजोनिश्चयनयकाऐसाअभिप्रायहैजो
आत्मांआत्मांहीविषैंआपहीकेअर्थिभलैप्रकाररतहोयलीनहोयसोयोगीध्यानीमुं

निसम्यक्चारित्रवांन भयासंता निर्वाणकूं पावै है ॥ गाथार्थ ॥ निश्चयनयका स्वरूप ऐसा है जो एकद्रव्यकी अवस्था जैसी होय ताहीकूं कहै तहां आत्माकी होय अवस्था एक तौ अज्ञान अवस्था अर एक ज्ञान अवस्था तहां जेतैं अज्ञान रहै तेतैं तौ बंधपर्यायकूं आत्मा जानै जो मैं मनुष्य हौं मैं पशू हौं मैं क्रोधी मैं मानी हौं मैं मायावी हौं मैं लोभी मैं पुण्यवान धनवान हौं मैं निर्धन दरिद्री हौं मैं राजा हौं मैं रंक हौं इत्यादि पर्यायनि विषै आत्मा मानै मैं मुनि हौं मैं श्रावक हौं तिनि पर्यायनि विषै लीन रहै तब मिथ्यादृष्टी है अज्ञानी है याका फल संसार है ताकूं भोगवै है ॥ बहुरि जब जिनमतके प्रसाद करि जीव अजीव पदार्थका ज्ञान होय तब आपापरका भेदज्ञानि ज्ञानी होय तब ऐसैं जानै जो मैं आत्मा शुद्ध ज्ञान दर्शनमई चेतनस्वरूप हौं अन्य मेरा किछू भी नांही ॥ तब यह आत्मा आपही विषै आपही कै अर्थि आपही करि रत्न होय लीन होय तब निश्चय सम्यक्चारित्रस्वरूप होय आपहीकूं ध्यावै तब सम्यक्ज्ञानी होय याका फल निर्वाण है ऐसैं जाननां ॥ ८३ ॥ आगैं इसही अर्थकूं दृढ करते संते कहै है ॥ गाथा ॥ पुरिसायारो अप्पा जोई वरणाणदंसणसमग्गो । जो झायदि सो जोई पावहरो हवदि णिद्दंदो ॥ ८४ ॥ अर्थ ॥ यह आत्मा ध्यानकै योग्य कैसा है पुरुषाकार है बहुरि योगी है मन वचन कायके योगनिका जाकै निरोध है सर्वांग निश्चल है ॥ बहुरि कैसा है श्रेष्ठ सम्यक्रूप ज्ञान अर दर्शन करि समग्र है परिपूर्ण है केवलज्ञान दर्शन जाकै पाइये है ऐसा आत्माकूं जो योगी ध्यानी मुनि ध्यावै है सो मुनि पापका हरनेवाला है अर निर्द्वंद है राग द्वेष आदि विकल्पनि करि रहित है ॥ गाथार्थ ॥ जो अरहंतस्वरूप शुद्ध आत्माकूं ध्यावै है ताका पूर्व कर्मका नाश होय है ॥ अर वर्त्तमान राग द्वेष रहित होय है तब आगामी कर्मकूं नाही बांधै है ॥ ८४ ॥ आगैं कहै है जो ऐसा मुनिनिकूं प्रवर्त्तनां कह्या अब श्रावकनिकूं प्रवर्त्तनकै अर्थि कहिये है ॥ गाथा ॥ एवं जिणेहि कहियं सवणाणं सावयाण पुण सु

३९

णसुसंसारविणासयरंसिद्धिपरंकारणंसमरं ॥ ८५ ॥ अर्थ ॥ एवंकहिएपूर्वोक्तप्रकारसौउ
पदेशश्रमणजेमुनितिनिकूंजिनदेवनैकह्याहै बहुरिअबश्रावकनिकूंकहियेहैसो
सुणौकैसाकहियेहै संसारकातौविनाशकरनेवालाअरसिद्धिजोमोक्षताकाकरनेवा
लाउत्कृष्टकारणऐसाउपदेशकहियेहै ॥ भावार्थ ॥ पहलैंकह्यासोतौमुनिनिकूंकह्या
अरअबआगैंकहियेहैसोश्रावकनिकूंकहियेहैसोऐसाकहियेहैजातैंसंसारकावि
नाशहोयअरमोक्षकीप्राप्तिहोय ॥ छ ॥ आगैंश्रावकनिकूंप्रथमकहाकरनांसोकहैहै ॥
गाथा ॥ गहिऊणयसम्मत्तंसुणिम्मलंसुरगिरीवणिक्कंपं ॥ तंझाणेझाइज्जइसावयदुक्ख
खयट्ठाए ॥ ८६ ॥ अर्थ ॥ प्रथमतौश्रावकनिकौंसुनिर्मलकहियेभलैप्रकारअतीचाररहि
तनिर्मलअरमेरुवत्निकंपअचलअगाढदूषणरहितअत्यंतनिश्चलऐसासम्यक्त्वकूं २७०
ग्रहणकरितिनिकूंध्यानविषैंध्यावणांकौनअर्थिदुःखकाक्षयकैअर्थिध्यावणां ॥ भा

वार्थ ॥ श्रावकपहलैंतौनिरतिचारनिश्चलसम्यक्त्वकूंग्रहणकरिताकाध्यानकरैजातैंस
म्यक्त्वकीभावनातैंगृहस्थकैगृहकर्मसंबंधीआकुलताक्षोभहोयदुःखहोयहैसोमिटिजा
यहैकार्यकेविगडनैसुधरनैमैंवस्तुकास्वरूपकाविचारआवैतबदुखमिटैहै ॥ सम्यग्दृष्टी
कैऐसाविचारहोयहैजोवस्तुकास्वरूपसर्वज्ञनैंजैसाजाण्यांहैतैसानिरंतरपरण
मैंहैसोहोयहैइष्टअनिष्टमांनिदुखीसुखीहोनांनिफलहैऐसैंविचारतैंदुखमिटैहै ॥
यहप्रत्यक्षअनुभवगोचरहै ॥ तातैंसम्यक्त्वकाध्यानकाकरनांकह्याहै ॥ छ ॥ आगैंसम्य
क्त्वकेध्यानकीहीमहिमाकहैहै ॥ गाथा ॥ सम्मत्तंजोझायदिसम्माइट्ठीहवेइसोजीवो
सम्मत्तपरिणादोपुणखवेइदुट्ठट्ठकम्माणि ॥ ८७ ॥ अर्थ ॥ जोश्रावकसम्यक्त्वकूंध्यावैहै
सोजीवसम्यग्दृष्टीहोयहै बहुरिसम्यक्त्वरूपपरिणयासंतादुष्टजेआठकर्मतिनिका
क्षयकरैहै ॥ भावार्थ ॥ सम्यक्त्वकाध्यानऐसाहैजोपहलैंसम्यक्त्वनभयाहोयतौभयाका

रूपजांणियाकूंध्यावैतौसम्यक्त्वदृष्टीहोयजायहै। वहुरिसम्यक्त्वमयेयाकापरिणांम
ऐसाहैजोसंसारकेकारणदुष्टआठकर्मतिनिकाक्षयहोयहैसम्यक्त्वहोतैंहीकर्मनि।
कीगुणश्रेणीनिर्जराहोनेंलगिजायहैअनुक्रमतैंमुनिहोयतवचारित्रअरधर्मशुक्ल
ध्यानयाकेसहकारीहोयतवसर्वकर्मकानाशहोयहै॥छ॥आगैंयाकूंसंक्षेपकरिक
हैहैं॥गाथा॥किंवहुणाभणिएणंजेसिद्धानरवरागएकालेसिझहिजिविभविएतंजा
णहसम्ममाहप्पं॥८८॥अर्थ॥आचार्यकहैहैंजोवहुतकहनेंकरिकहासाध्यहैजेनरप्र
धांनअतीतकालविषैंसिद्धभयेअरआगांमीकालमैंजेसिद्धहोयगेसोसम्यक्त्वकाम
हात्म्यजांणं॥भावार्थ॥इससम्यक्त्वकाऐसामहात्म्यहैअष्टकर्मकानांशकरिजेमुक्ति।
प्राप्तिअतीतकालमैंभयेहैंतथाआगामीहोयगेतेइससम्यक्त्वतैंहीभयेतातैंआचार्य
कहैहैंजोवहुतकहनेंकरिकहायहसंक्षेपकरिकह्याजानूंजोमुक्तिकाकारणप्रधा २७१

नयहसम्यक्त्वहीहै।ऐसामतिजांनौंजोग्रहस्थकैकहाधर्महैयेसम्यक्त्वधर्मऐसाहै
सोसर्वधर्मकेअंगनिकूंसफलकरैहै॥छ॥आगैंकहैहैंसोनिरतिचारसम्यक्त्वपाले।
हैतेधन्यहैं॥गाथा॥तेधण्णसुकयच्छातेसुरातेविपंडियामणुयासम्मत्तंसिद्धियरंसिविणे
विणमइलियंजेहिं॥८९॥अर्थ॥जिनिपुरुषनिमैंमुक्तिकाकरनेवालासम्यक्त्वहैताकूं
सुपनाविषैंनीमलिननकीयाअतिचारनलगायातेपुरुषधन्यहैतेहीमनुष्यहैतेहीकृ
तलेकृतार्थहैंतेहीसूरवीरहैतेहीपंडितहै॥भावार्थ॥लोकमैंकिछूदानादिककरैति
निकूंधन्यकहियेहै।तथाविवाहादिकरैयज्ञादिककरैहैतिनिकूंकृतार्थकहैहैंयुध
मैंपाछानहोयजीतैताकूंसूरवीरकहैहैं।वहुतशास्त्रपढैताकूंपंडितकहैहैंतेयसार
कहनेंकेहैंजेमोक्षकाकारनसम्यक्त्वकूंमलिननकरैहैनिरतिचारपालैहैंतेधन्यहैं।
तेहीकृतार्थहैंतेहीसूरवीरहैंतेहीपंडितहैंतेहीमनुष्यहैं।याविनांमनुष्यपशूसमांनहै

ऐसासम्यक्त्वकामाहात्म्यकह्या ॥ आगैंसिष्यपूछ्याजोसोसम्यक्त्वकैसाहैंताकेस
माधानकूंयासम्यक्त्वकेबाह्यचिह्नकहैहैं ॥ गाथा ॥ हिंसारहिएधम्मेअट्ठारसदोसव
ज्जियेदेवेणिग्गंथेपवयणेसद्दहणंहोइसम्मत्तं ९० ॥ अर्थ ॥ हिंसारहितधर्मअठारह
दोषरहितदेवनिर्ग्रंथप्रवचनकहिएमोक्षकामार्गइनिविषैंश्रद्धानहोतैंसंतैंसम्यक्त्व
होयहैं ॥ भावार्थ ॥ लौकिकजनतथाअन्यमतीजीवनिकीहिंसाकरिधर्ममांनैहैं ॥ अरजि
नमतमैंअहिंसाधर्मकह्याहैताहीकूंश्रद्धै अन्यकूंनांहीश्रद्धैसोसम्यकदृष्टीहै लौकि
कअन्यमतीतिनिमांन्यांहैतेसर्वदेवक्षुधादितथारागद्वेषादिदोषनिसंयुक्तहैंतातैं
वीतरागसर्वज्ञअरहंतदेवसर्वदोषनिकरिरहितहैंताकूंदेवमांनैश्रद्धैसोसम्य
ग्दृष्टीहैं इहांदोषअठारहकहेतेप्रधानताअपेक्षाकहेहैंतेउपलक्षणरूपकहैहैंसो २७२
जांननेंइनिसारिषेअन्यमतीजांनिलेनें वहुरिनिर्ग्रंथप्रवचनकहियेमोक्षमार्गसोही

५०

मोक्षमार्गहैं अन्यलिंगतैंअन्यमतीतथाश्वेतांवरादिकजैनाभासमोक्षमानैहैंसोमोक्ष
मार्गनांहीहै ऐसाश्रद्धैसोसम्यग्दृष्टीहैऐसाजांननां ॥ आगैंइसहीअर्थकूंदृढकर
तेकहैहैं ॥ गाथा ॥ जहजायरूवरूवंसुसंजयंसव्वसंगपरिवज्जंलिंगंणपरावेक्खंजोम
ण्णइतस्ससम्मत्तं ९१ ॥ अर्थ ॥ मोक्षमार्गकालिंगभेषऐसाहै यथाजातरूपतौजाकारूप
हैंवाह्यपरिग्रहवस्त्रादिककिंचितमात्रभीजामैंनांहीहै वहुरिसुसंयतकहियेसम्य
कूप्रकारइंद्रियनिकानिग्रहअरजीवनिकीदयाजामैंपाईएऐसासंयमहै वहुरिस
र्वसंगकहियेसर्वहीपरिग्रहतथासर्वलौकिकजननिकीसंगतितैंरहितहै वहुरिजा
मैंपरकीअपेक्षाकिछूनांहीहैमोक्षप्रयोजनसिवायअन्यप्रयोजनकीअपेक्षाजामैंनां
हीहै ऐसामोक्षमार्गकालिंगमांनैश्रद्धैतिसजीवकैसम्यक्त्वहोयहै ॥ भावार्थ ॥ मोक्षमा
र्गमैंऐसाहीलिंगहैअन्यअनेकभेषहैंतेमोक्षमार्गमैंनांहीहै ऐसाश्रद्धानकरैताकैस

MEMORIAL

म्यक्त होय है। इहां परापेक्षा नांही है। ऐसा कहनें तैं यह जनाया है जो ऐसा निर्ग्रंथ रूप भी
जो काहू अन्य आशय तैं धारै तौ वह भेष मोक्ष मार्गी नांही केवल मोक्ष ही की अपेक्षा जा मैं
ऐसा होय ताकूं मानैं सो सम्यग्दृष्टी है ऐसा जाननां ॥ आगैं मिथ्यादृष्टी के चिह्न कहै है ॥
गाथा ॥ कुच्छियदेवं धम्मं कुच्छियलिंगं च वंदए जो दु। लज्जाभयगारवदो मिच्छादिट्ठी ह
वे सो हु ॥ ९२ ॥ अर्थ ॥ कुत्सित देव जो क्षुधादिक अर रागद्वेषादि दोषनि करि दूषित होय सो
अर कुत्सित धर्म जो हिंसादि दोषनि करि सहित होय सो अर कुत्सित लिंग जो परिग्रहा-
दिक करि सहित भेष होय सो इनिकूं जो वंदै पूजै सो प्रगट मिथ्यादृष्टी है इहां विशेष कहै है
जो भले हित करनें वाले मांनि करि पूजै वंदै सो तौ प्रगट मिथ्यादृष्टी ही है परंतु जो लज्जा भ
य गारव इनि कारननि करि भी वंदै पूजै तौ सो भी प्रगट मिथ्यादृष्टी है तहां लज्जा तौ ऐसैं जो २७२
लोक इनिकूं वंदै पूजै है हम नांही पूजैंगे तौ लोक हमकूं कहा कहैंगे हमारी या मैं लोक मैं

प्रतिष्ठा जायगी ऐसैं तौ लज्जा करि पूजै वंदै है। बहुरि भय ऐसैं जो इनिकूं राजादिक मांनै है ह
म न मांनैंगे तौ हमपरि किछू उपद्रव आवैगा। ऐसैं भय करि पूजै वंदै है। बहुरि गारव ऐसैं जो हम
बडे हैं महंत पुरुष हैं सर्व ही का सनमान करें इनि कार्यनि मैं ही हमारी वडाई है ऐसैं गारव
करि पूजनां वंदनां होय है ऐसैं मिथ्यादृष्टी के चिह्न कहे ॥ आगैं इस ही अर्थकूं दृढ करते
कहै है ॥ गाथा ॥ सपरावेक्खं लिंगं राई देवं असंजयं वंदे। मण्णइ मिच्छादिट्ठी ण हु मण्णइ सुद्ध
सम्मत्तो ॥ ९३ ॥ अर्थ ॥ स्वपरापेक्ष तौ लिंग जो किछू आपकै किक प्रयोजन मन मैं धारि भेष ले
सो स्वापेक्ष है। बहुरि काहू परकी अपेक्षा तैं धारै काहू के आग्रह तैं तथा राजादिक का भय
तैं धारै सो परापेक्ष है। बहुरि रागी देव जाकै स्त्री आदिका राग पाइए। बहुरि असंयमी जो सं
यम रहित इनिकूं ऐसैं कहै जो मैं वंदौं हौं तथा तिनिकूं मानैं श्रद्धै सो मिथ्यादृष्टी है। बहुरि
शुद्ध सम्यक्त्व भये संतैं तिनिकूं न मानै है श्रद्धै नांही है ॥ भावार्थ ॥ एक है तिनि सूं मिथ्यादृष्टी ही

कैप्रीतिनक्षिउपजैहैजोनिरतिचारसम्यक्त्ववानहैसोइनिकूंनमांनैहै ॥ आगैंकहैहै
जोजिनकाउपदेश्याधर्मकूंकरैहैसोसम्यग्दृष्टीश्रावकहैसोइनिकूंयातैंविपरीतकरैहै
सोमिथ्यादृष्टीहै ॥ गाथा ॥ सम्माइट्ठीसावयधम्मंजिणदेवदेसियंकुणदि विवरीयंकुव्वंतो
मिच्छादिट्ठीमुणेयव्वो ॥ ९४ ॥ अर्थ ॥ जोजिनदेवकाउपदेश्याधर्मकरैहैसोसम्यग्दृष्टीश्रावक
है बहुरिजोअन्यमतकाउपदेश्याधर्मकरैहैसोमिथ्यादृष्टीजांननां ॥ भावार्थ ॥ ऐसैंकह-
नेतैंइहांकोईतर्ककरैजोयहतौअपनांमतपोषनेकीपक्षपातमात्रधारनाकहिये ताकूं
कहियेऐसैंनांहीहैजामैंसर्वजीवनिकाहितहोयसोधर्महै सोऐसाअहिंसारूपधर्म-
जिनदेवहीनैंप्ररूप्याहै अन्यमतमैंऐसाधर्मकानिरूपणनांही ऐसैंजांननां ॥ आगैं
कहैहैंमिथ्यादृष्टीजीवहैसोसंसारविषैंदुखसहितभ्रमैहै ॥ गाथा ॥ मिच्छादिट्ठीजोसो संसा २७४
रेसंसरेइसुहरहिओ जम्मजरमरणपउरे दुक्खसहस्साउलेजीवो ॥ ९५ ॥ अर्थ ॥ जोमिथ्या-

दृष्टीजीवहैसोजरामरणनिकरिप्रचुरजस्याअरदुःखनिकेहजारांतिनिकरिव्याप्तजोसं
सारताविषैंसुखकरिरहितदुखीभयाभ्रमैहै ॥ भावार्थ ॥ मिथ्याभावकाफलसंसारमैंभ्रम-
णकरनांहीहैसोयहसंसारजन्मजरामरणआदिहजारांदुःखनिकरिभस्याहैतिनदुःख
निकौंमिथ्यादृष्टीयामैंभ्रमतासंताभोगवैहै इहांदुःखतौअनंताहैहजारांकहनेतैंप्रसि-
द्धअपेक्षाबहुलताजनाईयेहै ॥ आगैंयासम्यक्त्वमिथ्यात्वकेकथनकूंसंकोचैहै ॥ गाथा ॥
सम्मगुणमिच्छदोसोमणेणपरिभाविऊणतंकुणसु जंतेमणस्सरुच्चइ किंबहुणापला
विएणंतु ॥ ९६ ॥ अर्थ ॥ हेभव्यऐसैंपूर्वोक्तप्रकारसम्यक्त्वकेगुणमिथ्यात्वकेदोषतिनिकूंअ
पनेंमनकरिभावनाकरिअरजोअपनांमनकूंरुचैप्रियलागैसोकरौबहुतप्रलाप-
रूपकहनेंकरिकहासाध्यहै ऐसैंआचार्यनैंउपदेशकीयाहै ॥ भावार्थ ॥ ऐसैंआचार्यनैं
कह्याहैसोबहुतकहनेंकरिकहा सम्यक्त्वमिथ्यात्वकेगुणदोषपूर्वोक्तजांणिजोमनमैं

स्यैसो करौ। तहां ऐसा उपदेश का आशय है जो मिथ्यात्व कूं छोडि सम्यक्त्व कूं ग्रहण करौ
या संसार का दुख मेटि मोक्ष पावौ ॥ आगैं कहै है जो मिथ्याभावन छोड्या तब बाह्य भेष तैं
किछू नांही है ॥ गाथा ॥ बाहरिसंगविमुक्को णवि मुक्को मिच्छभाव णिग्गंथो। किं तस्स ठाण
मौणं ण वि जाणदि अप्पसमभावं ॥९७॥ अर्थ। जो बाह्य परिग्रह तैं रहित अर मिथ्याभाव स
हित निर्ग्रंथ भेष धारण कीया है सो परिग्रह रहित नांही है ताकै ठाण कहिए खडा होय का
योत्सर्ग करनें करि कहा साध्य है अर मौन धारै ताकरि कहा साध्य है जातैं आत्मा का सम भा
व जो वीतराग परिणाम ताकूं सो न जाणैं है ॥ भावार्थ ॥ जो आत्मा शुद्ध स्वभाव कूं जाणि सम्य
ग्दृष्टी न होय है अर मिथ्याभाव सहित परिग्रह छोडि निर्ग्रंथ भी भया है कायोत्सर्ग करना
मौन धारण इत्यादि बाह्य क्रिया करै है तौ ताकी क्रिया मोक्षमार्ग मैं सराहनें योग्य नांही है २७५
तातैं सम्यक्त्व विनां बाह्य क्रिया का फल संसार ही है ॥ आगैं आशंका उपजै है जो सम्यक्त्व

विनां बाह्यलिंग निःफल कह्या तहां जो बाह्यलिंग मूलगुण बिगाडै ताकै सम्यक्त्व रहै कि नां
ही ताका समाधान कूं कहै है ॥ गाथा ॥ मूलगुणं छित्तूण य बाहरिकम्मं करेइ जो साहू सो ण
लहइ सिद्धिसुहं जिणलिंगविराधगो णिच्चं ॥९८॥ अर्थ। जो मुनि निर्ग्रंथ होय मूलगुण धार
णा करै है तिनकूं छेदन करि बिगाडि करि अर अन्य बाह्य तप कर्म क्रिया करै सो सिद्ध जो
मोक्ष ताका सुख कूं नांही पावै है ऐसा मुनि जो जिनलिंग की क्रिया है ते करै है तहां मूलगु
ण अठाईस कहे हैं पांच महाव्रत पांच समिति पांच इंद्रियनि का निरोध छह आवश्यक भू
मिशयन स्नान का त्याग वस्त्र का त्याग केशलौंच एकवार भोजन खडा भोजन दंतधावन
का त्याग ऐसैं अठाईस मूलगुण हैं तिनिकूं विराधि करि अर कायोत्सर्ग मौन तप ध्यान अध्य
यन करै है तौ तिनि क्रियानि करि मुक्ति न होय है जातैं जो ऐसैं श्रद्धा करै जो हमारै सम्यक्त्व
तौ है ही बाह्य मूलगुण बिगडै तौ बिगडौ हमारै मोक्षमार्ग ही है तौ ऐसी श्रद्धा तैं तौ जिन आ

ज्ञानंगकरनेंतैंसम्यक्त्वकाभीभंगहोयहैतबमोक्षकैसैंहोयअरकर्मकेप्रबलउदय
तैंचारित्रभ्रष्टहोयअरजिनआज्ञामानैहैतैसाश्रद्धानरहैतौसम्यक्त्वरहैहै। अरमूलगुण
विनांकेवलसम्यक्त्वहीतैंमुक्तिनांही। अरसम्यक्त्वविनांकेवलक्रियाहीतैंमुक्तिनां
हीऐसैंजांननां। इहांकोईपूछैमुनिकैस्नानकात्यागकह्या। अरहमऐसैंभीसुनैहैंजो
चंडालआदिकास्पर्शहोयतौदंडस्नानकरैहै। ताकासमाधान। जोजैसैंग्रहस्थस्नान
करैहैतैसैंस्नानकरनेंकात्यागहै। जातैंयामैंहिंसाकीबहुलताहै। बहुरिमुनिकैऐ
सास्नानहैजोकमंडलमैंप्रासुकजलरहै। ताकरिमंत्रपढिमस्तकपरिधारामात्रदेहै।
अरतिसदिनउपवासकरैहै। ऐसास्नानहै। इहांमंत्रअरतपस्नानप्रधानहैजलस्नान
प्रधाननांहीऐसैंजांननां। आगैंकहैहैजोआत्मस्वभावतैंविपरीतिवाह्यक्रियाक
र्महैसोकहाकरैमोक्षमार्गमैंतौकछूभीकार्यनकरैहै। गाथा। किंकाहदिवहिकम्मं

किंकाहदिबहुविहंचखवणंचकिंकाहदिआदावंआदसहावस्सविवरीदो॥९९॥
अर्थ। आत्मस्वभावतैंविपरीतप्रतिकूलवाह्यकर्मजोक्रियाकांडसोकहाकरैगाकि
छूमोक्षकाकार्यतौकिंचितमात्रभीनांहीकरैगा। बहुरिबहुतअनेकप्रकारक्षपणक
हियेउपवासादिवाह्यतपसोभीकहाकरैगाकिछूभीनांहीकरैगा। बहुरिआतापनयो
गआदिकायक्लेशसोकहाकरैगाकिछूभीनांहीकरैगा। भावार्थ। वाह्यक्रियाकर्मश
रीराश्रितहै। अरशरीरजडहैआत्माचेतनहै। जहांजडकीक्रियातौचेतनकूंकछूफलक
रैहैनांहीजैसाचेतनकाभावजेतीक्रियामैंमिलैहै। ताकाफलचेतनकूंलागैहैतहांचेत
नकाअशुभउपयोगमिलैतबतौअशुभकर्मबंधै। अरशुभउपयोगमिलैतबशुभकर्मबं
धैअरजबशुभअशुभदोऊतैंरहितउपयोगहोयतबकर्मनबंधैपहलैकर्मबंधेहोयति
निकीनिर्जराकरिमोक्षकरैऐसैंचेतनकाउपयोगकैअनुसारफलैहैतातैंऐसैंकह्याहै

जोबाह्यक्रियाकर्मतैंतौकिछूमोक्षहोयहैनांहीउपयोगजयैमोक्षहोयहै तातैंदर्शी
नज्ञानउपयोगकाविकारमेटिशुद्धज्ञानचेतनांकाअनुभवअभ्यासकरनामोक्षकाउ
पायहै आगैंयाहीअर्थकूंफेरिविशेषकरैहै गाथा जइपढइबहुसुयाणं जइकाए
हदिबहुविहंचचारितं तंबालसुयंचरणंहवेइअप्पस्सविवरीय १०० अर्थ जोआत्मस्व
भावतैंविपरीतबाह्य बहुतशास्त्रनिकूंपढैगाबहुरिबहुतप्रकारचारित्रकूंआचरैगा
तौतेसर्वहीबालश्रुतअरबालचारित्रहोयगा भावार्थ आत्मस्वभावतैंविपरीतशास्त्र
कापढनांअरचारित्रकाआचरणयेसर्वहीबालश्रुतबालचारित्रहै अज्ञानीकीक्रिया
हैजातैंग्यारहअंगनवपूर्वपर्यंततौअभव्यजीवभीपढैहै अरबाह्यमूलगुणरूपचारित्र
भीपालैहैतौऊमोक्षकौयोगनांहीऐसैंजांननां आगैंकहैहैजोऐसासाधुमोक्षपावै २७७
है गाथा वेरग्गपरोसाहू परदव्वपरम्मुहोयसोहोय संसारसुहविरत्तोसगसुद्धसुहेसु अ

णुरत्तो १०१ गुणगणविहूसियंगो हेयोपादेयणिच्छिदोसाहू झाणज्झयणेसुरदो सोपा
वइउत्तमंठाणं १०२ युग्मं अर्थ जोसाधुऐसाहोयसोउत्तमस्थानजोलोकशिखरपरि
सिद्धक्षेत्रतथामिथ्यात्वआदिचौदहगुणस्थाननितैंपरैशुद्धसिद्धस्वभावरूपस्थानसो
पावैहै कैसाभयाप्रथमतौवैराग्यविषैंतत्परहोयहैसंसारदेहभोगतैंपहलैंविरक्तहो
यमुनिभयातिसहीभावनांयुक्तहोय बहुरिपरद्रव्यतैंपराङ्मुखहोयजैसैंवैराग्यभया
२ तैसैंहीपरद्रव्यकात्यागकरितिसतैंपराङ्मुखरहै बहुरिसंसारसंबंधीइंद्रियनिकेद्वारै
विषयनितैंसुखसाहोयहैतातैंविरक्तहोयबहुरिअपनांआत्मीकशुद्धसुखकषायनि
केक्षोभरहितनिराकुलसांतभावरूपज्ञानानंदताविषैंअनुरक्तहोयलीनहोयवारवा
रतिसहीकीभावनारहै बहुरिगुणकेगणकरिविभूषितहैआत्मप्रदेशरूपअंगजा
कामूलगुणउत्तरगुणनिकरिआत्माकूंअलंकृतशोभायमानकीयाहै बहुरिहेयउपा

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इस्मारक

अष्टपाहुड
२७८

देयतत्वकानिश्चयजाकैहोयनिजआत्मद्रव्यतौउपादेयहैअन्यपरद्रव्यअरपरद्रव्यके
निमित्ततैंभयेअपनेंविकारभावतेसर्वेहोयहैं ऐसाजाकैनिश्चयहोयहै बहुरिसाधुहो
यआत्मांकेस्वभावकेसाधनेंविषैंनीकैंतत्परहोय बहुरिधर्महोयआत्मांकेस्वभाव
केसाधनेंविषैंनीकैंतत्परहोय बहुरिधर्मशुक्लध्यानअरअध्ययनशास्त्रनिकूंपढि
ज्ञानकीभावनांविषैंसुरतहोयभलैप्रकारलीनहोयऐसासाधुउत्तमस्थानजोमोक्षता
कूंपावैहै ॥ भावार्थ ॥ मोक्षकेसाधनेंकायहउपायहैअन्यकिछूनांहीहै ॥ आगैंकहैहैजो
सर्वतैंउत्तमपदार्थशुद्धआत्माहैसोयादेहहीमैंतिष्टैहैताकूंजाणौं ॥ गाथा ॥ णविएहिंजं
णविज्जइझायज्झइझाएहिंअणवरयंथुव्वंतेहिंथुणिज्जइदेहत्थंकिंपितंमुणह १०३
॥ अर्थ ॥ देहस्थजीवहोतुमयादेहविषैंजोतिष्ठाऐसाकिछूक्यौंहैताहिजाणू केसाहैजेलोक २७८
मैंनमनेंयोगइंद्रादिकहैंतिनिकरितौनमनेंयोगहै बहुरिजोध्यानकरनेंयोगहैती

४६

र्थंकरआदिकपरमेष्टीतिनकैनिरंतरध्यावनेंयोगहै बहुरिजेस्तुतिकरनेंयोगतीर्थं
करादिकहैंतिनिकैस्तुतिकरनेंयोगहैऐसाकिछूहैसोयादेहहीविषैंतिष्टैहैताकूंय
थार्थजाणं ॥ भावार्थ ॥ शुद्धपरमात्माहैसोयद्यपिकर्मकरिआछादितहैतौऊभेदज्ञानीनि
कैयादेहहीविषैंतिष्टतासर्वकर्मकलंकतैंरहितसास्वतादेवसत्वचैतन्यआनंदमयी
अनुभवगोचरतिष्टैहैताहीकूंध्यायकरितीर्थंकरादिभीमोक्षपावैहैयातैंऐसाकह्या
हैजोलोकमैंनमनेंयोगतौइंद्रादिकहैंअरतीर्थंकरादिकहैतथास्तुतिकरनेंयोगती
र्थंकरादिकहैंतेभीजाकूंनमैंहैंध्यावैहैंजाकीस्तुतिकरैहैंऐसाकछूवचनकैअगोचर
भेदज्ञानीनिकैअनुभवगोचरपदार्थपरमात्मावस्तुहैताकास्वरूपजाणंताकूंनमौंध्या
वौबाह्यरिकाहेकूंहेरौऐसाउपदेशहै ॥ आगैंआचार्यकहैहैजोअरहंतादिकपंचप
रमेष्टीहैतेभीआत्माहीविषैंहैताकैमेरैआत्माहीशरणाहै ॥ गाथा ॥ अरुहासिद्धायरियाउ

वज्झायासाहु पंचपरमेठी ते विहु चिट्ठई आदे तम्हा आदा हु मे सरणं १०४ अर्थ अर्हंत
सिद्ध आचार्य बहुरि उपाध्याय साधु ए पंच परमेष्ठी हैं ते भी आत्मा विषैं ही चेष्टारूप हैं आ
त्मा की अवस्था हैं ताते मेरे आत्मा ही का शरण है ऐसैं आचार्य अभेदनय प्रधान करि
कह्या है भा वार्थ ए पांच पद आत्मा ही के हैं जब यह आत्मा घातिकर्म का नाश करै है
तब अरहंत पद होय है बहुरि सो ही आत्मा अघातिकर्म का भी नाश करि निर्वाण कूं प्रा
प्त होय है तब सिद्धपद कहावे है बहुरि जब दीक्षा शिक्षा देने वाला मुनि होय है तब आचा
र्य कहावे है बहुरि पठन पाठन विषैं तत्पर ऐसा मुनि होय है तब उपाध्याय कहावे है अ
र जब रत्नत्रयस्वरूप मोक्षमार्ग कूं केवल साधै ही तब साधु कहावे है ऐसैं पांचूं ही पद आत्मा
ही मैं है सो आचार्य विचारै है जो या देह मैं आत्मा तिष्ठै है सो यद्यपि कर्म करि आच्छादित है
तौऊ पांचूं पदयोग्य है याही कूं शुद्धस्वरूप ध्याये पांचूं पद का ध्यान है ताते मेरै या आत्मा
२७९

ही का शरण है ऐसी भावना करी है अर पंच परमेष्ठी का ध्यानरूप अंत मंगल जनाया है
आगैं कहै है जो अंतसमाधिमरण मैं च्यारि आराधना का आराधन कह्या है सो ए भी
आत्मा ही की चेष्टा है ताते आत्मा ही का मेरै शरण है गाथा सम्मत्तं सण्णाणं सच्चारित्तं
हि सत्तवं चेव चउरो चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे शरणं १०५ अर्थ सम्यक्त्व अर सम्य
ग्ज्ञान सम्यग्चारित्र सम्यग्तप ए च्यारि आराधना है ते भी आत्मा विषैं ही चेष्टारूप है ए
च्यारौं ही आत्मा ही की अवस्था है ताते आचार्य कहै है मेरै आत्मा ही का शरण है भा
वार्थ आत्मा का निश्चयव्यवहारात्मक तत्वार्थश्रद्धानरूप परिणाम सो तो सम्यक्त्व है ब
हुरि तिनि ही तत्वार्थनि विषैं श्रद्धानपूर्वक ज्ञानपरिणाम सो सम्यग्ज्ञान बहुरि सम्यग्ज्ञा
न करि तत्वार्थनि कूं जाणि रागद्वेषादिक सूं रहित परिणाम सो सम्यक्चारित्र है बहु
रि अपनी शक्ति अनुसार सम्यग्ज्ञानपूर्वक कष्ट आदरि स्वरूप का साधना सो सम्यक्

तपहैंऐसेंएच्यारोंहीपरिणामआत्माकेहैंतातेंआचार्यकहैहैंमरेआत्माहीकाश
रणाहैयाहीकीभावनांमेंच्यारोंहीआयगयेअंतसल्लेखनांमेंच्यारिआराधनाका
आराधनकह्याहैंतहांसम्यकदर्शनज्ञानचारित्रतपइनिच्यारिनिकाउद्योतन
उद्यवन निर्वहन साधन निस्तरण ऐसैंपंचप्रकारआराधनांकह्याहैसोआत्मां
केभावनेंमैंच्यारोंआयगाये ऐसैंअंतसल्लेखनाकीभीभावनायाहीमैंआयगईऐसैंजा
ननां तथाआत्माहीपरममंगलस्वरूपहैऐसाभीजनायाहै आगैंयहमोक्षपाहुडग्रंथ
पूर्णकीयाताकापढनेंसुननेंभावनेंकाफलकहैहैं गाथा एवंजिणपण्णत्तं मोक्खस्स
यपाहुडंसुभत्तीए जोपढइसुणइभावइ सोपावइसासयंसुक्खं १०६ अर्थ एवंकहि
येऐसैंपूर्वोक्तप्रकारजिनदेवनैंकह्याऐसामोक्षपाहुडग्रंथहैताहिजोजीवभक्तिभा २८०
वकरिपढैहैसुणेंहैं अरयाकावारवारचिंतवनरूपभावनांकरैहैसोजीवशाश्वता

सुखजोनित्यअतींद्रियज्ञानानंदमयसुखताहिपावैहैं भावार्थ यामोक्षपाहुडमैंमोक्ष
काअरमोक्षकाकारणकास्वरूपकह्याहैंअरजोमोक्षकाअरमोक्षकारणकास्वरूप
अन्यप्रकारमानैंहैंतिनिकानिषेधकीयाहैंतातैंयाग्रंथकेपढनेंसुननेंतेंताकायथार्थ
स्वरूपकाज्ञानश्रद्धानआचरणहोयहैंअरताकीवारवारभावनांकरणेंतैंताविषैंदृ
ढहोयएकाग्रध्यानकीसामर्थ्यहोयहैतिसध्यानतैंकर्मकानाशहोयशाश्वतासुखरूप
मोक्षकीप्राप्तिहोयहैं तातैंयाग्रंथकूंपढनांसुननांनिरंतरभावनांराखणीयहआशयहै
ऐसैंश्रीकुंदकुंदआचार्यनैंयहमोक्षपाहुडग्रंथसंपूर्णकीया याकासंक्षेपऐसैंश्रीकुं
दकुंदआचार्यनैंयहमैंजोयहजीवशुद्धदर्शनज्ञानमयीचेतनांस्वरूपहैतोऊअनादि
हीतैंपुद्गलकर्मकेसंयोगतैंअज्ञानमिथ्यात्वरागद्वेषादिकविभावरूपपरिणमैंहैंता
करिनवीनकर्मबंधकासंतानकरिसंसारमैंभ्रमैंहैतहांजीवकीप्रवृत्तिकेसिद्धांतमैंभाव

निकेसामान्यकरिचौदहगुणस्थाननिरूपणकीयेहैंतिनिमैंमिथ्यात्वकेउदयकरिमिथ्या
त्वगुणस्थानहोयहै। अरमिथ्यात्वकीसहकारिणीअनंतानुवंधीकषायहैताकेकेवलउ
दयकरिसासादनगुणस्थानहोयहै। अरसम्यक्त्वमिथ्यात्वदोऊकैमिलापरूपमिश्रप्र
कृतिकेउदयकरिमिश्रगुणस्थानहोयहै इनितीनगुणस्थाननिमैंतौआत्मभावनांका
अभावहीहै। वहुरिजवकाललब्धिकेनिमित्ततैंजीवाजीवपदार्थनिकाज्ञानश्रद्धानभ
येसम्यक्त्वहोयहैतवयाजीवकूंअपनांपरकाअरहिताहितकाहेयउपादेयकाजांणपणां
होयहैतवआत्मांकीभावनांहोयहैतवअविरतिनांमांचौथागुणस्थानहोयहै। अरज
वएकदेशपरद्रव्यतैंनिवृत्तिकापरिणांमहोयतवजोएकदेशचारित्ररूपपांचमांगुण
स्थानहोयहैताकूंश्रावकपदकह्या। वहुरिसर्वदेशपरद्रव्यतैंनिवृत्तिरूपपरिणांमहो २८१
यतवसकलचारित्ररूपछठागुणस्थानकह्यियामैंकछूसंज्वलनचारित्रमोहकातीव्र

उदयतैंस्वरूपकेसाधनेंविषैंप्रमादहोयहैंतातैंताकानांमप्रमत्तहैइहांतैंलगायऊपरि
केगुणस्थानवालेकूंसाधूकहिएहै। वहुरिजवसंज्वलनचारित्रमोहकामंदउदयहोय
तवप्रमादकाअभावहोयतवस्वरूपकेसाधनेंविषैंवडाउद्यमहोयतवयाकानांमअप्र
मत्तऐसासातमांगुणस्थानहै। यामैंधर्मध्यानकीपूर्णताहै। वहुरिजवइसगुणस्थानमैं
स्वरूपमैंलीनहोयतवशातिशयअप्रमत्तहोयश्रेणीकाप्रारंभकरैहै। तवयातैंऊपरिचा
रित्रमोहकाअव्यक्तउदयरूपअपूर्वकरणअनिवृत्तिकरणसूक्ष्मसांपरायनांमधारक
एतीनगुणस्थानहोयहै। तहांचौथासूंलगायदशमांसूक्ष्मसांपरायतांईकर्मनिकीनिर्ज
राविशेषताकरिगुणश्रेणीरूपहोयहैतवयाकैऊपरिमोहकर्मकाअभावरूपग्यारमांवा
रमांउपशांतकषायक्षीणकषायगुणस्थानहोयहै। तापीछैंतीनघातिकर्मरहेतिनिका
नांशकरिअनंतचतुष्टयप्रगटहोयअरहंतहोयहैतहांसयोगीजिननांमगुणस्थानहै

होयोगकीप्राप्तिहै वहुरियोगनिकानिरोधयकीअयोगीजिननांमांचौदवांगुणस्थान
होयहैतहांअघातिकर्मकानीनांशकरिअरलगताहीअनंतरसमयनिर्वाणपदकूंप्रा
प्तिहोयहैतहांसंसारकाअभावतैमोक्षनांमपावैहै ऐसेंसर्वकर्मनिकाअभावरूपमो॥
क्षहैताकाकारणसम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रकहेतिनिकीप्रवृत्तिचौथेगुणस्थानसम्यक्
प्रगटहोनैतैएकदेशकहियेतहांतैलगताआगैंजैसेंजैसेंकर्मकाअभावहोयतैसेंतैसें
सम्यग्दर्शनादिकीप्रवृत्तिवधतीजाय अरजैसेंजैसेंइनिकीप्रवृत्तिवधैतैसेंतैसेंकर्मका
अभावहोयजायजबघातिकर्मकाअभावहोयतबतेरहैंचौदहैंगुणस्थानअरहंतहोय
तबजीवनमुक्तकहावैअरचौदमांगुणस्थानकेअंतरत्नत्रयकीपूर्णताहोयहैताकैअघा॥
तिकर्मकानीअभावहोयतबसाक्षात् मोक्षहोयतबसिद्धकहावैऐसेंमोक्षकाअरमोक्ष २८२
केकारणकास्वरूपजिनआगमतैंजांणिअरसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रमोक्षकाकारणक॥

ह्याहैताकूंनिश्चयव्यवहाररूपयथार्थजांणिसेवनां अरतपभीमोक्षकाकारणहैसोभी
चारित्रमैंअंतरभूतकरित्रयात्मकहीकह्याहैऐसैंइनिकारणनितैंप्रथमतौतद्भवही॥
मोक्षहोयहैअरजेतैंकरणकीपूर्णतानहोयतापहलैंकदाचिआयुकर्मपूर्णहोयजाय॥
तौस्वर्गविषैदेवहोयहैतहांभीयहवांछारहैजोयहशुभयोगकाअपराधहै इहांतैचय
करिमनुष्यहौंगातबसम्यग्दर्शनादिकरूपमोक्षमार्गकूंसेयमोक्षप्राप्तहौंगा ऐसीभाव
नारहैहैतबतहांतैचयमनुष्यहोयमोक्षपावैहै अरअबारकालमैंद्रव्यक्षेत्रकालभाव
कीसामग्रीकानिमित्तनांहीतातैंतद्भवमोक्षनांही तौऊजोरत्नत्रयकूंशुद्धताकरिसेवैतौ
इहांतैदेवपर्यायपायपीछैमनुष्यहोयमोक्षपावैहै तातैंयहउपदेशहैजैसेंवणैतैसेंरत्न
त्रयकीप्राप्तिकाउपायकरणांतहांभीसम्यग्दर्शनप्रधानहैताकाउपायतौअवश्यचाहि
येतातैंजिनागमकूंसमझिसम्यक्त्वकाउपायअवश्यकरनांयोग्यहै ऐसेंइसग्रंथकासं

अष्टपाहुड
२८३

ह्वैपजाणूं ॥ छप्पय ॥ सम्यक्दर्शनज्ञानचरणशिवकारणजांणूं जेनिश्चयव्यवहाररूपनी
कैंलखिमांनूं सेवोनिशदिनभक्तिभावधरिनिजवलसारू जिनआज्ञासिरधारिअन्य
मततजिअघकारू इसमांनुषभवकूंपायकैंअन्यचावचितमतिधरो भव्यनिकूंउपदेश
यहगहिकरिसिवपदसंचरो ॥ १ ॥ दोहा ॥ वंदौंमंगलरूपजेअरुमंगलकरतार पंचपरमगु
रुपदकमल ग्रंथअंतहितकार १ इहांकोईपूछैजोग्रंथनिमैंजहांतहांपंचनमोकारमंत्र
कीमहिमांवहुतलिखीमंगलकार्यमैंविघ्नकेमेटिवेकूंयेहीप्रधांनकह्या अरयामैंपंचप
रमेष्टीकूंनमस्काररहै सोपंचपरमेष्टीकीप्रधांनताभई पंचपरमेष्टीकूंपरमगुरुकहेतहांया
मंत्रकामहिमांतथामंगलरूपपणांअरयातैंविघ्नकानिवारणअरपंचपरमेष्टीकैप्रधांन-
पणांअरगुरुपणांअरनमस्कारयोग्यपणांकैसैंहै सोकहनांताकासमाधांनरूपकिछूसंक्षे २८३
पलिखियेहै तहांप्रथमतौपंचनमोकारमंत्रहैताकैंपैंतीसअक्षरहैसोएमंत्रकेबीजाक्ष-

५१

रहैंतथाइनिकाजोडसर्वमंत्रनितैंप्रधानहै इनिअक्षरनिकागुरुआम्नायतैंशुद्धउच्चा
रहोयतथासाधनयथार्थहोय तवअक्षरकार्यमैंविघ्नकेनिवारनेकूंकारनहैतातैंमंग-
लरूपहै जोमंकहियेपापताकूंगालैताकूंमंगलकहिये तथामंगसुखताकूंल्यावैता-
कूंमंगलकहियेसोयातैंदोऊकार्यहोयहै उच्चारतैंविघ्नटलैहैअर्थविचारैंसुखहोयहै
यादीतैंयाकूंमंत्रनिमैंप्रधानकह्याहै ऐसैंतौमंत्रकेआश्रयमहिमांहै वहुरिपंचपरमेष्टी
कूंनमस्कारयामैंहै तेपंचपरमेष्टीअरहंतसिद्धआचार्यउपाध्यायसाधुएहैसोइनिकास्व
रूपतौग्रंथनिमैंप्रसिद्धहै तथापिकछूलिखियेहै तहांयहअनादिनिधनअकृत्रिमसर्-
वज्ञकीपरंपराकरिसिद्धिआगममैंकह्या ऐसाषट्द्रव्यस्वरूपलोकहै तामैंजीवद्रव्यअ
नंतानंतहैअरपुद्गलद्रव्यतिनितैंअनंतानंतगुणहै वहुरिएकएकधर्मद्रव्यअधर्मद्रव्य
आकाशद्रव्यहै वहुरिकालद्रव्यअसंख्यातद्रव्यहै तहांजीवतौदर्शनज्ञानमईचेतना

अष्टपाहुड: स्वरूपहैअरपांचअजीवहैंचेतनारहितजडहैंतेधर्मअधर्मआकाशकालएच्या
२८४ रिद्रव्यतौजैसेंहैंतैसेंतिष्टैहैंतिनिकैविकारपरिणतिनांही।वहुरिजीवपुद्गलद्रव्यकैप
रस्परनिमित्तनैमित्तिकभावतैंविभावपरिणतिहैतामैंभीपुद्गलतौजडहै।ताकैविभा
वपरणतिकादुखसुखकासंवेदननांहीअरजीवचेतनहैयाकैसुखदुःखकासंवेदनहै
तहांजीवअनंतानंतहैंतिनिमैंकेईतौअभव्यहैं।तथाअभव्यसारिखेभव्यहैं।तेहीकेईजा
तिकैसंसारतैंनिवृत्तिकबहूनहोयहै।तिनिकैसंसारअनादिनिधनहै।वहुरिकेईभव्य
हैंतेसंसारतैंनिवृत्तिहोयसिद्धहोयहैंऐसैंजीवनिकीव्यवस्थाहै।अवइनिकैसंसारकी
उत्पत्तितथाप्रवृत्तिकैसैंहैसोलिखियेहैं।तहांजीवनिकैज्ञानावरणआदिआठकर्मका
अनादिबंधरूपपर्यायहैतिसबंधकेउदयकेनिमित्ततैंजीवरागद्वेषमोहादिविभावपर २८४
णतिरूपपरिणमैहैतिसविभावपरिणतिकेनिमित्ततैंनवीनकर्मबंधहोयहैऐसैंइनि

५२

कैसंतानजीवकैचतुर्गतिरूपसंसारकीप्रवृत्तिहोयहैतिससंसारमैंच्यारिगतिमैंअनेकप्र
कारसुखदुखसंसाररूपभयासमैंहैतहांकोईकालऐसाआवैमुक्तहोनांनिकटआवैत
वसर्वज्ञकाउपदेशकानिमित्तपायअपनांस्वरूपकूंअरकर्मबंधकास्वरूपकूंअरअपनै
विभावकास्वरूपकूंजांणैइनिकाभेदज्ञानहोयतवपरद्रव्यनिकूंसंसारकेनिमित्तजानिति
नितैंविरक्तहोयअपनास्वरूपकाअनुभवकासाधनकरैदर्शनरूपस्वभावविषैंथिरहो
नेकासाधनकरैतवयाकैवाह्यसाधनहिंसादिकपांचपापकात्यागरूपनिर्ग्रंथपदसर्वपरि
ग्रहकात्यागरूपदिगंवरमुद्राधारैपांचसमितितीनगुप्तिरूपप्रवर्तैतवसर्वजीवनि
कीदयाकरनेंवालेसाधुकहावैतामैंतीनपदईहोयजोआपसाधुहोयअन्यकूंसाधुपद
ईकीसिख्यादेयसोतौआचार्यकहावै।अरआपसाधुहोयजिनसूत्रपढैपढावैसोउपाध्याय
कहावैअरजोअपनेंस्वरूपकासाधनतैंध्यानकेवलतैंच्यारिघातिकर्मकानाशकरिके

वलज्ञानकेवलदर्शनअनंतसुखअनंतवीर्यकूंप्राप्तिहोयसोअरहंतकहावैतवती
र्थंकरतथासामान्यकेवलीजिनइंद्रादिककरिपूज्यहोयतिनिकीवांणीखिरैजिसतैंसर्व
जीवनिकाउपकारहोयअहिंसाधर्मकाउपदेशहोयसर्वजीवनिकीरक्षाकरावैयथार्थ
पदार्थनिकास्वरूपजनायमोक्षमार्गदिखावैहैंऐसीअरहंतपदईहोयहै वहुरिजोच्या
रिअघातिकर्मकाभीनाशकरिसर्वकर्मनितैंरहितहोयसोसिद्धकहावैऐसैंएपांचपदक
हैतेअन्यसर्वजीवनितैंमहानहैतातैंपंचपरमेष्ठीकहावैहैतिनिकेनांमतथास्वरूपके
दर्शनसमरणध्यानपूजननमस्कारतैंअन्यजीवनिकैशुभपरिणांमहोयहैतातैंपापका
नाशहोयहैवर्त्तमानकेविघ्नविलयहोयहैआगामीपुण्यकावंधहोयहै तातैंस्वर्गादिक
शुभगतिपावैहै अरइनिकीआज्ञाअनुसारप्रवर्त्तनेतैंपरंपराकरिसंसारतैंनिवृत्तिहो। २८५
यहैतातैंएपंचपरमेष्ठीसर्वजीवनिकेउपगारीपरमगुरुहैसर्वसंसारीजीवनिकेपूज्यहै

इनिसिवायअन्यसंसारीजीवहैतेरागद्वेषमोहादिविकारनिकरिमलिनहैतेपूज्यनांही
तिनिकैमहानपणांगुरुपणांपूज्यपणांनांहीआपहीकर्मनिकेवसिमलिनतवअन्यकापा
पतिनितैंकैसैंकटैऐसैंजिनमतमैंइनिपंचपरमेष्ठीकामहांनपणांप्रसिद्धहै अरन्यायकेव
लतैंभीऐसैंहीसिद्धिहोयहै जातैंजेसंसारकेभ्रमणतैंरहितहोयतेहीअन्यकेसंसारकाभ्र
मणमेटनेंकूंकारणहोयजैसैंजाकैधनादिवस्तुहोयसोहीअन्यकूंधनादिकदेअरआपही।
दरिद्रीहोयतवअन्यकादरिद्रकैसैंमेटैतैसैंजाननां। ऐसैंजिनकूंसंसारकेविघ्नदुःखमेट
नेंहोयअरसंसारकाभ्रमणकादुःखरूपजन्ममरणतैंरहितहोनांहोयतेअरहंतादिक।
पंचपरमेष्ठीकानांममंत्रजपोइनिकास्वरूपकादर्शनस्मरणध्यानकरौतातैंशुभपरिणां
महोयपापकानाशहोयसर्वविघ्नटलैपरंपराकरिसंसारकाभ्रमणमिटैकर्मकानांशहो
यमुक्तिकीप्राप्तिहोयऐसाजिनमतकाउपदेशहैसोभव्यजीवनिकैअंगीकारकरनेंयोग्य

अष्टपाहुड़ हैइहांकोईकहैअन्यमतमैंब्रह्माविष्णुशिवआदिकइष्टदेवमांनैहैतिनिकैविघ्नटल
२८६ तेदेषियेहैतथातिनिकेमतमैंराजादिकवडेवडेपुरुषदेषियेहैजिनिकैनीतिइष्टहैसोविघ्ना
दिककामेटनेंवालाहैतैसैंहीतुमारेहीकहौऐसैंक्यौंकहौजोयेपंचपरमेष्ठीहीप्रधानहै
अन्यनांहीताकूंकहियेरेभाईजीवनिकूंदुःखतौसंसारभ्रमणकाहैअरसंसारकेभ्रम
णकेकारणरागद्वेषमोहादिकपरिणामहैतेरागादिकवर्त्तमानमैंआकुलतामईदुःख
स्वरूपहै तातैब्रह्मादिकइष्टदेवकहेतेतौरागादिककामक्रोधादिककरियुक्तहैअज्ञान
तपकेफलतैंकेईजीवसर्वलोकमैंचमत्कारसहितराजादिकवडीपदईपावैताकूंलो
कवडामांनिब्रह्मादिकभगवानकहनेंलगिजाय कहैजोपरमेश्वरब्रह्मकाअवतारहै
सोऐसैंमांनेंतौकिछूमोक्षमार्गीतथामोक्षस्वरूपहोयनांहीसंसारीहीरहैहै ऐसैंहीअन्य २८६
सर्वदेवपदईवालेजांननेंतेआपहीरागादिककरिदुःखरूपहैजन्ममरणकरिसहित

५४

हैंपरकासंसारकादुःखकैसैंमेटैगेअरतिनिकेमतमैंविघ्नकाटलनांअरराजादिकवडे
पुरुषहोतेकहेसोएतौजीवनिकैपूर्वैकिछूशुभकर्मबंधेथेताकाफलहैपूर्वजन्ममैंकिं
चितशुभपरिणामकीयाथातातैपुण्यकर्मबंध्याथाताकाउदयतैकिछूविघ्नटलैहैअर
राजादिकपदईपावैहैसोपूर्वैकिछूअज्ञानतपकीयाहोयताकाफलहैसोएतौपुण्यपा
परूपसंसारकीचेष्टाहैयामैकिछूवडाईनांही वडाईतौजोहैजातैसंसारकाभ्रमणरूप
दुःखमिटैसोतौवीतरागविज्ञानभावनितैमिटैगा तिनिवीतरागविज्ञानभावनियुक्त
पंचपरमेष्ठीहैतेहीसंसारकेभ्रमणकादुःखमेटनेंकूंकारणहैवर्त्तमानमैंकिछूपूर्वशु
भकर्मकाउदयतैपुण्यकाचमत्कारदेषिभ्रमनउपजावनांपुण्यपापदोऊसंसारहैति
नितैंरहितमोक्षहैसोसंसारतैछूटिमोक्षहोयतैसाहीउपायकरनांअरवर्त्तमानकाभी
विघ्नजैसापंचपरमेष्ठीकानांममंत्रध्यानदर्शनस्मरणतैमिटैगातैसाअन्यकेनामादि

कतैतौ न मिटैगा तातै एपंचपरमेष्ठी शांतरूपहैं केवलशुभपरिणामनिकूंही कारणहैं
वज्ञरि अन्यइष्टके रूपहैं ते तौ रौद्ररूपहैं तिनिका तौ दर्शनस्मरणहै सो रागादिक तथा
भयादिकका कारणहै तिनितैं तौ शुभपरिणाम होता दीषै नाही कोई कै कदाचित कि
छू धर्मानुरागकेवशतैं शुभपरिणाम होय तौ सो तिनितैं तौ न भया करि येवा प्राणीकै
स्वाभाविकधर्मानुरागके वशतैं होयहै तातैं अतिशयवान शुभपरिणामका कारण तौ
शांतरूप पंचपरमेष्ठीहीका रूपहै तातैं याहीका आराधन करणां वृथा खोटी युक्ति सुणि
भ्रमनउपजावनां ऐसैं जाननां॥ इति श्री कुंदकुंदआचार्यकृत प्राकृतगाथाबंधभा
वपाहुडकी देशभाषामयवचनिका समाप्त॥ ५॥ अथ लिंगपाहुडग्रंथकी वचनि
का लिखियेहै॥ दोहा॥ जिनमुद्राधारकमुनी निजस्वरूपकूंध्याय कर्मनाशि शिवसुख
लयो वंदौं तिनिके पाय १ ऐसैं मंगलकै अर्थि जिनिमुनिनिनैं सिवसुखपाया तिनिकूं न

मस्कार करि श्री कुंदकुंदआचार्यकृत गाथाबंध लिंगपाहुड नाम ग्रंथहै ताकी देशभा
षामयवचनिका लिखियेहैं। तहां प्रथमही आचार्य मंगलकै अर्थि इष्टकूं नमस्कार
करि ग्रंथकरनेंकी प्रतिज्ञा करैहै॥ गाथा॥ काऊण णमोकारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं
वोच्छामि समणलिंगं पाहुडसत्थं समासेण १॥ अर्थ॥ आचार्य कहैहैं जो मैं अरहंतनिकूं
अर तैसैं ही सिद्धनिकूं नमस्कार करि अर श्रमणलिंगका है निरूपण जामैं ऐसा पाहुड
शास्त्र ताहि कहूंगा इस कालमैं मुनिका लिंग जैसा जिनदेव कह्याहै तैसा मैं विपर्यय भ
या ताका निषेध करनेंकूं यह लिंगका निरूपणका शास्त्र आचार्यनैं रच्याहै ताकी आ
दिमैं घातिकर्मका नाश करि अनंतचतुष्टय पाय अरहंत भये तिनिमैं यथार्थ श्रमणका
लिंगका मार्ग प्रवर्त्तेना अर तिस लिंगकूं साधि सिद्ध भये ऐसे अरहंत सिद्ध तिनिकूं नम
स्कार करि ग्रंथकरनेंकी प्रतिज्ञा करीहै॥ ३॥ आगैं कहैहैं जो लिंग बाह्य भेषहै सो अंतरंग

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

धर्मसहितकार्यकारीहै ॥गाथा॥ धम्मेणहोइलिंगं णलिंगमित्तेणधम्मसंपत्ती जाणेहिभा
वधम्मंकिंतेलिंगेणकायव्वो ॥ २ ॥ अर्थ ॥ धर्मकरिसहिततौलिंगहोयहैवहुरिलिंगमात्र
करिधर्मकीप्राप्तिनांहीहै तातैंहेभव्यजीवतूंभावरूपधर्महैताहिजांणि अरकेवललिं
गहीकरितेरैकहाकार्यहोयहैकिछूभीनांही ॥भावार्थ॥ इहांऐसाजांनूंजोलिंगऐसाचि
न्हकानांमहैसोबाह्यभेषधारैसोमुनिकाचिन्हहैसोऐसाचिन्हहैजोअंतरंगवीतरागस्व
रूपधर्महोयतौतासहिततौयहचिन्हसत्यार्थहोयहैअरतिसवीतरागस्वरूपआत्माका
धर्मविनांलिंगजोबाह्यभेषतिसमात्रकरिधर्मकीसंपतिजोसम्यक्प्राप्तिसोनांहीहैता
तैंउपदेशकीजियेहैजोअंतरंगभावधर्मजोरागद्वेषमोहरहितआत्माकाशुद्धज्ञानदर्श
नरूपस्वभावसोधर्महैताहिहेभव्यतूंजांणिअरइसबाह्यलिंगभेषमात्रकरिकहा २८८
कार्यहैकिछूभीनांही वहुरिइहांऐसाभीजांननांजोजिनमतमैंलिंगतीनकहेहैं

एकतौमुनिकायथाजातिदिगंवरलिंगइजाउत्कृष्टश्रावककातीजाअर्जिकाकाइनि
तीनूंहीलिंगकूंधारिभ्रष्टहोयअरजोकुक्रियाकरैताकानिषेधहैतथाअन्यमतकेके
ईभेषहैतिनिकूंभीधारिजोकुक्रियाकरैसोभीनिंदाहीपावैहैतातैंभेषधारिकुक्रिया
नकरनांऐसाजनायाहै ॥ आगैंकहैहैजोजिनकालिंगजोनिर्ग्रंथदिगंवररूपताहि
ग्रहणकरिअरकुक्रियाकरिहास्यकरावैसोपापवुद्धिहैही ॥गाथा॥ जोपापमोहिदम
दीलिंगंघित्तूणजिनवरिंदाणं उवहसदीलिंगभावंलिंगिम्मियनारदोलिंगी ३ अर्थ
जोजिनवरेंद्रकहियेतीर्थंकरकालिंगनग्नदिगंवरकारूपकूंग्रहणकरिअरलिंगीप
णाकाभावकूंउपहसतैहैहास्यमात्रगिणैंहैसोकैसाहैजैसैंलिंगीकहिएभेषीताविषैं
नारदलिंगीहैतैसाहै अथवायागाथाकाचौथापादपाठांतरऐसाहैलिंगनामदिलिं
गीणंयाकाअर्थयहजोलिंगीजोअन्यकेईलिंगकाधारीतिनिकालिंगकूंभीनष्टकरै

है ऐसा जनावै है जो लिंगी सर्व ऐसे ही है कैसा है लिंगी पापकरि मोहित है बुद्धि जाकी
॥ भावार्थ ॥ लिंगधारी होय अर पापबुद्धि करि किछू कुक्रिया करै तब तानै लिंगीपणां हा
स्यमात्र गिण्या किछू कार्यकारी गिण्या नांही लिंगीपणां तौ भावसुद्ध मैं सोहै था सो भाव
बिगडै तब बाह्य कुक्रिया करनै लगा तब यानै तिस लिंगकूं लजाया अर अन्य लिंगीनि
का लिंगकूं भी कलंक लगाया लोक कहनै लगे जो लिंगी ऐसे ही होय है अर जैसैं नार
द का भेष है तामैं बहु स्वइछ्या स्वछंद जैसैं प्रवर्त्तै है तैसैं यहु भी भेषी भ्रष्ट्या तातैं आचार्य
ऐसा आम्नाय धारि कह्या है जो जिनेंद्र का भेषकूं लजावनां जोग्य है नांही ॥ आगैं कहै
है जो लिंगधारि कुक्रिया करै ताकूं प्रगट करि कहै है ॥ गाथा ॥ णच्चदि गायदि तावं वायं
पंगए दि लिंगरूवेण सो पापमोहिदमदी तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥४॥ अर्थ ॥ जो लिंग २८९
रूप करि नृत्य करै है गावै है वादित्र बजावै है सो कैसा है पापकरि मोहित है बुद्धि जाकी ऐ

सा है सो तिर्यंचजोनि मैं पशु है श्रमण नांही ॥ भावार्थ ॥ लिंगधारि भाव बिगाडि नाचै गावै बा
जित्र बजावै इत्यादि कुक्रिया करै सो पापबुद्धि है पशु है अज्ञानी है मनुष्य नांही मनुष्य
होय तौ श्रमणपणां राखै जैसैं नारद भेषधारि नाचै गावै बजावै है जैसैं यह भी भेषी भया त
ब उत्तम भेषकूं लजाया तातैं लिंगधारि ऐसा होनां जुक्त नांही ॥ आगैं फेरि कहै है ॥
॥ गाथा ॥ समूहदि रक्खेदि य अट्टज्झाणं दिवइ बहुपयत्तेण सो पावमोहिदमदी तिरिक्खजो
णी ण सो समणो ॥५॥ अर्थ ॥ जो निर्ग्रंथ मुनि लिंगधारि अर परिग्रहकूं संग्रहरूप करै है अ
थवा ताकी वांछा चितवन करै है बहुरि तिस परिग्रहकी रक्षा करै है ताका बहुत यत्न
करै है ताकै अर्थि आर्त्तध्यान निरंतर ध्यावै है सो कैसा है पापकरि मोहित है बुद्धि जाकी
ऐसा तिर्यंचयोनि है अज्ञानी है श्रमण तौ नांही श्रमण तौ मनुष्य होय है मनुष्य होय तौ श्र
मणपणां काहे कूं बिगाडै ऐसैं जाननां ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ कलहं वादं जूवा णिच्चं

वज्जमाणगछिर्देलिंगी तश्चदिणरयंपाउकरमाणोलिंगिरूवेण ६ अर्थ जोलिंगीमा
नकषायकरिगर्विवांनमया निरंतरकलहकरैहैवादकरैहैं द्यूतक्रीडाकरैहैसोपा
पीनरककूंप्रासहोयहै कैसाहैलिंगकारूपकरिऐसैंकरतासंतापवर्त्तेहैं भावार्थ
जोगृहस्थरूपकरिऐसीक्रियाकरैहैं ताकूंतौयहउराहनांनाहीजातैंकदाचितृगृह
स्थतौउपदेशादिककानिमित्तपायकुक्रियाकरतारहजायतौनरकनजायवजैरिलिंग
धारितिसरूपकरिकुक्रियाकरैतौताकूंउपदेशभीनलागैयातैंनरककाहीपात्रहोयहै
आगैंफेरिकहैहैं गाथा पाउपहदंभावोसेवदिअबंभलिंगरूवेण सोपावमोहिद
मदी हिंडदिसंसारकांतारे ७ अर्थ जोपापकरिउपहतकहिएघात्यागयाहैआत्मभाव
जाकाऐसाभयासंतालिंगीकारूपकरिअब्रह्मसेवैहैसोपापकरिमोहितहैबुद्धिजाकी २९०
ऐसालिंगीसंसाररूपीकांतारजोवनताविषैभ्रमैहै भावार्थ पहलैंतौलिंगधारणकी

याअरपीछैंऐसापापपरिणांमभयेजोव्यभिचारसेवनेलगाताकीपापबुद्धिकाकहा
कहनांऐसेकासंसारमैंभ्रमणक्यौंनहोय जाकेअमृतरूजहररूपपरिणमैंताकेरो
गजांनेकीकहाआसा तैसैंयहभयाऐसेकासंसारकटनाकठिनहै आगैंकहैहैंजा
तेंऐसेहैं गाथा दंसणणाणचरित्ते उवहाणेजइणलिंगरूवेण अट्टंझायदिझाणं अ
णंतसंसारिओहोई ८ अर्थ यदिकहिएजोलिंगरूपकरिदर्शनचारित्रकूंतौउपधानरू
पकीयेधारणकीयेअरआर्त्तध्यांनकूंध्यावैहैतौऐसालिंगीअनंतसंसारीहोयहै भा
वार्थ लिंगधारिकरितौदर्शनज्ञानचारित्रकासेवनकरनांथासोतौनकीया अर
परिग्रहकुटंबआदिविषयनिकाप्रसंगछोडाताकीफेरिचिंताकरिआर्त्तध्यांनध्या
वनैलगातवअनंतसंसारीक्यौंनहोययाकायहतात्पर्यहै जोसम्यग्दर्शनरूपभाव
तौपहलीभयेनांहीअरकिछूकारणपायलिंगधारयाताकीअवधिकहातातैंपहलीभ

अष्टपाहुड० बहुभेषकरिलिंगधारनांयुक्तहै ॥ आगैंकहैहैंजोभावशुद्धविनांग्रहस्थाचाराछोडे
२७१ ताकीयहप्रवर्त्तिहोयहै ॥ गाथा ॥ जोजोडेदिविवादंकिखिकम्मवणिज्जजीवघादंच
वच्चदिनरयंपाउ करमाणोलिंगरूवेण ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ जोग्रहस्थनिकेपरस्परविवादजो
डेहैंसगापणाकरावेहै बहुरिकृषिकर्मकहिएषेतीवाहणकिसाणकाकार्य अरवा
णिज्यकहिएव्यापारविणजंवेजपकाकार्य्य अरजीवघातिकहिएवैद्यकर्मकेअर्थिजी
वघातकरनांयहधीवरादिककाकार्य्यइनिकार्यनिकूंकरैहैसोलिंगरूपकरिअैसें
करतापापीनरककूंकरैहैसोलिंगरूपकरिअैसेंकरतापापीनरककूंप्राप्तिहोयहै ॥
॥ भावार्थ ॥ ग्रहस्थचाराछोडिशुद्धभावविनांलिंगीभयाथायातैंभावकीवासनांमिटी
नांहीतबलिंगरूपधारिकरिभीकरनेंलगाआपविवाहनकरैतोऊग्रहस्थकेसग ॥ २७१
पणकरायविवाहकरावैतथाषेतीविणजजीवहिंसाआपकरैतथाग्रहस्थनिकूंकरा

५८

वैतबपापीभयानरकजायअैसेंभेषधारनेंतैंतोग्रहस्थहीभलाथापदईकापापतौन
लागतातातैंअैसाभेषधारनांउचितनांहीयहउपदेशहै ॥ आगैंफेरिकहैहै ॥ गाथा ॥ चो
राणलाउराणयजुद्धविवादंचतीव्वकम्मेहिं जंतेणदिव्वमाणोगच्छदिलिंगीनरयवा
सं १० ॥ अर्थ ॥ जोलिंगीअैसेंप्रवर्त्तैहैसोनरकवासकूंप्राप्तहोयहै जोचोरनिकेअरला
परकहिएझूठबोलनेंवालानिकेयुद्धअरविवादकरावैहै बहुरितीव्रकर्मजोजिनमें
बहुतपापउपजैअैसेतीव्रकषायनिकेकार्यतिनिकरितथायंत्रकहिएचोपडिअरस
तरंजपासाहिंडोलाआदिताकरिक्रीडाकरतासंताप्रवर्त्तैहै अैसेंबरततानरकजायहै
इहांलाउराणाकापाठांतरअैसाभीहै राउलाणंयाकाअर्थरावलकहियेराजकार्यक
रनेंवालेतिनिकेयुद्धविवादकरावै अैसेंजाननां ॥ भावार्थ ॥ लिंगधारणाकरिअैसेकार्य
करैसोनरकपावैहीयावैयामैंसंसयनांही ॥ आगैंकहैहैं लिंगधारिलिंगयोगयकार्यकर

अष्टपाहुड
२९२

ताडःखीरहैहैतिनिकार्यनिकाआदरनांहीकरैहैंसोभीनरकजायहै गाथा दंसणणाणचरित्ते तवसंजमनियमनित्तकम्मंमि पीडयदि वट्टमाणो पावदि लिंगी णरयवासं ११ अर्थ जोलिंगधारणकरिअरइनिक्रियानिविषैंकरताबाध्यमान होयपीडापावैहैंडुःखीहोयहैंसोलिंगीनरकवासकूंपावैहैतेक्रियाकहाप्रथमतौदर्शनज्ञानचारित्रतिनिविषैंइनिकानिश्चयव्यवहारतिनिकाशक्तिसारकरनां वहुरिसंयमइंद्रियमनकवशिकरनांजीवनिकीरक्षाकरनी नियमकहियेनित्यकिछूत्यागकरनां वहुरिनित्यकर्मकहियेआवश्यकआदिक्रियाकाकालकीकालनित्यकरनांएलिंगकैयोगक्रियाहैंइनिक्रियानिविषैंकरतोडःखीहोयहैंसोनरकपावैहै भावार्थ लिंगधारणकरिएकार्यकरनैंथेतिनिकातौनिरादरकरैअरप्रमादसेवैलिंगकैयोग्यकार्यकरताडःखीहोयतवजाणियेयाकैभावशुद्धतैंलिंगग्रहणभयानांहीअरभावबिगडेताकाफलतौनरकहीहोयहैंऐसेंजाननां आगैंकहैहैंजोभोजनविषैंभीरसनिकालोलपीहोयसोभीलिंगकूंलजावैहै गाथा कंदप्पाइयवट्टइ करमाणो भोयणेसु रसगिद्धिं माई लिंगविवाई तिरिक्खजोणी ण सो समणो १२ अर्थ जोलिंगधारिकरिभोजनविषैंरसकीगृद्धिकहिएअतिआशक्ततातातिहिकरतोहैंसोकंदर्प्पआदिकविषैंवर्तेहैकांमकासेवनकीवांछातथाप्रमादनिद्रादिकजाकैप्रचुरवधैहैतवलिंगमैंव्यवापीकहियेव्यभिचारीहोयहै मायीकहिएतिसकांमसेवनकेअर्थिअनेकछलकरनांविचारैहैजोऐसाहोयहैंसोतिर्यंचयोनिमैंपशूतुल्यहैमनुष्यनांहीयाहीतैंश्रमणनांही भावार्थ ग्रहस्थचाराछोडिआहारविषैंलोलपकरनैंलगातौग्रहस्थचारामैंअनेकरसीलेभोजनमिलैथेतेकाहेकूंछोडेतातैंजांनिएहैंजोआत्मभावनांकारसकूंपहचान्यांनांहीतातैंविषैसुखकीइच्छाहिरहीतवभोजनकेरसकीलारकेअन्यभीविषयनिकीचाहिहो

२९२

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

अष्टपाहुड यतवब्रह्मचारआदिमैंप्रवर्त्तिकरिलिंगकूंलजावैऐसेलिंगतैंतौग्रहस्थधारहीश्रेष्ठ
२७३ हैऐसेंजाननां ॥ आगैंफेरियाहीकाविशेषकहैहैं ॥ गाथा ॥ धावदिपिंडणिमित्तंकलहं
काऊणभुंजदेपिंडं अवरूपरूईसंतो जिणमग्गिणहोयसोसमणो ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ जोलिंग
धारीपिंडजोआहारताकेनिमित्तदौडैहैं बहुरिआहारकैनिमित्तकलहकरिआहार
कूंभुंजेहैखायहै बहुरिताकेनिमित्तअन्यतैंपरस्परईर्षाकरैहैसोश्रमणजिनमार्गीनां
हीहै ॥ भावार्थ ॥ इसकालमैंजिनलिंगतैंभ्रष्टहोयपहलैंअर्द्धफालकभयेपीछैंतिनिमैंश्वेतां
बरादिकसंघभयेतिनिमैंसिथलाचारपोषिलिंगकीप्रवृत्तिबिगाडीतिनिकायहनिषेध
है तिनिमैंअबभीकेईऐसेदेषियेहैं जेआहारकेअर्थिसीघ्रदौडैहैं ईर्यापथकीसुधिनां
ही बहुरिआहारग्रहस्थकाघरसूंल्यायदोयच्यारिसाथिमिलिवैठिषायतामैंबटवारामैंस २७३
रसनिरसआवैतबपरस्परकलहकरै बहुरितिसकेनिमित्तपरईर्षाकरैऐसैंप्रवर्त्तैंति

काहेकेश्रमणतेजिनमार्गीतौनांहीकलिकालकेभेषीहैंतिनिकूंसाधुमांनैंहैंतेभीअज्ञा
नीहै ॥ आगैंफेरिकहैहैं ॥ गाथा ॥ गिण्हदिअदत्तदाणंपरणिंदाविययरोक्खदूसेहिं जि
णलिंगंधारंतो चोरेणवहोइसोसमणो ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ जोबिनांदीयातौदानलेहै अरपरो
क्षपरकेदूषणनिकरिपरकीनिंदाकरैसोजिनलिंगकूंधारतासंताभीचोरकीज्यौंश्रमण
है ॥ भावार्थ ॥ जोजिनलिंगधारिबिनांदीयाआहारआदिककूंग्रहणकरैहै परकैदेनेकीइच्छा
नांहीकिछूभयादिकउपजायलेतयानिरादरतैंलेसोभीबिनांदीयातुल्यजांननां अरप
रोक्षपरकादोषकहैसोश्रमणभेषमैंचोरहै बिनांदीयालेणांछिपिकरिकार्यकरनांएतौ
चोरकेकार्यहैं यहभेषधारिऐसैंकरनेलगातबचोरहीठहरयातातैंऐसाभेषीहोनांयो
ग्यनांही ॥ आगैंकहैहैंजोलिंगधारिऐसैंप्रवर्त्तैसोश्रमणनांही ॥ गाथा ॥ उप्पडदिपडदि
धावदिपुढवीउरकणदिलिंगरूवेण इरियावहधावंतोतिरिक्खजोणीणसोसमणो

अष्टपाहु० २०४
१५ अर्थ जो लिंगधारि ईर्यापथ सोधि करि चालनो या तामैं सोधि करि न चालै दौडता चा
लता संता उछलै गिरि पडै फेरि उठि करि दौडै वहुरि पृथ्वी कूं खोदै चालतै ऐसैं पग पटकै
तामैं पृथ्वी खुदि जाय ऐसैं चालै सो तिर्यंचयोनि है पशु अज्ञानी है मनुष्य नांही ॥ आगैं
कहै हैं जो वनस्पति आदि स्थावर जीव की हिंसा तैं वंध होय है ताकूं न गिणता स्थावर जी
वनि की हिंसा स्वछंद होय वकरै है तौ श्रमण नांही ॥ गाथा ॥ वंधो णिरउ संतो सस्सं खंडे
दि तह य वसुहं पि छिंददि तरुगण वहुसो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥ १६ ॥ अर्थ जो लिं
गधारण करि अर वनस्पती आदि की हिंसा तैं वंध होय है ताकूं नांही दूषता संता वंध कूं न
गिणता संता सस्य कहिए धान्य ताकूं खंडै है वहुरि तैसें ही वसुधा कहिए पृथ्वी ताहि खंडै
है खोदै है वहुरि वहुत वार तरुगण कहिए वृक्षनि के समूह तिनि कूं छेदै है ऐसा लिंगी ॥ २०४
तिर्यंचयोनि है पशु है अज्ञानी है श्रमण नांही ॥ भावार्थ ॥ वनस्पती आदि स्थावर जीव जि

५२

न सूत्र मैं कहे हैं अर तिनि की हिंसा तैं कर्म का वंध कह्या है ताकूं निर्दोष गिणता कहै है
जो या मैं काहे का दोष है काहे का वंध है ऐसा मानता तथा वैद्यकर्म के निमित्त औषधादि
क कूं धान्य कूं तथा पृथ्वी कूं तथा वृक्षनि कूं खंडै है खोदै है छेदै है सो अज्ञानी पशु है लिं
गधारि श्रमण कहावै है सो श्रमण नांही है ॥ आगैं कहै है जो लिंगधारण करि स्त्रीनि तैं
राग करै है अर पर कूं दूषण दे है सो श्रमण नांही ॥ गाथा ॥ रागो करेदि णिच्चं महिलावग्गं परं
च दूसेइ दंसणणाणविहीणो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥ १७ ॥ अर्थ जो लिंगधारण करि
स्त्रीनि के समूह निप्रति तौ निरंतर राग प्रीति करै है अर पर जो कोई अन्य निर्दोष है ति
नि कूं दूषै है दूषण दे है कैसा है सो दर्शन ज्ञान करि हीन है ऐसा लिंगी तिर्यंचयोनि
है पशु समान है अज्ञानी है श्रमण नांही ॥ भावार्थ ॥ लिंगधारण करै ताकै सम्यग्दर्शन होय
है अर परद्रव्यनि तैं रागद्वेष न करणा ऐसा चारित्र होय है तहां जो स्त्रीसमूहनि तैं तौ रागप्री

तिकरै है अर अन्यकूं इसणा लगाय देषकरै है व्यभचारीका सा स्वभाव है तौ ताकै काहेका र
दर्शन ज्ञान अर काहेका चारित्र लिंगधारि करि लिंगमैं करनें योग्य था सो न कीया तब अ
ज्ञानी पशुसमान नहीं है श्रमण कहावै है सो आपनी मिथ्यादृष्टी है अर अन्यकूं मिथ्यादृष्टी क
रनेंवाला है ऐसेका प्रसंग युक्त नांही ॥ आगैं फेरि कहै है ॥ गाथा ॥ पव्वजहीणगहीणणेहं
तीसम्मदङदेवजसो आयारविणपहीणो तिरिक्खसेणी तमो सवणो ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ जो लिंगी
कै प्रव्रज्या जो दिक्षा करि रहित जे ग्रहस्थ तिनि परि अर शिष्यनि विषें सनेह वहुत वरतै अर
आचार मुनिनि की क्रिया अर गुरुनि का विनय करि रहित होय सो तिर्यंचयोनि है पशु है अ
ज्ञानी है श्रमण नांही है ॥ भावार्थ ॥ ग्रहस्थनि तैं तौ वारवार लालपाल राषै अर सिष्यनि सूं स्ने
ह वहुत राषै अर मुनि की प्रवृत्ति आवस्यक आदि किछू करै नांही गुरुनिसूं प्रतिकूल रहै वि २९५
नयादिक करै नांही ऐसा लिंगी पशुसमान है ताकूं साधु न कहिये ॥ आगैं कहै है जो लिंगधा

रि ऐसैं पूर्वोक्त प्रकार प्रवर्तै है सो श्रमण नांही ऐसा संक्षेप करि कहै है ॥ गाथा ॥ एवंसहिउमु
णिवर संजदमझमि वट्टदे णिच्चं वहुलं पि जांणमाणो भावविणठोण सो सवणो ॥ १९ ॥ अर्थ ॥
एवं कहिए पूर्वोक्त प्रकार प्रवृत्ति सहित जो वर्तै है सो हे मुनिवर जो ऐसा लिंगधारी संयमी मु
निनि के मध्य भी निरंतर रहै है अर वहुत ज्ञान कूं भी जांणता है तौऊ भावकरि नष्ट है श्रमण नां
ही है ॥ भावार्थ ॥ ऐसा पूर्वोक्त प्रकार का लिंगी जो सदा मुनिनि मैं रहै है अर वहुत शास्त्र जाणै
है तौऊ भाव जो शुद्ध दर्शन ज्ञान चारित्र रूप परिणमता करि रहित है तातैं मुनि नांही भ्रष्ट है
अन्य मुनिनि के भाव विगाडनें वाला है ॥ आगैं फेरि कहै है जो स्त्रीनि का संसर्ग वहुत राषै सो
भी श्रमण नांही है ॥ गाथा ॥ दंसणणाणचरित्ते महिलावगामि देदवीसट्ठो पासत्थविहुणियट्ठो
भावविणट्ठो ण सो सवणो ॥ २० ॥ अर्थ ॥ जो लिंगधारि करि अर स्त्रीनि के समूह विषैं तिनिका
विस्वास करि तथा तिनिकूं विस्वास उपजावै दर्शन ज्ञान चारित्र कूं दे है तिनिकूं सम्यक्त्व वता

अष्टपाहुड॰ वेहैंपढनांपढावनांज्ञानदेहैंतिनिकूंदिक्षादेहैंप्रवृत्तिसिषावेहैंऐसैंविस्वासउपजाय
२७६ तितिनिमैंप्रवर्त्तेहैंसोऐसालिंगीपार्श्वस्थतैंभीहैंअरपार्श्वस्थतैंभीनिकृष्टहैं प्रगटभावकरि
विनष्टहैंश्रमणनांहीं ॥ भावार्थ ॥ लिंगधारिस्त्रीनिकूंविस्वासउपजायतिनिसूंनिरंतरप
ढनांपढावनांलालपालराषैतिनिकूंजांनियेयाकाभावषोटाहैपार्श्वस्थभ्रष्टमुनिकूंकहि
येहैंतितैंभीयहनिकृष्टहैंऐसेकूंसाधनकहिये ॥ आगैंफेरिकहैहैं ॥ गाथा ॥ पुंश्चलिघ
रिजसुभुंजइ णिच्चंसंथुणदियोसएपिंडपावदिबालसहावंभावविणट्ठोणसोसवणो ॥ २१
॥ अर्थ ॥ जोलिंगधारिअरपुंश्चलीव्यभिचारिणीस्त्रीताकेघरिभोजनलेहैंआहारक
रेहैंअरनित्यताकीस्तुतिकरेहैंताकूंसराहेहैंजोयेबडीधर्मात्माहैयाकेसाधुनिकीबडीभ
क्तिहैंऐसैंनित्यताकूंसराहैहैंऐसैंपिंडकूंपालेहैंऐसालिंगीबालस्वभावकूंप्राप्तहोयहैं २७६
अज्ञांनीहैंभावकरिनष्टहैंसोश्रमणनांहीहैं ॥ भावार्थ ॥ जोलिंगधारिव्यभिचारिणीकाआ

हारपायपिंडपालैताकीनित्यसराहनांकरैतबजांणियेयहभीजीवव्यभिचारीहैंअज्ञांनीहै
जाकूंलज्जाभीनआवैऐसेभावकूरिबिनष्टहैमुनिपणांकेभावनांहीतबमुनिकाहेका ॥
आगैंइसलिंगपाहुडकूंसंपूर्णकरैहैंअरकहैहैंजोधर्मकूंयथार्थपालैहैंसोउत्तमसुख
पावैहैं ॥ गाथा ॥ इयलिंगपाहुडमिणंसव्वंबुद्धेहिंदेसियंधम्मंपालेहिकट्ठसहियंसोगाहदि
उत्तमंठाणं ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ ऐसैंयहलिंगपाहुडशास्त्रसर्वबुद्धिजेज्ञानीगणधरादिकति
निनैंउपदेश्यादेताकूंजाणिकरिअरजोमुनिधर्मकूंकाष्टसहितबडायत्नकरिपालै
हैराषैहैंतेउत्तमस्थांनजोमोक्षतार्हिपावैहैं ॥ भावार्थ ॥ यहमुनिकालिंगहैसोबडापुण्यउ
दयतैंपाइएहैताकूंपायकरिअरफेरिषोटेकारणमिलायताकूंबिगाडैहैतोजांणियेयह
बडानिर्भागीहैचिंतामणिरत्नपायकौडीसाटैगमावैहै ॥ तातैंआचार्यउपदेशकीयाहैजो
ऐसापदपाययाकूंबडेयत्नसूंराषणांकुसंगतितैंबिगाडैगातौजैसैंपहलैंसंसारभ्रमण

नयातैसैंफेरिअनंतसंसारमैंभ्रमणहोयगा अरयत्नतैंपालैगातौसीघ्रहीमोक्षपावैगा
तातैंजाकूंमोक्षचाहियेसोमुनिधर्मकूंपायजत्नसहितपालैपरीसहकाउपसर्गकाकष्ट
आवैतौऊचिगोमतियहश्रीसर्वज्ञदेवकाउपदेशहै ऐसैंयहलिंगपाहुडग्रंथपूर्णकी
याताकासंक्षेपऐसाजोइसपंचमकालमैंजिनलिंगधारिकरिकालदोषतैंकेतेकपन
तैंभ्रष्टभयेभेषविगाडिअर्धफालकाकहायेतिनिमैंफेरिश्वेतांबरभयेतिनिमैंजापा
नीयभयेइत्यादिकहोयसिथलाचारपोषनेकेशास्त्ररचिस्वछंदभयेतिनिमैंकेतेकनिप
टहीनिंद्यप्रवृत्तिकरनेंलगेतिनिकानिषेधकासिसकरिसर्वज्ञकेउपदेशकूंसमझिकरि
श्रद्धानकरनांऐसेनिंद्यआचरणवालेनिकूंसाधुमोक्षमार्गीनमांनैंतिनिकावंदनांपू
जनांनकरनांयहउपदेशहै छप्पय लिंगमुनीकोधारिपापजोभावबिगारै सोनिंदाकूं २०७
पायआपकोअहितविथारै ताकूंपूजैथुवैवंदनाकरैजुकेई तेभीतैसेहोयसाथिडोओ

८५

तिकूंलेई यातैंजेसांचेमुनिभयेभावशुद्धमैंथिररहै तिनिउपदेशैमारगलगैतेसांचेज्ञा
नीकहै १ दोहा अंतरबाहरिशुद्धजे जिनिमुद्राकूंधारि भयेसिद्धआनंदमय वंदौंयोग
सवारि इतिश्रीकुंदकुंदाचार्यकृतगाथाबंधलिंगपाहुडग्रंथकीदेशभाषामयवचनि
कासमाप्तम् ॥ ७ ॥ अथशीलपाहुडग्रंथकीदेशभाषामयवचनिकालिखियेहै दोहा
भवकीप्रकृतिनिवारिकैं प्रगटकीयेनिजभाव होअरहंतजुसिद्धफुनि वंदौंतिनिधरि
चाव १ ऐसैंइष्टकेनमस्काररूपमंगलकरिशीलपाहुडनांमग्रंथश्रीकुंदकुंदआचार्य
कृतगाथाबंधकीदेशभाषामयवचनिकालिखियेहै तहांप्रथमहीश्रीकुंदकुंदआ
चार्यग्रंथकीआदिकैविषैंइष्टकेनमस्काररूपमंगलकरिग्रंथकरनेंकीप्रतिज्ञाकरै
है गाथा वीरंविसालणयणं रत्तुप्पलकोमलस्समप्पयं तिविहेणपणमिऊणंसील
गुणाणंणिसामेह १ अर्थ आचार्यकहैहैजोमैंवीरकहिएअंतमतीर्थंकरश्रीवर्द्धमा

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

नस्वामी परमभट्टारक ताहि मनवचनकायकरि नमस्कार करि अर शील जो निजभाव
रूप प्रकृति ताके गुणनिकूं अथवा शील अर ज्ञानदर्शनादिक गुणनिकूं कहूंगा
कैसे हैं श्रीवर्द्धमानस्वामी विशालनयन हैं तिनिकै वाह्यतौ पदार्थनिकूं देखनेंकूं नेत्र
विशाल हैं विस्तीर्ण हैं सुंदर हैं । बहुरि अंतरंग केवलज्ञानरूप नेत्र समस्त पदार्थनिकूं
देखनेंवाले हैं । बहुरि कैसे हैं रक्तोत्पलकोमलसमपाद कहिए रक्तकमलसारिखे को
मल जिनिके चरण हैं ऐसे अन्यकै नांही । तातैं सर्वकरि सराहनें योग्य हैं पूजनें योग्य हैं
बहुरि याका इहां अर्थ ऐसा भी होय जो रक्त कहिए रागरूप आत्माका भावताका उत्प
ल कहिए दूरि करनां ता विषैं कोमल कहिए कठोरतादि दोषरहित अर सम कहिए रा
गद्वेषरहित हैं पाद कहिए वांणीके पद जिनिकै कोमल हितमित मधुर रागद्वेषरहित ।
जिनिके वचन प्रवर्तें हैं तिनितैं सर्वका कल्याण होय है । भावार्थ । ऐसें वर्द्धमानस्वामीकूं

नमस्काररूप मंगल करि आचार्य शीलपाहुड ग्रंथ करनेंकी प्रतिज्ञा करी है ॥ १ ॥ आगैं शी
लका स्वरूप तथा यातैं गुण होय है सो कहै हैं ॥ गाथा ॥ सीलस्स य णाणस्स य णत्थि विरोहो
बुहेहि णिद्दिट्ठो णवरि य सीलेण विणा विसया णाणं विणासंति ॥ २ ॥ अर्थ ॥ शीलकै अर ज्ञा
नकै ज्ञानीनिनैं विरोध न कह्या है ऐसा नांही जो शील होय तहां ज्ञान न होय अर ज्ञान न
होय तहां शील न होय बहुरि इहां णवरि कहिए विशेष है सो कहै हैं शील विना विष
य कहिए इंद्रियनिके विषय हैं ते ज्ञानकूं विनासै हैं नष्ट करै हैं ज्ञानकूं मिथ्यात्व रागद्वे
षमय अज्ञानरूप करै है ॥ भावार्थ ॥ इहां ऐसा जानना जो शील नाम स्वभावका प्रकृतिका
सिद्ध है तहां आत्माका सामान्यकरि ज्ञानस्वभाव है तहां इस ग्यानस्वभावमैं अनादि कर्म
के संयोगतैं मिथ्यात्व रागद्वेषरूप परिणाम होय है सो यह ज्ञानकी प्रकृति कुशील नाम
पावै है यातैं संसार निपजै है यातैं ताकूं संसारप्रकृति कहिये इस प्रकृतिकूं अज्ञानरू

पकहिएइसप्रकृतितैंसंसारपर्यायविषैंआपामांनैहैतथापरद्रव्यनिविषैंइष्टअनिष्टबु
द्धिकरैहैवहुरियहप्रकृतिपलटैतबमिथ्यात्वकाअभावकहिएतबसंसारपर्यायवि
षैंआपानमांनैपरद्रव्यनिविषैंइष्टअनिष्टबुद्धिनहोयअरइसभावकीपूर्णतानहोयते
तैंचारित्रमोहकाउदयतैंकिछूरागद्वेषरूपकषायपरिणामउपजैताकूंकर्मकाउदयजा
णैंजिनिभावनिकूंत्यागनैंयोग्यजानैंतेत्यागयाचाहैऐसीप्रकृतिहोयतबसम्यग्दर्शन
रूपभावकहिएइससम्यग्दर्शनभावतैंज्ञानभीसम्यक्नामपावैअरयथापदवीचारि
त्रकीप्रवृत्तिहोयजेताअंशारागद्वेषघटैतेताअंशाचारित्रकहिएऐसीप्रकृतिकूंसुशी
लकहिएऐसैंकुशीलकासामान्यअर्थहैतहांसामांन्यकरिविचारियेतबतौअज्ञान
हीकुशीलहैअरज्ञानहीसुशीलहैयातैंऐसैंकह्याहैजोज्ञानकैअरशीलकैविरोधन
नांहीहैवहुरिजबसंसारप्रकृतिपलटिमोक्षसनमुखप्रकृतिहोयतबशीलकहिए

तातैंज्ञानमैंअरशीलमैंविशेषकह्याजोज्ञानकुशीलमैंआवैतौज्ञानकूंइंद्रियनिके
विषनष्टकरैज्ञानकूंअज्ञानकरैतबकुशीलनांमपावैवहुरिइहांकोईपूछैगाथा
मैंज्ञानअज्ञानतथाकुशीलसुसीलकानांमतौनकह्याज्ञानअरशीलऐसाहीक
ह्याहैताकासमाधानऐसाजोपूर्वगाथामैंऐसैंप्रतिज्ञाकरीजोमैंशीलकेगुणनिकूं
कहूंगातातैंऐसाजान्यांजायहैजोआचार्यकेआशयमैंसुशीलकहनेंकाप्रयोजनहै
सुशीलहीकूंशीलनांमकरिकहियेशीलविनाशीलकहिएवहुरिइहांगुणशब्दउप
कारवाचकलेणांतथाविशेषकावाचकलेणाशीलतैंउपकारहोयहैतथाशीलका
विशेषगुणहैसोकहैसीऐसैंज्ञानमैंजोशीलनआवैतौकुशीलहोयइंद्रियविषयमैं
आशक्तहोयतबज्ञानअज्ञाननांमपावैहैऐसैंजाननांवहुरिव्यवहारमैंशीलनांमस्त्री
शीलकासंसर्गवर्जनेकाभीहैसोभीविषयसेवनकाहीनिषेधहैतथापरद्रव्यमात्रका

संसर्गछोड्यांआत्मामैंलीनहोनांसोपरमब्रह्मचर्यहैंऐसैंएशीलकेनामांतरज्ञान
नैं ॥ आगैंकहैहैंजोज्ञानमयेभीज्ञानकीभावनाअरविषयनितैंविरक्तहोनांकठिन
है॥ गाथा॥ दुक्खेणेयदिणाणंणाणंणाऊणभावणा दुक्खं भावियमईवजीवो विसए
सुविरज्जएदुक्खं १२ ॥ अर्थ॥ प्रथमतौज्ञानहैंसोहीदुःखकरिप्राप्तहोयहै वहुरिकदाचि
ज्ञानभीपावैतौताकूंजाणिकरिताकीभावनांकरनां वारवारअनुभवकरनांदुःखक
रिहोयहै वहुरिकदाचिज्ञानकीभावनांसहितभीजीवहोयतौविषयनिकूंदुःखका
रित्यागैहै ॥ भावार्थ॥ ज्ञानकापावनांफेरिताकीभावनांकरनां फेरिविषयनिकात्यागनां
उत्तरोत्तरदुर्लभहैंअरविषयनिकूंत्यागेंविनांप्रकृतिपलटीनजांनियतातैंपूर्वैंऐ
सैंकह्याहैंजोविषयज्ञानकूंविगाडैहैं तातैंविषयनिकात्यागनांसोहीसुशीलहै ॥
आगैंकहैहैंजोयहजीवजेतैंविषयनिमैंवर्त्तैहैतेतैंज्ञानकूंनांहीजांणैहैंज्ञानविनां

विषयनितैंविरक्तहोयतौऊकर्मनिकाक्षयनांहीकरैहैं ॥ गाथा॥ तावणजाणदिणाणं
विसयवलोजाववट्टएजीवो विसएविरत्तमेत्तोणखवेइपुराईयंकम्मं १३ ॥ अर्थ॥ जेतैं
यहजीवविषयवलीकहिएविषयनिकेवशीभूतऊवावर्तैहैतेतैंज्ञानकूंनांहीजां
णैहै वहुरिज्ञानकूंजाणैंविनांकेवलविषयनिविषैंविरक्तमात्रकरिहीपूर्वैंवांधेजे
कर्मतिनिकाक्षयनांहीकरैहैं ॥ भावार्थ॥ जीवकाउपयोगक्रमवर्त्तीहैअरस्वस्वभाव
हैयातैंजैसाज्ञेयकूंजाणैंतिसकालतिसमैंतन्मयहोयवर्त्तैहैंतातैंजेतैंविषयनिमैंआ
सक्तभयावर्त्तैतितैंज्ञानकाअनुभवनहोयइष्टअनिष्टभावहीरहैवहुरिज्ञानका
अनुभवभयेविनांकदाचित्विषयनिकूंत्यागैतौवर्त्तमानविषयनिकूंतौछोडैपरंतु
पूर्वैंकर्मवांधेथेतिनिकातौज्ञानकाअनुभवविनांक्षयहोयनांहीपूर्वकर्मवंधका
क्षयकरनेमैंज्ञानहीसामर्थ्यहैं तातैंज्ञानसहितहोयविषयत्यागनांश्रेष्टहै विषय

निकूंत्यागज्ञांनकीभावनांकरनांयहहीसुशील है॥ आगैं ज्ञानकाअरलिंगकाग्र
हणकाअरतपकाअनुक्रमकहै है॥ गाथा॥ णाणंचरित्तहीणंलिंगग्गहणंचदंसण॥
विहूणं संजमहीणोयतउजइचरइणिरत्थयंसव्वं ५ ॥ अर्थ॥ ज्ञानतौचारित्ररहितहोय
सोनिरर्थकहै बहुरिलिंगकाग्रहणदर्शनकरिरहितहोयतौनिरर्थकहै बहुरिसं
जमकरिरहिततपहोयतौनिरर्थकहैंऐसोएआचरणकरैतौसर्वनिरर्थकहै॥ भा॥
र्थ॥ हेयउपादेयकाग्यांनतौहोयअरत्यागग्रहणनकरैतौज्ञाननिःफलहोययथार्थश्र
द्धाविनांभेषलेतौनिःफलहोय इंद्रियमनवसिकरणाजीवनिकीदयाकरनांयहसं॥
जमहैयाविनांकिछूतपकरैतौहिंसादिककाविपर्ययहोयतपनिःफलहोयऐसेंइ॥
निकाआचरणनिःफलहोयहै॥ गाथा॥ णाणंचरित्तसुद्धं लिंगग्गहणंचदंसणविसु ३०१
द्धं संजमसहिदोयतउ थोउ विमहाफलंहोई ६ ॥ अर्थ॥ ज्ञानतौचारित्रकरिशुद्धअर॥

लिंगकाग्रहणदर्शनकरिविशुद्धसंजमसहिततपथोडाभीआचरैतौमहाफलरूप
होयहै॥ भावार्थ॥ ज्ञानथोडाभीहोयअरआचरणशुद्धकरैतौबडाफलहोय बहुरिय
थार्थश्रद्धापूर्वकभेषलेतौबडाफलकरैजैसैंसम्यग्दर्शनसहितश्रावकहीहोयतौश्रे
ष्ठअरतिसविनांमुनिकाभीभेषश्रेष्ठनांही बहुरिइंद्रियसंयमप्राणसंयमसहितउ॥
पवासादिकतपथोडाभीकरैतौबडाफलहोइअरविषयाभिलाषअरअदयासहित॥
बडाकष्टसहिततपकरैतौहूफलनांहीऐसैंजाननां॥ आगैंकहैहैंजोकेईज्ञानकूं॥
जांनिकरिभीविषयासक्तरहैहैतेसंसारहीमैंभ्रमैहैं॥ गाथा॥ णाणंणाऊणणरा को॥
ईविसयाइभावसंसत्ता हिंडंतिचउरगतिविसएसुविमोहियामूढा ७ ॥ अर्थ॥ केईमूढ
मोहीपुरुषज्ञानकूंजांनिकरिभीविषयकषायनिरूपभावनिकरिआशक्तभयेसंते
च्यारिगतिरूपसंसारमैंभ्रमैहैंजातैंविषयनिकरिविमोहितभयेफेरिभीजगतिमैंभ्र॥

सिद्दोसी तामैंत्री विषयकषाय निहीका संस्कार रहै ॥ भावार्थ ॥ ज्ञांनपाय विषयकषाय
छोडें भलाहैं तातैं ज्ञांन अज्ञांन तुल्य ही है ॥ ७ ॥ आगैं कहै है ज्ञानपाय ऐसैं करै तब संसार
कटै ॥ गाथा ॥ जे पुण विसयविरत्ता णाणं णाऊण भावणा सहिदा। छिंदंति चउरगतिं त
वगुणजुत्ता ण संदेहो ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ बहुरि जे ज्ञांन कूं जांणि करि अर विषयनितैं विरक्त भ
येसंते तिस ज्ञांनका वारंवार अनुभवरूप भावनां सहित होय हैं ते तप अर गुणकरि
मूलगुण उत्तरगुणयुक्त भयेसंते चतुर्गतिरूप संसारता हि छेदै हैं काटै हैं यामैं संदेह नांही
ही ॥ भावार्थ ॥ ज्ञांनपाय विषयकषाय छोडि ज्ञानकी भावनां करै मूलगुण उत्तरगुणक
रि तप करै सो संसारका अभाव करि मुक्ति प्राप्ति होय यह शीलसहित ज्ञानरूप मार्ग है
॥ ८ ॥ आगैं ऐसैं सीलसहित ज्ञानकरि जीव शुद्ध होय हैं ताका दृष्टांत कहै हैं ॥ गाथा ॥ जह कं
चणं विसुद्धं धमइयं खडियलवणलेवेण। तह जीवो वि विसुद्धं णाणं विसलिलेण य

३०

विमलेण ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ जैसैं कंचन सुवर्ण है सो खडिय कहियें सुहागो अर लूण इनि का ले
प करि विशुद्ध निर्मल कांतियुक्त होय है तैसैं जीव है सो भी विषयकषायनिके मलक
रि रहित निर्मल ज्ञांनरूप जलकरि प्रषाल्या कर्मनिकरि रहित विशुद्ध होय है ॥ भावार्थ ॥
ज्ञांन है सो आत्मांका प्रधांन गुण है परंतु मिथ्यात्व विषयकषायनितैं मलिन है यातैं मि
थ्यात्व विषयकषायनिरूप मलकूं दूरि करि उज्जल करि याकी भावनां करै याकूं एका
ग्रकरि याका ध्यांन करै तौ कर्मनका नाश करि अनंतचतुष्टय पाय मुक्त होय शुद्ध आ
त्मा होय है तहां सुवर्णका दृष्टांत है सो जांननां ॥ ९ ॥ आगैं कहै है जो ज्ञानपाय विषयासक्त
होय है सो ज्ञांनका दोषनांही है कुपुरुषांका दोष है ॥ गाथा ॥ णाणस्स णत्थि दोसो कुप्पु
रिसाणो वि मंदबुद्धीणो जे णाणगव्विदा होऊणं विसएसु रज्जंति ॥ १० ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष ज्ञां
नगर्वित होय करि ज्ञांनमद करि विषयनिविषैं रंजित होय हैं सो यह ज्ञांनका दोष नांही

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

हैतेमंदबुद्धिकुपुरुषहैतिनिकादोषहै भावार्थ कोईजाणैंगा किज्ञानकरिबज्ञतपदा
र्थनिकूंजानैंतबविषयनिकीबांछाबजततजई तातैंयहज्ञानकादोषहै तहांआचार्य
कहैहैंश्रैसैंमतिजांनूज्ञानपायविषयनिमैंरंजायमांनहोयहैंसोयहज्ञानकादोषनां
हीहैयहपुरुषमंदबुद्धीहैश्ररकुपुरुषहैताकादोषहैं पुरुषकाहोनहारषोटाहोय
तवबुद्धिविगडिजायतबज्ञानकूंपायश्ररताकामदमैंछकिजाय विषयकषायनिमैं
श्राशक्तहोययहदोषपुरुषकाहैज्ञानकानांही ज्ञानकातौकार्यवस्तकूंजैसाहोय
तैसाजनायदेनांहीहैपीछैप्रवर्त्तनांपुरुषकाकार्यहैश्रैसैंजांननां आगैंकहैहैंपुरु
षकैश्रैसैंनिर्वाणहोयहै गाथा णाणेणादंसणेण यतवेणचरिएणसम्मसहिएण
होहदिपरिणिव्वाणंजीवाणचरिएण१० णैणसम्मसहिएण होहदिपरिणिव्वाणंजी
वाणचरित्तसुद्धाणं - - - - - - - - - - - - - ११ ज्ञानदर्शनतपएसम्यक्भावसहितश्रा

चरेहोयतबचारित्रकरिशुद्धजीवनिकैनिर्वाणकीप्राप्तिहोयहै भावार्थ सम्यक्तक
रिसहितज्ञानदर्शनतपश्राचरैतबचारित्रशुद्धहोयरागद्वेषभावमिटिजायतबनि
र्वाणपावैयहमार्गहै आगैंयाहीकूंशीलप्रधानकरिनियमकरिकहैहैं गाथा सी
लंरक्खंताणं दंसणसुद्धाणदिढचरित्ताणं अत्थिधुवाणिव्वाणं विसएसुविरत्तचित्ता
णं १२ अर्थ जेपुरुषविषयनिविषैंविरक्तहैचित्तजिनिकाश्रैसेहै श्ररशीलकूंराषते
संतेहैंश्ररदर्शनकरिशुद्धहैंश्ररदृढहैचारित्रजिनिकैश्रैसेपुरुषनिकैधुवकहिएनि
श्चयकरिनियमतैंनिर्वाणहोयहै भावार्थ जोविषयतैंविरक्तहोनाहैसोहीशीलकी
रक्षाहै श्रैसैंजेशीलकीरक्षाकरैहैतिनिहीकैसम्यक्दर्शनशुद्धहोयहै श्ररचारित्रश्र
तीचाररहितशुद्धदृढहोयहै श्रैसेपुरुषनिकैनियमकरिनिर्वाणहोयहै श्ररजेविषय
निविषैंश्राशक्तहैतिनिकैशीलविगडैतबदर्शनशुद्धनहोयचारित्रसिथलहोयतबनि

वीणजीनहोयऐसैं निर्वाणमार्गमैंशीलहीप्रधानहै ॥ आगैंकहैहैं जोकदाचित् कोई
विषयनिसूंविरक्तनभयाअरमार्गविषयनिकाविरक्तहोनेंरूपहीकहैहैंतौताकैंमार्ग
कीप्राप्तिहोयहै अरजोविषयनिसेवनेंकूंहीमार्गकहैहैंतौताकेंज्ञानभीनिरर्थकहै गा
था विसएसुमोहिदाणं कहियंमग्गंपिइट्ठदरसीणं उम्मग्गंदरसीणं णाणंपिनिरत्थ
यंतेसिं ॥ १२ ॥ अर्थ जेपुरुषइष्टमार्गकेदिषावनेंवालेज्ञानीहैंअरविषयनितैंविमोहितहैं
तौऊतिनिकैंमार्गकीप्राप्तिकहीहै बहुरिजेउन्मार्गकेदिषावनेंवालेहैंतिनिकातौज्ञान
पावनांभीनिरर्थकहै भावार्थ पूर्वैंकह्याथाजोज्ञानकैंअरशीलकेविरोधनांहीहै अर
यहविशेषहैजोज्ञानहोयअरविषयाशक्तहोयतौज्ञानबिगडैतबशीलनांही अबइहां
ऐसैंकह्याहैजोज्ञानपायकदाचिचारित्रमोहकेउदयतैंविषयनछूटैंतातैंतिनिमैंविमो
हितरहैअरमार्गकीप्ररूपणाविषयनिकात्यागरूपहीकरैताकैंतौमार्गकीप्राप्तिहोयभी

है बहुरिजोमार्गहीकुमार्गरूपप्ररूपणाकरैविषयसेवनेंकूंसुमार्गबतावैतौताकातौज्ञा
नपावनांनिरर्थकहीहै ज्ञानपायभीमिथ्यामार्गप्ररूपैताकैंकाहेकाज्ञानमिथ्याज्ञानहै
इहांआशययहसूचैहैजोसम्यक्त्वसहितअविरतसम्यग्दृष्टीहैंसोतौभलाहैजातैंसम्यग्द
ष्टीकुमार्गप्ररूपैनांहीआपकैंचारित्रमोहकाउदयप्रबलहोयतैतैं विषयछूटैनांहीतातैं
अविरतहैअरसम्यग्दृष्टीनहोयअरज्ञानभीवडाहोयकिछूआचरणभीकरैविषयभीछो
डैअरकुमार्गप्ररूपैतौभलानांहीताकाज्ञानअरविषयछोडनानिरर्थकहैऐसैंजाननां ॥
आगैंकहैहैंजोउन्मार्गकेप्ररूपणाकरनेंवालेकुमतिकुशास्त्रनिकीजेप्रसंसाकरैहैतेबहु
तशास्त्रजांणैंहैतौऊशीलव्रतज्ञानरहितहैतिनिकैंआराधनांनांही गाथा कुमयकुसुय
पसंसा जाणंताबहुविहाइंसत्थाईं सीलवदणाणरहिदा णहुतेआराहयाहोंति ॥ १४ ॥ अ
र्थ जेबहुतप्रकारशास्त्रनिकूंजांणतेसंतेहैंअरकुमतअरकुशास्त्रकेप्रसंसाकरनेंवाले

अष्टपाहुड॰ हैंतेशीलअरव्रतअरज्ञानइनिकरिरहितहैंतेइनिकाआराधकनांहीहैं।भावार्थ।जेव
२०५ कुतशास्त्रनिकूंजांणिज्ञानतौवहुतजानैंहैंअरकुमतिअरकुशास्त्रनिकीप्रसंसाकरै
हैंतौजांनियेयाकैकुमतिसूंअरकुशास्त्रनिसूंरागहैतबतिनिकीप्रसंसाकरैहैंतौएतौ
मिथ्यात्वकेचिह्नहैं।अरजहांमिथ्यात्वहैतहांताकाग्यांनभीमिथ्याहै।अरविषयकषाय
रहितहोयताकूंशीलकहियेसोभीताकैनांहीहैं।अरताकैव्रतभीनांहीहैं।कदाचित्कि
छूव्रताचरणकरैहैतौकुमिथ्याचारित्रस्वरूपहै।तातैंसोदर्शनचारित्रकाआराधनेवाला
नांहीहैंमिथ्यादृष्टीहैं।।आगैंकहैहैंजोरूपसुंदरादिकसामग्रीपावैअरसीलरहितहो
यतौताकामनुष्यजन्मनिरर्थकहै।गाथा।रूवसिरिगव्विदाणंजुव्वणलावण्णकांतिकलि
दाणं।सीलगुणवज्जिदाणंणिरत्थयंमाणुसंजम्मं।१५।अर्थ।जेपुरुषजोबनअवस्थासहि २०५
तहैंअरबहुतनिकूंप्रियलागैऐसालावण्यताकरिसहितहैंअरशरीरकीकांतिप्रभाक

३२

रिमंडितहैंऐसेपापअरसलक्ष्मीसंपदाकरिगर्वितहैंमदोन्मत्तहैंअरशीलअरगुणक
रिवर्जितहैंतिनिकामनुष्यजन्मनिरर्थकहै।भावार्थ।मनुष्यजन्मपायकरिशीलरहित
रहैंविषयनिमैंआशक्तरहैंसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रजेगुणतिनिकरिरहितहैंअरजौ
वनअवस्थामैंशरीरकीलावण्यताकांतिरूपसुंदरधनसंपदाआदिपदइनिकागर्वक
रिमदोन्मत्तरहैंतौजिनननैंमनुष्यजन्मनिःफलषोयामनुष्यजन्मतौसम्यग्दर्शनादिकका
अंगीकारकरनाअरशीलसंयमपालनेंयोग्यथासोअंगीकारकीयानांहीतवनिःफलही
गयाकहिए।वहुरिऐसाभीजनायाहैजोपहलीगाथामैंकुमतिकुशास्त्रकीप्रसंसाकर
नेवालाकाज्ञाननिरर्थककह्याथातातैंइहांरूपादिकामदकरैतौयहभीमिथ्यात्वकेही
चिह्नहैंसोमदकरैसोभीमिथ्यादृष्टीहीजांननां।तथालक्ष्मीरूपयौवनकांतिकरिमंडित
होयअरशीलरहितव्यभिचारीहोइताकीलोकमैंभीनिंदाहीहोयहै।।आगैंकहैहैंजोव

जतशास्त्रनिकाज्ञानहोयतौभीशीलहीउत्तमहै गाथा वायरणछंदवइसेसियववहा
रणायसत्थेसु वेदेऊणसुदेसुय तेवसुयंउत्तमंसीलं १६ अर्थ व्याकरणछंदवैशेषिक
व्यवहारन्यायएशास्त्रवजुरिश्रुतकहिएजिनागमइनिविषैंतिनिव्याकरणादिककूं
अरश्रुतकहिएजिनागमतिनिकूंजांणिकरिभीइनिविषैंशीलहोयहैसोहीउत्तमहै गा
वार्थ व्याकरणादिशास्त्रजाणैंअरजिनागमकूंभीजाणैंतौहूतिनिमैंशीलहीउत्तमहै
शास्त्रजांणिअरविषयकषायनिमैंआशक्तहैतौतिनिशास्त्रनिकाजांननांउत्तमनांही
आगैंकहैहैंजोशीलगुणकरिमंडितहैंतेदेवनिकैभीवल्लभहैं गाथा सीलगुणमंडि
दाणं देवाभवियाणवल्लहाहोंति सुदपारयपउराणं दुस्सीलाअप्पिलालोए १७ अर्थ जे
भव्यप्राणीशीलअरसम्यग्दर्शनादिकगुणअथवाशीलसोहीगुणताकरिमंडिततिनि
केदेवभीवल्लभहोयहैहितकरनैवालामहाईहोयहै वजरिश्रुतपारगकहिएशास्त्रके ३०६

पारपहुंचेहैंपारहैंअगाताईपढैहैंऐसेवजतहैंअरतिनिमैंकेईशीलगुणरहितहैंदुःसी
लहैंविषयकषायनिमैंआशक्तहैंतौतेलोकविषैंअल्पकहैंन्यूनहैंतेमनुष्यलोकनिके
भीप्रियनहोयहैंतबदेवकहांतैंसहाईहोइ भावार्थ शास्त्रवजतजांणैंअरविषयाशक्त
होयतौताकासहाईनहोयचौरअन्यायीकीलोकमैंकोईसहाइनकरै अरशीलगुणमं
डितहोयअरज्ञांनथोडाभीहोयतौताकेउपकारीसहाईदेवभीहोयहैंतवमनुष्यतौसहाई
होयहीहोयशीलगुणवांनसर्वकैप्याराहोयहै आगैंकहैहैंजिनकैशीलसुशीलहैति
निकामनुष्यभवमैंजीवनांभलाहै गाथा सव्वेवियपरिहीणारूवविरूवाविपदिदसुवया
वि सीलंजेसुसुसीलंसुजीविदंमाणुसंतेसिं १८ अर्थ जेसर्वेप्राणीनिमैंहीणहैंकुलादि
ककरिन्यूनहैंअररूपकरिविरूपहैंसुंदरनांहीहै वजरिपतितसुवयकहिएअवस्था
करिसुंदरनांहीहैं वजरिपतितसुवयकहिएअवस्थाकरिसुंदरनांहीहैंवृद्धहोयगयेहैं

अष्टपाहुड़ु० अरजिनिविषैंसीलसुशीलहैंसुभावउत्तमहैंविषयकषायादिककीतीव्रआशक्तताहीहै
३०३ तिनिकामनुष्यपणासुजीवितहैजीवनाभलाहैं ॥ भावार्थ ॥ लोकमैंसर्वसामग्रीकरिजेमनु
नहैंअरस्वभावउत्तमहैंविषयकषायनिमैंआशक्तनांहीहैंतातैंउत्तमहीहैंतिनिकामन
नुष्यभवसफलहैंतिनिकाजीतव्यप्रसंसायोग्यहैं ॥ आगैंकहैहैंजोजेतेउत्तमभलेकार्य
हैतेसर्वशीलकेपरिवारहैं ॥ गाथा ॥ जीवदयादमसच्चंअचोरियंबंभचेरसंतोसेसम्मद्दंसण
णाणं तऊयसीलस्सपरिवारो ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ जीवदयाइंद्रियनिकादमनसत्यअचौर्यब्रह्म
चर्यसंतोषसम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानतपएसर्वशीलकेपरिवारहैं ॥ भावार्थ ॥ शीलऐसास्व
भावकातथाप्रकृतिकानांमप्रसिद्धहैं तहांमिथ्यात्वसहितकषायरूपज्ञांनकीपरण
तिहैंसोतोदुःशीलहैंयाकूंसंसारप्रकृतिकहिएवजरियरूपप्रकृतिपलटैअरसम्यग्प्र ३०३
कृतिहोयसोसुशीलहैंयाकूंमोक्षसन्मुखप्रकृतिकहिए ऐसेसुशीलकेजीवदयादिक

३५

गाथामैंकहेतेसर्वहीपरिवारहैंजातैंसंसारप्रकृतिपलटैतबसंसारदेहभोगसूंवैराग्य
होयतबमोक्षसूंअनुरागहोयतबसम्यग्दर्शनादिकपरिणांमहोयतबजेतीप्रवर्त्तिहोय
सोमोक्षकैसन्मुखहोयएहीसुशीलहैंसोजाकैंसंसारकाछेडआवैहैतबयहप्रकृतिहोयहैं
अरयहप्रकृतिनहोयतेतैंसंसारभ्रमणहैहीऐसाजांननां ॥ ॥ आगैंशीलहैंसोहीतपा
आदिकहैंऐसैंशीलकीमहिमांकहेहैं ॥ गाथा ॥ सीलंतउविसुद्धं दंसणसुद्धीयणाणसु
द्धीयसीलंविसयाणअरसीलंमोक्खस्ससोपाणं ॥ २० ॥ अर्थ ॥ शीलहैंसोहीविसुद्धनिर्मलत
पहैं वजरिशीलहैंसोहीविषयनिकाशत्रुहैं वजरिशीलहैंसोहीमोक्षकीपैडीहैं ॥ भावा
र्थ ॥ जीवअजीवआदिपदार्थनिकाज्ञानकरितामैंसूंमिथ्यात्वअरकषायनिकाअभाव
करनांसोसुशीलहैंसोयहआत्माकाज्ञानस्वभावहैंसोसंसारप्रकृतिमिटिमोक्षसन्मु
खप्रकृतिहोय तबयाशीलहीकेतपआदिकसर्वपर्यायनामहैंनिर्मलतपशुद्धदर्शन

MEMORIAL

ज्ञानविषयकषायनिकामेटनांमोक्षकीपैडीयेसर्वशीलकेनांमकेअर्थहैंऐसाशील
कामाहात्म्यवर्णनकीयाहैवहुरिकेवलमहिमांहीनांहीहैइनिसर्वभावनिकैअविना
भावीपणांजणायाहै॥आगैंकहैहैंजोविषयरूपविषमहाप्रबलहै॥गाथा॥ जहविसय
लुद्धविसदोतहथावरजंगमाणघोराणंसव्वेसिंपिविणासदिविसयविसंदारुणंहोई
२१॥अर्थ॥ जैसैंविषयनिकासेवनाविषहैसोजेविषयनिकैविषैंलुब्धजीवहैतिनिकूं
विषदेनेंवालाहैतेतैंहीजेघोरतीव्रस्थावरजंगमनिकासर्वनिकाविषहैसोप्राणीका
विनाशकरैहैतथापितिनिसर्वनिकाविषयनिमैंविषयनिकाविषउत्कटहैतीव्रहै
॥भावार्थ॥ जैसैंहस्तीमीनभ्रमरपतंगमृगआदिजीवविषयनिकरिलुब्धभयेविषयनिकै
वसिभयेहैतेजायहैतैसैंस्थावरकाविषतौमहोरासोमलआदिककाअरजंगमकावि
षसर्पआदिककाइनिकाभीविषकरिप्राणीहतेजायहैपरंतुसर्वविषनिमैंविषयनि

तैसंसारमैंभ्रमैहै॥गाथा॥ वरिएक्कम्मियजम्मे वरिज्जविसवेयणाहदोजीवो विसयविस
पाणंभमंतिसंसारकांतारे २२॥अर्थ॥ विषकीवेदनांकरिहतेसोजीवसोतोएकजन्म
विषैंमरैहै वहुरिविषयरूपविषकरिहतेगयेजीवहैतेअतिशयकरिसंसाररूपवनवि
षैंभ्रमैहै॥भावार्थ॥ अन्यसर्पादिककेविषतैंविषयनिकाविषप्रबलहैइनिकीआशक्त
तातैंऐसाकर्मबंधहोयहैजातैंवहुतजन्ममरणहोयहै॥आगैंकहैहैंजोविषयनि
कीआसक्ततातैंचतुर्गतिमैंदुःखहीपावैहै॥गाथा॥ णरएसुवेयणाओतिरिक्खएमाणुस
दुक्खाइदेवेसुविदोहग्गंलहंतिविसयासत्तजीवा २३॥अर्थ॥ विषयनिविषैंआशक्तजी
वहैतेनरकनिविषैंतिर्यंचनिविषैंमनुष्यनिविषैंदुःखनिकूंपावैहै वहुरिदेवनिविषैं
उपजैतौतहांभीदुर्भगपणापावैनीचदेवहोयऐसैंच्यारूंहीगतिमैंदुःखहीपावैहै॥भा
वार्थ॥ विषयाशक्तजीवनिकूंकहूंहीसुखनांहीहै परलोकमैंतौनरकआदिकेदुःखपा

अष्टपाहुड०
२०९

वेहीहैं अरु यालोकमैंभी इनकेसेवनेंविषैं आपदाकष्ट आवेहैं तयासेवतें आकुलतामय
दुःखहीहैय्हजीवभ्रमतें सुखमानैहैं सत्यार्थज्ञानीतौविरक्तहीहोयहैं ॥ आगैं कहै
हैंजो विषयनिकेंछोडनेंमैंभी कछूहाणिनांहीहैं ॥ गाथा ॥ तुसधम्मंतबलेणयजहदव्वं ण
हिणराणगच्छेदि तवसीलमंतकुसली खवंति विसयं विसयवखलं २४ ॥ अर्थ ॥ जैसैंतुस
निकेचालनेंकरि मनुष्यनिकै किछूद्रव्यनांहीजायहै तैसैंजेतपअरशीलवांन प्रवीणपु
रुषहैं ते विषयनिकूं खलकीज्यौं खेपैहैं दूरिगेरैहैं ॥ भावार्थ ॥ जेज्ञानीतपशीलसहितहैं
तिनिकै इंद्रियनिकै विषयेखलकीज्यौंहैं जैसैंसांठेनिकारसकाढिलेतबचूंसेनिरसहो
यतबडारिदैंनेंयोग्यहीहोय तैसैंविषयनिकाजांननां रसथासोतौज्ञांनीनिंजांनिली
या तबविषयतौखलवतरहे तिनिकेत्यागनेंमैंकहाहांनि किछूभीनांही धर्महैंजेज्ञां **२०९**
नीजिनिनैंविषयनिकूंज्ञेयमात्रजांणिआशक्तनहीयहैं अरजेआशक्तहोयहैंतेअज्ञानी

हीहैं जातैं विषयहैं तेतौजडपदार्थहैं सुखतौजिनकेजांननेंमैंहीयाअज्ञानीआशक्तहो
यविषयनिमैंसुखजान्याहैं जैसैंस्वांनसूकाहाडचावै तबहाडकीअणीमुखतालुवामैं
चुभैतबतालुवाफूटिता मैंसूंरुधिरआवैतबअज्ञांनीस्वांनजांनैंयहहाडमैंसूंरसनीसर
हैं तबतिसहाडकूं फेरिचाटिसुखमांनैं तैसैंअज्ञानीविषयनिमैंसुखजानिफेरिफेरिभो
गवैहैं अरज्ञांनीतिनैंअनेकज्ञानहीमैंसुखजान्याहैं तिनिकैविषयनिकेछोडनेंमैंखे
दनांहीहैं ऐसैंजाननां ॥ आगैंकहैहैंजोयहप्रांणीसरीरकेअवयवसर्वसुंदरपावैतौ
कूसर्वेअंगनिमैंशीलहैंसोहीउत्तमहैं ॥ गाथा ॥ वट्टेसुयखंडेसु पजएसुयविसालेसुअंगेसु
यअप्पयेसुयध्देसुयउत्तमसीलं २५ ॥ अर्थ ॥ प्रांणीकेदेहविषैंकेईअंगतौव्रतकहियगो
लसुघटसराहनेंयोग्यहोयहैं केईकैअंगखंडकहियेअर्द्धगोलसारिखेसराहनेंयोग्य
होयहैं केईअंगभद्रकहियसरलसूधेसराहनेंयोग्यहोयहैं अरकेईअंगविसालकहि

णविस्तीर्णचौडेसराहनेंयोग्यहोयहैऐसेंसर्वहीअंगयथास्थानसुंदरपावतेंसंतें।
भीसर्वअंगनितैंयेकुसीलनांमअंगहैसोउत्तमहैयहनहोयतौसर्वअंगसोभानपा
वैयहप्रसिद्धहै भावार्थ लोकविषैंप्राणीसर्वांगसुंदरहोयअरदुःसीलहोयतौस
र्वलोककेनिंदाकरनेंयोग्यहोयऐसेंलोकमैंभीसीलहीकीसोभाहैतौमोक्षमार्ग।
मैंतौसीलप्रधानकह्याहीहैजेसम्यग्दर्शनादिकमोक्षमार्गकेअंगहैंतेसीलहीके
परिवारहैंऐसेंपहलैंकहेहीआयेहैं ॥ आगैंकहैहैंजोजेकुमतिकरिमूढभयेहैंते
विषयनिमैंआशक्तहैंकुशीलहैंतेसंसारमैंभ्रमैंहैं गाथा पुरिसेणमसुहियाण कु
समयमूढेहिविसयलोलेहिंसंसारेभमिदव्वंअरयंघरट्टंवभूदेहिं ॥२६॥ अर्थ जेकुस।
मयकहियेकुमतितिनिकरिमूढहैंसोहीअज्ञानीहैं वहुरितेविषयनिविषैंलोलु २१०
पीहैंआसक्तहैंतेसंसारविषैंभ्रमैंहैंकैसेंभ्रमैंहैंजैसेंअरहटविषैंघडीभ्रमैंतेसैं।

भ्रमैंहैंतिनिकरिसाथिअन्यपुरुषकैंभीसंसारविषयदुःखसहितभ्रमणाहोयहै
भावार्थ कुमतीविषयाशक्तमिथ्यादृष्टीआपतौविषयनिकूंभलेमांनिसेवैहैकेई।
कुमतीऐसेंभीहैंऐसेंकहैहैंसुंदरविषयसेवनेंमैंब्रह्मप्रसन्नहोयहैयहपरमेश्वर
कीवडीभक्तिहैऐसेंकहिकरिअत्यंतआसक्तहोयसेवैहैऐसाहीउपदेशअन्यकूं
देकरिविषयनिमैंलगावैहैतेआपतौअरहटकीघडीकीज्यौंसंसारमैंभ्रमैंहीहैं तहां
अनेकप्रकारदुःखभोगवैहैपरंतुअन्यपुरुषकूंभीतहांलगायभ्रमावैहै यातैंयह।
विषयसेवनांदुःखहीकेअर्थिहैदुःखहीकाकारणहैऐसाजांनिकुमतीनिकाप्र
संगनकरनांविषयाशक्तपणांछोडणांयातैंसुशीलपणांहोयहै ॥ आगैंकहैहैजो
कर्मकीगांठिविषयसेवकरिआपहीबांधीहैताकूंसत्पुरुषतपश्चरणादिककरिआ
पहीकाटैहैं गाथा आदेहिकम्मगंठीजावद्धाविसयरागसंगेहिं तंछिंदंतिकयच्छाता।

अष्टपाहुड
२११

वसंयमशीलयगुणेण ॥२७॥ अर्थ जोविषयनिकेरागरंगकरिआपहीकर्मकीगांठिबांधी
हैताकूंकृतार्थीपुरुषउत्तमपुरुषतपसंयमसीलइनितैंभयाजोगुणताकरिछेदैहैसो।
लैहैं भावार्थ जोकोईआपगांठिघुलायबांधैताकाखोलनेकाविधानभीआपहीजा
णैजैसैंसुनारआदिकारीगरआभूषणआदिकसंधिकाटांकाऐसाझालैजोवहसं
धिअदृष्टिहोयजायतवसंधिकूंटांकाझालनैंबीलादीपहचांनिषोलैतैसैंआत्मांआ
पनैंहीरागादिकभावनिकरिकर्मकीगांठिबांधीहैताहिआपहीभेदज्ञानकरिरागा
दिककैअरआत्माकैजोभेदहैतिससंधिकूंपहचांनितपसंजमशीलभावरूपशस्त्र।
करितिसकर्मबंधकूंकाटैऐसाजांनिजेकृतार्थपुरुषहैं आपनेंप्रयोजनकेकरनेंवा।
लेहैतेईसुशीलगुणकूंअंगीकारकरिआत्मांकूंकर्मतैंभिन्नकरैहैंयहपुरुषार्थी। २११
पुरुषनिकाकार्यहै ॥ आगैंकहैहैंजोशीलकरिहीआत्मांसोभैहैयाकूंदृष्टांतकरि

दिषावैहै गाथा उदधीवरदणभरिदो तववियणयसीलदाणरयणाणं सोहेतोयस
सीलोणिव्वाणमणुत्तरंपत्तं ॥२८॥ अर्थ जैसैंसमुद्ररत्ननिकरिभस्याहैतौऊजलसहि
तसोभैहैतैसैंयहआत्मातपशीलदांनइनिरत्ननिमैंशीलसहितसोभैहैजातैंजोशी
लसहितभयातामैंअनुत्तरकहिएजातैंपरैंऔरपदनांहीऐसैंनिर्वाणपदकूंपाया
भावार्थ जैसैंसमुद्रमैंरत्नबहुतहैतौऊजलहीतैंसमुद्रनामपावैहै तैसैंआत्मांअन्य।
गुणनिकरिसहितहोयतौऊशीलकरिनिर्वाणपदपावैऐसैंजांननां ॥ आगैंजोसी।
लवांनपुरुषहैंसोहीमोक्षपावैहैयहप्रसिद्धकरिदिषावैहै गाथा सुणहाणगद्दहा
णयगोपसुमहिलाणदीसदेमोक्खोजोसोधंतिचउत्थंपिछिज्जंताजणेहिसव्वेहिं ॥२९॥
अर्थ आचार्यकहैहैंजोयहसर्वजनदेषौ स्वांनगर्धभइनिमैंवृषभरिगऊआदिपसुअर
स्त्रीइनिमैंकाहूकैमोक्षहोनांदीषैहैसोतौदीषतानांहीमोक्षतौचौथापुरुषार्थहैया

अष्टपाहुड० २१२ मेंचउत्थंजोचौथापुरुषार्थताहिसाधेहैहैहैताहीकैमोक्षहोनांदेषियेहै ॥ भावार्थ ॥
मेंअर्थकामभोक्षएच्यारिपुरुषकेहीप्रयोजनकहेहैंयहप्रसिद्धहैयाहीतैंइनिकानाम
पुरुषार्थऐसाप्रसिद्धहै तहांइनिमेंचौथापुरुषार्थमोक्षहैताकूंपुरुषहीसाधैअरपुरु
षहीताकूंहेरिताकूंसिधिकरैअन्यस्वानगर्दभबैलपशूस्त्रीइनिकैमोक्षकासाधनांप्र
सिद्धनांहीजोहोयतौमोक्षकापुरुषार्थऐसानांमकाहेकाहोय इहांआशयऐसाजो
मोक्षशीलतैंहोयहै जेस्वानगर्दभआदिकहैतेतौअज्ञानीहैंकुशीलहैजिनकास्वभा
वप्रकृतिहीऐसाहैजोयेहपलटिकरिमोक्षहोनेंयोग्यतथाताकेसाधनेंयोग्यनांहीहै
तातैंपुरुषकूंमोक्षकासाधनशीलकूंजांणिअंगीकारकरनांसम्यग्दर्शनादिकहैतेया
शीलहीकेपरिवारपूर्वैंकहेहीहैंऐसैंजांनना ॥ आगैंकहैहैंजोशीलविनांज्ञानहीक २१२
रिमोक्षनांहीयाकाउदाहरणकहैहैं ॥ गाथा ॥ जइविसयलोलएहिंणाणीहिंहविज्जसा

हिदोसोरुद्दोतोमोसोसुदहपुत्तोदसपुव्वीउविकिंगदोणरयं ॥३०॥ अर्थ ॥ जोविषयनिविषै
लोलकहिएलोलपआशक्तअरज्ञानसहितऐसाज्ञानीनिमैंमोक्षसाध्याहोयतौयेतौ
दसपूर्वकाजांननेंवालारुद्रनरककौंगया ॥ भावार्थ ॥ कोराज्ञानहीसंमोक्षकाहूनैंसा
ध्याकहिएतौदशपूर्वकापाठीरुद्रनरककौंगया तातैंसीलविनांकोराज्ञानहीतैंमो
क्षनांहीरुद्रकुशीलसेवनवालाभयामुनिपदतैंभ्रष्टहोयकुशीलसेयातातैंनरकगया
यहकथापुराणमेंप्रसिद्धहै ॥ आगैंकहैहैजोशीलविनांज्ञानहीतैंभावकीशुद्ध
तानहोयहै ॥ गाथा ॥ जइणाणेणविसोहीसीलेणविणाबुहेहिंणिद्दिट्ठंदसपुव्वियस्स
भावोयणकिंपुणीणिम्मलोजादो ॥३१॥ अर्थ ॥ जोसीलविनांज्ञानहीकरिविशोधकहि
एविसद्भावपंडितांकह्योहोयतौदशपूर्वकाजांननेंवालाजोरुद्रताकाभावनिर्मल
कौंनभयातातैंजांनियेहैभावहीनिर्मलशीलहीतैंहोयहै ॥ भावार्थ ॥ कोराज्ञानतौज्ञेयकूं

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जनावैहीहैंतामैंमिथ्यात्वकषायहोयतबविपर्ययहोयजायतातैंमिथ्यात्वकषायका
मिटनांसोहीशीलहैऐसैंसीलविनांज्ञानहीतैंमोक्षसधैनांहीशीलविनांमुनिहोयतौ
भ्रष्टहोयजायहैंतातैंशीलहीकूंप्रधानजाननां ॥ आगैंकहैहैंजोनरकमैंभीहोयअ
रविषयनितैंविरक्तहोयतौतहांतैंनिकसितीर्थंकरपदपावैहैं ॥ गाथा ॥ जोवुणविसयवि
रत्तो सोगमयदिणरयवेयणपउरातालेहदिअरुहपयंभणियंजिणवड्ढमाणेण ॥ ३२ ॥
॥ अर्थ ॥ जोविषयनितैंविरक्तहैजोजीवनरकमैंबहुतवेदनांहैताकूंभीगमावैहैं तहां
भीअतिदुःखीनहोयहैं तौतहांतैंनिकसिकरितीर्थंकरहोयहैं यहजिनवर्द्धमानभग
वाननैंकह्याहै ॥ भावार्थ ॥ जिनसिद्धांतमैंऐसैंकह्याहैजोतीसरीनरकपृथ्वीतैंनिकसिती
र्थंकरहोयहैसोयेहसीलहीकामहात्म्यहैतहांसम्यक्तसहितहोयविषयनितैंविरक्त
भयाबडीभावनांभावैतबनरककीवेदनांभीअल्पहोयअरतहांतैंनिकसिअरहंतप

दपायमोक्षपावैऐसाविषयनितैंविरक्तभयसोहीसीलताकामहात्म्यजांननांसिद्धांतमैं
ऐसैंकह्याहैजोसम्यग्दृष्टीकैज्ञानअरवैराग्यकीशक्तिनियमकरिहोयहैसोयहवैरा
ग्यशक्तिहैसोहीशीलकाएकदेशहैऐसैंजांननां ॥ आगैंयाकथनकूंसंकोचैहैं ॥ गाथा ॥
एवंबहुप्पयारंजिणेहिपच्चक्खणाणदरसीहिं सीलेणयमोक्खपयंअक्खातीदंचलोयणाणे
हिं ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ एवंकहियेपूर्वोक्तप्रकारतथाअन्यप्रकारबहुतप्रकारजिनदेवनैंकह्या
हैजोसीलकरिमोक्षपदपावैहैं कैसाहैमोक्षपदअक्षातीतहैइंद्रियनिकरिरहितअ
तिंद्रियज्ञानसुखजामैंपाईयेहैं बहुरिकहनेवालेजिनदेवकैसेहैं प्रत्यक्षज्ञानदर्शन
जिनकैपाईएहैं बहुरिलोककाजिनकैज्ञानहै ॥ भावार्थ ॥ सर्वज्ञदेवनैंऐसैंकह्याहै जो
सीलकरिअतिंद्रियज्ञानसुखरूपमोक्षपदपाईएहैसोभव्यजीवयाशीलकूंअंगीकार
करोऐसाउपदेशकाआशयसूचैहैबहुतकहांताईकहिएएताहीबहुतप्रकारकह्या।

जानूं ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो इस शील करि निर्वाण होय ताकौं बहुत प्रकार वर्णन कीजिए सो
कैसैं ताका कहनां ऐसैं है ॥ गाथा ॥ सम्मत्तणाणदंसणतववीरियपंचयारमप्पाणं ॥ जल-
णो पि पवणसहिदो डहंति पोराणयं कम्मं ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन तप वीर्य ए
पंच आचार हैं सो आत्मा का आश्रय पाय करि पुरातन कर्मनिकूं दग्ध करै है जैसैं अ-
ग्नि है सो पवन सहित होय तब पुराणें सूके ईंधनकूं दग्ध करै है तैसैं ॥ भावार्थ ॥ इहां सम्य-
क्त्व आदि पांच आचार तौ अग्निस्थानीय हैं अर आत्मा का शुद्धभाव है ताकूं शील कहि-
ए सो यह आत्मा का स्वभाव पवनस्थानीय है सो पंच आचाररूप अग्नि शीलरूप पवन
का सहाय पाय पुरातन कर्मबंधकूं दग्ध करि आत्माकूं शुद्ध करै है ऐसैं शील ही प्रधान
है पांच आचार मैं चारित्र कह्या है अर इहां सम्यक्त्व कह्या सो सम्यक्त्व कहतें मैं चारित्र ही- २१५
जाननां विरोध न जाननां ॥ छ ॥ आगैं कहै है जो ऐसैं अष्टकर्मनिकूं जिनि दग्ध कीये ते सिद्ध भ-

ये हैं ॥ गाथा ॥ णिद्दड्ढअट्ठकम्मा विसयविरत्ता जिदिंदिया धीरा ॥ तवविणयसीलसहिदा
सिद्धा सिद्धिं गदिं पत्ता ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष जीते हैं इंद्रिय जिन्हैं नैं याही तैं विषयनि तैं विर-
क्त भये हैं बहुरि धीर हैं परीसहादि उपसर्ग आयें चिगै नांही बहुरि तप विनय शील क-
नि करि सहित हैं ते दग्ध कीये हैं आठ कर्म जिन्हैं ऐसैं होय सिद्धगति जो मोक्ष ताकूं प्रा-
प्ति भये हैं ते सिद्ध ऐसा नाम कहावै हैं ॥ भावार्थ ॥ इहां भी जितेंद्रिय विषयविरक्तए विशेष-
ण शील ही की प्रधानता जनावै हैं ॥ छ ॥ आगैं कहै हैं जो लावण्य अर शीलयुक्त है सो मुनि
सराहनें योग्य होय है ॥ गाथा ॥ लावण्णसीलकुसला जम्ममहीरुह जस्स सवणस्स सो सी-
लो समहप्पा नमिच्छ गुणविच्छरं नविए ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ जिस मुनि का जन्मरूप वृक्ष है ते लाव-
ण्य करि अन्यकूं प्रिय लागै ऐसा सर्व अंग सुंदर तथा मन वचन काय करि चेष्टा सुंदर
अर शील करि अंतरंग मिथ्यात्व विषयनि करि रहित परोपकारी स्वभाव इनि दोऊ-

निविषैंप्रवीण निपुण होय सो मुनि शीलवान है महात्मा है ताके गुणनिका विस्तार एले ऱ
कविषैं भ्रमैं हैं फैले हैं ॥ भावार्थ ॥ ऐसे मुनिका गुण लोकमैं विस्तरै है सर्व लोकके प्रसंसायो
ग्य है इहां भी शीलही की महिमां जाननी अर वृक्षका रूपक है जैसैं वृक्षकै साखा पत्र पु
ष्प फल सुंदर होय अर छाया दिक करि राग द्वेष रहित लोकका सर्वका समान उपकार
करै तिस वृक्षकी महिमा सर्वलोक करै तैसैं मुनि भी ऐसा होय सो सर्वकै महिमां करनैं यो
ग्य होय है ॥ ३॥ आगैं कहै हैं जो ऐसा होय सो जिनमार्ग विषैं रत्नत्रयकी प्राप्तिरूप बोधि पावे
है ॥ गाथा ॥ णाणं झाणं जोगो दंसणसुद्धीय वीरियाइत्तं सम्मत्तदंसणेण य लहंति जिण
सासणे बोहि ३७ ॥ अर्थ ॥ ग्यांन ध्यांन योग दर्शनकी विशुद्धता ए तौ वीर्यकै आधीन है
अर सम्यग्दर्शन करि जिनशासनकै विषैं बोधिकूं पावे है रत्नत्रयकी प्राप्ति होय है ॥ भा ३१५
र्थ ॥ ज्ञान करि पदार्थनिकूं विशेषकरि जाननां ध्यांन करि स्वरूप विषैं एकाग्रचित्त होनां

नां योग करि समाधि लगावनां सम्यग्दर्शनकूं निरतीचार शुद्ध करनां ए तौ अपनां वीर्य
जो शक्ति ताकै आधीन है जेता वणैं जेता होय अर सम्यग्दर्शन करि बोध जो रत्नत्रय ताकी
प्राप्ति होइ याके होतें विशेष ज्ञान ध्यानादिक भी यथाशक्ति होय ही है अर शक्ति भी या
तैं वधै है ऐसैं कहनैंमैं भी सीलका महात्म जांननां रत्नत्रय है सो ही आत्माका स्वभाव है
ताकूं सील भी कहिए ॥ ७॥ आगैं कहै हैं जो यह प्राप्ति जिनवचनतैं होय है ॥ गाथा ॥ जिणवय
णगहिदसारा विसयविरत्ता तवोधणा धीरा सीलसलिलेण ण्हादा ते सिद्धालयसुहं जं
ति ३८ ॥ अर्थ ॥ जिनवचन करि ग्रहण कीया है सार जिनिमैं बहुरि विषयनितैं विरक्त भये हैं
बहुरि तप ही है धन जिनिकै बहुरि धीर है ऐसे भये संते मुनि शीलरूप जल करि न्हाये शु
द्ध भये ते सिद्धालय जो सिद्धनिका वसनेका मंदिर ताके सुखनिकूं पावै है ॥ भावार्थ ॥ जे जि
नवचन करि वस्तुका यथार्थ स्वरूप जांणि ताका सार जो अपनां स्वरूपकी प्राप्ति ताका ग्र

इणाकरैहैं ते इंद्रियनिकेविषयनितैंविरक्तहोयतपअंगीकारकरैहैं। मुनिहोयहैतदोधी
रवीरहोयपरीसहउपसर्गआयेंचिगेनांहीतवशीलजोस्वरूपकीप्राप्तिकीपूर्णतारूपचौ
रासीलाखउत्तरगुणकीपूर्णतासोहीभया निर्मलजलताकरिस्नानकरिसर्वकर्ममलकूं
धोयकरिसिद्धभयेमोक्षमंदिरविषैंतिष्ठिकरितहांपरमानंदअविनाशीअतिंद्रियअव्या
बाधसुखकूंभोगवैहैंयहशीलकामाहात्म्यहै। ऐसासीलजिनवचनतैंपाइएहै। तातैंजि
नागमकानिरंतरअभ्यासकरनांयहउपदेशहै॥ ॥ आगैंअंतसमयसल्लेखनाकरनांकह्या
है। तसंदर्शनज्ञानचारित्रतपएचारिआराधनाकाउपदेशहैसोयहशीलहीतैंप्रगटहो
यहैताकूंप्रगटकरिकहैहैं। गाथा। सव्वगुणखीणकम्मासुहदुहविवज्जिदामणविसु॰
द्धापप्फोडिदकम्मरयाहवंतिआराहणायपडा॥३७॥ अर्थ। सर्वगुणजेमूलउत्तरगुणति॰ ३१६
निकरिक्षीणभयेहैंकर्मजामैं वहुरिसुखदुःखकरिविवर्जितहैवहुरिमनहैविसुद्धजामैं

वहुरिउड़ायाहैकर्मरूपरजजामैंऐसीआराधनांप्रगटहोयहै। भावार्थ। पहलैंतौसम्यग्द
र्शनसहितमूलगुणउत्तरगुणनिकरिकर्मनिकीनिर्जराहोनेंतैंकर्मनिकास्थितिअ॰
नुभागक्षीणहोयहै। पीछैंविषयनिकैद्वारैकिछूसुखदुःखहोयथाताकरिरहितहोयहै
पीछैंध्यानविषैंतिष्ठैश्रेणीचढैतवउपयोगविसुद्धहोयकषायनिकाउदयअव्यक्तहोयत
वसुखदुःखकीवेदनांमिटै वहुरिपीछैंमनविसुद्धहोयक्षयोपशमज्ञानकैद्वारैकिछूज्ञे॰
यतैंज्ञेयांतरहोनेंकाविकल्पहोयहैसोमिटिकरिएकत्ववितर्कअवीचारनांमाशुक्लध्या
नवारमांगुणस्थानकेअंतहोयहैयहमनकाविकल्पमिटिविसुद्धहोनांहै। वहुरिपीछैंघा॰
तिकर्मकानाशहोयअनंतचतुष्टयप्रगटहोयहैयहकर्मरजकाउडनांहै ऐसैंआराधनां
कीसंपूर्णताप्रगटहोनाहै। जोचरमशरीरहैंतिनिकैतौऐसैंआराधनांप्रगटहोयमुक्तिकी
प्राप्तिहोयहै। वहुरिअन्यकैआराधनांकाएकदेशहोयअंतमैंतिसकूंआराधिकरिस्वर्गवि

अष्टपाहुड०
३१७

मैं प्राप्तिहोय तहां सागरां पर्यंत सुख भोगि तहांतें चय करि मनुष्य होय आराधनांकूं संपूर्ण
करि मोक्ष प्राप्ति होय है ऐसैं जांननां यह जिनवचन का अर शील का महात्म्य है ३ आगैं
ग्रंथकूं पूर्ण करै है तहां ऐसैं कहै हैं जो ज्ञांनतैं सर्व सिद्धि है यह सर्वजन प्रसिद्ध है सो ज्ञांन
तौ ऐसा होय ताकूं कहिये है गाथा अरहंते सुहभत्ती सम्मत्तं दंसणेण सुविसुद्धं सीलं वि
सयविरागो णाणं पुण केरिसं भणियं ४० अर्थ अरहंतविषैं तौ भली भक्ति है सो तौ सम्यक्त्व
है सो कैसा है सम्यक् दर्शन करि विशुद्ध है तत्वार्थनिका निश्चय व्यवहारस्वरूप श्रद्धांन अ
र बाह्य जिनमुद्रा नग्न दिगंबर रूप का धारण तथा ताका श्रद्धांन ऐसा दर्शन करि विशु
द्ध अतीचाररहित निर्मल है ऐसा तौ अरहंत भक्तिरूप सम्यक्त है बहुरि शील है सो विष
यनितैं विरक्त होनां है बहुरि ज्ञांन भी यह ही है और यातैं न्यारा ज्ञांन कैसा कह्या है सम ३१७
क्त शील विनां तौ ज्ञान मिथ्याज्ञान रूप अज्ञान है भावार्थ यह सर्वमतनिमैं प्रसिद्ध है जो ज्ञा

नतैं सर्व सिद्ध है अर ज्ञान होय है सो शास्त्रनितैं होय है तहां आचार्य कहै है जो हम तौ ज्ञा
नकूं ज्ञांन कहै है जो सम्यक्त्व अर शील सहित होय ये ह जिनागम मैं कह्या है यातैं न्यारा ज्ञां
न कैसा है यामैं न्यारा ज्ञांन ऐसा है ताकूं तौ हम ज्ञांन कहै हैं नांही इनि विनां तौ अज्ञांन ही
है अर सम्यक्त्व शील होय सो जिनागम तैं होय तहां जाय करि सम्यक्त शील भये तिसकी
भक्ति न होय तौ सम्यक्त्व कैसैं कहिए जाकै वचन तैं पाइए ताकी भक्ति होय तब जांनिये या
कै श्रद्धा आई बहुरि सम्यक्त होय तब विषयनि तैं विरक्त होय ही होय जो विरक्त न होय तौ
संसार मोक्ष का स्वरूप कहा जान्यां ऐसा सम्यक्त्व शील भये ज्ञान सम्यक्त कूं ज्ञांन नांम पा
वै है ऐसैं इस सम्यक्त शील के संबंध तैं ज्ञांन की तथा शास्त्र की बडाई है ऐसैं इह जिन आ
गम है सो संसार तैं निवृत्ति करि मोक्ष प्राप्ति करनैं वाला है सो जयवंत होउ बहुरि यह सम्य
क्त सहित ज्ञान की महिमां है सो ही अंत मंगल जांननां ३ ऐसैं यह श्री कुंदकुंद आचार्य

MEMORIAL

कृतशीलपाहुडग्रंथसंपूर्णभया ॥ याका संक्षेपतौ कहतेआयेजोशील नांमस्वभाव
काहैसोआत्माकास्वभावशुद्धज्ञानदर्शनमईचेतनास्वरूपहैसोअनादिकर्मकेसंयोगतैवि
भावरूपपरिणमैहैताकैविशेषमिथ्यात्वकषायअरहिंसाअनेकहैतिनिकूंरागद्वेषमो
हभीकहिएतिनिकेभेदसंक्षेपकरिचौरासीलाषकीयेहैविस्तारकरिसंख्यातअसंख्यात
अनंतहोयहैतिनिकूंकुशीलकहिएतिनिकाअभावरूपसंक्षेपकरिचौरासीलाषउत्त
रगुणहैतिनिकूंशीलकहैहै यहतौसामान्यपरद्रव्यकेसंबंधकीअपेक्षाशीलकुशील
काअर्थहै बहुरिप्रसिद्धविवहारअपेक्षास्त्रीकेसंगकीअपेक्षाकुशीलकेअठारैहजा
रभेदकहेहैतिनिकाअभावतैशीलकेअठारहहजारभेदहैतिनिकूंजिनआगमतैजा
नियामैंलोकमैंशीलकीमहिमाप्रसिद्धहैजेपालैहैतेस्वर्गमोक्षकेसुखपावैहैतिनिकूं ३१८
हमारानमस्कारहै तेहमारैसीलकीप्राप्तिकरौयहप्रार्थनाहै ॥ छप्पय ॥ आनुवस्तकैसं

गराचिनिजभावबंगाकरि वरतैताहिकुशीलभावभाषैकुरंगधरि ताहितजैमुनिरायपाय
निजरूपशुद्धजल धोयकर्मरजहोयसिद्धपावैसुखअतिवल यहनिश्चयशीलसुब्र
ह्ममय व्यवहारैतियतिजनमैं जेपालैसबविधितिनिनमूंपाऊं जिनभवनजनमैं ॥ १ ॥
दोहा ॥ नमूंपंचपदब्रह्ममय मंगलरूपअनूप उत्तमसरणसदालहूं फिरिनपरूंभव
कूंप ॥ इतिश्रीकुंदकुंदआचार्यकृतप्राकृतगाथाबंधशीलपाहुडकीदेशभाषामय
वचनिकासमाप्त ॥ ८ ॥ ऐसैंश्रीकुंदकुंदआचार्यकृतप्राकृतगाथाबंधपाहुड
ग्रंथहैतिनिमैंएआठपाहुडहैतिनिकीयहदेशभाषामयवचनिकालिखीहैतहां
छहपाहुडकीतौटीकाटिप्पणहैतिनिमैंटीकातौश्रुतसागरकृतहै अरटिप्पणप
हलैंकाहूऔरनैकीयाहैतिनिमैंकेईगाथाकापाठतयाअर्थअन्यअन्यप्रकारहैत
हांमेरैविचारमैंआयातैसैंतिनिकाआश्रयलीयाहैअरजैसैंअर्थमोकूंप्रतिभास

अष्टपाहुड० ३१९ हैं तैसैं लिख्या है। अर लिंगपाहुड अर सीलपाहुड इनि दोय पाहुडका टीका टिप्पण
मिल्या नांही तातैं गाथाका अर्थ जैसैं प्रतिभासमैं आया तैसैं लिख्या है। अर श्रुतसाग
रकृत टीका षटपाहुडकी है तामैं ग्रंथांतरकी साषि आदि कथन बहुत है सो तिस टी
काकी वचनिका येह नांही है। गाथाका अर्थमात्र वचनिका करि भावार्थमैं मेरी प्रति
भासमैं आया तैसैं गाथाका अनुसार ले लिख्या है। अर प्राकृत व्याकरण आदिका।
ज्ञान मो मैं विशेष है नांही। तातैं कहूं व्याकरणसैं तथा आगमतैं शब्द अर अर्थ अपभ्रं
स भया होय तहां बुद्धिवांन पंडित मूलग्रंथ विचारि शुद्ध करि वांचियो पढियो मोकूं अ
ल्पबुद्धी जांणि हास्य मति करियो क्षमा करियो सतपुरुषनिका स्वभाव उत्तम होय है दो
ष देखि क्षमा ही करै बहुरि इहां कोई कहै तुमारी बुद्धि अल्प है तो ऐसे महान् ग्रंथकी व ३१९
चनिका क्यौं करी। ताकूं ऐसैं कहनां जो इस कालमैं मो तैं भी मंदबुद्धी बहुत हैं तिनिके

समझनेंकै अर्थि करी है। यामैं सम्यग्दर्शनका दृढ करनां प्रधान करि वर्णन है। तातैं अ
ल्पबुद्धीनी वांचि पढै अर्थका धारन करै तौ तिनिकै जिनमतका श्रद्धांन दृढ होय यह
प्रयोजन जांनि जैसैं अर्थ प्रतिभासमैं आया सो लिख्या है अर जे बडे बुद्धिवांन हैं ते मूल
ग्रंथ वांचि पढि ही श्रद्धांन दृढ करैंगे यामैं किछू अर्थ अपभ्रंस होयगा ताकूं शुद्ध करैंगे।
मेरै किछू ख्यांति लाभ पूजाका तौ प्रयोजन है नांही धर्मानुरागतैं येह वचनिका लिखी
है तातैं बुद्धिवांननिकै क्षमा ही करनें योग्य है। अर इस ग्रंथकी गाथाकी संख्या ऐसैं है
प्रथम दर्शनपाहुडकी गाथा ३६ दूजा सूत्रपाहुडकी गाथा २७ तीजा चारित्रपाहु
डकी गाथा ४५ चौथा बोधपाहुडकी गाथा ६२ पांचमां भावपाहुडकी गाथा १६५
छठा मोक्षपाहुडकी गाथा १०६ सातमां लिंगपाहुडकी गाथा २२ आठमां सीलपाहु
डकी गाथा ४० ऐसैं सब मिलि गाथा ५०३ भई छप्पय जिनदर्शन निरग्रंथरूप तत्व र

अष्टपाहुड॰ रयधारन सतरजि निकेवचनसारचारितव्रतपारन वोधजैनमतजो निश्चानकास
३२० रननिवारन भावआत्मायुद्धमांनिभावन शिवकारन फुनिमोक्षकर्मकानाशदेलिं
गसुधारनतजिकुनय धरिशीलस्वभावसुधारना अष्टपाहुडकाफलसुजय १ दोहा
भईवचनिकाइहजहां सोसुनिएसंक्षेप भव्यजीवसंगतिमिली मेटेकुकरमलेप २
जयपुरपुरसूबसबसै तहांराजजगतेस ताकेन्यायप्रतापतैं सुखीढुंढाहडदेस ३
जैंनधर्मजयवंतजग किछूजैपुरमैंलेश तामधिजिनमंदिरघणें तिनिकोभलोनिवे-
श ४ तिनिमैंतेरापंथको मंदिरसुंदरएक धर्मध्यानतामैं सदा जैंनीकरैसुसेव ५ पंडि
ततिनिमैंबहुतहैं मैंभीइकजयचंद प्रेरयासवकैमन कियो करनवचनिकामंद ६
कुंदकुंदमुनिराजकृत प्राकृतगाथासार पाहुडअष्टउदारलिखि करीवचनिकाता ३२०
र ७ इहांजितेपंडितभुते तिनिमैंसोधीएह अक्षरअर्थसुवांचिपढि नहिराष्योसंदेह ८

तौऊकछुप्रमादतैं बुद्धिमंदपरभाव हीनाधिककिछूअर्थहै सोधोबुधसतभाव ९
मंगलरूपजिनेंद्रकूं नमस्कारममहोऊ विघनटलैसुभवंधहै यहकारनहैमोऊ १०
संवत्सरदसआठशत सतसठिविक्रमराय मासभाद्रपदशुक्लतिथि तेरसिपूरनथा
य ११ इतिश्रीकुंदकुंदआचार्यकृतअष्टपाहुडप्रथमदर्शनपाहुड२ दूजासूत्रपाहुड
तीजाचारित्रपाहुडचौथाबोधपाहुडपांचमांभावपाहुडछठामोक्षपाहुडसातमांलिं
गपाहुडआठमांसीलपाहुडकी देशभाषामयवचनिकासमाप्त॥ मोसोत्तममांस
चैत्रमासेकृष्णपक्षेतिथौतीजरविवारेसंवत् १८८५ प्र॥ ॥ ॥श्रीरस्तु॥ कल्या-

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017